उस्वा-ए-रसूले अकरम ﷺ

लेखकः डा. मुहम्मद अब्दुल हई रह.
ख़लिफ़ा ए मिज़ाज हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब रह.

उस्व-ए-रसूले अक्रम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का हिन्दी अनुवाद

सर्वश्रेष्ठ रसूल

मुहम्मद
(सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

का

आदर्श जीवन

लेखक

डा० मुहम्मद अ़ब्दुल हई रह०

प्रकाशक

नसीर बुक डिपो

हज़रत निज़ामुद्दीन नई दिल्ली-११००१३

फोन न० 24350995, 55652620

©सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है

नाम किताब : सर्वश्रेष्ठ रसूल मुहम्मद (सल्ल०) का आदर्श जीवन
(हिन्दी अनुवाद उस्व-ए-रसूले अकरम.सल्ल०)

सम्पादक : डॉक्टर अब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि

देवनागरी लिप्यांतर : शाइबुल हक़ क़ासमी सण्डीलवी

संयोजक : नसीर अहमद

मुद्रक नसीर बुक डिपो नई दिल्ली-११००१३

पृष्ठ : 763

मूल्य : Rs.

प्रकाशक:

NASIR BOOK DEPOT (REGD)
Aziza Building Basti Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110013 (India)
Ph:91-11-24350995,55652620
E-mail:-info@nasirexport.com
www.nasirexport.com

उस्व-ए-रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

(सर्वश्रेष्ठ रसूल मुहम्मद (सल्ल०) का आदर्श जीवन)

इशार-ए-मज़ामीन (विषय-निर्देश)

यह किताब हस्बे ज़ैल मज़ामीन पर मुश्तमिल है

(यह पुस्तक निम्नलिखित विषयों पर आधारित है)

फ़िहरिस्ते अब्वाब (विषय-परिच्छेद)

फ़िहरिस्ते मज़ामीन (विषय सूची)

उस्व-ए-रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

(सर्वश्रेष्ठ रसूल मुहम्मद (सल्ल०) का आदर्श जीवन)

उन्वान (शीर्षक)	सफ़्हा नम्बर

हिस्सए अव्वल (पहला भाग)

हिस्सए दोम (दूसरा भाग)

उन्वान (शीर्षक)	सफ़्हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

हिस्सए सोम (तीसरा भाग)

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर
आप सल्ल० का तरका	158
मुहसिने इन्सानियत सल्ल० का हुस्ने सुलूक	
अज़्वाजे मुतह्हरात के साथ	159
इज़्दवाजी मुआमलात व मामूलात	159
बाज़ वाक़िआत	163
ईसारे हुक़ूक़	166
रफ़ीक़े आला	166
नबीए करीम सल्ल० के खाने-पीने का अन्दाज़	168
आदते तय्यिबा	168
खाने के लिये वुज़ू	172
खाने से पहले बिस्मिल्लाह	172
हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का खाना	173
मर्ग़ूबात	174
मेहमान की रिआयत	176
खाने के मुतअल्लिक़ बाज़ सुनने तय्यिबा	177
नए फल का इस्तेमाल	179
मश्रूबात में आदते तय्यिबा	180
नबिय्युर्रहमत सल्ल० का मामूले लिबास व आराइश	182
लिबास का मामूले मुबारक	182
पाजामा	186
क़मीसे मुबारक	187
अमामा	188
आँहज़रत सल्ल० की टोपी	189
तहबन्द और पाजामा	189
नालैन शरीफ़	191
आदाते बर्गुज़ीदा ख़ुशबू के बारे में	192
सुर्मा लगाना	193
सर के मुए मुबारक	194

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

हिस्सए चहारुम (चौथा भाग)

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

बाब-(परिच्छेद)1-ईमानियात

बाब-(परिच्छेद) 2-इबादात

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़्हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़्हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़्हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर
तक्बीरे ऊला	459
जमाअ़त से उज़्र	459
इमामत	459
इमामत का हक़ और फ़र्ज़	459
मुक़्तदियों की रिआ़यत	460
दुआ में इख़्फ़ा	461
मुक़्तदियों को हिदायत	461
जमाअ़त में शिर्कत	462
नमाज़ में हदस	462
इमाम से पहले सज्दे से सर उठाना	463
इस्तिन्जा की हाजत	463
सफ़ बन्दी	463
सफ़ की दुरुस्ती का एहतिमाम	463
सफ़ की तर्तीब	464
इमाम का वस्त में होना	465
एक या दो मुक़्तदियों की जगह	465
मस्जिद के मुतअ़ल्लिक़ अहकाम	465
माहे सियाम, रमज़ानुल् मुबारक	469
रमज़ानुल् मुबारक का ख़ुत्बा	469
रोज़े की फ़ज़ीलत	469
रोज़े में एहतिसाब	470
रोज़े की बरकत	471
रोज़े की अहमियत	471
रोज़ा छोड़ने का नुक़्सान	471
रूयते हिलाल	472
रूयते हिलाल की तहक़ीक़ और शाहिद की शहादत	472

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़्हा नम्बर
अश्रा-ए-ज़िल्हिज्जा के रोज़े	484
पन्द्रहवीं शाबान का रोज़ा	484
पीर व जुमेरात का रोज़ा	485
यौमे आशूरा (10 मुहर्रम) का रोज़ा	485
सौमे विसाल	486
सौमे विसाल पर आप सल्ल० का अमल लेकिन सहाबा रज़ि० को मुमानअ़त	486
ईदैन के आमाले मस्नूना	488
ईदगाह	488
तक्बीर व मौइज़त	491
नमाज़े ईद की तर्कीब	491
ईद का ख़ुत्बा	492
ख़ुत्बे में तक्बीर	492
सदक़ा-ए-फ़ित्र का वुजूब	493
मस्नून आमाले ईदुल्-अज़्हा	493
क़ुर्बानी का सवाब	494
उम्मत की तरफ़ से क़ुर्बानी	494
क़ुर्बानी का तरीक़ा	495
हज	497
हज व उम्रा	497
हज की फ़र्ज़ियत	497
उम्रे की हक़ीक़त	497
हज और उम्रा की बरकत	498
हाज़िरी-ए-अरफ़ात ऐने हज है	499
अरफ़ात की मंज़िलत	499
अरफ़ात की दुआ	500
मीक़ात	501

उन्वान (शीर्षक)	सफ़्हा नम्बर

बाब – (परिच्छेद) 3 – मुआ़मलात

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

बाब – (परिच्छेद) 4 – मुआशरत

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर
पाकी व सफ़ाई	608
जिस्मानी आराइश	609
मदह में मुबालग़ा	609
क़नाअ़त	610
बुह्तान	610
बूढ़े की ताज़ीम	610
ज़ालिम व मज़लूम की इआ़नत	611
मुसीबत-ज़दा का मज़ाक़	611
चन्द नसीहतें	612
दोस्त से मुलाक़ात	612
मुसलमान दूसरे मुसलमान का आईना	613
सवाल की मज़म्मत	614
मुसलमान को देखकर मुसकराना सदक़ा है	614
उ़ज़्र क़बूल करना	614
ईमान के साथ अ़मल	615
एह्सान का शुक्रिया	615
सिफ़ारिश	616
सरगोशी	616
सोने-चाँदी के बर्तन का इस्तेमाल	616
फ़ुह्श कलामी	616
बेजा मदह	617
फ़ासिक़ की मदह	617
सिह्हत और ख़ुशबू	617
ज़मीन का तबादला	618
ग़ैरत व एहसान	618
ऐशो-इश्रत	618
बाहम दावत करना	619
आदाबे दुआ़	619

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

बाब – (परिच्छेद) 5 – अख़्लाक़ियात

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर
तवाज़ो	646
ख़ौफ़े इलाही से महरूमी	647
अदाए शुक्र	647
सब्र	647
ख़ुलासा	648
सब्रो-शुक्र	649
सख़ावत व बुख़्ल	651
क़नाअत और इस्तिग़्ना	651
किफ़ायत शिआरी	652
मुआफ़ी चाहना	652
ख़ता मुआफ़ करना	653
ख़ामोशी	654
तर्के लायानी	654
रहमदिली और बेरहमी	654
नेकी	655
सदक़ाते जारिया	655
तदब्बुर व तफ़क्कुर	656
अख़्लाक़े रज़ीला	656
ख़ुदबीनी	656
बेहयाई की इशाअत	656
दूसरों को हक़ीर समझना	656
रिया	657
ज़िना	658
ग़ुस्सा	659
ग़ीबत	660
ख़ियानत	661
बद-गुमानी	661

उन्वान (शीर्षक)	सफ़हा नम्बर

बाब–(परिच्छेद) 6–हयाते तय्यिबा के सुबह व शाम

उन्वान (शीर्षक)	सफ़्हा नम्बर

बाब—(परिच्छेद) 7 —मुनाकहत व नव्-मौलूद

बाब—(परिच्छेद) 8—मरज़ व इयादत

उन्वान (शीर्षक)	सफ़्हा नम्बर

☆ ☆ ☆

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अर्ज़े मुअल्लिफ़ (संपादकीय)

अल्-हम्दु लिल्लाहि व कफ़ा व सलामुन् अ़ला इबादिहिल्-लज़ीनस्तफ़ा अम्मा बाद। अदना ख़ादिम बारगाहे हज़रत हकीमुल् उम्मत मौलाना थानवी कुद्दिस सिर्रहू, अहक़र नाकारा मुहम्मद अ़ब्दुल हई अ़र्ज़ गुज़ार है कि हज़रत अक़्दस की आ़म तालीमात और दूसरे सभी अकाबिर[1] के इर्शादात से ये अम्र[2] व-हम्दुलिल्लाह मरकूज़े ख़ातिर[3] रहा है कि दीन व दुनिया की फ़लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात और आप सल्ल० की आ़दात व सुनन की इत्तिबाअ़[4] पर मौक़ूफ़[5] है जो सिर्फ़ नमाज़, रोज़ा और दीगर इबादात की हद तक नहीं, बल्कि ज़िन्दगी के हर शोबा-ए-अख़्लाक़ व आ़दात, मुआ़शरत व मुआ़मलात सब पर हावी है। अहादीसे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और शमाइले नबविय्या के मुतअ़ल्लिक़ जितना अ़ज़ीमुश्शान ज़ख़ीरा-ए-कुतुब हर ज़माने के मशाइख़ व मुहद्दिसीन ने उम्मत के लिए मोहैया किया है उन सब का हासिल यही है कि उम्मत हर शोबा-ए-ज़िन्दगी के मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की क़ौली[6] और अ़मली[7] हिदायात से वाक़िफ़ हो, और उनको अपना मक़्सदे ज़िन्दगी बनाये। मौजूदा दौर में जबकि सरवरे कौनेन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों से मुग़ायरत[8] बढ़ती जा रही है और मुसलमान अपने दीन की तालीमात को छोड़ कर ग़ैरों के तौर-तरीक़े इख़्तियार कर रहे हैं, इस बात की शदीद ज़रूरत है कि मुसलमानों को बार-बार इस्लामी तालीमात और सरकारे दोआ़लम सल्ल० की सुन्नतों की तरफ़ दावत दी जाए। क्योंकि मुसलमानों की दुनियवी और उख़रवी[9] हर तरह की सलाहो-फ़लाह इत्तिबाए सुन्नत ही में मुज़्मर[10] है।

1-प्रतिष्ठित जन। 2-कार्य। 3-हृदयंगम। 4-अनुसरण। 5-निर्भर। 6-वाचिक। 7-व्यावहारिक। 8-प्रतिकूलता। 9-पारलौकिक। 10-गोपक, छिपी।

इस ग़र्ज़ के लिए अर्से-ए-दराज़ से दिल में आर्ज़ू थी कि एक ऐसी आसान और मुख़्तसर किताब मुरत्तब[1] की जाए जिसका मुतालआ आम मुसलमानों को इत्तिबा-ए-सुन्नत की दिलकश ज़िन्दगी से रूशनास करा सके और जिस से वे आसानी के साथ सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी के बुनियादी तक़ाज़े मालूम कर सकें। यही वह दाइया[2] था जिसने मुझे इस किताब की तर्तीब पर आमादा किया।

अहक़र कोई आलिम नहीं, लेकिन यह महज़ अल्लाह तआला शानुहू का फ़ज़्ले अज़ीम है कि उसने उलमाए अहले तक़्वा व मशाइख़ की बाबरकत सोहबत व तर्बियत से फ़ैज़्याब व सर्फ़राज़ होने की सआदत नसीब फ़रमाई है। यह उन्हीं बुज़ुर्गों का फ़ैज़ाने नज़र है कि अहक़र के दिल में एक ऐसी किताब मुरत्तब करने का तक़ाज़ा पैदा हुआ जिसमें नबियुर्रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस्व-ए-हसना[3] से मुतअल्लिक़ ऐसी अहादीस जमा की जायें जिनका तअल्लुक़ इन्सान की ज़िन्दगी के हर शोबे और हर हाल से हो, और जिनकी रौशनी में इत्तिबाए सुन्नत का सहीह मफ़्हूम[4] इल्मी व अमली तौर पर ख़ूब वाज़ेह हो जाए और जिनकी बदौलत हर मुसलमान इस बढ़ते हुए इल्हाद[5] व ज़न्दक़ा[6] के माहौल व मुआशरे में अपने ईमान व इस्लाम को महफ़ूज़ व सलामत रख सके। चुनांचे अहक़र ने ख़ुद अपने लिए और अपने जैसे आम मुसलमानों के लिए बमशवरए उलमाए किराम अहादीस व शमाइले नबविय्या सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुस्तनद किताबों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुनन व तालीमात का इंतिख़ाब कर के उर्दू ज़बान में आसान उन्वानात के साथ एक मुफ़ीद और मोतद-बिही[7] ज़ख़ीरा जमा कर लिया।

अहक़र बावजूद अपने ज़ोफ़[8] और दीगर मशाग़िल के इस काम के सरअंजाम देने में एक तवील मुद्दत तक वालिहाना अंदाज़[9] में महव व मुतवज्जह रहा और लिल्लाहिल्हम्द कि बक़द्र अपनी इस्तेदादे इल्मी व सलाहियते फ़हम जो कुछ बन पड़ा उस को हदय-ए-नाज़िरीन कर दिया।

1-संपादित। 2-प्रभुत्व, जज़्बा। 3-सदाचार। 4-वास्तविक उद्देश्य। 5-नास्तिकता। 6-अधर्म। 7-पर्याप्त। 8-निर्बलता। 9-प्रेमपूर्ण रीति।

अल्लाह तआला शानुहू का एहसाने अज़ीम है कि इस किताब के मन्ज़रे वुजूद[1] में आते ही इस क़द्र मक़्बूलियत हासिल हुई कि तक़रीबन एक ही माह के अन्दर मत्बूआ[2] किताबें ख़त्म हो गयीं, और मुश्ताक़ीन[3] की तश्नगी[4] और फ़रमाइश बाक़ी रह गई। इसलिए पैहम तक़ाज़ों के पेशे नज़र फिर जल्द अज़-जल्द दूसरे एडीशन का एहतिमाम करना पड़ा।

इस अस्ना[5] में यह किताब अपनी मत्बूआ शकल में बाज़ मुस्तनद अहले इल्म की निगाह से भी गुज़री और इसमें बाज़ बातें फ़िक़्ही नुक्त-ए-नज़र से इस्लाह-तलब मालूम हुयीं, चुनांचे यह एडीशन बाज़ मुस्तनद अहले इल्म की नज़रे-सानी के बाद शाए हो रहा है और इसमें मज़्कूरा[6] फ़िक़्ही इश्कालात[7] को दूर कर दिया गया है।

इसके बावजूद यह बात मैं एक बार फिर अर्ज़ कर देना चाहता हूँ कि यह फ़िक़्ह की कोई बाक़ायदा किताब नहीं है जिसमें मौज़ू से मुतअल्लिक़ तमाम तफ़्सीली जुज़्इय्यात[8] मौजूद हों या मस्अले के हर पहलू का पूरा इहाता किया गया हो। लिहाज़ा ऐसी फ़िक़्ही तफ़्सीलात के लिए मुस्तनद अहले इल्म व फ़त्वा से रुजूअ कर के या मुफ़स्सल[9] फ़िक़्ही किताबों को देखकर और समझ कर अमल करना चाहिए, और इस ग़र्ज़ के लिए सय्यिदी व मुर्शिदी हकीमुल् उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी क़ुद्दिस सिर्रुहू की किताब ''बिहिश्ती ज़ेवर'' बेनज़ीर[10] है।

इसी तरह यह इल्मे हदीस की भी कोई बाक़ायदा किताब नहीं है जिसमें उसूले हदीस की तमाम फ़न्नी बारीकियों की रिआयत हो, बल्कि अगर फ़न्नी नुक्त-ए-नज़र से इस में अब भी कुछ फ़र्वो-गुज़ाश्त[11] हों तो बईद[12] नहीं। अगर्चे मैंने तमामतर मवाद[13] उन मुस्तनद किताबों से लिया है जिन के नाम, माख़ज़[14] के उन्वान[15] के तहत मज़्कूर हैं, लेकिन ये सब माख़ज़ अरबी से उर्दू में किये हुए तराजिम[16] हैं, लिहाज़ा यह मुम्किन है कि नक़ल दर-नक़ल और तर्तीब व इन्तिख़ाब में वह एहतियात बाक़ी न रह सकी हो जो

1-अस्तित्व। 2-प्रकाशित। 3-उत्सुक जन। 4-तृष्णा। 5-इस बीच। 6-चर्चित। 7-कठिनाई। 8-छोटी-छोटी बातें। 9-विस्तृत। 10-अनुपम। 11-त्यक्त। 12-संदेह। 13-सामग्री। 14-वह पुस्तक जिससे सामग्री उद्‌धृत की जाए। 15-शीर्षक। 16-अनुवाद।

हदीस के नक़ल करने में ज़रूरी है, चुनांचे अगर किसी हदीस की इल्मी तहक़ीक़ मक़्सूद हो तो अस्ल माख़ज़ से मुराजअत¹ की जाए।

मसलन ऐसा मुम्किन है कि किसी हदीस के साथ तश्रीही इज़ाफ़े क़ौसैन² में आने चाहिए थे, कहीं बग़ैर क़ौसैन के रह गए हों, अलबत्ता बार-बार अहले इल्म को दिखाने के बाद इस बात पर बहम्दुलिल्लाह इत्मीनान है कि अहादीस का मर्कज़ी मफ़्हूम ज़रूर वाज़ेह हो गया है और कोई बात इल्मी नुक़्ता-ए-नज़र से ऐसी बाक़ी नहीं रही जो ग़ैर मुस्तनद हो।

इसी के साथ किताब के ज़ाहिरी हुस्न और तर्तीब में बाज़ ऐसी बातें बाक़ी रह गई थीं जो बाज़ अस्हाबे ज़ौक़ को गरों गुज़रती थीं। इस इशाअत³ में उनको भी दूर करने की कोशिश की गई है। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह अहक़र की कोताहियों से दरगुज़र फ़रमा कर इस किताब को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता फ़रमाए, इससे आम मुसलमानों को फ़ायदा पहुँचाए और महब्बते रसूल सल्ल० और इत्तिबाए सुन्नत का सच्चा जज़्बा बेदार करने का ज़रिया बनाए और हम सबको इस पर इख़्लास के साथ अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्म आमीन।

24 दिसम्बर 1975 ई०

इब्नद् अल्ल कुल्लि शैइन क़दीर

अहक़र मुहम्मद अब्दुल हई

उफ़िय अन्हु

1-प्रवृत्त होना। 2-कोष्ठक। 3-प्रकाशन।

हिस्सए अव्वल (पहला भाग)

رَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ وَّجَنَّةُ نَعِيمٍ ٥

रौहुँव व रैहानुँव व जन्नतु नईम

अनुवाद

आराम, सुख-सामग्री और सुगंध है और नेअ़मत वाला बाग़ है।

मज़ामीने इफ़्तिताहिय्या

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ط

خطبه

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ۔
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ،
اَرْسَلَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى اِلٰى كَآفَّةِ النَّاسِ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ
وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا۔ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا
كَثِيْرًا ۔ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَالْحَمْدُ
لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى
اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔
رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ط اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल् करीम

ख़ुत्बा

सुब्हान कल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तआ़ला जद्दुक व ला इलाह ग़ैरुक।

अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू अर्सल हुल्लाहु तआ़ला इला काफ़्फ़तिन्नासि बिल्

हक़्क़ि बशीरँव् व नज़ीरँव् व दाइयन् इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम् मुनीरा। व सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व अ़ला आलिही व सहबिही व सल्लम तस्लीमन् कसीरन् कसीरा।

सुब्हान रब्बिक रब्बिल् इ़ज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ून व सलामुन् अ़लल् मुर्सलीन वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन।

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद ० अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद।

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउ़ल् अ़लीम।

ख़ुत्बा

(प्राक्कथन)

अनुवाद : शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। हम अल्लाह की तारीफ़ करते हैं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजते हैं।

ऐ अल्लाह तू बहुत पाक है और तेरी ही तारीफ़ है और तेरा नाम बड़ा बरकत वाला है और तू बहुत बुज़ुर्गी वाला है और तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद[1] नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक और साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने तमाम इन्सानों की तरफ़ हक़ के साथ भेजा, ख़ुशख़बरी देने वाला, डराने वाला और अल्लाह की तरफ़ से उसके हुक्म से लोगों को बुलाने वाला बना कर भेजा और रौशन चिराग़ बना कर भेजा। उन पर और उन की आल[2] पर और उनके साथियों पर बेशुमार दुरूद व सलाम हो।

1- पूजा के योग्य नहीं, 2-संतान, औलाद।

ये जो कुछ बयान करते हैं, तुम्हारा रब जो इज़्ज़त वाला है इससे वह पाक है और सलाम हो पैग़म्बरों पर और तमाम तारीफ़ अल्लाह रब्बुल् आलमीन[1] ही के लिए है।

ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्ल० पर और उनकी औलाद पर दुरूद भेजिये जैसा कि आप ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनकी औलाद पर दुरूद भेजा है। आप ही तारीफ़ के क़ाबिल और बुज़ुर्गी वाले हैं। ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्ल० और उनकी औलाद में बरकत दीजिये जैसा कि आपने इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनकी औलाद में बरकत दी है। आप ही तारीफ़ के क़ाबिल और बुज़ुर्गी वाले हैं। ऐ अल्लाह! हमारी दुआ क़बूल फ़रमा लीजिये क्योंकि आप सुनने वाले और जानने वाले हैं।

1- सारे संसार का पालनहार।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल् करीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान[1] निहायत रहम[2] वाला है।

हम अल्लाह की तारीफ़ करते हैं और अल्लाह के रसूल सल्ल० पर दुरूद भेजते हैं।

लमआ़त (रौशनी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जलालते शान और कमालाते नुबुव्वत ख़ुद अल्लाह तआ़ला के कलामे मुबीन (क़ुरआने मजीद) में है।

محمد حامد حمد خدا بس ❖ خدا مدح آفرین مصطفیٰ بس

"ख़ुदा मदह आफ़रीं मुस्तफ़ा बस ❖ मुहम्मद हामिद हम्दे ख़ुदा बस"

मतलब यह है कि: मुहम्मद सल्ल० अल्लाह की तारीफ़ कर रहे हैं और अल्लाह उनकी तारीफ़ कर रहा है।

हक़ तआ़ला जल्ल शानुहू ने हमारे रसूल मक़बूल अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० को तमाम अम्बिया और रसूलों में एक ख़ास इम्तियाज़[3] अ़ता फ़रमाया। आपको सय्यिदुल् अम्बिया क़रार दिया और आप की ज़ाते अक़्दस[4] को दुनिया के लिए एक मिसाली नमूना बनाकर भेजा है। इसीलिए अहले आ़लम[5] के लिए आप सल्ल० के तआ़रुफ़[6] और आप सल्ल० के औसाफ़ो-कमाल[7] को बतलाने का भी अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद ही अपने कलामे मुबीन में एहतिमाम फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया।

आयाते क़ुरआनिया (क़ुरआन की आयतें)

1.

﴿هُوَ الَّذِیٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰی وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَی الدِّیْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰی

1-बड़ा कृपाशील, 2-अत्यन्त दयावान, 3-विशिष्टता, 4-पवित्र व्यक्ति, 5-दुनिया वालों, 6-परिचय, 7-गुणों।

بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۖ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ﴾
سورة فتح آية:٢٩ـ ٢٨

हुवल्लज़ी अर्सल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल् हक़्क़ि लियुज़्हिरहू अलद्दीनि कुल्लिही व कफ़ा बिल्लाही शहीदा ० मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि वल्लज़ीन मअ़हू अशिद्दाउ अ़लल् कुफ़्फ़ारि रुहमाउ बैनहुम् तराहुम् रुक्कअ़न् सुज्जदैंयब्तग़ून फ़ज़्लम् मिनल्लाहि व रिज़्वाना (सूरए फ़त्ह, आयत: 28, 29)

अनुवाद: वह (अल्लाह) ऐसा है कि उसने अपने रसूल सल्ल० को हिदायत दी (यानी क़ुरआन) और सच्चा दीन (यानी इस्लाम) दे कर (दुनिया में) भेजा है ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब[1] करे और (हक़ ज़ाहिर करने के लिए) अल्लाह काफ़ी गवाह है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग आपके सोहबत-याफ़्ता[2] हैं वे काफ़िरों के मुक़ाबले में तेज़ हैं और आपस में मेहरबान हैं। ऐ मुख़ातब! तू उनको देखेगा कि कभी रुकूअ़ कर रहे हैं, कभी सज्दे कर रहे हैं, अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल और रज़ामन्दी की जुस्तुजू में लगे हैं। (बयानुल् क़ुरआन)

2– नीज़ यह भी इर्शाद फ़रमाया:

﴿ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ﴾ سورة آل عمران، آية: ١٦٤

लक़द् मन्नल्लाहु अ़लल् मुअ्मिनीन इज़् बअ़स फ़ीहिम् रसूलम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् यत्लू अ़लैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल् किताब वल् हिक्मत (सूरए आले इमरान, पार: 4, रुकू 17, आयत: 164)

अनुवाद: हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों पर एहसान किया कि उनमें उन्हीं की जिन्स[3] से एक ऐसे पैग़म्बर को भेजा कि वह उन लोगों

1– शक्तिशाली, 2– संगत वाले, 3– जाति।

को अल्लाह तआला की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं और उन लोगों (के ख़्यालात व रुसूमाते जिहालत से) सफ़ाई करते रहते हैं और उनको किताब और फ़हम[1] की बातें बताते रहते हैं। (बयानुल् क़ुरआन)

3- नीज़ यह भी वाज़ेह फ़रमाया[2] कि:-

﴿الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝﴾

سورة اعراف آية: ١٥٧

अल्लज़ीन यत्तबिऊनर्रसूलन्नबिय्यल् उम्मिय्यल्लज़ी यजिदूनहू मक्तूबन् इन्दहुम् फ़ित्तौराति वल्-इन्जीलि, यअ्मुरुहुम् बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हाहुम् अनिल् मुन्करि व युहिल्लु लहुमुत्तय्यिबाति व युहर्रिमु अलैहिमुल् ख़बाइस व यज़उ अन्हुम् इस्रहुम् वल् अग्लालल्लती कानत् अलैहिम् फ़ल्लज़ीन आमनू बिही व अ़ज़्ज़रूहु व नसरूहु वत्तबऊन्नूरल्लज़ी उन्ज़िल मअ़हू उलाइक हुमुल् मुफ़्लिहून०

(सूरए आराफ़, आयत: 157)

अनुवाद: जो लोग ऐसे रसूल नबीए उम्मी का इत्तिबाअ़[3] करते हैं जिनको वे लोग अपने पास तौरात और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं (जिनकी सिफ़त यह भी है कि) वह उनको नेक बातों का हुक्म फ़रमाते हैं और बुरी बातों से मना करते हैं और पाकीज़ा चीज़ों को उनके लिए हलाल बताते हैं और गन्दी चीज़ों को (बदस्तूर) उन पर हराम फ़रमाते हैं और उन लोगों पर जो बोझ और तौक़[4] थे उनको दूर करते हैं। सो जो लोग इस नबी (मौसूफ़) पर ईमान लाते हैं और इनकी हिमायत करते हैं और इनकी मदद करते हैं और उस नूर की इत्तिबाअ़ करते हैं, जो इनके साथ भेजा गया है, ऐसे लोग पूरी फ़लाह[5] पाने वाले हैं। (बयानुल् क़ुरआना)

1-समझ-बूझ, 2-स्पष्ट किया, 3-पैरवी, अनुसरण, 4-लोहे की भारी हँसली, 5-निजात

4– आप सल्ल० के नुत्क़[1] की शान यूँ फ़रमाइ :

﴿وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحٰى ۝﴾ سورة النجم آية: ٣-٤

व मा यन्तिक़ु अ़निल् हवा ० इन् हुव इल्ला वहयुँय्यूहा ०

(सूरए नज्म, आयत: 3,4)

अनुवाद: और न वह अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सानी[2] से बातें बनाते हैं। उनका इर्शाद निरी[3] वही (प्रकाशना) है जो उन पर भेजी जाती है।

5– फिर अपने बन्दों से अपने महबूब नबी सल्ल० की ख़ुसूसियत का इस तरह तआ़रुफ़ कराया:–

﴿لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝﴾ سورة توبة آية: ١٢٨

लक़द् जाअकुम् रसूलुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अ़ज़ीज़ुन् अ़लैहि मा अ़नित्तुम् हरीसुन् अ़लैकुम् बिल् मुअ्मिनीन रऊफ़ुर्रहीम् ० (सूरए तौबा, आयत: 128)

अनुवाद: (ऐ लोगो!) तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाए हैं, जो तुम्हारी जिन्स[4] (बशर[5]) से हैं। जिनको तुम्हारी मज़र्रत[6] की बात निहायत गिराँ[7] गुज़रती है, जो तुम्हारी मन्फ़अ़त[8] के बड़े ख़्वाहिशमन्द रहते हैं। (यि हालत तो सब के साथ है फिर बिल्ख़ुसूस) ईमानदारों के साथ तो बड़े शफ़ीक़ (और) मेहरबान[9] हैं। (बयानुल् क़ुरआन)

6 – ﴿اَلنَّبِيُّ أَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهٗ أُمَّهٰتُهُمْ ط﴾

سورة الاحزاب آية: ٦

1–वाणी, बोली, 2–मनचाही इच्छाएँ, 3–केवल, 4–जाति, 5–मनुष्य, 6–नुक़सान, 7–भारी, 8–लाभ, फ़ायदा, 9–दयालु।

अन्नबिय्यु औला बिल् मुअ्मिनीन मिन् अन्फुसिहिम् व अज़्वाजुहू उम्महातुहुम्
(सूरए अह्ज़ाब, आयत: 6)

अनुवाद: नबी मोमिनीन के साथ ख़ुद उनके नफ़्स से भी ज़्यादा तअ़ल्लुक़ रखते हैं और आप की बीवियाँ इन (मोमिनों की) माएँ हैं (यानी मुसलमानों पर अपनी जान से भी ज़्यादा आपका हक़ है और आपकी इताअ़त मुतलक़न और ताज़ीम बदर्जा-ए-कमाल वाजिब है। इस में अहकाम और मुआ़मलात आ गए)। *(बयानुल् क़ुरआन)*

7- फिर लोगों को अपने रसूले बरहक़ और हादिये दीने मुबीन[1] सल्ल० की इत्तिबाअ़ के लिए इस तरह हुक्म फ़रमाया:-

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾ سورة احزاب آية: ٢١

लक़द कान लकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुन् हसनतुन्
(सूरए अह्ज़ाब, आयत: 21)

तुम लोगों के लिए रसूलुल्लाह सल्ल० (की ज़ात) में एक उ़म्दा नमूना मौजूद है।

8-

﴿وَمَا اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ﴾ سورة الحشر آية: ٧

व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम् अ़न्हु फ़न्तहू
(सूरए हश्र, आयत: 7)

और रसूल तुमको जो कुछ दे दिया करें वह ले लिया करो और जिस चीज़ (के लेने) से तुमको रोक दें (और बउ़मूमे अल्फ़ाज़[2] यही हुक्म है अफ़आ़ल[3] और अह्काम[4] में भी) तुम रुक जाया करो।

9-

﴿مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ﴾ سورة النساء آية: ٨٠

1-स्पष्ट दीन का रास्ता दिखाने वाले, 2-साधारण शब्दों में, 3-किसी काम को करना, 4- आज्ञाएँ।

मैंयुतिइर्रसूल फ़क़द् अताअल्लाह *(सूरए निसा, आयत: 80)*

अनुवादः जिस शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल० की इताअत[1] की उसने अल्लाह तआला की इताअत की।

10-

﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ٥﴾ سورة احزاب آية: ٧١

व *मैंयुतिइल्लाह व रसूलहू फ़क़द् फ़ाज़ फ़ौज़न् अज़ीमा* ०।

(सूरए अहज़ाब, आयत: 71)

"और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा सो वह बड़ी कामयाबी को पहुँचेगा।" *(बयानुल कुरआन)*

11- फिर अपने महबूब नबीए करीम सल्ल० के उम्मतियों को यह बशारत अता फ़रमाई :-

﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ٥﴾

سورة النساء آية: ٦٩

व मैंयुतिइल्लाह वर्रसूल फ़उलाइक मअल्लज़ीन अनअमल्लाहु अलैहिम मिनन्नबिय्यीन वस्सिद्दीक़ीन वश्-शुहदाइ वस्सालिहीन व हसुन उलाइ-क रफ़ीक़ा ० *(सूरए निसा, आयत: 69)*

और जो शख़्स अल्लाह और रसूल का कहना मान लेगा तो ऐसे अश्ख़ास भी उन हज़रात के साथ होंगे जिन पर अल्लाह तआला ने इन्आम फ़रमाया है यानी अम्बिया और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सुलहा[2] और ये हज़रात बहुत अच्छे रफ़ीक़[3] हैं।

12- और इस पर भी मुतनब्बेह[4] फ़रमाया :

﴿ وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ

1- आज्ञा पालन, 2-नेक, 3- दोस्त, 4-सचेत करना, ख़बरदार करना।

مَاتَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝﴾ سورة النساء آية: ١١٥

व मैंयुशाक़िक़िर्रसूल मिम् बअ़्दि मा तबय्यन लहुल् हुदा व यत्तबिअ़् ग़ैर सबीलिल् मुअ़्मिनीन नुवल्लिही मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्नम व साअत् मसीरा ० (सूरए निसा, आयत: 115)

अनुवाद: और जो शख़्स रसूल की मुख़ालफ़त करेगा बाद इसके कि उसको अम्रे हक़[1] वाज़ेह[2] हो चुका था और मुसलमानों का रास्ता छोड़ कर दूसरे रास्ते पर हो लिया तो हम उसको जो कुछ वह करता है करने देंगे और उसको जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बुरी जगह है जाने की।

(बयानुल् क़ुरआन)

13-

﴿وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝﴾ سورة النساء آية: ١٤

व मैंयअ़्सिल्लाह व रसूलहू व यतअ़द्द हुदूदहू युद्ख़िल्हु नारन् ख़ालिदन् फ़ीहा व लहू अ़ज़ाबुम् मुहीन ० (सूरए निसा, आयत: 14)

अनुवाद: और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल का कहना न मानेगा और बिल्कुल ही उसके ज़ाबितों[3] से निकल जाएगा उसको आग में दाख़िल करेंगे इस तौर से कि वह उसमें हमेशा-हमेशा रहेगा और उसको ऐसी सज़ा होगी जिसमें ज़िल्लत[4] भी है। (बयानुल् क़ुरआन)

14- फिर अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम को अपनी ज़बाने मुबारक से अपने मन्सबे रिसालत और मर्तबा-ए-रुश्दो-हिदायत[5] के एलान के लिए ये अल्फ़ाज़ अ़ता फ़रमाए :-

﴿قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ﴾ سورة الاعراف آية: ١٥٨

1-सत्य, सच्चाई का मार्ग या कर्म, 2-स्पष्ट, 3-नियमों, 4-अपमान, 5-गुरु की शिक्षा व दीक्षा।

क़ुल या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमीअ़ निल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल् अर्ज़ि ला इलाह इल्ला हुव युह्यी व युमीत।

(सूरए अअ़्राफ़, आयत: 158)

अनुवाद: आप कह दीजिए कि ऐ (दुनिया जाहन के) लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ उस अल्लाह का भेजा हुआ (पैग़म्बर) हूँ जिसकी बादशाही तमाम आसमानों और ज़मीन में है। उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है। (बयानुल् क़ुरआन)

15-

﴿قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۔ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۔﴾

سورة يوسف آية: ١٠٨

क़ुल् हाज़िही सबीली अद्ऊ इलल्लाहि अ़ला बसीरतिन् अना व मनित्तबअ़नी

(सूरए यूसुफ़, आयत: 108)

अनुवाद: आप फ़रमा दीजिए कि यह मेरा तरीक़ा[1] है। मैं (लोगों को तौहीद) अल्लाह की तरफ़ इस तौर पर बुलाता हूँ कि मैं दलील पर क़ायम हूँ और मेरी इत्तिबाअ़[2] करने वाले।

16-

﴿قُلْ اِنَّنِيْ هَدَانِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ﴾ سورة الانعام آية: ١٦٢

क़ुल् इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम् मुस्तक़ीम.

(सूरए अन्ओ़ाम, आयत: 162)

अनुवाद: आप कह दीजिए कि मुझको मेरे रब ने एक सीधा रास्ता बतला दिया है। *(बयानुल् क़ुरआन)*

17-

﴿قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْلَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۔ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝﴾ سورة آل عمران آية: ٣١

1- मार्ग, धर्म, 2- अनुसरण करने वाले।

क़ुल इन्कुन्तुम् तुहिब्बूनल्लाह फ़त्तबिऊनी युहबिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनूबकुम् वल्लाहु ग़फ़ूर्रहीम ० (सूरए आले इमरान, आयत: 31)

अनुवाद: आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम ख़ुदा तआला से महब्बत रखते हो तो तुम लोग मेरी इत्तिबाअ़[1] करो, ख़ुदा तआला तुमसे महब्बत करने लगेंगे और तुम्हारे सब गुनाहों को मुआफ़ कर देंगे और अल्लाह तआला बड़े मुआफ़ करने वाले, बड़ी इनायत फ़रमाने वाले हैं। (बयानुल् क़ुरआन)

18– फिर अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूब व हबीब[2] सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम को ग़ायते-लुत्फ़[3] व करम से इन मोहतरम अल्फ़ाज़ के साथ मुख़ातब फ़रमाया:

﴿يٰسٓ ۝ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝﴾
سورة يٰس آية: ١-٤

यासीन् ० वल्-क़ुरआनिल् हकीम ० इन्नक लमिनल् मुर्सलीन ० अला सिरातिम् मुस्तक़ीम ० (सूरए यासीन, आयत: 1–4)

यासीन ० क़सम है क़ुरआन बा-हिकमत की कि बेशक आप मिन्जुम्ला[4] पैग़म्बरों के हैं (और) सीधे रास्ते पर हैं। (बयानुल् क़ुरआन)

19–

﴿يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ۝﴾ سورة الاحزاب آية: ٤٥-٤٦

या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्नाक शाहिदँव् व मुबश्शिरँव् व नज़ीरँव ० व दाइयन् इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम् मुनीरा ०

(सूरए अहज़ाब, आयत: 45–46)

अनुवाद: ऐ नबी! बेशक हमने आपको इस शान का रसूल बनाकर भेजा है कि आप (उम्मत के लिए) गवाह होंगे और आप (मोमिनीन के)

1– अनुसरण, 2– मित्र, दोस्त, 3– अत्याधिक दया अथवा दानशीलता, 4– सब में से।

बशारत[1] देने वाले हैं और (कुफ़्फ़ार को) डराने वाले हैं और (सब को) अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाने वाले हैं और आप एक रौशन चिराग़ हैं। *(बयानुल् क़ुरआन)*

20-

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا﴾ سورة سبا آية: ٢٨

व मा अर्सल्नाक इल्ला काफ़्फ़तल्लिन्नासि बशीरँव् व नज़ीरा ०

(सूरए सबा, आयत: 28)

अनुवाद: आप की बेअ़्सत[2] का मक़्सद तमाम इन्सानों के लिए बशीर[3] व नज़ीर[4] होना है।

21-

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ ۝﴾ سورة الانبياء آية: ١٠٧

व मा अर्सल्नाक इल्ला रहमतल्लिल् आ़लमीन ० (सूरए अम्बिया, आयत: 107)

अनुवाद: और हमने (ऐसे मज़ामीने नाफ़िआ़ देकर) आप को और किसी बात के वास्ते नहीं भेजा मगर जहान के लोगों (यानी मुकल्लफ़ीन[5]) पर मेहरबानी करने के लिए। *(बयानुल् क़ुरआन)*

22-

﴿إِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝﴾ سورة القلم آية: ٤

इन्नक लअ़ला ख़ुलुक़िन् अ़ज़ीम० (सूरए क़लम, आयत: 4)

अनुवाद: बेशक आप अख़्लाक़े हसना[6] के अअ़्ला पैमाने पर हैं।

(बयानुल् क़ुरआन)

1-शुभ सूचना, 2-भेजना, 3-शुभ सूचना सुनाने वाला, 4-डराने वाला, 5-कष्टदाता, निमन्त्रणदाता, 6- सदाचारण, अच्छे व्यवहार करने वाले।

23-

﴿ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ٥﴾ سورة الم نشرح آية: ٤

व रफ़अ़ना लक ज़िक्रक ० (सूरए इन्शिराह, आयत: 4)

अनुवादः और हमने आपकी ख़ातिर आप का ज़िक्र बुलन्द किया। *(बयानुल् क़ुरआन)*

24-

﴿ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ٥﴾ سورة الضحى آية: ٥

व लसौफ़ युअ़्तीक रब्बुक फ़तर्ज़ा ० (सूरए ज़ुहा, आयत: 5)

अनुवादः और अ़न्क़रीब अल्लाह तआ़ला आपको (आख़िरत में बकस्रत नेअ़्मतें) देगा, सो आप ख़ुश हो जायेंगे। *(बयानुल् क़ुरआन)*

25-

﴿وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًامِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ٥﴾ سورة حجر آية: ٨٧

व लक़द् आतैनाक सबअ़म् मिनल् मसानी वल् क़ुरआनल् अज़ीम ० (सूरए हिज्र, आयत: 87)

और हमने आप को सात आयतें दीं जो (नमाज़ में) मुकर्रर[1] पढ़ी जाती हैं (मुराद सूरए फ़ातिहा) और क़ुरआने अ़ज़ीम दिया। *(बयानुल् क़ुरआन)*

26-

﴿وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۭ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ٥﴾ سورة النساء آية: ١١٣

व अन्ज़लल्लाहु अ़लैकल् किताब वल् हिक्मत व अ़ल्लमक मालम् तकुन् तअ़्लमु व कान फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैक अ़ज़ीमा ० (सूरए निसा, आयत: 113)

अनुवादः और अल्लाह तआ़ला ने आप पर किताब और इल्म की बातें नाज़िल फ़रमायीं और आप को वे बातें बतलाई हैं जो आप न जानते थे और आप पर अल्लाह तआ़ला का बड़ा फ़ज़्ल है। *(बयानुल् क़ुरआन)*

1- पुनः पुनः बार-बार

बावजूद कसीरुत्तादाद[1] दुश्मनाने इस्लाम की पैहम[2] और बेइन्तिहा मुख़ालफ़तों, ईज़ारसानियों[3] और मारका आराइयों[4] के नबीए बर्हक़ सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने निहायत क़लील[5] अ़र्से में अपने मन्सबे रिसालत व एलाए कलिमतुल् हक़[6] में जो बेमिसाल और लाज़वाल[7] कामयाबी हासिल की उस पर अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने महबूब ख़ातिमुन्नबिय्यीन[8] सय्यिदुल मुर्सलीन[9] सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम को अपना ख़ुसूसी पर्वानए ख़ुशनूदी और रज़ाए कामिल[10] की सनदे इम्तियाज़ी[11] अ़ता फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया :

27–

﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ○ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ أَفْوَاجًا ○ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ○﴾ سورة نصر پاره: ٣٠

इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि वल् फ़त्हु ○ वरअय्तन्नास यद्ख़ुलून फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा ○ फ़सब्बिह् बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िर्हु इन्नहू कान तव्वाबा ○

(सूरए नस्र, पारा: 30)

अनुवाद: (ऐ मुहम्मद सल्ल०!) जब अल्लाह तआ़ला की मदद और फ़त्हे मक्का (मअ़ अपने आसार के) आ पहुँचे (यानी वाक़े हो जाए और जो आसार इस फ़त्ह पर मुरत्तब[12] होने वाले हैं ये हैं कि) आप लोगों को दीन (इस्लाम) में जूक़ दर जूक़[13] दाख़िल होते देख लें (तो उस वक़्त समझ लीजिए कि मक़्सूद दुनिया में रहने का और आपकी बेअ़सत[14] का कि तक्मीले दीन है वह पूरा हो गया और अब सफ़रे आख़िरत क़रीब है उस के लिए तैयारी कीजिए और) अपने रब की तस्बीह व तह्मीद कीजिए और उस से

1–जो गिन्ती में बहुत हों, 2–निरन्तर, मुसलसल, 3–तक्लीफ़ें पहुँचाना, 4–घमासान युद्ध, 5–अल्प, कम तादाद, 6–हक़ के कलिमे को बुलन्द करना, 7–जो कभी ख़त्म न हो, 8–आख़िरी नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम), 9–नबियों के सरदार (मुहम्मद सल्ल०), 10–सम्पूर्ण स्वीकृति या प्रसन्नता, 11–दो चीज़ों में फ़रक़ करने वाला, 12–क्रमागत, समाहृत, 13–झुण्ड के झुण्ड, 14– भेजना।

इस्तिग़फ़ार[1] की दरख़्वास्त कीजिए (यानी ऐसे उमूर[2] जो ख़िलाफ़े औला[3] वाक़े हो गए हों उनसे मग़्फ़िरत मांगिये) वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है।

(बयानुल् क़ुरआन)

फिर अपने ख़ातिमुल मुर्सलीन[4] रहमतुल्लिल् आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के ज़रिये से मख़्लूक़े आलम[5] पर अपने तमाम एहसानात व इन्आमात का इस तरह एलान फ़रमाया:-

28-

﴿ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ﴾ سورة المائدة آية: ٣

अल्-यौम अक्मल्-तु लकुम् दीनकुम् व अत्मम्तु अलैकुम निअ्मती व रज़ीतु लकुमुल् इस्लाम दीना . (सूरए माइदह, आयत: 3)

अनुवाद: आज के दिन तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मैंने मुकम्मल कर दिया और मैंने तुम पर अपना इनाम तमाम कर दिया और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन बनने के लिए पसन्द कर लिया।

29- फिर अल्लाह जल्ल शानुहू ने इन्सानियत के इस मुहसिने आज़म सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने क़ुर्ब व महब्बते ख़ुसूसी की ख़िल्अ़त[6] से सर्फ़राज़ फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया:-

﴿ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝ ﴾ سورة الاحزاب آية: ٥٦

इन्नल्लाह व मलाइकतहू युसल्लून अलन्नबिय्यि या अय्युहल्लज़ीन आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा ० (सूरए अह्ज़ाब, आयत: 56)

1-माफ़ी, क्षमा, 2-कार्य, काम, 3-वे कार्य जिन्हें करने पर पाप नहीं है लेकिन न करना ही बेहतर है, 4-रसूलों के आने के सिलसिले को ख़त्म करने वाले रसूल (यानी आख़िरी रसूल मुहम्मद सल्ल०), 5-दुनिया के सभी जीव-जन्तु, 6-राजा की ओर से सम्मानार्थ दिये जाने वाले वस्त्रादि, उपाधि प्रदान करना।

अनुवादः यक़ीनन अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं तो ऐ ईमान वालो तुम भी आप सल्ल० पर सलातो-सलाम भेजते रहा करो।

﴿ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद, अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद।

अनुवादः ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्ल० और उनकी औलाद पर दुरूद भेजिये जैसा कि आप ने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनकी औलाद पर दुरूद भेजा है। ऐ अल्लाह! आप तारीफ़ के क़ाबिल और बुज़ुर्गी वाले हैं। आप मुहम्मद सल्ल० और उनकी औलाद में बरकत दीजिए जैसा कि आपने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनकी औलाद में बरकत दी। ऐ अल्लाह! आप तारीफ़ के क़ाबिल और बुज़ुर्गी वाले हैं।

ख़ालिक़े काइनात[1] अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तमाम बनी नौए इन्सानी[2] को हुसूले शरफ़े इन्सानियत[3] व तक्मीले अ़ब्दियत[4] के लिए और अपने तमाम एहसानात व इनामात से मुशर्रफ़[5] व बहरा अन्दोज़[6] होने के लिए जब ऐसे ख़ैरुल बशर नबीए रहमत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पैकरे मिसाली[7] बनाकर मब्ऊ़स[8] फ़रमाया तो ईमान लाने वालों पर अदा-ए-शुक्र व इम्तिनान[9] के लिए जिस तरह आप सल्ल० पर सलात व सलाम भेजना वाजिब फ़रमाया है उसी तरह उनको हर शोबए ज़िन्दगी[10] में आपकी इताअ़त व इत्तिबाअ़ का भी मुकल्लफ़[11] बनाया है।

1-ब्रह्माण्ड का पैदा करने वाला, 2-पूरी मानव जाति, 3-मानवता के सौभाग्य की प्राप्ति, 4-ईश-भक्ति की पूर्ति, 5-इज़्ज़त बख़्शना, 6-लाभान्वित, 7-आदर्श, 8-अवतरित, 9-कृतज्ञता, 10-जीवन के प्रत्येक भाग, 11-ज़िम्मेदार।

इन तस्रीहाते रब्बानी[1] से बिल्कुल वाज़ेह है कि जो भी आप सल्ल० से जितना क़ुर्ब हासिल करेगा वह उसी क़द्र अल्लाह जल्ल शानुहू से क़रीब होगा और महबूब बन्दा बन जाएगा। गोया इत्तिबा-ए-सुन्नत ही रूहे इबादत और हासिले ज़िन्दगी है और बन्दे का जो फ़ेल सुन्नत के ख़िलाफ़ है वह फ़ी-नफ़िसही इबादत नहीं है बल्कि दानिस्ता[2] ख़िलाफ़े सुन्नत होने की वजह से महरूमी को वाजिब करने वाला ज़रूर है। अब देखना यह है कि इत्तिबाए रसूलुल्लाह सल्ल० अ़लैहि व सल्लम अफ़रादे उम्मत पर किन उमूर[3] में वाजिब और कहाँ बतौर तक़ाज़ा-ए-महब्बत[4] मुस्तहब[5] है।

"सीरते पाक"[6] के दो हिस्से हैं :-

एक हिस्सा "अ़क़ाइद व आमाल" का है और दूसरा आपकी "आ़म ज़िन्दगी" का। फिर आपकी अ़मली ज़िन्दगी में भी हमको दो क़िस्में नज़र आती हैं। एक आपकी "ख़ुसूसियात जैसे सौमे विसाल"[7] वग़ैरा और दूसरी "इत्तिफ़ाक़िया आ़दात" इसी बिना पर फ़िक़ह में भी "सुनने हुदा" और "सुनने ज़वाइद" के दो उन्वान अलग-अलग क़ायम कर दिए गए हैं। "सुनने हुदा" से मुराद आप की वह शरीअ़त[8] है जिसकी इत्तिबाअ़[9] पर आप की उम्मत भी मामूर[10] है। और जो आप की "इत्तिफ़ाक़िया आ़दात" थीं वे "सुनने ज़वाइद" में दाख़िल हैं। आपकी उम्मत उनकी इत्तिबाअ़ की मुकल्लफ़[11] नहीं। यह अलग बात है कि सहाबा में एक जमाअ़त ऐसी भी नज़र आती है, जिन्होंने अपने जज़्बात और शग़फ़े इत्तिबाअ़[12] में आपकी इत्तिफ़ाक़ियात में भी इत्तिबाअ़ की है। फिर आपकी शरीअ़त के उस हिस्से पर नज़र की जाती है जो "सुनने हुदा" कहलाता है, तो उसके भी दो पहलू नज़र आते हैं। एक वह जो उम्मत से मुतअ़ल्लिक़ है, मसलन किसी चीज़ का हलाल, हराम, वाजिब और मुस्तहब होना और दूसरा वह जो बन्दों के आमाल के सवाब व इक़ाब[13] से मुतअ़ल्लिक़ है, मसलन किसी इबादत का

1- अल्लाह ने जो स्पष्ट किया है, 2- जान-बूझ कर, 3- कार्य, 4- प्रेम की आवश्यकतावश, 5- प्रिय, 6- पवित्र जीवन, 7- निरन्तर रोज़े रखना, 8- क़ानून, 9- अनुसरण, 10- आदेशित, नियुक्त, 11- सुसज्जित, 12- अनुसरण की रुचि, 13- न्याय।

सवाब या किसी गुनाह के अ़ज़ाब की मिक़्दार या जन्नत व दोज़ख़ की राहत व आलाम[1] का तज़्किरा, अगर्चे दीन मज्मूई लिहाज़ से इन दोनों अज्ज़ा[2] को शामिल है, लेकिन जहाँ तक आमाले उम्मत का तअ़ल्लुक़ है वह सिर्फ़ पहली क़िस्म है। दीन का यह हिस्सा जो अ़मल या अ़क़ीदे से मुतअ़ल्लिक़ है, उसमें बाल बराबर फ़र्क़ आने से ''दीन'' और ''तहरीफ़े दीन''[3] यानी ''सुन्नत'' और ''बिद्अ़त''[4] का फ़र्क़ पड़ जाता है, इसके बर-ख़िलाफ़ अगर कोई शख़्स बिल्फ़र्ज़ किसी इबादत के सवाब या किसी गुनाह के अ़ज़ाब में कुछ नशेबो-फ़राज़[5] कर गुज़रता है तो अगर्चे बिला शुब्हा[6] वह एक बड़ी ग़लती का मुर्तकिब[7] है लेकिन उससे दीन के अस्ली हिस्से में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, उसके बद्-अ़वाक़िब[8] की ज़िम्मेदारी तन्हा उसी की ज़ात तक महदूद[9] रहती है।

(तर्जुमानुस्सुन्नह, चौथा हिस्सा, पेज: 87-88)

रसूल मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम के तमाम मकारिमे अख़्लाक़[10] अन्दाज़े इताअ़त व इबादात व हालाते जल्वत[11] व ख़ल्वत[12] और तमाम आमाल व अक़्वाल[13] और तअ़ल्लुक़ात व मुआ़मलाते ज़िन्दगी हर क़ौम और हर तब्क़ा व हर जमाअ़त और हर-हर फ़र्द के लिए हर ज़माना व हर वक़्त में बेहतरीन नमूना व मिसाल हैं। इसीलिए अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया :

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

लक़द् कान लकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुन् हसनह।

तुम लोगों के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) (की ज़ात) में एक उम्दा नमूना मौजूद है।

अल्लाह तआ़ला हम सब मुसलमानों को अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तमाम बाबरकत सुन्नतों की इत्तिबाअ़ और आपकी पाकीज़ा तालीमात पर इख़्लास[14] व सिद्क़[15] के साथ अ़मल की तौफ़ीक़े[16]

1-हर तरह के दुख, 2-भाग, 3-दीन में परिवर्तन, 4-दीन में नई बात उत्पन्न करना, 5-ऊँच-नीच, 6-निःसंदेह, 7-पाप करने वाला, 8-बुरे नतीजे, 9-सीमित, 10-उच्च कोटि का शिष्टाचार, 11-सबके सामने, 12-एकान्त में, 13-किसी बड़े व्यक्ति के कहे हुए प्रवचन या कथन, 14-सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिये अ़मल करना, 15-सच्चाई, 16-योग्यता।

वाफ़िर[1] व रासिख़[2] अता फ़रमाए और उसकी बदौलत इस दुनिया में हयात[3] व ममाते तय्यिबा[4] और आख़िरत में अपनी रज़ाए वासिआ व कामिला[5] और आपकी शफ़ाअ़ते कुब्रा[6] की दौलते लाज़वाल[7] नसीब फ़रमावें "आमीन"।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا حُبَّكَ وَحُبَّ نَبِيِّكَ وَاتِّبَاعَ سُنَّتِهٖ وَتَوَفَّنَا عَلٰى مِلَّتِهٖ وَاحْشُرْنَا فِيْ زُمْرَتِهٖ اٰمِيْنَ يَارَبَّ الْعَالَمِيْنَ بِحَقِّ مَحْبُوْبِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَرَحْمَةٍ لِّلْعَالَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ صَلَاةً وَّسَلَامًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔

अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना हुब्बक व हुब्ब नबिय्यिक व इत्तिबाअ़ सुन्नतिही व तवफ़्फ़ना अ़ला मिल्लतिही वह्शुर्ना फ़ी ज़ुम्रतिही आमीन। या रब्बल् आलमीन बिहक़्क़ि महबूबि रब्बिल् आलमीन व रहमतिल्लिल् आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन सलातंव् व सलामन् कसीरन् कसीरा।

अनुवादः ऐ अल्लाह! हमें अपनी महब्बत अ़ता फ़रमा (दे) और अपने नबी की महब्बत अ़ता फ़रमा और अपने नबी की सुन्नत की इत्तिबाअ़[8] नसीब फ़रमा और अपने दीन पर हमें वफ़ात[9] दे और अपने नबी की जमाअ़त में हमारा हश्र फ़रमा, आमीन। ऐ सारे जहानों के रब! (हमें तमाम बातें अ़ता फ़रमा) सारे जहानों के रब के महबूब के हक़ के वास्ते से जो कि तमाम आ़लम के लिए रहमत हैं। नाज़िल फ़रमाए अल्लाह तआ़ला आप पर और आपकी औलाद पर और सभी सहाबा रज़ि० पर बहुत ज़्यादा दुरूद व सलाम।

●●●

1-बहुत ज़्यादा, 2-पाबन्दी, 3-ज़िन्दगी, 4-पवित्र मौत, 5-बहुत अधिक व पूर्ण ख़ुशी, 6-बड़ी सिफ़ारिश, 7-कभी ख़त्म न होने वाली, 8-अनुसरण, 9-मृत्यु।

अ़ज़्मे इत्तिबाअ्

(आज्ञा पालन का संकल्प)

उस्व[1]-ए-रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ

इन्नमल् अअ्मालु बिन्नियाति

हर अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है। *(सहीह बुख़ारी)*

हज़रत शैख़ मुहक्किक़ शाह मुहम्मद अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी क़ुद्दिस सिर्रुहुल्-अ़ज़ीज़ फ़रमाते हैं कि यह हदीस उसूले दीन से अस्ल व अ़ज़ीम और तमाम हदीसों में जामेतरीन[2] और मुफ़ीदतरीन है। बाज़ हज़रात तो इसे इल्मे दीन का तिहाई हिस्सा कहते हैं। बई लिहाज़[3] कि दीन क़ौल व अ़मल और निय्यत पर मुश्तमिल[4] है और बाज़ ने इसे निस्फ़[5] इल्मे दीन क़रार दिया है। इस एतिबार से कि आमाल दो क़िस्म के हैं :-

(1) अ़मल बिल्-क़ल्ब[6]

(2) अ़मल बिल्-जवारिह[7]

आमाले क़ल्ब में निय्यत सबसे ज़्यादा अफ़्ज़ल[8] है इस बिना पर अ़मल इस निस्फ़ इल्म (निय्यत) से मुतअ़ल्लिक़ होगा बल्कि दोनों निस्फ़ों में बहुत बड़ा। अस्ल में निय्यत ही क़ल्बी, जिस्मानी और जुम्ला[9] इबादात की अस्ल बुनियाद है। अगर इस एतिबार से इसे तमाम इल्म कहें तो यह मुबालग़ा[10] भी दुरुस्त होगा। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

इस तालीफ़[11] की अस्ल ग़ायत[12] और हक़ीक़ी ज़रूरत और अहमियत

1-आदर्श, 2-प्रामाणिक, विस्तृत, 3-इस प्रकार, 4-आधारित, 5-आधा, 6-दिल से अ़मल करना, 7-शरीर के अंगों से अ़मल करना, 8-श्रेष्ठ, 9-समस्त, तमाम, 10-बात को बढ़ा चढ़ा कर कहना, 11- ग्रन्थ, 12-उद्देश्य, ग़रज़।

यही है कि जब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हुज़ूर आक़ा-ए-नामदार ख़फ़्ल्-बशर नबिय्युर्रहमत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तमाम ख़साइल[1] बरगुज़ीदा[2] का अमली व तालीमी एक मुकम्मल ज़ाबिता-ए-हयात[3] मौजूद है, तो फिर हमारे लिए शर्फ़े इन्सानियत और मर्तबा-ए-अब्दियत का दारो-मदार इसी पर है कि बमूजिबे हुक्मे रब्बानी और बमुक़्तज़ाए[4] हक़्क़े अज़्मत हमारे तमाम आमाल व फ़राइज़, वाजिबात इबादात और अवामिर[5] व नवाही[6] की अदायगी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत ही की निय्यत व अज़्म[7] से होना चाहिए और बमुक़्तज़ाए हक़्क़े महब्बत तमाम सुनने आदिया व आदाबे सीरते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना शिआरे[8] ज़िन्दगी बनाने में आप ही की इत्तिबाअ़ की निय्यत व अज़्म होना चाहिए ताकि हमारा हर ऐसा अमल इन्शाअल्लाह मक़बूल भी हो और इन्दल्लाह[9] महबूब भी हो और दुनिया में हयाते तय्यिबा[10] का बाइस[11] और आख़िरत में इसी निस्बते गरामी की बदौलत मीज़ाने अमल[12] में गराँबहा[13] व गराँक़द्र[14] भी हो। और यह निय्यत और अज़्म अम्रे इख़्तियारी[15] है और हर बशर[16] अम्रे इख़्तियारी का मुकल्लफ़[17] है।

मपिन्दार सादी कि राहे सफ़ा
तवाँ याफ़्त जुज़ दर पए मुस्तफ़ा।

ख़िलाफ़े पयम्बर कसे-रहगुज़ीद,
कि हरगिज़ ब-मन्ज़िल न ख़्वाहद रसीद।।

ऐ सादी! मत समझ कि सीधा रास्ता, मुस्तफ़ा सल्ल० के पीछे चले बिना मिल सकता है। पैग़म्बर के ख़िलाफ़ जो रास्ता इख़्तियार करेगा, वह हरगिज़ मन्ज़िल पर नहीं पहुँच सकता।

1-अच्छे स्वभाव, 2-पुनीतात्मा के स्वभाव, 3-सम्पूर्ण जीवन सिद्धान्त, 4-तक़ाज़ा या इच्छा से, 5-आदेश, 6-निषिद्ध विषय, 7-संकल्प, 8-नियम, 9-अल्लाह के यहाँ, 10-पवित्र जीवन, 11-कारण, 12-अमल के तराज़ू, 13-बहुमूल्य, 14-महत्वपूर्ण, 15-वह कार्य अथवा आदेश जो अनिवार्य न हो, 16-मनुष्य, 17-सुसज्जित।

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى حَبِيْبِهٖ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا

व सल्लल्लाहु तआला अला हबीबिही व आलिही व अस्हाबिही व सल्लम तस्लीमन् कसीरन् कसीरा।

और अल्लाह तआला दुरूद भेजे अपने हबीब पर और उनकी औलाद पर और उनके सहाबा रज़ि० पर और बहुत ज़्यादा सलाम हो।

बन्दा-ए-आजिज़

मुहम्मद अब्दुल हई

मकतबा-ए-अशरफ

फ़लाहे दारैन

(उभय लोक की सफलता)

दुनिया व आख़िरत में आफ़ियत[1] की दुआ

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी[2] है, फ़रमाया कि मैंने जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना– अल्लाह से यक़ीन और मुआ़फ़ात[3] की दुआ़ करो क्योंकि यक़ीन के बाद आ़फ़ियत से ज़्यादा बेहतर कोई चीज़ नहीं जो किसी को अ़ता हो। इसमें आपने दुनिया व आख़िरत की आफ़ियत जमा फ़रमा दी है और अम्रे वाक़िआ़[4] भी यही है कि दारैन में बन्दे के हालात यक़ीन और आ़फ़ियत के बग़ैर इस्लाह पज़ीर[5] नहीं हो सकते, चुनांचे यक़ीन से आख़िरत की सज़ाएँ दूर होती हैं और आ़फ़ियत से क़ल्बी व बदनी अम्राज़[6] से निजात पाता है। पस जब आ़फ़ियत और सेहत की यह शान है तो हम इन उमूर में नबीए अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नते तय्यिबा बयान करेंगे जो उन्हें पढ़ेगा वह महसूस करेगा कि आप सल्ल० की सुन्नते तय्यिबा अ़लल्-इत्लाक़[7] सबसे कामिल तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी है जिससे हर दो यानी बदन व क़ल्ब और दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी की सेहत व नेअ़मत हासिल की जा सकती है।

(ज़ादुल्मआ़द)

1-शान्ति, 2-उद्धृत, 3-अल्लाह का किसी को दुख-तकलीफ़ से सुरक्षित रखना और शान्ति देना, 4-वास्तविकता, 5-शुद्धि (सुधारगी) को स्वीकार करने वाला, 6-शारीरिक रोगों, 7-साधारणतया।

بَلِّغُوا عَنِّيْ وَلَوْ آيَةً

बल्लिग़ू अ़न्नी व लौ आयह (हदीस)

मेरी तरफ़ से पहुँचा दो अगर्चे एक ही बात हो।

बशारते तब्लीग़

(धर्म प्रसार की शुभ सूचना)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अल्लाह तआ़ला अपने उस बन्दे को सरसब्ज़ व शादाब[1] रखेगा जो मेरी बात सुने, फिर उसे याद कर ले और महफ़ूज़[2] रखे और दूसरों तक उसे पहुँचाए। पस बहुत से लोग फ़िक़ह[3] (यानी इल्मे दीन) के हामिल[4] होते हैं मगर ख़ुद फ़क़ीह[5] नहीं होते और बहुत से इल्मे दीन के हामिल उसको ऐसे बन्दों तक पहुँचा देते हैं जो उनसे ज़्यादा फ़क़ीह हों।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल हदीस)

1-हरा-भरा व खिला हुआ अर्थात् बहुत प्रसन्न व समृद्ध, 2-सुरक्षित, 3-इस्लामी धर्मशास्त्र, 4-धारण करने वाला, 5-फ़िक़ह के जानकार।

दीने मुबीन फ़ी अर्बईन

(चालीस बातों में वाज़ेह[1] दीन)

अ़न् सलमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु क़ाल सअल्तु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम अ़न् अर्बईन हदीस निल्लती क़ाल मन् हफ़िज़हा मिन् उम्मती दख़लल्-जन्नत, क़ुल्तु व मा हिय या रसूलल्लाह! क़ा-ल :-

1- *अन् तुअ्मिन बिल्लाहि*
2- *वल् यौमिल् आख़िरि*
3- *वल् मलाइकति*
4- *वल् कुतुबि*
5- *वन्नबिय्यीन*
6- *वल बअ्सि बअ्दल् मौति*
7- *वल् क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआ़ला*
8- *वअन् तश्हद अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदर् रसूलुल्लाहि*
9- *व तुक़ीमस्-सलात बिवुज़ूइन् साबिग़िन् कामिलिल्-लिवक़्तिहा*
10- *व तुअ्तियज़्ज़कात*
11- *व तसूम रमज़ान*
12- *व तहुज्जल बैत इन् कान लक मालुन्*
13- *व तुसल्लियस् नतै अशरत रकअ़तन् फ़ी कुल्लि यौमिन् व लैलतिन्*
14- *वल् वित्र ला तत्रुकुहु फ़ी कुल्लि लैलतिन्*
15- *वला तुश्रिक्बिल्लाहि शैआ*
16- *वला तउक़्क़ वालिदैक*
17- *वला तअ्कुल मालल् यतीमि ज़ुल्मन्*
18- *वला तश्रबिल् ख़म्र*

1- स्पष्ट,

19- वला तज़्नि

20- वला तहलिफ़् बिल्लाहि काज़िबन्

21- वला तश्हद् शहादत ज़ूरिन्

22- वला तअ्मल् बिल्हवा

23- वला तग़्तब अख़ाकल् मुस्लिम

24- वला तक़्ज़िफ़िल् मुह़सनत

25- वला तग़ुल्ल अख़ाकल् मुस्लिम

26- वला तल्अब्

27- वला तलु मअ़ल्लाहीन

28- वला तकुल्लिल् क़सीरि या क़सीरु तुरीदु बिज़ालिक ऐबहू

29- वला तस्ख़र बिअह़दिम् मिनन्नासि

30- वला तम्शि बिन्नमीमति बैनल् अख़वैनि

31- वश्कुरिल्लाह तआ़ला अ़ला नेमतिही

32- वस्बिर अलल् बलाइ वल्मुसीबति

33- वला तअ्मन् मिन् इक़ाबिल्लाहि

34- वला तक़्तअ़् अक़्रिबाअक

35- व सिल्हुम्

36- वला तल्अन् अहदम् मिन् ख़ल्क़िल्लाहि

37- वअक्सिर मिनत्तस्बीहि वत्तक्बीरि वत्तह्लीलि

38- वला तदअ़ हुज़ूरल् जुमुअ़ति वल ईदैनि

39- वअ़्लम् अन्न मा असाबक लम् यकुल्लियुख़्तिअक व मा अख़्तअक लम् यकुल्लियुसीबक

40- वला तदअ़ क़िराअतल् क़ुरआनि अ़ला कुल्लि हालिन् क़ुल्तु या रसूलल्लाहि मा सवाबु मन् हाफ़िज़ हाज़िहिल् अर्बईन? क़ाल हशरहुल्लाहु तआ़ला मअ़ल् अम्बियाइ वल् उ़लमाइ यौमल् क़ियामह

(कन्ज़ुल् उम्माल, हिस्सा-5, पेज : 238)

عَنْ سَلْمَانَؓ قَالَ سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ عَنْ اَرْبَعِيْنَ حَدِيْثًا الَّتِيْ قَالَ مَنْ حَفِظَهَا مِنْ اُمَّتِيْ دَخَلَ الْجَنَّةَ، قُلْتُ وَمَاهِيَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ؟ قَالَ:

﴿١﴾ اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ ﴿٢﴾ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ﴿٣﴾ وَالْمَلٰٓئِكَةِ ﴿٤﴾ وَالْكُتُبِ ﴿٥﴾ وَالنَّبِيِّيْنَ ﴿٦﴾ وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ﴿٧﴾ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى ﴿٨﴾ وَاَنْ تَشْهَدَ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ﴿٩﴾ وَتُقِيْمَ الصَّلٰوةَ بِوُضُوْءٍ سَابِغٍ كَامِلٍ لِوَقْتِهَا ﴿١٠﴾ وَتُؤْتِيَ الزَّكٰوةَ ﴿١١﴾ وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ ﴿١٢﴾ وَتَحُجَّ الْبَيْتَ اِنْ كَانَ لَكَ مَالٌ ﴿١٣﴾ وَتُصَلِّيَ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً فِيْ كُلِّ يَوْمٍ وَّلَيْلَةٍ ﴿١٤﴾ وَالْوِتْرَ لَا تَتْرُكْهُ فِيْ كُلِّ لَيْلَةٍ ﴿١٥﴾ وَلَاتُشْرِكْ بِاللّٰهِ شَيْئًا ﴿١٦﴾ وَلَاتَعُقَّ وَالِدَيْكَ ﴿١٧﴾ وَلَاتَأْكُلْ مَالَ الْيَتِيْمِ ظُلْمًا ﴿١٨﴾ وَلَا تَشْرَبِ الْخَمْرَ ﴿١٩﴾ وَلَاتَزْنِ ﴿٢٠﴾ وَلَاتَحْلِفْ بِاللّٰهِ كَاذِبًا ﴿٢١﴾ وَلَاتَشْهَدْ شَهَادَةَ زُوْرٍ ﴿٢٢﴾ وَلَاتَعْمَلْ بِالْهَوٰى ﴿٢٣﴾ وَلَا تَغْتَبْ اَخَاكَ الْمُسْلِمَ ﴿٢٤﴾ وَلَا تَقْذِفِ الْمُحْصَنَةَ ﴿٢٥﴾ وَلَا تَغُلَّ اَخَاكَ الْمُسْلِمَ ﴿٢٦﴾ وَلَا تَلْعَبْ ﴿٢٧﴾ وَلَاتَلْهُ مَعَ اللَّاهِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَلَا تَقُلْ لِلْقَصِيْرِ يَا قَصِيْرُ تُرِيْدُ بِذٰلِكَ عَيْبَهٗ ﴿٢٩﴾ وَلَا تَسْخَرْ بِاَحَدٍ مِّنَ النَّاسِ ﴿٣٠﴾ وَلَا تَمْشِ بِالنَّمِيْمَةِ بَيْنَ الْاَخَوَيْنِ ﴿٣١﴾ وَاشْكُرِ اللّٰهَ تَعَالٰى عَلٰى نِعْمَتِهٖ ﴿٣٢﴾ وَاصْبِرْ عَلَى الْبَلَآءِ وَ الْمُصِيْبَةِ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَاْمَنْ مِّنْ عِقَابِ اللّٰهِ ﴿٣٤﴾ وَلَا تَقْطَعْ اَقْرِبَائَكَ ﴿٣٥﴾ وَصِلْهُمْ ﴿٣٦﴾ وَلَا تَلْعَنْ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِ اللّٰهِ ﴿٣٧﴾ وَاَكْثِرْ مِنَ التَّسْبِيْحِ وَالتَّكْبِيْرِ وَالتَّهْلِيْلِ ﴿٣٨﴾ وَلَا تَدَعْ حُضُوْرَ الْجُمُعَةِ وَالْعِيْدَيْنِ ﴿٣٩﴾ وَاعْلَمْ اَنَّ

مَا اَصَابَكَ لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَكَ وَمَا اَخْطَاكَ لَمْ يَكُنْ لِيُصِيبَكَ ﴿٤٠﴾ وَلَا تَدَعْ قِرَاءَةَ الْقُرْانِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مَاثَوَابُ مَنْ حَفِظَ هٰذِهِ الْاَرْبَعِيْنَ قَالَ حَشَرَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى مَعَ الْاَنْبِيَاءِ وَالْعُلَمَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

(كنز العمال، ج٥/ص٢٣٨)

अनुवादः हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम से पूछा कि वे चालीस हदीसें क्या हैं जिनके बारे में यह फ़रमाया है कि जो उनको याद कर ले, जन्नत में दाख़िल होगा। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि:-

1- तू अल्लाह पर ईमान लाए
2- और आख़िरत के दिन पर
3- और फ़रिश्तों के वुजूद[1] पर
4- और सब आसमानी किताबों पर
5- और तमाम अम्बिया पर
6- और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दगी पर
7- और तक़्दीर पर कि भला और बुरा जो कुछ होता है सब अल्लाह ही की तरफ़ से है।
8- और गवाही दे इस पर कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद[2] नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के (सच्चे) रसूल हैं।
9- और हर नमाज़ के वक़्त कामिल वुज़ू करके नमाज़ को क़ायम करे (कामिल वुज़ू वह कहलाता है जिसमें आदाब व मुस्तहिब्बात की रिआयत रखी गई हो और हर नमाज़ के लिए नया वुज़ू मुस्तहब है।

1-अस्तित्व, मौजूद, 2-इबादत के योग्य।

और नमाज़ के क़ायम करने से मुराद यह है कि उसके तमाम ज़ाहिरी व बातिनी आदाब का एहतिमाम करे)

10- ज़कात अदा करे,

11- रमज़ान के रोज़े रखे,

12- अगर माल हो तो हज करे,

13- बारह रक्अत सुन्नते मुअक्कदा रोज़ाना[1] अदा करे (फ़ज्र से पहले दो रक्अत, ज़ुहर से क़ब्ल चार रक्अत, ज़ुहर के बाद दो रक्अत, मग़रिब के बाद दो रक्अत और इशा के बाद दो रक्अत)

14- वित्र किसी रात में न छोड़े,

15- अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक[2] न कर,

16- माँ-बाप की नाफ़रमानी न कर,

17- ज़ुल्म से यतीम[3] का माल न खा,

18- शराब न पी,

19- ज़िना[4] न कर,

20- झूठी क़सम न खा,

21- झूठी गवाही न दे,

22- ख़्वाहिशाते नफ़्सानी[5] पर अमल न कर,

23- मुसलमान भाई की ग़ीबत[6] न कर,

24- और अफ़ीफ़ा[7] औरत या मर्द पर तोहमत[8] न लगा,

25- अपने मुसलमान भाई से कीना[9] न रख,

26- लह्वो-लइब[10] में मशग़ूल न हो,

27- तमाशाइयों में शरीक न हो,

28- किसी पस्ता[11] क़द को ऐब की निय्यत से ठिगना मत कह,

1-प्रतिदिन, 2-साझी, 3-अनाथ, 4-व्यभिचार, 5-मनचाही, इच्छाओं, 6-चुग़ली, 7-पाक-साफ़, 8-आरोप, लांछन, 9-छल-कपट, 10-खेल-कूद, 11-ठिगना, नाटा।

29- किसी का मज़ाक़ मत उड़ा,

30- न मुसलमानों के बीच चुग़लख़ोरी कर,

31- अल्लाह जल्ल-शानुहू की नेअ़मतों पर उसका शुक्र कर,

32- बला और मुसीबत पर सब्र कर,

33- अल्लाह के अ़ज़ाब से बेख़ौफ़[1] मत हो,

34- अइज़्ज़ा[2] से क़ता तअ़ल्लुक़[3] मत कर,

35- बल्कि उनके साथ सिला-रहमी[4] कर,

36- अल्लाह की किसी मख़्लूक़[5] को लानत[6] मत कर,

37- सुब्हानल्लाह, अल्लाहु अक्बर और ला इलाह का अक्सर विर्द[7] रखा कर,

38- जुमा और ईदैन[8] में हाज़िरी मत छोड़,

39- और इस बात का यक़ीन[9] रख कि जो तक्लीफ़ और राहत[10] तुझे पहुँची वह मुक़द्दर[11] में थी जो टलने वाली न थी और जो कुछ नहीं पहुँचा वह किसी तरह भी पहुँचने वाला न था,

40- और कलामुल्लाह[12] की तिलावत किसी हाल में भी मत छोड़। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु कहते हैं, मैंने पूछा कि जो कोई इनको याद करे उसे क्या अज्र[13] मिलेगा?

रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि- हक़ सुब्हानहू उसका हश्र अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और उ़लमा-ए-किराम के साथ फ़रमाएंगे।

1-निडर, 2-रिश्तेदार, सम्बन्धी, 3-सम्बन्ध तोड़ना, 4-सम्बन्ध स्थापित करना, तअ़ल्लुक़ क़ायम करना, 5-जीव-जन्तु, प्राणी, 6-धिक्कार, फटकार, 7-बार-बार पढ़ना या करना, 8-दोनों ईदें, 9-विश्वास, 10-आराम, 11-भाग्य, 12-क़ुरआन मजीद, 13-बदला।

हिस्सए दोम (दूसरा भाग)

मज़्हरे ख़ुलुक़े अज़ीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

के

मकारिमे अख़्लाक़

(विशिष्ट सदाचरण को अभिव्यक्त करने वाले सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सद्व्यवहार)

وَاَحْسَنَ مِنْكَ لَمْ تَرَ قَطُّ عَيْنِى

व अहसन मिन्क लम् तर क़त्तु ऐनी

وَاَجْمَلَ مِنْكَ لَمْ تَلِدِ النِّسَآءُ

व अज्मल मिन्क लम् तलिदिन्निसाउ

خُلِقْتَ مُبَرَّأً مِّنْ كُلِّ عَيْبٍ

ख़ुलिक़्त मुबर्रअम् मिन् कुल्लि ऐबिन्

كَأَنَّكَ قَدْ خُلِقْتَ كَمَا تَشَآءُ

कअन्नक क़द् ख़ुलिक़्त कमा तशाउ

(सय्यिदना हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

अनुवाद

मेरी आँखों ने कभी आपसे ज़्यादा कोई हसीन[1] नहीं देखा, औरतों ने आप से ज़्यादा कोई साहिबे जमाल[2] नहीं जना[3] आपको हर ऐब[4] से पाक[5] पैदा किया गया है, जैसे आप अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ पैदा किये गए हों।

1- सुन्दर, 2-रूपवान, सुन्दर, 3-पैदा किया, 4-दोष, 5-पवित्र ।

सिफ़ाते क़ुद्सियह (पवित्र विशिष्टताएँ)

तआरुफ़े रब्बानी (पालनहार का परिचय)

हदीसे क़ुद्सी

सहीह बुख़ारी में बरिवायत हज़रत अ़ता रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ऐसी हदीस मर्वी[1] है जो हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अक्सर अख़्लाक़े करीमा[2] के लिए जामे है और कुछ सिफ़ाते आ़लिया[3] क़ुरआने करीम में भी मज़्कूर[4] हैं चुनाँचे हदीसे क़ुद्सी में है:-

1- يَا اَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّا اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا وَّحِرْزًا لِّلْاُمِّيِّيْنَ

या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सलनाक शाहिदँव् व मुबश्शिरँव् व नज़ीरँव् व हिर्ज़ल्लिल् उम्मिय्यीन।

अनुवादः ऐ नबी! बेशक हमने आपको हक़ पर गवाह बनाकर भेजा, फ़रमां-बरदारों[5] को बशारत[6] देने वाला और गुमराहों को अज़ाब से डराने वाला और उम्मियों[7] के लिए पनाह देने वाला बनाया है।

2- اَنْتَ عَبْدِیْ وَرَسُوْلِیْ

अन्त अ़ब्दी व रसूली

आप मेरे (ख़ासुल्ख़ास) बन्दे और रसूल हैं।

3- سَمَّيْتُكَ الْمُتَوَكِّلَ

सम्मैतुकल् मुतवक्किल

मैंने आपका नाम मुतवक्किल[8] रख दिया है क्योंकि हर मुआ़मले[9] में आप मुझ पर तवक्कुल[10] करते हैं।

1-उद्धृत, बयान करना, 2-बहुत अच्छे अख़्लाक़, सदाचरण, 3-उत्कृष्ट गुण, 4-उल्लिखित, 5-आज्ञाकारियों, 6-ख़ुशख़बरी, 7-अनपढ़ों, 8-अल्लाह पर भरोसा करने वाला, 9-विषय, 10-भरोसा।

4 -

لَيۡسَ بِفَظٍّ وَّلَا غَلِيۡظٍ

लैस बिफ़ज़्ज़िन् वला ग़लीज़िन्

न आप दुरुशत-ख़ू[1] हैं और न सख़्त दिल हैं।

5 -

وَلَا سَخَّابٍ فِى الْاَسْوَاقِ

वला सख़्ख़ाबिन् फ़िल् अस्वाक़ि

न आप बाज़ारों में शोरो-ग़ुल करने वाले हैं।

6 -

وَلَا يَدْفَعُ السَّيِّئَةَ بِالسَّيِّئَةِ

वला यद्फ़उस्सय्यिअत बिस्सय्यिअति

बुराई का बदला बुराई से कभी नहीं देते।

7 -

وَلٰكِنْ يَّعْفُوْ وَيَغْفِرُ

वला किंय्यअ़्फ़ू व यग़्फ़िरु

बल्कि मुआफ़ फ़रमाते हैं और दरगुज़र[2] करते हैं। गोया आप क़ुरआनी हुक्म :-

اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ

इद्फ़अ़् बिल्लती हिय अह्सनु

"बुराई का बदला बहुत उम्दा तरीक़े पर दिया करो" पर अ़मल पैरा[3] हैं।

8 -

وَلَا يَقْبِضُهُ اللّٰهُ حَتّٰى يُقِيْمَ بِهِ الْمِلَّةَ الْعَوْجَاءَ

वला यक़्बिज़ुहुल्लाहु हत्ता युक़ीम बिहिल् मिल्लतल् औजाअ

अल्लाह आपको उस वक़्त तक वफ़ात[4] नहीं देगा जब तक गुमराह

1-कठोर स्वभाव, 2-क्षमा करना, 3-उक्त कार्य का अनुसरण करने वाला, 4-मृत्यु।

क़ौम[1] को आपके ज़रिए सीधे रास्ते पर न ले आए यानी जब तक ये लोग कलिमा-ए لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ''ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' पढ़ कर सीधे मुसलमान न हो जाएं।

9-

وَيَفْتَحُ بِهٖ اَعْيُنًا عُمْيًا

व यफ़्तहु बिही अअ्युनन् उम्यन्

आपको उस वक़्त तक वफ़ात नहीं देगा जब तक काफ़िरों की अंधी आँखों को बीना[2] न फ़रमा दे।

10-

وَاٰذَانًا صُمًّا وَّقُلُوْبًا غُلْفًا

व आज़ानन् सुम्मंव व क़ुलूबन् ग़ुल्फ़न्

और बहरे कान और पर्दे पड़े दिलों को न खोल दे। बाज़ रिवायतों में ये सिफ़ात भी मज़ीद बयान की गई हैं।

11-

اُسَدِّدُهٗ بِكُلِّ جَمِيْلٍ

उसद्दिदुहू बिकुल्लि जमीलिन्

हर उम्दा ख़स्लत से आपकी तस्दीद यानी दुरुस्ती करता रहूँगा।

12-

وَاَهَبُ لَهٗ كُلَّ خُلُقٍ كَرِيْمٍ

व अहबु लहू कुल्ल ख़ुलुक़िन् करीमिन्

हर अच्छी ख़स्लत आपको अता करता रहूँगा।

13-

وَاَجْعَلُ السَّكِيْنَةَ لِبَاسَهٗ وَشِعَارَهٗ

व अज्अलुस्सकीनत लिबासहू व शिआरहू

मैं इत्मीनान को आपका लिबास और शिआर[3] (बदन से चिमटे हुए

1-पथभ्रष्ट जातियाँ, 2-देखने वाला, 3-अधः वस्त्र।

कपड़ों की तरह) बना दूँगा।

14 –

وَالتَّقْوٰى ضَمِيْرَهٗ

वत्तक़्वा ज़मीरहू

परहेज़गारी[1] को आपका ज़मीर यानी दिल बना दूँगा।

15 –

وَالحِكْمَةَ مَعْقُوْلَهٗ

वल्हिक्मत मअ़्क़ूलहू

हिक्मत को आपकी सोची-समझी बात बना दूँगा।

16 –

وَالصِّدْقَ وَالوَفَاءَ طَبِيْعَتَهٗ

वस्सिद्क़ वल् वफ़ाअ तबीअ़तहू

सच्चाई और वफ़ादारी को आपकी तबीअ़त बना दूँगा।

17 –

وَالعَفْوَ وَالمَعْرُوْفَ خُلُقَهٗ

वल् अ़फ़्व वल् मअ़्रूफ़ ख़ुलुक़हू

मुआ़फ़ी और नेकी को आपकी आ़दत बना दूँगा।

18 –

وَالعَدْلَ سِيْرَتَهٗ وَالحَقَّ شَرِيْعَتَهٗ وَالهُدٰى إِمَامَهٗ وَالإِسْلَامَ مِلَّتَهٗ

वल् अ़द्ल सीरतहू वल् हक़्क़ शरीअ़तहू वल् हुदा इमामहू वल् इस्लाम मिल्लतहू

इन्साफ़ को आपकी सीरत[2], हक़ को आपकी शरीअ़त[3], हिदायत को आपका इमाम और दीने इस्लाम को आपकी मिल्लत[4] का दर्जा दूँगा।

1-संयम, 2-जीवन-चरित्र, स्वभाव, 3-इस्लामी क़ानून, 4-जमाअ़त, धर्म।

19 –

أَحْمَدُ اِسْمُهٗ

अहमदु इस्मुहू

आका नामे नामी (लक़ब) अहमद है।

20 –

أَهْدِيْ بِهٖ بَعْدَ الضَّلَالَةِ

अह्दी बिही बअ़्दज़्ज़लालति

आप ही के ज़रिये तो मैं लोगों को गुमराही के बाद सीधा रास्ता दिखाऊँगा।

21 –

وَاُعَلِّمُ بِهٖ بَعْدَ الْجَهَالَةِ

व उअ़ल्लिमु बिही बअ़्दल् जहालति

जिहालते ताम्मा[1] के बाद मैं आप ही के ज़रिये इल्मो-इर्फ़ान[2] लोगों को अ़ता करूँगा।

22 –

وَاَرْفَعُ بِهِ الْخَمَالَةَ

व अर्फ़उ बिहित् ख़मालत

आप ही के ज़रिये मैं अपनी मख़्लूक़ को पस्ती[3] से निकाल कर बामे उरूज[4] तक पहुँचाऊँगा।

23 –

وَاُسْمِيْ بِهٖ بَعْدَ النَّكِرَةِ

व उस्मी बिही बअ़्दन्नकिरति

आपकी बदौलत अपनी मख़्लूक़ को जाहिल व नाशनासे हक़[5] होने के बाद बुलन्दी अ़ता करूँगा।

1-पूर्ण अज्ञान, 2-ज्ञान व विवेक, 3-नीचाई, 4-उच्च श्रेणी, ऊँचाई, 5-सत्य (हक़) से अपरिचित।

24 -

وَاُكَثِّرُ بِهٖ بَعْدَ الْقِلَّةِ

व उक्सिरु बिही बअ़्दल् क़िल्लति

आपकी हिदायत की बदौलत आपके मुत्तबिईन[1] की कम तादाद को बढ़ा दूँगा।

25 -

وَاُغْنِیْ بِهٖ بَعْدَ الْعَیْلَةِ

व उग़्नी बिही बअ़्दल् ऐलति

लोगों के फ़क़ो-फ़ाक़ा[2] में मुब्तला हो जाने के बाद मैं आपके ज़रिये उनकी हालत को ग़िना[3] में तब्दील कर दूँगा।

26 -

وَاُؤَلِّفُ بِهٖ بَیْنَ قُلُوْبٍ مُّخْتَلِفَةٍ وَاَهْوَآءٍ مُّشَتَّتَةٍ وَّاُمَمٍ مُّتَفَرِّقَةٍ

वउअल्लिफु बिही बैन क़ुलूबिम् मुख़्तलिफ़तिंव् व अह्वाइम् मुशत्ततितिंव् व उममिम् मुतफ़र्रिक़तिन्

इख़्तिलाफ़[4] रखने वाले दिलों, परागन्दा ख़्वाहिशात[5] और मुतफ़र्रिक़ क़ौमों[6] में मैं आप ही के ज़रिये उल्फ़त[7] पैदा करूँगा।

27 -

وَاَجْعَلُ اُمَّتَهٗ خَیْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ

व अज्अ़लु उम्मतहू ख़ैर उम्मतिन् उख़्रिजत लिन्नासि

मैं आपकी उम्मत को बेहतरीन उम्मत क़रार दूँगा जो इन्सानों की हिदायत के लिए ज़ुहूर[8] में आएगी।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِیْنَ ۔

व सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम व अ़ला आलिही व सहबिही अज्मईन

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-अनुयायी, 2-दरिद्रता, 3-समृद्धि, 4-मतभेद, 5-बुरी इच्छाएँ, 6-विभिन्न जातियों, 7-प्रेम, 8-प्रकट होना।

बशरियते कामिला
(परिपूर्ण मानवता)

हुज़ूरे अकरम सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात बाबरकात, आली सिफ़ात तमाम अख़्लाक़ व ख़साइल सिफ़ाते जमाल में अअ़ला व अशरफ़[1] व अक़्वा[2] है। इन तमाम कमालात व महासिन[3] का एहाता[4] करना और बयान करना इन्सानी क़ुदरत व ताक़त से बाहर है, क्योंकि वे तमाम कमालात जिनका आलमे इम्कान[5] में तसव्वुर[6] मुम्किन है सब के सब नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हासिल हैं। तमाम अम्बिया व मुर्सलीन आपके आफ़ताबे कमाल[7] के चाँद और अन्वारे जमाल[8] के मज़हर[9] हैं।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

"फ़लिल्लाहिल् हम्दु रब्बिल् आलमीन" (अल्लाह तआला ही के लिए तमाम ख़ूबियाँ हैं)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ قَدْرِ حُسْنِهٖ وَجَمَالِهٖ وَكَمَالِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ

वसल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही क़द्रि हुस्निही व जमालिही व कमालिही व बारक वसल्लम (मदारिजुन्नुबुव्वा)

इम्तियाज़े ख़ुसूसी
(विशेष अन्तर)

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैह "किताबे तहज़ीब" में लिखते हैं कि अल्लाह तआला ने अख़्लाक़ व आदात की तमाम ख़ूबियाँ और कमालात[10]

1- श्रेष्ठ, 2-पराक्रमी, 3-अच्छाइयाँ, 4-चहारदीवारी, परिवेष्टित, 5-सम्भावना रूपी, संसार, 6-कल्पना, 7-गुणों की पराकाष्ठा, 8-सुन्दरता की ज्योति, 9-प्रकट करने वाला, 10-अच्छाइयाँ।

और अअ़्ला सिफ़ात[1] हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते गिरामी[2] में जमा फ़रमा दी थीं। आपको अल्लाह तआ़ला ने अव्वलीन व आख़िरीन[3] के उ़लूम[4] से जो आप के शायाने-शान थे, बहरावर[5] फ़रमाया था, हाँलाकि आप उम्मी[6] थे कुछ लिख-पढ़ न सकते थे, न इन्सानों में से कोई आपका मुअ़ल्लिम[7] था। इसके बावजूद आपको ऐसे उलूम अ़ता फ़रमाए गए थे जो अल्लाह तआ़ला ने तमाम काइनात[8] में किसी और को नहीं दिये। आपको काइनाते अर्ज़ी[9] (ज़मीन) के ख़ज़ानों की कुंजियाँ पेश की गयीं मगर आप ने दुनियावी मालो-मताअ़[10] के बदले हमेशा आख़िरत को तरजीह[11] दी। (सल्लल्लाहु अ़लैहि व अ़ला आलिही व बारक व सल्लम)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इल्मो-हिक्मत के सबसे ज़्यादा जानने वाले, सबसे ज़्यादा मोहतरम[12], सबसे ज़्यादा मुंसिफ़[13] सबसे ज़्यादा हलीम व बुर्दबार[14], सबसे ज़्यादा पाक दामन व अ़फ़ीफ़[15] और लोगों को सबसे ज़्यादा नफ़ा पहुँचाने वाले और लोगों की ईज़ारसानी[16] पर सबसे ज़्यादा सब्र व तहम्मुल[17] करने वाले थे। सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

(वसाइलुल्-वुसूलि इला शमाइलिर्रसूल)

बुख़ारी व मुस्लिम में सय्यिदना अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा हसीन, बहादुर और फ़य्याज़[18] थे। इसकी वजह यह है कि आप तमाम इन्सानों में सबसे अशरफ़[19] थे और आपके मिज़ाज में सबसे ज़्यादा एतिदाल[20] था और जिसमें ये औसाफ़[21] हों तो उसका हर फ़ेअ़्ल[22] बेहतरीन अफ़आ़ल[23] का नमूना होगा। वह तमाम लोगों में हसीनतरीन[24] सूरत वाला

1-सर्वोत्कृष्टगुण, 2-महान व्यक्तित्व, 3-आदि व अन्त, 4-ज्ञान, 5-परिचित, 6-अनपढ़, 7-शिक्षक 8-ब्रह्माण्ड, 9-पृथ्वी, 10-धन-सम्पत्ति, 11-प्रधानता, 12-माननीय, आदरणीय, 13-न्यायकर्ता, 14-सहनशील व गम्भीर, 15-पवित्र, 16-दुख, 17-सहन, 18-दानी, 19-सर्वोत्तम, 20-हर हाल में समान रूप से रहना, 21-गुण, ख़ूबियाँ, 22-कार्य, 23-कार्यों, 24-सुन्दरतम।

होगा और उसका ख़ुल्क़[1] अख़्लाक़तरीन[2] अख़्लाक़ का नमूना। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुम्ला[3] जिस्मानी और रूहानी कमालात के जामे और ख़ूबसूरती और नेक सीरती[4] के हामिल थे और सबसे ज़्यादा करीम[5], सबसे ज़्यादा सख़ी[6] और सबसे बढ़कर जूदो-सख़ा[7] वाले थे।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا व सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तस्लीमन् कसीरन् कसीरा।

सूरते ज़ेबा

(मुख की सुन्दरता)

हदीस: हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा किसी को ख़ूबसूरत नहीं देखा। गोया आपके रुख़्सारे[8] मुबारक में सूरज तैर रहा है। जब आप मुस्कुराते थे तो दीवारों पर उसकी चमक पड़ती थी। (मदारिजुन्नुबुव्वा, किताबुश्शिफ़ा)

हिन्द बिन अबी हाला रज़ि० से रिवायत है:-

"देखने वालों की नज़र में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहरा-ए-अन्वर अज़ीम, बुज़ुर्ग और दबदबे वाला था। आपका चेहरा ऐसा चमकता था जैसे चौदहवीं का चाँद चमकता है।"

हुज़ूरे अक़्दस नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तय्यिब मुतय्यिब[9] होना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इर्शाद फ़रमाया है कि मैंने कोई अम्बर[10] और कोई मुश्क और कोई ख़ुशबूदार चीज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महक से ज़्यादा ख़ुशबूदार हर्गिज़ नहीं देखी। आप सल्ल० जब किसी से मुसाफ़हा करते तो तमाम दिन उस शख़्स को

1-आचरण, 2-सर्वोत्कृष्ट, 3-समस्त, 4-सुचरित, 5-कृपालु, 6-दानी, 7-दानशीलता, 8-मुख, 9-पवित्र व सुगन्धित, 10-एक प्रसिद्ध बहुमूल्य सुगन्धित पदार्थ जो मछली के मुख से निकलता है और दवा के काम आता है।

मुसाफ़हा की ख़ुशबू आती रहती और जब किसी बच्चे के सर पर हाथ रख देते तो वह ख़ुशबू के सबब[1] दूसरे लड़कों में पहचाना जाता।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस रास्ते से गुज़रते और कोई शख़्स आपकी तलाश में जाता तो वह ख़ुशबू से पहचान लेता कि आप सल्ल० इस रास्ते से तशरीफ़ ले गए हैं। यह ख़ुशबू बग़ैर ख़ुशबू लगाए हुए ख़ुद आप सल्ल० के बदने मुबारक में थी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तस्लीमन् कसीरन् कसीरा।

बस गई है फ़ज़ा में नक्हते हुस्न[2]।

वह जहाँ भी जिधर से गुज़रे हैं।। (आरिफ़ी)

ख़ुलुक़े अ़ज़ीम
(उत्कृष्ट व्यवहार)

अल्लाह तआ़ला शानुहू ने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते करीम में मकारिमे अख़्लाक़[3], महामिदे सिफ़ात[4] और उनकी कस्रत व क़ुव्वत और अ़ज़्मत के लिहाज़ से क़ुरआने करीम में मदहो-सना[5] फ़रमाई है, इर्शाद है:-

﴿ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝ ﴾ سورة القلم آية: ٤

इन्नक लअ़ला ख़ुलुक़िन अ़ज़ीमिन् ०(सूरए अल्-क़लम, आयतः 4)

बिला-शुब्हा आप बड़े ही साहिबे अख़्लाक़ हैं।

और फ़रमायाः

﴿ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ۝ ﴾ سورة النساء آية: ١١٣

व कान फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैक अ़ज़ीमा० (सूरए निसा, आयतः 113)

आप पर अल्लाह तआ़ला शानुहू का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

1-कारण, 2-सौन्दर्य की सुगन्ध, 3-सदाचरण, 4-प्रशंसनीय गुण, 5-प्रशंसा।

और ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ

बुइस्तु लिउतम्मिम मकारिमल् अख़्लाक़ि

यानी मुझे मकारिमे अख़्लाक़[1] की तक्मील[2] के लिए भेजा गया है।

एक और रिवायत में है:

لِاُكَمِّلَ مَحَاسِنَ الْاَفْعَالِ

लिउकम्मिल महासिनल् अफ़आलि

यानी अच्छे कामों को मुकम्मल करने के लिए भेजा गया है।

इससे मालूम हुआ कि आपकी ज़ाते मुक़द्दस[3] में तमाम महासिन[4] व मकारिमे अख़्लाक़ जमा थे और क्यों न हों जब्कि आपका मुअ़ल्लिम[5] हक़ तआ़ला शानुहू सब कुछ जानने वाला है।

सय्यिदतना हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अख़्लाक़े करीमा[6] के बारे में आपसे दरयाफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया: كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰنُ

"कान ख़ुलुक़ुहुल क़ुरआन" यानी आपका अख़्लाक़ क़ुरआन था।

इसके ज़ाहिरी मअ़ना यह हैं कि जो कुछ क़ुरआने करीम में अख़्लाक़ व सिफ़ाते महमूदा[7] मज़्कूर[8] हैं, आप उन सब से मुत्तसिफ़[9] थे।

"किताबुश्शिफ़ा" में क़ाज़ी अ़याज़ रहमतुल्लाहि अ़लैह मज़ीद ज़िक्र फ़रमाते हैं कि (नीज़ यह भी है) कि आपकी ख़ुशनूदी[10] क़ुरआन की ख़ुशनूदी के साथ और आपकी नाराज़गी क़ुरआन की नाराज़गी के साथ थी। मतलब यह है कि आपकी रज़ा[11] अम्रे इलाही[12] की बजाआवरी[13] में और आपकी नाराज़गी हुक्मे इलाही की ख़िलाफ़वर्ज़ी[14] में और इर्तिकाबे मआ़सी[15] में थी।

1-उत्कृष्ट आचरण, 2-पूर्ति, 3-पवित्र व्यक्तित्व, 4-अच्छाइयाँ, 5-शिक्षक, 6-सद्व्यवहार, 7-प्रशंसित गुण, 8-उल्लिखित, 9-गुणयुक्त, प्रशंसक, 10-प्रसन्नता, 11-ख़ुशी, 12-अल्लाह के आदेश, 13-पूरा करने, 14-अल्लाह के आदेश को न मानना, 15-पाप करना,

और "अवारिफुल्-मआरिफ़" में मज़्कूर है कि सय्यिदतना आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की मुराद यह थी कि क़ुरआने करीम ही हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुहज़्ज़ब[1] अख़्लाक़ था यानी:-

كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰن

"कान ख़ुलुक़ुहुल क़ुरआन" का यही मतलब है।

हक़ीक़ते वाक़िआ यह है कि किसी का फ़हम[2] और किसी का क़ियास[3] हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मक़ाम की हक़ीक़त और आपके हाल की कुन्हे[4] अज़ीम तक नहीं पहुँच सकता और बजुज़[5] अल्लाह तआला के कोई नहीं पहचान सकता, जिस तरह अल्लाह तआला को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मानिन्द[6] कमा-हक़्क़हू[7] कोई नहीं पहचान सकता।

مَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗ اِلَّا اللّٰهُ

"मा यअ्लमु तअ्वीलहू इल्लल्लाह" उसकी तावील[8] बजुज़ अल्लाह के कोई नहीं जानता। (हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी क़ुद्दिस सिर्रहुल् अज़ीज़) (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हिल्म व अफ़्व
(सहिष्णुता व क्षमा)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सब्र, बुर्दबारी[9] और दर्गुज़र[10] करने की सिफ़ात नुबुव्वत की अज़ीमतरीन[11] सिफ़तों[12] में से हैं।

हदीसे पाक में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी भी अपने ज़ाती मुआमले और मालो-दौलत के सिलसिले में किसी से

1-शिष्ट, 2-समझ, 3-अनुमान, 4-वास्तविकता, 5-अतिरिक्त, 6-समान, 7-जैसा उसका हक़ है, 8-स्पष्टीकरण, 9-धैर्य, 10-क्षमा, 11-विशिष्टतम, 12-गुणों।

इन्तिक़ाम[1] नहीं लिया। मगर उस शख़्स से जिसने अल्लाह तआला की हलाल कर्दा[2] चीज़ को हराम क़रार दिया तो उससे अल्लाह तआला ही के लिए बदला लिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम का सबसे ज़्यादा अशद व सख़्त[3] सब्र ग़ज़्वा-ए-उहद में था कि कुफ़्फ़ार ने आप सल्ल० के साथ जंग[4] व मुक़ाबला किया और आपको शदीदतरीन[5] रंज व अलम[6] पहुँचाया मगर आप सल्ल० ने उनपर न सिर्फ़ सब्र व अफ़्व पर ही इक्तिफ़ा फ़रमाया[7] बल्कि उन पर शफ़्क़त व रहम फ़रमाते हुए उनको इस ज़ुल्म व जहल में माज़ूर गर्दाना[8] और फ़रमाया :-

اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِىْ فَاِنَّهُمْ لَايَعْلَمُوْنَ

अल्लाहुम्महदि क़ौमी फ़इन्नहुम् ला यअ़लमून

यानी ऐ अल्लाह मेरी क़ौम को राहेरास्त पर ला क्योंकि वे जानते नहीं। और एक और रिवायत में है: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُمْ "*अल्लाहुम् मग़्फ़िरलहुम्*" -- ऐ अल्लाह इन्हें मुआफ़ फ़रमा दे और जब सहाबा रज़ि० को बहुत शाक़[9] गुज़रा तो कहने लगे या रसूलल्लाह काश! इन पर बद्दुआ फ़रमाते कि वे हलाक हो जाते, आप सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं लानत[10] के लिये मब्ऊ़स[11] नहीं हुआ हूँ, बल्कि हक़ की दावत और जहान के लिये रहमत होकर मब्ऊ़स हुआ हूँ। (अश्शिफ़ा, मदारिजुन्नुबुव्वा)

सब्र व इस्तिक़ामत
(धैर्य व दृढ़ संकल्प)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया -- अल्लाह के रास्ते में मुझे इतन डराया-धमकाया गया कि किसी और को इतना नहीं डराया गया और अल्ला

1-बदला, 2-हलाल की हुई, मान्य, 3-अति प्रचण्ड व कठोरतम, 4-युद्ध, 5-अत्याधिक, 6-दु
7-बस किया, 8-विवश समझा, 9-असह्य, नागवार, 10-धिक्कार, 11-भेजा हुआ।

की राह में मुझे इतना सताया गया कि किसी और को इतना नहीं सताया गया और एक दफ़ा तीस रात-दिन मुझ पर इस हाल में गुज़रे कि मेरे और बिलाल के लिये खाने की कोई चीज़ ऐसी न थी जिसको कोई जानदार खा सके सिवाय इसके जो बिलाल रज़ि० ने अपनी बग़ल के अन्दर छिपा रखा था। (मआरिफुल् हदीस, शमाइले तिर्मिज़ी)

वाक़िआ-ए-ताइफ़

हुज़ूर रहमतुल् लिल् आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तौहीद की तब्लीग़ के लिये हज़रत ज़ैद बिन हारिसा को साथ लिये हुए पापियादा[1] ताइफ़ पहुँचे और वहाँ के बाशिन्दों[2] को इस्लाम की दावत फ़रमाई जिससे वह सब बरअफ़रोख़्ता[3] होकर दरपा-ए-आज़ार[4] हो गए। वहाँ के सरदारों ने अपने इलाक़े और शहर के लड़कों को सिखा दिया। वे लोग वाज़[5] के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इतने पत्थर फेंकते कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लहू में तरबतर[6] हो जाते। ख़ून बह-बह कर नालैन[7] मुबारक में जम जाता और वुज़ू के लिये पाँव जूते से निकालना मुश्किल हो जाता। एक दफ़ा बद्‌मआशों और अवबाशों[8] ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम को इस क़द्र गालियाँ दीं, तालियां बजायीं, चीखें मारीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मकान के एहाते में जाने पर मज्बूर हो गए।

उसी मक़ाम पर एक दफ़ा वाज़[9] फ़रमाते हुए ख़ुदा के महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इतनी चोटें आयीं कि आप बेहोश होकर गिर पड़े। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी पीठ पर उठाया, आबादी से बाहर ले गए, पानी के छींटे देने से होश आया। (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

इस सफ़र में तक्लीफ़ों और ईज़ाओं[10] के बाद और एक शख़्स तक के

1-पैदल, 2-निवासी, रहने वाले, 3-क्रोधित, 4-कष्ट देने को तत्पर, 5-धर्मोपदेश, 6-भीग जाते, 7-जूते, 8-लुच्चे लफ़ंगे, 9-नसीहत, धर्मोपदेश, 10-पीड़ाओं।

मुसलमान न होने के रंज व सद्मे के वक़्त भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम का दिल अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत और महब्बत से लब्रेज़[1] था। उस वक़्त आप सल्ल० ने जो दुआ़ मांगी उसके अल्फ़ाज़[2] ये हैं:

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضُعْفَ قُوَّتِىْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِىْ وَهَوَانِىْ عَلَى النَّاسِ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَاَنْتَ رَبِّىْ اِلٰى مَنْ تَكِلُنِىْٓ اِلٰى بَعِيْدٍ يَّتَجَهَّمُنِىْ اَوْ اِلٰى عَدُوٍّ مَّلَّكْتَهٗ اَمْرِىْٓ اِنْ لَّمْ يَكُنْ بِكَ عَلَىَّ غَضَبٌ فَلَآ اُبَالِىْ وَلٰكِنْ عَافِيَتُكَ هِىَ اَوْسَعُ لِىْٓ اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِىْٓ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلُحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ مِنْ اَنْ يَّنْزِلَ بِىْ غَضَبُكَ اَوْ يَحِلَّ عَلَىَّ سَخَطُكَ لَكَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى، لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِكَ۔ (تاریخ طبری)

अल्लाहुम्म इलैक अश्कू ज़ुअ़्फ़ कुव्वती व क़िल्लत हीलती व हवानी अ़लन्नासि या अर्हमर्राहिमीन अन्त रब्बुल-मुस्तज़्अ़फ़ीन व अन्त रब्बी इला मन् तकिल्नी इला बई़दिय्-यतहज्जमुनी अव् इला अ़दुव्विम् मल्लक्तहू अम्री इल्लम् यकुन् बिक अ़लय्य ग़ज़बुन् फ़ला उबाली वला किन्न आ़फ़ियतक हिय अव्सउ़-ली अऊ़ज़ु बिनूरि वज्हिकल्लज़ी अश्रक़त् लहुज़्ज़ुलुमातु व सलुह अ़लैहि अम्रुद्दुन्या वल् आख़िरति मिन् अंय्यन्ज़िल बी ग़ज़बुक अव् यहिल्ल अ़लय्य सख़तुक लकल् उ़त्बा हत्ता तर्ज़ा ला हौल वला कुव्वत इल्लाबिक। (तारीख़े त़बरी)

अनुवाद: ऐ अल्लाह मैं अपने ज़ोफ़[3], बेबसी और लोगों की नज़रों में अपनी तहक़ीर[4] और बेसरो-सामानी की फ़रयाद तुझ ही से करता हूँ। ऐ अर्हमुर्राहिमीन[5] ऐ दरमान्दा[6] नातवानों[7] के मालिक तू ही मेरा रब[8] है। ऐ मेरे आक़ा! तू मुझे किसके सुपुर्द करता है, बेगानों के जो तुर्श-रू[9] होंगे या दुश्मन के जो मेरे नेक व बद[10] पर क़ाबू रखेगा। लेकिन जब तू मुझसे

1-परिपूर्ण, 2-शब्द, 3-दुर्बलता, 4-तुच्छता, 5-कृपा व दया करने वाले, 6-निःसहायों व बेकसों, 7-कमज़ोरों, 8-पालनहार, 9-चिड़चिड़े, 10-बुरे।

नाख़ुश नहीं है, तो मुझे इसकी कुछ पर्वाह नहीं क्योंकि तेरी आफ़ियत व बख़्शिश मेरे लिये ज़्यादा वसीअ़ है। मैं तेरी ज़ाते पाक के नूर की पनाह चाहता हूँ, जिससे आसमान रौशन हुए और जिससे तारीकियां[1] दूर हुयीं और दुनिया व आख़िरत के काम ठीक हुए। तुझसे इस बात की पनाह चाहता हूँ कि मुझ पर ग़ज़ब नाज़िल करे या तेरी नाख़ुशी मुझ पर वारिद हो[2]। इताब[3] करने का तुझी को हक़[4] है, हत्ताकि[5] तू राज़ी हो जाए और तेरी मदद और ताईद के बग़ैर किसी को कोई क़ुद्रत[6] नहीं। (तबरी, जिल्द-2, पेज : 81)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ताइफ़ से वापस होते हुए यह भी फ़रमाया: "मैं इन लोगों की तबाही के लिये क्यों दुआ़ करूँ। अगर ये लोग अल्लाह तआ़ला पर ईमान नहीं लाए तो क्या हुआ। उम्मीद है कि इनकी आइन्दा नस्लें ज़रूर अल्लाह वाहिद[7] पर ईमान लाने वाली होंगी।

(आ़इशा रज़ि० से सहीह़ मुस्लिम, किताब रहमतुल्लिल् आ़लमीन)

रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शाने अफ़्व व करम[8]

कुफ़्फ़ारे मक्का इक्कीस साल तक रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपके नाम लेवाओं को सताते रहे, ज़ुल्म व सितम का कोई हर्बा[9] ऐसा न था जो उन्होंने ख़ुदाए वाहिद के परस्तारों[10] पर न आज़माया हो हत्ताकि वे घर-बार व वतन छोड़ने पर मज्बूर हो गए। लेकिन जब मक्का फ़तह हुआ तो इस्लाम के ये बदतरीन[11] दुश्मन मुकम्मल तौर पर रसूले अकरम सल्ल० के रहमो-करम पर थे और आप सल्ल० का एक इशारा उन सब को ख़ाको-ख़ून में मिला सकता था, लेकिन हुआ क्या?

उन तमाम जब्बाराने[12] क़ुरैश से जो ख़ौफ़ और नदामत[13] से सर नीचे डाले आपके सामने खड़े थे। आप सल्ल० ने पूछा:-"तुम्हें मालूम है कि मैं

1-अंधेरियां, 2-पहुँचे, 3-क्रोध, 4-अधिकार, 5-यहाँ तककि, 6-शक्ति, 7-एक अल्लाह, 8-क्षमा व कृपा, 9-कपट हथियार, 10-इबादत करने वालों, 11-सबसे बुरे, 12-अत्याचारी, 13-पश्चाताप।

तुम्हारे साथ क्या मआमला करने वाला हूँ "?

उन्होंने दबी ज़बान में जवाब दिया:- 'ऐ सादिक़[1]! ऐ अमीन[2] तुम हमारे शरीफ़ भाई, शरीफ़ बरादरज़ादे[3] हो। हमने तुम्हें हमेशा रहम-दिल पाया है"।

आप ने फ़रमाया:- आज मैं तुम से वही कहता हूँ जो यूसुफ़ अ़लैहि० ने अपने भाईयों से कहा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया "तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं, जाओ आज तुम सब आज़ाद हो"।

(किताबुश्शिफ़ा, इब्ने हिशाम)

फ़ित्रते सलीमा

(शान्त स्वभाव)

आप सल्ल० तमाम अहवाल[4] व अक़्वाल[5] व अफ़आ़ल[6] में कबाइर[7] और मुहक़्क़िक़ीन[8] के नज़्दीक सग़ाइर[9] से भी मासूम थे और आपसे किसी क़िस्म की वादा-ख़िलाफ़ी या हक़ से एराज़ का सुदूर[10] मुम्किन ही न था, न क़स्दन्[11] न सह्वन[12], न सेहत में, न मरज़ में, न वाक़ई मुराद लेने में, न ख़ुश तबई[13] में, न ख़ुशी में, न ग़ज़ब[14] में।

ईफ़ाए अ़हद

(प्रतिज्ञा व संकल्प पूरा करना)

जंगे बदर के मौक़े पर मुसलमानों की तादाद बहुत क़लील[15] थी और मुसलमानों को एक-एक आदमी की अशद[16] ज़रूरत थी। हुज़ैफ़ा बिन अल् यमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और अबू हुसैल रज़ि० दो सहाबी रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़

1-सच्चे, 2-अमानतदार, 3-भतीजा, 4-हालतों, 5-कथनों, 6-कामों, 7-बड़े गुनाह, 8-अनुसंधान कर्ता, 9-छोटे गुनाह, 10-अर्थात किसी की भले काम से मुंह मोड़ना आप से मुम्किन ही न था, 11-जानबूझ कर, 12- भूलकर, 13- हासप्रियता, 14-गुस्सा, 15-कम, 16-अत्य अधिक।

किया या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हम मक्का से आ रहे हैं। रास्ते में कुफ़्फ़ार ने हम लोगों को गिरफ़्तार कर लिया था और इस शर्त पर रिहा किया है कि हम लड़ाई में आप सल्ल० का साथ न देंगे, लेकिन यह मज्बूरी का अहद था। हम ज़रूर काफ़िरों के ख़िलाफ़ लड़ेंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया:- " हर्गिज़ नहीं, तुम अपना वादा पूरा करो और लड़ाई के मैदान से वापस चले जाओ। हम मुसलमान हर हाल में वादा पूरा करेंगे। हमको सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की मदद दर्कार है"।

(सहीह मुस्लिम, बाबुल् वफ़ाइ बिल्-अ़हद, भाग-2, पेज: 89)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल हम्सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि बेअ़सत[1] से पहले मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कोई चीज़ ख़रीदी, कुछ रक़म बाक़ी रह गई, मैंने हुज़ूर सल्ल० से वादा किया कि इसी जगह लेकर हाज़िर होता हूँ, फिर मैं भूल गया, तीन दिन के बाद मुझे याद आया, मैं वहाँ पहुँचा तो क्या देखता हुँ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसी जगह तशरीफ़ फ़रमा[2] हैं। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया – तुमने मुझे मशक़्क़त[3] में डाल दिया। तीन दिन से इसी जगह तुम्हारा इन्तिज़ार[4] कर रहा हूँ।(अबू दाऊद ने इसको रिवायत किया) इस वाक़िआ[5] में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तवाज़ो[6] और ईफ़ाए अ़हद[7] की इन्तिहा है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

शुजाअ़त
(बहादुरी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया -- कि मुझको और लोगों पर चार चीज़ों में फ़ज़ीलत[8] दी गई है - सख़ावत[9], शुजाअ़त[10], क़ुव्वते मर्दुमी[11] और मुक़ाबिलि[12] पर ग़ल्बा और आप सल्ल० नुबुव्वत से क़ब्ल[13] भी और बाद,

1-नुबुव्वत, 2-रुके हुए, 3-कष्ट, 4-प्रतीक्षा, 5-घटना, 6-विनम्रता 7-प्रतिज्ञा पूर्ति, 8-प्रधानता, 9-दानशीलता, 10-वीरता, 11-पौरुष शक्ति, 12-विरोधी, 13-पहले।

यानी ज़माने-ए-नुबुव्वत में भी साहिबे वजाहत[1] थे। (नश्वतीब)

ग़ज़्वा-ए-हुनैन[2] के मौक़े पर कुफ़्फ़ार के तीरों की बौछार से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन में एक किस्म का हैजान[3], परेशानी, तज़ल्ज़ुल[4], डगमगाहट पैदा हो गई थी मगर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी जगह से जुंबिश तक न फ़रमाई[5], हाँलाकि घोड़े पर सवार थे और अबू सुफ़ियान बिन हारिस आपके घोड़े की लगाम पकड़े खड़े थे। कुफ़्फ़ार चाहते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हम्ला कर दें। चुनांचे[6] आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घोड़े से उतरे और अल्लाह तआला से मदद मांगी और ज़मीन से एक मुश्त् ख़ाक[7] लेकर दुश्मनों की तरफ़ फेंकी तो कोई काफ़िर ऐसा न था जिसकी आँख उस ख़ाक से न भर गई हो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस वक़्त यह शेर पढ़े:-

أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبْ أَنَا ابْنُ عَبْدِالْمُطَّلِبْ

अनन्नबिय्यु ला कज़िब, अना इब्नु अब्दिल्मुत्तलिब।

मैं नबी हूँ इसमें किज़्ब[8] नहीं, मैं अब्दुल् मुत्तलिब की औलाद हूँ।

नोट:- अना में "अ" (।) नहीं पढ़ा जाता है। अत: यहाँ भी "अना" न पढ़ कर "अन" पढ़ना चाहिए।

उस रोज़ आप सल्ल० से ज़्यादा बहादुर, शुजाअ़[9] और दिलेर कोई न देखा गया। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया है -- मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बढ़ कर न कोई शुजाअ़ देखा और न मज़्बूत देखा और न फ़य्याज़[10] देखा और दूसरे अख़्लाक़ के एतिबार से पसन्दीदा देखा और हम जंगे बदर के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आड़ में पनाह लेते थे और बड़ा शुजाअ़ वह शख़्स समझा जाता

1-प्रतिष्ठित, 2-हुनैन की लड़ाई, 3-बेचैनी, 4-हलचल, 5-हिले तक नहीं, 6-अत:, 7-एक मुट्ठी मिट्टी, 8-झूठ, 9-वीर, 10-दानी।

था जो मैदाने जंग में आपसे नज़्दीक रहता, जबकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुश्मन के क़रीब होते थे, क्योंकि इस सूरत में उस शख़्स को भी दुश्मन के क़रीब रहना पड़ता था। (नश्रुत्तीब)

सख़ावत
(दानशीलता)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अव्वल तो तमाम लोगों से ज़्यादा सख़ी[1] थे (कोई भी आपकी सख़ावत का मुक़ाबला न कर सकता था कि ख़ुद फ़क़ीराना ज़िन्दगी बसर करते थे और अ़ताओं[2] में बादशाहों को शर्मिन्दा करते थे। एक दफ़्अ़ निहायत सख़्त एहतियाज[3] की हालत में एक औ़रत ने चादर पेश की और सख़्त ज़रूरत की हालत में आप सल्ल० ने पहनी। उसी वक़्त एक शख़्स ने मांग ली। आप सल्ल० ने मर्हमत[4] फ़रमा दी। आप सल्ल० क़र्ज़ लेकर ज़रूरतमन्दों की ज़रूरत को पूरा फ़रमाते थे और क़र्ज़ख़्वाह[5] के सख़्त तक़ाज़े के वक़्त कहीं से अगर कुछ आ गया और अदाए क़र्ज़ के बाद बच गया तो जब तक वह तक़्सीम[6] न हो जाए, घर में तशरीफ़ न ले जाते थे, बिल्ख़ुसूस[7] रमज़ानुल् मुबारक के महीने में आख़ीर तक बहुत ही फ़य्याज़ रहते (कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ग्यारह माह की फ़य्याज़ी भी इस महीने की फ़य्याज़ी के बराबर न होती थी) और इस महीने में जब भी हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाते और आप सल्ल० को कलामुल्लाह[8] सुनाते उस वक़्त आप सल्ल० भलाई और नफ़ा-रसानी[9] में तेज़ बारिश लाने वाली हवा से भी ज़्यादा सख़ावत फ़रमाते। (ख़साइले नबवी)

तिर्मिज़ी की हदसी से नक़्ल किया गया है कि हुज़ूरे अन्वर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास एक मर्तबा नव्वे हज़ार दिर्हम[10] तक़रीबन बीस

1-दानी, 2-दान, 3-दरिद्रता, 4-दया, अनुग्रह, 5-ऋणदाता, 6-विभाजित, 7-विशेषकर, 8-क़ुरआन मजीद, 9-लाभ पहुँचाना, 10-दिर्हम:- 3 (1/2) माशे की एक तौल, चवन्नी चाँदी का एक छोटा सा सिक्का।

हज़ार रुपए से ज़्यादा होते हैं, कहीं से आए। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक बोरिये पर डलवा दिये और वहीं पड़े-पड़े सब तक़्सीम करवा दिये। ख़त्म हो जाने के बाद एक साइल[1] आया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "मेरे पास कुछ रहा नहीं, तू किसी से मेरे नाम से कर्ज़ ले ले। जब मेरे पास होगा, अदा कर दूँगा।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि ऐसा कभी नहीं हुआ कि रसूले ख़ुदा से कुछ मांगा गया हो और आप सल्ल० ने फ़र्माया हो, मैं नहीं देता। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कल के लिये कोई चीज़ न उठा रखते थे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सबसे ज़्यादा सख़ी थे। ख़ास कर माहे रमज़ान में तो बहुत ही सख़ी हो जाते थे। (सहीह़ बुख़ारी, बाबु बद्इल् वही)

एक दफ़ा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अबूज़र गिफ़ारी से फ़रमायाः- 'ऐ अबूज़र! मुझे यह पसन्द नहीं कि मेरे पास कोहे उहद[2] के बराबर सोना हो और तीसरे दिन तक उसमें से मेरे पास एक अश्रफ़ी भी बच रहे, सिवाय उसके जो अदाए कर्ज़ के लिये हो, तो ऐ अबूज़र! मैं उस माल को दोनों हाथों से ख़ुदा की मख़्लूक़ में तक़्सीम करके उठूँगा।" (सहीह़ बुख़ारी, किताबुल् इस्तिक्राज़, पेज : 32)

एक दिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहिं व सल्लम के पास छे अश्रफ़ियाँ[3] थीं, चार तो आपने ख़र्च कर दीं और दो आपके पास बच रहीं, इनकी वजह से आप सल्ल० को तमाम रात नींद न आई। उम्मुल् मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने अ़र्ज़ किया-- मामूली बात है, सुबह इनको ख़ैरात कर दीजियेगा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमया -- ऐ हुमैरा (हज़रत आइशा रज़ि० का लक़ब है) क्या ख़बर है, मैं सुबह तक ज़िन्दा रहूँ या नहीं। (मिश्कात)

1-भिक्षुक, सवाल करने वाला, 2-ओहद का पहाड़, 3-स्वर्ण मुद्राएँ।

क़नाअत और तवक्कुल
(सन्तुष्टि और भरोसा)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दूसरे दिन के वास्ते किसी चीज़ का ज़खीरा[1] बनाकर नहीं रखते थे।

फ़ाइदा:- यानी जो चीज़ होती, खिला-पिलाकर खत्म फ़रमा देते इस ख़्याल से कि कल फिर ज़रूरत होगी उसको महफ़ूज़[2] न रखते थे। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ग़ायत दर्जे का तवक्कुल[3] था कि जिस मालिक ने आज दिया है, वह कल भी अ़ता फ़रमाएगा[4]। यह सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिये था वर्ना अज़्वाज[5] का नफ़्क़ा[6] उनके हवाले कर दिया जाता था कि वह जिस तरह चाहें तसर्रुफ़[7] में लाएं, चाहे रखें या तक़सीम कर दें। मगर वे भी तो हुज़ूर की अज़्वाज थीं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की खिदमत में एक बार दो गोनैन[8] दिर्हमों की नज़राने[9] के तौर पर पेश की गयीं, जिनमें एक लाख दिर्हम से ज़्यादा थे। उन्होंने तबाक़[10] मंगवाया और फिर भर-भरकर तक़सीम फ़रमा दिया, ख़ुद रोज़ादार थीं, इफ़्तार के वक़्त एक रोटी और ज़ैतून का तेल था जिससे इफ़्तार फ़रमाया। बान्दी ने अ़र्ज़ किया कि एक दिर्हम का अगर आज गोश्त मंगवा लेतीं तो आज हम उसी से इफ़्तार कर लेते। इर्शाद फ़रमाया[11] कि अब ताने देने से क्या हो सकता है, उसी वक़्त याद दिलाती तो मैं मंगा देती।

(ख़साइले नबवी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मुझको यह बात ख़ुश नहीं आती कि मेरे लिए कोहे उहद सोना बन जाए और फिर रात को इसमें से एक दीनार भी मेरे पास रहे बजुज़[12] ऐसे दीनार[13] के जिसको

1-जमा किया हुआ, ढेर, 2-सुरक्षित, 3-बहुत अधिक भरोसा, 4-देगा, 5-पत्नियां, 6-ख़र्च, 7-प्रयोग, 8-बोरियाँ, 9-उपहार, 10-परात, 11-कहा, 12-अतिरिक्त, 13-सोने की एक मुद्रा।

वाजिब मुतालबा के लिये थाम लूँ और यह बात आपके कमाले सख़ावतो जूदो-अ़ता[1] की दलील है। चुनांचे इसी कमाले सख़ावत के सबब आप मक़रूज़[2] रहते थे हत्ताकि जिस वक़्त आपने वफ़ात[3] पाई है तो आपकी ज़िरह[4] अहलो-इयाल[5] के इख़राजात[6] में रेहन रखी हुई थी। (नश्रुत्तीब)

इन्किसारे तबई
(स्वाभाविक विनम्रता)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि आप सल्ल० बतहए आ़दत[7] सख़्तगो[8] न थे और न बतकल्लुफ़ सख़्तगो बनते थे और न बाज़ारों में ख़िलाफ़े वक़ार[9] बातें करने वाले थे और बुराई का बदला बुराई से न देते थे बल्कि मुआ़फ़ फ़रमा देते थे। ग़ायते हया[10] से आपकी निगाह किसी शख़्स के चेहरे पर न ठहरती थी और किसी नामुनासिब[11] बात का अगर किसी ज़रूरत से ज़िक्र करना ही पड़ता तो किनाया[12] में फ़रमाते।

और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि आप सल्ल० सबसे बढ़ कर दिल के कुशादा[13] थे, बात के सच्चे थे, तबीअ़त के नर्म थे, मुआ़शरत[14] में निहायत करीम थे और जो शख़्स आपकी दावत करता उसकी दावत मंजूर फ़रमाते और हदिया[15] कबूल फ़रमाते अगर्चे (वह हदिया या तआ़मे दावत[16]) गाय या बकरी का पाया ही होता। और हदिये का बदल भी देते थे और दावत गुलाम की और आज़ाद की और लौण्डी[17] की और ग़रीब की सबकी क़बूल फ़रमा लेते और मदीना की इंतिहाए[18] आबादी पर भी अगर मरीज़ होता उसकी इयादत फ़रमाते और मअ़ज़िरत करने वालों का उज़्र क़बूल करते और अपने अस्हाब से इब्तिदा मुसाफ़हा[19] की फ़रमाते और कभी अपने अस्हाब में पाँव फैलाये हुए नहीं देखे गए, जिससे औरों पर जगह तंग

1-दानशीलता, 2-ऋणी, 3-मृत्यु, 4-कवच, 5-परिवार, 6-ख़र्च 7-स्वभावता, 8-कठोर बोलने वाला, 9-मर्यादा के विरुद्ध, 10-अत्याधिक लज्जा, 11-अनुचित, 12-संकेत, 13-उदार हृदय, 14-समाज, 15-उपहार, 16-खाने का निमंत्रण, 17- दासी, 18-अन्त, 19-हाथ मिलाने की शुरुआत।

हो जाए और जो आपके पास आता उसकी ख़ातिर करते और बाज़ अवक़ात अपना कपड़ा उसके बैठने के लिये बिछा देते और गद्दा, तकिया ख़ुद छोड़ कर उसको दे देते और किसी शख़्स की बात बीच में न काटते और तबस्सुम फ़रमाने[1] में और ख़ुश मिज़ाजी में सबसे बढ़कर थे। जब तक कि हालत नुज़ूले वही[2] या वाज़ या ख़ुत्बा की न होती (क्योंकि इन हालतों में आप सल्ल० को एक जोश होता था) जिसमें तबस्सुम और ख़ुश मिज़ाजी ज़ाहिर न होती थी। (नश्रुत्तीब)

दियानत व अमानत

(सत्यनिष्ठा व धरोहर)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दावते हक़[3] का आग़ाज़ फ़रमाया[4] तो सारी क़ौम आपकी दुश्मन बन गई और आप सल्ल० को सताने में कोई कस्र न उठा रखी। लेकिन इस हालत में भी कोई मुश्रिक ऐसा न था जो आपकी दियानत व अमानत पर शक करता हो बल्कि ये लोग अपने रुपये-पैसे वग़ैरा लाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ही के पास अमानत रखवाते थे और मक्का में किसी दूसरे को आपसे बढ़ कर अमीन नहीं समझते थे। हिज्रत[5] के मौक़े पर हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वजहहू को पीछे छोड़ने से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक मक़्सद यह भी था कि वह तमाम लोगों की अमानतें वापस करके मदीना आएं। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-मुस्कराने, 2-अल्लाह के हुक्म का उतरना, 3-हक़ यानी इस्लाम धर्म का निमंत्रण, 4-प्रारम्भ किया, 5-प्रवास, एक जगह को छोड़ कर दूसरी जगह जाना।

तवाज़ो
(विनम्रता)

हदीस: हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:- "मुसलमानो! मेरी तारीफ़ हद से ज़्यादा न करो जिस तरह ईसाइयों ने इब्ने मर्यम (ईसा अलैहिस्सलाम) की तारीफ़ की है, क्योंकि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। बस तुम मेरी निस्बत इतना ही कह सकते हो कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।" (मदारिजुन्नुबुव्वा, ज़ादुल् मआद, शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम असा[1] पर टेक लगाए हुए हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हम आप सल्ल० के लिये खड़े हो गए, आप सल्ल० ने फ़रमाया-- जिस तरह अज्मी[2] लोग एक दूसरे की ताज़ीम[3] के लिये खड़े होते हैं उस तरह तुम न खड़े हुआ करो और फ़रमाया-- मैं अल्लाह का बन्दा हूँ उसी तरह खाता हूँ जिस तरह बन्दे खाते हैं और उसी तरह बैठता हूँ जिस तरह बन्दे बैठते हैं। आप सल्ल० का यह फ़रमाना आपकी बुर्दबारी[4] और मुतवाज़िआना[5] आदते करीमा की वजह से था। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हदीस में है कि एक मर्तबा एक सफ़र में चन्द सहाबा रज़ि० ने एक बकरी ज़िबह करने का इरादा फ़रमाया और इसका काम तक़्सीम फ़रमा लिया एक ने अपने ज़िम्मे ज़िबह करना लिया, दूसरे ने खाल निकालना, किसी ने पकाना। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पकाने के लिये लकड़ी इकट्ठा करना मेरे ज़िम्मे है। सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह काम हम खुद कर लेगें। आप सल्ल० ने फ़रमाया यह तो मैं भी समझता हूँ कि तुम

1-छड़ी, 2-जो लोग अरब के रहने वाले नहीं हैं उनको अज्मी कहते हैं, 3-आदर, 4-गम्भीरता, 5-विनम्रता।

लोग इसको बखुशी कर लोगे लेकिन मुझे यह बात पसन्द नहीं कि मैं मज्मा में मुम्ताज़[1] हूँ और अल्लाह तआला भी इसको ना पसन्द फ़रमाते हैं।

(ख़साइले नबवी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बाज़ार आया और हुज़ूर सल्ल० ने एक सराबील[2] को चार दिर्हम में ख़रीदा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वज़्न करने वाले से फ़रमाया-- कीमत में माल को ख़ूब-ख़ूब खींच कर तौलो (यानी वज़्न में कम या बराबर न लो बल्कि ज़्यादा लो)। वह शख़्स वज़्न करने वाला हैरत ज़दह[3] होकर बोला-- मैंने कभी किसी को क़ीमत की अदाइगी में ऐसा कहते नहीं सुना। इस पर हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा- अफ़सोस है तुझ पर कि तू अपने नबी को नहीं पहचानता। फिर तो वह शख़्स तराज़ू को छोड़कर खड़ा हो गया और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस्ते मुबारक[4] को बोसा दिया। आप सल्ल० ने अपना दस्ते मुबारक खींच कर फ़रमाया-- यह अजिमयों का दस्तूर[5] है कि वह अपने बादशाहों सर्बराहों के साथ ऐसा करते हैं। मैं बादशाह नहीं हूँ। मैं तो तुम ही में से एक शख़्स हूँ। (यह हुज़ूर सल्ल० ने अज़ राहे तवाज़ो[6] फ़रमाया जैसा कि आप सल्ल० की आदते करीमा थी) इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सराबील (पाजामा) को उठा लिया। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने आगे बढ़ कर इरादा किया कि आपसे सराबील को ले लूँ मगर आप सल्ल० ने फ़रमाया कि सामान के मालिक ही का हक़ है कि वह अपने सामान को उठाए। मगर वह शख़्स जो कमज़ोर है और उठा न सके तो अपने उस भाई की मदद करना चाहिए। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक पुराने पालान[7] पर हज किया। उस पर

1-ख़ास, सम्मानित, 2-पाजामा, 3-चकित, 4-पवित्र या शुभ हाथ, 5-तरीक़ा, 6-विनम्रता के कारण। 7-गधे या टट्टू की पीठ पर डालने का टाट।

एक कपड़ा पड़ा हुआ था जो चार दिर्हम का भी न होगा और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ मांग रहे थे-- या अल्लाह इस हज को ऐसा हज फ़रमाइयो जिसमें रिया[1] और शोहरत न हो। (शमाइले तिर्मिज़ी)

जब मक्का फ़तह हुआ और आप सल्ल० मुसलमानों के लश्कर[2] के साथ उसमें दाख़िल हुए तो आप सल्ल० ने अल्लाह तआ़ला शानुहू के हुज़ूर में आ़जिज़ी और तवाज़ो से सर को पालान पर झुका दिया था यहाँ तक कि करीब था कि उसके अगली लकड़ी के सिरे पर आप सल्ल० का सर लग जाए। (किताबुश्शिफ़ा)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा रज़ि० के नज़्दीक हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ज़्यादा महबूब कोई शख़्स दुनिया में नहीं था। इसके बावजूद फिर भी वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देख कर इसलिये खड़े नहीं होते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह बात पसन्द न थी। (शमाइले तिर्मिज़ी)

एक मर्तबा नजाशी बादशाहे हब्शा के कुछ एलची[3] आए, हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनकी ख़ातिर मदारात[4] के लिये उठ खड़े हुए, तो सहाबा रज़ि० अ़र्ज़ करने लगे- या रसूलल्लाह! (सल्ल०) इनकी ख़िदमत की सआ़दत[5] हमें इनायत[6] फ़रमाइये। फ़रमाया- उन्होंने हमारे सहाबा की बड़ी ख़िदमत व तक्रीम[7] की है। मैं पसन्द करता हूँ कि उनका बदला अदा करूँ।

साफ़ दिल होना

इब्ने मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसकी ताकीद फ़र्माई कि मेरे सहाबा में से मुझसे कोई शख़्स किसी की कोई बात न पहुँचाया करे क्योंकि मेरा दिल चाहता है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँ तो मेरा दिल तुम सब की तरफ़ से साफ़ हो। (अबू दाऊद, तर्जुमानुस्सुन्ना, किताबुश्शिफ़ा)

1-आडम्बरा, 2-फ़ौज, 3-पत्रवाहक, राजदूत, 4-आदर-सत्कार, 5-भलाई, शुभकारिता, 6-मौक़ा दीजिए, 7-सेवा।

नर्मी व शफ़्क़त
(नर्मी व सहानुभूति)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बड़े ख़ुश अख़्लाक़ थे। एक रोज़ मुझे किसी ज़रूत के लिये भेजा, मैंने कहा कि अल्लाह तआ़ला की क़सम मैं न जाऊँगा और मेरे दिल में यह था कि जो हुक्म मुझको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दिया है उसके लिये ज़रूर जाऊँगा, फिर मैं निकला और मेरा गुज़र कुछ बच्चों पर हुआ जो बाज़ार में खेल रहे थे। इतने में नागाह[1] रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मेरे सर के बाल पीछे से पकड़े। जब मैंने आपकी तरफ़ देखा तो आप सल्ल० को हँसता पाया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- अनस तुम वहाँ गए थे जहाँ मैं ने तुमको भेजा था, मैंने कहा हाँ, जाऊँगा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (मिश्कात, हयातुलमुस्लिमीन)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रावी हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत उस वक़्त से की जब कि मैं आठ बर्ष का था। मैंने आपकी ख़िदमत दस बर्ष तक की, आप सल्ल० ने किसी बात पर जो मेरे हाथ से हुई मुझे मलामत[2] नहीं की। अगर अहले बैत[3] में से किसी ने भी मलामत की तो आप सल्ल० ने फ़रमाया-- उसको छोड़ दो, अगर तक़्दीर में कोई बात होती है तो होकर रहती है।

ईसार व तहम्मुल
(स्वार्थत्याग और सहिष्णुता)

एक रिवायत में है कि ज़ैद बिन शअ़ना पहले यहूदी थे, एक मर्तबा कहने लगे कि नुबुव्वत की अ़लामतों[4] में से कोई भी ऐसी नहीं रही जिसको

1-अचानक, 2-डाँट-डपट, 3-घरवाले, 4-निशानियों।

मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में न देख लिया हो बजुज़[1] दो अ़लामतों के जिसके तजुर्बे की अब तक नौबत नहीं आई थी। एक यह कि आपका हिल्म[2] आपके गुस्से पर ग़ालिब होगा। दूसरे यह कि आप सल्ल० के साथ कोई जितना भी जहालत का बर्ताव करेगा उसी क़द्र आपका तहम्मुल[3] ज़्यादा होगा। मैं उन दोनों के इम्तिहान का मौक़ा तलाश करता रहा और आमदोरफ़्त[4] बढ़ाता रहा। एक दिन आप सल्ल० हुजे[5] से बाहर तशरीफ़ लाए, हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आपके साथ थे, एक बदवी[6] जैसा शख़्स आया और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी क़ौम मुसलमान हो चुकी है और मैंने उनसे यह कहा था कि मुसलमान हो जाओगे तो भरपूर रिज़्क़[7] तुमको मिलेगा, मगर अब हालत यह है कि क़हत[8] पड़ गया। मुझे डर है कि वह इस्लाम से न निकल जाएं। अगर राय मुबारक हो तो आप कुछ इआ़नत[9] फ़रमाएं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक शख़्स की तरफ़ जो ग़ालिबन् हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु थे, देखा तो उन्होंने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मौजूद तो कुछ नहीं रहा। ज़ैद (जो उस वक़्त यहूदी थे इस मंज़र[10] को देख रहे थे) कहने लगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अगर आप ऐसा कर सकें कि फ़्लॉं शख़्स के बाग़ की इतनी खजूरें वक़्ते मुअ़य्यन[11] पर मुझे दे दें तो मैं क़ीमत पेशगी[12] दे दूँ और वक़्ते मुअ़य्यन पर खजूरें ले लूँगा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- यह तो नहीं हो सकता, अल्बत्ता अगर बाग़ का तअ़य्युन[13] न करो तो मुआ़मला कर सकता हूँ। मैंने उसको क़बूल कर लिया और खजूरों की क़ीमत अस्सी मिस्क़ाल सोना (एक मिस्क़ाल मश्हूर क़ौल के मुवाफ़िक़ 4.5 माशा का होता है) दे दिया। आप सल्ल० ने वह सोना उस बदवी के हवाले कर दिया और फ़रमाया कि इन्साफ़ की रिआ़यत रखना और इससे उनकी ज़रूरत पूरी कर लो। ज़ैद कहते हैं कि जब खजूरों की अदायगी के वक़्त में

1-अतिरिक्त, अलावा, 2-सहनशक्ति, 3-सहिष्णुता, 4-आना-जाना, 5-कमरा, 6-गंवार, देहाती, 7-जीविका, 8-अकाल, 9-सहायता, 10-दृश्य, 11-निश्चित समय, 12-वह मूल्य जो वस्तु को ख़रीदने से पहले दी जाती है, बैआना, 13-निश्चित।

दो-तीन दिन बाक़ी रह गए थे, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा की एक जमाअ़त के साथ जिनमें अबू बक्र व उ़म्र व उसमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम भी थे, किसी के जनाज़े की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर एक दीवार के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा थे। मैं आया और आपके कुर्ते और चादर के पल्लू पकड़ कर निहायत तुरुशरुई[1] से कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! आप मेरा क़र्ज़ अदा नहीं करते, अल्लाह की क़सम मैं तुम सब औलादे मुत्तलिब को ख़ूब जानता हूँ कि बड़े नादेहन्द[2] हो, हज़रत उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ग़ुस्से से मुझे घूरा और कहा कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! यह क्या बक रहा है, अल्लाह की क़सम अगर मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का डर नहीं होता तो तेरी गर्दन उड़ा देता, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम निहायत सुकून से मुझे देख रहे थे और तबस्सुम[3] के लेहजे में हज़रत उ़म्र रज़ि० से फ़रमाया कि उ़म्र! मैं और यह एक और चीज के ज़्यादा मोहताज थे, वह यह कि मुझे हक़ अदा करने में ख़ूबी बरतने को कहते और इसको मुतालबा करने में बेहतर तरीक़े की नसीहत करते। जाओ, इसको ले जाओ और इसका हक़ अदा कर दो और तुम ने जो इसे डाँटा है इसके बदले बीस साअ़ (तक़रीबन् दो मन खजूरें) ज़्यादा दे देना। हज़रत उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुझे ले गए और पूरा मुतालबा और बीस साअ़ खजूरें ज़्यादा दीं। मैंने पूछा यह बीस कैसे? हज़रत उ़म्र रज़ि० ने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यही हुक्म है। ज़ैद ने कहा कि उ़म्र तुम मुझको पहचानते हो, उन्होंने फ़रमाया कि नहीं, मैंने कहा कि मैं ज़ैद बिन शअ़्नः हूँ, उन्होंने कहा कि जो यहूद का बड़ा अल्लामा[4] है। मैंने कहा कि हाँ, वही हूँ। उन्होंने फ़रमाया कि इतने बड़े आदमी होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ तुम ने यह कैसा बर्ताव किया, मैंने कहा कि अ़लामाते नुबुव्वत में से दो अ़लामतें[5] ऐसी रह गई थीं जिन का मुझको तजिरबा करने की नौबत नहीं आई थी-- एक यह कि आप का हिल्म[6] आपके

1-क्रूरता, कठोरता, 2-लेकर न देने वाला, 3-मुस्कुराहट, 4-विद्वान, 5-निशानियाँ, 6-सहिष्णुता, धैर्य।

ग़ुस्से पर ग़ालिब होगा और दूसरे यह कि इनके साथ सख़्त जहालत का बर्ताव इनके हिल्म को बढ़ावेगा। अब इन दोनों का भी इम्तिहान कर लिया, अब मैं तुम को अपने इस्लाम का गवाह बनाता हूँ, और मेरा आधा माल उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० पर सद्क़ा है। उसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में वापस आए और इस्लाम ले आए। उसके बाद बहुत से ग़ज़्वात[1] में शरीक हुए और तबूक की लड़ाई में शहीद हो गए।

(जम्उ़ल्-फ़वाइद ख़साइसे नबवी)

इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैह ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत की है कि एक मर्तबा मैं हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ जा रहा था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की गर्दने मुबारक में नज़्रानी सख़्त हाशिया दार चादर थी, एक आराबी[2] ने क़रीब आ कर चादर को पकड़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को खींचा और चादर को सख़्त लपेटने लगा। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० की गर्दने मुबारक की तरफ़ देखा तो सख़्त हाशिया दार लपेट ने आपकी गर्दने मुबारक को छील दिया था, उसके बाद आराबी कहने लगा-- ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! अल्लाह तआ़ला के उस माल में से जो आपके पास है, मुझे देने को हुक्म फ़रमा दें, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसकी तरफ़ देख कर तबस्सुम फ़रमाया और मुझे उसके देने का हुक्म फ़रमाया। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

एक बार मक्का में क़हत[3] पड़ा, लोगों ने हड्डियाँ और मुर्दार खाना शुरू कर दिये, अबू सुफ़यान जो उन दिनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बदतरीन[4] दुश्मन थे। आप सल्ल० की ख़िदमत में आए और कहा-- "मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! तुम लोगों को सिलएरहमी[5] की तालीम देते हो, तुम्हारी क़ौम हलाक हो रही है, अपने अल्लाह से दुआ़ क्यों नहीं करते? गो क़ुरैश की ईज़ारसानी[6] और शरारतें[7] इन्सानियत की हुदूद[8] को

1-युद्ध, 2-देहाती, 3-अकाल, 4-सबसे बुरा, 5-संबंधियों के साथ सद्व्यवहार करना तथा यथाशक्ति उनको कुछ देना, 6-कष्ट, 7-बदमाशी, 8-सीमाओं।

भी फौंद गई थीं लेकिन अबू सुफ़्यान की बात सुनकर फ़ौरन् आप सल्ल० के दस्ते[1] मुबारक दुआ के लिये उठ गए, अल्लाह तआला ने इस क़द्र मींह[2] बर्साया कि जलथल हो गया और क़हत दूर हो गया।

(सहीह बुख़ारी, तफ़्सीर सूरए दुख़ान)

ज़ुह्दो-तक़्वा
(आत्म निग्रह और संयम)

हदीस: हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह तआला से दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह! मुझे मिस्कीनी[3] की हालत में ज़िन्दा रख और मिस्कीनी की हालत में दुनिया से उठा और मिस्कीनों के गिरोह में मेरा हश्र फ़रमा[4]।

(जामे तिर्मिज़ी, बैहक़ी, इब्ने माजा, मआरिफ़ुल हदीस)

हदीस: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एक सहाबी से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अहले मज्लिस एक मर्तबा दौलतमन्दी और दुनियावी ख़ुशहाली का कुछ तज़्किरा[5] करने लगे (कि यह चीज़ अच्छी है या बुरी और दीन और आख़िरत के लिये मुज़िर[6] है या मुफ़ीद) तो आपने इस सिल्सिले में इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआला से डरे (और उसके अहकाम की पाबन्दी करे) उसके लिये मालदारी में कोई मुज़ायक़ा[7] नहीं और कोई हरज नहीं और सेहतमन्दी साहिबे तक़्वा[8] के लिये दौलतमन्दी से भी बेहतर है और ख़ुशदिली भी अल्लाह तआला की नेअ़्मतों में से है (जिस पर शुक्र वाजिब है)।

(मुस्नदे अहमद, मआरिफ़ुल हदीस)

हदीस: हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि उन्हों ने उर्वह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया-- मेरे भांजे! हम (अहले बैते नुबुव्वत[9] इस तरह गुज़ारा करते थे) कि कभी-कभी लगातार तीन-तीन

1-हाथ, 2-बारिश, 3-विनम्र, दरिद्र, 4-मुझे उठा या शामिल कर, 5-चर्चा, 6-हानिकारक, 7-हानि, 8-संयमी, 9-नबी सल्ल० के घर वाले।

चाँद देखे लेते थे (यानी कामिल[1] दो महीने गुज़र जाते थे) और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के घरों में चूल्हा गर्म न होता था (उर्वह कहते हैं) मैंने अ़र्ज़ किया कि फ़िर आप लोगों को क्या चीज़ ज़िन्दा रखती थी? हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने जवाब दिया-- बस खजूर के दाने और पानी (इन ही पर हम जीते थे) अल्बत्ता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाज़ अन्सारी पड़ोसी थे, उनके यहाँ दूध देने वाले जानवर थे। वे आप सल्ल० के लिये बतौर हदिया[2] के भेजा करते थे और उसमें से आप सल्ल० हमको भी दे देते थे।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफुल हदीस)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसे हाल में वफ़ात[3] पाई कि आप सल्ल० की ज़िरह[4] तीस साअ़ जौ के बदले एक यहूदी के पास रेहन[5] रखी हुई थी।

(बुख़ारी, मआ़रिफुल हदीस)

ख़शिय्यते इलाही
(अल्लाह का डर)

अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर से रिवायत है कि आप बराबर मग़्मूम[6] रहते थे। किसी वक्त आप सल्ल० को चैन नहीं था (यह कैफ़ियत फ़िक्रे आख़िरत से थी) और दिन भर में सत्तर या सौ बार इस्तिग़्फ़ार फ़रमाते थे, मैं कहता हूँ कि यह या तो तालीमे उम्मत[7] के लिये था या ख़ुद उम्मत के लिये मग़्फ़िरत तलब करना मक़्सूद था या यह वजह थी कि आप सल्ल० दर्याए क़ुर्बो-इरफ़ान[8] में मुस्तग़रक़[9] रहते थे और आनन-फ़ानन[10] तरक़्क़ी करते रहते थे क्योंकि तजल्लियात[11] मुतजद्दिद[12] होती रहती हैं और तजल्ली[13] हस्बे इस्तेदाद[14] महल्ले तजल्ली[15] के होती है और आप सल्ल० की इस्तेदाद[16] बराबर मुतज़ाइद[17] होती जाती थी। इसलिए तजल्लियात भी ला-तक़िफ़ु

1-पूर्ण, पूरे, 2-उपहार स्वरूप, 3-मृत्यु, 4-कवच, 5-गिरवी, 6-दुखी, 7-उम्मत की शिक्षा, 8-अल्लाह से निकटता व विवेक रूपी नदी, 9-लीन, 10-तुरन्त, 11-दिव्य ज्योति, आध्यात्म ज्योति, 12-नवीन, 13-प्रकाश, 14-यथाशक्ति, 15-प्रकाश का स्थान, 16-क्षमता, 17-वृद्धि।

इनद हद (जिनकी कोई ग़ायत[1] न हो) फ़ाइज़[2] होती थीं। पस जब मर्तबे मा बाद[3] को अअ़ला[4] देखते थे तो अपने को मर्तबे मा क़ब्ल के एतिबार से तक़्सीर[5] की तरफ़ मन्सूब फ़रमाते[6]। (नशरुत्तीब)

रिक़्क़ते क़ल्बी
(दिल की नर्मी)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक नवासी क़रीबुल वफ़ात[7] थी, हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको गोद में उठा लिया और अपने सामने रख लिया, हुज़ूर सल्ल० के सामने रखे-रखे उनकी वफ़ात हो गई। उम्मे ऐमन (जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक कनीज़[8] थीं) चिल्लाकर रोने लगीं। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- क्या अल्लाह के नबी के सामने भी रोना शुरू कर दिया (चूँकि आप सल्ल० के भी आँसू टपक रहे थे इसलिये) उन्होंने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर भी तो रो रहे हैं। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह रोना मम्नूअ़[9] नहीं। यह अल्लाह तआ़ला की रहमत है (कि बन्दों के क़ुलूब यानी दिलों को नर्म फ़रमा दें और उनमें शफ़्क़तोरहमत[10] का माद्दा[11] फ़रमा दें) फिर हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मोमिन हर हाल में ख़ैर[12] में ही रहता है हत्ताकि ख़ुद (यहाँ तक कि) उसकी रूह[13] को निकाला जाता है और वह हक़ तआ़ला शानुहू की हम्द[14] करता है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसमान बिन मज़्ऊन की पेशानी[15] को उनकी वफ़ात[16] के बाद बोसा[17] दिया उस वक़्त हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व

1-सीमा, 2-सफ़ल, कामयाब, 3-पिछली मर्तबा, 4-श्रेष्ठ, 5-कमी, 6-संबंध बताते, 7-मृत्यु के क़रीब, 8-दासी, 9-मना, निषिद्ध, 10-दया व कृपा, 11-योग्यता या विवेक, 12- भलाई, 13-आत्मा, 14-प्रशंसा, 15-माथा, 16-मृत्यु, 17-चुम्बन।

सल्लम के आँसू टपक रहे थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे और रोने की वजह से आपके सीने से ऐसी आवाज़ निकल रही थी जैसी हण्डिया का जोश होता है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मुझसे एक मर्तबा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद सुनाओ। मैंने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आप ही पर तो नाज़िल[1] हुआ है और आप सल्ल० को ही सुनाऊँ। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरा दिल चाहता है कि दूसरे से सुनूँ। मैंने इम्तिसाले अम्र[2] में शुरू किया और सूरह निसा पढ़ना शुरू की। मैं जब इस आयत पर पहुँचा:

﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا ۝﴾
سورة النساء آية: ٤١

फ़कैफ़ इज़ाजिअ्ना मिन् कुल्लिउम्मतिम् बिशहीदिंव् व जिअ्ना बिक अ़ला हा उलाइ शहीदा ० (सूरत निसा, आयत: 41)

अनुवाद: सो उस वक़्त क्या हाल होगा जब कि हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह को हाज़िर करेंगे और आपको उन लोगों पर (जिनका आप से साबिक़ा हुआ है) गवाही देने के लिये हाज़िर ला वेंगे।

तो मैंने हुज़ूर पुरनूर[3] सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चेहरे मुबारक की तरफ़ देखा कि दोनों आँखें गिर्या[4] की वजह से बह रही थीं।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी साहबज़ादी[5] (उम्मे कुल्सूम) की क़ब्र पर तशरीफ़ फ़रमा थे और आपके आँसू जारी थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

1-उतरा, 2-आज्ञा पालन, 3-नूर से भरा हुआ, प्रकाश पुन्ज, 4-रोने, 5-कन्या।

रहमो-तरहहुम
(दया व कृपा)

एक मर्तबा एक सहाबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उनके हाथ में किसी परिन्दे[1] के बच्चे थे और वे चीं-चीं कर रहे थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूछा ये बच्चे कैसे हैं! सहाबी ने अ़र्ज़ किया-- "या रसूलल्लाह! मैं एक झाड़ी के क़रीब से गुज़रा तो इन बच्चों की आवाज़ आ रही थी मैं इनको निकाल लाया। इनकी माँ ने देखा तो बेताब होकर सर पर चक्कर काटने लगी"। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- "फ़ौरन जाओ और इन बच्चों को वहीं रख आओ जहाँ से लाए हो"। (मिश्कात बहवाला अबू दाऊद बाबुर्रहमति वश्शफ़क़ति अ़लल् ख़ल्क़, मआ़रिफ़ुल हदीस)

एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक अन्सारी के बाग़ में तशरीफ़ ले गए, वहाँ एक ऊँट भूख से बिल्बिला रहा था। आपने शफ़क़त से उसकी पीठ पर हाथ फेरा और उसके मालिक को बुलाकर फ़रमाया -- इस जानवर के बारे में तुम ख़ुदा से नहीं डरते।

(अबू दाऊद बाबेरहमत, मआ़रिफ़ुल हदीस)

एक बार हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने ग़ुलाम को पीट रहे थे, इत्तिफ़ाक़[2] से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस मौक़े पर तशरीफ़ लाए। आप सल्ल० ने रंजीदा[3] होकर फ़रमाया:

"अबू मस्ऊद इस ग़ुलाम पर तुम्हें जिस क़दर इख़्तियार[4] है अल्लाह तआ़ला को तुम पर उससे ज़्यादा इख़्तियार है।

हज़रत अबू मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशादे मुबारक सुनकर थर्रा उठे और अ़र्ज़ किया -- या रसूलल्लाह! मैं इस ग़ुलाम को अल्लाह की राह में आज़ाद करता हूँ"।

1-चिड़िया, 2-संयोग, 3-दुखित, 4-अधिकार।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया -- "अगर तुम ऐसा न करते तो दोज़ख़ की आग तुमको छू लेती"।

(अबू दाऊद: किताबुल् अदब, बाब हक़्क़ुल् मम्लूक)

मक़ामे अ़ब्दियत
(बन्दगी का स्थान)

हज़रत फ़ज़्ल रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बुख़ार चढ़ रहा है और सरे मुबारक पर पट्टी बाँध रखी है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरा हाथ पकड़ ले। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हाथ पकड़ा, हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और मिम्बर पर बैठ कर इर्शाद फ़रमाया कि लोगों को आवाज़ देकर जमा कर लो। मैंने लोगों को जमा कर लिया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह तआ़ला की हम्दोसना[1] के बाद यह मज़्मून इर्शाद फ़रमाया-- मेरा तुम लोगों के पास से चले जाने का ज़माना क़रीब आ गया है, इसलिये जिसकी कमर पर मैंने मारा हो मेरी कमर मौजूद है बदला ले ले, और जिसकी आबरु[2] पर हमला किया हो मेरी आबरु से बदला ले ले, जिसका कोई माली मुतालबा मुझ पर हो वह माल से बदला ले ले। कोई शख़्स यह शुब्ह[3] न करे कि मुझसे बदला लेने से मेरे दिल में बुग़्ज़[4] पैदा होने का डर है कि बुग्ज़ रखना न मेरी तबीअ़त में है और न मेरे लिये मौज़ूँ[5] है। ख़ूब समझ लो कि मुझे बहुत महबूब है वह शख़्स जो अपना हक़ मुझसे वसूल कर ले या मुआफ़ कर दे कि मैं अल्लाह जल्लशानुहू के यहाँ बशाशते क़ल्ब[6] के साथ जाऊँ। मैं अपने इस एलान को एक मर्तबा कह देने पर इक्तिफ़ा[7] नहीं करना चाहता, फिर भी इसका एलान करूँगा। चुनांचे इसके बाद मिम्बर पर से

1-प्रशंसा व प्रार्थना, 2-इज़्ज़त, 3-आशंका, 4-द्वेष, 5-उचित, 6-हृदय की प्रसन्नता, 7-सन्तोष।

उतर आए, जुहर की नमाज़ पढ़ने के बाद फिर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और वही एलान फ़रमाया नीज़ बुग्ज़ के मुतअल्लिक़ भी मज़्मूने बाला[1] का इआदा फ़रमाया[2] और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि जिसके ज़िम्मे कोई हक़ हो वह भी अदा कर दे और दुनिया की रुस्वाई[3] का ख़्याल न करे कि दुनिया की रुस्वाई आख़िरत की रुस्वाई से बहुत कम है।

एक साहब खड़े हुए और कहा कि मेरे तीन दिर्हम आपके ज़िम्मे हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं किसी मुतालबा करने वाले की न तक्ज़ीब[4] करता हूँ और न उसको क़सम देता हूँ लेकिन मैं पूछना चाहता हूँ कि (यह दिर्हम) कैसे हैं? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि एक दिन एक साइल[5] आपके पास आया या तो आपने मुझसे फ़रमा दिया था कि तीन दिर्हम इसको दे दो। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रते फ़ज़्ल रज़ि० से फ़रमाया कि तीन दिर्हम इसको दे दो। उसके बाद एक और साहब उठे, उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मेरे ज़िम्मे तीन दिर्हम बैतुल् माल के हैं, मैंने ख़ियानत से ले लिये थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दर्याफ़्त फ़रमाया[6]-- क्यों ख़ियानत की थी। अ़र्ज़ किया-- मैं उस वक़्त बहुत मोह्ताज था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ज़्ल रज़ि० से फ़रमाया-- इनसे वसूल कर लो। उसके बाद फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एलान फ़रमाया कि जिस किसी को अपनी किसी हालत का अन्देशा[7] हो वह भी दुआ करा ले (कि अब रवानगी का वक़्त है) एक साहब उठे और अ़र्ज़ किया-- या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! मैं झूठा हूँ, मुनाफ़िक़[8] हूँ, बहुत सोने का मरीज़ हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुआ फ़रमाई-- या अल्लाह! इसको सच्चाई अ़ता फ़रमा, ईमाने (कामिल) अ़ता फ़रमा और ज़्यादतिए नींद के मरज़ से सेहत बख़्श दे। इसके बाद और एक साहब खड़े हुए और अ़र्ज़ किया-- या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! मैं झूठा हूँ, मुनाफ़िक़ हूँ, कोई गुनाह ऐसा नहीं है जो मैंने

1-उपर्युक्त, 2-दोहराया, 3-अपमान, 4-झुठलाना, 5-मांगने वाला, 6-पूछा, 7-आशंका, 8-अन्दर कुछ बाहर कुछ।

न किया हो। हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उसको तम्बीह फ़रमाई कि अपने गुनाहों को फैलाते हो। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, उम्र! चुप रहो, दुनिया की रुस्वाई आख़िरत की रुस्वाई से हल्की है। उसके बाद हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया-- या अल्लाह! इसको सच्चाई और (कामिल) ईमान नसीब फ़रमा और इसके अहवाल[1] को बेहतर बना दे। एक और साहब उठे उन्होंने अ़र्ज़ किया-- या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! मैं बुज़दिल हूँ, सोने का मरीज़ हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इनके लिये भी दुआ़ फ़रमाई। हज़रत फ़ज़्ल रज़ि० कहते हैं कि इसके बाद से देखते थे कि इनके बराबर कोई भी बहादुर न था।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के मकान पर तशरीफ़ ले गए और उसी तरह औरतों के मज्मे में भी एलान फ़रमाया और जो इर्शादात मर्दों के मज्मे में फ़रमाए थे यहाँ भी उनका इआ़दा[2] फ़रमाया।

एक सहाबिया ने अ़र्ज़ किया-- या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! मैं अपनी ज़ुबान से आजिज़ हूँ, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इनके लिये भी दुआ़ फ़रमाई।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एलान फ़रमाया कि जिस किसी को अपनी हालत का अन्देशा हो वह भी दुआ़ करा ले (कि अब रवानगी का वक़्त है) चुनांचे लोगों ने अपने मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़[3] दुआ़एँ करायीं।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तस्लीमन् कसीरन् कसीरा

अल्लाह तआ़ला आप पर दुरूद भेजे और बहुत ज़्यादा सलाम।

(मज्मउज़्-ज़वाइद, ख़साइले नबवी)

1-हालतों, 2-दोहराया, 3-विभिन्न।

मइय्यते इलाहिय्या
(अल्लाह का साथ)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम हक़ तआला शानुहू का ज़िक्र हर लम्हा[1] और तमाम अवक़ात[2] में करते थे और हमेशा यादे इलाही में मशग़ूल रहते थे और कोई चीज़ आपको ज़िक्रे इलाही से बाज़ न रखती[3] थी और आपकी हर बात यादे हक़, हम्दोसना, तौहीद[4] व तम्जीद[5], तस्बीह व तक़्दीस[6] और तक्बीर व तहलील[7] में होती और अस्मा[8] व सिफ़ाते इलाही[9], वादा व वईद[10] अम्र व नही[11], अहकामे शर्अ[12] की तालीम ज़िक्रे जन्नत व नार[13] और तर्ग़ीब व तर्हीब[14] का बयान ये सब ज़िक्रे हक़ था और ख़ामोशी के वक़्त अल्लाह तआला की याद क़ल्बे अतहर[15] में रहती थी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हर सांस आपके क़ल्ब व ज़बान और आपका उठना-बैठना, खड़ा होना, लेटना, खाना-पीना, सूँघना, आना-जाना, सफ़र व इक़ामत[16], पैदल व सवारी ग़र्ज़ कि किसी हालत में ज़िक्रे हक़ जुदा[17] न था जो भी सूरत याद करने की होती ख़्वाह[18] दिल में या ज़बान से हर फ़ेल[19] में या शान में ज़िक्रे इलाही होता।

दिन और रात के आमालो अशग़ाल[20] वक़्ते तहज्जुद से सोने के वक़्त तक मुख़्तलिफ़ अवक़ात व लम्हात[21], हालात व औज़ाअ[22] और अत्वार[23] में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआएँ वग़ैरा पढ़ा करते थे। यही अदिइय्या-ए-मासूरह[24] तमाम मक़ासिद व मतालिब[25] और हाजात[26] को

1-क्षण, 2-हर समय, 3-नहीं रोकती, 4-अल्लाह को एक मानना, 5-अल्लाह की तारीफ़ करना, 6-अल्लाह की पाकी बयान करना, 7-अल्लाह की बड़ाई बयान करना, 8-नाम, 9-अल्लाह के गुण व विशिष्टताएँ, 10-अमल करने पर ख़ुशख़बरी और छोड़ने पर सज़ा की धमकी, 11-किसी काम को करने का आदेश और निषेध, 12-इस्लामी क़ानून के आदेश, 13-जहन्नम, 14-रुचि व भय, 15-पवित्र हृदय, 16-निवास, 17-अलग, 18-चाहे, 19-कार्य, 20-अमल व कार्य, 21-क्षणों, 22-तौर-तरीक़ा, 23-आचरण, 24-हदीस से नक़ल की गई दुआएँ, 25-उद्देश्य व तात्पर्य, 26-आवश्यकताएं।

शामिल व हावी[1] हैं और हर ख़ास मक़सद व मतलब के लिये भी जुदागाना[2] दुआ बयान फ़रमाने से नहीं छोड़ी है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़क़्र[3]

इमाम क़स्तलानी रहमतुल्लाहि अ़लैह "मवाहिब" में कहते हैं नबी अ़लैहिस्सलाम और आपके साथियों के बारे में एक तरफ़ तो रिवायात में यह आता है कि आप हज़रात कई-कई वक़्त भूके रहते थे। खाने के लिये आपके और आपके साथियों के पास कुछ न होता था, कभी खजूरें खाकर गुज़ारा कर लिया और कभी ये भी मुयस्सर न हुयीं तो सिर्फ़ पानी ही पी लिया। और दूसरी तरफ़ रिवायात में यह भी मिलता है कि आपने अपने घर वालों को साल भर का रोज़ीना[4] एक ही बार दे दिया। आपने अपने चालीस साथियों में चालीस ऊँट तक़्सीम फ़रमाए। कहीं यह ज़िक्र है कि आपने हज व उम्रा के दौरान सौ ऊँट ज़बह् किये। किसी देहाती को बकरियों का रेवड़ इनायत फ़रमाया। आपके साथियों में से भी बाज़ ऐसे साथियों के वाक़िआत कस्रत से मिलते हैं जो साहिबे सरवत[5] थे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, उसमाने ग़नी और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम वग़ैरा जिन्होंने बहुत से मवाक़े पर अपने माल-दौलत से मुसलमानों की मदद की तो अगर यह फ़राख़ी और वुस्अ़त[6] थी तो महीना भर घर में चूल्हा न जलने के क्या माना और अगर इतनी तंगदस्ती[7] थी कि खाने-पीने के लिये भी कुछ मुयस्सर न आता था तो फिर यह दादोदहिश[8] कैसी थी? यह एक ऐसी हक़ीक़त है जो आम आदमी के ज़ेहन में उलझन पैदा करती है।

इमाम तबरी रहमतुल्लाहि अ़लैह ने इसका जवाब दिया है। फ़तहुल्बारी में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा किराम की

1-सम्मिलित व आच्छादित, 2-अलग-अलग, 3-साधुता, कंगाली, 4-प्रतिदिन का वेतन या ख़र्च, 5-मालदार, 6-सामर्थ्य, समृद्धि 7-निर्धनता, 8-दानशीलता।

अपनी जान पर ये सख़्तियाँ इस लिये नहीं थीं कि दर हक़ीक़त आप हज़रात नाने शबीना[1] से भी मोहताज और आजिज़ व दरमान्दह[2] थे। ऐसे सहाबा रज़ि० की तादाद कम थी जो वाक़ई इन्तिहाई उस्रत[3] और तंगदस्ती में ज़िन्दगी बसर करते थे। असल में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० का भूखा-प्यासा रहना, अच्छे खानों से गुरेज़[4] करना कभी-कभी मज्बूरी की वजह से भी हुआ, वर्ना आमतौर पर आप सल्ल० और आपके साथी भूख-प्यास की सख़्तियाँ बाइख़्तियारे ख़ुद इसलिये बर्दाशत करते थे कि दूसरों के लिये ईसार[5] और जांनिसारी का जज़्बा पैदा हो, दुनियावी मालोमनाल[6] और ऐश व राहत से नफ़रत और बेज़ारी[7] का इज़्हार किया जाए क्योंकि दुनियावी साज़ोसामान और ऐशोइश्रत इन्सान को अल्लाह तआ़ला की याद और हक़ की हिमायत से ग़ाफ़िल बना देती है।

(फ़तहुलबारी)

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि हक़ीक़त यह है कि सहाबा रज़ि० में से अक्सर जब तक मक्का में रहे तंगदस्त[8] थे। जब मक्का से हिज्रत करके मदीना मुनव्वरा चले गए वहाँ अन्सार ने हर तरह का उनका तआवुन[9] किया। उन्होंने अपने घरों में ठहराया, कारोबार में शरीक किया, जिहाद का आग़ाज़ हुआ, दूसरे इलाक़े फ़तह हुए और माले ग़नीमत[10] का आना शुरू हुआ तो तक़रीबन् तमाम सहाबा रज़ि० वुस्अत और ख़ुशहाली से आसूदा[11] हो गए लेकिन इसके बावजूद सहाबा अपना माल-दौलत अपनी ज़ाती ऐश सामानी पर ख़र्च नहीं करते थे, उनके तमाम माली ज़राए[12] और वसाइल[13] आम मुसलमानों की फ़लाहो बहबूद[14] पर ख़र्च होते थे।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु कहते हैं-- नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया-- मेरे रब ने मुझसे कहा- ऐ नबी! तुम चाहो तो तुम्हारे लिये वादि-ए-मक्का सोने की बना दी जाए। मैंने अर्ज़ किया नहीं,

---

1-रात की रोटी या खाना, 2-निःसहाय, 3-तंगी, 4-बचना, 5-दूसरों के हित के लिए अपना हित त्यागना, 6-धन-सम्पत्ति, 7-मुँह फेरना, 8-निर्धन, 9-सहायता, 10-धार्मिक युद्ध में प्राप्त धन, 11- संतुष्ट, 12-धन संबन्धी साधन, 13-साधन, 14-भलाई व कल्याण।

परवरदिगार मैं तो यह पसन्द करता हूँ कि एक दिन भूखा रहूँ और एक दिन पेट भर कर खाऊँ। जिस दिन भूखा रहूँ तेरे हुज़ूर गिर्या व ज़ारी[1] करूँ और तेरी याद में मस्रूफ़[2] रहूँ और जिस दिन सैर होकर[3] खाना खाऊँ, दिल की गहराई से तेरा शुक्र और तेरी तारीफ़ करूँ। (फ़तहुल्बारी, मदारिजुन्नुबुव्वा)

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझसे पहले अम्बिया पर भी फ़क़्रो-फ़ाक़ा[4] की सख़्तियाँ गुज़री हैं और मुझे भी अल्लाह तआला की नवाज़िशों[5] में यह नवाज़िश सबसे ज़्यादा पसन्द है।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा कहती हैं नबी अलैहिस्सलाम कभी भी सैर होकर खाना नहीं खाते थे और आपने कभी किसी से इस बात का ज़िक्र नहीं किया क्योंकि आपको फ़क़्र[6] ग़िना[7] से और भूख पेट भर कर खाने से ज़्यादा महबूब और पसन्दीदा थी। आप सल्ल० बसाऔक़ात[8] भूख की वजह से तमाम रात बेचैन रहते मगर आपकी यह भूख आपको अगले रोज़ रोज़ा रखने से नहीं रोक सकती। रात को कुछ खाए-पिये बग़ैर आप सल्ल० रोज़ा रख लेते, हालाँकि अगर आप चाहते तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुनिया के तमाम ख़ज़ाने और हर क़िस्म की नेअ़मतें और फ़रावानियाँ[9] मांग सकते थे। मगर आप सल्ल० ने फ़क़्रोफ़ाक़ा[10] को ऐशो सामानी[11] पर हमेशा तर्जीह दी। मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की यह हालत देख कर रोने लगती और ख़ुद मेरी अपनी यह हालत होती कि भूक से बुरा हाल होता और मैं पेट पर हाथ फेरने लगती और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहने लगती-- काश! हमें सिर्फ़ गुज़र-बसर ही की हद तक खाने-पीने का सामान मुयस्सर होता, फ़राख़ी[12] और ऐशो सामानी न सही, कम से कम इतना ही होता कि इत्मीनान से हमारा गुज़र-बसर चलता। मेरी यह बात सुनकर आप सल्ल० ने फ़रमाया-- ऐ आइशा! हमें दुनिया से क्या ग़र्ज़, मुझसे पहले मेरे भाई जो जलीलुल् क़द्र[13] पैग़म्बर थे इस दुनिया में आए और

1-रोना-धोना, 2-लीन, व्यस्त, 3-पेट भर कर, 4-तंगदस्ती, 5-कृपाओं, 6-दरिद्रता, 7-समृद्धि, 8-प्रायः, कभी-कभी, 9-अधिकता, 10-दरिद्रता, 11- भोग-विलास की सामग्री, 12-उन्नति, 13-सुप्रतिष्ठित, महात्मा।

मुझसे ज़्यादा सख़्तियाँ बर्दाशत कीं मगर सब्र किया और उसी हाल में अपने अल्लाह से जा मिले, वहाँ उन्हें बुलन्द मक़ामात से नवाज़ा गया और तरह-तरह की नेअ़्मतें उनको अ़ता कीं गयीं। मैं डरता हूँ कि मुझे इस दुनिया में फ़राख़ी दे दी जाए और आख़िरत की लाज़वाल[1] नेअ़्मतों में कमी हो जाए, मेरे नज़्दीक इससे ज़्यादा महबूब और पसन्दीदा कोई बात नहीं कि मैं अपने दोस्तों और भाईयों से इसी हालत में जा मिलूँ। (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बात फ़रमाइ उसके बाद मुश्किल से एक माह आप सल्ल० हम में रहे, फिर आप सल्ल० का विसाल[2] हो गया और अपने मालिके हक़ीक़ी से जा मिले।

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तस्लीमन् कसीरन् कसीरा

अल्लाह आप पर दुरूद (रहमत) भेजे और बहुत ज़्यादा सलाम।

(किताबुश्शिफ़ा, मदारिजुन्नुबुव्वा, शमाइले रसूल)

1-अनश्वर, कभी ख़त्म न होने वाली, 2-निधन,

आपके बाज़ अवारिज़े बशरियत के ज़ुहूर की हिक्मत

(आपके विभिन्न मानवीय कष्टों के आविर्भाव की युक्ति)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी मिस्ल[1] दूसरे इन्सानों के शदाइद[2] झेलने का इत्तिफ़ाक़ हुआ है ताकि आप सल्ल० का सवाब बहुत ज़्यादा हो और दर्जात बुलन्द हों। चुनांचे आपको मरज़ भी लाहिक़[3] हुआ और दर्द वग़ैरा की भी शिकायत हुई और आपको गर्मी व सर्दी का भी असर हुआ और भूख-प्यास भी लगी और आप सल्ल० को (मौक़े पर) ग़ुस्सा भी आया और इन्क़िबाज़[4] भी हुआ और आपको मांदगी व ख़स्तगी[5] भी हुई और कमज़ोरी व बीमारी भी हुई और सवारी पर से गिरकर ख़राश भी आई और जंगे उहद में कुफ़्फ़ार के हाथ से आपके चेहरे और सरे मुबारक में ज़ख़्म भी हुआ और कुफ़्फ़ारे ताइफ़ ने आपके क़दमे मुबारक को ख़ून आलूद[6] भी किया। आपको ज़हर भी खिलाया गया और आप सल्ल० पर जादू भी किया गया। आपने दवा भी की, पछने भी लगवाए[7], झाड़-फूंक का भी इस्तिमाल किया और अपना वक़्त पूरा करके आलमे बाला[8] से मुल्हिक़[9] हो गए और इस दारुल इम्तिहान[10] व बला[11] से अज़ाद हो गए। (अगर यह जिस्मानी तक्लीफ़ न होती तो शायद किसी को आप सल्ल० पर उलूहिय्यत[12] का शुब्ह हो जाता)

इसके अलावा आपके तमाम हालात व वाक़िआते ज़िन्दगी सबक़-आमोज़[13] हैं ताकि मसाइब[14] में आपकी उम्मत के लिये तसल्ली का सबब हो कि जब सय्यिदुल अम्बिया को भी तक्लीफ़ पहुँची है तो हम क्या चीज़ हैं और ये अवारिज़े मज़्कूरा[15] सिर्फ़ आपके उन्सुरी जसद शरीफ़[16] पर बवजह मुशारकते नौई[17] के तारी होते थे। रहा आप सल्ल० का क़ल्बे

1-समान, 2-कठोरताएँ, 3-मिला, 4-खिन्नता, 5-थकावट व शिथिलता, 6-रक्त-रंजित, 7-दूषित रक्त को निकलवाना, 8-परलोक, 9-मिलना, 10-परीक्षा का जगत् अर्थात संसार, 11-मुसीबत, 12-उपास्य, 13-नसीहत करने वाला, 14-आपत्तियों, 15-उपर्युक्त बीमारियाँ, 16-भौतिक शरीर, 17- समस्त मनुष्यों में समान रूपेण भागीदारी।

मुबारक सो वह तअ़ल्लुक़ बिल ख़ल्क़[1] से मुनज़्ज़ह व मुक़द्दस[2] और मुशाहदा-ए-हक़[3] में मश्ग़ूल[4] था क्योंकि आप सल्ल० हर आन[5], हर लख़्त[6] अल्लाह तआ़ला ही के साथ, अल्लाह ही के वास्ते, अल्लाह तआ़ला ही में मुस्तग़रक़[7] और अल्लाह तआ़ला ही की मइय्यत[8] में थे हत्ताकि आप सल्ल० का खाना-पीना, पहनना, हरकत व सुकून, बोलना, ख़ामोश रहना सब अल्लाह तआ़ला ही के वास्ते और अल्लाह तआ़ला ही के हुक्म से था।

चुनांचे इर्शादे ख़ुदावन्दी है:-

وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝

व मा यन्तिक़ु अनिल्हवा इनहुव इल्ला वह्युंय्यूहा।

(और आप नफ़्सानी ख़्वाहिश से बातें नहीं बनाते बल्कि इनका इर्शाद निरी वही है जो उन पर नाज़िल की जाती है) (नज्मुस्साक़िब)

बाज़ शमाइल व आदाते तय्यिबा

(कुछ अच्छी आ़दतें और पवित्र स्वभाव)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब सुबह की नमाज़ पढ़कर फ़ारिग़ होते तो लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह होते और दर्याफ़्त फ़रमाते क्या कोई मरीज़ है जिसकी अ़यादत[9] करूँ या कोई जनाज़ा है कि उसकी नमाज़ पढ़ूँ अगर ज़रूरत होती तो तशरीफ़ ले जाते।

आप सल्ल० ज़मीन पर बैठते और ज़मीन पर ही बैठ कर खाना तनावुल[10] फ़रमाते और अक्सर ज़मीन पर इस्तिराहत[11] फ़रमाते। ग़रीब और बेसहारा लोगों की इ़यादत को तशरीफ़ ले जाते और ख़ुद उनका काम-काज करते, कभी किसी को हक़ीर[12] न समझते, हमेशा ग़रीबों के जनाज़े में शरीक होते, कमज़ोर, फ़ाक़ा-मस्त[13] और मुफ़्लिस[14] लोगों के पास ख़ुद जाते और

1-सामान्य प्राणियों से संबंधित, 2-स्वच्छ व पवित्र, 3-वास्तविकता के निरीक्षण, 4-संलग्न, व्यस्त, 5-प्रत्येक क्षण, 6-प्रत्येक समय, 7-लीन, साथ, 8-साथ, 9-रोगी का हाल पूछने और उसे सान्त्वना देने उसके पास जाना, 10-भोजन करना, 11-आराम, 12-तुच्छ, 13-उपवास में मस्त रहने वाला, 14-दरिद्र।

उनकी इआनत[1] फ़रमाते, ग़रीब से ग़रीब आदमी की भी दावत क़बूल फ़रमा लेते, ग़रीबों और तंगदस्तों की मदद करते, उनका बोझ उठाते, मेहमानों की मदारात[2] करते और भलाई के कामों में तआवुन[3] फ़रमाते।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا ۔

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तस्लीमन् कसीरन् कसीरा

अपने साथियों में से जब किसी को कहीं का हाकिम वग़ैरा बनाकर भेजते तो उसको यह नसीहत फ़रमाते कि लोगों को अच्छी बातें बताना, उनके लिये आसानियाँ पैदा करना, दीन को इस तरह पेश करना कि उन्हें इसकी रग़बत[4] हो, उन्हें अहकाम[5] से मुसीबत में न डालना वग़ैरा।

जो लोग अहले इल्म व फ़ज़्ल होते और अच्छे अख़्लाक़ वाले होते, आप उनकी इज़्ज़त व एहतिराम फ़रमाते, जो लोग इज़्ज़त व मर्तबे वाले होते उन पर एहसान फ़रमाते, अपने अज़ीज़ो अक़ारिब[6] की इज़्ज़त करते और उनके साथ सिलएरहमी[7] करते। अपने अज़ीज़ों अक़ारिब में यह न देखते कि कौन अफ़ज़ल[8] है और कौन नहीं, जिसको ज़्यादा मुस्तहिक़[9] समझते उसकी ज़्यादा मदद करते। जब अपने साथियों से मिलते तो पहले ख़ुद सलाम करते और बड़ी गर्म-जोशी के साथ मुसाफ़हा करते।

आप सल्ल० जब जिहाद का हुक्म फ़रमाते तो ख़ुद सबसे पहले जिहाद के लिये तैयार हो जाते और जब मैदाने कारज़ार[10] गर्म होता तो सबसे आगे और दुश्मन के सबसे ज़्यादा क़रीब होते।

(माख़ूज़[11] वसाइलुल्-वुसूल इला शमाइलिर्-रसूल)

1-सहायता, 2-आदर-सत्कार, 3-सहायता, 4-रुचि, 5-आदेशों, 6-रिश्तेदार, 7-परिवार वालों से प्रेम तथा यथाशक्ति सहायता करना, 8-श्रेष्ठ, 9-सहायता के योग्य, 10-युद्ध क्षेत्र, 11-उद्धृत।

तहम्मुल व दरगुज़र

(धैर्य व क्षमा)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लोगों के ईज़ा[1] देने पर सबसे ज़्यादा साबिर[2] थे और सबसे बढ़कर हलीम[3] थे।

बुराई करने वाले से दरगुज़र फ़रमाते थे और जो शख़्स आप से बदसलूकी[4] करता था आप उससे नेक सुलूक[5] करते थे और जो शख़्स आप सल्ल० को न देता आप उसको देते और जो शख़्स आप पर ज़ुल्म करता आप उससे दर्गुज़र फ़रमाते और किसी काम के दो पहलुओं में जो आसान होता आप उसको इख़्तियार फ़रमाते, बशर्ते कि वह गुनाह न होता। (उसमें अपने मुत्तबिईन[6] के लिए आसानी की रिआ़यत फ़रमाई। नीज़ तज्रिबा है कि आसानी पसन्द तबीअ़त दूसरों के लिए भी आसानी तज्वीज़ करती है)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी ज़ात के लिए किसी से इन्तिक़ाम[7] नहीं लिया। आप ने कभी किसी चीज़ को (यानी आदमी या जानवर को) अपने हाथ से नहीं मारा, अल्लाह की राह में जो जिहाद किया वह और बात है। (शमाइले तिर्मिज़ी, नश्रुत्तीब)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने दस्ते मुबारक[8] से अल्लाह तआ़ला शानुहू के लिए जिहाद के अ़लावा कभी किसी को नहीं मारा, न कभी किसी ख़ादिम[9] को, न किसी औ़रत (बीवी या बान्दी) को मारा। आप फ़रमाती हैं कि मैंने कभी नहीं देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी ज़ात के लिए कभी किसी के ज़ुल्म का बदला लिया हो अल्बत्ता अल्लाह की हुर्मतों[10] में से किसी की तौहीन[11] होती हो (मसलन् किसी हराम फ़ेल[12] का कोई मुर्तकिब[13] होता हो) तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

1-कष्ट, तक्लीफ़, 2-धैर्यवान, 3-सहिष्णु, 4-दुर्व्यवहार, 5-शिष्ट व्यवहार, 6-अनुयायियों, 7-बदला, 8-पवित्र हाथ, 9-सेवक, 10-अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से निषिद्ध कर्म, 11-तिरस्कार, 12-वर्जित काम, 13-पाप करने वाला।

से ज़्यादा गुस्से वाला कोई शख़्स नहीं होता था। (शमाइले तिर्मिज़ी)

एक मर्तबा एक बदवी[1] आया और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की चादर पकड़ कर इस ज़ोर से खींची कि गर्दने मुबारक पर निशान पड़ गए और यह कहा कि मेरे इन ऊँटों पर ग़ल्ला लदवा दो। तुम अपने माल में से या अपने बाप के माल में से नहीं देते हो (गोया बैतुल्माल[2] का माल हम ही लोगों का है, तुम्हारा नहीं है) हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तक तू इस चादर को खींचने का बदला नहीं देगा, मैं ग़ल्ला नहीं दूँगा। उसने कहा -- अल्लाह तआ़ला की क़सम, मैं बदला नहीं देता। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तबस्सुम फ़रमा[3] रहे थे और उसके ऊँटों पर ग़ल्ला लदवा दिया। (ख़साइले नबवी)

मस्कनत
(नम्रता)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मरीज़ों की इयादत फ़रमाते थे, जनाज़ों में शिर्कत फ़रमाते थे, दराज़गोश[4] पर सवार हो जाते थे और ग़ुलामों की दावत क़बूल फ़रमा लेते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

और अपनी बकरी का दूध दुह लेते और अपने कपड़े में ख़ुद पेवन्द लगा लेते और अपने पापोश[5] को (वक़्त ज़रूरत) सी लिया करते, अपना और अपने घर वालों का काम कर लिया करते। (इब्ने सअ़द)

आप सल्ल० ख़िदमतगार के साथ खाना खा लेते और उसके साथ आटा गुँधवा लेते, अपना सौदा बाज़ार से ख़ुद ले आते और सबसे बढ़ कर एहसान करने वाले और अ़द्ल[6] करने वाले और अ़फ़ीफ़[7] और सच बोलने वाले थे। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-देहाती, 2-वह कोष या ख़ज़ाना जिससे आम मुसल्मानों की मदद की जाए, 3-मुस्कुराना, 4-एक प्रकार का गधा, 5-जूता, 6-न्याय, 7-पवित्र।

रिफ़्क़ व तवाज़ो
(मृदुलता व नम्रता)

आप सल्ल० निहायत हलीम[1] थे, न किसी को दुश्नाम[2] देते थे, न सख़्त बात फ़रमाते थे, न लानत करते न बद्-दुआ[3] देते थे।

आप सल्ल० काफ़िर और दुश्मन से भी उसकी तालीफ़े क़ल्ब[4] की सवक़्क़ो[5] पर कुशादा रूई[6] के साथ पेश आते थे और ज़ाहिर की बेतमीज़ी[7] की बात पर सब्र फ़रमाते और अपने घर में आकर घर वालों के काम का इन्तिज़ाम फ़रमाते और चादर ओढ़ने में बहुत एहतिमाम फ़रमाते कि उसमें हाथ और पैर ज़ाहिर न हों (ग़ालिबन् बैठने की हालत में ऐसा होता होगा) और आप सल्ल० की कुशादा रूई और इन्साफ़ सबके लिये आम था और ग़ुस्सा आप को बेताब नहीं करता था।

और अपने जलीसों[8] से कोई बात (ख़िलाफ़े ज़ाहिर) दिल में न रखते थे और आँखों की ख़ियानत (यानी दुज़्दीदा नज़र[9]) आप में न थी, तो क़ल्ब की ख़यानत का तो क्या एहतिमाल[10] हो। (नश्रुत्तीब)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुरी आदतों में झूठ बहुत नागवार होता था। (बैहक़ी, इब्ने सअ़द)

फ़िक्रे आख़िरत
(पारलौकिक चिंतन)

आप सल्ल० अपने आपको दुनिया में मुसाफ़िर की तरह समझते थे, दुनियवी ऐशो-आराम से तअ़ल्लुक़ न था बल्कि:-

كُنْ فِى الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ اَوْ عَابِرُ سَبِيْلٍ (نشرالطيب)

1-सहिष्णु, 2-गाली, 3-अभिशाप, 4-लोगों के मन अपनी ओर इस प्रकार आकर्षित करना जिसमें श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव हो, 5-आशा, उम्मीद, 6-प्रसन्नता, 7-अशिष्ट, 8-दोस्त, पास बैठने वाले, 9-कनखियों से देखना, 10-शंका।

"कुन फ़िद्दुन्या कअन्नक ग़रीबुन् अव् आबिरु सबीलिन।

(दुनिया में ग़रीबुल्वतन मुसाफ़िर या रास्ता गुज़रने वाले की तरह रहो) का अमली नमूना थे। (नश्रुत्तीब)

जूदो-सख़ा
(दानशीलता)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में कहीं से कोई सदक़ा वग़ैरा की रक़म आती तो जब तक आप सल्ल० उसको ग़रीबों और मुस्तहिक़्क़ीन[1] में तक़्सीम न फ़रमा देते घर के अन्दर तशरीफ़ न ले जाते। (नश्रुत्तीब)

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम किसी ज़रूरतमन्द मोहताज को देखते तो अपना खाना-पीना तक उठाकर इनायत फ़रमा देते हालाँकि उसकी आपको भी ज़रूरत होती। (सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम)

आपकी अ़ता[2] और सख़ावत मुख़्तलिफ़ सूरतों से होती थी, किसी को कोई चीज़ हदिया[3] फ़रमा देते, किसी को उसका हक़ देते, किसी को कोई हदिया देते, कभी कपड़ा ख़रीदते और उसकी क़ीमत अदा करके उस कपड़े वाले को वही कपड़ा बख़्श देते और कभी क़र्ज़ लेते उससे ज़्यादा अ़ता फ़रमा देते और कभी हदिया क़बूल फ़रमाते और उससे कई गुना ज़्यादा उसको इन्आ़म अ़ता फ़रमा देते। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कभी किसी शख़्स से कोई चीज़ मांगने पर इन्कार नहीं फ़रमाया (अगर उस वक़्त मौजूद होती तो अ़ता फ़रमा देते वर्ना दूसरे वक़्त का वादा फ़रमा लेते या उसके हक़ में दुआ़ फ़रमाते कि हक़ तआ़ला शानुहू उसको किसी और तरीक़े से अ़ता फ़रमा दें।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

बहरनौअ़[4] जिस तरह भी मुम्किन है आप तरह-तरह की सूरतों में

1-ज़रूरतमन्द, 2-दानशीलता, 3-उपहार, 4-हर अवस्था में।

ख़ैरात व अतिय्यात[1] तक़्सीम फ़रमाया करते थे बावजूदेकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुद अपनी ज़िन्दगानी फ़क़ीराना तौर पर बसर होती थी। एक-एक, दो-दो महीने गुज़र जाते कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काशाने[2] में चूल्हा तक न जलता और बसाऔक़ात[3] शिद्दते भूक[4] से अपने शिकमे अतहर[5] पर पत्थर बाँध लिया करते। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह फ़क़्र[6] तंगी और मज्बूरी और कुछ न होने के सबब[7] से न था बल्कि इसका सबब ज़ुहद[8] और जूदो-सख़ा था और कभी अपनी अज़्वाज[9] के लिये एक साल का गुज़ारा मोहैया फ़रमा देते लेकिन अपने लिए कुछ बचाकर न रखते। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

उमूरे तबई
(स्वाभाविक प्रवृत्ति अथवा कार्य)

सरवरे दो आ़लम[10] सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बहुत बड़े सख़ी थे। किसी सवाल करने वाले को "नहीं" कभी नहीं कहा, हुआ तो फ़ौरन दे दिया वर्ना नर्मी से समझा दिया कि दूसरे वक़्त आना तो ले जाना। (इब्ने सअ़द)

बात के आप सल्ल० बहुत सच्चे थे, सब बातों में आसानी और सहूलत इख़्तियार फ़रमाते, अपने साथ उठने-बैठने वालों का सबका ख़्याल रखते, उनके हालात को दरयाफ़्त करते रहते, जब रात के वक़्त बाहर जाना होता तो आहिस्ता से उठते और आहिस्ता से जूता पहनते और आहिस्ता से किवाड़ खोलते और फिर आहिस्ता से बाहर चले जाते, इसी तरह घर में तशरीफ़ लाते तो आहिस्ता से आते और आहिस्ता से सलाम करते ताकि सोने वालों को तक्लीफ़ न हो और किसी की नींद ख़राब न हो जाए।

(ज़ादुल्-मआ़द)

जब कोई आप सल्ल० के पास आता और आप उसको ख़ुशो-ख़ुर्रम[11] देखते तो उसके हाथ अपने हाथ में लेते ताकि उन्सियत[12] हो जाए।

(इब्ने सअ़द)

1-पुरस्कार, तोहफ़ा, 2-घर, 3-प्रायः, कभी-कभी, 4-भूख की पीड़ा, 5-पवित्र पेट, 6-दरिद्रता, 7-कारण, 8-संयम, 9-पत्नियों, 10-लोकों के सरदार, 11-अति प्रसन्न, 12-लगाव, प्रेम।

जब कोई (शख़्स) हुज़ूरे अक्रम सल्ल० के पास माले ज़कात इस ग़र्ज़ से लाता कि मुस्तहिक़्क़ीन[1] में तक़्सीम फ़रमा दें तो आप उस लाने वाले को दुआ देते-- ऐ अल्लाह ! उस फ़्लाँ शख़्स पर रहम फ़रमा। (मुस्नदे अहमद)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब किसी के घर तशरीफ़ ले जाते तो दरवाज़े के सामने न खड़े होते बल्कि दाहिनी या बायीं जानिब खड़े होते और घर वालों की इत्तिलाअ़[2] के लिये फ़रमाते -- اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ

''अस्सलामु अ़लैकुम'' (अबू दाऊद, ज़ादुल्-मआ़द)

रात को किसी के घर तशरीफ़ ले जाते तो ऐसी आवाज़ से सलाम करते कि जागने वाला सुन लेता और सोने वाला न जागता। (ज़ादुल्मआ़द)

चलते तो नीची निगाह ज़मीन की तरफ़ रखते, मज्मा के साथ चलते तो सबसे पीछे होते और कोई सामने आता तो सलाम पहले आप ही करते, आ़जिज़ाना सूरत[3] से बैठते, ग़रीबों, मिस्कीनों की तरह बैठकर खाना खाते।

ख़ास मेहमानों की मेहमानी ख़ुद बनफ़्से-नफ़ीस[4] अंजाम देते।

(ज़ादुल् मआ़द)

आप सल्ल० अक्सर औक़ात[5] ख़ामोश रहते, बिला ज़रूरत कलाम न फ़रमाते, जब बोलते तो इतना साफ़ कि सुनने वाला ख़ूब समझ ले, न इतना लम्बा कलाम फ़रमाते कि आदमी उक्ता जाए न इतना मुख़्तसर[6] कि बात अधूरी रह जाए, किसी बात में, किसी काम में सख़्ती न फ़रमाते, नर्मी को पसन्द फ़रमाते, अपने पास आने वाले की बेक़दरी न फ़रमाते, न किसी की बात काटते, अगर ख़िलाफ़े शर्अ़[7] होती तो उसको रोक देते थे या वहाँ से ख़ुद उठ कर चले जाते। अल्लाह तआ़ला की हर नेअ़्मत की बड़ी क़द्र फ़रमाते। (नश्रुत्तीब)

किसी चीज़ के टूट जाने, बिगड़ जाने पर मसलन् कोई चीज़ किसी ने तोड़ दी या काम बिगाड़ दिया तो आपको गुस्सा न आता था अल्बत्ता अगर

1-हक़दारों, ज़रूरतमन्दों, 2-सूचना, 3-विनम्रता, 4-व्यक्तिगत रूपेण, 5-प्रायः, 6-संक्षिप्त, 7-इस्लामी कानून के विरुद्ध।

कोई बात दीन के ख़िलाफ़ होती तो आपको सख़्त गुस्सा आता था।

(नश्रुत्तीब)

कभी आप सल्ल० ने ज़ाती मुआमले[1] में गुस्सा नहीं किया और न अपने नफ़्स का किसी से बदला लिया, किसी से नाराज़गी का इज़्हार फ़रमाते तो चेहरे को उस तरफ़ से फेर लेते थे लेकिन ज़बान से सख़्त-सुस्त[2] तक नहीं कहते, जब ख़ुश होते तो नीची निगाह कर लेते, निहायत ही शर्मीले थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कुवाँरी लड़की से जो अपने पर्दे में हो, शर्मो हया में कहीं ज़्यादा बढ़े हुए थे, शिद्दते हया[3] की वजह से किसी शख़्स के चेहरे पर नज़र जमा कर न देखते, कभी आँखों में आँखें डालकर न देखते।

(इब्ने सअ़द)

किसी शख़्स को इत्तिफ़ाक़न आप सल्ल० के हाथ से कोई तक्लीफ़ पहुँच जाती तो आप उसको बिला तकल्लुफ़ बदला लेने का हक़ देते और कभी उसके इवज़[4] में उसको कोई चीज़ मर्हमत फ़रमाते[5]। (ज़ादुल्मआद)

अगर कोई ग़रीब आता या कोई बान्दी या कोई बुढ़िया आपसे बात करना चाहती तो सड़क के एक किनारे पर सुनने के लिये खड़े हो जाते या बैठ जाते, बीमार होता तो उसकी मिज़ाज पुरसी फ़रमाते, किसी का जनाज़ा होता उसमें शरीक हो जाते। (इब्ने सअ़द)

आप सल्ल० के मिज़ाज में इस क़द्र तवाज़ो[6] थी कि अपनी उम्मत को इसकी ताकीद फ़रमाई है कि मुझको मेरे दर्जे से ज़्यादा न बढ़ाओ।

फ़रमाया:- لَا تُطْرُوْنِي

"ला तुत्रूनी"- (बढ़ा-चढ़ा कर तारीफ़ मत करो) (ज़ादुल्-मआद)

जब सहाबा-ए-किराम मिलते तो आप सल्ल० उनसे मुसाफ़हा करते और दुआ फ़रमाते थे। (नसाई)

जब किसी का नाम मालूम न होता और उसको बुलाना होता तो या अ़ब्दल्लाह! (ऐ अल्लाह के बन्दे) कहकर बुलाते। (इब्नुस्सुन्नी)

1-निजी काम, 2-बुरा-भला, 3-अति लज्जा, 4-दे देते, 5-विनम्रता।

जब आप सल्ल० चलते तो दायें-बायें नहीं देखते थे।

(हाकिम, इब्ने सअ़द)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सब की दिलजोई फ़रमाते[1] ऐसा बर्ताव न करते जिससे कोई घबरा जाए। ज़ालिमों और शरीरों से ख़ुश-उस्लूबी[2] के साथ अपना बचाव भी करते मगर सबके साथ ख़न्दा पेशानी[3], ख़ुश-अख़्लाक़ी[4] के साथ पेश आते, हर काम को इन्तिज़ाम के साथ किया करते, बैठते-उठते अल्लाह तआ़ला शानुहू की याद करते, किसी महफ़िल में तशरीफ़ ले जाते तो जहाँ भी किनारे पर जगह मिल जाती बैठ जाते अगर बात करने वाले कई आदमी होते तो बारी-बारी सबकी तरफ़ मुँह करके बात करते। (नश्रुत्तीब)

आप सल्ल० तीन दिन से क़ब्ल[5] क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म न करते थे।

(इब्ने सअ़द)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जाइज़ काम से मना नहीं फ़रमाते थे, अगर कोई आप सल्ल० से सवाल[6] करता और उसके सवाल को पूरा करने का इरादा होता तो हाँ कह देते वर्ना ख़ामोश हो जाते।

(इब्ने सअ़द)

हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा कहती हैं-- "कोई शख़्स अपने ख़ुल्क़[7] में आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जैसा न था ख़्वाह कोई सहाबी बुलाता या घर का कोई शख़्स, नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसके जवाब में "लब्बैक" (हाज़िर हूँ) ही फ़रमाया करते।"

(ज़ादुल्-मआ़द)

नफ़्ल इबादतें छुप कर अदा फ़रमाते ताकि उम्मत पर इस क़द्र इबादत करना शाक़[8] न हो। (ज़ादुल्-मआ़द)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शादे गरामी[9] है कि अल्लाह तआ़ला के साथ मैंने मुआ़हदा[10] किया है कि जिस शख़्स को मैं दुश्नाम[11] दूँ

1-सांत्वना देते, 2-शिष्टाचार, 3-विनय, 4-सुशीलता, 5-पूर्व, 6-प्रश्न, याचना 7-स्वभाव, सुशीलता, 8-कठिन, 9-शुभ कथन, 10-संप्रतिज्ञा, 11-अपशब्द कहना, गाली देना।

या लानत करें वह दुश्नाम उस शख़्स के हक़ में गुनाहों का कफ़्फ़ारा[1] रहमत व बख़्शिश और क़ुर्ब का ज़रिया बना दी जाए। (ज़ादुल्-मआद)

नेक काम को शुरू फ़रमाते तो फिर उसको हमेशा किया करते।

(अबू दाऊद)

जब आप सल्ल० को खड़े हुए गुस्सा आता तो बैठ जाते और बैठे-बैठे गुस्सा आता तो लेट जाते थे। (ताकि गुस्सा फ़रो[2] हो जाए)

(ज़ादु-लमआद, इब्ने अबिद्दुन्या)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सीधा हाथ वुज़ू और खाने-पीने के लिये इस्तिमाल फ़रमाते थे और बायाँ हाथ इस्तिन्जा[3] और इस जैसे कामों के लिये इस्तिमाल फ़रमाते थे। (ज़ादुल्-मआद, अबू दाऊद)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते मुबारक थी कि जब आपके सहाबा रज़ि० में से कोई आप सल्ल० से मिलता और वह ठहर जाता तो उसके साथ आप भी ठहर जाते और जब तक वह ख़ुद न जाता आप सल्ल० ठहरे ही रहते।

और जब कोई आपके हाथ में हाथ देना चाहता तो आप सल्ल० अपना हाथ दे देते और जब तक वह ख़ुद हाथ न छोड़ता आप हाथ नहीं छुड़ाते। (इब्ने सअद)

एक रिवायत में है कि आप सल्ल० किसी से अपना चेहरा न फेरते जब तक कि वह ख़ुद न फेरता और कोई चुपके से बात कहना चाहता तो आप कान उसकी तरफ़ कर देते थे और जब तक वह फ़ारिग़[4] न हो जाता आप सल्ल० कान नहीं हटाते थे। (इब्ने सअद)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बच्चों के पास से गुज़रते तो उनको सलाम करते। (ज़ादुल्-मआद)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू ने फ़रमाया- कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

1-प्रायश्चित्त, 2-नष्ट, कम 3-पेशाब या शौच के बाद पानी से साफ़ करने को इस्तिन्जा कहते हैं, 4-मुक्त।

अ़लैहि व सल्लम के सामने जो कोई शख़्स, यक्बारगी[1] आ जाता तो वह मर्ऊ़ब[2] हो जाता और जो शख़्स शनासाई[3] के साथ मिलता-जुलता था आप से महब्बत करता था। मैंने आप सल्ल० जैसा साहिबे जमाल[4] व साहिबे कमाल[5] न आप से पहले किसी को देखा और न बाद में किसी को देखा।

(नश्रुत्तीब)

ख़ुशी के वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नज़र नीची कर लेते।

जब आप को किसी के मुतअ़ल्लिक़ बुरी बात मालूम होती तो यूँ नहीं फ़रमाते कि फ़्लाँ शख़्स को क्या हुआ, ऐसा-ऐसा करता है बल्कि यूँ फ़रमाते कि लोगों को क्या हो गया है, वे ऐसा-ऐसा करते हैं।

(शमाइले नबवी, अबू दाऊद)

ज़बाने मुबारक से वही बात फ़रमाते जिस में सवाब मिले। कोई परदेसी आता तो उसकी ख़बरगीरी[6] करते। हर शख़्स के साथ ऐसा बर्ताव करते जिससे हर शख़्स को यही महसूस होता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मेरे साथ सबसे ज़्यादा महब्बत है। अगर कोई शख़्स बात करने बैठ जाता तो जब तक वह न उठे आप न उठते थे। (नश्रुत्तीब)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब फ़िक्रमन्द होते तो आसमान की तरफ़ सर उठाकर फ़रमाते:-

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْم

"सुब्हानल्लाहिल् अ़ज़ीम"-- (अल्लाह पाक है और अ़ज़्मत वाल यानी बहुत बड़ा है) और जब ज़्यादा गिर्या व ज़ारी[7] और दुआ का इन्हिमाक[8] बढ़ जाता तो फ़रमाते:-

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

'या हय्यु या क़य्यूम'-- ऐ ज़िन्दा रहने वाले! ऐ क़ाइम (नित्य) रहने वाले। (तिर्मिज़ी)

1-अचानक, 2-रौब में आया हुआ, 3-परिचय, जान-पहचान, 4-रूपवान, 5-गुणवान, 6-देख-रेख, 7-रोना-धोना, 8-तन्मयता।

एक रिवायत में है कि ग़म के वक़्त अक्सर आप सल्ल० रीशे मुबारक[1] पर हाथ ले आया करते, कभी उंगलियों से उसमें ख़िलाल फ़रमाते, और फ़रमाते--

حَسْبِیَ اللّٰہُ وَنِعْمَ الْوَکِیْلُ ٥

"हस्बियल्लाहु व निअ्मल् वकील"

अनुवादः मेरे लिये आल्लाह रब्बुल इज़्ज़त काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज़ है। (ज़ादुल्मआ़द)

मक्तबा-ए-अशरफ़

1-दाढ़ी।

हिस्सए सोम (तीसरा हिस्सा)

ख़ैरुल्‌बशर
रहमतुल्लिल् आ़लमीन
सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम
की
ख़ुसूसियाते अन्दाज़े ज़िन्दगानी

(पुरुषोत्तम, सम्पूर्ण लाकों के लिये कृपालु व कल्याणकारी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जीवन-शैली की विशेषताएँ)

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

يَا صَاحِبَ الْجَمَالِ وَيَا سَيِّدَ الْبَشَرِ

या साहिबल् जमालि व या सय्यिदल् बशर

مِنْ وَّجْهِكَ الْمُنِيْرِ لَقَدْ نَوَّرَ الْقَمَرُ

मिंव् वज्हिकल् मुनीरि लक़द नव्वरल् क़मर

لَا يُمْكِنُ الثَّنَآءُ كَمَا كَانَ حَقُّهٗ

ला युम्किनुस् सनाउ कमा कान हक़्क़ुहू

بعد از خدا بزرگ توئی قصہ مختصر

बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर।

अनुवाद

ऐ साहिबे जमाल[1] और ऐ इन्सानों के सरदार! अपके नूरानी चेहरे से तो चाँद को रौशनी बख़्शी गई है। जैसा कि आपकी तारीफ़ का हक़ है ऐसी तारीफ़ मुम्किन नहीं। ख़ुदाए ज़ुल्जलाल[2] के बाद आप ही सबसे बड़े हैं। यही मुख़्तसर[3] बात है।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ

تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا ۔

सल्लल्लाहु अलैहि व बारक व सल्लम

तस्लीमन् कसीरन् कसीरन् कसीरा।

1-सुन्दरता वाले, 2-प्रचण्ड तेज वाले, प्रताप वाले 3-संक्षिप्त।

दर्सगाहे रुश्दो-हिदायत

(शिक्षा-दीक्षा और मार्ग दर्शन की संस्था)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मजालिसे ख़ैरो-बरकत

(हुज़ूर नबीए करीम सल्ल० की कल्याण और समृद्धि की सभाएँ)

आप सल्ल० की मज्लिस हिल्म व इल्म[1], हया व सब्र और मतानत व सुकून[2] की मज्लिस होती थी। इसमें आवाज़ें बुलन्द न की जाती थीं और किसी की हुर्मत[3] पर कोई दाग़ न लगाया जाता था और किसी की ग़लतियों की तश्हीर[4] न की जाती थी।

आप सल्ल० के अहले मज्लिस एक दूसरे की तरफ़ तक़्वा के सबब मुतवाज़िआ़ना तौर[5] पर माइल[6] होते थे उसमें बड़ों की तौक़ीर[7] करते थे और छोटों पर मेहरबानी करते थे और साहिबे हाजात[8] की इआ़नत[9] करते थे और बेवतन पर रहम करते थे। (नश्रुत्तीब)

हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हमसाया[10] था। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर वही नाज़िल होती तो आप मुझे बुला भेजते, मैं हाज़िर होकर उसको लिख लेता था (हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हम लोगों के साथ हद दर्जा दिलदारी और बेतकल्लुफ़ी फ़रमाते थे) जिस क़िस्म का ज़िक्र व तज़्किरा हम लोग करते हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी उसी क़िस्म का तज़्किरा फ़रमाते (यह नहीं कि बस आख़िरत ही का ज़िक्र हमारे साथ करते हों और दुनिया की बात सुनना भी गवारा न करें) और जिस वक़्त हम आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जह[11] होते तो हुज़ूरे

1-धीरता व ज्ञान, 2-नम्रता व शान्ति, 3-सम्मान, 4-प्रचार, 5-विनम्रता के साथ, 6-आकृष्ट, 7-सम्मान, इज़्ज़त, 8-ज़रूरतमन्द, 9-सहायता, 10-पड़ोसी, 11-आकृष्ट।

अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी आख़िरत का तज़्किरा फ़रमाते यानी जब आख़िरत का कोई तज़्किरा शुरू हो जाता तो उसी के हालात व तफ़सीलात हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बयान फ़रमाते और जब खाने-पीने का कुछ ज़िक्र होता तो हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी वैसा ही तज़्किरा फ़रमाते। खाने के आदाब व फ़वाइद, लज़ीज़ खानों का ज़िक्र मुज़िर[1] खानों का तज़्किरा वग़ैरा-वग़ैरा ये सब कुछ आप ही के हालात का तज़्किरा कर रहा हूँ। (ख़साइले नबवी)

आप सल्ल० मज्लिस में अपने अस्हाब के साथ तशरीफ़ फ़रमा होते तो अपने ज़ानुए मुबारक[2] को हमजलीसों[3] से आगे नहीं बढ़ने देते कि इम्तियाज़[4] पैदा न हो जाए। (ज़ादुल्-मआ़द)

अगर कोई शख़्स खड़े-खड़े किसी बात के मुतअ़ल्लिक़ सवाल करता तो आप सल्ल० उसको नापसन्द फ़रमाते और तअ़ज्जुब से उसकी तरफ़ देखते। अगर किसी मस्अले के बयान में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मसरूफ़ होते और क़ब्ल इसके कि सिलसिलए बयान ख़त्म हो, कोई शख़्स दूसरा सवाल पेश करता तो आप सल्ल० अपने सिलसिलए तक़रीर को बदस्तूर जारी रखते, मालूम होता कि गोया आपने सुना ही नहीं। जब गुफ़्तगू ख़त्म कर लेते तो साइल[5] से उसका सवाल मालूम करते और उसका जवाब देते।

सहाबा-ए-किराम रज़ि० के मज्मा में होते तो दरमियान में तशरीफ़ रखते और सहाबा रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द हल्क़े पर हल्क़ा लगाए बैठे होते और आप सल्ल० बवक़्त गुफ़्तगू कभी इधर रुख़ करके तख़ातुब फ़रमाते[6] और कभी उधर। गोया हल्क़े में से हर शख़्स बवक़्ते गुफ़्तगू आप के चेहरे मुबारक को देख लेता।

आप सल्ल० जब मज्लिस में बैठते तो दोनों पाँव खड़े करके उनके गिर्द हाथों का हल्क़ा बनाकर बैठते और वैसे कभी आपकी नशिस्त[7] इसी हैअत[8] से हुआ करती थी और यह सादगी और तवाज़ो की सूरत है, बाज़ अवक़ात आप

1-हानिकारक, 2-पवित्र घुटना, 3-साथ में बैठने वाला, 4-अन्तर, 5-प्रश्नकर्ता, 6-वार्तालाप करना, 7-बैठक, 8-रूप।

सल्ल० चार ज़ानू[1] भी बैठे हैं और बाज़ अवक़ात बग़ल में हाथ देकर उकड़ूँ भी बैठे हैं। (नश्रुत्तीब)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बैठना और उठना सब ज़िकुल्लाह[2] के साथ होता और अपने लिये कोई जगह बैठने की ऐसी मुअ़य्यन[3] न फ़रमाते कि ख़्वाह-मख़्वाह उसी जगह बैठें और अगर कोई बैठ जाए तो उसको उठा दें और दूसरों को भी जगह मुअ़य्यन करने से मना फ़रमाते थे और जब किसी मज्मा में तशरीफ़ ले जाते तो जिस जगह मज्लिस ख़त्म होती वहाँ बैठ जाते और दूसरों को भी यही हुक्म फ़रमाते और अपने जलीसों[4] में से हर शख़्स को उसका हिस्सा अपने ख़िताब[5] व तवज्जोह से देते यानी सबसे जुदा-जुदा (अलग-अलग) मुतवज्जह होकर ख़िताब फ़रमाते यहाँ तक कि आपका हर जलीस यूँ समझता कि मुझसे ज़्यादा आपको किसी की ख़ातिर अ़ज़ीज़ नहीं।

जो शख़्स किसी ज़रूरत के लिये आपको ले कर बैठ जाता या खड़ा रखता तो जब तक वही शख़्स न उठ जाए आप उसके साथ मुक़य्यद[6] रहते।

जो शख़्स आप सल्ल० से कुछ हाजत[7] चाहता तो बग़ैर इसके कि उसकी हाजत पूरी फ़रमाते या नर्मी से जवाब देते उसको वापस न करते।

आप की कुशादा रुई[8] और ख़ुशख़ूई[9] तमाम मुसलमानों के लिये आम थी, क्यों न होती कि आप सल्ल० उनके रूहानी बाप थे।

और तमाम लोग आप के नज़्दीक हक़ में फ़ी-नफ़्सिही[10] मुसावी[11] थे। अल्बत्ता तक़्वा की वजह से मुतफ़ावित[12] थे यानी तक़्वा की ज़्यादती से तो एक को दूसरे पर तर्जीह देते थे और दीगर उमूर में सब बाहम मुसावी[13] थे और हक़ में सब आपके नज़्दीक बराबर थे। (रिवायत अज़ हसन इब्ने अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

1-पलथी मारकर, 2-अल्लाह का स्मरण, 3-नियत, निश्चित, 4-साथ बैठने वाला, 5-संम्बोधन, 6-बंधे 7-अभिलाषा, 8-प्रफुल्लमुख, 9-अच्छा स्वभाव, 10-अपनी तरह 11-बराबर, 12-अन्तर, 13-आपस में बराबर।

अहले मज्लिस के साथ सुलूक

(सभासदों के साथ व्यवहार)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमा वक़्त[1] कुशादा-रू[2] रहते, नर्म अख़्लाक़ थे आसानी से मुवाफ़िक़[3] हो जाते थे, न सख़्त ख़ू[4] थे, न दुरुश्त गो[5] थे, न चिल्ला कर बोलते और न नामुनासिब बात फ़रमाते, जो बात (यानी ख़्वाहिश) किसी शख़्स की आपकी तबीअ़त के ख़िलाफ़ होती तो उससे तग़ाफ़ुल[6] फ़रमा जाते (यानी उस पर गिरफ़्त[7] न फ़रमाते) और (तस्रीहन[8]) उससे बाज़पुर्स[9] भी न फ़रमाते बल्कि ख़ामोश हो जाते। आपने तीन चीज़ों से अपने को बचा रखा था:-

1- रिया से[10],

2- कस्रते कलाम से[11],

3- बेसूद बात से[12]।

और तीन चीज़ों से दूसरे आदमियों को बचा रखा था:-

1- किसी की मज़म्मत[13] न फ़रमाते,

2- किसी को आ़र[14] न दिलाते,

3- न किसी का ऐब तलाश करते।

आप सल्ल० वही कलाम फ़रमाते[15] जिससे उम्मीद सवाब की होती और जब कलाम फ़रमाते थे, तो आपके तमाम जलीस[16] इस तरह सर झुका कर बैठ जाते जैसे उनके सरों पर परिन्दे आकर बैठ गए हों और जब आप साकित[17] होते तब वह बोलते, आपके सामने किसी बात पर निज़ाअ़[18] न करते।

1-हर समय, 2-प्रसन्नचित्त, 3-अनुकूल, 4-दुर्व्यवहार करने वाले, 5-कठोर बोलने वाले, 6-लापरवाही, 7-पकड़, 8-जानबूझ कर, 9-पूछताछ, 10-दिखावा, 11-वाचालता से, 12-व्यर्थ बात से, 13-तिरस्कार, 14-लज्जित, 15-बात करते, 16- सभासद, 17-ख़ामोश, 18-झगड़ा।

आप सल्ल० के पास जो शख़्स बोलता उसके फ़ारिग़ होने तक सब ख़ामोश रहते। (यानी बात के बीच में कोई न बोलाता)

अहले मज्लिस में हर शख़्स की बात रग़्बत[1] के साथ सुने जाने में ऐसी होती जैसे सबसे पहले शख़्स की बात थी। (यानी किसी के कलाम की बेक़द्री नहीं की जाती) जिस बात से सब हँसते आप भी हँसते, जिससे सब तअ़ज्जुब करते आप भी तअ़ज्जुब फ़रमाते यानी हुदूदे इबाहत[2] तक अपने जलीसों के साथ शरीक रहते (परदेसी आदमी की) बेतमीज़ी की गुफ़्तगू[3] पर तहम्मुल फ़रमाते[4] और फ़रमाया करते कि जब किसी साहिबे हाजत[5] को हाजत की तलब में देखो तो उसकी इआ़नत[6] करो।

जब कोई आप सल्ल० की सना[7] करता तो आप उसको जाइज़ न रखते अल्बत्ता अगर कोई एहसान के मुकाफ़ात[8] के तौर पर करता तो ख़ैर बवजहे मश्रूअ़[9] होने के उस सना को बशर्त अ़द्मे तजावुज़े हद[10] के गवारा फ़रमा लेते।

और किसी की बात न काटते, यहाँ तक कि वह हद से बढ़ने लगता तो उस वक़्त उसको ख़त्म करा देने से या उठकर खड़े हो जाने से मुन्क़तअ़ फ़रमा देते[11]। (नश्रुत्तीब)

अल्ताफ़े करीमाना

(दया की भावना)

हुज़ूर नबीए करीम सल्ल० अपनी ज़बान को लायानी[12] बातों से महफ़ूज़ रखते थे।

लोगों की तालीफ़े क़ल्ब फ़रमाते[13] थे और उनमें तफ़रीक़[14] न होने देते थे और हर क़ौम के आबरूदार[15] आदमी की इ़ज़्ज़त करते थे और ऐसे

1-रुचि, 2-इस्लामी सीमा के क़ानून में विहित, 3-उद्दण्डता की बात, 4-सहन करते, 5-ज़रूरतमंद, 6-सहायता, 7-प्रशंसा, 8-बदला, प्रतिकार, 9-इस्लामी क़ानून के अनुसार उचित होने के कारण, 10-सीमा को पार न करने के कारण, 11-ख़त्म कर देते, 12-व्यर्थ, फ़ुज़ूल, 13-दिलों को जोड़ते, 14-फूट, 15-प्रतिष्ठित।

आदमी को उस क़ौम पर सरदार मुक़र्रर फ़रमा देते थे।

लोगों को नुक़सान देने वाली बातों से बचने की ताकीद फ़रमाते रहते थे और उनके शर[1] से अपना भी बचाव रखते थे मगर किसी शख़्स से कुशादा रुई[2] और ख़ुशख़ूई[3] में कमी न फ़रमाते थे। अपने मिलने वालों के बारे में इस्तिफ़सार फ़रमाते[4] थे और लोगों में जो वाक़िआत होते थे आप वे पूछते रहते (ताकि मज़लूम[5] की नुस्रत[6] और मुफ़्सिदों[7] का इंसिदाद[8] हो सके।)

और अच्छी बात की तहसीन[9] और तस्वीब[10] और बुरी बात की तक़बीह[11] (मज़म्मत) और तहक़ीर[12] फ़रमाते। (नश्रुत्तीब)

सलाम में सबक़त
(सलाम में पहल करना)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तवाज़ो[13] में यह भी है कि जो भी आपके पास आता आप सलाम करने में सबक़त फ़रमाते थे और आने वाले के सलाम का जवाब भी देते थे।

इस जगह हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अनवर की ज़ियारत करने वालों के लिये बशारत है। आप जब अपनी ज़ाहिरी हयात[14] में इस ख़ूबी के साथ मुत्तसिफ़[15] रहे तो अब भी हर ज़ियारत करने वाला आपके सलाम से मुशर्रफ़[16] होता होगा, चुनांचे बाज़ मुक़र्रबीने बारगाह[17] ऐसे हुए हैं जो बतरीक़े करामत अपने कानों से हुज़ूर सल्ल० का सलाम सुनने से मुशर्रफ़ हुए हैं। बिला शुब्हा हुज़ूर सल्ल० उम्मत के लिये इस दुनियवी हयात में भी रहमत हैं और बादे वफ़ात[18] भी रहमत हैं। ''सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तस्लीमन् कसीरन् कसीरा''। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-बुराई, 2-हंसमुख होने, 3-अच्छे स्वभाव, 4-पूछताछ करते, 5-जिस पर अत्याचार किया जाता है, पीड़ित, 6-सहायता, 7-उपद्रवी, 8-निवारण, 9-प्रशंसा, 10-अच्छा समझना, 11-निन्दा, 12-तुच्छ समझना, 13-नम्रता, 14-प्रत्यक्ष जीवन, 15-युक्त, 16-प्रतिष्ठित, 17-नबीए हुज़ूर के अनुयायी, 18-मृत्यूपरान्त।

अन्दाज़े कलाम
(वार्तालाप का ढंग)

(रिवायात अज़् हसन इब्ने अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर वक़्त आख़िरत के ग़म में और हमेशा उमूरे आख़िरत[1] की सोच में रहते, किसी वक़्त आप सल्ल० को चैन न होता था और बिला ज़रूरत कलाम न फ़रमाते, आप सल्ल० का सुकूत[2] तवील होता था, कलाम को शुरू और ख़त्म मुँह भरकर फ़रमाते (यानी गुफ़्तगू अव्वल से आख़िर तक निहायत साफ़ होती) कलाम जामे फ़रमाते थे, जिसके अल्फ़ाज़ मुख़्तसर हों मगर पुरमग़्ज़[3] हों। आपका कलाम हक़ व बातिल[4] में फ़ैसला-कुन[5] होता जो न हश्वो-ज़ाइद[6] होता और न तंग होता।

आप सल्ल० नर्म मिज़ाज थे, मिज़ाज में सख़्ती न थी और न मुख़ातब की इहानत[7] फ़रमाते, नेअ़्मत अगर क़लील[8] भी होती तब भी उसकी ताज़ीम[9] फ़रमाते और किसी नेअ़्मत की मज़म्मत न फ़रमाते मगर खाने की चीज़ की मज़म्मत और मदह[10] दोनों न फ़रमाते (मज़म्मत तो इसलिए न फ़रमाते कि वह नेअ़्मत है और मदह ज़्यादा इसलिए न फ़रमाते कि अक्सर उसका सबब हिर्स[11] और तलबे लज़्ज़त होती है)।

जब अम्रे हक़[12] की कोई शख़्स ज़रा मुख़ालफ़त करता तो उस वक़्त आपके गुस्से की कोई ताब न ला सकता था, जब तक कि उस हक़ को ग़ालिब न कर लेते और अपने नफ़्स के लिये ग़ज़बनाक[13] न होते थे-- और न अपने नफ़्स के लिये इंतिक़ाम[14] लेते और गुफ़्तगू के वक़्त जब आप सल्ल० इशारा करते तो पूरे हाथ से इशारा करते और जब किसी अम्र[15] पर तअ़ज्जुब फ़रमाते तो हाथ को लौटते और आप जब बात करते तो अपने दाहिने हाथ के अंगूठे को बायीं हथेली से मुत्तसिल[16] करते यानी उस पर मारते और जब

1-आख़िरत के विषयों, 2-मौन, 3-अर्थपूर्ण, 4-उचित व अनुचित, 5-निर्णायक, 6-किसी बात को बढ़ा कर कहना, 7-अनादर, 8-कम, 9-आदर करना, 10-प्रशंसा, 11-लोभ, 12-इस्लामी क़ानून, 13-कुपित, 14-प्रतिकार, बदला, 15-काम, 16-मिलाते।

आपको ग़ुस्सा आता तो आप उधर से मुँह फेर लेते और करवट बदल लेते और जब ख़ुश होते तो नज़र नीची कर लेते (ये दोनों अम्र नाशिये हया[1] से हैं) अक्सर हँसना आपका तबस्सुम होता और उसमें दनदाने[2] मुबारक जो ज़ाहिर होते तो ऐसे मालूम होते जैसे बारिश के ओले।

(नश्रुत्तीब, शमाइले तिर्मिज़ी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अ़रब की सब ज़बानें (लुग़ात[3]) जानते थे। उम्मे मअ़बद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा कहती हैं कि आप सल्ल० शीरीं कलाम[4] और वाज़ेह बयान[5] थे, न बहुत कम गो[6] थे कि ज़रूरी बात में भी सुकूत फ़रमाते[7] और न ज़्यादा गो थे कि ग़ैर ज़रूरी उमूर[8] में मश्ग़ूल हों, आपकी गुफ़्तगू ऐसी थी जैसे मोती के दाने पिरो दिये गए हों। (नश्रुत्तीब)

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि आपके कलिमात में निहायत वज़ाहत[9] होती थी और हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि आप सल्ल० इस तरह कलाम फ़रमाते थे कि अगर कोई अल्फ़ाज़ को शुमार करना चाहे तो शुमार कर सकता है। (नश्रुत्तीब)

हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की गुफ़्तगू तुम लोगों की तरह से लगातार जल्दी-जल्दी न होती थी, बल्कि साफ़-साफ़ हर मज़्मून[10] दूसरे मज़्मून से मुम्ताज़[11] होता था, पास बैठने वाले अच्छी तरह से ज़ेहन-नशीन[12] कर लेते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम (बाज़ मर्तबा) कलाम को (हस्बे-ज़रूरत[13]) तीन-तीन बार दोहराते ताकि आपके अल्फ़ाज़ अच्छी तरह समझ लें।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

1-लज्जा के बढ़ने से, 2-दाँत, 3-शब्द कोष, 4-मधुरभाषी, 5-स्पष्ट वक्ता, 6-अल्पभाषी, 7-मौन रहे, 8-व्यर्थ बातों में, 9-स्पष्टता, 10-विषय, 11-अन्तर, विविक्त, 12-बोधगम्य, 13-आवश्यकतानुसार,

जिस बात का तफ़्सील से ज़िक्र करना तहज़ीब से गिरा हुआ होता तो उसको हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम किनाया[1] में बयान फ़रमाते।

बात करते वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुस्कुराते और निहायत ख़न्दा पेशानी[2] से गुफ़्तगू फ़रमाते। (नश्रुत्तीब)

वाज़ फ़रमाने का अन्दाज़

(उपदेश देने का ढंग)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिद में वाज़ फ़रमाते तो अ़सा[3] मुबारक पर टेक लगा कर क़ियाम फ़रमाते और अगर मैदाने जिहाद में नसीहत फ़रमाते तो कमान पर टेक लगाकर खड़े होते।

वाज़ व तल्क़ीन[4] के ख़ुसूसी और मुख़्तसर जलसे तो तक़रीबन हर नमाज़ और ख़ास तौर से नमाज़े सुबह के बाद तो मुन्अ़क़िद[5] हुआ ही करते थे, मगर इफ़ादा-ए-आम[6] की ग़रज़[7] से एक जलसा भी कभी-कभी तलब फ़रमा लिया करते थे। दौराने वाज़ जिस अम्र पर निहायत ज़ोर देना होता तो उस पर इन अल्फ़ाज़ से क़सम खाते:- وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ

"वल्लज़ी नफ़्सी बियदिही" यानी क़सम है उस ज़ात की जिसके दस्ते क़ुद्रत[8] में मेरी जान है।

अन्दाज़े सुकूत

(ख़ामोश रहने का ढंग)

आप सल्ल० का सुकूत चार उमूर[9] पर मुश्तमिल[10] होता था:-

1- हिल्म[11] 2- बेदारमग़्ज़ी[12]

3- अन्दाज़ की रिआ़यत[13] 4- फ़िक्र

1-संकेत, 2-अतिनम्रता, 3-छड़ी, 4-दीक्षा देना, 5-आयोजित, 6-साधारण लोगों के लाभार्थ, 7-उद्देश्य, 8-शक्तिशाली हाथ, 9-कार्यों, 10-आधारित, 11-सहनशीलता, विनम्रता, 12-समयानुसार कार्य करना, 13-स्वभाव का ध्यान या व्यवहार में कोमलता।

अन्दाज़ की रिआयत तो यह कि हाज़िरीन की तरफ़ नज़र करने में और उनकी अर्ज़ मारूज़[1] सुनने में बराबरी फ़रमाते थे।

और फ़िक्र बाक़ी व फ़ानी[2] में फ़रमाते थे। दुनिया के फ़ना[3] और उक़्बा[4] की बक़ा[5] को सोचा करते और हिल्म को अपने सब्र यानी ज़ब्त के साथ जमा फ़रमा लिया था सो आपको कोई चीज़ इतना ग़ज़बनाक न करती थी कि आपको अज़्जा रफ़्ता[6] कर दे और बेदार मग़्ज़ी आपकी चार चीज़ों की जामे[7] होती थी:-

1- एक नेक बात का इख़्तियार करना ताकि और लोग आपकी इक़्तिदा[8] करें।

2- दूसरे बुरी बात को तर्क करना[9] ताकि और लोग भी बाज़ रहें।

3- तीसरे राय को उन उमूर[10] में सर्फ़[11] करना जो आपकी उम्मत के लिए मस्लहत हो।

4- चौथे उम्मत के लिये उन उमूर में एहतिमाम करना जिनमें उनकी दुनिया और आख़िरत दोनों के कामों की दुरुस्ती हो। (नश्रुत्तीब)

इन्तिज़ामे उमूर
(कार्य व्यवस्था)

आप सल्ल० का हर मामूल एतिदाल[12] के साथ होता था। उसमें बेइंतिज़ामी नहीं होती थी। (कि कभी किसी तरह कर लिया कभी किसी तरह कर लिया)

लोगों की तालीम में मस्लहत को पेशे नज़र रखते उसमें ग़फ़लत न फ़रमाते इस इहतिमाल[13] से कि अगर उनको उनके हाल पर छोड़ दिया जाए

1-प्रार्थना, 2-अनश्वर तथा नश्वर, 3-नष्ट, 4-परलोक, 5-नित्यता, 6-अपने स्थान से हटा दे, 7-परिपूर्ण, 8-अनुसरण, 9-छोड़ना, 10-कार्यों, 11-खर्च, 12-संतुलन, 13-संदेह।

तो बाज़ तो ख़ुद दीन से ग़ाफ़िल हो जाएंगे या बाज़ उमूरे दीन में एतिदाल से ज़्यादा मशग़ूल होकर दीन से उक्ता जाएंगे।

हर हालत का आप के यहाँ एक ख़ास इंतिज़ाम था, हक़ से कभी कोताही न करते और तजावुज़[1] करके नाहक़ की तरफ़ न जाते।

सब में अफ़्ज़ल[2] आप के नज़्दीक वह शख़्स होता जो आमतौर से सबका ख़ैरख़्वाह होता और सबसे बड़ा रुत्बा उस शख़्स का होता जो लोगों की ग़म-ख़्वारी और इआनत[3] बख़ूबी करता। (नश्रुत्तीब)

निज़ामुल् औक़ात अन्दरूने ख़ाना

(घर के अन्दर समय की व्यवस्था)

तक़्सीमे औक़ात

(समय-विभाजन)

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने वालिद माजिद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि:-

आप का अपने घर में अपने ज़ाती हवाइज (तआम व मनाम यानी खाने और सोने) के लिये तशरीफ़ ले जाना ज़ाहिर है और आप इस बात के लिये मिन्-जानिब अल्लाह माज़ून[4] थे सो आप सल्ल० अपने घर में तशरीफ़ लाते तो अपने अन्दर रहने के वक़्त को तीन हिस्सों में तक़्सीम फ़रमाते:-

1- एक हिस्सा अल्लाह तआला की इबादत के लिये।
2- एक हिस्सा अपने घर वालों के मुआशरती हुक़ूक़[5] अदा करने के लिये (जिसमें उनसे हँसना-बोलना शामिल था)
3- और एक हिस्सा अपने नफ़्स की राहत के लिये।

फिर अपने हिस्से को अपने और लोगों के दरमियान में तक़्सीम फ़रमा देते (यानी उसमें से भी बहुत-सा वक़्त उम्मत के काम में सर्फ़ फ़रमाते और

1-सीमोल्लंघन, 2-श्रेष्ठ, 3-सहायता, 4-अल्लाह की तरफ़ से आदेशित, 5-सामाजिक अधिकारों,

उस हिस्सए वक़्त को ख़ास अहबाब के वास्ते से आम लोगों के काम में लगा देते यानी उस हिस्से में आम लोग तो न आ सकते थे मगर ख़वास हाज़िर होते और दीन की बातें सुनकर अवाम को पहुँचाते। इस तरह आम लोग भी उन मुनाफ़े में शरीक हो जाते) और लोगों से किसी चीज़ का इख़्फ़ा न फ़रमाते[1], न तो अहकामे दीनिय्या का और न मताए दुनियवी[2] का, बल्कि हर तरह का नफ़ा बिला दरेग़[3] पहुँचाते और उस हिस्सए वक़्त में आपका तर्ज़ यह था कि अहले फ़ज़्ल (यानी अहले इल्म व अमल) को आप इस अम्र में औरों पर तर्जीह देते कि उनको हाज़िर होने की इजाज़त अता फ़रमाते और उस वक़्त को उन लोगों पर बक़द्र उनकी फ़ज़ीलते दीनिय्या[4] के तक़्सीम फ़रमाते। सो उनमें से किसी को एक ज़रूरत होती, किसी को दो ज़रूरतें होतीं, किसी को ज़्यादा ज़रूरतें होतीं, सो उनकी हाजत[5] में मशग़ूल[6] होते और उनको ऐसे शग़्ल[7] में लगाते जिसमें उनकी और बक़िया उम्मत की इस्लाह[8] हो। वह शग़्ल यह कि वे लोग आप से पूछते और उनके मुनासिबे हाल उमूर की उनको इत्तिलाअ़ देते और आप यह फ़रमाया करते कि जो तुम में हाज़िर है वह ग़ैर हाज़िर को भी ख़बर कर दिया करे और यह भी फ़रमाते कि जो शख़्स अपनी हाजत मुझ तक किसी वजह से मसलन (जैसे)-- पर्दा या ज़ोफ़[9] या बोद[10] वग़ैरा के सबब न पहुँचा सके, तो तुम लोग उसकी हाजत मुझ तक पहुँचा दिया करो, क्योंकि जो शख़्स ऐसे शख़्स की हाजत ज़ी-इख़्तियार[11] तक पहुँचा दे, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसको पुलसिरात[12] पर साबित क़दम रखेगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में इन्हीं बातों का ज़िक्र होता था और इसके ख़िलाफ़ दूसरी बात को क़बूल न फ़रमाते (मतलब यह है कि लोगों के हवाइज[13] व मुनाफ़े के सिवा दूसरी लायानी[14] और फ़ुज़ूल बातों की समाअ़त[15] भी न फ़रमाते)।

1-किसी वस्तु या पदार्थ को छिपाते नहीं, 2-सांसारिक सम्पत्ति, 3-बिना हिचकिचाहट के, 4-धार्मिक प्रधानता, 5-आवश्यकता, 6-व्यस्त, 7-कार्य, 8-सुधार, 9-बुढ़ापा, कमज़ोरी, 10-दूरी, 11-जिसे अधिकार प्राप्त हो, 12-जहन्नम पर एक पुल है, 13-आवश्यकता, 14-निरर्थक, 15-सुनवाई।

लोग आपके पास तालिब[1] होकर आते और कुछ न कुछ खाकर वापस होते (यानी आप अलावा नफ़ा इल्मी के कुछ न कुछ खिलाते भी थे) और हादी[2] यानी फ़क़ीह[3] होकर आपके पास से बाहर निकलते। (नश्रुत्तीब)

औक़ाते ख़ल्वत

(एकान्त के समय)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अचानक घर में कभी तशरीफ़ न लाते कि घरवालों को परेशान कर दें बल्कि इस तरह तशरीफ़ लाते कि (घर वालों को पहले से आपकी तशरीफ़ आवरी[4] का इल्म होता, फिर आप सलाम करते। जब आप अन्दर तशरीफ़ लाते तो कुछ न कुछ दरयाफ़्त फ़रमाया करते। बसाऔक़ात[5] पूछते कि क्या कुछ खाने को है? और बसाऔक़ात ख़ामोश रहते यहाँ तक कि माहज़र[6] पेश कर दिया जाता। नीज़[7] मन्क़ूल[8] है कि जब आप घर में तशरीफ़ लाते तो यह दुआ पढ़ते:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَفَانِیْ وَاٰوَانِیْ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ وَسَقَانِیْ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ مَنَّ عَلَیَّ اَسْاَلُكَ اَنْ تُجِیْرَنِیْ مِنَ النَّارِ۔

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी कफ़ानी व आवानी वल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्अमनी व सक़ानी वल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी मन्न अलय्य अस्अलुक अन् तुजीरनी मिनन्नार।

अनुवाद: तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला शानुहू के लिये हैं, जिसने मेरी (तमाम ज़रूरियात की) किफ़ायत फ़रमाई और मुझे ठिकाना बख़्शा और तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला शानुहू के लिये हैं, जिसने मुझे खिलाया और पिलाया और तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला शानुहू के लिये हैं जिसने मुझ पर एहसान फ़रमाया। (ऐ अल्लाह!) मैं आप से दरख़्वास्त करता हूँ कि आप मुझे

1-इच्छुक, याचक, 2-पथ प्रदर्शक, 3-इस्लामी धर्म-शास्त्र का विद्वान, 4-आगमन, 5-कभी-कभी, 6-जो कुछ भी मौजूद हो, 7-इसके अतिरिक्त, 8-उद्धृत।

(अ़ज़ाब) नार[1] से बचा लीजिये।

1- नीज़ साबित है कि आपने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फ़रमाया कि जब तुम घरवालों के पास जाओ तो उन्हें सलाम करो। यह तुम्हारे और तुम्हारे घरवालों के लिये बाइसे बरकत होगा।

(ज़ादुल्-मआ़द, शमाइले तिर्मिज़ी)

2- हज़रत असवद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने घर वालों में आकर क्या करते थे? उन्हों ने फ़रमाया कि अपने घरवालों की ख़िदमत यानी घरेलू ज़िन्दगी में हिस्सा लेते थे। मख़्दूम[2] और मुम्ताज़[3] बनकर न रहते थे बल्कि घर का काम भी कर लेते थे, मसलन बकरी का दूध दुह लेना, अपनी नालैन[4] मुबारक सी लेना (हा कज़ा फ़ी नश्रुत्तीब[5]) इसमें दूसरे आमाल और दिगर मामूलात व मशाग़िल की नफ़ी नहीं है) (मुस्नदे अहमद)

3- हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने घरवालों और ख़ादिमों[6] के साथ बहुत ख़ुश अख़्लाक़ी का सुलूक फ़रमाते और कभी किसी की सरज़निश[7] या उस से सख़्ती से पेश न आते।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घरवालों के लिये इसका बड़ा एहतिमाम फ़रमाते कि किसी को किसी क़िस्म की नागवारी न हो।

4- जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अज़्वाजे मुतह्हरात[8] के पास होते तो बहुत नर्मी और ख़ातिरदारी करते और बहुत अच्छी तरह हँसते-बोलते थे। (इब्ने अ़साकिर)

5- आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब घर में तशरीफ़ रखते तो ख़ानगी[9] कामों में मस्रूफ़ रहते, ख़ाली और बेकार कभी न बैठते, मामूली-मामूली काम ख़ुद अन्जाम दे लेते, मसलन घर की सफ़ाई, मवेशी[10]

1-अग्नि, 2-मान्य, स्वामी, 3-प्रतिष्ठित, 4-जूते, 5-इसी तरह नश्रुत्तीब में भी है, 6-सेवकों, 7-डाँट-फटकार, 8-पवित्र पत्नियों, 9-घरेलू, 10-पशु, जानवर।

को चारा देना, ऊँट और बकरी का इंतिज़ाम फ़रमाना और बकरी का दूध भी खुद ही निकाल लिया करते। ख़ादिम के साथ मिलकर काम कर लिया करते, आटा गुँधवा लेते।

बाज़ार से ख़ुद सौदा ख़रीदने जाते और कपड़े में बाँधकर ले आते। अपना जूता ख़ुद ही सी लेते, अपने कपड़े में ख़ुद पैवन्द लगा लेते, वग़ैरा-वग़ैरा। (ज़ादुल्-मआद, मदारिजुन्नुबुव्वा)

ख़्वाब व बेदारी[1] में आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तर्ज़ व तरीक़ा

आप सल्ल० इब्तिदाए शब[2] में और निस्फ़ शब[3] की इब्तिदा में बेदार[4] हो जाते, उठकर मिस्वाक[5] फ़रमाते और वुज़ू करके जिस क़द्र अल्लाह तआ़ला शानुहू ने मुक़द्दर कर रखी होती नमाज़ पढ़ते, गोया बदन के जुम्ला अअ़ज़ा[6] और तमाम क़ुवा[7] को नींद और इस्तिराहत[8] से हिस्सा मिल जाता है।

आप सल्ल० ज़रूरत से ज़्यादा नहीं सोते थे और ज़रूरत से ज़्यादा जागते भी नहीं थे। चुनांचे जब ज़रूरत लाहिक़ होती तो आप सल्ल० दायें तरफ़ अल्लाह का ज़िक्र करते हुए आराम फ़रमाते हत्ताकि आप की आँखों पर नींद ग़ालिब आ जाती। उस वक़्त आप शिकम्सेर[9] न होते, न आप सतहे ज़मीन पर लेटते और न आपका बिछौना ज़मीन से ऊँचा होता, बल्कि आपका बिस्तर चमड़े का होता जिसके अन्दर खजूर की छाल भरी होती। आप सल्ल० तकिया पर टेक लगाते और कभी रुख़सार[10] के नीचे हाथ रख लेते और सबसे बेहतर नींद दायीं जानिब की है। (ज़ादुल्-मआद)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नींद बक़द्रे एतिदाल[11]

1-सोने और जागने की हालत में, 2-रात्रि के प्रारम्भिक भाग में, 3-अर्द्ध रात्रि, 4-जागृत, 5-दातुन, 6-समस्त अंग, 7-समस्त इन्द्रियाँ, 8-विश्राम, 9-पूरा [illegible] भोजन करना, 10-कपोल, 11-न अधिक न कम उचित मात्रा की।

थी। क़द्रे ज़रूरत से ज़्यादा न आप सोया करते थे और न क़द्रे ज़रूरत से ज़्यादा अपने आपको सोने से बाज़ रखा करते थे यानी हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़्वाब भी फ़रमाते और क़ियाम भी फ़रमाते जैसा कि नवाफ़िल व इबादात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते करीमा थी। कभी रात में सो जाते फिर उठकर नमाज़ पढ़ते, उसके बाद फिर सो जाते। इस तरह चन्द बार सोते और उठते थे। इस सूरत में यह बात दुरुस्त है कि जो नींद में देखना चाहता वह भी देख लेता और जो बेदार देखना चाहता वह भी देख लेता। (ज़ादुलमआद, मदारिजुन्नुबुव्वा)

बिस्तरे इस्तिराहत

(आराम करने का बिस्तर)

हज़रत इमाम बाक़र रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से किसी ने पूछा कि आपके यहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर कैसा था? उन्होंने फ़रमाया कि चमड़े का था, जिसमें खजूर के दरख़्त की छाल भरी हुई थी। हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से किसी ने पूछा कि आपके घर में आप सल्ल० का बिस्तर कैसा था? उन्होंने फ़रमाया कि एक टाट थी, जिसको दोहरा करके हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नीचे बिछा दिया करते थे। तो एक रोज़ मुझे ख़्याल हुआ कि अगर उसको चौहरा करके बिछा दिया जाए तो ज़्यादा नर्म हो जाएगा। मैंने इसी तरह बिछा दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह को दर्याफ़्त फ़रमाया कि मेरे नीचे रात को क्या चीज़ बिछाई थी? मैंने अर्ज़ किया कि वही रोज़मर्रा का बिस्तर था, रात को उसको चौहरा कर दिया था, ताकि ज़्यादा नर्म हो जाए। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया— इसको पहले ही हाल पर रहने दो, इसकी नर्मी रात को मुझे तहज्जुद से माने[1] हुई। (शमाइले तिर्मिज़ी)

1-बाधक।

अक्सर हदीसों में वारिद[1] है कि बिस्तर कभी टाट का होता था, कभी सिर्फ़ बोरिया होता था। मुतअ़द्दद अहादीस[2] में यह मज़्मून है कि सहाबा किराम जब नर्म बिस्तर बनाने की दरख़्वास्त करते तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह इर्शाद फ़रमा दिया करते थे कि मुझे दुनियवी राहत व आराम से क्या काम? मेरी मिसाल तो उस राहगीर की सी है जो चलते-चलते रास्ते में ज़रा आराम लेने के लिये किसी दरख़्त के साए के नीचे बैठ गया हो और थोड़ी देर बैठकर आगे चल दिया हो। (ख़साइले नबवी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि एक मर्तबा एक अन्सारी औरत ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बिस्तर देखा कि अ़बा[3] बिछा रखा है। उन्होंने एक बिस्तर जिसमें ऊन भरी हुई थी तैयार करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये मेरे पास भेज दिया। जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो उसको रखा हुआ देखा तो दर्याफ़्त फ़रमाया-- यह क्या है? मैंने अ़र्ज़ किया कि फ़्लाँ अन्सारी औरत ने हुज़ूर के लिये बनवाकर भेजा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इसको वापस कर दो। मुझे वह अच्छा मालूम होता था इसलिये दिल न चाहता था कि वापस करूँ। मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस्रार फ़रमाया[4] और यह इर्शाद फ़रमाया -- अगर मैं चाहूँ तो हक़ तआ़ला शानुहू मेरे लिये सोने और चाँदी के पहाड़ चलते हुए कर दें। इस इर्शाद पर मैंने वह बिस्तर वापस कर दिया।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन् मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप सल्ल० एक बोरिये पर आराम फ़रमा रहे थे, जिसके निशानात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बदने अतहर[5] पर ज़ाहिर हो रहे थे, मैं यह देख कर रोने लगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- क्या बात है, क्यों रो रहे हो? मैंने अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु

1-आया, 2-अनेक हदीसों, 3-लम्बा चोग़ा, गुदड़ी, 4-बार-बार कहा, 5-पवित्र शरीर,

अ़लैहि व सल्लम! ये क़ैसर[1] व किसरा[2] तो रेशम व मख़मल के गद्दों पर सोयें और आप इस बोरिये पर। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- रोने की बात नहीं है। उनके लिए दुनिया है और हमारे लिये आख़िरत है।

(ख़साइले नबवी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक छोटे से बोरिये पर नमाज़ पढ़ा करते थे।

(इब्ने सअ़द)

अन्दाज़े इस्तिराहत

(आराम करने का ढंग)

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस वक़्त आराम फ़रमाते तो अपना दायाँ हाथ दायें रुख़्सार[3] के नीचे रखते और यह दुआ पढ़ते:-

رَبِّ قِنِیْ عَذَابَكَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ (شمائل ترمذی)

रब्बि क़िनी अ़ज़ाबक यौम तब्अ़सु इबादक

अनुवाद: ऐ रब (पालनहार)! तू मुझे अपने अ़ज़ाब से बचाइयो जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो यह दुआ पढ़ते:-

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰ (شمائل ترمذی)

अल्लाहुम्म बिस्मिक अमूतु व अह्या।

अनुवाद: ऐ अल्लाह मैं तेरा नाम लेकर मरता और जीता हूँ।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

1-रूम का राजा, 2-ईरान का राजा, 3-कपोल, गाल।

और जब जागते तो यह दुआ पढ़ते:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ (خصائل نبوی)

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बअ़्द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर।

अनुवाद: सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जिसने हमें मारकर ज़िन्दगी बख़्शी और हमको उसी की तरफ़ उठकर जाना है। (ख़साइले नबवी)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर रात में जब बिस्तर पर लेटते थे तो दोनों हाथों को दुआ़ माँगने की तरह मिलाकर और सूरए इख़्लास[1] और मुअ़व्वज़तैन[2] पढ़कर उन पर दम फ़रमाते फिर तमाम बदन पर सर से पाँव तक जहाँ-जहाँ हाथ जाता फेर लिया करते थे। तीन मर्तबा ऐसा ही करते थे, सर से इब्तिदा[3] करते और मुँह और बदन का अगला हिस्सा फिर बक़िया बदन पर। (शमाइले तिर्मिज़ी)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सोने के वक़्त मुख़्तलिफ़ दुआएँ पढ़ना भी साबित हैं और कलामुल्लाह[4] की मुख़्तलिफ़ सूरतें पढ़ना भी साबित हैं।

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह इर्शाद भी नक़ल है कि जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ की कोई सूरत सोते हुए पढ़े तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक फ़िरिश्ता मुहाफ़िज़[5] उसके लिये मुक़र्रर[6] हो जाता है जो जागने के वक़्त तक उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है। मज़्कूरा बाला[7] सूरतों का पढ़ना ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है। इनके अलावा "मुसब्बिहात" यानी इन सूरतों का पढ़ना जो "सब्बह" युसब्बिहु" "सुब्हान" से शुरू हुई हैं, वारिद[8] है। नीज़[9] "अलीफ़० लाम० मीम० सज्दह" और तबारकल्लज़ी का हमेशा पढ़ना भी वारिद है।

1-"क़ुल हुवल्लाहु अहद" पूरी सूरत पढ़ते, 2-"क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल् फ़लक़ और नास" पढ़ते, 3-आरम्भ, 4-क़ुरआन, 5-रक्षक, 6-नियुक्त, 7-उपर्युक्त, 8-आया, प्रमाणित, 9-इसके अतिरिक्त।

नीज़ आयतल्-कुर्सी और सूरए बक़रह की आख़िरी दो आयतों का पढ़ना भी वारिद है। (फ़त्हुल्-बारी, ख़साइले नबवी)

एक सहाबी कहते हैं कि मुझसे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हमेशा "क़ुल् या अय्युहल् काफ़िरून" पढ़ कर सोया करो। इसके अलावा बहुत-सी दुआएँ पढ़ना भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित हैं। (फ़त्हुल्-बारी, ख़साइले नबवी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपने बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो यह दुआ पढ़ते:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَاٰوَانَا فَكَمْ مِمَّنْ لَا كَافِیَ لَهٗ وَلَا مُؤْوِیَ

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्अमना व सक़ाना व कफ़ाना व आवाना फ़कम् मिम्मन् ला काफ़िय लहू व ला मूविय। (शमाइले तिर्मिज़ी)

अनुवाद: तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला शानुहू के लिये हैं जिसने हमें खिलाया और पिलाया और हमारी (तमाम ज़रूरियात की) कफ़ालत[1] फ़रमाई और हमें ठिकाना बख़्शा। चुनांचे कितने ही ऐसे लोग हैं जिनका न कोई कफ़ालत करने वाला है और न कोई उन्हें ठिकाना देने वाला है।

दीगर मामूलात
(अन्य नित्य कर्म)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खजूर की छाल भरे हुए चमड़े के गद्दे पर, चटाई पर, टाट पर, कभी-कभी बान की बुनी हुई चारपाई पर या चमड़े पर, ज़मीन पर आराम फ़रमया करते थे। घर में कभी आराम के लिये तकिया लगाकर बैठ जाते। (ज़ादुल्-मआद)

1-भरण-पोषण।

जिस टाट पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आराम फ़रमाते, उसको सिर्फ़ दो तह करके बिछाने का हुक्म देते। सोते वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सांस की आवाज़ सुनाई दिया करती थी।

आप कभी चित लेटते और पाँव पर पाँव रखकर आराम फ़रमाते मगर इस तरह कि सत्र[1] नहीं खुलता। अगर सत्र खुलने का अंदेशा हो तो ऐसे लेटने से हुज़ूरे अक़्दस ससल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुमानअ़त[2] फ़रमाई है। (ज़ादुल्-मआ़द)

इशा से पहले आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कभी नहीं सोते।

आप रात को ऐसे घर में आराम नहीं फ़रमाते कि जिसमें चिराग़ न जलाया गया हो। (ज़ादुल्-मआ़द)

अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बहालते जनाबत[3] आराम फ़रमाने का इरादा फ़रमाते तो पहले नापाक जगह को धो लेते और फिर वुज़ू करके सो रहते। (ज़ादुल्-मआ़द)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आ़म तौर से पहले वुज़ू करके सोने के आ़दी थे।

अगर रात के किसी हिस्से में आँख खुलती तो क़ज़ाए हाजत[4] के बाद सिर्फ़ चेहरे और हाथों को धोकर सोते। (ज़ादुल्-मआ़द)

सोने से पहले दूसरे कपड़े की तहबन्द बाँधते और कुर्ता उतार कर टाँग देते और फिर आराम फ़रमाने से पहले बिस्तर को कपड़े से झाड़ लेते।

(ज़ादुल्-मआ़द)

रात को हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आराम फ़रमाते तो चारपाई के नीचे एक लकड़ी की हाजती[5] रखी रहती, रात को जागते तो उसमें पेशाब करते।

आपके सिरहाने एक सुर्मेदानी रखी रहती, हर रात सोते वक़्त सुर्मा लगाते।

1-गुप्तांग, छिपाव, 2-निषिद्ध, 3-सम्भोग या सहवास की स्थिति में, 4-शौच-निवृत्ति, 5-काठ निर्मित शौचादि के लिये प्रयुक्त होने वाला पात्र।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सियाह रंग की सुर्मेदानी रखा करते थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सुर्मा लगाते तो हर आँख में तीन-तीन मर्तबा सलाई लगाते और कभी हर आँख में दो-दो मर्तबा आख़िरी एक सलाई दोनों आँखों में लगा लेते। (इब्ने सअ़द)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सोते वक़्त अपने अहले बैत[1] से कुछ इधर-उधर की बातें किया करते, कभी घर के मुतअ़ल्लिक़ कभी आ़म मुसलमानों के बारे में। (नश्रुत्तीब)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का असासा[2]

आप सल्ल० के पास ज़िरह[3], कमानें, तीर, नेज़े, ढाल भी थी। आपके पास तीन जुब्बे थे, जिनको जिहाद के मौक़े पर इस्तेमाल करते थे।

आपके पास एक अ़सा[4] था, उसे लेकर आप चलते थे और उसके सहारे सवारी पर बैठते थे और उसे अपने ऊँट पर लटका दिया करते थे।

आपके पास एक लकड़ी का प्याला भी था, जिसमें कुण्डे लगे हुए थे और एक शीशे का प्याला भी था।

एक ऐसा प्याला भी था जो आपकी चारपाई के नीचे रात में पेशाब करने के लिये रखा रहता था।

आपके पास एक मश्कीज़ा[5] था और एक पत्थर का बर्तन भी था कि जिससे आप वुज़ू फ़रमाते थे। नीज़ कपड़े धोने का बर्तन और एक हाथ धोने का बड़ा बर्तन था। तेल की एक शीशी थी। एक थैला था जिसमें आईना व कंघी रखी रहती थी। आपकी कंघी सागौन की थी और एक सुर्मेदानी थी कि जब आप रात को सोते तो हर आँख में सुर्मा-ए-अस्मद की तीन सलाई डालते (अस्मद सुर्मे की आला क़िस्म है और आप सल्ल० ने इसकी बहुत

1-घरवालों, 2-धन-सम्पत्ति, 3-कवच, 4-डण्डी, छड़ी, 5-पानी भरने की चमड़े की छोटी थैली।

तारीफ़ और लगाने की ताकीद फ़रमाई है) आपके पास एक आईना भी था। नीज़ आपके थैले में दो क़ैंचियाँ और मिस्वाक रहती थी। इसके अलावा आपके पास एक बहुत बड़ा प्याला था, जिसके चार कुण्डे थे और चार आदमी उसे उठाते थे और एक मुद[1] था। आपकी चारपाई के पाये सागौन की लकड़ी के बने हुए थे। आपके पास एक डण्डा भी था। आपका बिस्तर चमड़े का था, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। यह कुल सामान रिसालते मआब[2] सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का था, जो मुख़्तलिफ़ अहादीस में मर्वी है।

(ज़ादुल्-मआद)

तर्कह[3]

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तर्के में न दीनार थे, न दिर्हम और न बकरी थीं, न ऊँट। और उम्र बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हदीस में है कि आपने अपने तर्के में कुछ न छोड़ा सिवाय हथियारों और ख़च्चर और थोड़ी-सी ज़मीन के, वह भी सदक़ा कर दी गई थी। (किताबुश्-शिफ़ा)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक पुराने कजावे[4] पर हज फ़रमाया। उस पर जो सूफ़[5] की चादर थी वह चार दिर्हम से ज़्यादा की न थी। इस हाल में आप ने यह दुआ मांगी:-

ऐ आल्लाह! इसको ख़ालिस हज बना जिसमें रिया[6] और नुमूद[7] न हो हाँलाकि आपने यह हज उस वक़्त किया था जब आप पर ज़मीन के ख़ज़ाने खोल दिये गए थे और उस हज में सौ ऊँट हदी[8] के लिये साथ ले गए थे।

(किताबुश्-शिफ़ा)

1-दो पौंड का पैमाना, 2-अल्लाह के भेजे नबी, 3-रिक्थ, मीरास का माल, 4-ऊँट की काठी, ऊँट का हौदा जिसमें दोनों ओर लोग बैठते हैं, 5-ऊन, 6-आडम्बर, 7-धूम-धाम, 8-कुर्बानी।

मुहसिने इन्सानियत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुस्ने सुलूक अज़्वाजे मुतह्हरात के साथ

(मानवता के उपकारी हुज़ूर सल्ल० का पवित्र पत्नियों के साथ सद्व्यवहार)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेरूनी ज़िन्दगी[1] और ख़ानगी ज़िन्दगी[2] के अमल को सरअंजाम देने के लिये अल्लाह जल्ल शानुहू ने ख़ास-ख़ास वसाइल और अस्बाब[3] मोहैया फ़रमा दिये। चुनांचे आपके सामने ऐसी दो जमाअतें मौजूद थीं, जिन्होंने इस ज़रूरी फ़र्ज़ को ऐसी ख़ुश-उस्लूबी[4] और एहतियात के साथ पाये-तक्मील को पहुँचा दिया कि सारी दुनिया के सामने हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तमाम ज़िन्दगी और ख़ल्वत व जल्वत की एक मुकम्मल तस्वीर, रुश्दो-हिदायत[5] के लिये मौजूद है।

पहली जमाअत सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन की थी और दूसरी जमाअत उम्महातुल्-मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुन्न अज्मईन की थी, जिन्होंने मिन् व अन्[6] हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तमाम हालात व मामूलात व मुआमलाते ख़ल्वत बिला तकल्लुफ़ उम्मत के सामने पेश फ़रमा दिये हैं ताकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी मुबारक का रौशन शोबा शराफ़ते इन्सानियत के हुसूल[7] के लिये वाज़ेह हो जाए।

इज़्दवाजी मुआमलात व मामूलात

(वैवाहिक जीवन सम्बन्धी व्यवहार व नियम)

आप सल्ल० अज़्वाजे मुतह्हरात के हुक़ूक़ में पूरी मसावात[8] व अदल[9] मल्हूज़[10] रखते थे, किसी तरह का फ़र्क़ न करते थे। रही महब्बत तो आप

1-बाहरी जीवन या सार्वजनिक जीवन, 2-घरेलू जीवन, 3-साधन, 4-शिष्टाचार, 5-मार्गदर्शन, 6-हूबहू, 7-प्राप्ति, 8-बराबरी, 9-न्याय, 10-ख़याल।

सल्ल० फ़रमाया करते थे कि या अल्लाह! जिसका मुझे इख़्तियार है उसकी तक़्सीम तो मैंने मसावी तौर पर कर दी लेकिन जो बात मेरे बस में नहीं है उस पर मुझे मलामत न कीजियेगा। (इख़्तियारी चीज़ से मुराद मुआमलात व मुआशरत और ग़ैर इख़्तियारी बात से मुराद महब्बत व मैलाने तबअ़[1])

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तलाक़ भी दी लेकिन फिर रुजूअ़[2] फ़रमा लिया। एक महीने तक अज़्वाजे मुतह्हरात से ईला भी किया था। (ईला का मअ़ना हैं बग़ैर तलाक़ के कुछ मुद्दत तक अलाहदगी)

आप सल्ल० के इज़्दवाजी तअ़ल्लुक़ात हुस्ने मुआशरत और अख़्लाक़ का अअ़ला नमूना थे। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के ज़ानू से टेक भी लगा लेते और इसी हालत में क़ुरआन की तिलावत भी फ़रमाते। कभी ऐसा भी होता कि वह अय्याम[3] से होतीं मगर आप उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात फ़रमाते[4]। ऐसा भी होता कि बहालते सौम[5] तक़्बील[6] करते। यह सब आपके अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात के साथ अख़्लाक़ और लुत्फ़ो-करम का नतीजा था। जब आप सफ़र का इरादा करते तो अज़्वाजे मुतह्हरात के दरमियान क़ुर्आ डालते। जिसके नाम का क़ुर्आ निकल आता वही साथ जातीं, फिर किसी के लिये कोई उज़्र न रह जाता। जम्हूर[7] का भी यही मस्लक[8] है। नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते कि तुममें सबसे बेहतर वह है जो अपने अहले ख़ाना[9] के साथ सबसे बेहतर सुलूक करता हो और मैं अपने अहले ख़ाना के साथ तुम सबसे बेहतर सुलूक करता हूँ।

जब आप सल्ल० नमाज़े अस्र पढ़ लेते तो तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात के घरों में रोज़ाना तशरीफ़ ले जाते, उनके पास बैठते, उनके हालात मालूम करते, जब रात होती तो वहाँ तशरीफ़ ले जाते जहाँ बारी होती, शब (रात) वहीं बसर करते।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि आप बारी की इतनी पाबन्दी फ़रमाते कि कभी हम में से किसी को किसी पर तर्जीह[10]

1-चित्त का लगना, 2-वापस ले लेना, 3-मासिक धर्म, 4-लिपट जाते, ध्यान देना, 5-रोज़े की हालत में, 6-चुम्बन, 7-लोगों का समूह, सार्वजनिक, 8-मत, पथ, 9-घरवालों, 10-प्रधानता।

न देते और ऐसा शाज़ोनादिर[1] ही होता कि आप सब अज़्वाजे मुतह्हरात के यहाँ रोज़ाना तशरीफ़ न ले गए हों।

एक बार हज़रत सफ़िय्यह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से कहा कि अगर तुम नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुझसे राज़ी कर दो तो अपनी बारी तुमको बख़्श दूँगी। उन्होंने कहा कि अच्छी बात है। चुनांचे हज़रत सफ़ियह रज़ि० की बारी के दिन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आप के पास हाज़िर हुई। आपने फ़रमाया-- आइशा! तुम कैसे आ गई? वापस चली जाओ। यह तो सफ़िय्यह की बारी है। उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है देता है और सारा वाक़िआ अर्ज़ कर दिया। नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत सफ़िय्यह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से ख़ुश हो गए।

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात के आख़िरी और पहले हर हिस्से में अज़्वाजे मुतह्हरात के पास जाया करते थे। आप कभी ग़ुस्ल फ़रमा कर सोते और कभी वुज़ू करके सो जाते।

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्सार की लड़कियों को हज़रत आइशा रज़ि० के पास खेलने को बुलाया करते थे और जाइज़ उमूर में आप भी उनके साथ हो जाते और जब आइशा रज़ि० पानी पीतीं तो आप उनके हाथ से प्याला लेकर वहीं लबे मुबारक लगा लेते जहाँ से उन्होंने पिया था।

और जब वह हड्डी पर से गोश्त खातीं तो आप वह हड्डी जिस पर गोश्त होता, लेकर वहाँ मुँह लगाते जहाँ से हज़रत आइशा रज़ि० ने खाया था।

एक दफ़ा का ज़िक्र है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि० के साथ मुसाबक़त फ़रमाई[2] और एक दूसरे के साथ दौड़े। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा दौड़ में आगे निकल गई फिर कुछ

1-कदाचित्, 2-प्रतियोगिता।

ज़माने के बाद दूसरी मर्तबा दौड़ हुई तो हज़रत आइशा रज़ि० से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे निकल गए।

वजह यह थी कि पहली मर्तबा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आम जिस्म की थीं दूसरी बार के वक़्त भारी जिस्म की हो गईं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- पहली मर्तबा मुझसे तुम्हारे आगे निकल आने का आज तुम से मेरे आगे निकल जाने का बदला है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

बाज़ औक़ात अज़्वाजे मुतह्हरात इधर-उधर के क़िस्से या गुज़रे हुए वाक़िआत बयान करतीं तो आप सल्ल० बराबर सुनते रहते और ख़ुद भी कभी अपने गुज़श्ता[1] वाक़िआत सुनाते। सय्यिदा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि आप सल्ल० हम में इस तरह हँसते, बैठे रहते थे कि मालूम ही न होता था कि कोई उलुल्अज़्म[2] नबी है, लेकिन जब कोई दीनी बात होती या नमाज़ का वक़्त आ जाता तो ऐसा मालूम होता कि आप वह आदमी ही नहीं हैं।

खाने, पहनने में अज़्वाजे मुतह्हरात को कोई रोक-टोक नहीं थी, जो चाहतीं खातीं, जो चाहतीं पहनतीं। हरचन्द[3] उस्रत[4] की वजह से अच्छा खाना मुयस्सर न आता[5]। अहलेबैत[6] के लिये सोने-चाँदी का ज़ेवर पसन्द न फ़रमाते। उस ज़माने में हाथी दाँत के ज़ेवरों का रिवाज था। आप इस क़िस्म के ज़ेवर पहनने का हुक्म देते, बीवियों का पाक-साफ़ रहना पसन्द फ़रमाते, बीवियों पर लान-तान न करते, न उनसे सख़्त और दुरुश्त[7] लहजे में गुफ़्तगू करते। अगर कोई बात नागवारे ख़ातिर होती तो इल्तिफ़ात[8] में कमी कर देते। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर के अन्दर तशरीफ़ लाते तो निहायत ख़न्दा पेशानी[9] के साथ मुस्कराते हुए दाख़िल होते। (उस्व-ए-हसना)

1-बीते हुए, 2-साहसी, विशिष्ट नबियों में एक, 3-यद्यपि, 4-तंगी, 5-आसानी से प्राप्त न होता, 6-घरवालों, 7-कठोर, 8-मिलने-जुलने, 9-नम्रता।

बाज़ वाक़िआत
(कुछ घटनाएँ)

बनी सवाद के एक शख़्स रिवायत करते हैं मैंने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ की निस्बत दरयाफ़्त किया। उन्होंने फ़रमाया कि तुम क़ुरआन में नहीं पढ़ते:-

إِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ

"इन्नक लअ़ला ख़ुलुकिन् अ़ज़ीम" (यानी क़ुरआन शाहिद[1] है कि आपके अख़्लाक़ अअ़्ला दर्जे के थे। आपके अख़्लाक़ का नक़्शा यही काफ़ी है) रावी कहते हैं कि मैंने कहा इसके मुतअ़ल्लिक़ मुझसे कुछ बयान कीजिए (यानी कोई ख़ास वाक़िआ जिससे इस आयत की कुछ तफ़्सीर बतौर नमूने के हो जाए) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया-- मैंने एक बार आप सल्ल० के लिये कुछ खाना तैयार किया और कुछ खाना हज़रत हफ़्सह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा नें तैयार किया। मैंने अपनी लौण्डी से कहा कि जा (देखती रह) अगर हज़रत हफ़्सह खाना लावें और मेरे खाने से पहले दस्तरख़्वान पर रख दें तो खाना गिरा देना, (चुनांचे) वह खाना लाईं और लौण्डी ने उसको गिरा दिया। रिकाबी भी गिर गई और टूट गई और जिसमें खाना गिरा वह दस्तरख़्वान चमड़े का था (इसलिये ज़ाए नहीं हुआ) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस खाने को जमा किया और हज़रत हफ़्सह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया कि तुम हज़रते आइशा से बदला लो यानी अपने बर्तन के बदले बर्तन लो) (मुस्नदे अहमद)

(फ़) बदला दिलवाना हज़रत हफ़्सह रज़ि० की दिलजोई[2] के लिये था ताकि वह यह न समझें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी हज़रत

1-गवाह, 2-ढाँढस।

आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के फ़ेल को गवारा फ़रमा लिया। ऐसे मामूली ख़फ़ीफ़ मुआमलात[1] में ऐसी दक़ीक़[2] रिआयतें करना यह ग़ायत दर्जे की शफ़क़त व उलुव्वे नज़र[3] व तवाज़ो की दलील है।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हरीरा[4] लाई जो मैंने आपके लिये तैयार किया था। मैंने हज़रत सौदह रज़ि० से जो वहाँ मौजूद थीं कहा कि तुम भी खाओ, उन्होंने किसी वजह से इन्कार किया। मैंने कहा या तो खाओ वर्ना तुम्हारा मुँह इस हरीरे से सान दूँगी। उन्होंने फिर भी इन्कार किया। मैंने हरीरे में हाथ भर कर उनका मुँह सान दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह देख कर हँसे। आपने अपने हाथ से मुझको (हज़रत आइशा रज़ि० को) दबाया (ताकि मुदाफ़अत[5] न कर सकें और) हज़रते सौदह रज़ि० से फ़रमाया तुम इनका मुँह सान दो, उन्होंने मेरा मुँह सान दिया, आप फिर हँसे। (जमउल्-फ़वाइद अन् मूसली)

(फ़) आपका हुस्ने सुलूक और अज़्वाजे मुतह्हरात में आपस में बेतकल्लुफ़ी और महब्बत वाज़ेह[6] है)

हदीस: हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक शब उनके पास से बाहर तशरीफ़ ले गए। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मुझको आप पर शक हुआ (इस गुमान से कि शायद किसी बीवी के पास तशरीफ़ ले गए हों, हालाँकि यह गुमान सहीह न था, न आपके मामूले मुल्तज़िम[7] के एतिबार से सहीह हो सकता था। गो अद्ल[8] भी आप पर वाजिब न हो और अक़लन् हज़रत आइशा भी ऐसा गुमान न कर सकती थीं। मगर तब्अन[9] माज़ूर[10] थीं। इसी वास्ते उसको ग़ैरत से ताबीर किया जो अम्रे तबई[11] है। (नश्रुत्तीब)

1-तुच्छ या छोटे विषय, 2-सूक्ष्म, अत्यन्त, 3-दृष्टि की व्यापकता, उदारता, 4-आटा, शकर, मेवा और घी से बना हुआ एक पतला पेय पदार्थ, 5-रोक, बचाव, 6-स्पष्ट, 7-नियमानुसार, 8-न्याय, 9-स्वभाव से, 10-विवश, 11-स्वाभाविक कार्य।

फिर आप तशरीफ़ लाए और मैं इज़्तिराब[1] में कुछ कर रही थी (मसलन इज़्तिराब की हरकात) उसको देखकर आपने फ़रमाया-- 'ऐ आइशा तुमको क्या हुआ''? क्या तुमको रश्क हुआ? फ़रमाती हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि क्या वजह कि मुझ जैसा (मुहिब्ब[2]) आप जैसे (महबूब) पर रश्क न करे!

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- तुझको तेरे शैतान ने पकड़ लिया। मैंने अर्ज़ किया-- या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या मेरे साथ कोई शैतान है। आपने फ़रमाया-- हाँ, और (तुम्हारी क्या तख़्सीस[3]) हर आदमी के साथ एक शैतान है। मैंने कहा कि आपके साथ भी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आपने फ़रमाया-- हाँ; लेकिन मेरे रब जल्ल जलालुहू ने उसके मुक़ाबले में मेरी इआनत[4] फ़रमाई, यहाँ तक कि मैं उससे साथ (यानी महफ़ूज़) रहता हूँ या एक रिवायत के मुताबिक़ यह फ़रमाया कि वह इस्लाम ले आया। (ब)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का ज़िक्र फ़रमाते तो उनकी तारीफ़ फ़रमाते और बहुत ज़्यादा तारीफ़ फ़रमाते तो मुझको एक रोज़ (बहुत) रश्क हुआ और मैंने कहा कि आप सल्ल० ऐसी औरत का क्या कसरत से ज़िक्र फ़रमाते हैं, जिसकी बाँछें लाल-लाल थीं (यानी दाँत टूट जाने की वजह से जिल्द सुर्ख़ नज़र आने लगती है) अल्लाह तआला ने इसकी जगह उससे अच्छी दे दी (यानी मैं) आपने फ़रमाया उससे अच्छी अल्लाह तआला ने मुझको नहीं दी (यानी तुम उनसे अच्छी नहीं हो क्योंकि) वह मुझ पर ऐसे वक़्त में ईमान लाई जब और लोगों ने मेरे साथ कुफ़्[5] किया और ऐसे वक़्त में मेरी तस्दीक़[6] की जब और लोगों ने मेरी तकज़ीब[7] की और उन्होंने मेरी माली मदद की जबकि और लोगों ने मुझको महरूम रखा (यानी किसी ने मुझसे हमदर्दी नहीं की क्योंकि दावए नुबुव्वत के बाद आम तौर पर लोगों को बुग़्ज़[8] हो गया था) और

1-बेचैनी, 2-जो प्रेम करे, 3-विशेषता, 4-सहायता, 5-अस्वीकार किया, 6-सत्यपुष्टि, 7-झुठलाया, 8-गुस्सा-कीना, मुख़ालफ़त,

अल्लाह ने मुझको उनसे औलाद भी दी जबकि दूसरी बीवियों से मुझको औलाद नहीं दी। (मुस्नदे अहमद)

(इस वाक़िए में आपका तअ़ल्लुक़ हज़रत ख़दीजा रज़ि० के साथ हज़रत आइशा रज़ि० के तअ़ल्लुक़ से अफ़्ज़ल[1] था। साफ़ ज़ाहिर है हालांकि अज्ज़ाए तबीईया[2] के असबाब हज़रत आइशा में ज़्यादा थे)

ईसारे हुक़ूक़
(अधिकारों का त्याग)

हदीसः हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत मैमूना रज़ि० के घर में बीमार हो गए तो आपने अपनी बीवियों से इसकी इजाज़त चाही कि मेरे घर में आपकी तीमारदारी की जाए। उन सबने इजाज़त दे दी। (ब)

(फ़) इससे तीन बातें मालूम हुईं-- एक यह कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बीवियों के पास रहने में अ़द्ल फ़रमाते थे[3], अगर्चे एक क़ौल में आप पर अ़द्ल वाजिब न था। दूसरे यह कि अगर शौहर एक की बारी में दूसरी के घर रहना चाहे तो बारी वाली से इजाज़त हासिल करे। तीसरे यह कि बीवी को भी मुनासिब है कि ऐसे उमूर में शौहर की राहत की रिआयत करे।

रफ़ीक़े अअ़्ला
(पारलौकिक मित्र)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शिद्दते मरज़ की हालत में अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आए तो उनके

1-गरिमाशाली, 2-स्वाभाविक आकर्षण, 3-न्याय करते थे,

पास ताज़ा मिस्वाक[1] थी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनकी तरफ़ देखा। मैंने ख़्याल किया कि आपको उसकी ख़्वाहिश है। मैंने अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से लेकर उसको चबाया और उसको साफ़ करके आपको दे दी। आप सल्ल० ने ख़ूब अच्छी तरह मिस्वाक की (जैसे कभी मिस्वाक करने की आ़दत थी) फिर उसको मेरी तरफ़ बढ़ाया। मिस्वाक आपके हाथ से गिर गई (और इसी हदीस में यह भी है) फिर आपने आसमान की तरफ़ नज़र उठाई और दुआ़ की, ऐ अल्लाह! रफ़ीक़े अअ़्ला[2] में मिला दे। और उसके बाद आप अपने मालिके हक़ीक़ी[3] से जा मिले।

(मिश्कात)

हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को क़ब्ल आपकी वफ़ात[4] के अपने सीना के सहारे बिठा रखा था। उसी हालत में मैंने आप सल्ल० को यह कहते हुए सुना-- ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा और मुझ को रफ़ीक़े अअ़्ला में शामिल फ़रमा यानी अर्वाहे तय्यिबा[5] व मलाइका की जमाअ़त में।

(फ़) बाज़ अहले ग़ुलू[6] क़ुर्बे[7] हक़ के लिये अज़्वाज व औलाद से बोद[8] को शर्त समझते हैं, इसमें रद[9] है इसका। देखिये उस वक़्त से ज़्यादा कौन वक़्त होगा, क़ुर्बे हक़ का और उसमें बीवी से इतना क़ुर्ब[10] है कि उनके सहारे लगे बैठे हैं। अहले ग़ुलू ने क़ुर्ब की हक़ीक़त ही नहीं समझी। उसकी हक़ीक़त ज़िक्र व इताअ़त है अगर बीवी उसमें मुईन[11] हो तो यह तअ़ल्लुक़ उस क़ुर्ब का मुअक्कद[12] है। (किताब कस्रतुल् अज़्वाज लिसाहिबिलि्मेराज से उद्धृत है)

(रचनाकार हज़रत मुजद्दिदे मिल्लत मौलाना शाह मुहम्मद अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी क़ुद्दिस सिर्रहुल् अ़ज़ीज़)

1-दातुन, 2-सर्वश्रेष्ठ मित्र, 3-अल्लाह, 4-निधन, 5-पवित्र आत्माओं, 6-बढ़ा-चढ़ा कर कहने वाले धार्मिक लोग, 7-हक़ से निकटता, 8-दूरी, 9-इन्कार, 10-निकटता, 11-सहायक, 12-प्रंथित, बंधा हुआ।

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के खाने-पीने का अन्दाज़

आ़दाते तय्यिबा (अच्छी आ़दतें)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम टेक लगाकर तनावुल[1] न फ़रमाते। आप फ़रमाते थे-- मैं बन्दा हूँ और बन्दों के मानिन्द बैठता हूँ और ऐसे ही खाता हूँ जैसे बन्दे खाते हैं (हुज़ूर की नशिस्त[2] इस क़िस्म की थी कि गोया घुटनों के बल अभी खड़े हो जायेंगे) यानी उकड़ूँ बैठ कर।

(ज़ादुल्-मआ़द)

टेक लगाने से मुराद जमकर बैठना और खाने के वक़्त चौकड़ी मारकर सुरीन[3] पर बैठना उस बैठने के मानिन्द है जो किसी चीज़ को अपने नीचे रखकर टेक लगा कर बैठे। (क़ाज़ी अ़याज़)

साहिबे मवाहिब कहते हैं खाने के लिये इस तरह बैठना मुस्तहब है कि दोनों रानों को खड़ा करें और दोनों क़दमों की पुश्त पर नशिस्त करके या इस तरह कि दाहिने पाँव को खड़ा करे और बाएं पाँव पर बैठे। इब्ने क़य्यिम ने बयान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तवाज़ो व अदब की ख़ातिर बायें क़दम के अन्दर की जानिब को दाहिने क़दम की पुश्त पर रखते थे। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तवाज़ो में से एक यह भी है कि आप सल्ल० खाने में कभी ऐ़ब न बताते थे अगर चाहा तो खा लिया वर्ना छोड़ दिया और यह कभी न फ़रमाया कि यह बुरा है, तुर्श[4] है, नमक ज़्यादा है या कम है, शोरबा गाढ़ा है या पतला। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

फ़ायदा: इस जगह यह मालूम होता है कि खाने में ऐ़ब निकालना ग़लती और ख़िलाफ़े इत्तिबाए सुन्नत[5] है।

1-भोजन करना, 2-बैठना, 3-नितम्ब, 4- कड़वा, 5-सुन्नत के अनुसरण के विरुद्ध।

बाज़ उलमा फ़रमाते हैं कि तआ़म[1] में तज़्किरतन बुराई बतायें और कहें कि बुरा पका है और माल ज़ाए[2] कर दिया है तो यह जाइज़ है लेकिन इसमें भी पकाने वाले की दिलशिकनी है अगर ऐसा न करें तो बेहतर है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम खाने की इब्तिदा[3] में "बिस्मिल्लाह" पढ़ते और आख़िर में हम्द[4] करते:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ

"अल्हम्दुलिल्लाहि हम्दन कसीरन तय्यिबम् मुबारकन् फ़ीहि"

आप खाने से पहले हाथ धोते और सीधे हाथ से अपने सामने से खाना शुरू करते। (ज़ादुल्मआद)

खाना अगर बर्तन की चोटी तक होता तो आप चोटी से खाना शुरू न फ़रमाते बल्कि सामने नीचे की जानिब से शुरू करते और फ़रमाते कि खाने में बरकत चोटी ही में होती है।

(ख़साइले नबवी, नश्रुत्तीब, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मिश्कात)

आप सल्ल० जब खाने में हाथ डालते तो उंगलियों की जड़ों तक खाने में नहीं भरते। (नश्रुत्तीब)

हदीस: काब बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आ़दते शरीफ़ा तीन उंगलियों से खाना तनावुल फ़रमाने[5] की थी और उनको चाट भी लिया करते थे।

(शमाइले तिर्मिज़ी, मुस्लिम)

बाज़ रिवायात में है कि पहले बीच की उंगली चाटते थे, उसके बाद शहादत की उंगली[6], उसके बाद अंगूठा। (ख़साइले नबवी)

अगर कोई चीज़ पतली होती तो शाज़ोनादिर[7] बीच वाली उंगली के बराबर वाली उंगली को भी इस्तेमाल करते थे। (तबरानी, ख़साइले नबवी)

1-भोजन, 2-नष्ट, 3-आरम्भ, 4- प्रशंसा, 5-खाने, 6-तर्जनी, 7-कभी-कभी।

खाने और पीने की चीज़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फूँक नहीं मारते और इसको बुरा जानते। (इब्ने सअ़द)

आप सल्ल० खाने को कभी नहीं सूँघते और इसको बुरा जानते।

(नश्रुत्तीब)

खाना अगर एक क़िस्म का आपके सामने होता तो आप सिर्फ़ अपने ही सामने से तनावुल फ़रमाते और अगर मुख़्तलिफ़ क़िस्म का खाना होता चाहे बर्तन एक ही होता तो बिला तअम्मुल[1] दूसरी जानिब हाथ बढ़ाते।

(ज़ादुल्-मआ़द)

जब खाना पास आता तो फ़रमाते:-

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ مَارَزَقْتَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ بِسْمِ اللّٰهِ۔

अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ी मा रज़क़्तना व क़िना अ़ज़ाबन्नारि बिस्मिल्लाहि।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! आपने हमें जो रिज़्क़ इनायत फ़रमाया उसमें हमें बरकत इनायत फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा, अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम खाने में से अव्वल लुक़्मा लेते तो फ़रमाते:-

يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ

"या वासिअ़ल् मग़्फ़िरति"

जब आप खाना तनावुल फ़रमा चुकते तो फ़रमाते:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ۔ (شمائل ترمذی)

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत़्अ़मना व सक़ाना व जअ़लना मिनल्मुस्लिमीन।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

अनुवाद: सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें खिलाया और पिलाया और मुसलमान बनाया।

1-निःसंकोच।

जब दस्तरख़्वान उठ जाता तो आप इर्शाद फ़रमाते:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا ۔ (بخاری، زادالمعاد، شمائل ترمذی)

अलहम्दु लिल्लाहि हम्दन् कसीरन तय्यिबम् मुबारकन् फ़ीहि ग़ैर मक्फ़िय्यिंव वला मुवद्दइंव् वला मुस्तग़नन् अन्हु रब्बना।

(बुख़ारी, ज़ादुल्-मआद, शमाइले तिर्मिज़ी)

अनुवाद: सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए सज़ावार[1] हैं जो बहुत ही उम्दा बड़ी बाबरकत अन्दाज़ में हो। ए हमारे रब हम इस दस्तरख़्वान को यह समझ कर नहीं उठा रहे हैं कि यह खाना हमारे लिये काफ़ी नहीं है और न हम इसको हमेशा के लिए छोड़ रहे हैं और न ही हम इससे मुस्तग़्नी[2] हो गए हैं।

जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहीं मद्ऊ[3] होते तो दाई[4] के हक़ में इन अल्फ़ाज़ से ज़रूर दुआ फ़रमाते:-

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْ مَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْلَهُمْ وَارْحَمْهُمْ۔

(زاد المعاد ، مدارج النبوۃ)

अल्लाहुम्म बारिक लहुम् फ़ी मा रज़क़्तहुम् वग़फ़िर लहुम् वर्हम्हुम्

(ज़ादुल्-मआद, मदारिजुन्नुबुव्वा)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! इनके रिज़्क़ में बरकत दे और इनको बख़्श दे और इन पर रहम फ़रमा।

खाने के बाद हाथ धोते और हाथों पर जो तरी होती उसको हाथों, चेहरे और सरे मुबारक पर मलकर ख़ुश्क कर लेते। एक रिवायत में अअ्ज़ाए वुज़ू[5] पर हाथ पोंछना भी आया है। (इब्ने माजा)

1-योग्य, 2-निःस्पृह, 3-निमन्त्रित, 4- निमंत्रण दाता, 5-वुज़ू के अंग,

खाने के लिये वुज़ू

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बैतुलख़ला[1] से फ़राग़त[2] पर बाहर तशरीफ़ ले आए तो आपकी ख़िदमत में खाना हाज़िर किया गया और वुज़ू का पानी लाने के लिये अर्ज़ किया गया तो आपने फ़रमाया कि मुझे वुज़ू का उसी वक़्त हुक्म है, जब नमाज़ का इरादा करूँ। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि खाने से क़ब्ल[3] और खाने के बाद वुज़ू (हाथ-मुँह धोना) बरकत का सबब है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

खाने से पहले बिस्मिल्लाह

अम्र बिन अबी सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास खाना रखा हुआ था। आपने फ़रमाया-- बेटा! क़रीब हो जाओ और बिस्मिल्लाह कह के दाहिने हाथ से अपने सामने से खाना शुरू करो। (शमाइले तिर्मिज़ी)

"बिस्मिल्लाह" कहना बिल्इत्तिफ़ाक़[4] सुन्नत है और दाहिने हाथ से खाना जुम्हूर[5] के नज़्दीक सुन्नत है और बाज़ के नज़्दीक वाजिब है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म है कि दाहिने हाथ से खाओ और दाहिने हाथ से पियो इसलिए कि बायें हाथ से शैतान खाता और पीता है।

(ख़साइले नबवी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि हक़ तआला जल्ल जलालुहू व शानुहू बन्दे की इस बात पर बहुत ही रज़ामन्दी ज़ाहिर फ़रमाते हैं कि जब

1-शौचालय, 2-निवृत्ति, 3-पूर्व, 4-सर्व सम्मति से, 5-जनसाधारण, विद्वज्जन।

एक लुक़्मा खाना खा ले या एक घूँट पानी पीये तो हक़ तआला शानुहू का उस पर शुक्र अदा करे:-

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَيْكَ۔ (شمائل ترمذی)

अल्लाहुम्म लकल् हम्दु व लकश्शुक्र ला उह्सी सनाअन् अलैक।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

जो शख़्स बिस्मिल्लाह पढ़े बग़ैर खाना शुरू कर देता तो आप उसका हाथ पकड़ लिया करते और उसको बिस्मिल्लाह पढ़ने के लिये ताकीद फ़रमाते। (ज़ादुल्मआद)

उलमा ने लिखा है कि बिस्मिल्लाह आवाज़ से पढ़ना औला[1] है ताकि दूसरे साथी को अगर ख़्याल न रहे तो याद आ जाए। (ख़साइले नबवी)

जिस नेअ्मत के अव्वल में "बिस्मिल्लाह" हो और आख़िर में "अल्हम्दुलिल्लाह" हो उस नेअ्मत से क़ियामत में सवाल न होगा।

(इब्ने हब्बान)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई खाने के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो दरमियान में या बाद में याद आने पर इस तरह पढ़े:-

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ

बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आख़िरहू। *(ज़ादुल्मआद, शमाइले तिर्मिज़ी)*

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का खाना

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात[2] तक आपके अहलो-इयाल[3] ने मुसलसल[4] दो दिन जौ की रोटी से पेट भर कर खाना नहीं खाया। (शमाइले तिर्मिज़ी)

1-अत्युत्तम, 2-निधन, 3-परिवार, 4-निरन्तर।

(यानी खजूरों से अगर्चे उसकी नौबत आ गई हो लेकिन रोटी से कभी यह नौबत नहीं आई कि मुसल्सल दो दिन मिली हो)

कभी-कभी गेहूँ की रोटी भी तनावुल फ़रमाई[1] है। (ख़साइसे नबवी)

सुहैल बिन सअ़द रज़ि० से किसी ने पूछा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कभी सफ़ेद मैदे की रोटी भी खाई है, उन्होंने जवाब दिया कि आपके सामने आख़िर उम्र तक मैदा आया भी न होगा।

(बुख़ारी, शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कभी मेज़ पर खाना तनावुल नहीं फ़रमाया, न छोटी तश्तरियों में खाया न आपके लिये कभी चपाती पकाई गई। आप खाना चमड़े के दस्तरख़्वान पर तनावुल फ़रमाते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

मर्ग़ूबात

(रुचियाँ)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक मर्तबा फ़रमाया-- सिर्का भी कैसा अच्छा सालन है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

एक हदीस में है कि आपने सिर्का में बरकत की दुआ़ फ़रमाई है और यह इर्शाद फ़रमाया है कि पहले अम्बिया की भी यही सालन रहा है। एक हदीस में है कि जिस घर में सिर्का हो वह मोहताज नहीं है यानी सालन की एहतियाज[2] बाक़ी नहीं रहती। (इब्ने माजा)

अबू उसैद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ज़ैतून का तेल खाने में भी इस्तेमाल करो और मालिश में भी इसलिए कि यह एक बाबरकत दरख़्त का तेल है।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बोंग का गोश्त पसन्द

1-खाई है, 2-आवश्यकता, ज़रूरत।

था। आपने उसको दाँतों से काट कर तनावुल फ़रमाया[1] (यानी छुरी वग़ैरा से नहीं काटा)

दाँतों से काटकर खाने की तर्ग़ीब[2] भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाई है, चुनांचे हदीस में आया है कि गोश्त को दाँतों से काट कर खाया करो इससे हज़्म भी ख़ूब होता है और बदन को ज़्यादा मुवाफ़िक़ पड़ता है। (ख़साइले नबवी)

एक हदीस शरीफ़ में है कि आपने फ़रमाया कि पुट्ठे का गोश्त बेहतरीन गोश्त है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भुना हुआ गोश्त और सालन में कद्दू बहुत मर्ग़ूब[3] था। (इब्ने सअ़द, शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सिर्का और रोग़ने ज़ैतून[4] और शीरीं[5] चीज़ को और शहद को पसन्द फ़रमाते थे। (ज़ादुल्मआ़द)

आपने मुर्ग़ का, सुर्ख़ाब और ऊँट और गाय का गोश्त खाया । आप सरीद को (यानी शोरबे में तोड़ी हुई रोटी को) पसन्द फ़रमाते थे। आप फ़िलफ़िल[6] और मसाले भी खाते थे।

आपने ख़ुर्मा-ए-नीम पुख़्ता[7], ताज़ा और ख़ुर्माए ख़ुश्क और चुकन्दर और हीस (यानी खजूर, घी और पनीर का मालीदा भी) खाया है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हाण्डी और प्याले का बचा हुआ खाना मर्ग़ूब[8] था।

आप ककड़ी ख़ुर्मा के साथ खाते थे जैसा कि अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र से रिवायत है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने रिवायत किया है कि आप सल्ल० तर्बूज़ ख़ुर्मा के साथ खाते थे और फ़रमाते कि इसकी गर्मी का इसकी सर्दी से तदारुक[9] हो जाता है और पानी आपको वह पसन्द था जो शीरीं[10] और सर्द

1-खाया, 2-प्रेरणा, 3-प्रिय, रुचिकर, 4-ज़ैतून का तेल, 5-मीठी, 6-मिर्च, 7-अधपकी खजूर या छुहारा, 8-प्रिय, 9-प्रतिरोध, 10-मधुर।

हो और ख़ुर्मा तर करके उसका ज़ुलाल[1] और दूध और पानी सब एक ही प्याले में पिया करते थे। यह प्याला लकड़ी का मोटा-सा बना हुआ था और उसमें लोहे के पत्तर लगे थे। (इब्ने सअद)

आपने यह भी फ़रमाया कि दूध के सिवा कोई चीज़ नहीं जो खाने और पीने दोनों का काम दे सके। (नश्रुत्तीब)

मेहमान की रिआयत

(अतिथि-सत्कार)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने मेहमानों से खाने के लिये इसरार फ़रमाते और बार-बार कहते। एक बार एक शख़्स को दूध पिलाने के बाद उससे बार-बार फ़रमाया, इश्रिब-इश्रिब और पियो और पियो। यहाँ तक कि उस शख़्स ने क़सम खाकर अ़र्ज़ किया-- क़सम है उस ख़ुदाए बरतर की जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, अब और गुंजाइश नहीं है।

(बुख़ारी, मदारिजुन्नुबुव्वा)

किसी मज्मे में खाना तनावुल फ़रमाने[2] का अगर इत्तिफ़ाक़ होता तो सबसे आख़िर में आप ही उठते, क्योंकि बाज़ आदमी देर तक खाते रहने के आ़दी होते हैं और ऐसे लोग जब दूसरों को खाने से उठता देखते हैं तो शर्म की वजह से ख़ुद भी उठ जाते हैं। लिहाज़ा ऐसे लोगों का लिहाज़ फ़रमाते हुए हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी बतकल्लुफ़ थोड़ा-थोड़ा खाते ही रहते। (ज़ादुल्मआ़द, इब्ने माजा, बैहक़ी, मिश्कात)

अगर किसी मज्लिस में तशरीफ़ फ़रमा होते और किसी हमजलीस[3] को कोई चीज़ खाने या पीने की इनायत फ़रमाते तो दाहिनी तरफ़ बैठने वाले को इसका ज़्यादा हक़दार समझते और उसको देते अगर बायें जानिब वाले को इनायत फ़रमाना चाहते तो दाहिनी तरफ़ वाले से इजाज़त ले लेते। यह तर्तीब और यह अ़मल हमेशा मल्हूज़[4] रहता गो बायें तरफ़ का आदमी

1-रस, 2-खाने, 3-साथ बैठने वाले, 4-ध्यान रहना।

कितनी ही बड़ी शख़्सियत का होता। (बुख़ारी, मुस्लिम, ज़ादुल्मआद)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कहीं मदऊ[1] होते और कोई शख़्स बग़ैर बुलाए साथ हो जाता तो आप सल्ल० उसको साथ ले लेते मगर दाई[2] के घर पहुँचने पर दाई से उसके लिये इजाज़त तलब फ़रमाते और इजाज़त हासिल करने पर हमराह रखते। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

खाने के मुतअल्लिक बाज़ सुनने तय्यिबा

हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मर्वी है कि जब हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गर्म खाना लाया जाता तो आप उसको उस वक़्त तक ढाँप के रखते जब तक उसका जोश ख़त्म न हो जाता और फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि सर्द खाने में अज़ीम बरकत है। (दारमी, मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है-- जब खाना सामने रख दिया जाए तो जूते उतार डालो। इसलिए कि जूतों के उतार डालने से क़दमों को बहुत आराम मिलता है। (इब्ने माजा, मिश्कात)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खाने के बाद पानी नोश न फ़रमाते क्योंकि मुज़िरे हज़्म[3] है। जब तक खाना हज़्म के क़रीब न हो पानी न पीना चाहिये। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

आप रात का खाना भी तनावुल फ़रमाया[4] करते थे, अगर्चे खजूर के चन्द दाने ही क्यों न हों। फ़रमाया करते थे कि इशा का खाना छोड़ देना बुढ़ापा लाता है। (जामे तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा, ज़ादुल्-मआद)

खजूर या रोटी का कोई टुकड़ा किसी पाक जगह पड़ा होता तो उसको साफ़ करके खा लेते। (मुस्लिम)

आप खाना खाते ही सो जाने को मना फ़रमाते थे (यह दिल में

1-निमन्त्रित, 2-निमन्त्रण दाता, 3-पाचन के लिये हानिकारक, 4-खाते।

सक़ालत[1] पैदा करता है।) (ज़ादुलमआ़द)

दोपहर के खाने के बाद थोड़ी देर लेट जाना भी मस्नून है।

(ज़ादुल्-मआ़द)

जिस क़द्र खाना मुयस्सर हो उस पर क़नाअ़त करना यानी जैसा भी और जितना भी मिल जाए उस पर राज़ी रहना और उसको अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल समझ कर खाना चाहिए। (मालिक)

और यह निय्यत रखना कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म के तहत उसकी इबादत पर क़ुव्वत हासिल होने के लिये खाता हूँ। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तक़्लीले ग़िज़ा[2] की रग़बत दिलाया करते और फ़रमाते थे कि मेदे का एक तिहाई हिस्सा खाने के लिए और एक तिहाई पानी के लिए और एक तिहाई ख़ुद मेदे के लिए छोड़ देना चाहिए।

(ज़ादुल्-मआ़द)

फलों, तरकारियों का इस्तेमाल उनकी मुस्लेह[3] चीज़ों के साथ फ़रमाया करते। (ज़ादुलमआ़द)

किसी दूसरे को खाना देना या किसी से खाना लेना हो तो दायाँ हाथ इस्तेमाल करना चाहिये। (इब्ने माजा)

चन्द आदमियों के साथ खाना बाइसे बरकत होता है। (अबू दाऊद)

खाने में जितने हाथ जमा होंगे उतनी ही बरकत ज़्यादा होगी।

(मिश्कात)

खाने के दौरान जो चीज़ दस्तरख़्वान या पियाले से गिर जाए उसे उठा कर खा लेना भी सवाब है। बाज़ रिवायतों में आया है कि इसमें मोहताजी, बरस और कोढ़ से हिफ़ाज़त है और जो खाता है उसकी औलाद हिमाक़त[4] से महफ़ूज़ रहती है और उन्हें आफ़ियत[5] दी जाती है। (सदारिजुन्नुबुव्व)

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत की जाती है फ़रमाया कि जो दस्तरख़्वान पर गिरी हुई चीज़ उठा कर खाता है उसकी

1-भारीपन, 2-अल्प या थोड़ा भोजन, 3-शोधक, शरीर की धातुओं का दोष दूर करने वाली दवा, 4-मूर्खता, बेवक़ूफ़ी, 5-शान्ति।

औलाद हसीन व जमील[1] पैदा होती है और उससे मोह्ताजी दूर की जाती है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कच्चा लहसुन खाने से मना फ़रमाया है मगर जब्कि उसको पका लिया जाए तो उसको खाना दुरुस्त है।

(तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, मिश्कात)

खाने की मज्लिस में जो शख़्स बुज़ुर्ग और बड़ा हो उससे खाना पहले शुरू कराना चाहिये। (मुस्लिम)

खाना खाते हुए खाने की चीज़ या लुक़्मा नीचे गिर जाए तो उसको उठाकर साफ़ करके खा लेना चाहिये, शैतान के लिये न छोड़े।

(इब्ने माजा, मुस्लिम)

खाने के दरमियान कोई शख़्स आ जाए तो उससे खाने के लिये पूछ लेना चाहिये। दस्तरख़्वान पहले उठा लिया जाए उसके बाद खाने वाले उठें।

(इब्ने माजा)

नए फल का इस्तेमाल

जब आपकी ख़िदमत में मौसम का नया फल पेश होता तो आप उसको आँखों और होटों पर रखते और ये अल्फ़ाज़े दुआ इर्शाद फ़रमाते:-

اَللّٰهُمَّ كَمَا اَرَيْتَنَا اَوَّلَهٗ اَرِنَا اٰخِرَهٗ

अल्लाहुम्म कमा अरैतना अव्वलहू अरिना आख़िरहू।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! जिस तरह आपने हमें इस फल का शुरू दिखलाया (इसी तरह) इसका आख़िर भी हमें दिखा। और फिर आपकी ख़िदमत में जो सबसे कम उम्र बच्चा होता, उसको इनायत फ़रमाते।

(ज़ादुल्-मआद)

1-अतिसुन्दर।

मश्रूबात[1] में आदते तय्यिबा
(पेय पदार्थ में पवित्र स्वभाव)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पानी पीने में तीन मर्तबा सांस लिया करते थे और यह फ़रमाते थे कि इस तरह से पीना ज़्यादा ख़ुशगवार है, और ख़ूब सेर[2] करनेवाला है और हुसूले शिफ़ा[3] के लिये अच्छा है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

दूसरी हदीस में सराहत[4] के साथ वारिद[5] है कि जब तुम में से कोई पानी पीये तो पियाले में सांस न ले, बल्कि पियाले से मुँह हटा ले।

(ज़ादुल्-मआद, शमाइले तिर्मिज़ी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सर्द और शीरीं[6] पानी ज़्यादा महबूब था। (ज़ादुल्-मआद)

खाने के बाद पानी पीना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत नहीं है, ख़ुसूसन् अगर पानी गर्म हो या ज़्यादा सर्द हो क्योंकि ये दोनों सूरतें बहुत ज़्यादा नुक़्सानदेह होती हैं। (ज़ादुल्-मआद)

आप वर्ज़िश के बाद, थकान होने पर और खाना या फल खाने पर, जिमाअ़[7] या गुस्ल के बाद पानी पीने को अच्छा नहीं समझते थे।

(ज़ादुल्-मआद)

अहादीस में आया है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि पानी चूस-चूस कर पियो और गट-गट करके न पियो।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब पीने की चीज़ किसी मज्लिस में तक्सीम कराते तो हुक्म देते कि उम्र में बड़े लोगों से दौर शुरू किया जाए और आपकी आ़दते शरीफ़ा यह थी कि जब मज्लिस में किसी पीने की चीज़ का दौर चल रहा होता और बार-बार प्याला जा रहा होता तो दूसरा

1-पीने वाली वस्तुएं, 2-तृप्त, 3-स्वास्थ्य प्राप्ति, 4-विस्तार, विवरण, 5-आया, 6-मीठी, 7-संभोग।

पियाला आने पर उसको उसी जगह से शुरू कराते जहाँ पहला दौर ख़त्म हुआ था।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने अहबाब को कोई चीज़ पिलाते तो आप ख़ुद सबसे आख़िर में नोश फ़रमाते, और फ़रमाते साक़ी[1] सबसे आख़िर में पीता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आ़दते मुबारक बैठ कर पानी पीने की थी और सहीह़ रिवायत में आप से मन्क़ूल[2] है कि आपने खड़े होकर पीने को मना फ़रमाया है, नीज़[3] एक हाथ से भी पीने को मना फ़रमाया है।

(ज़ादुल्-मआ़द)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब किसी शख़्स को हक़ तआ़ला शानुहू कोई चीज़ खिलाए तो यह दुआ़ पढ़नी चाहिये:-

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَاَطْعِمْنَا خَيْرًا مِّنْهُ۔

अल्लाहुम्म बारिक्लना फ़ीहि व अत्इम्ना ख़ैरम् मिन्हु ।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! तू हमें इसमें बरकत इनायत फ़रमा और इससे बेहतर नसीब फ़रमा।

और जब दूध अ़ता फ़रमावें तो यह दुआ़ पढ़ना चाहिये:-

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ۔

अल्लाहुम्म बारिक्लना फ़ीहि व ज़िद्ना मिन्हु (शमाइले तिर्मिज़ी)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! तू इसमें हमें बरकत दे और हमको इससे अच्छी चीज़ नसीब फ़रमा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ठिला शुब्हा आबे शीरीं व सर्द[4] को पसन्द फ़रमाते। आपके लिये दूर से ऐसा पानी लाया जाता था।

(ख़साइले नबवी, मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-पिलानें वाला, 2-उद्धृत, 3-इसके अतिरिक्त, 4-मधुर व शीतल जल।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने शहद में पानी मिला कर नोश फ़रमाया है और अलस्सुबह[1] नोश फ़रमाते और जब उस पर कुछ वक़्त गुज़र जाता और भूक मालूम होती तो जो कुछ खाने की क़िस्म का मौजूद होता तनावुल[2] फ़रमाते। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दूध को पसन्द फ़रमाते थे। आपने फ़रमाया कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो खाने और पीने दोनों के काम आए बजुज़ दूध के। खाने के बाद दुआ फ़रमाते:-

اَللّٰهُمَّ زِدْنَا خَيْرًا مِّنْهُ

'अल्लाहुम्म ज़िद्ना ख़ैरम् मिन्हु'

अनुवाद: ऐ अल्लाह! हमें (यह) ज़्यादा (और) इससे बेहतर अ़ता फ़रमा। (शमाइले तिर्मिज़ी)

आप कभी ख़ालिस दूध नोश फ़रमाते और कभी सर्द पानी मिला कर यानी लस्सी। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आबे ज़मज़म[3] का डोल लाया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसे खड़े होकर पिया (उस वक़्त उस जगह बैठने का मौक़ा न था।) (शमाइले तिर्मिज़ी)

बाज़ का क़ौल है कि खड़े होकर पानी पीना आबे वुज़ू और आबे ज़मज़म के साथ ख़ास है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

नबिय्युर्रहमत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूले लिबास व आराइश
(वस्त्र व सजावट)

लिबास का मामूले मुबारक

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आ़दते करीमा लिबास शरीफ़ में वुस्अ़त[4] और तर्के तकल्लुफ़[5] थी। मतलब यह है कि जो पाते ज़ेबे

1-प्रातः काल, 2-खाते, 3-मक्के के एक कुएँ का जल, 4-ढीला-ढाला, 5-कष्ट रहित।

तन फ़रमाते[1] और तअय्युन[2] की तंगी इख़्तियार न फ़रमाते और किसी ख़ास क़िस्म की जुस्तजू नहीं फ़रमाते[3] और किसी हाल में उम्दा, नफ़ीस[4] की ख़्वाहिश न फ़रमाते और न अदना व हक़ीर का तकल्लुफ़ फ़रमाते, जो कुछ मौजूद व मुयस्सर होता पहन लेते और जो लिबास ज़रूरत को पूरा कर दे उसी पर इक्तिफ़ा करते[5]।

अक्सर हालतों में आपका लिबास चादर और इज़ार (तहबन्द) होता, जो कुछ सख़्त और मोटे कपड़े का होता और कभी पश्मीना[6] भी पहना है।

मन्क़ूल है कि आपकी चादर शरीफ़ में मुतअद्दद[7] पैवन्द लगे होते थे, जिसे आप ओढ़ा करते थे और फ़रमाते मैं बन्दा ही हूँ और बन्दों ही जैसा लिबास पहनता हूँ। (शैख़ैन[8] ने रिवायत किया है)

हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- अल्लाह तआला के नज़दीक मोमिन की तमाम ख़ूबियों में लिबास का सुथरा रखना और कम पर राज़ी होना पसन्द है।

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैले और गंदे कपड़े को मक्रूह[9] और नापसन्द जानते थे। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी तहबन्द को सामने की जानिब लटकाते और अक़ब[10] में ऊँचा रखते। (मदारिजुन्नुबुव्व)

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तकब्बुर[11] व ग़ुरूर की मज़म्मत फ़रमाते तो सहाबा रज़ि० अर्ज़ करते या रसूलल्लाह! आदमी पसन्द करता है कि उसके कपड़े अच्छे हों और उसकी जूतियाँ उम्दा हों। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:- إن الله جميل يحب الجمال

"इन्नल्लाह जमीलुंय युहिब्बुल जमाल" *(अलकिबर बत्रुलहक़)*

1-शरीर पर पहनते, 2-निश्चय करना, 3-तलाश नहीं करते, 4-बहुत बढ़िया, 5-बस करते, पर्याप्त समझते, 6-एक बहुत अच्छा ऊनी कपड़ा, जो बड़ा मुलायम और मज़बूत होता है, 7-बहुत से, 8-हज़रत उम्र व हज़रत अबू बक्र रज़ि०, 9-इस्लाम धर्म में वे चीज़ें जिन का खाना-पीना, पहनना आदि अच्छा न हो किन्तु वे हराम भी नहीं होती, घृणित, 10-पीछे, 11-घमण्ड।

अनुवाद: बेशक अल्लाह तआला जमील[1] है और जमाल[2] को पसन्द करता है।

एक और हदीस में आया है:-

إِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ يُحِبُّ اللَّطَافَةَ ـ

इन्नल्लाह लतीफुँय्-युहिब्बुल्लताफ़त।

अनुवाद: बेशक अल्लाह तआला लतीफ़[3] है और लताफ़त[4] को पसन्द करता है।

चुनांचे: ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वुफ़ूद[5] के आने पर उनके लिये तजम्मुल[6] फ़रमाते और जुमा व ईदैन के लिये भी आराइश फ़रमाते और मुस्तक़िल जुदा[7] लिबास रखते थे। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मन्क़ूल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का महबूब-तरीन लिबास क़मीस (कुर्ता) थी। अगर्चे तहबन्द और चादर शरीफ़ भी बकस्रत ज़ेबे-तन फ़रमाते थे लेकिन क़मीस का पहनना ज़्यादा पसन्दीदा था। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पैरहन[8] मुबारक सूती तंग दामन व आसतीन वाला होता था और आपकी क़मीसे मुबारक में घुण्डियाँ लगी हुई थीं और क़मीसे मुबारक में सीने के मक़ाम पर गिरीबान था और यही क़मीस की सुन्नत है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

एक सहाबी फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे इस हाल में देखा कि मेरे जिस्म पर कम क़ीमत के कपड़े थे तो फ़रमाया कि क्या तेरे पास अज़ क़िस्म[9] माल है। मैंने अ़र्ज़ किया कि हाँ, अल्लाह तआ़ला ने मुझे हर क़िस्म के माल व दौलत से नवाज़ा है। फिर फ़रमाया कि अल्लाह की नेअ़मत और उसकी बख़्शिश को तुम्हारे जिस्म से ज़ाहिर होना चाहिए।

1-सुन्दर, 2-सुन्दरता, 3-पवित्र, 4-पवित्रता, 5-प्रतिनिधि मण्डल, 6-वैभव, सौन्दर्य, 7-पृथक, 8-कुर्ता, वस्त्र, 9-दूसरे क़िस्म का।

मतलब यह है कि तवंगरी[1] के हालत के मुनासिब कपड़े पहनो और अल्लाह की नेअ़्मत का शुक्र अदा करो।

और एक उलझे हुए बालों वाले परेशान हाल से फ़रमाया कि क्या यह शख़्स कोई ऐसी चीज़ नहीं पाता जिससे अपने सर को तस्कीन दे। (यानी बालों को कंघा करे)

और एक ऐसे शख़्स को देखा जिस पर मैले और ग़लीज़[2] कपड़े थे, फ़रमाया कि यह शख़्स कोई ऐसी चीज़ नहीं पाता जिससे अपने कपड़ों को धो ले। (यानी साबुन वग़ैरा) (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सफ़ेद लिबास पहनने को पसन्द फ़रमाते थे और कहते थे कि हसीन तरीन लिबास सफ़ेद कपड़ों का है, चाहिये कि तुम में से ज़िन्दा लोग भी पहनें और अपने मुर्दों को भी सफ़ेद कफ़न दें।

(मदारिजुन्नुबुव्वा, शमाइले तिर्मिज़ी)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम काली कमली ओढ़ा करते थे। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक मर्तबा सुबह के वक़्त बाहर तशरीफ़ ले गए तो आपके बदन पर एक सियाह बालों की चादर थी। (शमाइले तिर्मिज़ी)

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़तह मक्का के दिन दाख़िल हुए तो सरे मुबारक पर सियाह अ़मामह[3] था। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पश्मीना यानी ऊँनी कपड़े भी पहने हैं और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अक्सर चादर लपेटा करते थे। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

चूँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तमाम लोगों में अत्यब[4] व अल्तफ़[5] थे। इसलिये इसकी अ़लामत आप सल्ल० के बदने मुबारक में ज़ाहिर थी कि आप सल्ल० के जिस्मे अतहर[6] से लगने की वजह से आप सल्ल० के कपड़े मैले न होते थे और न आप सल्ल० के लिबासे मुबारक में जूँ पड़ती थी और न कपड़ों पर और न आप सल्ल० के जिस्मे अतहर पर मक्खी बैठती

1-अमीरी, 2-गन्दे, 3-पगड़ी, 4-अत्यन्त पवित्र, 5-स्वच्छ मृदुल, 6-पवित्र शरीर।

थी।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने चमड़े के मोज़े पहने हैं और उन पर मसह फ़रमाया है। यह सहीह हदीस से साबित है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

लिबास में सबसे बेहतरीन तरीक़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का वह है जिसका आपने हुक्म दिया है या तर्ग़ीब[1] दी या ख़ुद उसपर मुसलसल अ़मल फ़रमाया।

आप सल्ल० का तरीक़ा (सुन्नत) यह है कि: कपास का बुना हुआ या सूफ़[2] का या कतान का बुना हुआ, कोई-सा भी हो और जो भी लिबास मुयस्सर आए पहन लिया जाए। आप सल्ल० ने यमनी चादरें, जुब्बा, क़बा, क़मीस, पाजामा, तहबन्द, चादर (सादह) मोज़ा, जूता हर चीज़ इस्तेमाल फ़रमाई है।

आप सल्ल० ने निशानज़दा सियाह कपड़ा (सियाह धारीदार) और सियाह कपड़ा भी पहना है और सादा कपड़ा भी पहना है। सियाह लिबास और सब्ज़[3] रेशम की आस्तीन वाला लिबादा भी पहना है। (ज़ादुल्‌मआ़द)

पाजामा

आपने एक पाजामा भी ख़रीदा है और ज़ाहिर है कि पहनने ही के लिये ख़रीदा होगा और अस्हाबे किराम आप सल्ल० की इजाज़त से पहना भी करते थे। (ज़ादुल्‌मआ़द)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से सहीह रिवायत में है कि उन्होंने एक पुराना कम्बल और मोटे सूत की एक चादर निकाली और फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन दोनों कपड़ों में रिहलत फ़रमाई[4]। (ज़ादुल्-मआ़द)

1-प्रेरणा, 2-ऊन, 3-हरा, 4-मृत्यु प्राप्त की।

क़मीस मुबारक

मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाह अ़लैहि ने दिम्याती से नक़ल किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का कुर्ता (क़मीस) सूत का बुना हुआ था, जो ज़्यादा लम्बा भी न था और उसकी आस्तीन भी ज़्यादा लम्बी न थी। बैजूरी ने लिखा है कि आप सल्ल० के पास सिर्फ़ एक ही कुर्ता था। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मर्वी है कि आपका मामूल सुबह के खाने में से शाम के लिये बचाकर रखने का न था, न शाम के खाने में से सुबह के लिये बचाने का था। और कोई कपड़ा, कुर्ता, चादर या लुंगी या जूता दो अ़दद न थे। मुनावी ने हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से नक़ल किया है कि आपका कुर्ता (क़मीस) ज़्यादा लम्बा न होता था, न उस की आस्तीन लम्बी होती थी। दूसरी हदीसों में हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से नक़ल किया है कि आपका कुर्ता टख़नों से ऊँचा होता था (अल्लामा शामी ने लिखा है निस्फ़[1] पिण्डली तक होना चाहिए।)

(शमाइले तिर्मिज़ी, ख़साइले नबवी)

हज़रत असमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के कुर्ते की आस्तीन पहुँचे तक होती थी।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़मीस (कुर्ता) की आस्तीन इतनी तंग रखते और न इतनी कुशादा बल्कि दरमियानी होती और आस्तीनें हाथ के गट्टे तक रखते और चोग़ा नीचे तक मगर उँगलियों से मुतजाविज़ न होता था[2]।

आँहज़रत सल्ल० के सफ़र का कुर्ता (क़मीस) वतन के कुर्ते से दामन और आस्तीन में किसी क़द्र छोटा होता था। (ज़ादुल्-मआ़द)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की क़मीस का गिरीबान सीने

1-आधी, 2-आगे नहीं बढ़ता था।

पर होता था।

कभी आप सल्ल० अपने कुर्ते का गिरीबान खोल दिया करते और सीनए अतहर साफ़ नज़र आता और इसी हालत में नमाज़ पढ़ लेते।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

जब आप सल्ल० क़मीस जेबे तन फ़रमाते तो सीधा हाथ सीधी आस्तीन में डालते और फिर बायाँ हाथ बायीं आस्तीन में। (ज़ादुल्-मआद)

अयास बिन जाफ़र अन्नहज़ी से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक रूमाल था जब आप वुज़ू करते तो उसी से पोंछ लेते। (इब्ने सअ़द)

अ़मामा[1]

अ़मामा का बाँधना सुन्नत, मुस्तहब है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़मामा बाँधने का हुक्म भी नक़ल किया गया है। चुनांचे इर्शाद है अ़मामा बांधा करो। इससे हिल्म[2] में बढ़ जाओगे। (फ़त्हुल्बारी)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से किसी ने पूछा क्या अ़मामा बाँधना सुन्नत है? उन्होंने फ़रमाया--हाँ सुन्नत है। (ऐनी)

मुस्लिम शरीफ़ और नसाई शरीफ़ में है कि अ़म्र बिन हुर्स रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि वह मन्ज़र गोया इस वक़्त मेरे सामने है जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मिम्बर पर ख़ुत्बा पढ़ रहे थे, सियाह अ़मामा आपके सरे मुबारक पर था और उसका शम्ला[3] दोनों शानों[4] के दरमियान था। (ख़साइले नबवी)

आप सल्ल० अ़मामा का शम्ला क़रीब एक बालिश्त छोड़ते। शम्ला की मिक़्दार एक हाथ से ज़्यादा भी साबित है। अ़मामा तक़रीबन सात गज़ होता था। (ख़साइले नबवी)

साफ़े के नीचे टोपी रखना भी सुन्नत है।

1-पगड़ी, 2-विनम्रता, 3-पगड़ी के पीछे का भाग, 4-कंधों।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की टोपी

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ेद टोपी ओढ़ा करते थे।

वतन में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ेद कपड़े की चिपटी हुई टोपी ओढ़ा करते थे। (अस्-सिराजुल् मुनीर)

आपने सूज़नी नुमा सिले हुए कपड़े की गाढ़ी टोपी भी ओढ़ी है।

(अस्-सिराजुल् मुनीर)

तहबन्द और पाजामा

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफ़ा लुंगी बाँधने की थी। पाजामा पहनना मुख़्तलफ़ फ़ीह[1] है। बाज़ अहादीस से इसका पहनना साबित है और अपने अस्हाब को पहने देखा है। एक हदीस में है कि आपसे पूछा गया कि आप पाजामा पहनते हैं तो फ़रमाया कि पहनता हूँ। मुझे बदन को ढाँकने का हुक्म है। इससे ज़्यादा पर्दा और चीज़ों में नहीं है।

(ख़साइले नबवी, ज़ादुल्-मआद)

आपका तहबन्द चार हाथ और एक बालिश्त लम्बा था और तीन हाथ एक बालिश्त चौड़ा था। (शमाइले तिर्मिज़ी)

बाज़ अहादीस में है कि चादर चार हाथ लम्बी और अढ़ाई हाथ चौड़ी और तहबन्द चार हाथ एक बालिश्त लम्बा और दो हाथ चौड़ा, तहबन्द हमेशा निस्फ़[2] पिण्डली से ऊँचा रखते, तहबन्द का अगला हिस्सा पिछले हिस्से से क़द्रे नीचा रहता। (ख़साइले नबवी)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान की लुंगी आधी पिण्डली तक होना चाहिये और उसके नीचे टख़नों तक कुछ मुज़ाइका[3] नहीं लेकिन टख़नों से नीचे जितने हिस्से पर लुंगी लटकेगी वह आग में जलेगा और जो शख़्स मुतकब्बिराना[4] कपड़े को लटकाएगा क़ियामत

1-विभिन्न राय, 2-आधी, 3-हर्ज, 4-अहंकार युक्त।

में हक़ तआला शानुहू उसकी तरफ़ नज़र नहीं करेंगे।

(अबू दाऊद, इब्ने माजा, ज़ादुल्मआद)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यमनी मुनक़्क़श[1] चादर कपड़ों में ज़्यादा पसन्दीदा थी।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

कभी आप चादर को इस तरह ओढ़ते कि चादर को सीधी बग़ल से निकाल कर उल्टे कांधे पर डाल लेते।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नया लिबास पहनते तो जुमा के दिन पहनते।

सफ़ेद लिबास तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को महबूब था ही मगर रंगीन लिबास में सब्ज़[2] रंग का लिबास तबीअते पाक को बहुत ज़्यादा पसन्द था। (ज़ादुल्मआद)

ख़ालिस व गहरा सुर्ख़ रंग तबीअते पाक को बहुत ज़्यादा नापसंद था।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नया लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते तो कपड़े का नाम लेकर अल्लाह तआला शानुहू का शुक्र इन अल्फ़ाज़ में अदा फ़रमाते:-

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا كَسَوْتَنِيْهِ اَسْئَلُكَ خَيْرَهٗ وَخَيْرَ مَا صُنِعَ لَهٗ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهٗ۔

अल्लाहुम्म लकल्हम्दु कमा कसौतनीहि अस्अलुक ख़ैरहू व ख़ैर मा सुनिअ लहू व अऊज़ु बिक मिन शर्रिही व शर्रि मा सुनिअ लहू।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये सब तारीफ़ है जैसा कि तूने यह कपड़ा मुझे पहनाया। मैं तुझसे इसकी भलाई का और उस चीज़ की भलाई के लिए सवाल करता हूँ जिसके लिए यह बनाया गया है और मैं तुझसे इसकी बुराई और उस चीज़ की बुराई से पनाह चाहता हूँ जिसके लिये यह बनाया गया है।

1-नक़्श किया हुआ, चित्रित, 2-हरा।

नीज़ यह दुआ फ़रमाते:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیَاتِیْ (زادالمعاد)

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औरती व अतजम्मलु बिही फ़ी हयाती" (ज़ादुल्मआद)

अनुवाद: सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने मुझे कपड़ा पहनाया जिससे मैं अपनी शर्म की चीज़ छिपाता हूँ और अपनी ज़िन्दगी में उसके ज़रिये ख़ूबसूरती हासिल करता हूँ।

और जो कपड़ा पुराना हो जाता उसे ख़ैरात कर देते। (ज़ादुल्मआद)

आप अक्सर औक़ात सूती लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते, कभी-कभी सूफ़[1] और कतान[2] का लिबास भी पहना है। (ज़ादुल्मआद)

आप सल्ल० चादर ओढ़ने में बहुत एहतिमाम फ़रमाते थे कि बदन ज़ाहिर न हो, ग़ालिबन[3] लेटने की हालत में यह मामूल था।

हज़रत अबू रमसा रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दो सब्ज़ चादरें ओढ़े हुए देखा है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

नालैन शरीफ़

(पवित्र जूते)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चप्पल-नुमा या खड़ाऊँ-नुमा जूता पहना करते थे। आपने सियाह चर्मी[4] मोज़े भी पहने और उन पर वुज़ू में मसह फ़रमाया है और आपके नालैन मुबारक में उँगलियों में पहनने के दो-दो तस्मे[5] थे।

(एक अंगूठे और सब्बाबा[6] के दरमियान में और एक वुस्ता[7] और उसके पास वाली के दरमियान में) और एक पुश्त पर का तस्मा भी दोहरा था।

आपका नालैन पाक एक बालिश्त दो उंगल लम्बा था और सात उंगल

1-ऊन, 2-अलसी, 3-संभवतः, 4-काले चमड़े, 5-फ़ीते, 6-तर्जनी, 7-मध्यमा।

चौड़ा था और दोनों तस्मों के दरमियान नीचे से दो उंगल का फ़ासिला था।

बालों से साफ़ किए हुए चमड़े के नालैन पहनते थे और वुज़ू करके उनमें पाँव भी रख लेते थे। रिवायत किया इसको हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने। और आप नालैन में नमाज़ भी पढ़ लेते थे (क्यों कि वह पाक होते थे और ऐसी बनावट के होते थे जिनमें उंगलियाँ ज़मीन से लग जाती थीं)

आपने बग़ैर बालों के चमड़े का जूता भी पहना है। (मिश्कात शरीफ़)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कोई शख़्स तुम में से जूता पहने तो दाहिनी तरफ़ से इब्तिदा[1] करना चाहिए और जब निकाले तो पहले बायें पैर से निकाले। दायाँ पाँव जूता में मुक़द्दम[2] होना चाहिए और निकालने में मुअख़्ख़र[3]। (शमाइले तिर्मिज़ी)

जूता कभी खड़े होकर पहने और कभी बैठ कर।

आप अपना जूता उठाते तो उल्टे हाथ के अंगूठे के पास वाली उंगली से उठाते। (शमाइले तिर्मिज़ी)

आदाते बरगुज़ीदा[4] ख़ुशबू के बारे में

आप ख़ुशबू की चीज़ और ख़ुशबू को बहुत पसन्द फ़रमाते थे और कसरत से इसका इस्तेमाल फ़रमाते और दूसरों को भी तर्ग़ीब[5] देते थे।

(नशरुत्तीब)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आख़िर शब में भी ख़ुशबू लगाया करते थे।

सोने से बेदार[6] होते तो क़ज़ाए हाजत से फ़राग़त के बाद वुज़ू करते और फिर लिबास पर ख़ुशबू लगाते।

ख़िदमते अक़्दस में अगर ख़ुशबू हदियतन पेश की जाती तो आप

1-प्रारम्भ, 2-प्रधान, पहले, 3-अन्तिम, 4-पसन्दीदा, चुना हुआ, 5-प्रेरणा, 6-जागृत।

उसको ज़रूर क़बूल फ़रमाते। ख़ुशबू की चीज़ वापस करने को नापसन्द फ़रमाते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

रैहान[1] की ख़ुशबू को बहुत पसन्द फ़रमाते। उसके रद करने को मना फ़रमाते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

मेहंदी के फूल को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बहुत महबूब रखते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुश्क[2] और ऊद[3] की ख़ुशबू को तमाम ख़ुशबुओं में ज़्यादा महबूब रखते। (ज़ादुल्-मआ़द)

आप सल्ल० ख़ुशबू सरे मुबारक पर भी लगाया करते थे।

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें न लौटाना चाहिये-- तकिया, तेल-ख़ुशबू और दूध।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मर्दाना ख़ुशबू वह है जिसकी ख़ुशबू फैलती हो और रंग ग़ैर महसूस[4] हो, जैसे-- गुलाब और केवड़ा और ज़नाना ख़ुशबू वह है जिसका रंग ग़ालिब हो और ख़ुशबू मग़लूब[5] हो, जैसे-- हिना, ज़ाफ़रान। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास सिक्का (इत्रदान इत्र का मुरक्कब) था, उसमें से ख़ुशबू इस्तेमाल फ़रमाते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

सुर्मा लगाना

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक सुर्मे दानी थी। जिससे आप सोते वक़्त हर आँख में तीन मर्तबा सुर्मा लगाते थे।

(इब्ने सअ़द, शमाइले तिर्मिज़ी)

1-सुगन्धित घास, 2-कस्तूरी, 3-एक सुगन्धित लकड़ी, अगर, 4-अनुभव रहित, गौण, 5-मन्द।

हज़रत इमरान बिन अबी अनस रज़ि० से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी दाहिनी आँख में तीन मर्तबा सुर्मा लगाते और बायीं में दो मर्तबा। (इब्ने सअ़द)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हें अस्मद[1] इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि यह नज़र को तेज़ करता है, बाल उगाता है और आँख रौशन करने वाली चीज़ों में से बेहतरीन है। (शमाइले तिर्मिज़ी, इब्ने सअ़द)

सर के मुए[2] मुबारक

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सरे मुबारक के बालों की लम्बाई कानों के दरमियान तक और दूसरी रिवायत में कानों तक और एक तीसरी रिवायत में कानों की लौ तक थी। इनके अ़लावा कंधों तक या कंधों के क़रीब तक की रिवायतें भी हैं (शमाइले तिर्मिज़ी) इन सब रिवायतों में बाहमी मुताबक़त[3] इस तरह है कि आप सल्ल० कभी तेल लगाते या कंघी करते तो बाल दराज़ हो जाते वर्ना उसके बरअ़क्स[4] रहते थे या फिर तरश्वाने से पहले और बाद में उनमें इख़्तिसार[5] व तूल[6] होता था।

मवाहिबे लदुन्निया और उसके मुवाफ़िक़[7] मज्मउल्-बहार में यह मज़्कूर है कि जब बालों के तरश्वाने में तवील वक़्फ़ा[8] हो जाता तो बाल लम्बे हो जाते और जब तरश्वाते तो छोटे हो जाते थे। इस इबारत से यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बालों को तरश्वाते थे मुण्डवाते न थे लेकिन हल्क़ (मुण्डवाने) के बारें में ख़ुद फ़रमाते हैं कि आप ने हज व उम्रा के दो मौक़ों के सिवा, बाल नहीं मुण्डवाए थे। वल्लाहु अअ़्लम[9] (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बालों में कस्रत से कंघी

1-एक प्रकार का सुर्मा, 2-बाल, 3-परस्पर समानता, 4-प्रतिकूल, विपरीत, 5-कम, छोटा, 6-दीर्घ, लम्बे, 7-समान, 8-लम्बा, अन्तराल, 9-अल्लाह जाने।

किया करते थे। आप जिस किसी के परागंदा[1], बिखरे हुए बाल देखते तो कराहत से फ़रमाते कि तुम में से किसी को यह नज़र आया है। यह इशारा शैतान की तरफ़ है। इसी तरह आप बहुत ज़्यादा बनने-सँवरने और लम्बे बालों से भी कराहत फ़रमाते, एतिदाल[2] और मयाना-रवी आपको बहुत पसन्द थी। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

आदाते पसन्दीदा

कंघा करने और तेल लगाने में

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सोते वक़्त मिस्वाक करते, वुज़ू करते और सर के बालों और दाढ़ी मुबारक में कंघा करते।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सफ़र में होते या हज़र[3] में हमेशा बवक़्ते ख़्वाब[4] सिरहाने सात चीज़ें रखी रहतीं– तेल की शीशी, कंघा, सुर्मा दानी, कैंची, मिस्वाक, आईना और एक लकड़ी की छोटी सी सीख़ जो सर के खुजलाने में काम आती थी। (ज़ादुल्-मआ़द)

आप सल्ल० पहले दाढ़ी मुबारक और सरे मुबारक में तेल लगाते और फिर कंघा करते।

हज़रत इब्ने जुरैह रज़ि० से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हाथी दाँत का कंघा था जिससे आप कंघा करते थे।

(इब्ने सअ़द)

हज़रत ख़ालिद बिन मादान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सफ़र में कंघा, आईना, तेल, मिस्वाक और सुर्मा ले जाते थे। (इब्ने सअ़द)

अनस बिन मालिक रज़ि० से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बकस्रत सर में तेल डालते और दाढ़ी पानी से साफ़ करते थे।

(इब्ने सअ़द)

1-तितर-बितर, मैले, 2-संतुलन, 3-घर में रहना, 4-सोते समय।

एतिदाले तज़ईन

(औसतन सजना-सँवरना)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम शुरू में अपने सर के बालों को बेमांग निकाले जमा कर लिया करते फिर बाद में मांग निकालने लगे थे।
(शमाइले तिर्मिज़ी, नश्रुत्तीब)

और एक रिवायत में है कि आप एक रोज़ नाग़ा करके कंधा किया करते थे (नश्रुत्तीब) और एक रिवायत में हज़रत हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान रज़ि० से मर्वी है कि गाहे-गाहे[1] कंघी करते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाल न बिल्कुल पेचीदा और न बिल्कुल खुले हुए बल्कि कुछ घुंघुरयालापन लिए हुए थे जो कानों की लौ तक पहुँचते थे।
(शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फरमाती हैं कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने वुज़ू करने में, कंघी करने में, जूता पहनने में दाहिनी तरफ़ को मुक़द्दम[2] रखते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पानी लगाकर भी दाढ़ी मुबारक में कंघा किया करते थे। आप जब आईने में चेहरा-ए-अन्वर को देखते तो यह अल्फ़ाज़ ज़बाने मुबारक पर होते :-

اَللّٰهُمَّ حَسَّنْتَ خَلْقِىْ فَحَسِّنْ خُلُقِىْ وَاَوْسِعْ عَلَىَّ فِىْ رِزْقِىْ ـ

(نشر الطیب، شمائل ترمذی)

अल्लाहुम्म हस्सन्त ख़ल्क़ी फ़हस्सिन् ख़ुलुक़ी व औसिअ़् अ़लय्य फ़ी रिज़्क़ी।

अनुवादः मेरे अल्लाह तूने जिस तरह मेरी तख़्लीक़[3] को बेहतर बनाया ऐसे ही मेरी ख़ुल्क़ यानी आ़दत को बेहतर बना और मेरे रिज़्क़ में वुस्अ़त दे।
(नश्रुत्तीब, शमाइले तिर्मिज़ी)

1-यदा-कदा, कभी-कभी, 2-प्रधान, 3-सृष्टि।

सर में तेल का इस्तेमाल

आप जब सर में तेल लगाने का क़स्द[1] फ़रमाते तो बायें हाथ की हथेली में तेल रखते और पहले अबूओं[2] में तेल लगाते, फिर आँखों पर, फिर सर में तेल लगाते।

इसी तरह जब दाढ़ी में तेल लगाते तो पहले आँखों पर लगाते फिर दाढ़ी में तेल लगाते। (ज़ादुल्-मआ़द)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने सरे मुबारक में अक्सर तेल का इस्तेमाल फ़रमाते थे और अपनी दाढ़ी में अक्सर कंघी किया करते थे और अपने सरे मुबारक पर एक कपड़ा डाल लिया करते थे जो तेल के कस्रते इस्तेमाल से ऐसा होता था जैसे तेली का कपड़ा हो। (शमाइले तिर्मिज़ी, ज़ादुल्-मआ़द)

दाढ़ी मुबारक में तेल लगाते तो दाढ़ी के उस हिस्से से शुरू फ़रमाते जो गर्दन से मिला हुआ है।

सर में तेल लगाते तो पहले पेशानी के रुख़ से शुरू फ़रमाते।

(ज़ादुल्-मआ़द)

रीशे[3] मुबारक

(पवित्र दाढ़ी)

सरदारे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रीशे मुबारक इतनी गहरी और गुन्जान थी कि आपके सीना मुबारक को भर देती थी।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

मदारिजुन्नुबुव्वा में मज़्कूर है कि किताब ''अश्शिफ़ा'' मुसन्निफ़ा क़ाज़ी अ़याज़[4] में कहा गया है कि आपकी रीशे मुबारक के बाल इस कस्रत से थे जिससे आपका सीना मुबारक भर गया था।

1-इरादा, 2-भौं, 3-दाढ़ी, 4-क़ाज़ी अ़याज़ की रचना।

मज़हबे हनफ़ी में दाढ़ी की हद एक क़ब्ज़ा (मुट्ठी) है यानी इससे कम न हो। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

मूए बग़ल
(काँख के बाल)

बाज़ अहादीस में नत्फ़ुल इब्त[1] भी आया है यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बग़ल के बाल उखेड़ डाला करते थे। वल्लाहु अअ़्लम (मदारिजुन्नुबुव्वा)

मूए ज़ेरे नाफ़
(नाभि के नीचे के बाल)

मूए ज़ेरे नाफ़ साफ़ करने के बारे में बाज़ अहादीस में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनको मूण्डते थे और बाज़ में आया है कि नौरा[2] इस्तेमाल फ़रमाते थे। वल्लाहु अअ़्लम (मदारिजुन्नुबुव्वा)

नाख़ून कटवाना

हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल बाज़ रिवायात के मुताबिक़ जुमा के दिन और बाज़ रिवायात में जुमेरात के दिन नाख़ूनहा-ए-मुबारक तरशवाने का था। हाथ के नाख़ून कटवाने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तर्तीबे ज़ैल[3] मल्हूज़[4] फ़रमाते थे:-

<u>सीधा हाथ</u>: शहादत की उंगली, बीच की उंगली, उसके बराबर वाली उंगली फिर छंगुलिया।

<u>उल्टा हाथ</u>: छंगुलिया, उसके बराबर वाली उंगली, बीच की उंगली, उसके बराबर वाली उंगली, अंगूठा, फिर सीधे हाथ का अंगूठा।

1-बग़ल के बाल उखाड़ना, 2-लोम नाशक, 3-निम्नांकित क्रम, 4-ध्यान रखना।

पाँव के नाख़ून काटने में हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हस्बे ज़ैल[1] तर्तीब को मल्हूज़ रखते थे:-

<u>सीधा पाँव:</u> छंगुलिया से शुरू करते और बिल तर्तीब अंगूठे तक ख़त्म करते।

<u>उल्टा पाँव:</u> अंगूठे से शुरू करते और बिल तर्तीब छंगुलिया तक ख़त्म करते। आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पन्द्रहवें दिन नाख़ून काटते।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

सर के बालों के मुतअ़ल्लिक़

सर मुंडाने में आपकी सुन्नत यह है कि या तो सारा सर मुंडवाते या सारे बाल रहने देते और ऐसा न करते कि कुछ हिस्सा मुंडवाते और कुछ हिस्सा रहने देते। (ज़ादुल्-मआ़द)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मूंछें तराश्ते थे। (ज़ादुल् मआ़द)

मुतअ़द्दद[2] अहादीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शादे गिरामी मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से वारिद हुआ है, जिसमें दाढ़ी के बढ़ाने का हुक्म है और मूंछों के काटने में मुबालग़ा[3] करने की ताकीद है- अक्सर उ़लमा की तह्क़ीक़ यह है कि मूंछों का कतरना सुन्नत है लेकिन कतरवाने में ऐसा मुबालग़ा हो कि मूंडने के क़रीब हो जाए। (ख़साइले नबवी)

सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि चालीस दिन-रात न गुज़रने पायें कि तुम मूंछें कटवाओ, नाख़ून कटवाओ। सहीहैन[4] में हज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुश्रिकों की मुख़ालफ़त करो, दाढ़ी बढ़ाओ और मूँछें तरश्वाओ। (ज़ादुल्-मआ़द)

1-निम्नलिखित, 2-अनेक, 3-हद से बढ़ना, 4-बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़।

जो शख़्स बाल रखे उसको चाहिये कि उनको धो लिया करे और साफ़ रखे। रोज़ाना सर और दाढ़ी में कंघा करने की निस्बत बेहतर यह है कि एक-आध दिन बीच में नाग़ा कर लिया करे।

(अबू दाऊद, ज़ादुल्-मआद, मिश्कात)

दाढ़ी के सफ़ेद बालों को मेंहदी से ख़िज़ाब करने की इजाज़त है, अलबत्ता सियाह ख़िज़ाब की मुमानअ़त है कि मकरूह है।

(बहिश्ती गौहर, ख़साइले नबवी)

बाल, दाढ़ी और मूँछों के मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतें

सुन्नत- (एक मुश्त हो जाने के बाद) दाढ़ी के दायें-बायें जानिब से बढ़े हुए बाल लेना ताकि ख़ूबसूरत हो जाए। दाढ़ी, ठोढ़ी के नीचे एक मुट्ठी से हर्गिज़ कम न होना चाहिये।

दाढ़ी मुंडवाना या कटवाना नाजाइज़ है। (ख़साइले नबवी)

मूँछों को कतरवाना और कतरवाने में मुबालग़ा करना चाहिये।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

हद्दे शर्अ़ में रहकर ख़त बनवाना, सर और दाढ़ी के बालों को दुरुस्त करके तेल डालना चाहिये। (मोअत्ता इमाम मालिक रह०)

सर पर या तो सारे सर के बाल रखे या बिल्कुल मुंडवा दे। सिर्फ़ एक हिस्से पर बाल रखना हराम है।

सर पर सुन्नत के मुताबिक़ पट्ठे रखना चाहिये। (मिश्कात शरीफ़)

ज़ेरे नाफ़, बग़ल, नाक के बाल लेना चाहिये। (बुख़ारी, मुस्लिम)

नोट :- चालीस रोज़ गुज़र जायें और सफ़ाई न करे तो गुनहगार होता है। दाढ़ी को मेंहदी का ख़िज़ाब करना या सफ़ेद रहने देना दोनों बातें जाइज़ हैं, औरतों को नाख़ूनों पर मेंहदी लगाना चाहिए। (अबू दाऊद)

नोट :- लेकिन नेल पॉलिश अगर लगाए तो वुज़ू व ग़ुस्ल के लिए उसको साफ़ कर ले वर्ना वुज़ू व ग़ुस्ल न होगा। (बिहिश्ती ज़ेवर)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बाज़ आदाते मुबारका

आपकी नशिस्त[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आप चार ज़ानू भी बैठते थे और बाज़ वक़्त उकड़ूँ बग़ल में हाथ देकर बैठ जाते और उनका कहना है कि मैंने आपको बायीं करवट पर एक तक्ये का सहारा लगाए हुए बैठे देखा है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत हनज़ला बिन हुज़ैम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैं नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में आया तो आपको चार ज़ानू बैठे हुए देखा, एक पाँव दूसरे पाँव पर रखे हुए (दायाँ पाँव बायें पर) (अलअदबुल मुफ़्रिद)

अन्दाज़े रफ़्तार[2]

(रिवायात हसन इब्ने अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चलने के लिये क़दम उठाते तो क़ुव्वत से पाँव उखड़ता था और क़दम इस तरह रखते कि आगे झुक पड़ते और तवाज़ो के साथ क़दम बढ़ा कर चलते। चलने में ऐसा मालूम होता गोया किसी बुलन्दी से पस्ती में उतर रहे हैं। जब किसी करवट की तरफ़ (यानी दायें-बायें) या किसी चीज़ को देखना चाहते तो पूरे फिरकर देखते (यानी कनखियों से देखने की आदत न थी), निगाह नीची रखते, आसमान की तरफ़ निगाह रखने की बनिस्बत ज़मीन की तरफ़ आपकी निगाह ज़्यादा रहती, उमूमन आदत आपकी गोश-ए-चश्म[3] से देखने की थी (मतलब यह कि ग़ायते हया[4] से पूरा सर उठाकर निगाह फेर कर न देखते)। अपने अस्हाब को चलने में आगे कर देते, जिससे मिलते तो पहले सलाम फ़रमाते।

(नश्रुत्तीब)

1-बैठक, गोष्ठी, 2-चलने का ढंग, 3-आँख के कोने से, 4-लज्जा की पराकाष्ठा।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम जब बुलन्दी पर चढ़ते तो तक्बीर[1] कहते और जब नीचे वादियों में उतरते तो तस्बीह[2] कहते। (ज़ादुल्-मआद)

तबस्सुम[3]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हंसना सिर्फ़ तबस्सुम होता था।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

बल्कि आप महज़ तबस्सुम ही फ़रमाते, किसी हंसी की बात पर आप सिर्फ़ मुस्कुरा ही देते। (ज़ादुल्मआद)

अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब भी हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे देखते तो तबस्सुम फ़रमाते (यानी ख़न्दा पेशानी से मुस्कुराते हुए मिलते थे)। (शमाइले तिर्मिज़ी)

आप सल्ल० का गिर्या[4]

हंसने की तरह आप का रोना भी (ऐसा ही था कि जिसमें आवाज़ पैदा न होती, गिर्या के वक़्त इतना ज़रूर होता कि आपकी आँखें डबडबा आतीं और आँसू बह जाते और सीने से रोने की हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई देती, कभी तो मय्यित पर रहमत के बाइस[5] रो देते, कभी उम्मत पर नर्मी और ख़तरात के बाइस, कभी अल्लाह तआला की ख़शिय्यत[6] की वजह से और कभी कलामुल्लाह (यानी क़ुरआन) सुनते-सुनते रो पड़ते। यह आख़िरी रोना महब्बत व इश्तियाक़[7] और अल्लाह तआला शानुहू के जलाल व ख़शिय्यत[8] की वजह से होता था। (ज़ादुल्-मआद)

1-अल्लाहु अक्बर 2-सुब्हानल्लाह, 3-मुस्कुराहट, 4-रुदन, 5-कारण, 6-भय, 7-रुचि, 8-भय, डर।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मिज़ाहे[1] मुबारक

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मजालिस में गो वक़ार[2], संजीदगी और मतानत[3] की फ़ज़ा हर वक़्त क़ाइम रहती, यहाँ तक कि ख़ुद सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अज्मईन फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सोहबते बाबरकत में ऐसे बाअदब व बातम्कीन[4] बैठते कि गोया हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हुए हैं और यह अदना[5] सी हरकत से उड़ जायेंगे। मगर फिर भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुशतबई की झलक इन मुतबर्रक[6] सोहबतों को ख़ुशगवार बनाती रहती, क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अगर एक तरफ़ नबीए मुर्सल[7] की हैसियत से एहतिरामे रिसालत[8] को मल्हूज़[9] रखते हुए वाज़[10] व तल्क़ीन[11] में मस्रूफ़ रहते तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दूसरी तरफ़ सहाबा के साथ एक बेतकल्लुफ़ दोस्त और एक ख़ुश मिज़ाज साथी की हैसियत से भी मेल-जोल रखते। अगर ज़्यादा औक़ात में आपकी मज्लिस एक दीनी दर्सगाह[12] और तालीमी इदारा[13] बनी रहती तो कुछ देर के लिये ख़ुश तब्अ़[14], मुहज़्ज़ब[15] दोस्तों की बैठक भी बन जाती जिसमें ज़राफ़त[16] की बातें भी होतीं, घर-बार के रोज़ाना के क़िस्से भी बयान होते, ग़र्ज़ बेतकल्लुफ़ी से आप सहाबा से और सहाबा आपस से गुफ़्तगू करते। अब देखना यह है कि आपकी ज़राफ़त किस तरह की थी। इस तश्रीह[17] की यूँ ज़रूरत है कि हमारे बहुत से कामों में हमारे ग़लत अ़मल से हमारे नज़रियात बदल चुके हैं। तख़य्युल[18] कहाँ से कहाँ चला गया है, हर मुआ़मला में एतिदाल[19] खो बैठे हैं। अगर हम संजीदा और मतीन[20] बनते हैं तो इतने कि

1-हँसी, 2-गम्भीरता, 3-धीरता, 4-गम्भीरता से, 5-छोटी, 6-पवित्र, 7-भेजे हुए नबी, 8-पैग़म्बरी के महत्तव के संदेश का सम्मान, 9-ध्यान, 10-धर्मोपदेश, 11-नसीहत, 12-धार्मिक पाठशाला, 13-शैक्षिक संस्था, 14-सुशील, 15-शिष्ट, 16-मनोरंजन, 17-व्याख्या, 18-ध्यान, विचार, 19-संतुलन, 20-धीर।

ख़ुश्कतबई और ज़राफ़त हमसे कोसों दूर रहती है और अगर ख़ुश्कतबअ़ बनते हैं तो इस कद्र की तहज़ीब हमसे कोसों दूर रहती है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अ़मल से हमें एक ख़ास मे'यार अपने सामने रखना है। आपकी ज़राफ़त की तारीफ़ आप ही की ज़बाने मुबारक से सुन लीजिए-- सहाबा किराम रज़ि० ने आप सल्ल० से तअ़ज्जुब से पूछा कि आप भी मज़ाक़ करते हैं? तो आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि ''हाँ, बेशक मेरा मिज़ाह सरासर सच्चाई और हक़ है। (शमाइले नबवी)

इसके मुक़ाबले में हमारा आजकल का मज़ाक़ यह है जिसमें ग़ीबत[1], बोह्तान[2], तानो-तश्नीअ़[3] और बेजा मुबालग़ों[4] से पूरा-पूरा काम लिया गया हो।

अब मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़राफ़त के चन्द वाक़िआ़त क़लमबन्द[5] करता हूँ कि जिनके तहत हम ज़राफ़त का सहीह तसव्वुर क़ाइम कर सकें। इसी तरह उसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बच्चों के साथ महब्बत में भी मुझे सिर्फ़ वाक़िआ़त ही बयान करना है जिनसे हमें यह अन्दाज़ा हो सकेगा कि आपका बच्चों के साथ महब्बत का क्या तरीक़ा था।

एक शख़्स ने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होकर सवारी के लिए दरख़्वास्त की, तो आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि तुमको सवारी के लिए ऊँटनी का बच्चा दूँगा। वह शख़्स हैरान हुआ क्योंकि ऊँटनी का बच्चा सवारी का काम कब दे सकता है? अ़र्ज़ किया-- या रसूलल्लाह! मैं ऊँटनी के बच्चे को क्या करूँगा?

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई ऊँट भी ऐसा होता है जो ऊँटनी का बच्चा न हो। (शमाइले नबवी)

एक मर्तबा एक बुढ़िया ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया-- या रसूलल्लाह! मेरे लिए दुआ फ़रमायें कि अल्लाह तआ़ला शानुहू

1-चुग़ुलता, 2-आरोप, 3-व्यंग और कटाक्ष, 4-किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना, 5-लिपिबद्ध।

मुझको जन्नत नसीब करे। आपने इर्शाद फ़रमाया कि बूढ़ी औरतें जन्नत में नहीं जायेंगी। यह फ़रमा कर आप नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गए और बुढ़िया ने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अल्फ़ाज़ सुनते ही ज़ारो-क़तार रोना शुरू कर दिया। आप नमाज़ से फ़ारिग़ होकर तशरीफ़ लाए तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया-- या रसूलल्लाह! जब से आपने फ़रमाया है कि बूढ़ी औरतें जन्नत में नहीं जायेंगी, यह बुढ़िया रो रही है। आपने फ़रमाया उससे कह दो कि बूढ़ी औरतें जन्नत में जायेंगी मगर जवान होकर। (शमाइले तिर्मिज़ी)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक देहाती ज़ाहिर नामी दोस्त थे जो अक्सर आपको हदिया[1] भेजा करते थे। एक रोज़ बाज़ार में वह अपनी कोई चीज़ बेच रहे थे, इत्तिफ़ाक़ से हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उधर से गुज़रे उनको देखा तो बतौर ख़ुशतबई चुपके से पीछे से आकर उनको गोद में उठा लिया और बतौर ज़राफ़त[2] आवाज़ लगाई कि इस ग़ुलाम को कौन ख़रीदता है, ज़ाहिर रज़ि० ने कहा कि मुझे छोड़ दो, कौन है? मुड़ कर देखा तो सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे। हज़रत ज़ाहिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि ''या रसूलल्लाह! मुझ जैसे ग़ुलाम को जो ख़रीदेगा नुक़सान उठाएगा''। (शमाइले तिर्मिज़ी)

बच्चों से ख़ुशतबई[3]

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चों पर बहुत शफ़्क़त[4] फ़रमाते, उनसे महब्बत करते, उनके सर पर हाथ फेरते, उनको प्यार करते और उनके हक़ में दुआए ख़ैर फ़रमाते। बच्चे क़रीब आते तो उनको गोद में लेते, बड़ी महब्बत से उनको खिलाते, कभी बच्चे के सामने अपनी ज़बाने मुबारक निकालते, बच्चा ख़ुश होता और बहलता, कभी लेटे होते तो अपने क़दमों के अन्दर के तलवों पर बच्चे को बैठा लेते और कभी

1-उपहार, 2-मनोरंजन के रूप में, 3-हास्यप्रियता, 4-कृपा।

सीना-ए-अतहर पर बच्चे को बैठा लेते।

अगर कई बच्चे एक जगह जमा होते तो आप सल्ल० उनको एक क़तार में खड़ा कर देते और आप सल्ल० अपने दोनों बाज़ुओं को फैला कर बैठ जाते और फ़रमाते--भई! तुम सब दौड़ कर हमारे पास आओ, जो बच्चा सबसे पहले हमको छू लेगा हम उसको यह और यह देंगे। बच्चे भाग कर आपके पास आते, कोई आपके पेट पर गिरता कोई सीना-ए-अतहर पर, आप उनको सीना-ए-मुबारक से लगाते और प्यार करते। (ख़साइले नबवी)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बच्चों के क़रीब से होकर गुज़रते तो उनको ख़ुद "अस्सलामु अलैकुम" फ़रमाते और उनके सर पर हाथ रखते और छोटे बच्चों को गोद में उठा लेते।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी की माँ को देखते कि अपने बच्चे से प्यार कर रही है तो बहुत मुतअस्सिर होते। कभी माओं की बच्चों से महब्बत का ज़िक्र आता तो फ़रमाते -- अल्लाह तआला शानुहू जिस शख़्स को औलाद दे और वह उससे महब्बत करे और उसका हक़ बजा लाए तो वह दोज़ख़ की आग से महफ़ूज़ रहेगा।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र से तशरीफ़ लाते तो रास्ते में जो बच्चे मिलते उन्हें निहायत शफ़्क़त से अपने आगे या पीछे सवारी पर बैठा लेते थे।

बच्चे भी आपसे बड़ी महब्बत करते थे। जहाँ आपको देखा लपक कर आपके पास पहुँच गए। आप एक-एक को गोद में उठाते, प्यार करते और कोई खाने की चीज़ इनायत फ़रमाते, कभी खजूरें, कभी ताज़ा फल और कभी कोई और चीज़।

नमाज़ के वक़्त मुक़्तदी औरतों में से किसी का बच्चा रोता तो आप नमाज़ मुख़्तसर कर देते ताकि बच्चे की माँ बेचैन न हो। (ख़साइले नबवी)

अश्आर[1] से दिल्चस्पी

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० कहते हैं कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में सौ मज्लिसों से ज़्यादा बैठा हूँ जिनमें सहाबा रज़ि० अश्आ़र पढ़ते थे और जाहिलिय्यत के ज़माने के क़िस्से नक़ल फ़रमाते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनको रोकते न थे; ख़ामोशी से सुनते थे, बल्कि कभी-कभी उनके साथ हंसने में शिर्कत फ़रमाते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत सरीद कहते हैं कि एक मर्तबा मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ सवारी पर आपके पीछे बैठा था। उस वक़्त मैंने आपको उमय्या के सौ शे'र सुनाए, हर शे'र पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाते थे कि और सुनाओ। आख़िर में आपने फ़रमाया कि इसका इस्लाम लाना बहुत क़रीब था। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हस्सान बिन साबित रज़ि० के लिये मस्जिद में मिम्बर[2] रखा करते थे ताकि उस पर खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से मुफ़ाख़रा[3] करें यानी आपकी तारीफ़ में फ़ख़्रिया[4] अश्आ़र पढ़ें या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से मुदाफ़अ़त[5] करें यानी कुफ़्फ़ार के इल्ज़ामात[6] का जवाब दें और आप यह भी दुआ़ फ़रमाते थे कि हक़ तआ़ला जल्ल शानुहू रूहुल्-क़ुदुस (जिब्रील अ़लैहिस्सलाम) से हस्सान रज़ि० की इम्दाद[7] फ़रमाए, जब तक वह दीन की इम्दाद करते हैं। (शमाइले तिर्मिज़ी)

ख़्वाब पूछने का मामूल

आप सल्ल० की आ़दते तय्यिबा थी कि सुबह की नमाज़ के बाद चार ज़ानू बैठ जाते और लोगों से उनके ख़्वाब पूछते, जिसने ख़्वाब देखा होता वह

1-काव्य, 2-वक्ता के ख़ुत्बा पढ़ने के लिये ऊँची जगह, 3-प्रशस्ति, 4-गर्व के तौर पर, 5-बचाव, निवारण, 6-आरोप, 7-सहायता करे।

कहता। ख़्वाब सुनने से पहले ये अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़रमाते:-

خَيْرٌ تَلْقَاهُ وَشَرٌّ تَوَقَّاهُ خَيْرٌ لَّنَا وَشَرٌّ لِّأَعْدَائِنَا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

ख़ैरुन् तलक़्क़ाहु व शर्रुन् तवक़्क़ाहु ख़ैरुल्लना व शर्रुल् लि अअ्दाइना वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन।

अनुवाद: ख़ैर[1] का सामना करो और शर्र[2] से बचो और (यह ख़्वाब) हमारे वास्ते बेहतर हो और हमारे दुश्मनों के लिये शर्र हो और तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला शानुहू के लिये हैं। बाद में आपने यह मामूल तर्क[3] फ़रमा दिया था। (ज़ादुल्-मआद, शमाइले तिर्मिज़ी)

सीधे और उल्टे हाथ से काम लेना

अलावा ऐसे कामों के जिनमें ग़िलाज़त[4] की सफ़ाई को दख़ल होता और हाथ में नजासत[5] लगने का ख़ौफ़ होता, मसलन नाक साफ़ करना, आब-दस्त लेना[6], जूता उठाना वग़ैरा, बाक़ी तमाम काम दाहिने हाथ से अंजाम देना पसन्द फ़रमाते। इसी तरह जब आप किसी को कोई चीज़ देते तो सीधे हाथ से देते और अगर कोई चीज़ लेते तो सीधे हाथ से लेते।

(ज़ादुल्-मआद, शमाइले तिर्मिज़ी)

पैग़ाम पर सलाम का जवाब

जब किसी का सलाम आपको पहुँचता तो सलाम पहुँचाने वाले के साथ सलाम लाने वाले को भी सलाम का जवाब देते और इस तरह फ़रमाते:-

عَلَيْكَ وَعَلٰى فُلَانٍ سَلَامٌ۔

अलैक व अला फ़ुलानिन् सलाम (शमाइले तिर्मिज़ी)

1-अच्छाई, 2-बुराई, 3-छोड़ना, 4-गन्दगी, 5-नापाकी, 6-मल-मूत्र धोना,

ख़त लिखवाने का अंदाज़

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते तय्यिबा ख़त लिखवाने के मुतअ़ल्लिक़ यह थी कि "बिस्मिल्लाह" के बाद मुर्सिल[1] का नाम लिखवाते और फिर मुर्सलइलैह[2] का नाम लिखवाते, उसके बाद ख़त का मज़्मून लिखवाते।

तफ़रीह[3]

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाग़ात की तफ़रीह को पसन्द फ़रमाते और कभी-कभी तफ़रीह के लिये बाग़ात में तशरीफ़ ले जाते।

तैरने का शौक़

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी-कभी तैरने का भी शौक़ फ़रमाते। (शमाइले नबवी)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामूलाते सफ़र

(आँहज़रत सल्ल० की यात्रा के नित्य नियम)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र के लिये ख़ुद रवाना होते[4] या किसी और को रवाना फ़रमाते तो जुमेरात[5] के दिन को रवानगी के लिये मुनासिब ख़याल फ़रमाते।

आप सल्ल० सफ़र में सवारी को ज़्यादा तर तेज़ रफ़्तारी से चलाना पसन्द फ़रमाते और जब देखते कि रास्ता लम्बा है तो रफ़्तार और तेज़ कर देते।

1-प्रेषक, भेजने वाला, 2-जिसको पत्र भेजा जाए, 3-मनोरंजन, 4-प्रस्थान करते, 5-बृहस्पतिवार।

सफ़र में कहीं पड़ाव करके रवाना होते तो आदते तय्यिबा थी कि सुबह के वक़्त कूच फ़रमाते[1]। सफ़र में कितनी ही कम मुद्दत के लिये ठैरते जब तक नमाज़े दोगाना[2] अदा न फ़रमाते, वहाँ से रवाना नहीं होते।

जब कोई मुसाफ़िर सफ़र से वापस आता और ख़िदमते अक़्दस में हाज़िरी देता तो उससे मुआनक़ा[3] करते और उसकी पेशानी पर बोसा देते। (ज़ादुल्-मआद)

सफ़र में आप अपने हमराहियों के साथ होते और कोई काम सबको करना होता (मसलन खाना वग़ैरा पकाना) तो आप काम-काज में ज़रूर हिस्सा लेते। मसलन एक पड़ाव पर सब अस्हाब ने खाना पकाने का इरादा किया, हर एक ने एक-एक काम अपने ज़िम्मे लिया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लकड़ियाँ चुन लाने का काम अपने ज़िम्मे लिया।

(ज़ादुल्-मआद)

सफ़र से वापसी पर आप सीधे मकान के अन्दर तशरीफ़ नहीं ले जाते, बल्कि मस्जिद में जाकर नमाज़े दोगाना अदा फ़रमाते और फिर घर में तशरीफ़ ले जाते। सफ़र से तशरीफ़ लाते वक़्त शहर में आकर बच्चे रास्ते में मिलते तो उनको आप अपनी सवारी पर बैठा लेते, छोटे बच्चे को अपने आगे बैठाते और बड़े को पीछे। (ज़ादुल्-मआद)

आप सल्ल० जब सफ़र में जाते या जिहाद के लिये तो असहाब में से किसी एक सहाबी को अपने हमराह सवारी पर बैठाते। (ज़ादुल्-मआद)

जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र के लिये रवाना होते और सवारी पर अच्छी तरह बैठ जाते तो तीन मर्तबा अल्लाहु अक्बर कहते और फिर ये अल्फ़ाज़ दुआ के ज़बाने मुबारक पर होते:-

سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ○ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ○

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِیْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰی وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰی ط اَللّٰهُمَّ

1-प्रस्थान करते, 2-झुकने की नमाज़ की दो रकअत, 3-गले मिलना।

هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَ الْأَرْضِ ط اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْأَهْلِ وَالْمَالِ ط (زادالمعاد)

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़रतना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़रिनीन, व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून ० अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक फ़ी सफ़रिना हाज़ल् बिर्र वत्तक़्वा व मिनल् अ़मलि मा तर्ज़ा। अल्लाहुम्म हव्विन् अ़लैना सफ़रना हाज़ा वत्विअ़न्ना बुअ़्दल् अर्ज़ि। अल्लाहुम्म अन्तस्साहिबु फ़िस्सफ़रि वल्ख़लीफ़तु फ़िल् अहलि वल्मालि (ज़ादुल्-मआ़द)

अनुवादः अल्लाह पाक है, जिसने इसको हमारे क़ब्ज़े में दे दिया और उसकी क़ुदरत के बग़ैर हम इसे क़ब्ज़े में करने वाले न थे और बिला शुब्हा[1] हमको अपने रब की तरफ़ जाना है। ऐ अल्लाह! हम तुझसे इस सफ़र में नेकी और परहेज़गारी का सवाल करते हैं और उन आमाल का सवाल करते हैं जिससे आप राज़ी हों। ऐ अल्लाह! हमारे इस सफ़र को हम पर आसान फ़रमा और ज़मीन की मसाफ़त[2] को हमपर आसान फ़रमा। ऐ अल्लाह! आप ही रफ़ीक़[3] हैं सफ़र में और ख़बरगीरी[4] करने वाले घर-बार और माल में।

और जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो यही दुआ़ पढ़ते मगर इसके साथ ये अल्फ़ाज़ और बढ़ा देतेः-

آيِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ ـ

आइबून ताइबून आ़बिदून लिरब्बिना हामिदून।

अनुवादः हम सफ़र से आने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करन वाले हैं, अपने परवरदिगार की हम्द[5] करने वाले हैं। (ज़ादुल्-मआ़द)

जब किसी बुलन्दी पर सवारी चढ़ती तो तीन मर्तबा अल्लाहु अक्बर कहते और यह फ़रमातेः-

اَللّٰهُمَّ لَكَ الشَّرَفُ عَلٰى كُلِّ شَرَفٍ وَّلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ حَالٍ ـ

1-निस्संदेह, 2-दूरी, 3-साथी, 4-देख-रेख और हिफ़ाज़त करने वाला, 5-प्रशंसा।

अल्लाहुम्म लकश्शरफ़ु अ़ला कुल्लि शर्दफ़िंव व लकल् हम्दु अ़ला कुल्लि हालिन्।

अनुवादः ऐ अल्लाह! इस बुलन्दी पर शरफ़[1] आप ही के लिये है और आपके लिये हर हाल में तारीफ़ है। (ज़ादुल्-मआ़द)

जब किसी पस्ती में सवारी उतरती तो तीन मर्तबा फ़रमाते "सुब्हानल्लाह", रिकाब में पाँव रखते वक़्त फ़रमाते "बिस्मिल्लाह"।

जब शहर या गाँव में आपके क़ियाम[2] का इरादा होता और आप उसको दूर से देख लेते, तो ज़बाने मुबारक पर ये अल्फ़ाज़ होतेः-

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا

"अल्लाहुम्म बारिक् लना फ़ीहा" (तीन मर्तबा कहते) और जब उसमें दाख़िल होने लगते तो फ़रमातेः-

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَحَبِّبْنَا اِلٰى اَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِىْ اَهْلِهَا اِلَيْنَا۔

"अल्लाहुम्मर्ज़ुक़ना जनाहा व हब्बिब्ना इला अहलिहा व हब्बिब् सालिही अहलिहा इलैना"।

अनुवादः ऐ अल्लाह! नसीब कीजिये हमें समरात[3] इसके और हमें अज़ीज़ कर दीजिये अहले शहर के नज़्दीक और हमें अहले शहर के नेक लोगों की महब्बत दीजिये। (ज़ादुल्-मआ़द)

जब आप सल्ल० किसी शख़्स को सफ़र के लिये रुख़्सत फ़रमाते तो ये अल्फ़ाज़ ज़बाने मुबारक पर होतेः-

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ اَعْمَالِكَ۔

अस्तौदिउ़ल्लाह दी-नक व अमानतक व ख़वातीम अअ़्मालिक।

अनुवादः अल्लाह के सपुर्द करता हूँ मैं तेरे दीन को और तेरी क़ाबिले हिफ़ाज़त चीज़ों को और तेरे आमाल के अंजामों को। (ज़ादुल्-मआ़द)

1-श्रेष्ठता, 2-ठहरना, अस्थायी निवास, 3-फलों, परिणाम।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब किसी सफ़र से वापस होते और अपने घरवालों में तशरीफ़ ले जाते तो फ़रमाते:-

تَوْبًا تَوْبًا لِرَبِّنَا اَوْبًا لَا يُغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْبًا۔

तौबन् तौबल्-लिरब्बिना औबल्-लायुग़ादिरु अ़लैना हौबन् ।

अनुवाद: बहुत-बहुत तौबा करते हैं हम, अपने रब की तरफ़ रुजूअ़[1] करते हैं हम, कि न छोड़े हममें कोई गुनाह। (ज़ादुल्-मआ़द)

जब आप सल्ल० सफ़र करते तो इब्तिदाई दिन में निकलते और अल्लाह तआ़ला शानुहू से दुआ़ फ़रमाते कि आपकी उम्मत को सवेरे-सवेरे सफ़र को जाने में बरकत दे। अगर मुसाफ़िर तीन होते तो उनको हुक्म फ़रमाते कि एक को अमीर बना लें। (ज़ादुल्मआ़द)

सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ हिदायत
(यात्रा से सम्बन्धित निर्देश)

बेहतर और मस्नून यह है कि सफ़र में कम अज़कम दो आदमी जायें तन्हा आदमी सफ़र न करे अलबत्ता ज़रूरत और मज्बूरी में कोई हर्ज नहीं, (मुहद्दिसीन और फ़ुक़हा का भी यही इर्शाद है) जुमेरात के दिन सफ़र में जाना मस्नून (सुन्नत) है। सम्बा[2] के दिन भी मुस्तहब है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है जब सफ़र की ज़रूरत पूरी हो जाए तो अपने घर लौट आए, बाहर सफ़र में बिला ज़रूरत ठहरना अच्छा नहीं।

दूर दराज़ के सफ़र से बहुत दिनों के बाद लौटे तो सुन्नत यह है कि अचानक घर में दाख़िल न हो, बल्कि अपने आने की ख़बर करे और कुछ देर बाद घर में दाख़िल हो। अलबत्ता अहलेख़ाना[3] तुम्हारे आने के वक़्त से पहले से बाख़बर[4] हों और उनको तुम्हारा इन्तिज़ार भी हो तो उस वक़्त घर में

1-प्रवृत्त होना, 2-शनिवार 3-घरवाले, 4-जानकार, सचेत।

दाख़िल होने में कोई हर्ज नहीं।

इन मस्नून तरीक़ों पर अ़मल करने से दीन व दुनिया की भलाई हासिल होगी।

सफ़र से लौट कर आने वाले के लिये यह मस्नून है कि घर में दाख़िल होने से पहले मस्जिद में जाकर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े। (ज़ादुल्-मआ़द)

मक्तबा-ए-अशरफ़

हिस्सए चहारुम (चौथा भाग)

मुअ़ल्लिमे अव्वलीन व आख़िरीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात दीने अक्मल व अतम

(आदि से अन्त तक के गुरु सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शिक्षाएँ संपूर्ण व परिपूर्ण दीन)

बाब (परिच्छेद)

1-रोगी का हाल पूछने और उसे ढ़ाढ़स देने के लिए जाना।

मुनाजात[1]

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

﴿ يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَافِى الأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ○ هُوَالَّذِىْ بَعَثَ فِى الأُمِّيِّيْنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○﴾

سورة الجمعة آية:١ـ٢

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल् अर्ज़िल् मलिकिल् क़ुद्दूसिल् अज़ीज़िल् हकीमि ○ हुवल्लज़ी बअ़स फ़िल् उम्मिय्यीन रसूलम्मिन्हुम यत्लू अ़लैहिम आयातिही व युज़क्कीहिम व युअ़ल्लिमुहुमुल् किताब वल् हिक्मत व इन कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम्मुबीन ○ (सूरए अल्जुमुअ़ह, आयत: 1–2)

अनुवाद: सब चीज़ें जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं (क़ालन् व हालन्)[2] अल्लाह की पाकी बयान करती हैं जो कि बादशाह है (ऐबों से) पाक है, ज़बरदस्त हिक्मत वाला[3] है। वही है जिसने (अ़रब के) नाख़्वान्दा[4] लोगों में उन्हीं (की क़ौम) में से (यानी अ़रब में से) एक पैग़म्बर भेजा, जो उनको अल्लाह की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते हैं और उनको (अक़ाइदे बातिला[5] व अख़्लाक़े ज़मीमा[6] से) पाक करते हैं और उनको किताब और दानिशमन्दी[7] की बातें सिखाते हैं। और ये लोग (आपकी बेअ़सत[8] से) पहले खुली गुमराही में थे। (बयानुल् क़ुरआन)

1–अल्लाह की प्रशंसा या प्रार्थना करना, 2–कथनी व करनी, 3–तत्त्वदर्शी, 4–अनपढ़, 5–अन्धविश्वास, 6–बुरे अख़्लाक़, दुर्व्यवहार 7–बुद्धिमानी, 8–भेजा जाना।

बाब–1 (प्रथम परिच्छेद) ईमानियात

इस्लाम, ईमान और एहसान[1]

हदीसः हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हम एक दिन हुज़ूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे। (उस वक़्त हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा किराम रज़ि० के एक बड़े मज्मे से ख़िताब फ़रमा रहे थे[2]) कि अचानक एक शख़्स सामने से नमूदार[3] हुआ, जिसके कपड़े निहायत सफ़ेद और बाल बहुत ही ज़्यादा सियाह थे और उस शख़्स पर सफ़र का कोई असर भी मालूम न होता था (जिससे ख़्याल हुआ कि यह कोई बेरूनी[4] शख़्स नहीं है) और इसी के साथ यह बात भी थी कि हममें से कोई शख़्स उस नौवारिद[5] को पहचानता न था, जिससे ख़्याल हुआ कि यह कोई बाहर का आदमी है, तो यह शख़्स हाज़िरीन[6] के हल्क़े[7] में से होता हुआ आया यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने आकर दो ज़ानू[8] इस तरह बैठ गया कि अपने घुटने आप सल्ल० के घुटनों से मिला दिये और अपने हाथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़ानू[9] पर रख दिये और कहा ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! बतलाइये कि इस्लाम क्या है?

आप सल्ल० ने फ़रमाया– "इस्लाम यह है (यानी इसके अरकान ये हैं कि दिल व ज़बान से) तुम यह शहादत[10] अदा करो कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह (कोई ज़ात बन्दगी व इबादत के लायक़ नहीं) और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके रसूल हैं और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और माहे रमज़ान के रोज़े रखो और हज्जे बैतुल्लाह की

1-नेकी, 2-सम्बोधित कर रहे थे, 3-प्रकट, 4-विदेशी, 5-नये आने वाले को, 6-उपस्थित लोग, 7-घेरे, 8-दोनों घुटने मोड़कर, 9-घुटना, 10-गवाही।

तुम इस्तिताअत[1] रखते हो तो हज करो।" उस नौवारिद[2] साइल[3] ने आपका यह जवाब सुनकर कहा– "आपने सच कहा।"

रावी-ए-हदीस[4] हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि हमको इस पर तअ़ज्जुब हुआ कि यह शख़्स पूछता भी है और फिर तस्दीक़ व तस्वीब[5] भी करता जाता है।

उसके बाद उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया अब मुझे यह बतलाइए कि ईमान क्या है? आपने फ़रमाया – ईमान यह है कि तुम अल्लाह को और उसके फ़िरिश्तों को और उसके रसूलों और उसकी किताबों को और यौमे आख़िर यानी रोज़े क़ियामत को हक़ जानो और हर ख़ैर व शर्र[6] की तक़्दीर को भी हक़ जानो और हक़ मानो (यह सुनकर भी) उसने कहा, आपने सच कहा।

उसके बाद उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया, मुझे बतलाइए कि एहसान क्या है? आप सल्ल० ने फ़रमाया, एहसान यह है कि अल्लाह की इबादत व बन्दगी तुम इस तरह करो गोया तुम उसको देख रहे हो, अगर्चे तुम उसको नहीं देखते हो लेकिन वह तो तुम्हें देखता ही है।

फिर उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया मुझे क़ियामत की बाबत[7] बतलाइए (कि कब वाक़े[8] होगी) आपने फ़रमाया कि जिससे यह सवाल किया जा रहा है वह उसको सवाल करने वाले से ज़्यादा नहीं जानता।

फिर उसने अ़र्ज़ किया, तो फिर मुझे उसकी कुछ निशानियाँ ही बतलाइए?

आप सल्ल० ने फ़रमाया (उसकी एक निशानी तो यह है) कि लौंडी[9] अपने आक़ा[10] और मालिक[11] को जनेगी[12] और (दूसरी निशानी यह है कि तुम देखोगे कि जिनके पाँव में जूता और तन पर कपड़े नहीं हैं और जो तहीदस्त[13] और बकरियाँ चराने वाले हैं वे बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने लगेंगे और उसमें एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश करेंगे।

1-सामर्थ्य, 2-नये आने वाले लोग, 3-प्रश्नकर्ता, 4-हदीस बयान करने वाले, 5-पुष्टि व प्रमाणित, 6-अच्छी व बुरी, 7-विषय में, 8-घटित, 9-नौकरानी, 10-स्वामी, 11-रानी, स्वामी की पत्नी, 12-जन्म देगी, 13-रिक्तहस्त, दरिद्र।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि ये बातें करके वह नौवारिद शख़्स चला गया। फिर मुझे कुछ अर्सा गुज़र गया तो मुझ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ उमर! तुम्हें पता है कि वह सवाल करने वाला शख़्स कौन था?

मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानने वाले हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि वह जिब्रील (अलैहिस्सलाम) थे। तुम्हारी इस मज्लिस में इसलिए आए थे कि तुम लोगों को तुम्हारा दीन सिखायें।

(सहीह मुस्लिम व बुख़ारी, मआरिफुल हदीस)

ईमान दीन की तमाम बातों की तस्दीक़[1] करने का नाम है।

(ईमान इस्लाम धर्म की समस्त बातों की पुष्टि का नाम है)

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दीन पाँच चीज़ों का मज्मूआ[2] है, (जो सब की सब ज़रूरी हैं) इनमें कोई चीज़ भी दूसरे के बग़ैर मक़्बूल[3] नहीं। इस बात की शहादत देना कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद[4] नहीं है और (हज़रत) मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं और अल्लाह तआला पर और उसके फ़िरिश्तों, किताबों, उसके रसूलों और जन्नत व दोज़ख़ पर यक़ीन रखना और इस पर कि मरने के बाद फिर (हिसाब व किताब के लिए) जी उठना है। यह एक बात हुई और पाँच नमाज़ें इस्लाम का सुतून[5] हैं। अल्लाह तआला नमाज़ के बग़ैर ईमान भी क़बूल नहीं करेगा। ज़कात गुनाहों का कफ़्फ़ारा[6] है। ज़कात के बग़ैर अल्लाह तआला ईमान और नमाज़ भी क़बूल नहीं करेगा। फिर जिसने

1-पुष्टि, सच्च बताना, 2-समूह, 3-स्वीकृत, 4-उपास्य, 5-स्तम्भ, 6-प्रायश्चित्त।

ये अरकान अदा कर लिए और रमज़ान शरीफ़ का महीना आ गया और किसी उज़्र[1] के बग़ैर जानबूझकर उसमें रोज़े न रखे तो अल्लाह तआला न उसका ईमान क़बूल करेगा और न नमाज़ व ज़कात और जिस शख़्स ने ये चार अरकान अदा कर लिए उसके बाद हज करने की वुस्अत[2] हुई फिर उसने न ख़ुद हज किया और न उसके बाद किसी दूसरे अज़ीज़ ने उसकी तरफ़ से हज किया तो उसका ईमान, नमाज़, ज़कात और रोज़े कुछ क़बूल नहीं। क़बूल होने का मतलब यह है कि किसी रुक्ने इस्लाम में कोताही होने से बाक़ी आमाल दोज़ख़ से फ़ौरी नजात[3] दिलाने के लिए काफ़ी न होंगे।

(अल्हिलिया तर्जुमानुस्सुन्ना)

इस्लामे कामिल
(परिपूर्ण इस्लाम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इस्लाम यह है कि सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत करो, किसी को उसका शरीक न ठहराओ, बाज़ाबिता[4] नमाज़ पढ़ो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखा करो, बैतुल्लाह का हज करो, भली बात बताया करो, बुरी बात से रोका करो (घर में आकर) घर वालों को सलाम किया करो, जो शख़्स इन बातों में से कोई बात नहीं करता वह इस्लाम का एक जुज़[5] नाक़िस[6] करता है और जो इन सब ही को छोड़ दे उसने तो इस्लाम से पुश्त[7] फेर ली।

(हाकिम, तर्जुमानुस्सुन्ना)

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कहते हैं कि एक शख़्स जो इलाक़ए नज्द का रहने वाला था और उसके सर के बाल बिखरे हुए थे (कुछ कहता हुआ) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ आया। हम उस भनभनाहट को तो सुनते थे मगर आवाज़

1-मजबूरी, 2-सामर्थ्य, 3-मुक्ति, 4-नियमपूर्वक, 5-भाग, 6-अधूरा, 7-पीठ।

साफ़ न होने की वजह से (और शायद फ़ासिला की ज़्यादती भी उसकी वजह हो) हम उसकी आवाज़ को समझ नहीं रहे थे, यहाँ तक कि वह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के क़रीब आ गया।

अब वह सवाल करता है इस्लाम के बारे में (यानी उसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया कि मुझे इस्लाम के वे ख़ास अहकाम बतलाइए जिन पर अ़मल करना बहैसियत मुसलमान मेरे लिए और हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है।)

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- पाँच तो नमाज़ें हैं दिन-रात में (जो फ़र्ज़ की गई हैं और इस्लाम में यह सबसे अहम अव्वल फ़रीज़ा[1] है।)

उसने अ़र्ज़ किया कि क्या इनके अ़लावा और कोई नमाज़ भी मेरे लिए लाज़िम होगी?

आप सल्ल० ने फ़रमाया- "नहीं" (फ़र्ज़ तो बस यही पाँच नमाज़ें हैं) मगर तुम्हें हक़ है कि अपनी तरफ़ से और अपने दिल की ख़ुशी से (इन पाँच फ़र्ज़ नमाज़ों के अ़लावा) और भी ज़ाइद[2] नमाज़ें पढ़ो (और मज़ीद[3] सवाब हासिल करो)।

फिर आप सल्ल० ने फ़रमाया और साल में पूरे माह रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ किये गए हैं। (और यह इस्लाम का दूसरा उमूमी[4] फ़रीज़ा है)

उसने अ़र्ज़ किया क्या रमज़ान के अलावा कोई और रोज़े भी मेरे लिए लाज़िम हैं?

आप सल्ल० ने फ़रमाया- "नहीं" (फ़र्ज़ तो बस रमज़ान ही के रोज़े हैं) मगर तुम्हें हक़ है कि अपने दिल की ख़ुशी से तुम और नफ़्ली रोज़े रखो (और अल्लाह तआ़ला का मज़ीद क़ुर्ब और सवाब हासिल करो)।

रावी कहते हैं कि उसके बाद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने उस शख़्स से फ़रीज़-ए-ज़कात का भी ज़िक्र फ़रमाया। उस पर

1-कर्तव्य, 2-अधिक, 3-अधिक, अतिरिक्त 4-सार्वजनिक।

भी उसने यही कहा कि क्या इस ज़कात के अलावा कोई और सदक़ा अदा करना भी मेरे लिए ज़रूरी होगा?

आपने फ़रमाया- "नहीं" (फ़र्ज़ तो बस ज़कात ही है) मगर तुम्हें हक़ है कि अपने दिल की ख़ुशी से तुम नफ़्ली सदक़ा दो (और मज़ीद सवाब हासिल करो)।

हदीस के रावी तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि उसके बाद वह सवाल करने वाला शख़्स वापस लौट गया और वह कहता जा रहा था कि (मुझे जो कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतलाया है) मैं उसमें (अपनी तरफ़ से) कोई ज़्यादती या कमी नहीं करूँगा।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने (उसकी यह बात सुनकर) फ़रमाया- "फ़लाह[1] पाली इसने अगर यह सच्चा है"।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

अल्लाह तआ़ला से हुस्नेज़न[2]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि अच्छा गुमान रखना अल्लाह तआ़ला के साथ मिन्जुम्ला[3] बेहतरीन इबादात के है (यानी अल्लाह तआ़ला के साथ हुस्नेज़न भी इबादत में दाख़िल है) (मुस्नदे अहमद, अबू दाऊद, मिश्कात)

अ़लामते ईमान[4]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुममें से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक उसको अपने माँ-बाप, अपनी औलाद और सब लोगों से ज़्यादा मेरी महब्बत न हो। (मआ़रिफ़ुल् हदीस, बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ईमान की

1-नजात, मोक्ष, 2-सुधारना, अच्छा गुमान, 3-सबमें से, 4-ईमान की पहचान।

सत्तर से भी कुछ ऊपर शाखें हैं सबसे अऑ़ला[1] और अफ़्ज़ल[2] لا إله إلا الله *"ला इलाह इल्लल्लाह"* का क़ाइल होना[3] यानी तौहीद[4] की शहादत देना[5] है और उनमें अदना[6] दर्जे की चीज़ अज़िय्यत[7] और तक्लीफ देने वाली चीज़ों का रास्ते से हटाना है और हया[8] ईमान की एक अहम शाख़ है।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस, बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि ईमान क्या है? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जब तुमको अपने अच्छे अ़मल से मसर्रत[9] हो और बुरे काम से रंज और क़लक़[10] हो तो तुम मोमिन हो।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस, मुस्नदे अहमद)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया हया और शर्म ईमान से पैदा होती है और ईमान का नतीजा है और बेहयाई और फ़ुहश-कलामी[11] दुरुश्तिए फ़ितरत[12] से पैदा होती है, और उसका नतीजा दोज़ख़ है।

(मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हया और ईमान दोनों एक दूसरे के साथ वाबस्ता[13] हैं। जब इनमें से एक उठा लिया जाता है तो दूसरा भी उठा लिया जाता है। (मआ़रिफ़ुल् हदीस)

और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की रिवायत में यह मज़्मून[14] इस तरह है कि जब इनमें से एक छीन लिया जाता है तो दूसरा भी उसके पीछे-पीछे रवाना[15] हो जाता है। (शोबुल्ईमान, तर्जुमानुस्सुन्ना)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कोई ऐसा शख़्स जो इन

1-श्रेष्ठ, 2-उत्तम, 3-विश्वास करना, स्वीकार करना; 4-अल्लाह को एक मानना, 5-गवाही देना, 6-कम, 7-दु:ख, 8-लज्जा, 9-प्रसन्नता, 10-दु:ख, 11-अश्लील बातें करना; 12-कठोर या बुरे स्वभाव, 13-संयुक्त, संलग्न, 14-विषय, 15-प्रस्थित।

बातों पर खुद अ़मल करे या कम से कम उन लोगों को ही बता दे जो उन पर अ़मल करें। मैं बोला, या रसूलल्लाह! मैं हाज़िर हूँ। आप सल्ल० ने मेरा हाथ पकड़ा और ये पाँच बातें शुमार फ़रमायीं[1]।

1- फ़रमाया हराम बातों से दूर रहना बड़े इबादतगुज़ार बन्दों में शुमार होगा।

2- अल्लाह तआ़ला जो तुम्हारी तक़दीर में लिख चुका है उस पर राज़ी रहना, बड़े बेनियाज़[2] बन्दों में हो जाओगे।

3- अपने पड़ोसी से अच्छा सुलूक[3] करते रहना, मोमिन बन जाओगे।

4- जो बात अपने लिये चाहते हो वही दूसरों के लिए पसन्द करना, कामिल मुसलमान बन जाओगे।

5- और बहुत क़हक़हे न लगाना क्योंकि यह दिल को मुर्दा बना देता है। (मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी, तर्जुमानुस्सुन्ना)

हज़रत अबू शुरैह ख़ज़ाई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "क़सम अल्लाह तआ़ला की वह मोमिन नहीं, क़सम अल्लाह तआ़ला की वह मोमिन नहीं, क़सम अल्लाह तआ़ला की वह मोमिन नहीं" मैंने कहा, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! कौन मोमिन नहीं?

आप सल्ल० ने फ़रमाया "वह आदमी जिसके पड़ोसी उसकी शरारतों और आफ़तों से ख़ाइफ़[4] रहते हों।" (बुख़ारी, मआ़रिफ़ुल्हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि तुम जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि साहिबे ईमान[5] न हो जाओ और तुम पूरे मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि तुम में बाहमी[6] महब्बत न हो। क्या मैं तुम को एक ऐसी बात न बतला दूँ कि अगर तुम उसपर अ़मल करने लगो तो तुममें बाहमी महब्बत पैदा हो जाए और वह बात यह है कि तुम अपने दरमियान

1-गिनाईं, 2-निःस्पृह, 3-सद्व्यवहार, 4-भयभीत, 5-ईमान वाले, 6-परस्पर।

सलाम का रिवाज फैलाओ और उसको आम करो। (मुस्लिम, मआरिफुल्हदीस)

ईमान और इस्लाम का ख़ुलासा[1]

हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दीन नाम है "ख़ुलूस"[2] और वफ़ादारी का। हमने अर्ज़ किया कि किसके साथ ख़ुलूस और वफ़ादारी?

इर्शाद फ़रमाया- "अल्लाह तआला के साथ, अल्लाह तआला की किताब के साथ, अल्लाह तआला के रसूलों के साथ, मुसलमानों के सरदारों और पेशवाओं[3] के साथ और उनके अवाम के साथ।"

(मआरिफ़ुल् हदीस, मुस्लिम)

ईमान का आख़िरी दर्जा

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जो कोई तुम में से बुरी और ख़िलाफ़े शर्अ[4] बात देखे तो लाज़िम है कि अगर ताक़त रखता हो तो अपने हाथ से (यानी ज़ोर और क़ुव्वत[5] से) उसको बदलने की (यानी दुरुस्त करने की) कोशिश करे और अगर इसकी ताक़त न रखता हो तो फिर अपनी ज़बान ही से उसको बदलने की कोशिश करे और अगर इसकी भी ताक़त न रखता हो तो अपने दिल ही से बुरा समझे।

और यह ईमान का ज़ईफ़तरीन[6] दर्जा है। (मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

अल्लाह तआला और उसके रसूल से महब्बत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तीन चीज़ें ऐसी हैं कि ये जिस शख़्स में होंगी उसकी वजह से ईमान की हलावत[7] नसीब होगी।

1-सारांश, 2-निष्कपटता, सच्चाई, 3-धार्मिक नेता, 4-इस्लामी क़ानून के विरुद्ध, 5-शक्ति, 6-सबसे कम, 7-मिठास।

1- एक वह शख़्स जिसके नज़्दीक अल्लाह और उसका रसूल सब मासिवा[1] से ज़्यादा महबूब हों यानी जितनी महब्बत उसको अल्लाह और उसके रसूल से हो उतनी किसी से न हो।

2- और एक वह शख़्स जिसको किसी बन्दे से महब्बत हो और महज़[2] अल्लाह ही के लिए हो (यानी किसी दुनियावी ग़रज़ से न हो, महज़ इस वजह से महब्बत हो कि वह शख़्स अल्लाह वाला है)।

3- और एक वह शख़्स जिसको अल्लाह तआला ने कुफ़्[3] से बचा लिया हो। ख़्वाह पहले ही से बचा रखा हो, ख़्वाह कुफ़् से तौबा कर ली और बच गया (और इस बचा लेने) के बाद वह कुफ़् की तरफ़ आने को इस क़द्र नापसन्द करता है, जैसे आग में डाले जाने को नापसन्द करता है। रिवायत किया इसको मुस्लिम व बुख़ारी ने) (हयातुलमुस्लिमीन)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अफ़्ज़ल ईमान के मुतअल्लिक़[4] सवाल किया (यानी पूछा कि ईमान का अअ़्ला और अफ़्ज़ल दर्जा क्या है और वह कौन से आमाल व अख़्लाक़ हैं, जिनके ज़रिये इसको हासिल किया जा सकता है।)

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- "यह कि बस अल्लाह तआला ही के लिए किसी से तुम्हारी महब्बत हो और अल्लाह तआला ही के वास्ते बुग़्ज़[5] व अदावत[6] हो (यानी दोस्ती और दुश्मनी जिससे भी हो सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के वास्ते हो) और दूसरे यह कि अपनी ज़बान को तुम अल्लाह तआला की याद में लगाए रखो।

हज़रत मआज़ ने अर्ज़ किया- और क्या, या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)?

आप सल्ल० ने फ़रमाया और यह कि दूसरे लोगों के लिए भी वही चाहो, वही पसन्द करो जो अपने लिए पसन्द करते और चाहते हो और उनके

1-सांसारिक वस्तुओं, 2-केवल, 3-अल्लाह को न मानना, नास्तिकता, 4-सम्बन्धित, 5-द्वेष, 6-शत्रुता।

लिए उन चीज़ों को भी नापसन्द करो जो अपने लिए नापसन्द करते हो।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मुस्नदे अहमद, मआरिफ़ुल् हदीस)

महब्बत ज़रिअ-ए-क़ुर्ब[1] व मइय्यत[2]

(प्रेम निकटता व साथ का साधन)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ''हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या फ़रमाते हैं ऐसे शख़्स के बारे में जिसको एक जमाअत से महब्बत है लेकिन वह उनके साथ नहीं हो सका''?

तो आप सल्ल० ने फ़रमाया- ''जो आदमी जिससे महब्बत रखता है उसके साथ ही है (या यह कि आख़िरत में उसके साथ कर दिया जाएगा'')

(सहीह बुख़ारी, मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हज़रत! क़ियामत कब आएगी?

आप सल्ल० ने फ़रमाया- वाए बरहाले तू[3] (क़ियामत का वक़्त और उसके आने की ख़ास घड़ी दरयाफ़्त करना चाहता है, बतला) तूने उसके लिए क्या तैयारी की है?

उसने अर्ज़ किया, मैंने उसके लिए कोई तैयारी तो नहीं की (जो आपके सामने ज़िक्र करने के लाइक़ और भरोसे के क़ाबिल हो) अलबत्ता तौफ़ीक़े इलाही से मुझे यह ज़रूर नसीब है कि (मुझे महब्बत है अल्लाह से और उसके रसूल सल्ल० से।)

आप सल्ल० ने फ़रमाया- 'तुझको जिससे महब्बत है तू उन्हीं के साथ

1-निकटता, 2-साथ, 3-हालत पर दुःख।

है और तुझको उनकी मइय्यत नसीब होगी।

हदीस के रावी हज़रत अनस रज़ि० इस हदीस को बयान करने के बाद फ़रमाते हैं कि मैंने नहीं देखा मुसलमानों को (यानी हुज़ूर सल्ल० के सहाबा को) कि इस्लाम में दाख़िल होने के बाद उनको किसी चीज़ से इतनी ख़ुशी हुई हो जितनी की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस बशारत[1] से हुई। (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस)

एक शख़्स आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया– या रसूलल्लाह! मुझे अपनी बीवी, अपनी औलाद और अपनी जान से भी ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० से महब्बत है और मेरा हाल यह है कि मैं अपने घर पर होता हूँ और हुज़ूर मुझे याद आ जाते हैं तो उस वक़्त तक मुझे सब्र और क़रार नहीं आता जब तक हाज़िरे ख़िदमत हो कर एक नज़र देख न लूँ और जब अपने मरने का और हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात[2] का ख़्याल करता हूँ तो मेरी समझ में आता है कि वफ़ात के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो जन्नत में पहुँच कर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के बुलन्द मक़ाम पर पहुँचा दिये जायेंगे और मैं अगर अल्लाह की रमहत से जन्नत में भी गया तो मेरी रसाई[3] उस मक़ामे आली[4] तक तो न हो सकेगी, इसलिए आख़िरत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीदार[5] से बज़ाहिर[6] महरूमी[7] ही रहेगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस शख़्स की इस बात का कोई जवाब अपनी तरफ़ से नहीं दिया, यहाँ तक कि सूरए निसा की यह आयत नाज़िल[8] हुई:–

﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۝﴾ سورة النساء آية: ٦٩

1–ख़ुशख़बरी, 2–निधन, 3–पहुँच, 4–ऊँचे स्थान, 5–दर्शन, 6–स्पष्टतः, 7–वंचित होना, गिरावट, 8–अवतरित।

व मैंयुतिइल्लाह वर्रसूल फ़उलाइक मअ़ल्लज़ीन अन्अ़मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्नबिय्यीन वस्सिद्दीक़ीन वश्शुहदाइ वस्सालिहीन व हसुन उलाइक रफ़ीक़ा० (सूरए निसा, रुकू 9, पारः 5)

अनुवादः और जो लोग फ़रमांबरदारी करें अल्लाह की और उसके रसूल की, पस वह अल्लाह के उन ख़ास बन्दों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह का ख़ास इनाम है यानी अम्बिया[1], सिद्दीक़ीन[2], शुहदा[3] और सालिहीन[4] और ये सब बड़े ही अच्छे रफ़ीक़[5] हैं। (तबरानी, मआ़रिफ़ुल्हदीस)

अल्लाह के लिए आपस में मेल-महब्बत करने वाले अल्लाह के महबूब हो जाते हैं

हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि मेरी महब्बत वाजिब[6] है उन लोगों के लिए जो बाहम[7] मेरी वजह से महब्बत करें और मेरी वजह से और मेरे तअ़ल्लुक़ से कहीं जुड़कर बैठें और मेरी वजह से बाहम मुलाक़ात करें और मेरी वजह से एक दूसरे पर ख़र्च करें। (मुअत्ता इमाम मालिक, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "अल्लाह के बन्दों में कुछ ऐसे ख़ुशनसीब हैं जो नबी या शहीद तो नहीं हैं लेकिन क़ियामत के दिन बहुत से अम्बिया और शुहदा उनके ख़ास मक़ामे क़ुर्ब की वजह से उन पर रश्क[8] करेंगे। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया- "या रसूलल्लाह! हमें बतला दीजिए कि वे कौन बन्दे हैं?" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- 'वे लोग वे हैं जिन्होंने बग़ैर किसी रिश्ता और

1-पैग़म्बर, 2-सच्चे लोग, 3-शहीदों, 4-नेक लोगों, 5-मित्र, 6-अनिवार्य, 7-परस्पर, 8-गर्व,

क़राबत के और बग़ैर किसी माली लेन-देन के महज़ ख़ुशनूदि-ए-ख़ुदावन्दी[1] की वजह से बाहम[2] महब्बत की। पस क़सम है अल्लाह की! उनके चेहरे क़ियामत के दिन नूरानी[3] होंगे, बल्कि सरासर नूर होंगे और वह नूर के मिम्बरों पर होंगे और आम इन्सानों को जिस वक़्त ख़ौफ़ो-हरास होगा उस वक़्त वे बेख़ौफ़ और मुत्मइन[4] होंगे और जिस वक़्त आम इन्सान मुब्तलाए ग़म होंगे, वे उस वक़्त बेग़म[5] होंगे और इस मौक़े पर आप सल्ल० ने यह आयत पढ़ी:-

﴿ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَاهُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝﴾ سورة يونس آية:٦٢

अला इन्न अव्लिया अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् वला हुम यहज़नून।

(सूरः यूनुस, रुकूअ 7, पारा, 11 आयत : 62)

अनुवादः मालूम होना चाहिए कि जो अल्लाह के दोस्त और उससे ख़ास तअल्लुक़ रखने वाले हैं उनको ख़ौफ़ और ग़म न होगा।

(सुनने अबी दाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला शानुहू का इर्शाद है कि मुझ पर वाजिब है कि मैं उन लोगों से महब्बत करूँ, जो लोग मेरी ख़ातिर आपस में महब्बत और दोस्ती करते हैं और मेरे ज़िक्र के लिये एक जगह जमा हो कर बैठते हैं और मेरी महब्बत के सबब[6] एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं और मेरी ख़ुशनूदी[7] चाहने के लिए एक दूसरे के साथ नेक सुलूक करते हैं। (मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी)

एक बार आप सल्ल० के सामने से एक शख़्स गुज़रा, कुछ लोग आप के पास बैठे हुए थे, उनमें से एक ने कहा- या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे इस शख़्स से महज़[8] अल्लाह की ख़ातिर महब्बत है। यह सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा तो क्या तुम ने उस

1-अल्लाह की प्रसन्नता, 2-परस्पर, 3-प्रकाशमान, रौशनी, 4-निश्चिन्त, 5-दुःख रहित, 6-कारण, 7-प्रसन्नता, 8-केवल।

शख़्स को यह बात बता दी है? वह शख़्स बोला- नहीं, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जाओ और उसपर ज़ाहिर कर दो कि तुम अल्लाह तआ़ला के लिए उससे महब्बत करते हो, वह शख़्स फ़ौरन उठा और जा कर उस जाने वाले से अपने जज़्बात का इज़्हार[1] किया, उसके जवाब में उसने कहा- "तुझसे वह ज़ात महब्बत करे जिसकी ख़ातिर तू मुझसे महब्बत करता है"। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

नेक लोगों के पास बैठना

हज़रत अबू रज़ीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- क्या मैं तुमको ऐसी बात न बतलाऊँ जिस पर उस दिन का (बड़ा) मदार[2] है, जिससे तुम दुनिया व आख़िरत की भलाई हासिल कर सकते हो, एक तो अहले ज़िक्र[3] की मजालिस[4] को मज़्बूत पकड़ लो, (और दूसरे) जब तन्हा हुआ करो जहाँ तक मुम्किन हो अल्लाह के ज़िक्र के साथ ज़बान को मुतहर्रिक[5] रखो, (और तीसरे) अल्लाह तआ़ला ही के लिए महब्बत रखो और अल्लाह तआ़ला ही के लिए बुग्ज़[6] रखो। (बैहक़ी फ़ी-शोबिल्-ईमान)

फ़- (*नोट*): यह बात तजुर्बे से भी मालूम होती है। सोहबते नेक जड़ है तमाम दीन की, दीन की हक़ीक़त, दीन की हलावत[7], दीन की क़ुव्वत के जितने ज़रिए[8] हैं, सबसे बढ़कर ज़रिआ इन चीज़ों का सोहबते नेक है।

(हयातुल्-मुस्लिमीन)

1-प्रकट करना, 2-निर्भरता, 3-अल्लाह के याद करने वाले, 4-सभाओं, 5-गतिशील, 6-द्वेष, 7-मिठास, 8-साधन।

वस्वसे ईमान के मनाफ़ी नहीं और उन पर मुआख़ज़ा भी नहीं है

(बुरे ख़्यालात ईमान के विरुद्ध नहीं और उनपर पकड़ भी नहीं)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि कभी-कभी मेरे दिल में ऐसे बुरे ख़्यालात आते हैं कि जलकर कोयला हो जाना मुझे इससे ज़्यादा महबूब है कि मैं उसको ज़बान से निकालूँ।

आप सल्ल० ने फ़रमाया- "अल्लाह तआला की हम्द[1] और उसका शुक्र है, जिसने मुआमले को वस्वसे की तरफ़ लौटा दिया है।"

यानी वे ख़्यालात सिर्फ़ वस्वसे की हद तक हैं (अबू दाऊद) तश्कीक[2] और बदअमली[3] का मूजिब[4] नहीं हैं। (मआरिफ़ुल्हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि लोगों में हमेशा फ़ुज़ूल सवालात और चूँ व चरा[5] का सिल्सिला जारी रहेगा। यहाँ तक कि यह अहमक़ाना[6] सवाल भी किया जाएगा कि अल्लाह तआला ने सब मख़्लूक़[7] को पैदा किया है फिर अल्लाह तआला को किसने पैदा किया है? पस जिसको इससे साबिक़ा[8] पड़े वह यह कह कर बात ख़त्म कर दे कि अल्लाह तआला पर और उसके रसूलों पर मेरा ईमान है।"

(मआरिफ़ुस् हदीस, बुख़ारी व मुस्लिम)

तक़्दीर का मानना भी शर्ते ईमान है

हज़रत अबू ख़ुज़ामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने वालिद से रिवायत

1-प्रशंसा, 2-शंका, भ्रम, 3-दुराचरण, दुष्कर्म, 4-कारण, 5-कैसे और क्यों, 6-मूर्खतापूर्ण, 7-जीव, 8-प्रयोजन, सम्बन्ध।

करते हैं कि उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया- "क्या इर्शाद है इस बारे में कि झाड़-फूंक के वे तरीके जिनको हम दुःख-दर्द में इस्तेमाल करते हैं या दवाएं जिनसे हम अपना इलाज करते हैं या मुसीबतों और तक्लीफ़ों से बचने की वह तदबीरें[1] जिनको हम अपने बचाव के लिए इस्तेमाल करते हैं, क्या ये चीज़ें अल्लाह तआला की कज़ा व क़द्र (तक़्दीर) को लौटा देती हैं?

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ये सब चीज़ें भी अल्लाह तआला की तक़्दीर से हैं।

(मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक दफ़ा हम लोग (मस्जिदे नबवी में बैठे) कज़ा व क़द्र (तक़्दीर) के मस्अले[2] में बहस-मुबाहसा कर रहे थे कि उसी हाल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ ले आए (और हम को यह बहस करते देखा) तो आप सल्ल० बहुत बर-अफ़्रोख़्ता[3] और ग़ज़बनाक[4] हुए यहाँ तक कि चेहर-ए-मुबारक सुर्ख़ हो गया और इस क़द्र सुर्ख़ हुआ कि मालूम होता था कि आप के रुख़्सारों (गालों) पर अनार निचोड़ दिया गया है। फिर आप सल्ल० ने हमसे फ़रमाया- "क्या तुमको यही हुक्म किया गया है? क्या मैं तुम्हारे लिए यही पयाम[5] लाया हूँ? (कि तुम कज़ा व क़द्र जैसे अहम और नाज़ुक मस्अलों में बहस करो) ख़बरदार! तुम से पहली उम्मतें उसी वक़्त हलाक हुयीं जब्कि उन्होंने इस मस्अले में हुज्जत[6] और बहस को अपना तरीक़ा बना लिया। मैं तुम को क़सम देता हूँ, मैं तुम पर लाज़िम करता हूँ कि इस मस्अले में हरगिज़ हुज्जत और बहस न किया करो।" (तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "तुम में से हर एक का ठिकाना दोज़ख़ का और जन्नत का लिखा जा चुका है (मतलब यह है कि जो

1-उपाय, 2-विषय, 3-कुपित, गुस्सा, 4-क्रोधयुक्त, 5-संदेश, 6-वाद-विवाद।

शख़्स दोज़ख़ में या जन्नत में जहाँ भी जाएगा उसकी वह जगह पहले से मुक़द्दर व मुक़र्रर[1] हो चुकी है) सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया तो हम अपने इस नविश्त-ए-तक़दीर[2] पर भरोसा करके न बैठ जाएं और सई[3] व अ़मल न छोड़ दें (मतलब यह कि जब सब कुछ पहले ही से तैशुदा[4] और लिखा हुआ है तो फिर हम सई व अ़मल की दर्दसरी क्यों मोल लें) आप सल्ल० ने फ़रमाया "नहीं, अ़मल किये जाओ क्योंकि हर एक को उसी की तौफ़ीक़ मिलती है जिसके लिए वह पैदा हुआ है। पस जो शख़्स नेकबख़्तों[5] में से है उसको सआ़दत[6] और नेकबख़्ती[7] के कामों की तौफ़ीक़ मिलती है और जो कोई बदबख़्तों[8] में से है उसको शक़ावत[9] और बदबख़्ती वाले आमाले बद[10] ही की तौफ़ीक़ मिलती है। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क़ुरआने पाक की यह आयत तिलावत फ़रमाई:-

﴿ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ٥ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ٥ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ٥ وَاَمَّا

مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ٥ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ٥ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ٥ ﴾

سورة الليل آية:٥ـ١٠

फ़ अम्मा मन् अअ़्ता वत्तक़ा ० व सद्दक़ बिल् हुस्ना ० फ़सनुयस्सिरुहू लिल् युस्रा ० व अम्मा मम् बख़िल वस्तग़्ना ०व कज़्ज़बा बिल् हुस्ना ० फ़सनुयस्सिरुहू लिल् उ़स्रा ० (सूरए वल्लैल, पार, 30, आयत :5-10) (मआ़रिफ़ुलहदीस)

अनुवाद: सो जिसने दिया और डरता रहा और सच जाना भली बात को तो हम उसको आहिस्ता-आहिस्ता पहुँचा देंगे आसानी में और जिसने न दिया और बेपरवाह रहा और झूठ जाना भली बात को, सो हम उसको आहिस्ता-आहिस्ता पहुँचा देंगे सख़्ती में।

किसी काम के हो जाने के बाद इस क़ौल[11] की मुमानअ़त[12] है कि काश! मैं यूँ न करता, यूँ करता। फ़रमाया कि इस तरह शैतान के असर का

1-निश्चित, 2-भाग्य लेख, 3-प्रयत्न, 4-निश्चित, 5-भाग्यवानों, 6-कल्याण, 7-पुण्य, 8-दुर्भाग्यवान्, 9-भाग्य की क्रूरता, 10-दुराचरण, 11-कथन, 12-निषेध।

दरवाज़ा खुलता है, बल्कि इर्शाद फ़रमाया कि इससे ज़्यादा नफ़ामन्द यह कलिमा है: जो कुछ अल्लाह की तक़्दीर थी वह हुआ और जो अल्लाह चाहेगा वह होगा। (ज़ादुल्-मआद)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैं नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे था। आप सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया- ऐ लड़के! मैं तुझको चन्द बातें बतलाता हूँ, अल्लाह तआला का ख़्याल रख, वह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। अल्लाह तआला का ख़्याल रख तू उसको अपने सामने (यानी क़रीब) पावेगा, जब तुझको कुछ मांगना हो तो अल्लाह तआला से मांग और जब तुझको मदद की ज़रूरत हो तो अल्लाह तआला से मदद चाह और यह यक़ीन कर ले कि तमाम गिरूह अगर इस बात पर मुत्तफ़िक़[1] हो जावें कि तुझको किसी बात से नफ़ा पहुँचा दें तो तुझको हरगिज़ नफ़ा नहीं पहुँचा सकते। बजुज़[2] ऐसी चीज़ के जो अल्लाह तआला ने तेरे लिए लिख दी थी और अगर वे सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो जावें कि तुझको किसी बात से ज़रर[3] पहुँचा दें तो तुझको हरगिज़ ज़रर नहीं पहुँचा सकते बजुज़ ऐसी चीज़ के जो अल्लाह तआला ने तेरे लिए लिख दी थी। (तिर्मिज़ी, हयातुल्मुस्लिमीन)

तक़्वा[4]
(संयम)

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- "मैं तुमको वसिय्यत करता हूँ अल्लाह के तक़्वा की, क्योंकि यह तक़्वा बहुत ज़्यादा आरास्ता[5] करने वाला और सँवारने वाला है तुम्हारे सारे कामों को।

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! और वसिय्यत फ़रमाइये।

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- "तुम क़ुरआन मजीद की तिलावत और अल्लाह के ज़िक्र को लाज़िम पकड़ लो, क्योंकि ये तिलावत और ज़िक्र

1-सहमत या एकमत होना, 2-अतिरिक्त, 3-हानी, 4-संयम, परहेज़गारी, 5-अलंकृत करना।

ज़रिया[1]: होगा आसमान में तुम्हारे ज़िक्र का और इस ज़मीन में नूर होगा तुम्हारे लिए"। हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं, मैंने फिर अर्ज़ किया- हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे कुछ और नसीहत फ़रमाइये।

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- "ज़्यादा ख़ामोश रहने और कम बोलने की आदत इख़्तियार करो क्योंकि यह आदत शैतान को दफ़ा[2] करने वाली और दीन के मुआमले में तुमको मदद देने वाली है।"

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया- मुझे और नसीहत फ़रमाइये।

आप सल्ल० ने फ़रमाया- "ज़्यादा हँसना छोड़ दो, क्योंकि यह आदत दिल को मुर्दा कर देती है और आदमी के चेहरे का नूर इसकी वजह से जाता रहता है।"

मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे और नसीहत फ़रमाइये।

आप सल्ल० ने फ़रमाया- "अल्लाह के बारे में किसी मलामत[3] करने वाले की परवाह न करो।" मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे और नसीहत फ़रमाइये।

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- "तुम जो कुछ अपने नफ़्स[4] और अपनी ज़ात के बारे में जानते हो, चाहिए कि वह तुमको बाज़ रखे[5] दूसरों के ऐबों[6] के पीछे पड़ने से।" (शोबुलईमान, लिल्बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने उम्मुल् मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को ख़त लिखा और उसमें दरख़्वास्त की कि आप मुझे कुछ नसीहत और वसीयत फ़रमायें लेकिन बात मुख़्तसर[7] और जामे[8] हो, बहुत ज़्यादा न हो, तो हज़रत उम्मुल् मोमिनीन ने उनको यह मुख़्तसर ख़त लिखा:

1-साधन,माध्यम, 2-समाप्त, दूर, 3-निन्दा, 4-इन्द्रियाँ, 5-रोके, 6-दोषों, 7-संक्षिप्त, 8-व्यापक।

सलाम हो तुम पर! अम्माबाद!

"मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप सल्ल० फ़रमाते थे, जो कोई अल्लाह को राज़ी करना चाहे लोगों को अपने से ख़फ़ा करके तो अल्लाह मुस्तग़नी[1] कर देगा उसको लोगों की फ़िक्र और बारबरदारी[2] से और ख़ुद उसके लिए काफ़ी होगा। और जो कोई बन्दों को राज़ी करना चाहेगा, अल्लाह को नाराज़ करके तो अल्लाह उसको सपुर्द कर देगा लोगों के- वस्सलाम।" (जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

आमाले सालिहा[3] की वजह से लोगों में अच्छी शोहरत अल्लाह की एक नेअ्मत है

(सद्व्यवहार के कारण लोगों में यश अल्लाह का एक अनुदान है)

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया गया कि क्या इर्शाद है ऐसे शख़्स के बारे में जो कोई अच्छा अमल करता है और उसकी वजह से लोग उसकी तारीफ़ करते हैं?

और एक रिवायत में है कि पूछने वाले ने यूँ अर्ज़ किया, क्या इर्शाद है ऐसे शख़्स के बारे में जो कोई अच्छा अमल करता है और उसकी वजह से लोग उससे महब्बत करते हैं?

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- "यह तो मोमिन बन्दे की नक़्द बशारत[4] है। (सहीह मुस्लिम)

इसी तरह अगर कोई शख़्स नेक अमल इसलिए लोगों के सामने करता है कि वह उसकी इक़्तिदा[5] करें और उसको सीखें तो यह भी रिया[6] न होगा

1-अनपेक्ष, निःस्पृह, 2-बोझ उठाने, 3-सद्व्यवहार, 4-ख़ुशख़बरी, 5-अनुसरण, 6-आडम्बर।

बल्कि इस सूरत में अल्लाह के उस बन्दे को तालीम व तब्लीग़[1] का भी सवाब मिलेगा। बहुत सी हदीसों से मालूम होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बहुत से आमाल में यह मक़सद भी मल्हूज़[2] होता था।

अल्लाह तआला हम सबको हक़ीक़ते इख़्लास[3] नसीब फ़रमाए, अपना मुख़्लिस[4] बन्दा बनाए और रिया सुम्आ[5] जैसे मुहलिकात[6] से हमारे क़ुलूब[7] की हिफ़ाज़त फ़रमाए। अल्लाहुम्मा आमीन। (मआरिफ़ुल् हदीस)

इस्लाम की ख़ूबी

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– "आदमी के इस्लाम की ख़ूबी और उसके कमाल में यह भी दाखिल है कि वह फ़ुज़ूल और ग़ैरमुफ़ीद[8] कामों और बातों का तारिक[9] हो। (मआरिफ़ुल् हदीस, इब्ने माजा, तिर्मिज़ी)

दौलते दुनिया का मस्रफ़[10]

(सांसारिक सम्पत्ति का प्रयोजन)

हज़रत अबूकब्शा अन्मारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप सल्ल० फ़रमाते थे कि तीन बातें हैं, जिन पर मैं क़सम खाता हूँ और इनके अलावा एक और बात है जिसको मैं तुमसे बयान करना चाहता हूँ पस तुम उसको याद कर लो। जिन तीन बातों पर मैं क़सम खाता हूँ:–

1- उनमें एक तो यह है कि किसी बन्दे का माल सद्क़े की वजह से कम नहीं होता।

2- और दूसरी बात यह कि नहीं जुल्म किया जाएगा किसी बन्दे पर

1-प्रचार, 2-जिस बात का लिहाज़ रखा जाए, 3-निष्कपटता, निष्काम कर्म, 4-निश्छल, 5-पाखण्ड, दिखावा, 6-हलाक करने वाली चीज़ें, 7- हृदयों, 8-बेफ़ायदा, 9-त्यागने वाला, 10-व्यय प्रयोजन।

ऐसा ज़ुल्म जिस पर वह मज़्लूम[1] बन्दा सब्र करे मगर अल्लाह तआ़ला उसके इवज़[2] में उसकी इज़्ज़त को बढ़ा देगा, 3-और तीसरी बात यह है कि नहीं खोलेगा कोई बन्दा सवाल का दरवाज़ा मगर अल्लाह तआ़ला खोल देगा उस पर फ़क्र[3] का दरवाज़ा। इसके बाद आप सल्ल० ने फ़रमाया और जो बात इनके अ़लावा तुमसे बयान करना चाहता हूँ, जिसको तुम्हें याद कर लेना और याद रखना चाहिए। वह यह है कि दुनिया चार क़िस्म के लोगों के लिए है:-

1- एक वह बन्दा जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया है और सहीह तरीक़-ए-ज़िन्दगी[4] का इल्म उसको दिया है, पस वह उस माल के सर्फ़[5] व इस्तेमाल में अल्लाह तआ़ला से डरता है और उसके ज़रिये सिलए रहमी (यानी अइज़्ज़ा[6] व अक़ारिब[7] के साथ सुलूक) करता है और उसमें जो अ़मल और तसर्रुफ़[8] करना चाहे अल्लाह तआ़ला की रिज़ा[9] के लिए ही करता है, पस ऐसा बन्दा सबसे अअ़्ला व अफ़ज़ल मर्तबे पर फ़ाइज़[10] है।

2- और दूसरी क़िस्म का वह बन्दा है जिसको अल्लाह तआ़ला ने सही इल्म तो अ़ता फ़रमाया है लेकिन उसको माल नहीं दिया, पस उसकी निय्यत सही व सच्ची है और वह अपने दिल व ज़बान से कहता है कि मुझे माल मिल जाए तो मैं भी फ़्लाँ[11] (निक बन्दे) की तरह उसको काम में लाऊँ, पस इन दोनों का अज्र[12] बराबर है।

3- और तीसरी क़िस्म के वे लोग हैं जिनको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया लेकिन उसके सर्फ़[13] व इस्तेमाल का सही इल्म (और जज़्बा) नहीं दिया, वह नादानी के साथ और अल्लाह तआ़ला से बेख़ौफ़ होकर उस माल को अंधा-धुंध ग़लत राहों में ख़र्च करते हैं, उसके ज़रिये सिलए रहमी नहीं करते[14] और जिस तरह उसको सर्फ़ व इस्तेमाल करना चाहिए उस तरह नहीं करते, पस ये लोग सबसे बुरे मक़ाम पर हैं।

1-जिस पर अत्याचार किया जाए, 2-बदले, 3-दरिद्रता, 4-जीवन-पद्धती, 5-ख़र्च, 6-वंशवाले, 7-स्वजन, 8-ख़र्च, 9-ख़ुशी, 10-विराजमान, 11-अमुक, 12-बदला, 13-व्यय, 14-सम्बन्ध नहीं जोड़ते, सद्व्यवहार नहीं करते।

4- और चौथी क़िस्म के वे लोग हैं जिनको अल्लाह तआला ने माल भी नहीं दिया और सही इल्म (और सही जज़्बा) भी नहीं दिया पस उनका हाल यह है कि वे कहते हैं कि अगर हमको माल मिल जाए तो हम भी फ़्लाँ (अय्याश और फ़ुज़ूल ख़र्च) शख़्स की तरह और उसी के तरीक़े पर सर्फ़ करें पस यही उनकी नियत है और इन दोनों गिरोहों का गुनाह बराबर है।

(जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

दुनिया व आख़िरत की हक़ीक़त

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन ख़ुत्बा दिया, उसमें इर्शाद फ़रमाया- "सुन लो और याद रखो कि दुनिया एक आरिज़ी[1] और वक़्ती सौदा है जो फ़िल्वक़्त[2] हाज़िर और नक़द है (और इसकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं है, इसलिए कि) इसमें हर नेक व बद का हिस्सा है और सब इससे खाते हैं और यक़ीन करो कि आख़िरत वक़्ते मुक़र्ररा[3] पर आने वाली है। यह एक सच्ची, अटल हक़ीक़त है और सब कुछ क़ुद्रत रखने वाला शहंशाह उसी में (लोगों के आमाल के मुताबिक़ जज़ा व सज़ा का) फ़ैसला करेगा। याद रखो कि सारी ख़ैर[4] और ख़ुशगवारी और उसकी तमाम क़िस्में जन्नत में हैं और सारा दुख और शर[5] और उसकी तमाम क़िस्में दोज़ख़ में हैं, पस ख़बरदार! (जो कुछ करो) अल्लाह तआला से डरते हुए करो (और हर अमल के वक़्त आख़िरत के अन्जाम को पेशेनज़र[6] रखो और यक़ीन करो कि तुम अपने अपने आमाल के साथ अल्लाह तआला के हुज़ूर में पेश किये जाओगे। जिसने ज़र्रा बराबर कोई नेकी की होगी वह उसको भी देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर कोई बुराई की होगी वह उसको भी पा लेगा।

(मुस्नदे अहमद, इमाम शाफ़ई, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-क्षणिक, 2-तत्काल, 3-निश्चित समय, 4-भलाई, 5-बुराई, 6-दृष्टि के समक्ष।

अल्लाह का ख़ौफ़ और तक़्वा[1] ही फ़ज़ीलत[2] व क़ुर्ब[3] का बाइस[4] है।

(अल्लाह का भय तथा संयम ही श्रेष्ठता व समीपता का कारण है)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को जब यमन के लिए वहाँ का क़ाज़ी या आ़मिल[5] बनाकर रवाना फ़रमाया तो उनको रुख़्सत करते वक़्त (एक लम्बी हदीस में) आपने चन्द नसीहतें और वसिय्यतें उनको फ़रमायीं और इर्शाद फ़रमाया– "ऐ मआ़ज़! शायद मेरी ज़िन्दगी के इस साल के बाद मेरी तुम्हारी मुलाक़ात अब न हो।" यह सुनकर हज़रत मआ़ज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आप सल्ल० के फ़िराक़[6] के सद्मे से रोने लगे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनकी तरफ़ से मुँह फेर कर और मदीना की तरफ़ रुख़ करके फ़रमाया (ग़ालिबन्[7] आप सल्ल० ख़ुद भी आबदीदा[8] हो गए थे और बहुत मुतअस्सिर[9] थे।) मुझसे बहुत ज़्यादा क़रीब और मुझसे तअ़ल्लुक़ रखने वाले वे सब बन्दे हैं जो अल्लाह से डरते हैं (और तक़्वा वाली ज़िन्दगी गुज़ारते हैं) वे जो भी हों और जहाँ कहीं भी हों।

(मुस्नदे अहमद, मआरिफ़ुल् हदीस)

दुनिया से दिल न लगाना और आख़िरत की फ़िक्र रखना

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक कान कटे, मरे हुए बकरी के बच्चे पर गुज़र हुआ, आप सल्ल० ने फ़रमाया कि तुममें कौन पसन्द करता है कि (मुर्दा

1-परहेज़गारी, संयम, 2-श्रेष्ठता, 3-निकटता, 4-साधन, 5-न्यायाधीश, 6-जुदाई, 7-संभवतः, 8-अश्रुपूर्ण नेत्र, 9-प्रभावित।

बच्चा) उसको एक दिर्हम के बदले मिल जाए, लोगों ने अ़र्ज़ किया (दिर्हम तो बड़ी चीज़ है) हम तो इस को पसन्द नहीं करते कि वह हमको किसी अदना[1] सी चीज़ के बदले में भी मिले। आप सल्ल० ने फ़रमाया- "क़सम अल्लाह की! दुनिया अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक इससे भी ज़्यादा ज़लील है[2] जिस क़द्र यह तुम्हारे नज़्दीक है। (मुस्लिम, हयातुल्मुस्लिमीन)

हज़रत इब्ने मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक चटाई पर सोए, फिर उठे तो आपके बदने मुबारक पर चटाई का निशान हो गया था। इब्ने मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया आप हमको इजाज़त दीजिए कि हम आप सल्ल० के लिए बिस्तर बिछा दें और (बिस्तर) बना दें। आप सल्ल० ने फ़रमाया- मुझको दुनिया से क्या वास्ता, मेरी और दुनिया की तो ऐसी मिसाल है जैसे कोई सवार (चलते-चलते) किसी दरख़्त के नीचे साया लेने को ठहर जाए फिर उसको छोड़ कर (आगे) चल दे।

(मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कस्रत से याद किया करो लज़्ज़तों को क़ता करने वाली[3] चीज़ यानी मौत को।

(तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, हयातुल्मुस्लिमीन)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "मौत तोहफ़ा है मोमिन का।" (बैहक़ी)

फ़- (नोट)- सो तोहफ़ा से ख़ुश होना चाहिए और अगर कोई अज़ाब[4] से डरता हो तो उससे बचने की तदबीर[5] करे यानी अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के अहकाम को बजा लाए[6], कोताही पर तौबा करे।

(हयातुल्मुस्लिमीन)

1-तुच्छ, 2-तिरस्कृत, नीच, 3-तोड़ने वाली, 4-कष्ट, 5-उपाय, 6-आदेशों का पालन करे।

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से (एक लम्बी हदीस में) रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब मोमिन दुनिया से आख़िरत को जाने लगता है तो उसके पास सफ़ेद चेहरे वाले फ़िरिश्ते आते हैं, उनके पास जन्नत का कफ़न और जन्नत की ख़ुशबू होती है, फिर मलकुल्मौत आते हैं और कहते हैं कि ऐ जाने-पाक[1] अल्लाह तआ़ला की मग़्फ़िरत[2] और रज़ामन्दी की तरफ़ चल! फिर जब उसको ले लेते हैं तो वे फ़िरिश्ते उनके हाथ में नहीं रहने देते और उसको उस कफ़न और उस ख़ुशबू में रख लेते हैं और उससे मुश्क की सी ख़ुशबू महकती है और उसको ले कर (ऊपर) चढ़ते हैं और (ज़मीन पर रहने वाले) फ़िरिश्तों की जिस जमाअ़त पर गुज़र होता है वे पूछते हैं कि यह पाक रूह कौन है? ये फ़िरिश्ते अच्छे-अच्छे अल्क़ाब[3] से उसका नाम बतलाते हैं कि यह फ़्लाँ इब्ने फ़्लाँ का बेटा है। फिर आसमाने दुनिया तक उसको पहुँचाते हैं और उसके लिए दरवाज़े खुलवाते हैं, और दरवाज़ा खोल दिया जाता है और हर आसमान के मुक़र्रब[4] फ़िरिश्ते अपने क़रीब वाले आसमान तक ले जाते हैं, यहाँ तक कि सातों आसमान तक उसको पहुँचाया जाता है। हक़ तआ़ला फ़रमाते हैं मेरे बन्दे का आमाल नमा इल्लिय्यीन में लिख दो और उसको सवाल व जवाब के लिए ज़मीन की तरफ़ ले जाओ।" सो उसकी रूह उसके बदन में लौटाई जाती है मगर इस तरह नहीं जैसे दुनिया में थी, बल्कि उस आलम[5] के मुनासिब जिस की हक़ीक़त मरने के बाद मालूम हो जाएगी! फिर उसके पास दो फ़िरिश्ते आते हैं और कहते हैं- "तेरा रब कौन है?" वह कहता है- "मेरा रब अल्लाह है।" फिर कहते हैं- "तेरा दीन क्या है?" वह कहता है- "मेरा दीन इस्लाम है" फिर कहते हैं- "ये कौन शख़्स है? जो तुम्हारे पास भेजे गए थे?" वह कहता है- "ये अल्लाह के पैग़म्बर हैं।" एक पुकारने वाला अल्लाह की तरफ़ से आसमान से पुकारता है मेरे बन्दे ने सही जवाब दिया। इसके लिए जन्नत का फ़र्श कर दो और इसको जन्नत की

1-पवित्र आत्मा, 2-मोक्ष, मुक्ति, नजात, 3-उपाधियाँ, 4-निकटवर्ती, 5-लोक।

पोशाक पहना दो, इसके लिए जन्नत की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो, सो उसको जन्नत की हवा और ख़ुशबू आती रहती है। इसके बाद इस हदीस में काफ़िर का हाल बयान किया गया है, जो बिल्कुल इसकी ज़िद[1] है।

(मुस्नदे अहमद, हयातुल्मुस्लिमीन)

मौत की याद

एक तवील[2] हदीस में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी[3] है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन घर से मस्जिद में नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाए तो आप सल्ल० ने लोगों को इस हाल में देखा कि गोया (वहाँ मस्जिद में) वे खिलखिला कर हंस रहे हैं (और यह अलामत थी ग़फ़लत की ज़्यादती की) इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (उनकी उस हालत की इस्लाह[4] के लिए इर्शाद फ़रमाया:-

"मैं तुम्हें बताता हूँ कि अगर तुम लोग लज़्ज़तों को तोड़ देने वाली मौत को ज़्यादा याद किया करो तो वह तुम्हें इस ग़फ़लत में मुब्तला न होने दे, लिहाज़ा मौत को ज़्यादा याद किया करो।" (तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक जवान के पास उसके आख़िरी वक़्त में जब्कि वह दुनिया से रुख़्सत हो रहा था, तशरीफ़ ले गए और आप सल्ल० ने उससे दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम इस वक़्त अपने को किस हाल में पाते हो, उसने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! मेरा यह हाल है कि मैं अल्लाह तआला से रहमत की उम्मीद भी रखता हूँ और इसीके साथ मुझे अपने गुनाहों और सज़ा का भी डर है। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि यक़ीन करो कि जिसके दिल में उम्मीद और ख़ौफ़ की ये दोनों कैफ़ियतें[5] ऐसे आलम में (यानी मौत के वक़्त) जमा हों तो अल्लाह तआला उसको वह ज़रूर अता फ़रमा देंगे जिसकी अल्लाह तआला की रहमत से

1-विपरीत, 2-विस्तृत, 3-उद्धृत, 4-सुधार, 5-दशाएँ।

उम्मीद है और उस अ़ज़ाब से उसे ज़रूर महफ़ूज़[1] रखेंगे जिस का उसके दिल में ख़ौफ़ और डर है। (जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

ख़शिय्यते इलाही[2] के आँसू
(अल्लाह के भय से अश्रुपात)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ व हैबत[3] से जिस मोमिन बन्दे की आँखों से कुछ आँसू निकले, अगर्चे वह मिक़्दार[4] में बहुत कम मसलन मक्खी के सर के बराबर (यानी एक क़तरे के बराबर) हो, फिर वह आँसू बहकर उसके चेहरे पर पहुँच जाए तो अल्लाह तआ़ला उस चेहरे को आतिशे दोज़ख़[5] के लिए हराम फ़रमा देंगे। (सुनने इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

तब्लीग़
(धर्म प्रचार)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक दिन ख़ुत्बा दिया और उसमें कुछ मुसलमानों की तारीफ़ फ़रमाई, फिर फ़रमाया कि ऐसा क्यों है कि कुछ लोग अपने पड़ोसियों में दीन की समझ-बूझ पैदा नहीं करते और उन्हें दीन नहीं सिखाते और उन्हें दीन से नावाक़िफ़[6] रहने के ख़तरनाक[7] नताइज[8] नहीं बताते और उन्हें बुरे कामों से नहीं रोकते और ऐसा क्यों है कि कुछ लोग अपने पड़ोसियों से दीन का इल्म हासिल नहीं करते और दीन की समझ-बूझ पैदा नहीं करते और दीन से ग़ाफ़िल रहने के ख़तरनाक नताइज मालूम नहीं करते। अल्लाह की क़सम! लोग लाज़िमन[9] अपने पड़ोसियों को दीन की तालीम दें, उनके अन्दर दीन की समझ-बूझ पैदा करें, उन्हें नसीहत

1-सुरक्षित, 2-अल्लाह के भय, 3-डर, 4-मात्रा, 5-दोज़ख़ की आग, 6-अपरिचित, 7-भयानक, 8-परिणाम, 9-अनिवार्यता।

करें, उनको अच्छी बातें बताएं और उनको बुरी बातों से रोकें। नीज़[1] लोगों को चाहिए कि लाज़िमन अपने पड़ोसियों से दीन सीखें, दीन की समझ पैदा करें और उनकी नसीहतों को क़बूल करें। (तबरानी, मआरिफ़ुल् हदीस)

एक आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि मैं तब्लीग़े दीन का काम करना चाहता हूँ।

امر بالمعروف و نہی عن المنکر

"अम्र बिल्मारूफ़ व नही अनिल् मुन्कर" (यानी अच्छी बातों का हुक्म देना और बुरी बातों से रोकने) का काम करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि क्या तुम इस मर्तबे पर पहुँच चुके हो? उसने कहा– हाँ, तवक़्क़ो[2] तो है। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि अगर तुम्हें यह अन्देशा न हो कि क़ुरआन की तीन आयतें रुस्वा[3] कर देंगी तो ज़रूर दीन की तब्लीग़ का काम करो। उसने कहा कि वे कौन-सी तीन आयतें हैं? इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया– पहली आयत यह है:-

﴿ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنسَوْنَ أَنفُسَكُمْ ﴾ سورة بقرة آية: ٤٤

अतअमुरूनन्नास बिल् बिर्रि व तन्सौन अन्फ़ुसकुम

(सूरए बक़रा, रुकू 5, आयत: 44, पारा, 1)

अनुवाद: "क्या तुम लोगों को नेकी का वाज़ कहते हो[4] और अपने को भूल जाते हो।" इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा, क्या इस आयत पर अच्छी तरह अमल कर लिया है? उसने कहा, 'नहीं'।

और दूसरी आयत:

﴿ لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ٥﴾ سورة الصف آية: ٢

'लिम तक़ूलून मा ला तफ़अलून' (सूरतुस्सफ़, रुकू, 1, आयत: 2, पारा, 28)

अनुवाद: तुम क्यों कहते हो वह बात जिसको करते नहीं। तो इस

1-इसके अतिरिक्त, 2-आशा, 3-अपमानित, 4-उपदेश देना।

पर अच्छी तरह अमल कर लिया? उसने कहा, 'नहीं'।

और तीसरी आयत:

﴿ مَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْهَاكُمْ عَنْهُ ﴾ سورة هود آية: ٨٨

मा उरीदु अन उख़ालिफ़कुम इला मा अन्हाकुम अन्हु।

(सूरए हूद, रुकू 8, आयत: 88, पारा,

अनुवाद: और मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे बर ख़िलाफ़[1] उन क करूँ जिनसे तुमको मना करता हूँ।

शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से कहा- "जिन बुरी बातों से मैं तुम्हें मना करता हूँ उनको बढ़कर ख़ुद करने लगूँ, मेरी निय्यत यह नहीं बल्कि मैं तो उनसे बहुत दूर रहूँगा। (तुम मेरे क़ौल[2] और अमल में तज़ाद[3] न देखोगे)"

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पूछा कि इस आयत पर अच्छी तरह अमल कर लिया है? उसने कहा- 'नहीं'! तो फ़रमाया- "जाओ पहले अपने को नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको! यह मुबल्लिग़[4] की पहली मन्ज़िल है।" (मआरिफ़ुल हदीस, अद्दावत)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है- "उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम लोग लाज़िमन्[5] नेकी का हुक्म देते रहो और बुराई से रोकते रहो, वर्ना अल्लाह जल्ल शानुहू अन्क़रीब[6] तुम पर ऐसा अज़ाब भेजेगा कि फिर तुम पुकारते रहोगे और कोई सुनवाई नहीं होगी। (तिर्मिज़ी)

हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हर हफ़्ते एक मर्तबा वाज़ कहा करो और दो दफ़ा कर सकते हो और तीन मर्तबा से ज़्यादा वाज़

1-प्रतिकूल, 2-कथन, 3-विरोध, 4-दीन का प्रचार करने वाला, 5-अनिवार्यता, 6-बहुत जल्दी।

मत कहना और इस क़ुरआन से लोगों को मुतनफ़्फ़िर[1] न करना और ऐसा कभी न हो कि तुम लोगों के पास पहुँचो और वे अपनी किसी बात में मशग़ूल[2] हों और तुम अपना वाज़ शुरू कर दो और उनकी बात काट दो, अगर तुम ऐसा करोगे तो उनको वाज़ व नसीहत से मुतनफ़्फ़िर कर दोगे, बल्कि ऐसे मौक़े पर ख़ामूशी इख़्तियार करो और जब उनके अन्दर ख़्वाहिश देखो, और वह तुमसे मुतालबा करें तो फिर वाज़ कहो और देखो, मुसज्जा[3] और मुक़फ़्फ़ा[4] इबारतें बोलने से बचो, क्योंकि मैंने नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और उनके अस्हाब को देखा है कि वे तकल्लुफ़ के साथ इबारत-आराई[5] नहीं करते थे। (बुख़ारी)

दुनिया की महब्बत और मौत से भागना

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मेरी उम्मत पर वह वक़्त आने वाला है जब दूसरी क़ौमें लुक़्मा-ए-तर[6] समझकर तुम पर इस तरह टूट पड़ेंगी जिस तरह खाने वाले दस्तरख़्वान पर टूट पड़ते हैं। किसी ने पूछा या रसूलल्लाह! क्या उस ज़माने में हमारी तादाद[7] इस क़द्र कम हो जाएगी कि हमें निगलने के लिए क़ौमें मुत्तहिद[8] होकर हम पर टूट पड़ेंगी। इर्शाद फ़रमाया- नहीं, उस वक़्त तुम्हारी तादाद कम न होगी, अलबत्ता तुम सैलाब में बहने वाले तिन्कों की तरह बेवज़न होगे और तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा रोब निकल जाएगा और तुम्हारे दिलों में बुज़दिली और पस्तहिम्मती पैदा हो जाएगी।" इस पर एक आदमी ने पूछा, यह बुज़दिली क्यों पैदा हो जाएगी?

फ़रमाया- "इस वजह से कि तुम दुनिया से महब्बत करने लगोगे और मौत से भागने और नफ़रत करने लगोगे।"

(अबू दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-भागने वाला, विरक्त, 2-व्यस्त, 3-अलंकृत (भाषा का प्रयोग), 4-अनुप्रासात्मक भाषा, अलंकारयुक्त भाषा, 5-शब्दाडंबर, 6-चिकना निवाला, 7-संख्या, 8-संगठित।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- एक ज़माना लोगों पर ऐसा आएगा जिस में दीन पर सब्र करने वाला शख़्स उस आदमी के मानिन्द[1] होगा जिसने अपनी मुट्ठी में अंगारा ले लिया हो (यानी जिस तरह अंगारे को हाथ में रखना दुश्वार[2] है इसी तरह दीन पर क़ाइम रहना भी दुश्वार होगा।) (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

जामे[3] और अहम नसीहतें और वसिय्यतें

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी[4] है, बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे मेरे रब ने इन नौ बातों का ख़ास तौर पर हुक्म फ़रमाया है कि:-

1- एक अल्लाह से डरना ख़ल्वत[5] में और जल्वत[6] में।

2- अद्ल व इन्साफ़ की बात कहना गुस्से में और रिज़ामन्दी में (यानी ऐसा न हो कि जब किसी से नाराज़ और उस पर गुस्सा हो तो उसकी हक़तल्फ़ी[7] और उसके साथ बेइन्साफ़ी की जाए और जब किसी से दोस्ती और रिज़ामन्दी हो तो उसकी बेजा हिमायत[8] और तरफ़दारी की जाए, बल्कि हर हाल में अद्ल व इन्साफ़ और एतिदाल की राह[9] पर चला जाए)।

3- और हुक्म फ़रमाया मियाना रवी[10] पर क़ाइम रहने का, ग़रीबी व नादारी[11] और फ़राख़दस्ती[12] व दौलतमंदी, दोनो हालतों में (यानी जब अल्लाह तआला नादारी और ग़रीबी में मुब्तला करे तो बेसब्री और परेशान हाली का इज़हार न हो और जब वह फ़राख़दस्ती और ख़ुशहाली नसीब फ़रमाए तो बन्दा अपनी हक़ीक़त को भूल कर गुरूर[13] और सरकशी[14] में

1-समान, 2-कठिन, 3-व्यापक, संगृहीत 4-उद्धृत, 5-एकान्त, 6-भीड़, मजमा, 7-हक़ मारना, 8-अनुचित समर्थन, 9-मध्यम मार्ग, 10-बीच का रास्ता, 11-दरिद्रता, 12-समृद्धि, 13- अहंकार, 14-उच्छृंखलता, नाफ़रमानी।

मुब्तला न हो जाए) अलग़रज़[1] इन दोनों इम्तिहानी हालतों में इफ़रात[2] व तफ़रीत[3] से बचा जाए और अपनी रविश[4] दरमियानी रखी जाए। यही वह मियाना रवी है, जिसका अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुक्म फ़रमाया। (आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :-

4- मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं उन अहले क़राबत[5] के साथ रिश्ता जोड़ूँ और उनके हुक़ूक़े क़राबत[6] अच्छी तरह अदा करूँ जो मुझसे रिश्ता-ए-क़राबत तोड़ें और मेरे साथ बदसुलूकी करें।

5- और यह कि मैं उन लोगों को भी दूँ जिन्होंने मुझे महरूम[7] रखा हो और मेरा हक़ मुझे न दिया हो।

6- और यह कि मैं उन लोगों को मुआफ़ कर दूँ जिन्होंने मुझ पर ज़ुल्म किया हो और मुझे सताया हो।

7- मुझे हुक्म दिया है कि मेरी ख़ामोशी में तफ़क्कुर[8] हो (यानी जिस वक़्त मैं ख़ामोश हूँ तो उस वक़्त सोचने की चीज़ें सोचूँ और जो चीज़ें क़ाबिले तफ़क्कुर हैं उनमें ग़ौर व फ़िक्र करूँ, मसलन अल्लाह तआला की सिफ़ात[9] और उसकी आयतें और मसलन यह कि अल्लाह तआला का मेरे साथ मुआमला क्या है और उसका मुझे क्या हुक्म है और मेरा मुआमला अल्लाह के साथ और उसके अहकाम के साथ क्या है और क्या होना चाहिए और मेरा अन्जाम क्या होने वाला है और मसलन यह कि अल्लाह तआला के ग़ाफ़िल बन्दों को अल्लाह के साथ किस तरह जोड़ा जाए। अलग़रज़ ख़ामोशी में इसी तरह का तफ़क्कुर हो।

8- और मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मेरी गुफ़्तगू[10] ज़िक्र हो (यानी मैं जब भी बोलूँ और जो कुछ भी बोलूँ उसका अल्लाह से तअल्लुक़ हो, ख़्वाह[11] इस तरह कि वह अल्लाह की सना[12] व सिफ़ात[13] हो या उसके

1-सारांशता, 2-प्राचुर्य, बहुत ज़्यादा, 3-बहुत कम, 4-चाल, 5-सम्बन्धियों, 6-निकट सम्बन्धियों के अधिकार, 7-वंचित, 8-चिंता, सोच, 9-गुण, 10-बात-चीत, 11-चाहे, 12-प्रशंसा, 13-गुण।

अहकाम की तालीम व तब्लीग़[1] हो या इस तरह कि उसमें अल्लाह के अहकाम और हुदूद की रिआयत और निगहदाश्त[2] हो। इन सब सूरतों में जो गुफ़्तगू होगी वह ज़िक्र के क़बील[3] से होगी) और

9- मुझे हुक्म है कि मेरी नज़र इबरत वाली नज़र हो (यानी मैं जिस चीज़ को देखूँ उससे सबक़ और इब्रत हासिल करूँ) और लोगों को हुक्म करूँ अच्छी बातों का। (मआरिफुल् हदीस, रज़ीन)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (एक बार) मुझे दस बातों की नसीहत फ़रमाई। फ़रमाया:-

1- अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करो, अगर्चे तुमको क़त्ल कर दिया जाए, और

2- अपने माँ-बाप की नाफ़रमानी न करो, अगरचे वे तुमको हुक्म दें कि अपने अहलो-इयाल[4] और मालो-मनाल[5] छोड़ के निकल जाओ।

3- कभी एक फ़र्ज़ नमाज़ भी क़सदन[6] न छोड़ो, क्योंकि जिसने एक फ़र्ज़ नमाज़ क़सदन छोड़ी उसके लिए अल्लाह का अहद[7] और ज़िम्मा नहीं रहा।

4- हरगिज़ कभी शराब न पियो, क्योंकि शराब नोशी सारे फ़वाहिश[8] की जड़ और बुनियाद है। (इसलिए इसको उम्मुल् ख़बाइस[9] कहा गया है।)

5- हर गुनाह से बचो, क्योंकि गुनाह की वजह से अल्लाह तआला का गुस्सा नाज़िल होता है।

6- जिहाद के मारके[10] से पीठ फेर कर न भागो, अगर्चे कुश्तों के पुश्ते[11] लग रहे हों।

7- और जब तुम किसी जगह लोगों के साथ रहते हो और वहाँ

1-प्रचार, 2-देख-भाल, 3-प्रकार, 4-परिवार, 5-धन-सम्पत्ति, 6-जानबूझकर, 7-प्रतिज्ञा, 8-बुराईयों, 9-बुराईयों की जननी, 10-युद्धक्षेत्र, 11-लाशों के ढेर।

किसी वबाई मरज़[1] की वजह से मौत का बाज़ार गर्म हो जाए तो तुम वहीं जमे रहो। (जान बचाने के ख़्याल से वहाँ से मत भागो)

8- और अपने अह्लो-इयाल[2] पर अपनी इस्तिताअ़त[3] और हैसियत के मुताबिक़ ख़र्च करो (न बुख़्ल[4] से काम लो कि पैसा पास होते हुए उनको तक्लीफ़ हो और न ख़र्च करने में अपनी हैसियत से आगे बढ़ो।)

9- और अदब देने के लिए उन पर (हस्बे ज़रूरत[5] व मौक़ा) सख़्ती भी किया करो।

10- और उनको अल्लाह से डराया भी करो।

(मुस्नदे अहमद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी[6] है कि एक शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि मुझे नसीहत फ़रमाइए और मुख़्तसर[7] फ़रमाइए (ताकि याद रखना आसान हो।)

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- (एक बात तो यह याद रखो) "जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो उस शख़्स की सी नमाज़ पढ़ो जो सबको अलविदा कहने वाला और सबसे रुख़्सत होने वाला हो (यानी दुनिया से जाने वाले आदमी की नमाज़ जैसी होनी चाहिए, तुम हर नमाज़ वैसी ही पढ़ने की कोशिश करो) और (दूसरी बात यह याद रखो) ऐसी कोई बात ज़बान से न निकालो जिसकी कल तुमको माज़िरत[8] और जवाबदेही करनी पड़े। (यानी बात करते वक़्त हमेशा इसका ख़्याल रखो कि ऐसी बात मुँह से न निकले जिसकी जवाबदेही किसी के सामने इस दुनिया में या क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला शानुहू के हुज़ूर में करनी पड़े) और (तीसरी बात यह याद रखो) आदमियों के पास और उनके हाथ में जो कुछ नज़र आता है, उससे अपने आपको क़तअ़न् मायूस[9] कर लो (यानी तुम्हारी उम्मीदें और तवज्जोह[10]

1-संक्रामक रोग; महामारी, 2-पत्नी-संतान, 3-शक्ति, 4-कृपणता, 5-आवश्यकतानुसार, 6-उद्धृत, 7-संक्षिप्त, 8-क्षमा-याचना, 9-बिल्कुल निराश, 10-ध्यान।

का मर्कज़[1] सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल्-आलमीन हो और मख़्लूक़ की तरफ़ से अपनी उम्मीदों को बिल्कुल मुन्क़तअ़ करो[2]) (मुस्नदे अहमद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कि मैं तुम लोगों को अल्लाह तआ़ला से डरने और अमीरे वक़्त का हुक्म सुनने और इताअ़त[3] करने की वसिय्यत करता हूँ, अगर्चे वह हाकिम हबशी क्यों न हो। तुममें जो शख़्स मेरे बाद ज़िन्दा रहेगा अ़न्क़रीब वह इख़्तिलाफ़े कसीर[4] देखेगा। पस ऐसे वक़्त तुम लोग मेरे और मेरे रुश्दो-हिदायत याफ़्ता[5] ख़ुल्फ़ा[6] के तरीक़े को लाज़िम पकड़ना और उन तरीक़ों को ख़ूब मज़्बूत पकड़ना बल्कि दांतों से पकड़ना और बिद्अ़त[7] से बचते रहना, क्योंकि हर जदीद[8] अम्र[9] (दीन में जिसकी कोई सनदे शरई[10] न हो) बिद्अ़त है और हर बिद्अ़त गुमराही है।

(मिश्कात, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत मआ़ज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया कि हज़रत! मुझे ऐसा अ़मल बता दीजिए जिसकी वजह से मैं जन्नत में पहुँच जाऊँ और दोज़ख़ से दूर कर दिया जाऊँ।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने बहुत बड़ी बात पूछी है, लेकिन (बड़ी और भारी होने के बावजूद) वह उस बन्दे के लिए आसान है, जिसके लिए अल्लाह तआ़ला उसको आसान कर दे (और तौफ़ीक़ दे दे) लो सुनो!

सबसे मुक़द्दम[11] बात तो यह है कि दीन के इन बुनियादी मुतालबों[12] को फ़िक्र और एहतिमाम से अदा करो (अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो) और अच्छे तरीक़े और दिल की तवज्जोह[13] के साथ नमाज़ अदा किया करो और ज़कात दिया करो और रमज़ान के रोज़े रखा करो और बैतुल्लाह का हज करो।

1-केन्द्र, 2-विच्छिन्न करो, 3-आज्ञा पालन, 4-अत्यधिक मतभेद, 5-हिदायत पाया हुआ, शिक्षा-दीक्षा पाया हुआ, 6-ख़लीफ़ा, 7-धार्मिक कर्म में नवीन बात, 8-नवीन, 9-कार्य, 10-इस्लामी नियम सम्बन्धी प्रमाण, 11-मुख्य विशेष, 12-मांगों, 13-ध्यान।

फिर फ़रमया, क्या मैं तुम्हें ख़ैर[1] के दरवाज़े भी बता दूँ? (गोया जो कुछ आपने बतलाया यह तो इस्लाम के अरकान और फ़राइज़ थे। इसके बाद आप सल्ल० ने फ़रमया तुम चाहो तो मैं तुम्हें ख़ैर के और दरवाज़े बतलाऊँ। ग़ालिबन[2] इससे आप की मुराद नफ़्ल इबादात थीं, चुनांचे[3] हज़रत मआज़ की तलब[4] देख कर आप ने उनसे फ़रमाया) रोज़ा (गुनाहों और दोज़ख़ की आग से बचाने वाली) सिपर[5] और ढाल है और सद्क़ा गुनाह को (और गुनाह से पैदा होने वाली आग को) इस तरह बुझा देता है जिस तरह पानी आग को बुझा देता है और रात के दरमियानी हिस्से की नमाज़ (यानी तहज्जुद की नमाज़ का भी यही हाल है और अब्वाबे ख़ैर[6] में इस का ख़ासुल्ख़ास[7] मक़ाम[8] है। इसके बाद आपने तहज्जुद और सद्क़े की फ़ज़ीलत के सिलसिले में सूरए सज्दा की यह आयत पढ़ी:-

﴿ تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِىَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○﴾ سورة السجدة آية: ١٦-١٧

ततजाफ़ा जुनूबुहुम् अनिल मज़ाजिइ यद्ऊन रब्बहुम ख़ौफ़ंव् व तमअंव् व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून ○ फ़ला तअ्लमु नफ़्सुम्माउख़्फ़िय लहुम मिन् क़ुर्रति अअ्युनिन् जज़ाअम् बिमा कानू यअ्मलून ○

अनुवाद: शब[9] को उनके पहलू[10] ख़्वाबगाहों[11] से अलाहदा होते हैं (नमाज़ या दूसरे ज़िक्रों के लिए) इस तौर पर कि वे लोग अपने रब को (सवाब की) उम्मीद और (अज़ाब के) ख़ौफ़ से पुकारते हैं और हमारी दी हुई चीज़ों में से ख़र्च करते हैं, सो किसी शख़्स को ख़बर नहीं कि क्या-क्या आँखों की ठण्डक का सामान ऐसे लागों के लिए ख़ज़ान-ए-ग़ैब में मौजूद है। यह उनके (निक आमाल) का सिला[12] मिला है।

1-भलाई, 2-संभवतः, 3-अतः, 4-चाहत, 5-कवच, 6-भलाई के दरवाज़ों, 7-प्रमुख, विशिष्ट, 8-स्थान, 9-रात्रि, 10-दिशा, समीपता, 11-बिस्तरों, 12-बदला।

फिर आप सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें मुआमला का (यानी दीन का) सर और उसका उमूद यानी सुतून[1] और उसकी बुलन्द चोटी बता दूँ? (मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं) मैंने अर्ज़ किया, हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! ज़रूर बता दें !

आप सल्ल० ने फ़रमाया- "दीन का सर इस्लाम है और उसका सुतून नमाज़ है और उसकी बुलन्द चोटी जिहाद है।"

फिर आप सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें वह चीज़ भी बता दूँ जिस पर गोया इन सबका दारोमदार है (और जिसके बिना ये सब हेच[2] और बेवज़न[3] हैं। मआज़ रज़ि० कहते हैं) मैंने अर्ज़ किया, हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह चीज़ भी ज़रूर बतला दीजिए। पस आपने अपनी ज़बान पकड़ी और फ़रमाया- "इसको रोको (यानी अपनी ज़बान क़ाबू में रखो। यह चलने में बेबाक[4] और बेएहतियात न हो) (मआज़ रज़ि० कहते हैं) मैंने अर्ज़ किया हज़रत सल्ल०! हम जो बात करते हैं क्या उन पर भी हमसे मुआख़ज़ा[5] होगा?

आप सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मआज़! तुझे तेरी माँ न जनती (अरबी मुहावरा के मुताबिक़ यहाँ प्यार का कलिमा है) आदमियों को दोज़ख़ में उनके मुँह के बल या फ़रमाया कि उनकी नाकों के बल (ज़्यादा तर) उनकी ज़बानों की बेबाकाना[6] बातें ही डलवायेंगी।

(मुस्नदे अहमद, जामे तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा, मआरिफुल हदीस)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुख़ातब करके फ़रमाया कि मैं तुम्हें ऐसी दो ख़स्लतें[7] बता दूँ जो पीठ पर बहुत हल्की हैं (उनके इख़्तियार करने में आदमी पर कुछ ज़्यादा बोझ नहीं पड़ता) और अल्लाह की मीज़ान[8] में वह बहुत भारी होंगी। अबू ज़र

1-स्तम्भ, 2-व्यर्थ, 3-महत्त्वहीन, 4-निडर, मुँहफट, 5-अपराध की पकड़, 6-बेधड़क, 7-आदतें, 8-तराज़ू।

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्ल० ये दोनों ख़स्लतें ज़रूर बतला दीजिए।

आप सल्ल० ने फ़रमाया- ज़्यादा ख़ामोश रहने की आदत और दूसरे हुस्ने अख़्लाक़[1]। क़सम उस पाक ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मख़्लूक़ात के आमाल में ये दोनों चीज़ें बेमिसाल[2] हैं।

(शोबुल्ईमान, लिल्बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

इम्रान बिन हित्तान ताबई से रिवायत है कि मैं एक दिन हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने उनको मस्जिद में इस हाल में देखा कि एक काली कमली लपेटे हुए अकेले बैठ हैं। मैंने अर्ज़ किया- ऐ अबू ज़र! यह तन्हाई और यकसूई[3] कैसी है? (यानी आपने इस तरह अकेले और सबसे अलग-थलग रहना क्यों इख़्तियार फ़रमाया है ?) उन्होंने जवाब दिया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, आप सल्ल० फ़रमाते थे कि ''बुरे साथियों की हमनशीनी[4] से अकेले रहना अच्छा है और अच्छे साथी के साथ बैठना तन्हाई से बेहतर है और किसी को अच्छी बातें बताना ख़ामोश रहने से बेहतर है और बुरी बातें बताने से बेहतर है ख़ामोश रहना।''

(शोबुल्ईमान लिल्बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मुझे मेरे महबूब दोस्त सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने सात बातों का ख़ास तौर से हुक्म फ़रमाया:-

1- मसाकीन[5] और ग़ुरबा[6] से मुहब्बत रखने और उनसे क़रीब रहने का।

2- और आप सल्ल० ने हुक्म फ़रमाया कि दुनिया में उन लोगों पर नज़र रखूँ जो मुझ से नीचे दर्जे के हैं (यानी जिनके पास दुनिया की ज़िन्दगी का सामान मुझसे भी कम है।) और उन पर नज़र न करूँ जो मुझ से ऊपर

1-सद्व्यवहार, 2-अनुपम, 3-अकेलापन, 4-संगत, 5-असहाय, 6-दरिद्रों।

के दर्जे के हैं (यानी जिनको दुनिया की ज़िन्दगी का सामान मुझ से ज़्यादा दिया गया है)।

और बाज़[1] दूसरी हदीसों में है कि ऐसा करने से बन्दे में सब्र व शुक्र की सिफ़त पैदा होती है और यह ज़ाहिर भी है। आगे हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं, आपने हुक्म दिया:-

3- कि मैं अपने अहले क़राबत[2] के साथ सिलए रहमी[3] करूँ और क़राबती रिश्तों को जोड़ूँ (यानी उनके साथ वह मुआ़मला और सुलूक करता रहूँ जो अपने अ़ज़ीज़ और क़रीबों के साथ करना चाहिए) अगर्चे वह मेरे साथ न करें और आप ने मुझे हुक्म दिया:-

4- किसी आदमी से कोई चीज़ न मांगो (यानी अपनी हर हाजत[4] के लिए अल्लाह तआ़ला ही के सामने हाथ फैलाऊँ और उसके सिवा किसी के दर का साइल[5] न बनूँ)।

5- मैं हर मौक़े पर हक़ बात कहूँ अगर्चे वह लोगों के लिए कड़वी हो (और उनके अग़्राज़[6] और ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ होने की वजह से उन्हें बुरी लगे) और आपने मुझे हुक्म फ़रमाया:-

6- कि मैं अल्लाह के रास्ते में कभी मलामत[7] करने वाले की मलामत से न डरूँ (यानी दुनिया वाले अगर्चे मुझे बुरा कहें, लेकनि मैं वही कहूँ और वही करूँ जो अल्लाह का हुक्म हो और जिससे अल्लाह राज़ी हो और किसी के बुरा कहने की हरगिज़ परवाह न करूँ) और आपने मुझे हुक्म फ़रमाया:-

7- कि मैं कलिमा

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

"ला हौ-ल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह" कस्रत से पढ़ा करूँ, क्योंकि

1-अन्य, 2-क़रीब वाले नातेदार, 3-अपने परिवार वालों से प्रेम रखना और यथाशक्ति उनकी सहायता करना, 4-आवश्यकता, 5-सुवाल करने वाला, 6-इच्छाएँ 7-निन्दा, भर्त्सना।

ये सब बातें उस ख़ज़ाने से हैं जो अ़र्श के नीचे हैं (यानी ये उस ख़ज़ाने के क़ीमती जवाहरात हैं जो अ़र्शे इलाही के नीचे हैं और जिनको अल्लाह ही जिन बन्दों को चाहता है अ़ता फ़रमाता है किसी और की वहाँ दस्तरस[1] नहीं है।)

(मुस्नदे अहमद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- क़ियामत के दिन हिसाब के लिए बारगाहे-इलाही[2] में जब पेशी होगी तो आदमी के पांव अपनी जगह से सरक न सकेंगे, जब तक कि उससे पाँच चीज़ों का सवाल न कर लिया जाए :-

1- अव्वल यह कि उसकी पूरी ज़िन्दगी और उम्र के बारे में कि किन कामों में गुज़ारी।

2- और दूसरे उसकी जवानी (और जवानी की क़ुव्वतों) के बारे में कि किन मशाग़िल[3] में जवानी और उसकी क़ुव्वतों को बोसीदा[4] और पुराना किया।

3- तीसरे मालो-दौलत के बारे में कि कहाँ से और किन तरीक़ों और किन रास्तों से उसको हासिल किया।

4- और उस दौलत को किन कामों में और किन राहों में सर्फ़[5] किया।

5- पाँचवां सवाल यह होगा कि जो कुछ मालूम था उसके बारे में क्या अ़मल किया। (जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि चार बातें और ख़स्लतें ऐसी हैं कि अगर तुमको ये नसीब हो जाएं तो फिर दुनिया (और

1-पहुँच, 2-अल्लाह के दरबार, 3-व्यस्तताओं, कार्यों, 4-नष्ट, जीर्ण-शीर्ण, 5-ख़र्च।

इसकी नेअ़मतों) के फ़ौत[1] हो जाने और हाथ न आने में कोई मुज़ायक़ा[2] और न घाटा :-

1- अमानत की हिफ़ाज़त,

2- बातों में सच्चाई,

3- हुस्ने अख़्लाक़[3],

4- खाने में एहतियात और परहेज़गारी।

(मुस्नदे अहमद, बैहक़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

अ़म्र बिन मैमून औदी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक शख़्स को नसीहत करते हुए फ़रमाया, पाँच हालतों को दूसरी पाँच हालतों के आने से पहले ग़नीमत जानो और उनसे जो फ़ायदा उठाना चाहो उठा लो-

1- ग़नीमत जानो जवानी को बुढ़ापे के आने से पहले।

2- ग़नीमत जानो तनदुरुस्ती को बीमार होने से पहले।

3- ग़नीमत जानो ख़ुशहाली और फ़राख़दस्ती[4] को नादारी[5] और तंगदस्ती[6] से पहले।

4- ग़नीमत जानो फ़ुर्सत और फ़राग़त[7] को मशग़ूलियत[8] से पहले।

5- ग़नीमत जानो ज़िन्दगी को मौत आने से पहले।

(जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-ख़त्म, 2-आपत्ति, 3-सद्व्यवहार, 4-समृद्धि, 5-दरिद्रता, 6-हाथ ख़ाली होना 7-अवकाश, 8-व्यस्तता।

औरतों को नसीहत

इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने (एक बार) फ़रमाया- "ऐ औरतों की जमाअत तुम (खास तौर पर) सदक़ा दिया करो और ज़्यादा इस्तिग़फ़ार[1] किया करो, क्योंकि दोज़खियों में ज़्यादा तादाद[2] मैंने औरतों की देखी है।"

उनमें एक होशियार औरत बोली- या रसूलल्लाह सल्ल० हमने क्या क़ुसूर किया है- कि हम दोज़ख़ में ज़्यादा जाएंगी?

आप सल्ल० ने फ़रमाया- "तुम्हें (बाहम गुफ़्तगू[3] में) लानत करने की ज़्यादा आदत होती है और तुम अपने शौहर की भी बहुत नाशुक्री करती हो। मैंने तुम जैसा दीन और अक़्ल में नाक़िस[4] होकर फिर एक दानिशमंद[5] शख़्स पर ग़ालिब[6] आ जाने वाला किसी को नहीं देखा।"

नज़्र[7] (मिन्नत)

हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते सुना कि नज़्र दो क़िस्म की है। एक तो वह नज़्र जो अल्लाह तआला की बन्दगी और ताअत[8] के लिए मानी जाए। इसका पूरा करना ज़रूरी है, इसलिए कि यह खालिस अल्लाह तआला के लिए है और दूसरी नज़्र वह है जो अल्लाह तआला की नाफ़रमानी और गुनाह के लिए की जाए। यह नज़्र शैतान के लिए है और इसका पूरा करना जाइज़ नहीं और इस क़िस्म की नज़्र का कफ़्फ़ारा[9] दे जो क़सम का कफ़्फ़ारा दिया जाता है। (नसाई, मिश्कात)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ग़ैर मुअय्यन[10] चीज़ की नज़्र माने तो उसका कफ़्फ़ारा क़सम का कफ़्फ़ारा है और

1-क्षमा याचना, 2-अधिक संख्या, 3-परस्पर बात-चीत, 4-कम, 5-बुद्धिमान, 6-विजेता, 7-मिन्नत, चढ़ावा, 8-आज्ञापालन, 9-प्रायश्चित्त, 10-अनिश्चित, सन्देहयुक्त।

जो शख़्स किसी गुनाह की नज़्र माने उसका कफ़्फ़ारा क़सम का कफ़्फ़ारा है, और जो शख़्स ऐसी चीज़ की नज़्र माने जिसका पूरा करना उससे मुम्किन न हो तो उसका कफ़्फ़ारा क़सम का कफ़्फ़ारा है और जो शख़्स ऐसी चीज़ की नज़्र माने जिसको पूरा कर सके तो उसको पूरा करे।

(अबू दाऊद, इब्ने माजा, मिश्कात)

क़सम

हज़रत इब्ने उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जिस शख़्स ने क़सम खाई और उसके साथ "इन्शा अल्लाहु तआ़ला" (إن شاء الله تعالى) भी कहा तो क़सम के ख़िलाफ़ करने में उस पर गुनाह नहीं।

(तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसाई)

हज़रत इब्ने उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने ग़ैरुल्लाह[1] की क़सम खाई, उसने शिर्क किया। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

फ़ाल[2]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि बदशगूनी[3] कोई चीज़ नहीं है। बेहतरीन चीज़ फ़ाले नेक[4] है। लोगों ने अ़र्ज़ किया, फ़ाल क्या चीज़ है, आप सल्ल० ने फ़रमाया- "वह अच्छा कलिमा[5] जिसको तुममें से कोई शख़्स किसी शख़्स से या किसी ज़रिये से सुने।"

(बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात)

हज़रत उ़र्वह बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने शगूने बद का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने ज़िक्र किया, आप सल्ल० ने फ़रमाया- "बेहतरीन चीज़ फ़ाले नेक है और शगूने बद किसी

1-अल्लाह के अतिरिक्त, 2-शकुन, 3-अपशकुन, 4-शुभ शकुन, 5-शब्द।

मुसलमान को उसके मक़सद और इरादे से न रोकें। फिर जब तुममें से कोई शख़्स किसी ऐसी बात को देखे जिसको वह बुरा ख़्याल करता है यानी बद शगून तो यह कहे कि–

اَللّٰهُمَّ لَايَأْتِىْ بِالْحَسَنَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَايَدْفَعُ السَّيِّاٰتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۔ ابوداؤد، مشکوٰة

अल्लाहुम्म ला यअ्ती बिल् हसनाति इल्ला अन्त व ला यद्फ़उस्सय्यिआति इल्ला अन्त वला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहि। (अबू दाऊद, मिश्कात)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! कोई भलाई नहीं करता मगर तू ही और कोई बुराई ख़त्म नहीं करता मगर तू ही और अल्लाह के सिवा न कोई ताक़त है और न कोई क़ुव्वत।

ख़्वाब (स्वप्न)

हज़रत अबू बज़ील उक़ैली फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन का ख़्वाब नुबुव्वत का 46वां हिस्सा है और ख़्वाब जब तक उसको बयान न किया जाए परों के पाँव पर होता है। (यानी ग़ैर-मुस्तक़िल[1] और ग़ैर क़ाइम) लेकिन जब उसको बयान कर दिया जाए (यानी जब उसकी ताबीर भी बयान कर दी जाए) तो ख़्वाब वाक़े[2] हो जाता है। रावी का बयान है कि मेरा ख़्याल है कि आपने यह भी फ़रमाया कि ख़्वाब किसी के सामने बयान न करो मगर दोस्त या अक़्लमंद आदमी के सामने। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

इल्मे दीन के शुरू करने के दिन की फ़ज़ीलत[3]

हदीस में आया है कि इल्म दोशम्बा[4] के दिन तलब करो। इससे इल्म हासिल करने में सहूलत होती है। यही मज़्मून जुमअ़रात के मुतअ़ल्लिक़ भी आया है। बाज़ हदीसों में बुध के दिन के मुतअ़ल्लिक़ भी वारिद हुआ है[5]।

1-अस्थायी, 2-घटित, 3-महत्त्व, 4-सोमवार, 5-आया है।

साहिबे हिदाया से मन्कूल है[1] कि वह किताब के शुरू करने का बुध के दिन एहतिमाम किया करते थे और फ़रमाते थे कि जो चीज़ बुध को शुरू की जाती है वह चीज़ इख़्तिताम[2] को पहुँचती है।

(शर्ह तालीमुल् मुतअल्लिम, बिहिश्ती ज़ेवर)

किसी सुन्नत का एहया[3]

हदीस शरीफ़ में है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कोई चालीस हदीसें मेरी उम्मत को पहुँचा दे तो मैं ख़ास तौर पर उसकी सिफ़ारिश करूँगा। (जामे सग़ीर)

फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जिस वक़्त मेरी उम्मत में दीन का बिगाड़ पड़ जाएगा उस वक़्त जो शख़्स मेरा तरीक़ा थामे रहेगा उसको सौ शहीदों के बराबर सवाब मिलेगा। (बिहिश्ती ज़ेवर)

वसिय्यत नबी-ए-रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि मैं तुम लोगों में ऐसी चीज़ छोड़े जाता हूँ कि अगर तुम उसको थामे रहो तो कभी न भटकोगे। एक तो अल्लाह तआला की किताब (क़ुरआन मजीद) दूसरी नबी की सुन्नत यानी हदीस। (बिहिश्ती ज़ेवर)

1-उद्धृत, 2-समाप्ति, 3-ज़िन्दा करना।

बाब-2 (द्वितीय परिच्छेद) इबादात

नमाज़ व मुतअल्लिक़ाते नमाज़

(नमाज़ व नमाज़ से सम्बन्धित नियम)

तहारत (पवित्रता)

तहारत जुज़्वे ईमान है (पवित्रता ईमान का हिस्सा है)

अबू मालिक अश्अरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तहारत और पाकीज़गी जुज़्वे ईमान है और कलिमा الْحَمْدُ لِلّٰهِ (*अल्हम्दु लिल्लाह*) मीज़ाने अमल[1] को भारी कर देता है। और سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ (*सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाह*) भर देते हैं आसमानों को और ज़मीन को। नमाज़ नूर है और सद्क़ा दलील व बुर्हान[2] है और सब्र उजाला है और क़ुरआन या तो हुज्जत[3] है तुम्हारे हक़ में या हुज्जत है तुम्हारे ख़िलाफ़। हर आदमी सुबह करता है फिर वह अपनी जान का सौदा करता है, फिर या तो उसे निजात[4] दिला देता है या उसको हलाक कर देता है।

(सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दस चीज़ें हैं जो उमूरे फ़ित्रत[5] में से हैं:-

1- मूंछों का तरश्वाना, 2- दाढ़ी का छोड़ना,

3- मिस्वाक[6] करना, 4- नाक में पानी लेकर सफ़ाई करना,

1-अमल (कार्य) के तराज़ू, 2-प्रमाण, 3-तर्क, प्रमाण, 4-मुक्ति, 5-स्वाभिक कार्यों, 6-दातुन।

5- नाख़ून तरश्वाना, 6- उंगलियों के जोड़ों को (जिनमें अक्सर मैल-कुचैल रह जाता है) एहतिमाम से धोना,

7- बग़ल के बाल लेना, 8- मूए ज़ेरे नाफ़[1] की सफ़ाई करना,

9- पानी से इस्तिन्जा करना।

हदीस के रावी[2] ज़करिय्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि हमारे शैख़ मुसअब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बस यही नौ चीज़ें ज़िक्र कीं और फ़रमाया, दस्वीं चीज़ भूल गया हूँ और मेरा गुमान यही है कि वह कुल्ली करना है। (सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते सतूदा[3] क़ज़ाए हाजत[4] के बारे में

इस्तिन्जा[5]

1- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल्ख़ला[6] में दाख़िल होते तो बायां क़दम पहले अन्दर रखते और जब बाहर निकलते तो दायां क़दम पहले बाहर रखते। (तिर्मिज़ी)

2- जब बैतुल्ख़ला में जाते तो यह दुआ पढ़ते:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् ख़ुब्सि वल् ख़बाइस।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! तेरी पनाह चाहता हूँ ख़बीस जिन्नों से मर्द हों या औरत।

3- जब आप सल्ल० बाहर आते तो यह दुआ पढ़ते-

1-नाभि के नीचे के बाल, 2-वक्ता, 3-अच्छी आदतें, 4-शौचकर्म, मल-मूत्र, 5-पाख़ाना-पेशाब के बाद पानी से सफ़ाई करना, 6-शौचालय।

غُفْرَانَكَ *गुफ़रानक* (ऐ अल्लाह तुमसे बख़्शिश का सवाल करता हूँ) या

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

'अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्हब अन्निल अज़ा व आफ़ानी। या दोनों।

अनुवाद: सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने मुझसे ईज़ा[1] देने वाली चीज़ों को दूर किया और मुझे चैन दिया।

(ज़ादुल्-मआद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

4- जब आप रफ़्ए हाजत[2] के लिए बैठते तो जब तक आप ज़मीन से बिल्कुल क़रीब न हो जाते अपना सत्र[3] न खोलते। (ज़ादुल्-मआद)

5- आप सल्ल० पेशाब करना चाहते तो नर्म ज़मीन की तलाश रहती अगर आपको नर्म ज़मीन न मिलती तो लकड़ी या किसी और चीज़ से सख़्त ज़मीन को खोदकर नर्म कर लेते, फिर पेशाब करने बैठते। (ज़ादुलमआद)

6- हबीब बिन सालेह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी[4] है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक़ामे फ़राग़त[5] में दाख़िल होते तो अपना जूता पहन लेते थे और अपना सर ढाँक लेते थे। (इब्ने सअद)

7- कभी आप पानी से इस्तिन्जा फ़रमाते और कभी ढेले से, कभी दोनों का इस्तेमाल फ़रमाते। ढेलों की तादाद ताक़[6] होती। कम-से-कम तीन होती। आप इस्तिन्जा करने में बायां हाथ इस्तेमाल करते। जब आप पानी से इस्तिन्जा करते तो उसके बाद ज़मीन पर हाथ रगड़कर धोते। (ज़ादुल्मआद)

8- पेशाब करने के लिए उकड़ूँ बैठते तो रानों के दरमियान काफ़ी फ़ासला छोड़ते। कज़ाए हाजत को बैठने के लिए रेत या मिट्टी के टीले या पत्थरों की टीकरी या किसी खजूर वग़ैरा की आड़ को बहुत पसन्द करते।

(इब्ने सअद)

9- जब आप रफ़्ए हाजत के लिए बैठते तो क़िब्ला की तरफ़ न मुँह करते और न पुश्त[7] करते। (ज़ादुल्-मआद)

1-कष्ट, 2-शौच निवृत्ति कर्म, 3-छिपाव, गुप्तांग, 4-उद्धृत, 5-शौचालय, 6-विषम, 7-पीठ।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब इस्तिन्जे को जाते थे तो मैं आप को पानी ला कर देता था, तो आप उससे तहारत[1] करते थे, फिर अपने हाथ को मिट्टी पर मलते थे, फिर मैं दूसरा बरतन लाता था तो आप उससे वुज़ू करते थे। (सुनने अबू दाऊद)

तश्रीह[2]: मतलब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ढेले वग़ैरा से इस्तिन्जा करने के बाद पानी से भी तहारत फ़रमाते थे। उसके बाद हाथ को ज़मीन पर मलकर धोते थे, उसके बाद वुज़ू करते थे जैसा कि इस हदीस से मालूम हुआ कि आपकी आदते मुबारक यही थी कि क़ज़ाए हाजत और इस्तिन्जा से फ़ारिग़ होकर वुज़ू भी करते थे, लेकिन कभी-कभी यह ज़ाहिर करने के लिए कि वुज़ू करना सिर्फ़ औला[3] और अफ़ज़ल[4] है, फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है, उसको तर्क[5] भी किया है। चुनांचे सुनने अबी दाऊद और सुनने इब्ने माजा में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पेशाब से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वुज़ू के लिए पानी लेकर खड़े हो गए, आप सल्ल० ने फ़रमाया- ऐ उमर! यह क्या है? किस लिए पानी लिए खड़े हो? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया, आपके वुज़ू के लिए पानी लाया हूँ, आपने फ़रमाया- मैं इसके लिए मामूर[6] नहीं हूँ कि जब पेशाब करूँ तो ज़रूर ही वुज़ू करूँ और अगर मैं ऐसी पाबन्दी और मुदावमत[7] करूँ तो उम्मत के लिए एक क़ानून और दस्तूर[8] बन जाएगा।

(मआरिफ़ुल हदीस)

क़ज़ाए हाजत[9] और इस्तिन्जे[10] से मुतअल्लिक़ हिदायात[11]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि

1-पवित्र, 2-व्याख्या, 3-बेहतर, 4-श्रेष्ठ, 5-त्यक्त, छोड़ना, 6-आदेशित, 7-नित्यता, 8-नियम, 9-शौचकर्म, 10-पाख़ाना-पेशाब के बाद पानी से सफ़ाई करना, 11-निर्देश।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- मैं तुम लोगों के लिए मिस्ल[1] एक बाप के हूँ अपनी औलाद के लिए (यानी जिस तरह औलाद की खैरख्वाही और उनकी ज़िन्दगी के उसूल व आदाब सिखाना हर बाप की ज़िम्मेदारी है, उसी तरह तुम्हारी तालीम व तर्बियत[2] भी मेरा काम है, इसीलिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि जब तुम क़ज़ाए हाजत के लिए जाओ तो न क़िब्ले की तरफ़ मुँह करके बैठो, न उसकी तरफ़ पीठ करके बैठो (बल्कि इस तरह बैठो कि क़िब्ले की तरफ न तुम्हारा मुँह हो, न तुम्हारी पीठ हो।)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि आपने इस्तिन्जे में तीन ढेलों के इस्तेमाल करने का हुक्म दिया और मना किया इस्तिन्जे में लीद और हड्डी इस्तेमाल करने से और मना किया दाहिने हाथ से इस्तिन्जा करने से।) (मआ़रिफ़ुल् हदीस, सुनने इब्ने माजा, दारमी)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हिदायत फ़रमाई कि तुममें से कोई हरगिज़ ऐसा न करे कि अपने गुस्लख़ाने[3] में पहले पेशाब करे फिर उसमें गुस्ल या वुज़ू करे, क्योंकि अक्सर वस्वसे[4] इसीसे पैदा होते हैं।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस, सुनने अबी दाऊद)

क़ज़ा-ए-हाजत के मक़ाम पर जाने की दुआ़

हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- क़ज़ाए हाजत के मक़ामात में ख़बीस मख़्लूक़ शयातीन वग़ैरा रहते हैं। पस तुममें से कोई जब बैतुलख़ला[5] जावे तो चाहिए कि पहले यह दुआ़ करे:-

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ۔

"अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनल् ख़ुब्सि वल् ख़बाइसि।"

(अबू दाऊद, इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-समान, 2-शिक्षा-दीक्षा, 3-स्नानगृह, 4-कुधारणा, 5-शौचालय।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अर्कम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना फ़रमाते थे कि जब जमाअ़त खड़ी हो जाए और तुम में से किसी को इस्तिन्जे का तक़ाज़ा हो तो उसको चाहिए कि पहले इस्तिन्जे से फ़ारिग़ हो।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

इस्तिन्जे से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल[1]

(अज़ बिहिश्ती ज़ेवर[2])

1- जो नजासत[3] आगे या पीछे की राह से निकले उससे इस्तिन्जा करना ज़रूरी है। (शामी)

2- अगर नजासत इधर-उधर बिल्कुल न लगे और उसके लिये पानी से इस्तिन्जा न कर सके बल्कि पाक पत्थर या मिट्टी के ढेले से इस्तिन्जा कर ले और इतना पोंछ डाले कि नजासत जाती रहे और बदन साफ़ हो जाए तो भी जाइज़ है। लेकिन यह बात तबियत की सफ़ाई के ख़िलाफ़ है अलबत्ता अगर पानी न हो या कम हो तो मज्बूरी है। (तनवीर व शामी)

3- ढेले से इस्तिन्जा करने का कोई ख़ास तरीक़ा नहीं है बस इतना ख़्याल रखे कि नजासत इधर-उधर न फैलने पाए बदन ख़ूब साफ़ हो जाए।

(फ़तावा हिन्दिया)

4- ढेले से इस्तिन्जा करने के बाद पानी से इस्तिन्जा करना सुन्नत है। (तिर्मिज़ी)

लेकिन अगर नजासत हथेली के गहराव (रुपये के बराबर) से ज़्यादा फ़ैल जाए तो ऐसे वक़्त पानी से धोना वाजिब है। बग़ैर धोए नमाज़ न होगी और अगर नजासत फ़ैली न हो तो फ़क़त ढेले से पाक कर ले तो नमाज़ पढ़ सकता है लेकिन सुन्नत के ख़िलाफ़ है। (शर्ह तनवीर)

1-नियम, समस्याएँ, 2-बिहिश्ती ज़ेवर से उद्धृत, 3-गन्दगी।

5- जब बैतुलख़ला[1] में जाए तो दरवाज़े से बाहर बिस्मिल्लाह कहे और दुआए मस्नूना पढ़े।

6- जब अन्दर दाख़िल हो तो पहले बायाँ क़दम अन्दर ले जाए।

7- बैतुलख़ला में नंगे सर न जाए। (ज़ादुल्-मआ़द)

8- अगर किसी अँगूठी पर अल्लाह-रसूल का नाम लिखा हो तो उसको उतार डालो। (नसाई)

9- तावीज़ जिस पर मोमजामा कर लिया गया हो या कपड़े में सी लिया गया हो, उसको पहन कर जाना जाइज़ है।

10- बैतुलख़ला के अन्दर अगर छींक आए तो सिर्फ़ दिल ही दिल में अल्हम्दु-लिल्लाह कह ले ज़बान से अल्लाह तआ़ला का नाम न ले।

11- और जब तक अन्दर रहे कोई बात करे न बोले। (मिश्कात)

12- फिर जब बाहर निकले तो पहले दाहिना क़दम बाहर निकाले और दरवाज़े से निकल कर दुआ़-ए मस्नूना पढ़े।

13- इस्तिन्जा के बाद बायें हाथ को ज़मीन पर रगड़ कर या मिट्टी से मल कर धोए। (दुर्रुल्-मुख़्तार)

14- बायें हाथ से इस्तिन्जा करना चाहिए। अगर बायां हाथ न हो तो फिर ऐसी मज्बूरी के वक़्त दायें हाथ से जाइज़ है।

15- ऐसी जगह इस्तिन्जा करना कि किसी शख़्स की नज़र इस्तिन्जा करने वाले के सत्र[2] पर पड़ती हो गुनाह है। खड़े होकर पेशाब करना, नहर, कुंओं या हौज़ के अन्दर या इनके किनारों पर पेशाब या पाख़ाना करना मक्रूह है।

16- मस्जिद की दीवार के पास पाख़ाना या पेशाब करना, क़ब्रिस्तान में पाख़ाना या पेशाब करना, चूहे के बिल या किसी सुराख़ में पेशाब करना मना है।

1-शौचालय, 2-छिपाव, गुप्तांग।

17- नीची जगह पर बैठकर ऊँची जगह पर पेशाब करना, आदमियों के बैठने या रास्ता चलने की जगह पाख़ाना या पेशाब करना, और

18- वुज़ू या ग़ुस्ल करने की जगह पाख़ाना या पेशाब करना, ये सब बातें मकरूह और मना हैं।

19- रफ़ए हाजत करते हुए (बिला ज़रूरते शदीदह[1]) कलाम न करना चाहिए। (मिश्कात)

20- पेशाब करते वक़्त या इस्तिन्जा करते वक़्त अज़्वे ख़ास[2] को दाहिना हाथ न लगाए बल्कि बायाँ हाथ लगाए। (बुख़ारी व मुस्लिम)

21- पेशाब या पाख़ाना की छींटों से बहुत बचना चाहिए, क्योंकि अक्सर अज़ाबे क़ब्र पेशाब की छींटों से परहेज़ न करने से होता है (तिर्मिज़ी)

22- जंगल या शहर के बाहर मैदान में क़ज़ा-ए-हाजत की ज़रूरत पेश आए तो इतनी दूर जाना चाहिए कि लोगों की निगाह न पड़े।

(मआरिफ़ुल हदीस, सुनने अबी दाऊद, तिर्मिज़ी)

23- या किसी नशेबी[3] ज़मीन में चला जाए जहाँ कोई न देख सके।

24- पेशाब करने के लिए नर्म ज़मीन तलाश करना ताकि पेशाब की छींटें न उड़ें बल्कि ज़मीन जज़्ब करती चली जाए। (तिर्मिज़ी)

25- बैठकर पेशाब करना चाहिए, खड़े होकर पेशाब न करें।

(तिर्मिज़ी)

26- अगर पेशाब के बाद इस्तिन्जा सुखाना हो तो दीवार वग़ैरा की आड़ में खड़ा होना चाहिए। (बिहिश्ती गौहर)

1-बिना अधिक आवश्यकता के, 2-गुप्तांग, 3-नीची।

मिस्वाक (दातुन)

मिस्वाक की फ़ज़ीलत व अहमियत में बकसरत अहादीस मर्वी हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि अगर उम्मत पर दुश्वार होने का ख़ौफ़ न होता तो मैं उन पर हर नमाज़ के लिए मिस्वाक को वाजिब कर देता। (सहीह़ बुख़ारी, सहीह़ मुस्लिम)

मिस्वाक करना मुँह की पाकीज़गी का ज़रिया है और मूजिबे रज़ाए हक़ सुब्हानहू व तआ़ला व तक़द्दुस है[1] (बुख़ारी) और फ़रमाया जब भी जिब्रील अ़लैहिस्सलाम आए तो उन्होंने मुझे मिस्वाक करने के लिए ज़रूर कहा- ख़तरा है कि (जिब्रील अ़लैहिस्सलाम के बार-बार ताकीद और वसिय्यत पर) मैं अपने मुँह के अगले हिस्से को मिस्वाक करते-करते घिस न डालूँ।

(मुस्नदे अहमद)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम जब क़िराअ़ते क़ुरआन या सोने का इरादा फ़रमाते तो मिस्वाक करते और घर में दाख़िल होते वक़्त भी मिस्वाक करते। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम काशान-ए-अक़्दस[2] में दाख़िल होने के बाद सबसे पहला काम जो करते वह मिस्वाक करना होता था और वुज़ू और नमाज़ के वक़्त भी मिस्वाक करते थे। उँगली से मिस्वाक करना भी काफ़ी है। ख़्वाह अपनी उँगली से या दूसरे की उँगली से और सख़्त व दुरुश्त[3] कपड़े से हो तब भी काफ़ी है।

अबू नईम और बैहक़ी रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्ल० दाँतों के अ़र्ज़[4] पर मिस्वाक करते थे और मवाहिबे लदुन्निय्या में है कि मिस्वाक दाहिने हाथ से करना चाहिए, ये मुस्तहब है।

बाज़ शुर्राहे हदीस[5] ने कहा है कि मिस्वाक में यमन से मुराद ये है कि इब्तिदाअन[6] दाहिनी तरफ़ से करें।

1-अल्लाह की रज़ा के वास्ते है, 2-घर, 3-खुरदुरा, 4-चौड़ाई,5-हदीस के व्याख्याकार, 6-आरंभ

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मर्वी है कि रात को रसूलुल्लाह सल्ल० की मिस्वाक रख दी जाती, जब रात की नमाज़ को उठते तो मिस्वाक करते, वुज़ू करते। (बुख़ारी व मुस्लिम, इब्ने सअ़द)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० का मामूल[1] था कि दिन या रात में जब भी आप सोते, उठने के बाद वुज़ू करने से पहले मिस्वाक ज़रूर फ़रमाते।

(मआ़रिफुल् हदीस, मुस्नदे अहमद, सुनने अबी दाऊद)

मरज़ुल् वफ़ात[2] में हुज़ूर सल्ल० का आख़िरी अ़मल मिस्वाक है।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया– वह नमाज़ जिसके लिए मिस्वाक की जाए उस नमाज़ के मुक़ाबले में जो बिला मिस्वाक के पढ़ी जाए सत्तर गुना फ़ज़ीलत रखती है।

(शोबुल ईमान, बैहक़ी, मआ़रिफुल् हदीस)

मिस्वाक के मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतें:-

1- मिस्वाक एक बालिश्त से ज़्यादा लम्बी न हो और एक उँगली से ज़्यादा मोटी ने हो। (बहरुर्राइक़)

2- कम-अज़-कम तीन मर्तबा मिस्वाक करनी चाहिए और हर मर्तबा पानी में भिगोनी चाहिए।

3- अगर उँगली से मिस्वाक करना हो तो उसका तरीक़ा यह है कि मुँह के दायें जानिब ऊपर-नीचे अँगूठे से साफ़ करे और इसी तरह बायें जानिब शहादत[3] की उँगली से करे।

मिस्वाक पकड़ने का तरीक़ा:-

छंगुली मिस्वाक के नीचे की तरफ़ और अंगूठा मिस्वाक के सिरे के नीचे और बाक़ी उँगलियाँ मिस्वाक के ऊपर होनी चाहिए। (शामी) मिस्वाक

1-नियम, 2-वह रोग जिससे मृत्यु हो, 3-तर्जनी।

दाँतों में अर्ज़न[1] और ज़बान पर तूलन[2] करनी चाहिए। दाँतों के ज़ाहिर व बातिन[3] और अतराफ़[4] को भी मिस्वाक से साफ़ किया जाए और इसी तरह मुँह के ऊपर और नीचे के हिस्से और जबड़े वग़ैरा में भी मिस्वाक करनी चाहिए। (तहतावी)

जिन औक़ात[5] में मिस्वाक करना सुन्नत या मुस्तहब है:-

1- सोने के बाद उठने पर,

2- वुज़ू करते वक़्त,

3- क़ुरआन मजीद की तिलावत के लिये,

4- हदीस शरीफ़ पढ़ाने के लिये,

5- मुँह में बदबू हो जाने के वक़्त या दाँतों के रंग में तग़य्युर[6] पैदा होने पर,

6- नमाज़ के खड़े होने के वक़्त अगर वुज़ू और नमाज़ में ज़्यादा फ़सल[7] हो गया हो।

7- ज़िक्रे इलाही करने से पहले,

8- ख़ान-ए-काबा या हतीम[8] में दाख़िल होने के वक़्त,

9- अपने घर में दाख़िल होने के बाद,

10- बीवी के साथ मुक़ारबत[9] से पहले,

11- किसी भी मज्लिसे ख़ैर से पहले,

12- भूक-प्यास लगने के वक़्त,

1-चौड़ाई में, 2-लम्बाई में, 3-अन्दर, 4-किनारा, 5-समयों, 6-परिवर्तन, 7-अन्तर, 8-हरम, 9-निकटता।

13- मौत के आसार पैदा हो जाने से पहले,

14- सेहरी के वक़्त,

15- खाना खाने से क़ब्ल,

16- सफ़र में जाने से क़ब्ल,

17- सफ़र से आने के बाद,

18- सोने से क़ब्ल। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

ग़ुस्ल (स्नान)

ग़ुस्ले जनाबत व ग़ुस्ल का तरीक़ा

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब जनाबत[1] का ग़ुस्ल फ़रमाते तो सबसे पहले दोनों हाथ धोते थे फिर बायें हाथ से मक़ामे इस्तिन्जा को धोते और दाहिने हाथ से बायें हाथ पर पानी डालते। (ये हाथ से पानी डालना ऐसी हालत में था कि कोई बर्तन पानी लेने के लिए न था) फिर वुज़ू करते, इसी तरह जिस तरह नमाज़ के लिए वुज़ू फ़रमाया करते थे। फिर पानी लेते और बालों की जड़ों में उँगलियां डालकर वहाँ पानी पहुँचाते थे। यहाँ तक कि जब आप सल्ल० जब ये समझते थे कि आप ने सब में पूरी तरह पानी पहुँचा लिया है तो दोनों हाथ भर-भर कर तीन दफ़ा पानी अपने सर के ऊपर डालते थे, उसके बाद सारे बदन पर पानी बहाते, फिर दोनों पाँव धोते।

(सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इसी तरह की हदीस हज़रते मैमूना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से भी रिवायत करते हैं, जिसमें हज़रत

1-संभोग।

मैमूना यह भी इज़ाफ़ा फ़रमाती हैं कि फिर आपको रुमाल दिया तो आपने उसको वापस फ़रमा दिया। सहीहैन[1] की दूसरी रिवायत में यह इज़ाफ़ा भी है कि रुमाल इस्तेमाल करने के बजाए आपने जिस्म पर से पानी सौंत[2] कर झाड़ दिया। (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत आइशा और हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की इन हदीसों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुस्ल की पूरी तफ़्सील मालूम हो जाती है यानी कि आप सबसे पहले अपने दोनों हाथ दो-तीन दफ़ा धोते थे (क्योंकि उन हाथों के ज़रिये ही पूरे जिस्म को गुस्ल दिया जाता है) इसके बाद आप मक़ामे इस्तिन्जा को बायें हाथ से धोते थे और दाहिने हाथ से उसपर पानी डालते थे। इसके बाद बायें हाथ को मिट्टी से मल-मलकर और रगड़-रगड़ कर ख़ूब मांझते और धोते थे फिर उसके बाद वुज़ू फ़रमाते थे (जिसके ज़िम्न में तीन-तीन दफ़ा कुल्ली करते और नाक में पानी लेकर उसकी अच्छी तरह सफ़ाई करके मुँह और नाक के अन्दुरूनी हिस्से को गुस्ल देते यानी अन्दर के हिस्से को धोते थे) और हस्बे आदत रीशे मुबारक[3] में ख़िलाल करके उसके एक-एक बाल को गुस्ल देते थे, फिर गुस्ल की उस जगह से हट कर पावों को फिर धोते थे (ग़ालिबन् आप यह इसलिए करते थे कि गुस्ल की वह जगह साफ़, पुख़्ता नहीं होती थी। (मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हाइज़ा औरत[4] और जुनुबी आदमी[5] क़ुरआन में से कुछ भी न पढ़े (यानी क़ुरआन पाक जो अल्लाह तआला का मुक़द्दस कलाम है उसकी तिलावत दोनों के लिये मम्नूअ्[6] है। (मआरिफ़ुल् हदीस, जामे तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस्म के हर बाल के नीचे जनाबत[7] का असर होता है। इसलिए ग़ुस्ले जनाबत में बालों

1-बुख़ारी व मुस्लिम, 2-पोंछना, 3-दाढ़ी, 4-रजस्वला स्त्री, 5-स्त्री के साथ संभोग करने वाला पुरुष, 6-निषिद्ध, मना, 7-संभोग।

को अच्छी तरह धोना चाहिए (ताकि जिस्मे इन्सानी का वह हिस्सा जो बालों से छुपा रहता है पाक-साफ़ हो जाए) और जिल्द का जो हिस्सा ज़ाहिर है (जिस पर बाल नहीं हैं) उसको भी अच्छी तरह धोना और साफ़ करना चाहिए। (सुनने अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा, मआरिफुल् हदीस)

जिन सूरतों में ग़ुस्ल करना सुन्नत है:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हर मुसलमान पर हक़ है (यानी उसके लिये ज़रूरी है) कि हफ़्ते के सात दिनों में एक दिन (यानी जुमा के दिन) ग़ुस्ल करे। उसमें अपने सर के बालों को और सारे जिस्म को अच्छी तरह धोए।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम व मआरिफुल् हदीस)

हज़रत समुरह बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जो शख़्स जुमा के दिन (नमाज़े जुमा के लिये) वुज़ू कर ले तो भी काफ़ी और ठीक है और जो ग़ुस्ल करे तो ग़ुस्ल करना अफ़ज़ल[1] है।

(अबू दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, मआरिफुल् हदीस)

1- जुमा के दिन नमाज़े फ़ज्र के बाद से जुमा तक उन लोगों के लिये ग़ुस्ल करना सुन्नत है, जिन पर नमाज़े जुमा वाजिब है।

2- ईदैन के दिन बादे फ़ज्र उन लोगों के लिये ग़ुस्ल करना सुन्नत है जिन पर ईदैन की नमाज़ वाजिब है।

3- हज या उम्रा के एहराम के लिये ग़ुस्ल करना सुन्नत है।

4- हज करने वाले को अरफ़ा के दिन बाद ज़वाले आफ़्ताब[2] ग़ुस्ल करना सुन्नत है। (बिहिश्ती गौहर)

1-उत्तम, 2-सूर्यास्त के बाद।

वुज़ू

क़ियामत में आज़ाए[1] वुज़ू की नूरानियत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरे उम्मती क़ियामत के दिन बुलाये जायेंगे तो वुज़ू के असर से उनके चेहरे और हाथ और पाँव रौशन और मुनव्वर[2] होंगे। पस तुममें से जो कोई अपनी वह रौशनी और नूरानियत बढ़ा सके और मुकम्मल कर सके तो ऐसा ज़रूर करे।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)

वुज़ू का तरीक़ा

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है कि उन्होंने एक दिन इस तरह वुज़ू फ़रमाया कि पहले अपने दोनों हाथों पर तीन बार पानी डाला, फिर तीन बार कुल्ली की और तीन बार नाक में पानी लेकर उसको निकाला और नाक की सफ़ाई की, फिर तीन बार अपना पूरा चेहरा धोया, फिर उसके बाद दाहिना हाथ कुहनी तक तीन बार धोया, फिर उसी तरह बायाँ हाथ कुहनी तक तीन बार धोया, उसके बाद सर का मसह किया, फिर दाहिना पाँव तीन बार धोया, फिर उसी तरह बायाँ पाँव तीन दफ़ा धोया (इस तरह पूरा वुज़ू करने के बाद) हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा कि आपने बिल्कुल मेरे इस वुज़ू की तरह वुज़ू फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि जिसने मेरे इस वुज़ू की तरह वुज़ू किया फिर दो रकअ़त नमाज़ पूरी तवज्जोह[3] के साथ ऐसी पढ़ी जो हदीसे नफ़्स से ख़ाली रही (यानी इधर-उधर की बातें नहीं सोचीं) तो उसके पिछले सारे गुनाह मुआफ़ हो गए।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम व मआरिफ़ुल हदीस)

1-शरीर के भाग, 2-प्रकाशमान, 3-ध्यान।

वुज़ू के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ पढ़ते थे:-

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الَّذِيْنَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَاهُمْ يَحْزَنُوْنَ ٥

अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू। अल्लाहुम्-मज्अल्नी मिनत्तव्वाबीन वज्अल्नी मिनल् मुततहहिरीन वज्अल्नी मिन् इबादिकस्सालिहीन वज्अल्नी मिनल्लज़ीन ला ख़ौफुन् अलैहिम व ला हुम् यहज़नून ०

अनुवाद: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद[1] नहीं और गवाही देता हूँ कि बिला शुब्हा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। ऐ अल्लाह! आप मुझे ख़ूब ज़्यादा तौबा करने वालों में और ख़ूब ज़्यादा पाकी हासिल करने वालों में शामिल फ़रमा और अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा और उन लोगों में शामिल फ़रमा जिनको (क़ियमात के दिन) न किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे।

सुनन नसाई में मर्वी है कि वुज़ू के बाद आप फ़रमाया करते थे:-

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ۔

زادالمعاد

सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक। अश्हदु अल्लाइलाह इल्ला अन्त अस्तग़्फ़िरुक व अतूबुइलैक। (ज़ादुल मआद)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! तू पाक है और मैं तेरी तारीफ़ बयान करता हूँ। मैं गवाही देता हूँ कि सिर्फ़ तू ही माबूद[2] है और मैं तुझसे मग़्फ़िरत[3] चाहता हूँ और तेरे सामने तौबा करता हूँ।

1-उपास्य, 2-उपास्य, 3-मोक्ष, माफ़ी।

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि मैं जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के पास वुज़ू के वक़्त हाज़िर हुआ तो मैंने आपसे वुज़ू करते वक़्त सुना कि आप सल्ल० दुआ कर रहे थे:-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ - زادالمعاد

अल्लाहुम्मग़्फ़िरली ज़म्बी व वस्सिअ्ली फ़ी दारी व बारिक ली फ़ी रिज़्क़ी।

(ज़ादुल्-मआद)

अनुवादः ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे घर को वसीअ्[1] फ़रमा और मेरे रिज़्क़ में बरकत दे।

मसतूरद बिन शद्दाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप जब वुज़ू फ़रमाते तो हाथ की सबसे छोटी उँगली (छंगुली) से पावों की उँगलियों को यानी उनके दरमियानी हिस्से को मलते थे। (यानी ख़िलाल फ़रमाते थे)

(जामे तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम का तरीक़ा था कि जब आप वुज़ू फ़रमाते तो एक हाथ से पानी लेकर ठोड़ी के नीचे रीशे मुबारक[2] के अन्दरूनी हिस्से में पहुँचाते और उससे रीशे मुबारक में ख़िलाल फ़रमाते (यानी हाथ की उँगलियां उसके दरमियान या बीच से निकालते थे) और फ़रमाते थे कि मेरे रब ने मुझे ऐसा ही करने का हुक्म दिया है।

(मआरिफ़ुल् हदीस, सुनने अबी दाऊद)

वुज़ू में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पानी अच्छी तरह इस्तेमाल फ़रमाते लेकिन फिर भी उम्मत को पानी के इस्तेमाल में इस्राफ़[3] से परहेज़ की तल्क़ीन[4] फ़रमाते। (ज़ादुल्-मआद)

1-विस्तृत, कुशादा, 2-दाढ़ी, 3-अनावश्यक व्यय, 4-निर्देश।

वुज़ू की सुन्नतें और उसके आदाब[1]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- ऐ अबू हुरैरा जब तुम वुज़ू करो तो (بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ) *बिस्मिल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि* कह लिया करो (इसका असर यह होगा कि) जब तक तुम्हारा यह वुज़ू बाक़ी रहेगा उस वक़्त तक तुम्हारे मुहाफ़िज़[2] फ़िरिश्ते (यानी कातिबीने आमाल[3]) तुम्हारे लिये बराबर नेकियां लिखते रहेंगे।

(मोअ्जमे सग़ीर तबरानी, मआरिफुल् हदीस)

लक़ीत बिन सबिरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम मुझे वुज़ू की बाबत बताइये (यानी यह बताइये कि किन बातों का वुज़ू में मुझे ख़ास तौर से एहतिमाम करना चाहिए।) आप सल्ल० ने फ़रमाया- (एक तो यह कि) पूरा वुज़ू ख़ूब अच्छी तरह और कामिल तरीक़े[4] से किया करो (जिसमें कोई कमी कसर न रहे) और (दूसरे यह कि) हाथ पाँव धोते वक़्त उसकी उँगलियों में ख़िलाल किया करो और (तीसरे यह कि) नाक के नथुनों में पानी चढ़ा के अच्छी तरह उनकी सफ़ाई किया करो, इल्ला[5] यह कि तुम रोज़े से हो। (यानी रोज़े की हालत में नाक में पानी ज़्यादा न चढ़ाओ)

(मआरिफुल् हदीस, सुनने अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर ख़ुद ही वुज़ू कर लेते और कभी ऐसा होता कि दूसरा आदमी पानी डाल देता। (ज़ादुल्-मआद)

वुज़ू पर वुज़ू

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने तहारत[6] के बावजूद (यानी

1-नियम, 2-रक्षक, 3-भाग्य के लेखक फ़िरिश्ते, 4-पूर्ण रूपेण, 5-मगर, शर्त, 6-पवित्रता।

वुज़ू होने के बावजूद ताज़ा) वुज़ू किया उसके लिए दस नेकियां लिखी जायेंगी। (जामे तिर्मिज़ी)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ में अक्सर नया वुज़ू फ़रमाते और कभी-कभी कई नमाज़ें एक ही वुज़ू में पढ़ लेते। (ज़ादुलमआद)

वुज़ू का मस्नून तरीक़ा

वुज़ू करने वाले को चाहिए कि वुज़ू से पहले निय्यत करे कि नमाज़ के लिए वुज़ू कर रहा हूँ (इससे सवाब बढ़ जाता है) वुज़ू करते वक़्त क़िब्ला रुख़ किसी ऊँची जगह बैठे ताकि पानी की छींटें न पड़ें फिर (بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ) *''बिस्मिल्लाहिर्रह मानिर्रहीम''* पढ़ कर वुज़ू शुरू करे। बाज़ रिवायात में इस तरह है कि पढ़े:-

بِسْمِ اللهِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى دِيْنِ الْاِسْلَامِ۔

1- बिस्मिल्लाहिल् अज़ीमि वलहम्दु लिल्लाहि अला दीनिल् इस्लामि।

अनुवादः शुरू अल्लाह के नाम से जो अज़ीम है, और तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं ऊपर दीने इस्लाम के।

2- फिर दोनों हाथों को पहुँचों तक तीन बार धोए।

3- फिर मिस्वाक करे अगर मिस्वाक न हो तो उँगली से दाँतों को मले और तीन बार कुल्ली करे इस तरह कि सारे मुँह में पानी पहुँच जाए। (अल्बत्ता अगर रोज़ा हो तो ग़रारह न करे कि पानी हलक़ में चला जाए।)

4- फिर तीन बार नाक में पानी चढ़ाए और हाथ से नाक साफ़ करे (अगर रोज़ा हो तो जितनी दूर नर्म-नर्म गोश्त है उससे ऊपर पानी न ले जाए।)

5- फिर तीन बार मुँह धोए, पेशानी के बालों से लेकर ठोड़ी के नीचे तक, और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक, सब जगह पानी बह

जाए। दोनों अबरुओं[1] के नीचे भी पानी पहुँच जाए, कहीं सूखा न रहे। चेहरा धोते वक़्त दाढ़ी का ख़िलाल करे। दाढ़ी के नीचे से उँगलियों को डालकर ख़िलाल करे।

6- फिर तीन बार दाहिना हाथ कुहनी समेत धोये। फिर बायाँ हाथ कुहनी समेत धोए और एक हाथ की उँगलियों में डालकर ख़िलाल करे। औरत अगर अँगूठी या चूड़ी जो कुछ पहने हो, उसको हिला ले कि कहीं सूखा न रह जाए।

7- फिर एक बार सारे सर का मसह करे और उसके साथ दोनों कानों का मसह करे। कान के अन्दर की तरफ़ कलिमे की उंगली[2] से और कानों के ऊपर अँगूठों से मसह करे। फिर उंगलियों की पुश्त[3] की तरफ़ से गर्दन का मसह करे (लेकिन गले का मसह न करे, यह मम्नूअ[4] है)। कानों के मसह के लिए नया पानी लेने की ज़रूरत नहीं है। सर के मसह से जो बचा हुआ पानी हाथ में लगा है, वही काफ़ी है। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

8- फिर दाहिना पाँव टख़ना समेत तीन बार धोए। फिर तीन बार बायाँ पावँ टख़ना समेत धोवे और बायें हाथ की छँगुलियों से पैर की उंगलियों तक में ख़िलाल करे। दाहिने पैर की दाहिनी छँगुली से शुरू करे और बायें पैर की छंगुलियों पर ख़त्म करे। (यह वुज़ू का मस्नून तरीक़ा है।)

(बिहिश्ती ज़ेवर)

वुज़ू के मुतअल्लिक़ मसाइल

(वुज़ू से सम्बन्धित धर्म शास्त्र सम्बन्धी निर्देश)

1- आज़ा-ए-वुज़ू[5] को ख़ूब मल-मल कर धोना चाहिए।

2- वुज़ू मुसलसल करना चाहिए यानी एक अ़ज़्व[6] धोने के बाद दूसरे अ़ज़्व को धोने में वक़्फ़ा[7] और ताख़ीर[8] न होना चाहिए।

1-भौं, 2-तर्जनी, 3-ऊपरी भाग, 4-निषिद्ध, 5-वुज़ू के अंग, 6-शरीर के भाग, 7-अन्तर, 8-विलम्ब।

3- वुज़ू तरतीबवार करना सुन्नत है।

4- **वुज़ू के दरमियान यह दुआ पढ़े:-**

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ ذَنْبِىْ وَوَسِّعْ لِىْ فِىْ دَارِىْ وَبَارِكْ لِىْ فِىْ رِزْقِىْ-

अल्लाहुम्मग़िफ़्रली ज़म्बी व वस्सिअ़ली फ़ी दारी व बारिक्ली फ़ी रिज़्क़ी।

5- **जब वुज़ू कर चुके तो यह दुआ पढ़े:-**

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ـ
(مسلم)

अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुह। (मुस्लिम)

अनुवाद: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद[1] नहीं, वह अकेला है। उसका कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

6- **फिर यह दुआ पढ़े:-**

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ۔

अल्लाहुम्मज्-अ़ल्नी मिनत्तव्वाबीन वज्-अ़ल्नी मिनल् मुततह्हिरीन। सुबहानकल्-लाहुम्म व बिहम्-दिक अश्हदु अल्ला इलाह इल्ला अन्त अस्तग़्फ़िरुक व अतूबु इलैक। (तिर्मिज़ी, बिहिश्ती ज़ेवर)

अनुवाद: ऐ अल्लाह मुझे ख़ूब ज़्यादा तौबा करने वालों में और ख़ूब ज़्यादा पाकी हासिल करने वालों में बनाइए। ऐ अल्लाह! तू पाक है, और तू ही तारीफ़ के लायक़ है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है। मैं तुझसे मुआ़फ़ी मांगता हूँ और तेरे हुज़ूर में तौबा करता हूँ।

1-उपास्य।

तयम्मुम

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तयम्मुम (की हक़ीक़त हाथ का पाक ज़मीन पर) दो मर्तबा मारना है। एक बार चेहरे के लिए और एक बार कुहनियों तक दोनों हाथों के लिए। (मुस्तदरक)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम हर नमाज़ के लिये जुदागाना[1] तयम्मुम न फ़रमाते, न आपने कभी इसका हुक्म दिया, बल्कि तयम्मुम को बिल्कुल वुज़ू का क़ायम मक़ाम[2] फ़रमाया है।

(ज़ादुल्-मआद)

तयम्मुम का तरीक़ा इमामे आज़म, इमामे मालिक, इमामे शाफ़ई रहिमहुमुल्लाह के नज़्दीक यह है कि दो मर्तबा ज़मीन पर हाथ मारना, एक बार चेहरे के लिये और एक बार कुहनियों तक दोनों हाथों के लिये।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

मस्अला: जिस उज़्र[3] से वुज़ू के लिये तयम्मुम जाइज़ है, उसी तरह गुस्ल के लिये तयम्मुम जाइज़ है। गुस्ल के तयम्मुम का भी यही तरीक़ा है। (जो गुस्ले जनाबत[4] पर फ़र्ज़ होता है।) (बिहिश्ती ज़ेवर)

मस्अला: पाक मिट्टी और रेत, पत्थर और चूना और मिट्टी के कच्चे और पक्के बर्तन जिन पर रोग़न न हो और मिट्टी की कच्ची और पक्की ईंटें, मिट्टी या ईंटों, पत्थर या चूने की दीवार, गेरु और मुलतानी मिट्टी पर तयम्मुम करना जाइज़ है। तयम्मुम के तीन फ़र्ज़ हैं:-

1- निय्यत करना,

2- दोनों हाथ मिट्टी पर मारकर मुँह पर फेरना,

3- दोनों हाथ मिट्टी पर मारकर दोनों हाथों को कुहनी समेत मलना। (बिहिश्ती ज़ेवर)

1-पृथक्-पृथक्, अलग-अलग, 2-वुज़ू के बराबर, 3-विवशता, 4-संभोग के बाद का स्नान।

तयम्मुम का मस्नून तरीक़ा

तयम्मुम का तरीक़ा यह है कि अव्वल निय्यत करे कि मैं नापाकी दूर करने के लिये तयम्मुम करता हूँ फिर (بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ) *बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम* पढ़े फिर दोनों हाथ मिट्टी के बड़े ढेले पर मारकर उन्हें झाड़ दे ज़्यादा मिट्टी लग जाय तो उसे फूँक मार कर उड़ा दे और दोनों हाथों को मुँह पर इस तरह फेरे कि कोई जगह बाक़ी न रह जाए। अगर एक बाल के बराबर भी जगह छूट जाएगी तो तयम्मुम सही न होगा। फिर दूसरी मर्तबा दोनों हाथ मिट्टी पर मारे और उन्हें झाड़ के पहले बायें हाथ की चारों उँगलियां सीधे हाथ की उँगलियों के सिरे के नीचे से रखकर खींचता हुआ कुहनी तक ले जाए, इस तरह ले जाने में सीधा हाथ नीचे की जानिब फिर जाएगा। फिर बायें हाथ की हथेली सीधे हाथ के ऊपर की तरफ़ कुहनी से उँगलियों तक खींचता हुआ लाए और दायें हाथ के अंगूठे की पुश्त[1] पर फेरे। इसी तरह सीधे हाथ को बायें हाथ पर फेरे। फिर उँगलियों का ख़िलाल करे। अगर अंगूठी पहनी हुई हो तो उसे उतारना या हिलाना ज़रूरी है। उँगलियों का ख़िलाल करना भी फ़र्ज़ है। (बिहिश्ती ज़ेवर)

वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों के तयम्मुम का यही तरीक़ा है। (बिहिश्ती ज़ेवर)

नमाज़ का इआदा[2] ज़रूरी नहीं

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन में से दो शख़्स सफ़र को गए। किसी मौक़े पर नमाज़ का वक़्त आ गया और उनके साथ पानी न था। इसलिये दोनों ने पाक मिट्टी से तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली। फिर नमाज़ का वक़्त ख़त्म होने से पहले पानी भी मिल गया, तो एक साहब ने वुज़ू करके दोबारा नमाज़ पढ़ी और दूसरे साहब ने नमाज़ का इआदा नहीं किया। जब दोनों

1-पृष्ठ, पीछे, 2-पुनरावृत्ति।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उसका ज़िक्र किया तो जिन साहब ने नमाज़ का इआ़दा नहीं किया था, उनसे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुमने ठीक तरीक़ा इख़्तियार किया। और तुमने जो नमाज़ तयम्मुम करके पढ़ी, वह तुम्हारे लिये काफ़ी हो गई। (शरई मस्अला यही है कि ऐसे मौक़े पर तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ लेना काफ़ी है। बाद में वक़्त के अन्दर पानी मिल जाने पर भी इआ़दा की ज़रूरत नहीं। इसलिये तुमने जो किया ठीक मस्अला के मुताबिक़ किया) और जिन साहब ने वुज़ू करके नमाज़ दोबारा पढ़ी थी, उनसे आपने फ़रमाया कि तुम्हें दोहरा सवाब मिलेगा, क्योंकि तुमने दोबारा जो नमाज़ पढ़ी, वह नमाज़ नफ़्ल हो गई। अल्लाह नेकियों को ज़ाए नहीं फ़रमाता।

(सुनने अबी दाऊद व मुस्नदे दारमी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

नमाज़

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन क़रत रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे अव्वल जिस चीज़ का सवाल बन्दे से होगा वह नमाज़ है। अगर वह ठीक उतरी तो उसके सारे आमाल ठीक उतरेंगे और अगर वह ख़राब निकली तो उसके सारे आमाल ख़राब निकलेंगे। (तबरानी अवसत, हयातुल् मुस्लिमीन)

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि पाँच वक़्त की नमाज़ें अल्लाह तआ़ला ने फ़र्ज़ की हैं। जिसने उनके लिए अच्छी तरह वुज़ू किया और ठीक वक़्त पर उनको पढ़ा और रुकूअ़ व सुजूद भी जैसे करना चाहिए वैसे ही किये और ख़ुशूअ़[1] की सिफ़त के साथ उनको अदा किया तो ऐसे शख़्स के लिये अल्लाह तआ़ला का पक्का वादा है कि वह उसको बख़्श देगा और जिसने ऐसा नहीं किया और नमाज़ के बारे में उसने कोताही की

1-ध्यानमग्न, विनय।

तो उसके लिए अल्लाह तआला का कोई वादा नहीं है चाहेगा तो बख़्श देगा और चाहेगा तो उसको सज़ा देगा।

(मआरिफ़ुल् हदीस, मुस्नदे अहमद, सुनने अबी दाऊद)

पंजगाना[1] फ़र्ज़ नमाज़ों के औक़ात[2]

हज़रत बुरैदा रज़ि० से रिवायत है कि एक साहब ने रसूलुल्लाह सल्ल० से नमाज़ के औक़ात के बारे में सवाल किया तो आपने उनसे फ़रमाया कि इन दोनों दिन (आज और कल) तुम हमारे साथ नमाज़ पढ़ो। फिर (दोपहर के बाद) जैसे ही आफ़्ताब[3] ढला, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म दिया और उन्हों ने अज़ान दी। फिर आप सल्ल० ने उनसे फ़रमाया तो उन्होंने ज़ुहर की नमाज़ के लिए इक़ामत कही और ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी फिर (अस्र का वक़्त आने पर) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया, उन्होंने (क़ाइदे के मुताबिक़ पहले अज़ान और फिर) अस्र की नमाज़ की इक़ामत कही (और अस्र की नमाज़ हुई) यह अज़ान और यह नमाज़ फिर ऐसे वक़्त हुई कि आफ़्ताब ख़ूब ऊँचा और पूरी तरह रौशन था (यानी उसकी रौशनी में वह फ़र्क़ नहीं पड़ा था जो शाम को हो जाता है) फिर आफ़्ताब ग़ुरूब[4] होते ही आप ने बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया तो उन्होंने मग़्रिब की (क़ायदे के मुताबिक़) अज़ान कही फिर इक़ामत कही (और मग़्रिब की नमाज़ हुई) फिर जैसे ही शफ़क़[5] ग़ायब हुई तो आपने उनको हुक्म दिया तो उन्होंने इशा की (क़ायदे के मुताबिक़) अज़ान कही फिर इक़ामत कही (और इशा की नमाज़ पढ़ी गई) फिर रात के ख़त्म होने पर जैसे सुबह सादिक़ नमुदार[6] हुई आप सल्ल० ने बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया और उन्होंने फ़ज्र की (क़ायदे के मुताबिक़ अज़ान कही, फिर) इक़ामत कही और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी गई, फिर जब दूसरा दिन हुआ तो आप सल्ल० ने बिलाल रज़ि० को ठण्डे वक़्त ज़ुहर

1-पाँचों समय की, 2-समय, 3-सूर्य, 4-सूर्यास्त, 5-उषा, संध्या की लालिमा, 6-प्रातःकाल हुआ।

की नमाज़ क़ायम करने का हुक्म दिया और फ़रमाया ज़ुहर आज (ताख़ीर[1] करके) ठण्डे वक़्त पढ़ी जाए तो आपके हस्बे हुक्म[2] उन्होंने ठण्डे वक़्त पर ज़ुहर की अज़ान कही, फिर इक़ामत कही और ख़ूब अच्छी तरह ठण्डा वक़्त कर दिया यानी काफ़ी ताख़ीर करके) ज़ुहर उस दिन बिल्कुल आख़िरी वक़्त पढ़ी गई और अस्र की नमाज़ ऐसे वक़्त पढ़ी कि आफ़्ताब[3] अगर्चे ऊँचा ही था, लेकिन गुज़श्ता रोज़[4] के मुक़ाबले में ज़्यादा मुअख़्ख़र[5] करके पढ़ी और इशा तिहाई रात गुज़र जाने के बाद पढ़ी और फ़ज्र की नमाज़ अस्फ़ार[6] के वक़्त में (यानी दिन का उजाला फैल जाने पर) पढ़ी। फिर आप सल्ल० ने फ़रमाया कि वह साहब कहाँ हैं, जो नमाज़ के औक़ात के बारे में सवाल करते थे। उस शख़्स ने अर्ज़ किया मैं हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह सल्ल०! आप सल्ल० ने कहा कि तुम्हारी नमाज़ों का मुस्तहब[7] वक़्त इसके दरमियान में है, जो तुमने देखा। (सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस)

नमाज़ ज़ुहर

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब गर्मी हो तो ज़ुहर को ठण्डे वक़्त पढ़ा करो। (सहीह बुख़ारी)

नमाज़े इशा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इशा की नमाज़ के लिये उस वक़्त तशरीफ़ लाए जब तिहाई रात हो चुकी थी। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर यह ख़्याल न होता कि मेरी उम्मत के लिये यह वक़्त भारी और मुश्किल हो जाएगा, तो मैं यह नमाज़ (हमेशा देर करके) इसी

1-विलम्ब से, 2-आज्ञानुसार, 3-सूर्य, 4- पिछला दिवस, 5-विलम्ब, 6-भोर का उजाला, 7-ऐसे कर्म जिन्हें करने पर सवाब तथा न करने पर गुनाह नहीं, उचित।

वक़्त पढ़ा करता क्योंकि इस नमाज़ के लिये हमेशा यही वक़्त अफ़ज़ल[1] है।

(सहीह़ मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

नमाज़े फ़ज्र

हज़रत राफ़े बिन ख़दीज रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि नमाज़े फ़ज्र अस्फ़ार में अदा करो, क्योंकि इसमें ज़्यादा अज्र व सवाब मिलता है। (सुनने अबी दाऊद, तिर्मिज़ी, मुस्नदे दारमी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

नमाज़ में ताख़ीर[2] की मुमानअ़त[3]

(नमाज़ में विलम्ब की मनाही)

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया- अ़ली! तीन काम वे हैं जिनमें ताख़ीर न कीजियो:-

1- नमाज़ जब उसका वक़्त आ जाए।

2- और जनाज़ा जब तैयार होकर आ जाए।

3- बेशौहर वाली औरत जब उसके लिये कोई मुनासिब जोड़ा मिल जाए। (जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सोने या भूल जाने की वजह से नमाज़ क़ज़ा हो जाए तो

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो कोई नमाज़ को भूल गया या नमाज़ के वक़्त सोता रह गया, तो उसका कफ़्फ़ारा[4] यह है कि जब याद आए या सो के उठे तो उसी वक़्त पढ़ ले। (मआ़रिफ़ुल् हदीस, सहीह़ बुख़ारी व मुस्लिम)

1-श्रेष्ठ, 2-विलम्ब, 3-निषेध, 4-प्रायश्चित्त।

नमाज़ में तसाहुल[1]

हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया- तुम्हारा क्या हाल होगा और क्या रवैया होगा, जब ऐसे (ग़लत कार और ख़ुदा ना तर्स[2]) लोग तुम पर हुक्मराँ होंगे और नमाज़ को मुर्दा और बे-रूह करेंगे (यानी उनकी नमाज़ें ख़ुशूअ और आदाब के एहतिमाम न होने की वजह से बे-रूह होंगी) या वह नमाज़ों को उनके सहीह वक़्त के बाद पढ़ेंगे? मैंने अर्ज़ किया तो आप सल्ल० का मेरे लिये क्या हुक्म है यानी ऐसी सूरत में मुझे क्या करना चाहिए? आप सल्ल० ने फ़रमाया- तुम वक़्त आ जाने पर अपनी नमाज़ पढ़ लो। उसके बाद अगर उनके साथ नमाज़ पढ़ने का मौक़ा आए तो उनके साथ पढ़ लो। यह तुम्हारे लिये नफ़्ल हो जाएगी। (मआरिफ़ुल् हदीस, सहीह मुस्लिम)

दूसरी नमाज़ का इंतिज़ार

एक बार मग़रिब की नमाज़ के बाद कुछ लोग इशा की नमाज़ का इंतिज़ार कर रहे थे। नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम तशरीफ़ लाए और आप सल्ल० इस क़दर तेज़-तेज़ चलकर आए कि आप सल्ल० की सांस फूल गई थी। आप सल्ल० ने फ़रमाया लोगो! ख़ुश हो जाओ! तुम्हारे रब ने आसमान का एक दरवाज़ा खोलकर तुम्हें फ़िरिश्तों के सामने किया और फ़ख़्र के तौर पर फ़रमाया- देखो! यह मेरे बन्दे एक नमाज़ अदा कर चुके और दूसरी नमाज़ का इंतिज़ार कर रहे हैं। (इब्ने माजा)

जमा बैनस्सलातैन[3]

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से मर्वी है, वह फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कभी नहीं

1-आलस्य, 2-अल्लाह से न डरने वाले, 3-दो वक़्तों की नमाज़ को एक ही वक़्त में पढ़ना।

देखा कि आप सल्ल० ने उसके ग़ैर वक़्त में कोई नमाज़ पढ़ी हो। मगर मग़रिब और इशा की दो नमाज़ों में जिनको मुज़्दलफ़ा[1] में जमा फ़रमाया, और अहादीस में अ़रफ़ात में ज़ुहर और अ़स्र की नमाज़ें भी जमा फ़रमाना मर्वी है और यह जमा बर-बिनाए मनासिके[2] हज थी न कि सफ़र की वजह से। और जामिउ़ल् उसूल में बरिवायत अबू दाऊद व हज़रत इब्ने उ़म्र रज़ि० मर्वी है कि उन्होंने कहा कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कभी सफ़र में मग़रिब व इशा को मिलाकर नहीं पढ़ा मगर एक मर्तबा। जमा बैनस्सलातैन के माना ये हैं कि पहली नमाज़ को इतना मुअख़्ख़र[3] किया जाए कि उसे उसके आख़िरी वक़्त में पढ़ा जाए और बाद वाली दूसरी नमाज़ में इतनी ताजील[4] की जाए कि उसे उसके शुरू वक़्त में पढ़ा जाए, और बाज़ इसे जमा-सुवरी का नाम देते हैं। क्योंकि ज़ाहिरी सूरत में तो जमा है मगर दर हक़ीक़त जमा नहीं है और यही वह सूरत है जिस पर अहनाफ़[5] सफ़र में जमा का इत्लाक़[6] करते हैं। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

"जामिउ़ल् उसूल" में अबू दाऊद से बरिवायत नाफ़े और अ़ब्दुल्लाह बिन वाक़दी मर्वी है कि एक बार सफ़र में हज़रत इब्ने उ़म्र रज़ि० से मुअज़्ज़िन ने कहा "अस्सलात", इब्ने उ़म्र रज़ि० ने फ़रमाया चलते रहो यहाँ तक कि गुरूबे शफ़क़[7] से पहले उतरे और नमाज़े मग़रिब अदा की। उसके बाद इंतिज़ार किया यहाँ तक की शफ़क़ ग़ाइब हो गई फिर इशा की नमाज़ पढ़ी। उसके बाद फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्ल० को सफ़र में जल्दी होती तो आप यही फ़रमाते और यही हुक्म देते जैसा कि मैंने कहा है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

नमाज़ के औक़ाते मम्नूआ

(नमाज़ के निषिद्ध समय)

हज़रत उ़क़बा बिन आ़मिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि तीन वक़्तों में नमाज़

1-हज के लिये जाते समय विशेष स्थान जहाँ दो वक़्त की नमाज़ एक साथ पढ़ी जाती है, 2-हज के अरकान के कारण, 3-विलम्ब, 4-शीघ्रता, 5-इमाम अबू हनीफ़ा के अनुयायी, 6-मुताबिक़ होना, कहना, 7-संध्या की लालिमा।

पढ़ने से रसूलुल्लाह सल्ल० ने मना फ़रमाया है और उन्हीं औक़ात में मुर्दो को दफ़्न करने से भी यानी नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से भी मना फ़रमाया है।

1- तुलूअ् आफ़्ताब के वक़्त[1],

2- ज़वाल के वक़्त,

3- ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त[2]। (मुस्लिम)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नमाज़

अहादीस में रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो اَللّٰهُ اَكْبَر *"अल्लाहु अक्बर"* कहते और इस तक्बीरे तहरीमा के साथ दोनों हाथ कानों तक उठाते और उसके बाद हाथ बांध लेते, इस तरह कि दाहिने हाथ को बायें हाथ की कलाई पर रखते।

हाथ बाँधने के बाद सना पढ़ते :-

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ الخ

(सुब्हानकल्लाहुम्म से आख़िर तक) उसके बाद

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○

(अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम) पढ़ते। उसके बाद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर्रहीम) पढ़ते।

फिर उसके बाद सूरए फ़ातिहा पढ़ते और उसके आख़िर में आमीन

1-सूर्योदय के समय, 2-सूर्यास्त के समय।

कहते। (इमामे आज़म रहमतुल्लाह अ़लैह के मज़्हब में आमीन आहिस्ता कहना है।)

सय्यिदना उ़म्र रज़ि० से रिवायत है कि इमाम चार चीज़ों में इख़्फ़ा करे यानी आहिस्ता से कहे:

1- تَعَوُّذْ तअ़व्वुज़

2- بِسْمِ اللّٰهِ बिस्मिल्लाह

3- آمِيْن आमीन

4- سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ الخ सुब्हानकल्लाहुम्म से आख़िर तक

फिर हुज़ूर सल्ल० सूरए फ़ातिहा के बाद कोई सुरत पढ़ते। फिर आप सल्ल० जब इस क़िराअ़त से फ़ारिग़ होते तो तक्बीर कहते हुए रुकूअ़ में जाते (झुकने के साथ ही तक्बीर कहते)।

इसी तरह जब रुकूअ़ से सर उठाते तो:-

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समिअ़ल्लाहु लिमन् हमिदह फ़रमाते।

रुकूअ़ में दोनों हथेलियों को घुटनों पर ख़ूब जमाते और उँगलियों को खोलकर रखते (उलमा फ़रमाते हैं कि नमाज़ में उँगलियों की तीन हालतें हैं- एक रुकूअ़ की हालत में खोलकर रखना चाहिए। दूसरे सज्दे की हालत में उँगलियों को मिलाकर रखना चाहिए। तीसरे तमाम हालतों में उँगलियों को अपने हाल पर छोड़ना ख़्वाह क़ियाम की हालत हो ख़्वाह तशह्हुद की हालत हो।)

हुज़ूर सल्ल० रुकूअ़ में बाज़ुओं को पहलुओं से दूर रखते और अपनी पुश्त को सीधा रखते और सर को उसके बराबर न नीचा करते और न उठाते और तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم (*सुब्हान रब्बियल् अ़ज़ीम*) कहते

(यह कम अज़ कम है, बसा औक़ात[1] आप सल्ल० इससे भी ज़्यादा कहते थे और ज़्यादा मर्तबा कहना ताक़ अदद[2] में अफ़ज़ल है) और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो सज्दे में उस वक़्त तक नहीं जाते जब तक कि सीधे खड़े न हो जाते और हुज़ूर सल्ल० सज्दा उसी अन्दाज़ से करते। आप सल्ल० जब सज्दे में जाते तो हाथों से पहले घुटनों को ज़मीन पर रखते, उसके बाद हाथों को रखते। फिर पहले बीनी (नाक) ज़मीन पर रखते फिर पेशानी मुबारक रखते, सज्दे में बाज़ुओं और पेट को रानों से दूर रखते, इतना कि बकरी का बच्चा उसके दरमियान से गुज़र सकता था। सज्दे में सर मुबारक को दोनों हथेलियों के दरमियान में रखते। सज्दे में पावों की उँगलियों का रुख़ क़िब्ला की जानिब होता था। सज्दे में कम अज़ कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلٰى (*सुब्हान रब्बियल् अअ़्ला*[3]) कहते और जब सज्दे से सर उठाते तो जब तक बिल्कुल सीधे न बैठ जाते, दूसरा सज्दा न फ़रमाते। जब क़ियाम तवील होता तो रुकूअ़ व सज्दा और जल्सा[4] भी तवील होता और जब क़ियाम मुख़्तसर होता तो ये सब मुख़्तसर होते। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

आप हर दो रकअ़त पर अत्तहिय्यात पढ़ते थे। (सहीह़ मुस्लिम)

हज़रत वाइल रज़ि० की हदीस में है कि आप सल्ल० जब सज्दे से (क़ियाम के लिये) खड़े होते तो रानों और घुटनों पर टेक लगाकर खड़े होते और सुन्नत यह है कि हाथों को घुटनों पर रखे और उसी से टेक लगाते हुए खड़ा हो जाए और हज़रत उम्र रज़ि० से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने खड़े होते वक़्त ज़मीन पर हाथों से टेक लगाकर खड़े होने को मना फ़रमाया है लेकिन बवक़्ते ज़रूरत ज़्यादतिये मशक़्क़त[5], किब्रे-सिन्नी[6] और कमज़ोरी के वक़्त ज़मीन पर टेक लगाना जाइज़ है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशह्हुद में बैठते तो

1-कभी-कभी, 2-विषम संख्या, 3-पवित्र है मेरा पालनहार और सबसे बड़ा है, 4-बैठना, 5-अधिक परेशानी, 6-बुढ़ापा।

बायां पाँव बिछाते उस पर बैठते और दाहिना पाँव खड़ा रखते और जब आख़िरी रकअ़त के बाद तशह्हुद के लिए बैठते तो क़ायदए ऊला[1] की तरह बैठते और जब तशह्हुद पढ़ते तो दोनों हाथों को दोनों रानों पर रखते और दाहिने हाथ की अंगुश्ते शहादत[2] से इशारा करते। (इसकी सूरत यह है कि छंगुली और उसके पास की उंगली को हथेली के अन्दर जमा करे और बीच की उंगली और अंगूठे से हलक़ा बनाए और शहादत की उंगली से इशारा करे और जब ला इलाह (لَآ إِلٰهَ) कहे तो उंगली उठाए और इल्लल्लाह (إِلَّا اللّٰهُ) कहने पर नीचे करे। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद और हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मर्वी है कि हुज़ूर सल्ल० ने हमें तालीम फ़रमाई कि हम इन अल्फ़ाज़ में अत्तहिय्यात पढ़ें:-

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस् सालिहीन। अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुह। (रवाहुल् मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

अनुवादः तमाम क़ौली या ज़बानी इबादतें और तमाम फ़ेली या बदनी इबादतें और तमाम माली इबादतें अल्लाह ही के लिये हैं। सलाम हो तुम पर ऐ नबी सल्ल० और अल्लाह की रहमत और बरकतें। सलामती हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसके बन्दे और उसके पैग़म्बर या रसूल हैं।

1-पूर्ववत, 2-तर्जनी।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रज़ि० से मर्वी है कि मुझे काब बिन उज्रा रज़ि० मिले तो उन्होंने कहा कि- क्या मैं तुम्हें एक तोहफ़ा जिसे मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना पेश कर दूँ। मैंने कहा- हाँ! ज़रूर, तो उन्होंने कहा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम से मैंने अर्ज़ किया कि आप सल्ल० ने हमें आप पर सलाम भेजने का तरीक़ा तो बता दिया, लेकिन हम दुरूर किस तरह भेजें, तो आप सल्ल० ने फ़रमाया इन अल्फ़ाज़ में-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَاصَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

بخاری ومسلم ، معارف الحديث

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद। अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

अनुवाद: ऐ अल्लाह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की आल (औलाद या सन्तान) पर रहमत भेज, जिस तरह तू ने रहमत भेजी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की आल (सन्तान) पर। बेशक तू तारीफ़ के लायक़ बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह! बरकत दे हज़रत मुहम्मद सल्ल० को और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की आल (सन्तान) पर जिस तरह तू ने बरकत दी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की आल (औलाद) को। बेशक तू तारीफ़ के लायक़ है, बुज़ुर्गी वाला है।

एक दूसरे सहाबी हज़रत अबू मस्ऊद अंसारी रज़ि० से भी क़रीब-क़रीब इसी मज़्मून की एक हदीस मर्वी है, जिसमें है कि जब हुज़ूर सल्ल० से दुरूद

के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया कि हज़रत सल्ल० जब हम नमाज़ में आप सल्ल० पर दुरूद पढ़ें तो किस तरह पढ़ें, तो आप सल्ल० ने मज़्कूरा[1] दुरूद शरीफ़ की तल्क़ीन[2] फ़रमाई। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

तबरानी, इब्ने माजा और दारे क़ुत्नी हज़रत सुहैल इब्ने सअ़द से रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक्रम सल्ल० ने फ़रमाया कि उस शख़्स की नमाज़ ही नहीं जो अपने नबी पर दुरूद न भेजे। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

दुरूद शरीफ़ के बाद और सलाम से पहले दुआ़

मुस्तदरक हाकिम में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० का इर्शाद है कि नमाज़ी तशहहुद के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़े और उसके बाद दुआ़ करे।

सहीह़ बुख़ारी व सहीह़ मुस्लिम वग़ैरा की एक रिवायत में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से तशहहुद की तल्क़ीन वाली हदीस के आख़िर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह इर्शाद भी मर्वी है यानी नमाज़ी जब तशहहुद (अत्तहिय्यात) पढ़ चुके तो जो दुआ़ उसे अच्छी मालूम हो, उसका इंतिख़ाब[3] कर ले और अल्लाह तआ़ला से वही दुआ़ मांगे। (मआ़रिफ़ुल् हदीस)

दुरूद शरीफ़ के बाद नमाज़ में दुआ़ आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम से तालीमन् भी साबित है और अ़मलन् भी। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जब तुममें से कोई आख़िरी तशहहुद पढ़कर फ़ारिग़[4] हो जाए, तो उसे चाहिये कि चार चीज़ों से अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगे। (मुस्लिम)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम दुरूद शरीफ़ के बाद यह दुआ़ पढ़ते थे:-

1-उक्त, 2-निर्देश, 3-चयन, 4-मुक्त।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि व अऊज़ु बिक मिन् फ़ित्नतिल् मसीहिद्-दज्जालि व अऊज़ु बिक मिन् फ़ित्नतिल् मह्या वल्-ममाति अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् मअ्समि वल्-मग़्रमि।

अनुवाद: ऐ अल्लाह मैं आपसे क़ब्र के अ़ज़ाब[1] की पनाह चाहता हूँ और मसीहे दज्जाल[2] के फ़ित्ने से पनाह चाहता हूँ और मौत और हयात[3] के फ़ित्ने से और गुनाहों से और (बिला वजह) तावान[4] भुगतने से पनाह चाहता हूँ।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम इस दुआ़ की तालीम इस तरह हमको देते थे, जिस तरह क़ुरआन की सूरत की तालीम देते थे।

नबीए करीम सल्ल० तशह्हुद के बाद (नमाज़ के आख़िर में) दाहिने और बायें सलाम फेरते और अपनी चश्मे मुबारक[5] नमाज़ में खुली रखते थे, बन्द न करते थे। (सहीह मुस्लिम, मदारिजुन्नुबुव्वा)

सज्दा सह्व (भूल का सज्दा)

1- नमाज़ में जितनी चीज़ें वाजिब हैं, उनमें से एक वाजिब या कई वाजिब अगर भूले से रह जाएं तो सज्दा सह्व करना वाजिब है और उसके कर लेने से नमाज़ दुरुस्त हो जाती है। अगर सज्दा सह्व नहीं किया तो नमाज़ फिर से पढ़े। (बिहिश्ती ज़ेवर)

2- अगर भूले से नमाज़ का कोई फ़र्ज़ छूट जाए तो सज्दा सह्व करने से नमाज़ दुरुस्त नहीं होगी, फिर से पढ़े। (रद्दुल्-मुख़्तार)

3- सज्दा सह्व करने का तरीक़ा यह है कि आख़िरी रकअ़त में

1-कष्ट, 2-झूठ या धोखेबाज़ दज्जाल (दुष्ट), 3-जीवन, 4-दण्ड, 5-शुभ नेत्र।

फ़क़त[1] अत्तहिय्यात पढ़कर दाहिनी तरफ़ एक सलाम फेर के दो सज्दे करे फिर बैठकर अत्तहिय्यात और दुरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ के दोनों तरफ़ सलाम फेरे और नमाज़ ख़त्म करे। (फ़तावा हिन्दिया व शरहुल् बिदाया)

अगर भूले से सलाम फेरने से पहले ही सज्दा सह्व कर लिया तब भी अदा हो गया और नमाज़ सहीह हो गई।

(शर्हुल् बिदाया, तहतावी, बिहिश्ती ज़ेवर)

नमाज़ के बाद के मामूलात[2]

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम का यह मामूल था कि आप सल्ल० जब सलाम फेरते तो तीन बार

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

अस्तग़िफ़रुल्लाह, अस्तग़िफ़रुल्लाह, अस्तग़िफ़रुल्लाह[3] कहते और फिर

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबारक्त या ज़ल्जलालि वल्इक्राम

(अनुवाद: ऐ अल्लाह! तू सलामत है[4] और तुझसे ही सलामती[5] है। ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले! तू बरकत वाला है) पढ़ते।

सिर्फ़ इतना कहने की हद तक क़िब्ला रुख़ रहते और मुक़्तदियों[6] की तरफ़ तेज़ी से मुन्तक़िल[7] हो जाते और अपने दायें या बायें जानिब (रुख़े अनवर[8]) फेर लेते और इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने बताया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को कई बार बायें रुख़ हो जाते देखा और हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम को कस्रत[9] से दायें रुख़ पर देखा। (ज़ादुल्-मआद)

1-केवल, 2-किये जाने वाले कार्य, नियम, 3-ऐ अल्लाह क्षमा कर, 4-शान्त, 5-शान्ति, 6-नमाज़ियों, 7-मुड़ जाते, 8-कान्तिमान मुख, 9-अधिकतर।

नमाज़ों के बाद की ख़ास दुआएँ

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ा करते थे-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِىَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ ۔ بخاری، مسلم، مشکوٰۃ

ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु वलहुल्हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर। अल्लाहुम्म ला मानिअ़ लिमा अअ़्तैत वला मुअ़्तिय लिमा मनअ़्त वला यन्फ़उ ज़ल्-जद्दि मिन्कल्-जद्दु।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात)

अनुवाद: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जो तन्हा है और जिसका कोई शरीक नहीं उसी के लिये मुल्क और उसी के लिये सब तारीफ़ें हैं और वह हर चीज़ पर क़ादिर[1] है। ऐ अल्लाह! जो तू दे, उसका कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोके उसका कोई देने वाला नहीं और किसी मालदार को तेरे अज़ाब से मालदारी नहीं बचा सकती है।

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि नमाज़ में सलाम फेरने के बाद तमाम अन्वाए ज़िक्र[2] पर (सभी ज़िक्र के तरीक़ों पर) रिवायत कर्दा[3] इस्तिग़फ़ार[4] को मुक़द्दम[5] रखना चाहिए। उसके बाद ''अल्लाहुम्म अन्तस्-सलाम'' आख़िर तक पढ़ना चाहिए। फिर उसके बाद मज़्कूरा बाला[6] दुआ पढ़ना चाहिए। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम दुआ के शुरू में और कभी दुआ के दरमियान में अक्सर इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा[7]

1-सर्वशक्तिमान, 2-समस्त वर्णन के नियमों पर, 3-रिवायत की गई, 4-क्षमा याचना, 5-प्रधान, 6-उपर्युक्त वर्णित, 7--वृद्धि।

फ़रमाते-

﴿رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ o﴾

سورة بقرة آية: ٢٠١

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतँव व फ़िल् आख़िरति हसनतँव वक़िना अज़ाबन् नारि o

अनुवाद: ऐ हमारे रब दुनिया में हमें भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब नमाज़ से सलाम फेरते तो तीन बार

أَسْتَغْفِرُ اللهَ

(अस्तग़्फ़िरुल्लाह[1])

कहते, फिर मज़्कूरा बाला दुआ पढ़ते।

(मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्ल० जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते तो अपना दाहिना हाथ सर पर फेरते और फ़रमाते:

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّي الْهَمَّ وَالْحُزْنَ۔

بزار، طبراني، حصن حصين

बिस्मिल्ला-हिल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम। अल्लाहुम्म अज़्हिब अन्निल् हम्म वल्-हुज़्न।

अनुवाद: मैंने अल्लाह के नाम के साथ नमाज़ ख़त्म की, जिसके सिवा कोई माबूद[2] नहीं (और) जो रहमान व रहीम है। ऐ अल्लाह! तू मुझसे फ़िक्र और रंज को दूर फ़रमा। हुज़ूरे अकरम सल्ल० का हर नमाज़ के बाद मुअव्वज़तैन[3] पढ़ना भी आया है और यह हदीस हद दर्जा तक सहीह है।

1-ऐ अल्लाह क्षमा कर, 2-उपास्य, 3-सूरए फ़लक़ व सूरए नास (पारा: 30)।

और हर नमाज़ के बाद दस मर्तबा:

(*कुल हुवल्लाहु अहद*[1]) पढ़ना भी आया है। इसमें फ़ज़्ले अज़ीम[2] है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० हर नमाज़ के बाद यह दुआ किया करते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् कुफ़्रि वल् फ़क्रि व अज़ाबिल् क़ब्रि।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कुफ़्र से और फ़क़्र व फ़ाक़ा से और क़ब्र के अज़ाब से। (जामे तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० से रिवायत है कि जब शाम या सुबह होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ ज़रूर फ़रमाया करते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَفِیْٓ اَهْلِیْ وَمَالِیْ ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् अफ़्व वलआफ़ियत फ़िद्दुन्या वल् आख़िरति व फ़ी अह्ली व माली।

अनुवाद: ऐ मेरे अल्लाह! मैं अपने दीन व दुनिया और अहल[3] व माल में तुझसे मुआफ़ी और आफ़ियत का तलबगार हूँ। (मआरिफ़ुल् हदीस)

1-कहो अल्लाह एक है, 2-महान कृपा, 3-परिवार।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम की नमाज़ की कैफ़ियत[1]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्ल० इस दर्जा नवाफ़िल पढ़ा करते थे कि पांव मुबारक पर वर्म[2] आ जाता था। किसी ने अर्ज़ किया कि जब आप पर अगले-पिछले सब गुनाहों की मुआफ़ी की बशारत[3] नाज़िल[4] हो चुकी है तो फिर आप इस दर्जे मशक्क़त क्यों बर्दाश्त फ़रमाते हैं? आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया:

أَفَلَا أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا ۝

अफ़ला अकून अब्दन् शकूरा ०

अनुवाद: कि जब हक़ तआला जल्ल शानुहू ने मुझ पर इतना इन्आम फ़रमाया तो क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरी आँखों की ठण्डक नमाज़ में है।

(ख़साइसे नबवी)

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक रात, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ था। हुज़ूर सल्ल० ख़्वाबे इस्तिराहत[5] से बेदार[6] हुए, मिस्वाक की और वुज़ू करके नमाज़ के लिये खड़े हो गए तो मैं भी नमाज़ के लिये हुज़ूर सल्ल० के साथ खड़ा हो गया। फिर आप ने सूरए बक़रा की तिलावत शुरु फ़रमाई तो कोई रहमत वाली आयत ऐसी न गुज़री, जिसमें हुज़ूर सल्ल० ने तवक़्क़ुफ़ करके[7] ख़ुदा के हुज़ूर रहमत की दरख़्वास्त न की हो और ऐसी कोई अज़ाब वाली आयत न गुज़री जिसमें हुज़ूर सल्ल० ने तवक़्क़ुफ़ करके ख़ुदा के हुज़ूर उसके अज़ाब से पनाह न मांगी हो (नफ़्ली

1-स्थिति, 2-सूजन, 3-खुशख़बरी, 4-अवतरित, 5-चैन की नींद, 6-जागृत, 7-रुक कर के।

नमाज़ों में इस तरह रुक कर दुआ करना जाइज़ है बशर्ते कि अरबी में हो, लेकिन फ़र्ज़ नमाज़ों में ऐसा करना दुरुस्त नहीं) फिर आप सल्ल० ने क़ियाम के बराबर तवील रुकूअ़ फ़रमाया और पढ़ा-

سُبْحَانَ ذِى الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَكُوْتِ وَ الْعَظَمَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ۔

सुब्हान ज़िल्-जबरूति वल् मलकूति वल्अ़ज़्मति वल्किब्रियाइ

अनुवादः पाक है वह दबदबे वाला या बुज़ुर्गी वाला, बादशाहत, अ़ज़्मत और बड़ाई वाला।

फिर रुकूअ़ से सरे मुबारक उठाकर इतना ही क़ियाम[1] फ़रमाया और उसमें यही कलिमात पढ़े। इसके बाद सज्दा किया और उसमें भी यही कलिमात पढ़े फिर दोनों सज्दों के दरमियान जुलूस[2] फ़रमाया। इसमें भी उसी के मानिंद कलिमात अदा फ़रमाए। इसके बाद बक़िया रकअ़तों में सूरए आले इम्रान, सूरए निसा और सूरए माइदह तिलावत फ़रमाई। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक रात तहज्जुद में एक ही आयत की तकरार[3] फ़रमाते रहे। वह आयत यह थी:

﴿إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ٥﴾

سورة المائدة آية: ١١٨

इन् तुअ़ज़्ज़िब्हुम् फ़इन्नहुम् इबादुक व इन तग़्फ़िर् लहुम् फ़इन्नक अन्तल् अ़ज़ीज़ुल्हकीम ०(सूरए माइदा, आयत, 118, ख़साइले नबवी)

अनुवादः अगर आप उनको अ़ज़ाब दें तो बेशक वे आपके बन्दे हैं और अगर आप उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दें तो आप ही ज़बरदस्त हिक्मत वाले हैं।

1-खड़ा होना, 2-बैठना, 3-पुनरावृत्ति, बार-बार पढ़ना।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ास नमाज़ें

हदीस: हज़रत अता रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने एक मर्तबा हज़रत आइशा रज़ि० अन्हा से अर्ज़ किया कि हुज़ूरे अक़दस सल्ल० की कोई अजीबतरीन बात सुनायें। उन्होंने इर्शाद फ़रमाया कि हुज़ूरे अकरम सल्ल० की कौन-सी बात ऐसी थी जो अजीबतरीन न थी। उसके बाद फ़रमाने लगीं- एक रात का क़िस्सा है कि सोने के लिये मकान पर तशरीफ़ लाए और मेरे पास मेरे लिहाफ़ में लेट गए। लेटते ही थोड़ी-सी देर में फ़रमाया छोड़ो ताकि मैं अपने रब की इबादत करूँ, यह फ़रमा कर खड़े हो गए, वुज़ू किया और नमाज़ की नियत बांध ली और रोना शुरू कर दिया, यहाँ तक कि सीनए मुबारक तक आँसू बहकर आने लगे। उसके बाद रुकूअ किया उसमें भी रोते रहे। फिर सज्दा किया, उसमें भी रोते रहे, फिर सज्दे से उठे और रोते रहे, ग़र्ज़ सुबह तक यही कैफ़ियत[1] रही, हत्ताकि बिलाल रज़ि० सुबह की नमाज़ के लिए बुलाने को आ गए। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल० ! आप सल्ल० इस क़द्र क्यों रोए, अल्लाह जल्ल शानुहू ने तो आपके अगले पिछले सब गुनाह मुआफ़ फ़रमा दिये? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि तो मैं अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ? उसके बाद इर्शाद फ़रमाया मैं ऐसा क्यों न करता हालाँकि आज मुझ पर ये आयतें नाज़िल हुई हैं। इसके बाद आपने *इन्न फ़ी ख़ल्क़िस-समावाति* से *ला तुख़्लिफ़ुल-मीआद* तक सूरए आले इम्रान के आख़िरी रुकूअ की आयतें तिलावत फ़रमायीं।

(ख़साइले नबवी, मदारिजुन्नुबुव्वा)

तहज्जुद और वित्र की नमाज़

हज़रत अस्वद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुज़ूरे अक़दस सल्ल० की रात की नमाज़ यानी तहज्जुद और वित्र के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर सल्ल० का क्या मामूल[2] था। उन्होंने

1-स्थिति, 2-नियम।

फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० इशा की नमाज़ के बाद रात के अव्वल हिस्से में इस्तिराहत[1] फ़रमाते थे। उसके बाद तहज्जुद पढ़ते रहते थे। यहाँ तक कि आख़िरी शब हो जाती थी तब वित्र पढ़ते। उसके बाद अपने बिस्तर पर तशरीफ़ ले आते थे। अगर रग़्बत[2] होती तो अपने अहल[3] के पास तशरीफ़ ले जाते, फिर सुबह की अज़ान के बाद फ़ौरन उठकर ग़ुस्ल की ज़रूरत होती तो ग़ुस्ल फ़रमाते वर्ना वुज़ू फ़रमा कर नमाज़ के लिये मस्जिद तशरीफ़ ले जाते।
(शमाइले तिर्मिज़ी)

शाबान की पन्द्रहवीं शब

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरे पास इस वक़्त जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और बताया कि आज की रात शाबान की पन्द्रहवीं रात है। इस रात को हक़ तआला शानुहू बनू कल्ब[4] की बकरियों के बालों के बराबर मख़्लूक़ को जहन्नम से आज़ाद करेंगे। अल्बत्ता मुश्रिक और कीना परवर[5] और क़ता रहमी करने वाले[6] और टख़ने से नीचे लुंगी पहनने वाले नीज़[7] वालिदैन की नाफ़रमानी करने वाले, हमेशा शराब नोशी करने वाले पर हक़ तआला शानुहू नज़रे इनायत न फ़रमायेंगे।

इसके बाद आप सल्ल० ने कपड़े उतारे और फ़रमाया ऐ आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा!) क्या तुम आज रात इबादत करने की इजाज़त देती हो? (इजाज़त हासिल करने की ज़रूरत इसलिये हुई कि रात भर इबादत करने का मामूल न था, बल्कि कुछ हिस्सा अज़्वाजे मुतहहरात[8] की दिलजोई[9] और दिलजमई[10] के लिये भी मख़्सूस था। उस रात न हो सका।)

मैंने अर्ज़ किया हाँ, हाँ मेरे वालिदैन आप सल्ल० पर क़ुर्बान हों। चुनांचे आप सल्ल० खड़े हुए और नमाज़ शुरू फ़रमा दी फिर एक लम्बा सज्दा किया, हालाँकि मुझे ख़्याल हुआ कि कहीं ख़ुदा न ख़्वास्ता आप सल्ल०

1-आराम, 2-रुचि, 3-परिवार, 4-अरब का एक क़बीला, 5-द्वेषी, 6-परस्पर सम्बन्ध-विच्छेदक, 7-भी, और, 8-हुज़ूर की पवित्र पत्नियां, 9-आनन्द, 10-संतोष।

की रूह तो क़ब्ज़ नहीं हो गई। मैं खड़ी होकर टटोलने लगी और अपना हाथ आप सल्ल० के तलवों पर रखा। आप सल्ल० में कुछ हरकत हुई, जिससे मै मसरूर[1] व मुत्मइन[2] हो गई। मैंने सुना कि आप सल्ल० सज्दे में यह पढ़ रहे थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِعَفْوِكَ مِنْ عِقَابِكَ وَاَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ جَلَّ وَجْهُكَ لَاۤ اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَاۤ اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिअफ़्विक मिन् इक़ाबिक व अऊज़ु बिरिज़ा-क मिन् सख़तिक व अऊज़ु बिक मिन्क जल्ल वजुहुक ला उह्सी सनाअन् अलैक अन्त कमा अस्नैत अला नफ़्सिक।

अनुवाद: मैं पनाह चाहता हूँ आपके अफ़्व व दर्गुज़र[3] के ज़रिये आपके अज़ाब से और पनाह चाहता हूँ आपकी रिज़ा के ज़रिये आपकी नाराज़गी से, आपकी पनाह चाहता हूँ आप ही से। आप बा-अज़्मत[4] हैं और मैं आपकी शायाने शान[5] तारीफ़ नहीं कर सकता आप वैसे ही हैं जैसे आपने ख़ुद अपनी सना फ़रमाई[6]।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा कहती हैं कि सुबह को इन कलिमाते दुआइया[7] का तज़्किरा किया तो आपने फ़रमाया ऐ आइशा! तुम इनको सीख लो और औरों को सिखाओ। मुझे जिब्रील अलैहिस्सलाम ने ये कलिमात सिखाए हैं और कहा है कि मैं इन्हें सज्दे में बार-बार पढ़ा करूँ।

(बैहक़ी, मिश्कात, अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

औरादे मस्नूना[8] सुबह व शाम

हज़रत मुस्लिम बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने उनको ख़ुसूसियत के साथ तल्क़ीन[9] फ़रमाई कि जब

1-प्रसन्न, 2-संतुष्ट, 3-माफ़ी व क्षमा के द्वारा, 4-महत्तवशाली, 5-शान के अनुसार, 6-प्रशंसा की, 7-दुआ के शब्दों, 8-वे ज़िक्र जिन्हें रसूल सल्ल० स्वयं किया करते थे, 9-निर्देश देना।

तुम मग़्रिब की नमाज़ ख़त्म कर लो तो किसी से बात करने से पहले सात दफ़ा यह दुआ करो.-

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म अजिर्नी मिनन् नारि

अनुवादः ऐ अल्लाह मुझे दोज़ख़ से पनाह दे।

तुमने मग़्रिब के बाद अगर यह दुआ की और उसी रात में तुमको मौत आ गई तो दोज़ख़ से तुम्हारे बचाव का फ़ैसला कर दिया जाएगा। और इसी तरह जब तुम सुबह की नमाज़ पढ़ो तो किसी आदमी से बात करने से पहले सात बार अल्लाह के हुज़ूर में अर्ज़ करोः

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म अजिर्नी मिनन् नारि

अगर उस दिन तुम्हारी मौत मुक़द्दर होगी तो अल्लाह तआला की तरफ़ से तुमको दोज़ख़ से बचाने का हुक्म हो जाएगा।

(सुनन इब्ने माजा, ज़ादुल्-मआद)

हज़रत उसमाने ग़नी रज़ि० कहते हैं कि मैंने नबीए करीम सल्ल० को ये फ़रमाते हुए सुना कि जो शख़्स हर दिन की सुबह और हर रात की शाम को तीन-तीन बार यह दुआ पढ़ेः

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَایَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَالسَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ۔

"बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअस्मिही शैउन फ़िल् अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व हुवस्समीउल् अलीम"

अनुवादः अल्लाह के नाम से हमने सुबह की (या शाम की) जिसके नाम के साथ आसमान या ज़मीन में कोई चीज़ नुक़सान नहीं दे सकती वह

सुनने वाला, जानने वाला है। वह उस दिन और रात को हर बला से महफ़ूज़ व मामून[1] रहेगा और तीन बार यह दुआ मांगे:-

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ كُلِّهَا مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ۔

अऊज़ु बिकलिमातिल्-लाहित्ताम्माति कुल्लिहा मिन् शर्रि मा ख़लक़।

अनुवाद: मैं अल्लाह के कलिमाते ताम्मा[2] से पनाह लेता हूँ, उसकी हर मख़्लूक़ के शर[3] से। (अदबुल् मुफ़रद, इब्ने हिब्बान, हाकिम)

नमाज़े फ़ज्र के बाद और रात में

1- सूरए फ़ातिहा एक मर्तबा, आयतल्-कुर्सी एक मर्तबा।

﴿شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ۔

(आख़िर आयत) فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ۔﴾ (तक एक मर्तबा)

سورۃ آل عمران آیۃ: ۱۸۔۱۹

शहिदल्लाहु अन्नहू ला इलाह इल्लाहुव वल्-मलाइकतु व उलुल्-इल्मि क़ाइमम् बिल्क़िस्ति (अखिर आयत) *फ़इन्नल्लाह सरीउल् हिसाब* तक एक मर्तबा।

2- सूरए फ़ातिहा और आयतल्-कुर्सी और उसके साथ वाली आयतें पाँचों नमाज़ों के बाद पढ़ लिया करें तो जन्नत उसका ठिकाना हो और हज़ीरतुल्-क़ुद्स[4] में रहे। अल्लाह तआला रोज़ाना उसे सत्तर मर्तबा नज़रे रहमत से देखें और सत्तर हाजतें[5] उसकी पूरी फ़रमा देंगे यानी उसकी मग़्फ़िरत है। (इब्नुस् सुन्नी)

3- तीन मर्तबा-

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا وَّرَسُوْلًا۔

रज़ीतुबिल्लाहि रब्बंव् व बिल्इस्लामि दीनंव् व बिमुहम्मदिन् (सल्ल०) नबिय्यंव् व रसूला।

1-सुरक्षित, 2-समस्त शब्द, 3-बुराई, 4-जन्नत में एक स्थान का नाम, 5-आवश्यकता।

अनुवाद: मैं अल्लाह तआ़ला को रब मानने पर, इस्लाम को दीन मानने पर और मुहम्मद सल्ल० को नबी और रसूल मानने पर राज़ी हूँ।

फ़ज़ीलत: इसको तीन मर्तबा पढ़ लेने पर अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन इतना इनाम देंगे कि इसका पढ़नेवाला राज़ी हो जाएगा।

(हिस्ने हसीन)

4- हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया शाम को और सुबह को (यानी दिन शुरू होने पर और रात शुरू होने पर तुम) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (*कुल् हुवल्लाहु अहद*) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (*कुल् अऊज़ु बिरब्बिल् फ़लक़*) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ (*कुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नास*) तीन बार पढ़ लिया करो। यह हर चीज़ के लिये तुम्हारे लिये काफ़ी है। (सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

﴿ فَسُبْحَانَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ٥ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ٥ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ٥ ﴾

سورة الروم، آية: ١٧-١٩ (صحاح سته)

फ़ सुब्हानल्लाहि ही-न तुम्सून व हीन तुस्बिहून ० वलहुल् हम्दु फ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि व अ़शिय्यंव् व हीन तुज़्हिरून ० युख़्रिजुल् हय्य मिनल् मय्यिति व युख़्रिजुल् मय्यित मिनल् हय्यि व युह्यिल् अर्ज़ बअ़्द मौतिहा व कज़ालिक तुख़्रजून ० (सूरतुर्रूम, आयत: 17-19, सिहाहे सित्ता)

अनुवाद: सो तुम अल्लाह की पाकी बयान करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त और तमाम आसमानों और ज़मीन में उसी के लिये हम्द[1] है और ज़वाल के बाद भी और ज़ुहर के वक़्त भी। वह जानदार को बेजान से और बेजान को जानदार से बाहर लाता है और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है इसी तरह तुम उठाए जाओगे।

फ़ज़ीलत: रात को पढ़े तो दिन के तमाम अज़्कार[2] व औराद[3] की

1-प्रशंसा, 2-ज़िक्र का बहुवचन, 3-जप-तप, वज़ीफ़ा।

कमी पूरी कर दी जाती है और सुबह को पढ़े तो रात के अवराद व अज़्कार की कमी पूरी कर दी जाती है। (सिहाहे सित्ता)

अब्दुल्लाह बिन ग़न्नाम बयाज़ी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया जो बन्दा सुबह होने पर अल्लाह तआला के हुज़ूर में अर्ज़ करे:

اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِىْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ۔ (معارف الحديث)

अल्लाहुम्म मा अस्बह बी मिन् निअ्मतिन् अव् बिअहदिम् मिन् ख़ल्किक फ़मिन्-क वह्दक ला शरीक लक लकल्हम्दु व लकश्शुक्र।(मआरिफ़ुल् हदीस)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! इस सुबह के वक़्त जो भी कोई नेअ्मत मुझ पर या किसी भी दूसरी मख़्लूक़ पर है, वह सिर्फ़ तेरी ही तरफ़ से है। तू तन्हा है तेरा कोई शरीक नहीं। तेरे ही लिये हम्द है, और तेरे ही लिये शुक्र है।

तो उसने उस दिन की सारी नेअ्मतों का शुक्र अदा कर दिया और जिसने शाम होने पर अल्लाह तआला के हुज़ूर में इसी तरह अर्ज़ किया तो उसने पूरी रात की नेतमों का शुक्र अदा कर दिया। (मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि मुझे ज़िक्र व दुआ के वह कलिमे तालीम फ़रमा दीजिये जिनको मैं सुबह व शाम पढ़ लिया करूँ। आप सल्ल० ने फ़रमाया- अल्लाह तआला से यूँ अर्ज़ किया करो:

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَىْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ وَشَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ۔

अल्लाहुम्म फ़ातिरस्-समावाति वल् अर्ज़ि अ़लिमल् ग़ैबि वश्शहादति रब्ब कुल्लि शैइंव् व मलीकहू अश्हदु अल्ला इलाह इल्ला अन्त व अऊ़ज़ु बिक मिन शर्रि नफ़्सी व शर्रिश्-शैतानि व शिर्किही।

अनुवाद: ऐ अल्लाह पैदा करने वाले आसमानों और ज़मीन के, ग़ायब और हज़िर के जानने वाले (आप) हर शय[1] के परवरदिगार और उसके मालिक हैं। मैं गवाही देता हूँ कि आपके सिवा कोई माबूद नहीं और मैं आपसे पनाह चाहता हूँ अपने नफ़्स के शर[2] से और शैतान के शर से और उसके शिर्क[3] से।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया– ऐ अबू बक्र! तुम अल्लाह तआला से यह दुआ करो सुबह को और शाम को और सोने के लिये बिस्तर पर लेटते वक़्त। (सुनने अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझसे फ़रमाया– ऐ मआज़ ! मुझे तुमसे महब्बत है। मैंने अर्ज़ किया या रसुलल्लाह सल्ल० मुझे भी आपसे महब्बत है। आप सल्ल० ने फ़रमाया– तो (इस महब्बत ही की बिना पर मैं तुझसे कहता हूँ कि) हर नमाज़ के बाद अल्लाह तआला से यह दुआ ज़रूर किया करो और कभी इसे न छोड़ो:

رَبِّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ۔

"रब्बि अइन्नी अला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि इबादतिक।"

अनुवाद: ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी मदद फ़रमा और मुझे तौफ़ीक़ दे अपने ज़िक्र की, अपने शुक्र की और अपनी अच्छी इबादत की।

(मुस्नदे अहमद, अबी दाऊद, सुनने नसाई, ज़ादुल्मआद, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया या रसुलल्लाह सल्ल०! मुझे कोई ऐसी दुआ तालीम फ़रमा दीजिए जो मैं अपनी नमाज़ में मांगा करूँ। तो आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया यूँ अर्ज़ किया करो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا کَثِیْرًا وَّلَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْلِیْ مَغْفِرَةً

1-वस्तु, 2-इन्द्रियों की बुराई, 3-अल्लाह की ज़ात में किसी को साझीदार बनाना।

مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔ بخاری ومسلم، مدارج النبوۃ

अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन् कसीरंव् व ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त फ़ग़्फ़िर्-ली मग़्फ़िरतम् मिन् इन्दिक वर्हम्नी इन्नक अन्तल् ग़फ़ूरुर्रहीम

(बुख़ारी व मुस्लिम, मदारिजुन्नुबुव्वा)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मैंने अपने नफ़्स पर बहुत ज़ुल्म किया और इसमें शक नहीं कि तेरे सिवा गुनाहों को कोई बख़्श नहीं सकता। पस तू अपनी तरफ़ से ख़ास बख़्शिश से मुझको बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा दे। बेशक तू ही बख़्शने वाला निहायत रहम वाला है।

तस्बीहाते शामो-सहर

तस्बीहाते फ़ातिमा

मुस्नद इमामे अहमद में हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से एक रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह कलिमात अपनी साहिबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को सिखाए। जब वह एक गुलाम तलब करने के लिये हाज़िर हुई तो आप सल्ल० ने फ़रमाया सोते वक़्त तुम 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल्हम्दु लिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अक्बर पढ़ लिया करो और एक बार कहो:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔ مسلم، بخاری، ترمذی

ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु वलहुल् हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन् क़दीर। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

अनुवाद: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है। उसका कोई शरीक नहीं। उसी के लिये मुल्क है और उसी के लिये सब तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

अफ़रादे उम्मत[1] के लिये मुस्तहब[2] है कि हर नमाज़ के बाद यह कहा करें और 100 की गिनती पूरी करने के लिये एक बार मज़्कूरा[3] दुआ पढ़ लिया करें। (ज़ादुल्-मआ़द)

जिसने नमाज़े फ़ज्र व मग़रिब के बाद अपनी जगह पर बैठे-बैठे कोई बात करने से पहले दस बार पढ़ा:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔

ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु युह्यी व युमीतु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर।

अनुवाद: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह तन्हा है। उसका कोई शरीक नहीं। उसी के लिये मुल्क है और उसीके लिये सब तारीफ़ है। उसी के हाथ में ख़ैर[4] है। वह ज़िन्दा करता है और मारता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर[5] है।

उसके लिये ये विर्द[6] नेकियों को क़ाइम करने, बदियों को मिटाने और दर्जात की बुलन्दी के लिये अज़ीम तासीर रखता है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा, ज़ादुल्-मआ़द)

दीगर[7] तस्बीहात

1- सौ मर्तबा सुबह के वक़्त पढ़े और सौ मर्तबा शाम के वक़्त पढ़े:

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ

"सुब्हानल्लाहिल् अज़ीमि व बिहम्दिही" अल्लाह पाक है, अज़्मत वाला है और सभी तारीफ़ें उसी की हैं।

2- सुबह और शाम सौ-सौ मर्तबा पढ़ें:

1-इस्लाम के प्रत्येक अनुयायी के लिये, 2-पवित्र, वे कर्म जिन्हें करने पर सवाब परन्तु न करने पर गुनाह नहीं, 3-उपर्युक्त वर्णित, 4-कल्याण, 5-सर्वशक्तिमान, समर्थ, 6-ज़िक्र, 7-अन्य।

سُبْحَانَ اللّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दुलिल्लाहि, ला इलाह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अक्बर।

3- सौ मर्तबा रोज़ाना पढ़ें:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

"सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही।"

4- जब सोने का इरादा करें तो यह पढ़ें:

سُبْحَانَ اللّٰهِ ٣٣ بار، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ٣٣ بار، اَللّٰهُ اَكْبَرُ ٣٤ بار

सुब्हानल्लाहि 33 बार, अल्हम्दुलिल्लाहि 33 बार, अल्लाहु अक्बर 34 बार।

5- जिस वक़्त तहज्जुद के लिये उठे यह पढ़े:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ١٠ بار، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ١٠بار، سُبْحَانَ اللّٰهِ ١٠بار

अल्लाहु अक्बर 10 बार, अल्हम्दु लिल्लाहि 10 बार, सुब्हानल्लाहि 10 बार।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ تَعَالٰى رَبِّىْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ ١٠ بار

अस्तग़्फ़िरुल्लाह तआला रब्बी मिन् कुल्लि ज़म्बिंव् व अतूबु इलैहि, 10 बार।

6- हर नमाज़ के बाद पढ़ें:

سُبْحَانَ اللّٰهِ ٣٣ بار، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ٣٣بار، اَللّٰهُ اَكْبَرُ ٣٤ بار، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ١٠بار،

सुब्हानल्लाह 33 बार, अल्हम्दुलिल्लाह 33 बार, अल्लाहु अक्बर 34 बार, ला इलाह इल्लल्लाहु 10 बार,

7- हर नमाज़ के बाद पढ़ें:

سُبْحَانَ اللّٰهِ ١٠٠ بار، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ١٠٠بار، اَللّٰهُ اَكْبَرُ ١٠٠ بار،

सुब्हानल्लाह 100 बार, अल्हम्दुलिल्लाह 100 बार, अल्लाहु अक्बर 100 बार।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ ١/بار

ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह- एक बार।

8-

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ٥ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥ سورة الصّٰفّٰت آية: ١٨٠-١٨٢

सुब्हान रब्बिक रब्बिल् इज़्ज़ति अम्मा यसिफ़ून ० *वसलामुन् अलल् मुर्सलीन* ० *वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन* ० एक बार

(सूरए अस्साफ़्फ़ात आयत: 180-182, पारा, 23)

9- *"सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही"* سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ
बकस्रत (बिला तादाद और बिला तअ्य्युने वक़्त[1]) पढ़े। (हिस्ने हसीन)

तस्बीहात का शुमार[2]

चूँकि तस्बीहात के पढ़ने के लिये बाज़ मख़्सूस आदाद[3] भी वारिद[4] हैं। उनके शुमार करने के लिये दो तरीक़े हैं:

1- तस्बीह से गिनना,

2- अक़्दे अनामिल[5] से गिनना।

ये दोनों तरीक़े मस्नून हैं और अक़्दे अनामिल (उंगलियों के हिसाब का एक तरीक़ा) हुज़ूर सल्ल० की क़ौली[6] और फ़ेली[7] हदीस से साबित है, इसलिए इसमें ज़्यादा फ़ज़ीलत है। (अज़ अवरादे रहमानी)

1-जिसका कोई समय निश्चित नहीं है, 2-गिनना, 3-कुछ विशिष्ट संख्यायें, 4-वर्णित, आयी, 5- उंगलियों पर गिनना, 6-कथन, 7-कर्म।

अक़्दे अनामिल

(उंगलियों पर हिसाब लगाना)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम का इर्शाद है कि उंगलियों पर कलिमा तय्यिबा और तस्बीहात को गिना करो कि क़ियामत के दिन इन उंगलियों से भी मुहास्बा[1] होगा कि अपने-अपने आमाल बतायें और उनको क़ुव्वते गोयाई[2] अ़ता की जाएगी और हुज़ूर सल्ल० पर मेरे माँ-बाप क़ुर्बान हों कि आपका नमूना हर चीज़ में हमारे सामने है।

(शरह शमाइले तिर्मिज़ी)

हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० सहाबा को हुक्म फ़रमाया करते थे कि वह तक्बीर *(अल्लाहु अक्बर)*, तक़्दीस *(सुब्हानल् मलिकिल् क़ुद्दूस)* तह्लील *(लाइलाह इल्लल्लाहु)* की तादाद का ख़्याल रखा करें और उन्हें उंगलियों पर शुमार किया करें। फ़रमाया इसलिए कि क़ियामत के दिन उंगलियों से दरयाफ़्त किया जाएगा और वह बतलायेंगी कि कितनी तादाद में तक्बीर, तक़्दीस और तह्लील की थी। (हिस्ने हसीन, शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को सीधे हाथ की उंगलियों पर तस्बीह पढ़ते हुए देखा है।

(शमाइले तिर्मिज़ी, हिस्ने हसीन)

औराद[3] बादे नमाज़

वाज़ेह रहना चाहिए कि नमाज़ के बाद दुआएँ और अज़्कार जो मुतअ़द्दद[4] हदीसों में आए हैं, जैसे मज़्कूरा[5] दुआएँ वग़ैरा उन्हें नमाज़ के मुत्तसिल[6] बाद, फ़स्ल के बग़ैर[7] पढ़ने की तल्क़ीन[8] की गई है। मुत्तसिल बाद का मतलब यह है कि नमाज़ और उन दुआओं के दरमियान ऐसी किसी चीज़

1-हिसाब-किताब, 2-बोलने की शक्ति, 3-किसी बात को बार-बार दोहराना या किसी कार्य को करना, वज़ीफ़ा, 4-अनेक, 5-उक्त, 6-तुरन्त, 7-बिना अन्तराल के, 8-निर्देश।

में मश्गूल[1] न हो जो यादे इलाही के मुनाफ़ी[2] शुमार होती हो और अगर ख़ामोश इतनी देर रहे कि उसे ज़्यादा न समझा जाता हो तो मुज़ाइक़ा[3] नहीं, लिहाज़ा[4] नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद जो कुछ भी तरीक़े मज़्कूर[5] पर पढ़े उसे नमाज़ के बाद ही कहा जाएगा।

अब रहा यह कि सुन्नते मुअक्कदा का फ़र्ज़ के बाद पढ़ना क्या फ़र्ज़ व अज़्कार व अदइय्य-ए-मज़्कूरा[6] के दरमियान मूजिबे फ़स्ल[7] और वजहे बोदियत[8] है या नहीं? यह भी इस जगह महल्ले नज़र[9] है, ज़ाहिर यह है कि यह फ़स्ल न होगा और यह जो हदीसों में आया है कि बाज़ दुआएँ और अज़्कार जो नमाज़ के फ़ौरन बाद पढ़े यह उसका मुतक़ाज़ी[10] नहीं है कि उनको फ़र्ज़ से मिलाए, बल्कि उनका मक़ाम उन सुन्नतों के बाद बग़ैर किसी मश्ग़ूलियत के है जो फ़र्ज़ के ताबे[11] हैं और जो सुन्नतें फ़र्ज़ के ताबे नहीं हैं वहाँ फ़र्ज़ के बाद मुत्तसिल[12] ही पढ़ना काफ़ी है।

बाज़ रिवायात में है कि फ़र्ज़ और सुन्नतों के दरमियान बाज़ दुआओं और अज़्कार से फ़स्ल करना इख़्तियारी[13] है लेकिन औला यह है कि किसी मुख़्तसर दुआ और ज़िक्र से फ़स्ल[14] करे और जो दुआएँ और अज़्कार तवील हैं, उन्हें सुन्नतों के बाद पढ़े।

हुज़ूर सल्ल० से किसी ऐसी दुआ व ज़िक्र से फ़स्ल जिसको मस्जिद में हमेशा करते रहे हों, जैसे आयतल्-कुर्सी और तस्बीहात का पढ़ना साबित नहीं है (कभी-कभी पढ़ना और अम्र[15] है) यह गुफ़्तगू[16] मुदावमत[17] और दवाम[18] पर है।

ख़ुलासा[19] यह है कि जब इमाम ज़ुहर, मग़रिब और इशा में सलाम फेरे तो चूँकि इन फ़राइज़ के बाद सुन्नतें हैं, तो बैठकर ताख़ीर[20] करना मकरूह[21] है। उसे लाज़िम है कि मुख़्तसर दुआ के बाद सुन्नत के लिए खड़ा

1-व्यस्त, 2-विपरीत, 3-आपत्ति, 4-अतः, 5-उक्त कारण, 6-उक्त दुआएँ, 7-अन्तराल का कारण, 8-दूरी का कारण, 9-विचारणीय, 10-अपेक्षा करने वाला, 11-अधीन, 12-तुरंत, 13-वैकल्पिक, 14-अन्तर, 15-मुआमला, बात, 16-वार्तालाप, 17-सदैव, 18- नित्यता, 19-सारांश, 20-विलम्ब, 21-वह काम जिसका करना या वह पदार्थ जिसका खाना इस्लामी क़ानून के अनुसार अच्छा न हो, परन्तु हराम भी न हो।

हो जाए और वे नमाज़ें जिनके बाद सुन्नतें नहीं हैं वहाँ अपनी जगह क़िब्ला-रू[1] देर तक बैठे रहने में कोई हर्ज नहीं है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

अंदाज़े क़िराअत

(क़ुरआन पढ़ने का ढंग)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम का मामूल तिलावत में तर्तील[2] का था, तेज़ी और सुर्अ़त[3] के साथ तिलावत न फ़रमाते बल्कि एक-एक हर्फ़ अदा[4] करके वाज़ेह तौर[5] पर तिलावत फ़रमाते। आप सल्ल० एक-एक आयत की तिलावत वक़्फ़ा[6] करके करते और मद[7] के हुरूफ़ को खींच कर पढ़ते मसलन رَحْمٰن رَحِيْم (रहमान) और (रहीम) को मद से पढ़ते और तिलावत के आग़ाज़[8] में (शैतानिर्रजीम) से अल्लाह की पनाह मांगते और पढ़ते-

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

"अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम"

और गाहे-गाहे[9] यूँ पढ़ते-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ هَمْزِهٖ وَنَفْخِهٖ وَنَفْثِهٖ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनश्शैतानिर्रजीमि मिन् हम्ज़िही व नफ़ख़िही व नफ़्सिही।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम तिलावत में हर आयत को जुदा-जुदा[10] करके अलाहदा-अलाहदा इस तरह पढ़ते कि-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

"अल्हम्दु-लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन" ٥ पर ठहरते फिर-

1-क़िब्ले की तरफ़, 2-क्रमानुसार, 3-शीघ्रता, 4-अक्षर उच्चारण, 5-स्पष्टतः, 6-विराम, अन्तराल, 7-उदात्त, 8-आरम्भ, 9-कभी-कभी, 10-अलग-अलग।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

''अर्रहमानिर्रहीम'' पर वक़्फ़ा करते फिर-

مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ

''मालिकि यौमिद्दीन'' पर वक़्फ़ा करते। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन कैस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम क़ुरआन मजीद आहिस्ता पढ़ते थे या पुकार कर? उन्होंने फ़रमाया कि दोनों तरह मामूल[1] था। मैंने कहा اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ *अल्हम्दुलिल्लाह* अल्लाह का शुक्र व एहसान है कि जिसने हर तरह सहूलत अता फ़रमाई (कि बमुक़्तज़ाए वक़्त[2] जैसा मुनासिब हो आवाज़ से या आहिस्ता जिस तरह पढ़ सके।) (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है, उनसे ज़िक्र किया गया कि बाज़े[3] लोग पूरा क़ुरआन एक रात में एक दफ़ा या दो दफ़ा पढ़ लेते थे। उन्होंने फ़रमाया कि उन लोगों ने पढ़ा भी और नहीं पढ़ा (यानी अल्फ़ाज़[4] की तिलावत तो कर ली, मगर उसका हक़ अदा नहीं किया)। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के साथ तमाम रात खड़ी रहती थी और आप सल्ल० नमाज़ में सूरए बक़रा, आले इम्रान और सूरए निसा पढ़ते, सो आप किसी आयत पर जिसमें ख़ौफ़ (का मज़्मून[5]) हो नहीं गुज़रते थे मगर अल्लाह तआला से दुआ करते थे और (अम्न का) सवाल करते थे (यानी नफ़्ल नमाज़ के अन्दर ऐसी आयतों के मज़्मून के हक़ को अदा करने में इतनी देर लग जाती थी कि तमाम रात में एक मन्ज़िल पढ़ पाते थे।) (मुस्नद इमामे अहमद)

1- हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम नवाफ़िल में कभी इतना लम्बा क़ियाम फ़रमाते[6] कि क़दम मुबारक वर्म[7] कर आते और

1-नित्य नियम, 2-समय अनुसार, 3-अन्य, 4-शब्दों, 5-विषय, 6-खड़े होते, 7-सूजन।

सीना मुबारक में से हाण्डी खौलने की सी आवाज़ आती थी (यह ख़ौफ़े ख़ुदा तआला की वजह से था।)

2- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम को वह इबादत ज़्यादा महबूब थी जो हमेशा अदा हो सके। (बुख़ारी)

3- जब आप सल्ल० इमाम होते तो ऐसी हल्की-फुल्की नमाज़ पढ़ाते जो मुक़्तदियों[1] पर बार न होती। (नसाई)

4- और जब तन्हा नमाज़ पढ़ते तो बहुत तवील[2] नमाज़ पढ़ते।

(नसाई)

अगर नमाज़े नफ़्ल में मश्ग़ूल होते, उस वक़्त अगर कोई शख़्स पास आ बैठता तो आप सल्ल० नमाज़ मुख़्तसर[3] कर देते और उसकी ज़रूरत पूरी कर देने के बाद फिर नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते अगर्चे आप सल्ल० को अल्लाह तआला की तरफ़ से तवज्जोहे तमाम[4] और क़ुर्बे ख़ुसूसी[5] हासिल था। आप सल्ल० नमाज़ शुरू करते तो तवील कर देते फिर किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनते तो इस ख़्याल से मुख़्तसर कर देते कि कहीं माँ पर बार न गुज़रे। (ज़ादुल्-मआद)

आप सल्ल० खड़े-खड़े, बैठकर, लेट कर वुज़ू और बग़ैर वुज़ू (जनाबत[6] के अलावा) हर हालत में क़ुरआन पाक पढ़ लेते और उसकी तिलावत से मना न फ़रमाते और आप सल्ल० बेहतरीन अन्दाज़ से तिलावत फ़रमाते।

(ज़ादुल्-मआद)

हज़रत सअद बिन हश्शाम रज़ि० हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया कि मुझे याद नहीं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सारा क़ुरआन किसी एक रात में पढ़ा हो या सारी रात यानी इशा से लेकर फ़ज्र तक नमाज़ पढ़ी हो या सिवाय रमज़ान के किसी महीने में पूरे महीने के रोज़े रखे हों यानी ये बातें आप सल्ल० ने कभी नहीं कीं। (मुस्लिम, मिश्कात)

1-इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले, 2-लम्बी, 3-छोटी, 4-पूरा ध्यान, 5-विशेष सम्बन्ध, 6-पत्नी के साथ सहवास के पश्चात् स्नान की आवश्यकता।

सवारी पर नमाज़े नवाफ़िल

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम की सुन्नते तय्यिबा यह थी कि आप नवाफ़िल सवारी पर भी पढ़ लेते थे, जिस तरफ़ भी उसका रुख़ होता रूकूअ़ व सुजूद इशारे से करते। आप सल्ल० का सज्दा बनिस्बत[1] रूकूअ़ के क़द्रे[2] नीचे होता था। (ज़ादुल्मआद)

सज्दा-ए-तिलावत

नबीए करीम सल्ल० तिलावते क़ुरआन के दौरान किसी सज्दे के मक़ाम से गुज़रते (यानी आयते सज्दा पढ़ते) तो तक्बीर कहते (यानी अल्लाहु अक्बर اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहते) और सज्दा करते। (ज़ादुल्मआद)

सज्दा-ए-तिलावत वाजिब है

सज्दा-ए-तिलावत करने का तरीक़ा यह है कि अल्लाहु अक्बर कह कर सज्दा करे और अल्लाहु अक्बर कहते वक़्त हाथ न उठाए सज्दे में कम अज़ कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى *"सुब्हान रब्बियल् अअ़ला"* कहकर फिर अल्लाहु अक्बर कहकर सर उठाए।

हिदायत: जो चीज़ें नमाज़ के लिए मशरूत[3] हैं वही सज्दए तिलावत के लिए भी मशरूत हैं यानी वुज़ू का होना, जगह का पाक होना, बदन और कपड़े पाक होना, क़िब्ला रुख़ होना। (बिहिश्ती ज़ेवर)

सज्दा-ए-शुक्र

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन की सुन्नत है जैसा कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब नबीए करीम सल्ल० को ख़ुशी की कोई ख़बर मिलती या

1-अपेक्षाकृत, 2-थोड़ा, 3-जो किसी शर्त पर निर्धारित हो।

कोई ख़ुशी का वाक़िआ पेश आता तो आप सल्ल० अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के लिये सज्दे में गिर पड़ते।

(अबू दाऊद व तिर्मिज़ी माख़ूज़ अज़ मिश्कातुल् मसाबीह)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० को जब अपने परवरदिगार की तरफ़ से बशारत[1] मिली कि जिसने आप सल्ल० पर दुरूद भेजा मैं उस पर रहम करूँगा और जिसने आप सल्ल० पर सलाम भेजा मैं उस पर सलाम भेजूँगा तो आप सल्ल० ने सज्दए शुक्र अदा किया। (ज़ादुल्-मआद)

अल्लामा शामी रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं जिस शख़्स को कोई नई नेअ़्मत हासिल हो या अल्लाह तआला उसे माल या औलाद अ़ता फ़रमाए या उससे कोई मुसीबत दूर हो तो उसके लिए मुस्तहब[2] है कि वह अल्लाह तआला के हुज़ूर में सज्दए शुक्र अदा करे और उसमें अल्लाह तआला की हम्द[3], तस्बीह[4] और तक्बीर[5] पढ़े। फिर उसी तरह सर उठा ले जिस तरह सज्दए तिलावत में उठाया जाता है। इस सिलसिले में बहुत-सी अहादीस मौजूद हैं और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० हज़रत उ़म्र रज़ि०, हज़रत अ़ली रज़ि० से भी सज्दए शुक्र बजा लाना साबित है।

क़िराअत मुख़्तलिफ़ नमाज़ों में

रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ में सूरए फ़ातिहा के बाद कोई सूरत मिला कर पढ़ते और सुबह की नमाज़ में क़िराअत को साठ (60) आयतों से सौ (100) आयतों तक दराज़[6] करते, कभी सूरए क़ाफ़, पारा: 26 (سورۂ ق) पढ़ते और कभी सूरए रूम, पारा: 21 (سورۂ روم) पढ़ते और (हल् अता अलल् इन्सानि, सूरए "दहर" पारा: 29) दूसरी रकअ़त में पढ़ते और नमाज़े जुमा में सूरए मुनाफ़िक़ून, पारा: 28 और कभी سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى *सब्बिहिस्मि रब्बिकल् अअ़्ला*, पारा: 30 या सूरए ग़ाशियह पढ़ते।

1-ख़ुशख़बरी, 2-पुनीत, 3-प्रशंसा, 4-पवित्रता, 5-बड़ाई, 6-लम्बी।

ख़ुलासा यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्ल० नमाज़ में मस्लहत व हिक्मत के एतिबार से जो भी वक़्त का इक़्तिज़ा होता तवील[1] या क़सीर[2] सूरतों में जो चाहते पढ़ते, जैसा कि हज़रत उम्र रज़ि० की हदीस में है जो मशहूर और मामूल है। और जिस पर अक्सर फ़ुक़हा[3] का अ़मल है कि फ़ज्र व ज़ुहर में तिवाले मुफ़स्सल[4] पढ़ते और अस्र व इशा में अवसाते मुफ़स्सल[5] और मग़्रिब में क़िसारे मुफ़स्सल[6] पढ़ते तो हुज़ूरे अकरम सल्ल० का मामूल अक्सर उसूल में इसी तरह था। इस बाब में अख़्बार[7] व आसार[8] बकस्रत हैं। अहनाफ़[9] के नज़्दीक इस अम्र में हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की मुदावमत[10] साबित नहीं है।

अहनाफ़ के नज़्दीक किसी वक़्त के साथ किसी सूरत को मुतअ़य्यन[11] कर लेना मक्रूह है और शैख़ इब्नुल्-हुमाम नक़ल करते हैं कि यह कराहत इस सूरत में है कि उन को लाज़िम समझे और उनके सिवा को मक्रूह जानें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम की क़िराअत से तबर्रुक की बिना पर तो कराहत नहीं है। लेकिन शर्त यह है कि कभी-कभी उनके अलावा भी पढ़ा करें ताकि यह किसी को गुमान न हो कि यह जाइज़ नहीं है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

फ़ज्र की सुन्नत में क़िराअत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़ज्र की सुन्नत की दो रकअ़तों में قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ (क़ुल् या अय्युहल् काफ़िरून्) और قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ (क़ुल् हुवल्लाहु अहद) पढ़ी।

एक हदीस में हुज़ूरे अकरम सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि यह दोनों सूरतें कैसी अच्छी हैं कि सुबह की सुन्नतों में पढ़ी जाती हैं।

(सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल्हदीस)

1-लम्बी, 2-छोटी, 3-मुस्लिम शास्त्र-वेत्ता, 4-सूरए हुजुरात से सूरए बुरूज तक, 5-सूरए बुरूज से सूरए बय्यिना तक, 6-सूरए बय्यिना से सूरए नास तक, 7-हदीसें, 8-हदीसें, 9-इमाम अबू हनीफ़ा के मत के अनुयायी, 10-निरन्तरता, पाबन्दी, 11-निश्चित।

हुज़ूर सल्ल० नमाज़े फ़ज्र में:-

1- सूरए क़ाफ़ और इस जैसी दूसरी सूरतें पढ़ा करते थे और बाद में आपकी नमाज़ हल्की होती थी। (मुस्लिम, मआरिफुलहदीस)

2- कभी सूरए وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ۔ (مسلم)

वल्लैलि इज़ा अस्अस यानी सूरए وَالَّيْل (मुस्लिम)

3- कभी सूरए मुअ्मिनून سورۃ مومنون (मुस्लिम)

4- और सूरए इज़ाजुल् ज़िलत (اِذَا زُلْزِلَتْ)

5- (अन इब्ने अब्बास रज़ि०) सूरए बक़रा की आयात

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا۔ الخ

कूलू आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़िल इलैना से आख़िर तक और सूरए आले इम्रान की ये आयात:

﴿ قُلْ يَآ اَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ﴾ الى آخره

कुल् या अहलल्किताबि तआलौ इला कलिमतिन् सवाइम् बैनना व बैनकुम् से आख़िर तक। (मज़्कूरा बाला[1] सूरतों का पढ़ना भी अहादीस में वारिद[2] है।) (सहीह मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमा के दिन फ़ज्र की पहली रक्अत में "*अलिफ़ लाम मीम तनज़ीलुल् किताब*" (यानी सूरए सज्दा) और दूसरी रक्अत में हल अता अलल् इन्सानि' (यानी सूरए अद्दहर) पढ़ा करते थे।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफुल् हदीस)

1-उपर्युक्त, 2-आया हुआ।

ज़ुहर व अस्र

हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ज़ुहर की नमाज़ में وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى *वल्लैलि इज़ा यग़्शा* पढ़ते थे और एक रिवायत में है कि सूरए سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى *सब्बिहिस्म रब्बिकल् अअ़्ला* पढ़ते थे और अस्र की नमाज़ में भी क़रीब-क़रीब इतनी ही बड़ी सूरत पढ़ते थे और सुबह की नमाज़ में इससे कुछ तवील[1]।

(मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़े ज़ुहर की पहली दो रक्अ़तों में सूरए फ़ातिहा और उसके बाद कोई एक सूरत पढ़ते थे और आख़िर की दो रक्अ़तों में सिर्फ़ सूरए फ़ातिहा पढ़ते थे।

और कभी-कभी (सिर्री[2] नमाज़ में भी हमारी तालीम की ग़र्ज़ से) एक-आध आयत आप सल्ल० इतनी आवाज़ से पढ़ते थे कि हम सुन लेते थे। आप सल्ल० पहली रक्अ़त में तवील क़िराअत फ़रमाते थे, दूसरी रक्अ़त में इतनी तवील नहीं फ़रमाते थे और इसी तरह अस्र में और इसी तरह फ़ज्र में आप सल्ल० का मामूल[3] था।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

ज़ुहर की सुन्नत

हज़रत अ़ली रज़ि० ज़ुहर से क़ब्ल[4] चार रक्अ़त पढ़ते थे और यह फ़रमाया करते थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० भी इन चार रक्अ़तों को पढ़ते थे और इनमें तवील क़िराअत फ़रमाते थे।

फ़ायदा: इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैह ने "इहयाउल्उलूम" में लिखा है कि इन चार रक्अ़तों में भी यह है कि सूरए बक़रा पढ़े वर्ना कोई ऐसी ही सूरत जो सौ (100) आयात से ज़्यादा हो ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इत्तिबाअ़[5] तवील क़िराअत में हो जाए।

1-लम्बी, 2-गुप्त नमाज़ जिसमें क़िराअत ज़ोर से नहीं पढ़ते, 3-नित्य नियम, 4-पूर्व, 5-पैरवी।

नमाज़े इशा

हज़रत बरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इशा की नमाज़ में सूरए وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ *"वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि"* पढ़ते सुना और मैंने आप सल्ल० से अच्छी आवाज़ वाला किसी को नहीं सुना। (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हुज़ूर नबीए करीम सल्ल० ने हज़रत मआज़ रज़ि० को तालीम फ़रमाया कि इशा की नमाज़ में सूरए وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا *वश्शम्सि व ज़ुहाहा* (पारा:30) सूरए وَالضُّحٰى (*वज़्ज़ुहा*) सूरए وَاللَّيْلِ (*वल्लैलि- पारा: 30*) और سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى (*सब्बिहिस्म रब्बिकल् अअ्ला*) पढ़ा करो।

(मआरिफ़ुल् हदीस)

जुमा और ईदैन की नमाज़ में क़िराअत

हज़रत नौमान बिन बशीर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ईदैन और जुमा की नमाज़ में سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى (*सब्बिहिस्म रब्बिकल् अअ्ला* और هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ *हल् अताक हदीसुल् ग़ाशियह*) पढ़ा करते थे और अगर ईद और जुमा दोनों एक दिन जमा हो जाते तो आप सल्ल० दोनों नमाज़ों में यही दो सूरतें पढ़ते। (सहीह मुस्लिम)

दूसरी हदीस शरीफ़ में-

क़ाफ़ वल्-क़ुरआनिल् मजीद (قٓ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ○)

और *इक़्तरबतिस्साअतु* (اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ) पढ़ना भी मन्क़ूल[1] है।

(सहीह मुस्लिम)

1-नक़ल किया हुआ।

सूरत का तअ़य्युन

हज़रत शाह वलिउल्लाह रहमतुल्लाहि अ़लैह किताब ''हुज्जतुल्लाहिल्-बालिग़ह'' में तहरीर फ़रमाते हैं:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बाज़ नमाज़ों में कुछ मसालेह[1] और फ़वाइद[2] के पेशेनज़र बाज़ ख़ास सूरतें पढ़ना पसन्द फ़रमाईं लेकिन क़तई तौर पर न उनका तअ़य्युन[3] किया और न दूसरों को ताकीद फ़रमाई कि वे ऐसा ही करें। पस इस बारे में अगर कोई आप सल्ल० का इत्तिबाअ़[4] करे (और इन नमाज़ों में वही सूरतें अक्सर व बेशतर पढ़े) तो अच्छा है और जो ऐसा न करे तो उसके लिये भी कोई मुज़ायक़ा[5] और हरज नहीं है। (मआ़रिफ़ुल् हदीस)

नबीए करीम सल्ल० जुमा और ईदैन के अ़लावा दूसरी तमाम नमाज़ों में सूरत मुअ़य्यन[6] करके नहीं पढ़ा करते थे। फ़र्ज़ नमाज़ों में छोटी-बड़ी सूरतों में कोई ऐसी सूरत नहीं है, जो आप सल्ल० ने न पढ़ी हो।

और नवाफ़िल में एक-एक रकअ़त में दो सूरतें भी आप सल्ल० पढ़ लेते थे, लेकिन फ़र्ज़ में नहीं। मामूलन् आप सल्ल० की पहली रकअ़त दूसरी रकअ़त से बड़ी हुआ करती थी। क़िराअत ख़त्म करने के बाद ज़रा दम लेते फिर तक्बीर कहते और रुकूअ़ में चले जाते। (ज़ादुल्-मआ़द)

हज़रत सुलैमान बिन यसार रहमतुल्लाहि अ़लैह ताबई हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत करते हैं कि उन्होंने (अपने ज़माने के एक इमाम की तरफ़ इशारा करते हुए) फ़रमाया- ''मैंने किसी शख़्स के पीछे ऐसी नमाज़ नहीं पढ़ी जो रसूलुल्लाह सल्ल० की नमाज़ से ज़्यादा मुशाबेह[7] हो बनिस्बत फ़्लाँ इमाम के''।

हज़रत सुलैमान बिन यसार रहमतुल्लाहि अ़लैह कहते हैं कि उन साहब के पीछे मैंने भी नमाज़ पढ़ी है। उनका मामूल यह था कि ज़ुहर की दो

1-मस्लहत (राज़, भलाई) का बहुवचन, 2-फ़ाइदे (लाभ) का बहुवचन, 3-निश्चय करना, 4-अनुसरण, 5-हानि, 6-निश्चित, 7-मिलती-जुलती।

रकअतें लम्बी पढ़ते थे और आख़िरी दो रकअतें हल्की पढ़ते थे और अस्र हल्की ही पढ़ते थे और मग़रिब में क़िसारे मुफ़स्सल[1] और इशा में अवसाते मुफ़स्सल[2] पढ़ते थे और फ़ज्र की नमाज़ में तिवाले मुफ़स्सल[3] पढ़ा करते थे।

(सुनने नसाई)

तश्रीह[4]: मुफ़स्सल क़ुरआने मजीद की आख़िरी मन्ज़िल की सूरतों को कहा जाता है यानी सूरए हुजुरात (पारा: 26) से आख़िर क़ुरआन तक। फिर इसके भी तीन हिस्से किये गए हैं:-

सूरए ''हुजुरात'' से लेकर सूरए बुरूज (पारा: 30) तक की सूरतों को ''तिवाले मुफ़स्सल'' कहा जाता है और सूरए बुरूज से लेकर सूरए ''लम् यकुन'' (पारा: 30) तक की सूरतों को ''अवसाते मुफ़स्सल'' और सुरए लम् यकुन यानी सूरए ''बय्यिनह'' (पारा: 30) से लेकर आख़िर तक की सूरतों को ''क़िसारे मुफ़स्सल'' कहा जाता है। (मआरिफुल् हदीस)

अगर नमाज़ की पहली रकअत में किसी सूरत का कुछ हिस्सा पढ़े और दूसरी रकअत में उस सूरत का बाक़ी हिस्सा पढ़े तो बिला कराहत[5] दुरुस्त है। और इसी तरह अगर अव्वल रकअत में किसी सूरत का दरमियानी[6] हिस्सा या इब्तिदाई[7] हिस्सा पढ़े फिर दूसरी रकअत में किसी दूसरी सूरत का दरमियानी या इब्तिदाई हिस्सा पढ़े या कोई पूरी छोटी सूरत पढ़े तो बिला कराहत दुरुस्त है। (सग़ीर)

मगर इसकी आदत डालना ख़िलाफ़े अवला है। बेहतर यह है कि हर रकअत में मुस्तक़िल सूरत पढ़े। (बिहिश्ती ज़ेवर)

सुन्नते मुअक्कदह[8]

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने

1-सूरए बय्यिनह से सूरए नास तक, 2-सूरए बुरूज से सूरए बय्यिनह तक, 3-सूरए हुजुरात से सूरए बुरूज तक, 4-व्याख्या, 5-बिना अरुचि के, 6-मध्य का, 7-आरम्भ का, 8-जिन्हें करना अनिवार्य है एवं न करने पर गुनाह है।

फ़रमाया कि जो शख़्स रात-दिन में बारह रकअ़तें (अलावा फ़र्ज़ नमाज़ों के पढ़े उसके लिए जन्नत में एक घर तैयार किया जाएगा) इन बारह रकअ़तों की तफ़्सील ये है (चार ज़ुहर से पहले और दो ज़ुहर के बाद और दो मग़्रिब के बाद और दो इशा के बाद और दो फ़ज्र से पहले।)

(जामे तिर्मिज़ी, मआ़रफ़ुल् हदीस, शमाइले तिर्मिज़ी)

सुन्नते फ़ज्र

हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः- फ़ज्र की दो रकअ़त सुन्नत दुनिया व माफ़ीहा[1] से बेहतर हैं। (मआ़रिफ़ुल् हदीस, सहीह मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- जिसने फ़ज्र की सुन्नतें न पढ़ी हों उसको चाहिए कि वह सूरज निकलने के बाद उनको पढ़े। (जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सुन्नते ज़ुहर

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल था कि ज़ुहर से पहले की चार रकअ़तें जब आप सल्ल० ने नहीं पढ़ी होती थीं तो आप सल्ल० उनको ज़ुहर से फ़ारिग़ होने के बाद पढ़ते थे। (जामे तिर्मिज़ी)

सुन्नते मग़्रिब व इशा

दो रकअ़त सुन्नत मग़्रिब के फ़र्ज़ के बाद और दो रकअ़त सुन्नत इशा के फ़र्ज़ के बाद आप सल्ल० ने कभी तर्क नहीं फ़रमाई। यह सुन्नत फ़र्ज़ से फ़ारिग़ होते ही मुख़्तसर दुआ़ के फ़ौरन बाद मुत्तसिलन[2] पढ़ी जाती हैं।

1-संसार और उसके भीतर की समस्त वस्तुएं, 2-फ़ुरन्त।

वित्र (नमाज़े वाजिब)

हज़रत हारिजा बिन हुज़ाफ़ा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने एक और नमाज़ तुम्हें मज़ीद[1] अता फ़रमाई है वह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से भी बेहतर है, जिनको तुम दुनिया की अज़ीज़तरीन दौलत समझते हो, वह नमाज़े वित्र है। अल्लाह तआला शानुहू ने उसको तुम्हारे लिये नमाज़े इशा के बाद तुलूए सुबह सादिक़[2] तक मुक़र्रर किया है। (यानी वह इस वसीअ़[3] वक़्त के हर हिस्से में पढ़ी जा सकती है।) (जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया:- जिसको यह अन्देशा हो कि आख़िर शब में वह न उठ सकेगा (यानी सोता रह जाएगा) तो उसको चाहिए कि रात के शुरू ही में (यानी इशा के साथ ही) वित्र पढ़ ले और जिसको पूरी उम्मीद हो कि वह (तहज्जुद के लिए) आख़िर शब में उठ जाएगा, तो उसको चाहिए कि वह आख़िर शब ही में (यानी तहज्जुद के बाद) वित्र पढ़े। इसलिए कि उस वक़्त की नमाज़ में मलाइक-ए-रहमत हाज़िर होते हैं और वह वक़्त बड़ी फ़ज़ीलत का है।

(मआरिफुल् हदीस, सहीह मुस्लिम)

हज़रत अबू सईद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स वित्र से सोता रह जाए (यानी नींद की वजह से उसकी नमाज़े वित्र क़ज़ा हो जाए) या भूल जाए तो जब याद आए या जब वह जागे तो उसी वक़्त पढ़ ले।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, इब्ने माजा, मआरिफुल् हदीस)

हुज़ूर सल्ल० का मामूल अक्सर औक़ात[4] यह था कि आप सल्ल० वित्र को आख़िर शब में तुलू-ए-सुब्हे सादिक़ से पहले अदा फ़रमाते और बाज़ औक़ात अव्वल शब[5] या दरमियानी शब में अदा फ़रमाते और उसके बाद

1-अतिरिक्त, 2-प्रातःकाल का उदय, 3-विस्तृत, 4-अन्य समय, 5-रात के आरम्भ में।

तहज्जुद के लिये उठते तो वित्र का इआदा[1] न फ़रमाते।

तिर्मिज़ी में हदीस है कि फ़रमाया:- لَاوِتْرَانِ فِى لَيْلَةٍ *(ला वित्रानि फ़ी लैलतिन्)* एक रात में दो वित्र नहीं है।

शैख़ इब्नुल हुमाम "शरह हिदाया" में फ़रमाते हैं कि जिसने अव्वल शब में वित्र पढ़ लिया, अब अगर वह तहज्जुद के लिये उठे तो वित्र का इआदा न करे। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रात के हर हिस्से में वित्र पढ़े हैं यानी कभी इब्तिदाई[2] रात में, कभी दरमियानी में और कभी आख़िर रात में और आप सल्ल० के वित्र की इन्तहा रात का आख़िरी छट्ठा हिस्सा था।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी क़ैस रज़ि० फ़रमाते हैं- मैंने हज़रत आइशा रज़ि० अन्हा से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्ल० कितनी रक्अ़तों के साथ वित्र पढ़ा करते थे? उन्होंने फ़रमाया कि आप सल्ल० वित्र पढ़ते थे- चार रक्अ़तों के और तीन रक्अ़तों के (यानी सात रक्अ़त) और छः और तीन (यानी नौ रक्अ़त) और दस और तीन (यानी तेरह रक्अ़त) और आप सल्ल० ने कभी सात रक्अ़त से कम और तेरह रक्अ़त से ज़्यादा वित्र नहीं पढ़े।

(अबू दाऊद, मिश्कात)

फ़ाइदा: बाज़ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन तहज्जुद और वित्र के मज्मूअे[3] को भी वित्र ही कहा करते थे। हज़रत आइशा रज़ि० अन्हा का तरीक़ा भी यही था। उन्होंने इस हदीस में अब्दुल्लाह बिन अबी क़ैस रज़ि० के सवाल का जवाब भी इसी उसूल पर दिया है। उनका मतलब यह है कि रसूलुल्लाह सल्ल० वित्र की तीन रक्अ़तों से पहले तहज्जुद कभी सिर्फ़ चार रक्अ़त पढ़ते, कभी छः रक्अ़त, कभी आठ रक्अ़त से ज़्यादा तहज्जुद पढ़ने का आप सल्ल० का मामूल नहीं था और तहज्जुद की इन

1-लौटाना, 2-आरम्भिक, 3-एकत्र।

रक्अतों के बाद आप सल्ल० वित्र की तीन रक्अत पढ़ते थे।

(मआरिफुल हदीस)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से एक तवील रिवायत में है कि एक रात उन्होंने हुज़ूर नबीए करीम सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ी। हुज़ूर सल्ल० ने दो-दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। मअ़न रहमतुल्लाहि अ़लैह जो इस रिवायत के रावी हैं, वह कहते हैं कि छः मर्तबा हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने दो-दो रक्अत नमाज़ पढ़ी गोया बारह रक्अत नमाज़ हो गयीं। (मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैह ने लिखा है कि इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अ़लैह के नज़्दीक तहज्जुद की बारह रक्अतें हैं) फिर वित्र पढ़ कर लेट गए। सुबह की नमाज़ (यानी फ़ज्र की नमाज़ के लिये जब बिलाल रज़ि० बुलाने आए तो दो रक्अत सुन्नत मुख़्तसर क़िराअत से पढ़ कर सुबह की नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले गए। (शमाइले तिर्मिज़ी)

अ़ब्दुल अज़ीज़ बिन जुरैह ताबई बयान करते हैं कि हमने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से दरयाफ़्त किया कि- रसूलुल्लाह सल्ल० वित्र में कौन-कौन सी सूरतें पढ़ते थे? उन्होंने फ़रमाया कि पहली रक्अत में आप सल्ल० سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلٰى *सब्बिहिस्म रब्बिकल् अअ़्ला* पढ़ते थे और दूसरी रक्अत में قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ (*कुल या अय्युहल् काफ़िरून*) और तीसरी रक्अत में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (*कुल हुवल्लाहु अहद*) और कभी मुअ़व्वज़तैन भी पढ़ लेते थे (यानी *कुल् अऊज़ु बिरब्बिल्फ़लकि*) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (*कुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नासि*) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, मआरिफुल् हदीस)

और जब वित्र का सलाम फेरते तो तीन मर्तबा:-

(*सुब्हानल् मलिकिल् क़ुद्दूसि*) سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ पढ़ते और तीसरी मर्तबा आवाज़ को बुलन्द फ़रमाते और हुरूफ़ को खींच कर पढ़ते।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

नमाज़े वित्र की आख़िरी तीसरी रक्अ़त में बादे क़िराअत हनफ़िय्या के मामूल में यह दुआ-ए-क़ुनूत है।

दुआ-ए-क़ुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِیْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ، اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّیْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰی وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰی عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ۔ (بہشتی زیور)

अल्लाहुम्म इन्ना नस्तईनुक व नस्तग़्फ़िरुक व नुअ्मिनु बिक वनतवक्कलु अ़लैक व नुस्नी अ़लैकल्-ख़ैर व नश्कुरु-क व लानक्फ़ुरु-क व नख़्लऊ़ व नत्रु-कु मय्यफ़्जुरुक अल्लाहुम्म इय्याक नअ़्बुदु व लक नुसल्ली व नस्जुदु व इलैक नस्आ व नहफ़िदु व नर्जू रहमतक व नख़्शा अ़ज़ाबक इन्न अ़ज़ाबक बिल्-कुफ़्फ़ारि मुल्हिक़ (बिहिश्ती ज़ेवर)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! हम तुझसे मदद चाहते हैं और तुझसे मुआफ़ी मांगते और तुझ पर ईमान रखते हैं और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी तारीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी ना-शुक्री नहीं करते और अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस शख़्स को जो तेरी ना-फ़रमानी करे। ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते है और सज्दा करते हैं और तेरी ही तरफ़ दौड़ते और झपटते हैं और तेरी रहमत के उम्मीदवार हैं और तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं। बेशक तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों को पहुँचने वाला है।

जिसको दुआए क़ुनूत याद न हो वह यह पढ़ लिया करे-

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ؁ سورة بقرة:٢٠١

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतंव् व फ़िल्-आख़िरति हसनतंव् व क़िना अज़ाबन्नारि।

या तीन बार यह कह ले- اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ (*अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली*) ऐ अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत कर। (बिहिश्ती ज़ेवर)

या तीन बार:- یَارَبِّ یَارَبِّ یَارَبِّ

(*या रब्बि या रब्बि या रब्बि*) कह ले, नमाज़ हो जाएगी।

(बिहिश्ती ज़ेवर)

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने चन्द कलमे तालीम फ़रमाए जिनको मैं क़ुनूते वित्र में पढ़ता हूँ-

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْمَنْ هَدَیْتَ وَعَافِنِیْ فِیْمَنْ عَافَیْتَ وَتَوَلَّنِیْ فِیْمَنْ تَوَلَّیْتَ وَبَارِكْ لِیْ فِیْمَا اَعْطَیْتَ وَقِنِیْ شَرَّ مَا قَضَیْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی عَلَیْكَ اِنَّهٗ لَا یَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَیْتَ

अल्लाहुम्मह्दिनी फ़ी मन् हदैत व आफ़िनी फ़ी मन् आफ़ैत व तवल्लनी फ़ी मन् तवल्लैत व बारिक्-ली फ़ी मा अअ़्तैत व क़िनी शर्र मा क़ज़ैत फ़इन्नक तक़्ज़ी वला युक़्ज़ा अलैक इन्नहू ला यज़िल्लु मंव् वालैत तबारक्त रब्बना व तआलैत।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! राह दिखा मुझको उन लोगों में जिनको तूने राह दिखाई और आफ़ियत[1] दे उन लोगों में जिनको तूने आफ़ियत बख़्शी और कारसाज़ी कर मेरी उन लोगों में जिनके आप कारसाज़ हैं और बरकत दे उस चीज़ में जो आप ने मुझको अता फ़रमाई और बचा मुझको उस चीज़ के शर[2] से जिसको आपने मुक़द्दर फ़रमाया क्योंकि फ़ैसला करने वाले आप ही हैं। आपके ख़िलाफ़ फ़ैसला नहीं किया जा सकता है और बेशक आपका दोस्त

1-आराम, 2-बुराई।

ज़लील नहीं हो सकता। बरकत वाले हैं आप। ऐ हमारे परवरदिगार आप बुलन्दो-बाला हैं। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजा, दारमी)

बाज़ रिवायात में:-

اِنَّهٗ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ وَلَايَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ

(*इन्नहू ला यज़िल्लु मँव् वालैत के बाद वला यइज़्ज़ु मन् आदैत*) भी वारिद[1] है।

और बाज़ रिवायात में تَعَالَيْتَ (*तआलैत*) के बाद اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ (*अस्तग़्फ़िरुक व अतूबु इलैक*) भी रिवायत किया गया है। और उसके बाद وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ *व सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यि* का भी इज़ाफ़ा है। बाज़ उलमा ने वित्र पढ़ने के लिए इसी क़ुनूत को इख़्तियार फ़रमाया है।

हनफ़िय्या में जो क़ुनूत राइज[2] है उसको इमाम इब्ने अबी शैबा रहमतुल्लाहि अलैह और इमाम तहावी रहमतुल्लाहि अलैह वग़ैरा ने हज़रत उम्र और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया है। अल्लामा शामी ने बाज़ अकाबिरे[3] अहनाफ़ से नक़ल किया है कि बेहतर यह है कि दुआए क़ुनूत اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ الخ *अल्लाहुम्म इन्ना नस्तईनुक* (आख़िर तक) के साथ हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु वाली क़ुनूत भी पढ़ी जाए। (मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० अपने वित्र के आख़िर में यह दुआ किया करते थे:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ لَآ اُحْصِىْ ثَنَآءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَآ اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिरिज़ाक मिन् सख़तिक व बि मुआफ़ातिक मिन

1-आया है, 2-प्रचलित, 3-प्रतिष्ठितजन।

उक़ूबतिक व अऊज़ु बिक मिन्क ला उह्सी सनाअन् अलैक अन्त कमा अस्नैत अला नफ़्सिक।

अनुवादः ऐ अल्लाह! आपकी रज़ा के वास्ते से, आपकी ना-राज़गी से और आपकी मुआफ़ी के वास्ते से आपकी सज़ा से मैं पनाह चाहता हूँ (और आपकी भेजी हुई मुसीबतों और अज़ाबों) से आपकी पनाह चाहता हूँ। मैं आपकी ऐसी तारीफ़ नहीं कर सकता जैसी ख़ुद आपने अपनी तारीफ़ फ़रमाई।

(सुनने अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

वित्र के बाद नफ़्ल

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० वित्र के बाद दो रक्अतें और पढ़ते थे। (जामे तिर्मिज़ी) यह हदीस हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी मर्वी है।

(मआरिफ़ुल् हदीस)

और हुज़ूर सल्ल० वित्र के बाद दो रक्अत नमाज़ हल्की अदा फ़रमाते और उसमें:- إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ (*इ-ज़ा ज़ुल्ज़िलतिल्-अर्ज़ु*) और قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ (*कुल् या अय्युहल् काफ़िरून*) पढ़ते।

(इब्ने माजा, मदारिजुन्नुबुव्वा)

वित्र के बाद दो रक्अतें बैठ कर पढ़ना बाज़ उलमा, हदीसों की बिना पर अफ़्ज़ल समझते हैं। सहीह मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्ल० को बैठ कर नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो दरयाफ़्त किया कि मुझे तो किसी ने आप सल्ल० के हवाले से बताया था कि बैठ कर नमाज़ पढ़ने वाले को खड़े होकर नमाज़ पढ़ने वाले का आधा सवाब मिलता है, और आप सल्ल० बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे हैं? आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- हाँ, मस्अला वही है यानी बैठ कर नमाज़ पढ़ने का सवाब खड़े होकर नमाज़ पढ़ने के मुक़ाबले में आधा होता है। लेकिन मैं इस मुआमले में तुम्हारी तरह नहीं हूँ। मेरे साथ अल्लाह तआला

का मुआमला जुदागाना[1] है यानी मुझे बैठ कर पढ़ने का सवाब भी पूरा मिलता है।

चुनांचे अक्सर उलमा इसके क़ाइल हैं कि उसूल और क़ाइदा यही है कि बैठ कर पढ़ने का सवाब खड़े होकर पढ़ने के मुक़ाबले में आधा होगा। वल्लाहु अअ्लम[2]। (मआरिफ़ुल् हदीस)

क़ियामे लैल या तहज्जुद

फ़ज़ीलत व अहमियत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि हमारा मालिक और रब तबारक व तआ़ला हर रात को जिस वक़्त आख़िरी तिहाई रात बाक़ी रह जाती है तो आसमाने दुनिया की तरफ़ नुज़ूल[3] फ़रमाता है और इर्शाद फ़रमाता है कौन है जो मुझसे दुआ़ करे और मैं उसकी दुआ़ क़बूल करूँ। कौन है, जो मुझसे मांगे, मैं उसको अ़ता करूँ कौन हैं जो मुझसे मग़्फ़िरत और बख़्शिश चाहे मैं उसको बख़्श दूँ।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, और मआ़रिफ़ुल् हदीस)

नमाज़े तहज्जुद

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब रातों को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के लिए उठते थे तो अपनी नमाज़ को दो हल्की रक्अ़तों से शुरू फ़रमाते थे (मुस्लिम) इससे आपका शब को इबादत में मश्ग़ूल[4] होना और उसका एक अदब मालूम होता है।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत आइशा रज़ि० अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० इशा के बाद (इससे मुराद आख़िर शब है) ग्यारह रक्अ़त पढ़ते थे। ये तहज्जुद और

1-अलग, 2-अल्लाह ज़्यादा जानता है, 3-उतरना, 4-व्यस्त।

वित्र की नमाज़ थी। फिर जब सुबह हो जाती थी, दो रक्अ़त ख़फ़ीफ़[1] पढ़ते थे। ये सुबह की सुन्नतें हैं और इससे मालूम हुआ कि तहज्जुद की रक्अ़तें तवील होती थीं। फिर ज़रा राहत लेने के लिये अपनी दाहिनी करवट पर लेट रहते थे। यहाँ तक कि मुअज़्ज़िन आकर नमाज़ की इत्तिलाअ़ देते थे।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत उरैब बिन हुमैद रज़ि० फ़रमाते हैं- मैंने हज़रत आइशा रज़ि० अ़न्हा से पूछा कि यह बतलाइये रसूलुल्लाह सल्ल० ग़ुस्ले जनाबत[2] अव्वल शब में फ़रमाते या आख़िर शब में? फ़रमाया कभी अव्वल शब में आपने ग़ुस्ल फ़रमाया और कभी आख़िर शब में। मैंने कहा- अल्लाहु अक्बर, अल्लाह तआ़ला मुस्तहिक़्के हम्द[3] है, जिसने अ़मल में वुस्अ़त[4] फ़रमाई।

फिर मैंने पूछा- यह बतलाइये कि रसूलुल्लाह सल्ल० अव्वले शब में वित्र पढ़ते थे या आख़िरे शब में? उन्होंने फ़रमाया- कभी अव्वले शब में आपने वित्र पढ़े हैं और कभी आख़िर शब में। मैंने कहा- अल्लाहु अक्बर, अल्लाह तआ़ला मुस्तहिक़्के हम्द है, जिसने अ़मल में वुस्अ़त फ़रमाई।

फिर मैंने कहा बतलाइए कि रसूलुल्लाह सल्ल० तहज्जुद में क़ुरआन मजीद जेहर[5] से पढ़ते थे या आहिस्ता पढ़ते थे, उन्होंने फ़रमाया- कभी जेहर से पढ़ते थे और कभी आहिस्ता। मैंने कहा अल्लाहु अक्बर, अल्लाह तआ़ला मुस्तहिक़्के हम्द है जिसने अ़मल में वुस्अ़त अ़ता फ़रमाई। (शमाइल)

नबीए करीम सल्ल० से तहज्जुद की मुख़्तलिफ़ रक्अ़तें नक़ल की गई हैं, जो मुख़्तलिफ़ औक़ात के एतिबार से हैं कि वक़्त में ज़्यादा गुन्जाइश हुई तो ज़्यादा पढ़ ले, वर्ना कम पढ़ ले। कोई ख़ास तअ़य्युन[6] तहज्जुद की रक्आ़त में ऐसा नहीं है, जिससे कमो-बेश जाइज़ न हो। बसाऔक़ात नबीए करीम सल्ल० बावजूद वसीअ़ वक़्त होने के भी रक्आ़त कम पढ़ते थे। अल्बत्ता उनमें क़ुरआने पाक की तिलावत ज़्यादा मिक़्दार में फ़रमाते थे।

(ख़साइले नबवी)

1-हल्की, 2-पत्नी के साथ सहवास के बाद का स्नान, 3-प्रशंसा के योग्य, 4-सामर्थ्य, विस्तार, 5-उच्च स्वर, ऊंची आवाज़, 6-निश्चय करना।

हज़रत आइशा रज़ि० अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक्रम सल्ल० (ज़माने ज़ोअ़्फ़ में[1]) नवाफ़िल में क़ुरआन शरीफ़ (चूँकि ज़्यादा पढ़ते थे इसलिए) बैठ कर तिलावत फ़रमाते थे और जब रुकूअ़ करने में तक़रीबन तीस-चालीस आयतें रह जाती थीं तो खड़े होकर तिलावत फ़रमाते और रुकूअ़ में तशरीफ़ ले जाते और खड़े होने की हालत में रुकूअ़ फ़रमाते और फिर सज्दा करते और इसी तरह दूसरी रक्अ़त अदा फ़रमाते।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

दूसरी हदीस में है कि हुज़ूरे अक्रम सल्ल० की आदते शरीफ़ा यह थी कि जब खड़े होकर क़ुरआन मजीद पढ़ते तो रुकूअ़ व सुजूद भी खड़े होने की हालत में अदा फ़रमाते और जब क़ुरआन मजीद बैठ कर पढ़ते तो रुकूअ़ व सुजूद भी बैठने ही की हालत में अदा फ़रमाते। (शमाइल)

तहक़ीक़[2] यह है कि रमज़ानुल् मुबारक में हुज़ूरे अक्रम सल्ल० की नमाज़े तहज्जुद आपकी आदते मुबारका ही के मुताबिक़ थी और वह ग्यारह रक्अ़तें थीं। (नमाज़े तरावीह उसके अलावा है) (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत आइशा रज़ि० अन्हा से एक तवील हदीस में रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल० का तहज्जुद बवजह सो रहने या किसी दर्द या मरज़ के सबब[3] नाग़ा हो जाता तो आप दिन में (बतौर उसकी क़ज़ा के) बारह रक्अ़त पढ़ लेते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

नमाज़े इश्राक़ व चाश्त और दीगर नवाफ़िल

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया सुबह के वक़्त जब आफ़्ताब[4] आसमान पर इतना ऊँचा चढ़ जाता जितना अ़स्र की नमाज़ के वक़्त होता है, उस वक़्त हुज़ूरे अक्रम सल्ल० दो रक्अ़त नमाज़े इश्राक़ पढ़ते थे और जब मश्रिक़[5] की तरफ़ इस क़द्र ऊँचा हो जाता, जिस क़द्र ज़ुहर की नमाज़ के वक़्त मग़्रिब[6] की तरफ़ होता है, तो उस वक़्त चार रक्अ़त चाश्त की नमाज़ पढ़ते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

1-अधिक कमज़ोरी के समय, 2-जिज्ञासा, विदित, 3-कारण, 4-सूर्य, 5-पूर्व, 6-पश्चिम।

इश्राक़

एक हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा की और फिर सूरज निकलने तक (वहीं) बैठा रहा और अल्लाह का ज़िक्र करता रहा, फिर दो रकअ़त इश्राक़ की नमाज़ पढ़ी (फिर मस्जिद से वापस आया) तो उसको एक हज और एक उम्रे के मानिन्द अज्र[1] मिलेगा, पूरे हज और उम्रे का, पूरे हज और उम्रे का, पूरे हज और उम्रे का। (हिस्न हिसीन)

नमाज़े चाश्त

अक्सर उ़लमा फ़रमाते हैं कि चाश्त की नमाज़ मुस्तहब है। इसे कभी पढ़ लिया जाए और कभी छोड़ दिया जाए। हुज़ूरे अकरम सल्ल० की आ़दते करीमा अक्सर नवाफ़िल व ततव्वुआ़त[2] में ऐसी ही थी (यानी कभी पढ़ते और कभी छोड़ देते) अक्सर सहाबा और ताबईन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का इसी तरह अ़मल था।

नमाज़े चाश्त की तादाद अक्सर उलमा मुख़्तलिफ़ बयान करते हैं कम अज़ कम[3] दो रकअ़त और ज़्यादा से ज़्यादा आठ रकअ़त। हुज़ूरे अकरम सल्ल० से इसी क़द्र नक़ल की गई हैं। इस नमाज़ की क़िराअत[4] में मशाइख़[5] के औराद[6] में सूरए *वश्शम्सि* وَالشَّمْسِ सूरए *वज़्ज़ुहा* وَالضُّحٰى सूरए वल्लैल وَاللَّيْلِ और सूरए *अलम नश्रह* اَلَمْ نَشْرَحْ मर्क़ूम[7] है और नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद यह दुआ पढ़े, सौ मर्तबा पढ़ना भी मासूर[8] है–

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُوْرُ

अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली वर्हम्नी व तुब् अ़लय्य इन्नक अन्तत् तव्वाबुल् ग़फ़ूर

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-सवाब, बदला 2-ज़्यादा इबादत करना, मुस्तहिब्बात और नवाफ़िल इबादत का बजा लाना, 3-कम से कम, 4-क़ुरआन को सस्वर पढ़ना, 5-शैख़ (सूफ़ी) का बहुवचन, 6-विर्द (किसी बात को बार-बार कहना या करना) का बहुवचन, 7-लिखित, 8-प्रसिद्ध, उद्धृत।

अनुवाद: ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा। बेशक आप बहुत तौबा क़बूल करने वाले बख़्शने वाले हैं।

अ़स्र के क़ब्ल[1] नवाफ़िल

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की रहमत हो उस बन्दे पर जो अ़स्र से पहले चार रकअ़तें पढ़े। (जामे तिर्मिज़ी, मुस्नदे अहमद)

बाद मग़्रिब नमाज़े अव्वाबीन[2]

हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० के साहिबज़ादे मुहम्मद बिन अ़म्मार रज़ि० से रिवायत है कि मैंने अपने वालिद माजिद अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० को देखा कि वह मग़्रिब के बाद छः रकअ़तें पढ़ते थे और बयान फ़रमाते थे कि मैंने अपने हबीब सल्ल० को देखा कि आप मग़्रिब के बाद छः रकअ़तें पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि जो बन्दा मग़्रिब के बाद छः रकअ़त नमाज़ पढ़े, उसके गुनाह बख़्श दिए जाऐंगे अगर्चे वह कसरत[3] में समन्दर (समुद्र) के कफ़ (झाग) के बराबर हों। (मआ़रिफ़ुल् हदीस, मोअ़जमे तबरानी)

इशा की नफ़्लें

इशा के वक़्त बेहतर और मुस्तहब यह है कि पहले चार रकअ़त सुन्नत पढ़े, फिर चार रकअ़त फ़र्ज़, फिर दो रकअ़त सुन्नते मुअक्कदा पढ़े, फिर अगर जी चाहे तो दो रकअ़त नफ़्ल भी पढ़ ले। इस हिसाब से इशा की छः रकअ़त सुन्नत हुई। (बिहिश्ती ज़ेवर)

नमाज़ से मुतअ़ल्लिक़ बाज़ हिदायतें

1- हज़रत उ़म्र रज़ि० अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद

1-पूर्व, 2-मग़्रिब के बाद छः रकअ़त पढ़ी जाने वाली नमाज़, 3-अधिकता।

है कि जो शख़्स अपना विर्द और मामूल रात का पूरा न कर सके उसको चाहिए कि सुबह के बाद से दोपहर तक किसी वक़्त पूरा कर ले। यह ऐसा है गोया रात ही को पूरा कर लिया। (मुस्लिम, शमाइले तिर्मिज़ी)

2- नमाज़ में सूरए फ़ातिहा के बाद जब कोई सूरत शुरू करे तो *बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर रहीम* पढ़ना मन्दूब[1] है अगर कोई रुकूअ़ पढ़े तो बिस्मिल्लाह न पढ़ना चाहिए। (बिहिश्ती ज़ेवर)

3- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया-- जब इमाम सूरए फ़ातिहा के ख़त्म पर आमीन कहे तो तुम मुक़्तदी भी आमीन कहो जिसकी आमीन मलाइका की आमीन के मुवाफ़िक़ होगी, उसके साबिक़ा[2] गुनाह मुआफ़ कर दिये जायेंगे।

(सहीह़ बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

4- फ़ज्र की पहली रक्अ़त में बनिस्बत[3] दूसरी रक्अ़त के बड़ी सूरत होना चाहिए। बाक़ी औक़ात में दोनों रक्अ़तों की सूरतें बराबर होनी चाहिए। एक-दो आयत की कमी ज़्यादती का एतिबार नहीं। (बिहिश्ती गौहर)

5- दुआ के लिए दोनों हाथ सीने तक उठा कर फैलाए।

(बिहिश्ती ज़ेवर)

6- दाहिनी तरफ़ सलाम फेरने में आवाज़ बुलन्द और बायीं तरफ़ निस्बतन आहिस्ता होना चाहिए। (इमाम अहमद रह०, मदारिजुन्नुबुव्वा)

7- इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अ़लैह के नज़्दीक रुकूअ़ व सुजूद में इत्मीनान (एतिदाल[4]) वाजिब है और यह वुजूब[5] दोनों सज्दों के दरमियान में भी शामिल है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

नमाज़ में निगाह का मक़ाम

8- नमाज़ के क़ियाम[6] की सूरत में निगाह सज्दे की जगह रखे और

1-पुनीत, 2-पूर्व, 3-अपेक्षाकृत, 4-बीच का मार्ग, संतुलन 5-वाजिब, अनिवार्य 6-खड़ा होना।

जब सज्दा करे तो नाक पर निगाह रखे, सलाम फेरते वक़्त कन्धों पर निगाह रखें। (बिहिश्ती ज़ेवर)

9- जब नबीए करीम सल्ल० नमाज़ में खड़े होते तो सर झुका लेते (इमाम अहमद रह० ने इसको नक़ल किया है) और तशह्हुद[1] में आपकी निगाह इशारे की उंगली से न बढ़ती (यानी अंगुश्ते शहादत पर रहती)।

(ज़ादुल्-मआद)

10- हज़रत अनस रज़ि० अन्हु फ़रमाते हैं कि नबीए करीम सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया- ऐ अनस! अपनी निगाहों को वहाँ रखो जहाँ तुम सज्दा करते हो, सारी नमाज़ में (यानी हालते क़ियाम में)। (बैहक़ी, मिश्कात)

11- फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सुन्नतों को फ़र्ज़ की जगह खड़े होकर न पढ़े बल्कि दाहिने या बायें या आगे या पीछे हटकर खड़ा हो और अगर घर पर जाकर सुन्नतें पढ़े तो यह अफ़ज़ल है।

घर में नवाफ़िल का पढ़ना

12- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने नबीए करीम सल्ल० से दरयाफ़्त किया कि क्या नवाफ़िल मस्जिद में पढ़ना अफ़ज़ल है या घर में? हुज़ूरे अक्रम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम देखते हो कि मेरा घर मस्जिद से कितना क़रीब है, जिसकी वजह से मस्जिद के आने में किसी क़िस्म की दिक़्क़त या रुकावट नहीं होती (लेकिन इसके बावजूद) फ़राइज़ के अलावा मुझे अपने घर में नमाज़ पढ़ना बनिस्बत[2] मस्जिद के ज़्यादा पसन्द है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

13- रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि अपने घरों में कुछ नमाज़ें (नवाफ़िल वग़ैरा) पढ़ा करो और घरों को क़ब्रिस्तान न बना लो (कि जिस तरह क़ब्रों पर नमाज़ नहीं पढ़ी जाती तो घरों में भी नमाज़ न पढ़ो)।

(मिश्कात)

1-नमाज़ में बैठकर कलिमए शहादत पढ़ना, 2-अपेक्षाकृत।

औरत की नमाज़

14- हज़रत इब्ने उम्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि औरत की नमाज़ घर के अन्दर (दालान में) बेहतर है सेहन की नमाज़ से और औरत की नमाज़ कोठरी में बेहतर है खुले हुए मकान से। (अबू दाऊद, मिश्कात)

15- हज़रत अम्र बिन शुऐब रज़ि० अपने वालिद से और उनके वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है कि अपनी औलाद को नमाज़ की ताकीद करो, जब वो सात साल के हों और जब वो दस साल के हों और नमाज़ न पढ़ें तो उनको मार कर नमाज़ पढ़ाओ। (अबू दाऊद, मिश्कात)

नमाज़ी के आगे से निकलना

16- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से अगर किसी को यह मालूम हो जाए कि अपने किसी मुसलमान भाई के सामने से गुज़रना जब्कि वह नमाज़ पढ़ रहा हो, किस क़द्र गुनाह रखता है तो वह अपनी जगह सौ साल तक खड़ा रहना, नमाज़ी के सामने से गुज़रने से ज़्यादा बेहतर ख़्याल करेगा।

(मिश्कात, इब्ने माजा)

मर्द-औरत के तरीक़ए नमाज़ में फ़र्क़
(पुरुष-स्त्री की नमाज़ के नियम में अन्तर)

औरतों की नमाज़ का तरीक़ा भी वही है, जो मर्दों का है। सिर्फ़ चन्द चीज़ों में फ़र्क़ है जो दर्जे ज़ैल है[1]:-

1- तक्बीरे तहरीमा के वक़्त मर्दों को चादर वग़ैरा से हाथ निकाल कर कानों तक उठाना चाहिए अगर कोई ज़रूरत मिस्ल[2] सर्दी वग़ैरा के अन्दर

1-निम्नलिखित, 2-समान।

हाथ रखने की न हो। और औ़रतों को हर हाल में बग़ैर हाथ निकाले हुए कन्धों तक हाथ उठाना चाहिए।

2- तक्बीरे तह्रीमा के बाद मर्दों को नाफ़ के नीचे हाथ बांधना चाहिए और औ़रतों को सीने पर।

3- मर्दों को छोटी उँगली और अंगूठे का हल्क़ा बनाकर बायीं कलाई को पकड़ना चाहिये और दाहिनी तीन उँगलियां बायीं कलाई पर बिछाना चाहिये।

और औ़रतों को दाहिनी हथेली बायीं हथेली की पुश्त[1] पर रख देना चाहिए। हल्क़ा बनाना और बायीं कलाई को पकड़ना न चाहिये।

4- मर्दों को रुकूअ़ में अच्छी तरह झुक जाना चाहिए कि सर, सुरीन[2] और पुश्त बराबर हो जावे और औ़रतों को इस क़दर न झुकना चाहिए बल्कि सिर्फ़ उसी क़द्र कि जिसमें उनके हाथ घुटनों तक पहुँच जायें।

5- मर्दों को रुकूअ़ में उँगलियां कुशादह करके[3] घुटनों पर रखना चाहिए और औ़रतों को बग़ैर कुशादह किये हुए बल्कि मिला कर रखना चाहिए।

6- मर्दों को हालते रुकूअ़ में कुहनियाँ पहलू से अलाहदा रखना चाहिए और औ़रतों को मिली हुई।

7- मर्दों को सज्दे में पेट, रानों से और बाज़ू, बग़ल से जुदा रखना चाहिए और औ़रतों को मिला कर रखना चाहिए।

8- मर्दों को सज्दे में कुहनियाँ ज़मीन से उठी हुई रखनी चाहिए और औ़रतों को ज़मीन पर बिछी हुई।

9- मर्दों को सज्दे में दोनों पैर उंगलियों के बल खड़ा रखना चाहिए और औ़रतों को नहीं।

10- मर्दों को बैठने की हालत में बायें पैर पर बैठना चाहिए और

1-पीछे, 2-नितम्ब, 3-फैलाकर।

दाहिने पैर को उंगलियों के बल खड़े रखना चाहिए और औरतों को बायें सुरीन के बल बैठना चाहिए और दोनो पैर दायीं तरफ़ निकाल देना चाहिए इस तरह कि दाहिनी रान बायीं रान पर आ जाए और दायीं पिण्डली बायीं पिण्डली पर।

11- औरतों को किसी वक़्त बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करने का इख़्तियार नहीं, बल्कि उनको हर वक़्त आहिस्ता आवाज़ से क़िराअत करना चाहिए। (बिहिश्ती ज़ेवर)

सलातुत्-तस्बीह और दीगर नमाज़ें

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक दिन अपने चचा हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब से फ़रमाया- ऐ अ़ब्बास! ऐ मेरे चचा! क्या मैं आपकी ख़िदमत में एक गिरॉं-क़द्र अ़तिय्या[1] और एक क़ीमती तोहफ़ा पेश करूँ? क्या मैं आपको एक ख़ास बात बताऊँ? क्या मैं आपके दस काम और आपकी दस ख़िदमतें करूँ (यानी आपको एक ऐसा अ़मल बताऊँ जिससे आपको दस अज़ीमुश्शान मन्फ़अ़तें[2] हासिल हों वह ऐसा अ़मल है कि जब आप उसको करेंगे तो अल्लाह तआ़ला शानुहू आपके सारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा।)

1- अगले भी और 2- पिछले भी

3- पुराने भी और 4- नये भी

5- भूल-चूक से होने वाले भी और 6- दानिस्ता[3] होने वाले भी

7- सग़ीरा[4] भी और 8- कबीरा[5] भी

9- ढके व छुपे और 10- एलानिया होने वाले भी

(वह अ़मल सलातुत् तस्बीह है और उसका तरीक़ा यह है कि) आप चार रकअ़त नमाज़ पढ़ें और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा और दूसरी कोई

1-बहुमूल्य उपहार, 2-बड़े फ़ायदे, 3-जानबूझ कर, 4-छोटा, 5-बड़ा।

सूरत पढ़ें, फिर जब आप पहली रक्अ़त में क़िराअत से फ़ारिग़ हो जायें तो क़ियाम[1] ही की हालत में पन्द्रह मर्तबा कहें:-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर।

फिर उसके बाद रुकूअ़ करें और रुकूअ़ में भी रुकूअ़ की तस्बीहात के बाद यही कलिमा दस मर्तबा पढ़ें, फिर रुकूअ़ से उठकर क़ौमा[2] में भी "रब्बनालकल् हम्द" के बाद यही कलिमा दस मर्तबा कहे, फिर सज्दे में चले जायें और उसमें भी सज्दे की तस्बीहात के बाद यह कलिमा दस बार कहें, फिर सज्दे से उठकर जल्सा[3] में यही कलिमा दस बार कहें, फिर दूसरे सज्दे में भी यही कलिमा दस मर्तबा कहें, फिर सज्दे से उठकर जल्से में क़ियाम से पहले दस मर्तबा पढ़ें। (और बग़ैर तक्बीर के क़ियाम करें) चारों रक्अ़तें इसी तरह पढ़ें और इस तर्तीब[4] से हर रक्अ़त में यह कलिमा 75 मर्तबा कहें।

(मेरे चचा!) अगर आप से हो सके तो रोज़ाना यह नमाज़ पढ़ा करें। अगर रोज़ाना न पढ़ सकें तो जुमा[5] के दिन पढ़ लिया करें और अगर आप यह भी न कर सकें तो महीने में एक बार पढ़ लिया करें और अगर आप यह भी न कर सकें तो साल में एक बार पढ़ लिया करें और अगर यह भी न हो सके तो कम-अज़-कम ज़िन्दगी में एक बार ही पढ़ लें। (सुनने अबी दाऊद, सुनने इब्ने माजा, दावते कबीर लिल्-बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

नमाज़े इस्तिख़ारा

(1) **मस्अला:-** जब कोई काम करने का इरादा करे तो अल्लाह तआ़ला से सलाह ले ले, इस सलाह लेने को इस्तिख़ारा कहते हैं। हदीस में इसकी बहुत तर्ग़ीब[6] आई है। नबीए करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला से सलाह न लेना और इस्तिख़ारा न करना बदबख़्ती[7] और कम

1-खड़ा होना, 2-नमाज़ में खड़े होने की अवस्था, 3-दोनों सज्दों के बीच में बैठना, 4-नियम, 5-शुक्रवार, 6-प्रेरणा, 7-दुर्भाग्य।

नसीबी की बात है, कहीं मंगनी करे या ब्याह या सफ़र करे या कोई काम करे तो बग़ैर इस्तिख़ारा किये न करे, इन्शा अल्लाह कभी अपने किये पर पशेमानी[1] नहीं होगी। (रद्दुल्-मुख़्तार, जिल्द-1, सफ़्हा 718)

(2) मस्अला:- इस्तिख़ारा की नमाज़ का तरीक़ा यह है कि पहले दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़े। उसके बाद ख़ूब दिल लगा कर यह दुआ पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَآ اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَآ اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّىْ فِىْ دِيْنِىْ وَمَعَاشِىْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِىْ فَاقْدُرْهُ لِىْ وَيَسِّرْهُ لِىْ ثُمَّ بَارِكْ لِىْ فِيْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّىْ فِىْ دِيْنِىْ وَمَعَاشِىْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِىْ فَاصْرِفْهُ عَنِّىْ وَاصْرِفْنِىْ عَنْهُ وَاقْدِرْ لِىَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِىْ بِهٖ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्तख़ीरुक बिइल्मिक व अस्तक़्दिरुक बिक़ुद्रतिक व अस्अलुक मिन् फ़ज़्लिकल्-अज़ीम फ़ इन्नक तक़्दिरु वला अक़्दिरु व तअ्लमु वला अअ्लमु व अन्त अल्लामुल् ग़ुयूबि। अल्लाहुम्म इन कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल् अम्र ख़ैरुल्ली फ़ी दीनी व मआशी व आक़िबति अम्री फ़क़्दिर्हुली वयस्सिर्हुली सुम्म बारिक्ली फ़ीहि व इन् कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल्-अम्र शर्रुल्ली फ़ी दीनी वमआशी व आक़िबति अम्री फ़स्रिफ़्हु अन्नी वस्रिफ़्नी अन्हु वक़्दिर्लियल्-ख़ैर हैसु कान सुम्म अर्ज़िनी बिही।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मैं तेरे इल्म के ज़रिये तुझसे ख़ैर मांगता हूँ और तेरी क़ुद्रत[2] के ज़रिये तुझ से क़ुद्रत तलब करता हूँ और तेरे बड़े फ़ज़्ल का तुझसे सवाल करता हूँ क्योंकि तुझे क़ुद्रत है और मुझे क़ुद्रत नहीं और तू जानता है और मैं नहीं जानता और तू ग़ैबों[3] को ख़ूब जानने वाला है। ऐ अल्लाह! अगर तेरे इल्म में मेरे लिये यह काम मेरी दुनिया और आख़िरत में बेहतर है, तो इसको मेरे लिये मुक़द्दर फ़रमा। फिर मेरे लिये इसमें बरकत

1-पश्चात्ताप, 2-शक्ति, सामर्थ्य, 3-अदृश्य, परोक्ष।

अ़ता फ़रमा और अगर तेरे इल्म में मेरे लिये यह काम दुनिया और आख़िरत में शर[1] है तो इसको मुझसे और मुझको उससे दूर फ़रमा और मेरे लिये ख़ैर मुक़द्दर फ़रमा, जहाँ कहीं भी हो उस पर मुझे राज़ी फ़रमा।

और जब *"हाज़ल्-अम्र"* पर पहुँचे (जिस लफ़्ज़ पर लकीर बनी है) तो उसके पढ़ते वक़्त उसी काम का ध्यान करे जिसका इस्तिख़ारा करना चाहता है। उसके बाद पाक-साफ़ बिछौने पर क़िब्ला की तरफ़ मुँह करके बावुज़ू सो जाए। जब सो कर उठे उस वक़्त जो बात दिल में मज़्बूती से आए वही बेहतर है, उसी को करना चाहिए।

(अद्दुर्रुल् मुख़्तार, जिल्द 1, पेज: 718)

(3) मस्अला :- अगर एक दिन में कुछ मालूम न हो और दिल का ख़ल्जान[2] और तरद्दुद[3] न जाए, तो दूसरे दिन फिर ऐसा ही करे। इसी तरह सात दिन तक करे, इन्शा अल्लाह ज़रूर उस काम की अच्छाई-बुराई मालूम हो जाएगी। (अद्दुर्रुल् मुख़्तार, जिल्द 1, पेज: 718)

(4) मस्अला :- अगर हज्जे फ़र्ज़ के लिए जाना हो तो यह इस्तिख़ारा न करें कि मैं जाऊँ बल्कि यूँ इस्तिख़ारा करें कि फ़लाने दिन जाऊँ कि न जाऊँ।

(सहीह बुख़ारी, अद्दुर्रुल्-मुख़्तार, जिल्द 1, पेज: 718, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सलातुल्-हाजात
(आवश्यकता पूर्ति की नमाज़)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया- "जिस शख़्स को कोई हाजत[4] और ज़रूरत हो अल्लाह तआ़ला से मुतअ़ल्लिक़ या किसी आदमी से मुतअ़ल्लिक़" (यानी ख़्वाह वह हाजत ऐसी हो जिसका तअ़ल्लुक़[5] बराहे रास्त[6] अल्लाह तआ़ला ही से हो, किसी बन्दे से वास्ता ही न हो या ऐसा

1-बुरा, 2-दुविधा, 3-असमंजस, 4-इच्छा, 5-सम्बन्ध, 6-सीधे तौर पर।

मुआमला हो कि बज़ाहिर[1] उसका तअल्लुक़ किसी बन्दे से हो, बहर सूरत[2]) उसको चाहिए कि वह वुज़ू करे और ख़ूब अच्छा वुज़ू करे। उसके बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़े। उसके बाद अल्लाह तआला की कुछ हम्द[3] व सना[4] करे और उसके बाद नबी (अ़लैहिस्सलाम) पर दुरूद पढ़े। फिर अल्लाह तआला के हुज़ूर में इस तरह अ़र्ज़ करे:-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَّا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ـ

معارف الحديث رواه الترمذی و ابن ماجه

ला इलाह इल्लल्लाहुल् हलीमुल् करीम। सुब्हानल्लाहि रब्बिल् अ़र्शिल् अ़ज़ीम। वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन। अस्अलुक मूजिबाति रहमतिक व अ़ज़ाइम मग़्फ़िरतिक वल् ग़नीमत मिन् कुल्लि बिर्रिवं वस्सलामत मिन् कुल्लि इस्मिन् ला तदअ़् ली ज़म्बन् इल्ला ग़फ़र्तहू व ला हम्मन् इल्ला फ़र्रज्तहू वला हाजतन् हिय लक रिज़न् इल्ला क़ज़ैतहा या अर्हमर्राहिमीन।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस, रवाहु तिर्मिज़ी व इब्ने माजा)

अनुवाद: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है जो हलीम[5] व करीम[6] है। अल्लाह पाक है जो अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है और सब तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जो तमाम आ़लम का रब है। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरी रहमत को वाजिब करने वाली चीज़ों का और उन चीज़ों का सवाल करता हूँ जो तेरी मग़्फ़िरत[7] को ज़रूरी कर दें और हर भलाई में अपना हिस्सा और हर गुनाह से सलामती चाहता हूँ। ऐ अर्हमर्राहिमीन[8]! मेरा कोई गुनाह बख़्शे बग़ैर

1-प्रत्यक्षतः, 2-हर हाल में, 3-प्रशंसा, 4-स्तुति, 5-सहनशील, गम्भीर 6-कृपालु, 7-मोक्ष, बख़्शिश, 8-दया करने वाले।

और कोई रंज दूर किये बग़ैर और कोई हाजत जो तुझे पसन्द हो पूरी किये बग़ैर न छोड़।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम का मुस्तक़िल[1] मामूल[2] था और दस्तूर था कि जब कोई फ़िक्र आपको लाहिक़[3] होती और कोई अहम मुआमला पेश आता तो आप सल्ल० नमाज़ में मश्ग़ूल[4] हो जाते।

(सुनने अबी दाऊद, मआरिफ़ुल हदीस)

नमाज़े कुसूफ़
(सूर्य ग्रहण की नमाज़)

हज़रत मूसा अशअरी रज़ि० से रिवायत है कि (एक दिन) सूरज गहन में आ गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल० ऐसे ख़ौफ़ज़दह और घबराए हुए उठे जैसे कि आप को डर हो कि अब क़ियामत आ जाएगी। फिर आप सल्ल० मस्जिद आए और आपने निहायत तवील क़ियाम और ऐसे ही तवील रुकूअ व सुजूद के साथ नमाज़ पढ़ाई कि किसी ने आपको ऐसी तवील नमाज़ पढ़ते नहीं देखा।

उसके बाद आप सल्ल० ने फ़रमाया:- (कि अल्लाह तआला शानुहू की क़ुदरते क़ाहिरह[5] की) ये निशानियां जिनको अल्लाह तआला शानुहू ज़ाहिर करता है, ये किसी की मौत और हयात[6] की वजह से ज़ाहिर नहीं होती हैं बल्कि बन्दों में ये अल्लाह तआला शानुहू का ख़ौफ़ पैदा करने के लिये ज़ाहिर होती हैं। जब तुम ऐसी कोई चीज़ देखो तो ख़ौफ़ और फ़िक्र के साथ उसकी तरफ़ मुतवज्जह[7] हो जाओ। उसको याद करो और उससे दुआ और इस्तिग़फ़ार करो। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस)

1-निरन्तर, 2-नियम, 3-पैवस्त करने वाली चीज़, मिलने वाली, 4-व्यस्त, 5-शक्तिशाली, प्रकोप, 6-जीवन, 7-आकृष्ट।

नमाज़े इस्तिस्क़ा[1]

(बारिश की नमाज़)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिये लोगों को साथ लेकर ईदगाह तशरीफ़ ले गए। आप सल्ल० ने उस नमाज़ में दो रकअतें पढ़ीं और क़िराअत बिल्जहर[2] की और क़िब्ला-रु हो कर और हाथ उठाकर दुआ की और जिस वक़्त आप सल्ल० ने क़िब्ला की तरफ़ अपना रुख़ किया उस वक़्त अपनी चादर को पलट कर ओढ़ा। (सहीह़ बुख़ारी व सहीह़ मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस)

तस्बीहात

हज़रत समुरह बिन जुन्दुब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया तमाम कलिमों में अफ़्ज़ल[3] चार कलिमे हैं:-

1- सुब्हानल्लाह,
2- अल्हम्दु लिल्लाह,
3- ला इलाह इल्लल्लाहु
4- अल्लाहु अक्बर

(सहीह़ मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया - दो कलिमे हैं जो ज़बान पर हल्के-फुल्के, मीज़ाने[4] अमल में बड़े भारी और ख़ुदावन्द मेहरबान को बहुत प्यारे हैं:

''सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही'' سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ

''सुब्हानल्लाहिल् अज़ीम'' سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ

(सहीह़ बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस)

1-वर्षा चाहना, 2-ज़ोर की आवाज़ से क़ुरआन पढ़ना, 3-श्रेष्ठ, 4-तराज़ू।

उम्मुल् मोमिनीन हज़रत जुवैरियह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० एक दिन फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के बाद उनके पास से बाहर निकले। वह उस वक़्त अपनी नमाज़ पढ़ने की जगह बैठी कुछ पढ़ रही थीं। फिर आप सल्ल० देर के बाद (जब चाश्त का वक़्त आ चुका था) वापस तशरीफ़ लाए। हज़रत जुवैरियह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा इसी तरह बैठी अपने वज़ीफ़े में मशग़ूल थीं। आपने उनसे फ़रमया: "मैं जब से तुम्हारे पास से गया हूँ क्या तुम उस वक़्त से बराबर इसी हाल में और इसी तरह पढ़ रही हो?" उन्होंने अर्ज़ किया- जी हाँ, आप सल्ल० ने फ़रमया- तुम्हारे पास से जाने के बाद मैंने चार कलिमे तीन बार कहे। अगर वे तुम्हारे उस पूरे वज़ीफ़े के साथ तौले जायें जो तुमने आज सुबह से पढ़ा है तो इनका वज़्न बढ़ जाएगा वह कलिमे ये हैं:-

1- *सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अदद ख़ल्क़िही*

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ

2- व ज़िनत अर्शिही وَزِنَةَ عَرْشِهٖ

3- व रिज़ा नफ़्सिही وَرِضٰى نَفْسِهٖ

4- व मिदाद कलिमातिही وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

अनुवाद:

1- अल्लाह की तस्बीह और उसकी हम्द, उसकी सारी मख़्लूक़ात[1] की तादाद के बराबर

2- और उसके अर्श (अज़ीम) के वज़्न के बराबर

3- और उसकी ज़ात पाक की रिज़ा[2] के मुताबिक़

4- और उसके कलिमों की मिक़्दार[3] के मुताबिक़

(सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-दुनिया की वे तमाम चीज़ें जो अल्लाह ने पैदा की हैं, 2-ख़ुशी, 3-मात्रा।

अफ़ज़लुज़्-ज़िक्र

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया- सबसे अफ़ज़ल[1] ज़िक्र *"ला इलाह इल्लल्लाह"* है।

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ (जामे तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाय- जिसने सौ बार कहा:-

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ۔

ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर।

अनुवाद: नहीं है कोई माबूद[2] सिवाए अल्लाह के। वह अकेला है। उसका कोई शरीक, साझी नहीं। फ़रमांरवाई[3] उसी की है और उसी के लिये हर क़िस्म की सताइश[4] है और हर चीज़ पर उसको क़ुदरत है।

तो वह दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब का मुस्तहिक़[5] होगा और उसके लिये सौ नेकियां लिखी जायेंगी और उसकी सौ ग़लतकारियां महव[6] कर दी जायेंगी और यह अमल उसके लिये उस दिन शाम तक शैतान के हमले से हिफ़ाज़त का ज़रिया होगा और किसी आदमी का अमल उसके अमल से अफ़ज़ल[7] न होगा, सिवाए उस आदमी के जिसने उससे भी ज़्यादा अमल किया हो। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया- मैं तुमको वह कलिमा बताऊँ जो अर्श के नीचे से उतरा है और ख़ज़ाना-ए-जन्नत में से है। वह है:-

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ

1-श्रेष्ठ, 2-उपास्य, 3-शासन, 4-प्रशंसा, 5-योग्य, 6-मिटाना, 7-श्रेष्ठ।

ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह

जब बन्दा दिल से यह कलिमा पढ़ता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह बन्दा (अपनी अनानियत[1] से दस्तबरदार[2] होकर) मेरा ताबेदार[3] और बिल्कुल फ़रमांबरदार हो गया।

(दावते कबीर लिल्-बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि- لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

"ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह" 99 बीमारियों की दवा है, जिसमें सबसे कम दर्जे की बीमारी फ़िक्र और ग़म है।

(मिश्कात, ब-हवाला दावतुल् कबीर बैहक़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया जो बन्दा हर नमाज़ के बाद 33 मर्तबा सुब्हानल्लाह और 33 मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह और 33 मर्तबा अल्लाहु अक्बर और आख़िर में-

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

"ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर"।

पढ़े तो उसके लिये अज्रे अ़ज़ीम[4] का वादा है। और सहीह मुस्लिम की दूसरी हदीस में है कि जो शख़्स ये तस्बीहात पढ़ता है उसके गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। अगर्चे वह इतने ज़्यादा हों जैसे समन्दर की मौजों[5] के झाग।

(मुस्लिम)

रसूले करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को रात की बेदारी[6] मुश्किल नज़र आए और अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करने से उसकी तबीअ़त में बुख़्ल[7] और तंगी हो और अल्लाह तआला शानुहू की राह में

1-ख़ुदी, अहंकार, 2-अलग, 3-आज्ञाकारी, 4-बहुत बड़ा बदला, 5-तरंग, लहर, 6-जागना, 7-कंजूसी।

जिहाद करने की हिम्मत न हो तो उसको चाहिये कि कसरत[1] के साथ '*सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही*' पढ़ा करे, क्योंकि यह अल्लाह तआला के नज़्दीक सोने का एक पहाड़ अल्लाह के रास्ते में खर्च करने से भी ज़्यादा महबूब है।

(तर्ग़ीब व तर्हीब व फ़ज़ाइल)

एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने औरतों को ख़िताब करके फ़रमाया- तुम तस्बीह (*सुब्हानल्लाह*) तक़्दीस (*सुब्हानल् मलिकिल् क़ुद्दूस*) और तह्लील (*ला इलाह इल्लल्लाह*) को अपने ऊपर लाज़िम कर लो और कभी इनसे गफ़लत न करो वर्ना तुम अल्लाह तआला की रहमत से फ़रामोश (महरूम) कर दी जाओगी। (हिस्ने हसीन)

इस्मे आज़म (महान नाम)

अस्मा बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया इस्मे आज़म इन दो आयतों में मौजूद हैं:

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝

व इलाहुकुम् इलाहुंव वाहिदुन् ला इलाह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम ०

और दूसरी आले इम्रान की इब्तिदाई आयत-

الٓمّٓ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۝

(2) *अलिफ़ लाम् मीम्* ० *अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूम* ०
(जामे तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, सुनने दारमी, मआरिफ़ुल् हदीस)

मुख़्तलिफ़ अहादीस में हस्बे ज़ैल[2] कलिमात के मुतअल्लिक़ बताया गया है कि ये इस्मे आज़म हैं:

يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

1- *या ज़ल्जलालि वल्-इकराम*

1-अधिकता, 2-निम्नलिखित।

يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

2- *या अर्हमर्राहिमीन*

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

3- *ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू*

لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ

4- *लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु*

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

5- *ला इलाह इल्लल्लाह*

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

6- *वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह* (हिस्ने हसीन)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि मैं एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर था और एक बन्दा वहाँ नमाज़ पढ़ रहा था। उसने अपनी दुआ में अर्ज़ किया- ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अपनी हाजत[1] मांगता हूँ ब-वसीला इसके कि सारी हम्द व सताइश[2] तेरे ही लिये सज़ावार[3] है। कोई माबूद नहीं तेरे सिवाए, तू निहायत मेहरबान और बड़ा मुहसिन है, ज़मीन और आसमान का पैदा करने वाला है। मैं तुझ ही से मांगता हूँ ऐ "*ज़ुल्जलालि वल्-इकराम*" "ऐ हय्यो-क़य्यूम", तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया- इस बन्दे ने अल्लाह के इस इस्मे आज़म के वसीले[4] से दुआ की है अगर इस वसीले से अल्लाह तआला से दुआ की जाए तो वह क़बूल फ़रमाता है और जब उसके वसीले से मांगा जाए तो अता फ़रमाता है। (जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, सुनने नसाई, सुनने इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-आवश्यकता, 2-प्रशंसा, 3-योग्य, 4-माध्यम।

ज़िक्रुल्लाह (अल्लाह का ज़िक्र)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- अल्लाह तआला शानुहू का इर्शाद है मेरा मुआमला बन्दे के साथ उसके यक़ीन के मुताबिक़ है और मैं बिल्कुल उसके साथ होता हूँ जब वह मुझे याद करता है, अगर वह अपने दिल में इस तरह याद करे कि किसी और को ख़बर न हो तो मैं भी उसको इसी तरह याद करूँगा और अगर वह दूसरे लोगों के सामने मुझे याद करे तो मैं उनसे बेहतर बन्दों की जमाअत में उसका ज़िक्र करूँगा। (यानी मलाइका[1] की जमाअत में और उनके सामने।)

(सहीह मुस्लिम, सहीह बुख़ारी, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- अल्लाह तआला शानुहू के नबी मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला शानुहू के हुज़ूर में अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मुझको कोई कलिमा तालीम फ़रमा जिसके ज़रिये से मैं तेरा ज़िक्र करूँ (या कहा कि जिसके ज़रिये से मैं तुझे पुकारूँ) तो अल्लाह तआला शानुहू ने फ़रमाया: ऐ मूसा! *ला इलाह इल्लल्लाह* لا إله إلا الله कहा करो। उन्होंने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! यह कलिमा तो तेरे सारे ही बन्दे कहते हैं। मैं तो वह कलिमा चाहता हूँ जो आप ख़ुसूसियत से मुझे ही बतायें। अल्लाह तआला शानुहू ने फ़रमाया कि ऐ मूसा! अगर सातों आसमान और मेरे सिवा सब काइनात[2] जिनसे आसमानों की आबादी है और सातों ज़मीनें एक पलड़े में रखें तो '*ला इलाह इल्लल्लाह*' का वज़्न इन सबसे ज़्यादा होगा।

(शर्हुस्सुन्ना लिल् बग़वी, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० से सवाल किया गया कि बन्दों में सबसे अफ़ज़ल और क़ियामत के दिन अल्लाह के नज़्दीक सबसे मुक़र्रब[3] कौन है? आप सल्ल० ने फ़रमाया जो मर्द कस्रत से

1-फ़रिश्तों, 2-ब्रह्माण्ड, 3-समीपवर्ती।

अल्लाह का ज़िक्र करने वाले हैं और जो औरतें (इसी तरह कस्रत से) ज़िक्र करने वाली हैं। (हयातुल् मुस्लिमीन, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुसर रज़ि० से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया- ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! नेकी के अब्वाब (यानी सवाब के काम) बहुत हैं और ये बात मेरी ताक़त से बाहर है कि मैं उन सब को बजा लाऊँ[1]। लिहाज़ा आप सल्ल० मुझे कोई चीज़ बता दीजिये जिसको मैं मज़्बूती से थाम लूँ और उसी पर कारबन्द[2] हो जाऊँ (और बस वही मेरे लिये काफ़ी हो जाए) इसी के साथ यह भी अर्ज़ किया कि जो कुछ आप सल्ल० बतायें वह बहुत ज़्यादा भी न हो क्योंकि ख़तरा है कि मैं उसको याद भी न रख सकूँ।

आप सल्ल० ने फ़रमाया (बस इसका एहतिमाम करो और इसकी आदत डालो कि) तुम्हारी ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे।

(जामे तिर्मिज़ी, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- जो शख़्स कहीं बैठा और उस नशिस्त[3] में उसने अल्लाह तआला को याद नहीं किया तो यह नशिस्त उसके लिये बड़ी हस्रत और ख़ुस्रान[4] का बाइस[5] होगी और इसी तरह जो शख़्स कहीं लेटा और उसमें उसने अल्लाह तआला को याद नहीं किया तो यह लेटना उसके लिये बड़ी हस्रत व ख़ुस्रान का बाइस होगा। (सुनने अबी दाऊद, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० फ़रमाते हैं कि आख़िरी बात जिस पर मैं रसूलुल्लाह सल्ल० से जुदा[6] हुआ हूँ वह यह है कि मैंने आप सल्ल० से दरयाफ़्त किया- कौन-सा अमल अल्लाह तआला शानुहू को सबसे ज़्यादा पसन्द है? आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया (वह अमल यह है) कि तुम्हें इस हालत में मौत आए कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह तआला शानुहू के ज़िक्र से तर हो। (हिस्ने हसीन)

1-करूँ, 2-पाबन्द, 3-बैठक, 4-हानि, नुक्सान, 5-कारण, 6-अलग।

हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया-ख़ुदा की क़सम दुनिया में कुछ लोग नर्म और गुदाज़[1] बिस्तरों पर लेट कर भी (सोने के बजाए) अल्लाह तआला का ज़िक्र किया करते हैं। उन्हें अल्लाह तआला जन्नत के अअ्ला दर्जात में दाख़िल फ़रमाएगा (यानी कोई यह न समझे कि जब तक अस्बाबे तअय्युश[2] न छोड़े ज़िक्रुल्लाह से नफ़ा नहीं होगा।)

(हिस्ने हसीन, इब्ने माजा)

हर नेक अमल ज़िक्रुल्लाह में दाख़िल है

इमामे तफ़्सीर और हदीस हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि ज़िक्रुल्लाह सिर्फ़ तस्बीह व तह्लील और ज़बानी ज़िक्र पर मुन्हसिर[3] नहीं बल्कि हर अमल जो अल्लाह तआला की इताअत[4] में किया जाए वह भी ज़िक्रुल्लाह में दाख़िल है बशर्ते कि निय्यत इताअत की हो।

इसी तरह दुनिया के तमाम कारोबार दाख़िल हैं, अगर उनमें शरई हुदूद की पाबन्दी का ध्यान रहे कि जहाँ तक जाइज़ है किया जाए और जिस हद पर पहुँच कर मम्नूअ़[5] है, उसको छोड़ दिया जाए, तो ये सारे आमाल जो बज़ाहिर दुनियवी काम हैं, वे भी ज़िक्रुल्लाह में शामिल होंगे।

(अज़्कारे नववी, सफ़्ह: 5)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हर हाल में अल्लाह तआला का ज़िक्र किया करते थे और फ़रमाया कि बाज़ औक़ात मैं चारपाई पर लेटे हुए अपना वज़ीफ़ा पूरा कर लेती हूँ। (किताबुल् अज़्कार लिन्नववी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि जिन घरों में अल्लाह तआला का ज़िक्र होता है उनको आसमान वाले ऐसा चमकदार देखते हैं जैसे ज़मीन वाले सितारों को चमकदार देखते हैं।

1-मोटा, गद्देदार, 2-ऐशो-आराम की चीज़ें, 3-निर्भर, 4-आज्ञापालन, 5-निषिद्ध।

क़ुरआने मजीद की अज़्मत व फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है कि जिसके सीने में कुछ भी क़ुरआन न हो वह ऐसा है जैसे उजाड़ घर। (तिर्मिज़ी व दारमी)

फ़ायदा: इसमें ताकीद[1] है कि किसी मुसलमान के दिल को क़ुरआन से ख़ाली न होना चाहिए।

इर्शाद फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्ल० ने जो शख़्स क़ुरआन की एक आयत सुनने के लिये भी कान लगावे उसके लिये ऐसी नेकी लिखी जाती है जो बढ़ती चली जाती है (उस बढ़ने की कोई हद नहीं बतलाई) अल्लाह तआला शानुहू से उम्मीद है कि उसकी बढ़ने की कोई हद नहीं होगी, बेइन्तहा बढ़ती चली जावेगी और जो शख़्स जिस आयत को पढ़े वह आयत उस शख़्स के लिये क़ियामत के दिन एक नूर होगी जो उस नेकी के बढ़ने से भी ज़्यादा है।

तिलावत

नबीए करीम सल्ल० का इर्शाद है- क़ुरआन पढ़ने वाले से क़ियामत के दिन कहा जाएगा जिस ठहराव और ख़ुशइल्हानी[2] के साथ तुम दुनिया में बना-संवार कर क़ुरआन पढ़ा करते थे, उसी तरह क़ुरआन पढ़ो और हर आयत के सिले[3] में एक दर्जा बुलन्द होते जाओ, तुम्हारा ठिकाना तुम्हारी तिलावत की आख़िरी आयत पर है। (तिर्मिज़ी)

यानी जब तक पढ़ते रहोगे दर्जात बुलन्द होते जायेंगे। हज़रत उसमान रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया- तुममें से बेहतर और अफ़ज़ल बन्दा वह है जो क़ुरआन का इल्म हासिल करे और दूसरों को उसकी तालीम दे। (सहीह बुख़ारी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि

1-निर्देश, 2-सुस्वर, 3-बदले।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआला का इर्शाद है कि जिस शख़्स को क़ुरआन ने मश्ग़ूल[1] रखा मेरे ज़िक्र से और मुझसे सवाल और दुआ करने से, मैं उसको उससे अफ़ज़ल अता करूँगा, जो साइलों[2] और दुआ करने वालों को अता करता हूँ, और दूसरे और कलामों के मुक़ाबले में अल्लाह के कलाम को वैसी ही अज़्मत और फ़ज़ीलत हासिल है जैसे अपनी मख़्लूक़ के मुक़ाबले में अल्लाह तआला को।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने दारमी, शोबुल् ईमान लिल्-बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत उबैदह मुलैकी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- ऐ क़ुरआन वालो! क़ुरआन को अपना तकिया और सहारा न बना लो, बल्कि दिन और रात के औक़ात में उसकी तिलावत किया करो जैसा कि उसका हक़ है और उसको फैलाओ और उसको दिलचस्पी और मज़ा लेकर पढ़ा करो और उसमें तदब्बुर[3] किया करो। उम्मीद रखो कि तुम उससे फ़लाह[4] पाओगे और उसका आजिल मुआवज़ा[5] लेने की फ़िक्र न करो। अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से उसका अज़ीम सवाब और मुआवज़ा (अपने वक़्त पर) मिलने वाला है।

(शोबुल् ईमान लिल्-बहैक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया- जिसने क़ुरआन में महारत हासिल कर ली हो (और उसकी वजह से वह उसको हिफ़्ज़ या नाज़रह बेहतर तरीक़े पर और बेतकल्लुफ़ रवां[6] पढ़ता हो) वह मुअज़्ज़ज़[7] और वफ़ादार और फ़रमांबरदार फ़िरिश्तों के साथ होगा। और जो बन्दा क़ुरआने पाक (अच्छा याद और रवां न होने की वजह से ज़हमत और मशक़्क़त के साथ) इस तरह पढ़ता हो कि उसमें अटकता हो तो उसको दो अज्र[8] मिलेंगे (एक तिलावत का और दूसरे ज़हमत और मशक़्क़त का)।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-व्यस्त, 2-प्रार्थी, 3-ग़ौरो-फ़िक्र, चिन्तन-मनन, 4-निजात, 5-जल्दी, बदला, 6-निःसंकोच, 7-प्रतिष्ठित, 8-सवाब।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया जिसने क़ुरआन पाक का एक हर्फ़ पढ़ा उसने एक नेकी कमा ली और यह एक नेकी अल्लाह तआला के क़ानूने करम के मुताबिक़ दस नेकियों के बराबर है (मज़ीद वज़ाहत[1] के लिये आप सल्ल० ने फ़रमाया) मैं यह नहीं कहता (यानी मेरा मतलब यह नहीं है) कि (अलिफ़् लाम् मीम् एक हर्फ़ है बल्कि अलिफ़् एक हर्फ़ है, लाम् एक हर्फ़ है और मीम् एक हर्फ़ है) इस तरह अलिफ़् लाम् मीम् पढ़ने वाला बन्दा तीस नेकियों के बराबर सवाब हासिल करने का मुस्तहिक़[2] होगा।)

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने दारमी, मआरिफ़ुल् हदीस)

ख़त्मे क़ुरआन के वक़्त दुआ क़बूल होती है

सहीह अहादीस में है कि ख़त्मे क़ुरआन के वक़्त अल्लाह तआला की ख़ास रहमत नाज़िल होती है।

इमामे तफ़्सीर हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम की आदत थी कि ख़त्मे क़ुरआन के वक़्त जमा होकर दुआ करते थे और फ़रमाते थे कि ख़त्मे क़ुरआन के वक़्त हक़ तआला की ख़ास रहमत नाज़िल होती है।

और अस्नादे सहीह[3] के साथ हज़रत हसन रज़ि० से मन्क़ूल है कि जब वह क़ुरआन मजीद की तिलावत ख़त्म करते तो अपने अहलो-इयाल को जमा करके दुआ किया करते थे। (अज़्कारे नववी, पेज: 49)

एक हदीस में है कि रसूले करीम सल्ल० का इर्शाद है- जो आदमी दिन-रात में बीस आयतें भी पढ़ ले तो वह ग़ाफ़िल लोगों में न लिखा जाएगा। (अज़्कारे नववी, पेज: 45)

1-स्पष्टीकरण, 2-योग्य, 3-सत्य प्रमाण।

सूरए फ़ातिहा (अल्हम्दु लिल्लाह)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने उबई बिन काब रज़ि० से फ़रमाया- क्या तुम्हारी ख़्वाहिश है कि मैं तुम को क़ुरआने मजीद की वह सूरत सिखाऊँ जिसके मर्तबे की कोई सूरत न तो तौरात में नाज़िल हुई, न इन्जील में, न ज़बूर में और न क़ुरआन में ही है। उबई रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हाँ, हुज़ूर सल्ल०! मुझे वह सूरत बता दें। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम नमाज़ में क़िराअत किस तरह करते हो? उबई रज़ि० ने आप सल्ल० को सूरए फ़ातिहा पढ़कर सुनाई (कि मैं नमाज़ में यह सूरत पढ़ता हूँ और इस तरह पढ़ता हूँ) आप सल्ल० ने फ़रमाया क़सम है उस पाक ज़ात की जिसके क़ब्ज़े मेरी जान है- तौरात, इन्जील, ज़बूर किसी में और ख़ुद क़ुरआन में भी इस जैसी कोई सूरत नाज़िल नहीं हुई। यही *सबअ़म् मिनल् मसानी वल् क़ुरआनल् अज़ीम* है जो मुझे अल्लाह तआला ने अता फ़रमाया है। (जामे तिर्मिज़ी, मआरिफुल् हदीस)

एक बार जब हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूरे अक्दस सल्ल० के पास बैठे हुए थे। यकायक उन्होंने ऊपर से एक आवाज़ सुनी और सर उठाकर फ़रमाया- यह एक फ़िरिश्ता ज़मीन पर उतरा है, जो आज से पहले कभी नहीं उतरा था। फिर उस फ़िरिश्ते ने सलाम किया और कहा या रसूलल्लाह सल्ल०! मुबारक हो, लीजिये ये दो नूर आप सल्ल० को दिये गये हैं- एक सूरए फ़ातिहा और दूसरे सूरए बक़रा की आख़िरी आयतें। इनमें से जो भी आप सल्ल० पढ़ेंगे उसका सवाब आप सल्ल० को मिलेगा।

(हिस्ने हसीन)

सूरए बक़रा व आले इम्रान

हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना, आप सल्ल० इर्शाद फ़रमाते थे कि क़ुरआन पढ़ा करो। वह

क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों का शफ़ीअ[1] बनकर आएगा (ख़ासकर) 'ज़हरावीन' यानी इसकी दो अहम नूरानी सूरतें 'अल् बक़रा' और 'इम्रान' पढ़ा करो! वह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों को अपने साय में लिये इस तरह आयेंगी जैसे कि वह अब्र[2] के टुकड़े हैं या सायबान हैं या सफ़ बान्धे परिन्दों के पर[3] हैं। ये दोनों सूरतें क़ियामत में अपने पढ़ने वालों की तरफ़ से मुदाफ़अत[4] करेंगी- (आप सल्ल० ने फ़रमाया) पढ़ा करो सूरए बक़रा क्यों कि उसको हासिल करना बड़ी बरकत वाली बात है और उसको छोड़ना बड़ी हस्रत और नदामत[5] की बात है और अहले बतालत[6] इसकी ताक़त नहीं रखते। (सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अपने घरों को मक़्बरे न बना लो (यानी जिस तरह क़ब्रिस्तानों में ज़िक्र और तिलावत नहीं करते और इस वजह से क़ब्रिस्तानों की फ़ज़ा ज़िक्र और तिलावत के अनवार[7] व आसार[8] से ख़ाली रहती है। तुम इस तरह अपने घरों को न बना लो, बल्कि घरों को ज़िक्र व तिलावत से मामूर[9] रखा करो) और जिस घर में (ख़ासकर) सूरए बक़रा पढ़ी जाए उस घर में शैतान नहीं आ सकता। (मआरिफ़ुल् हदीस)

सूरए कहफ़ (पारा 15-16)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- जो शख़्स जुमा के दिन सूरए कहफ़ पढ़े उसके लिये नूर हो जाएगा दो जुमुओं के दरमियान (बीच)।

(दावतुल् कबीर लिल्-बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

सूरए यासीन (पारा 22-23)

हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- जिसने अल्लाह की रज़ा के लिये सूरए 'यासीन' पढ़ी

1-सिफ़ारिशी, 2-बादल, 3-मुण्ड, 4-बचाव, 5-पश्चात्ताप, 6-कार्यहीन लोग, बेकार, 7-रोशनी, 8-प्रभाव, 9-आबाद, भरा हुआ।

उसके पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जायेंगे। लिहाज़ा यह मुबारक सूरत मरने वालों के पास पढ़ा करो। (शोबुल्-ईमान लिल्-बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

सूरए वाक़िअह (पारा- 27)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया- जो शख़्स हर रात सूरए वाक़िअह पढ़ा करे उसे कभी फ़क़्र[1] व फ़ाक़ा की नौबत नहीं आएगी। रिवायत में बयान किया गया है कि ख़ुद हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का यह मामूल था कि वह अपनी साहबज़ादियों को इसकी ताकीद फ़रमाते थे और वे हर रात को सूरए वाक़िअह पढ़ती थीं। (शोअबुल्-ईमान लिल्-बैहक़ी, मआरिफ़ुल हदीस)

सूरए अल्-मुल्क (पारा- 29)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ुरआन की एक सूरत ने जो सिर्फ़ तीस आयतों की है, उसने एक बन्दे के हक़ में अल्लाह तआला शानुहू के हुज़ूर में सिफ़ारिश की यहाँ तक कि वह बख़्श दिया गया और यह सूरत है:-

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ *''तबारकल्लज़ी बियदिहिल्मुल्क''*

(मुस्नदे अहमद, जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, सुनने नसाई, इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

सूरए अलिफ़् लाम् मीम् तन्ज़ील सज्दा (पारा- 21)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० उस वक़्त तक न सोते थे जब तक *'अलिफ़् लाम् मीम् तन्ज़ील'* और *'तबारकल्लज़ी बियदिहिल् मुल्क'* न पढ़ लेते थे (यानी रात को सोने से पहले ये दोनों सूरतें पढ़ने का हुज़ूर सल्ल० का मामूल था।)

(मुस्नदे अहमद, जामे तिर्मिज़ी, सुनने दारमी, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-दरिद्रता ।

सूरए अत्तकासुर (पारा- 30)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- क्या तुममें से कोई यह नहीं कर सकता कि रोज़ाना एक हज़ार आयतें क़ुरआने पाक की पढ़ लिया करे, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया- हुज़ूर सल्ल०! किस में यह ताक़त है कि रोज़ाना एक हज़ार आयतें पढ़े (यानी यह बात हमारी इस्तिताअ़त[1] से बाहर है) आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- क्या तुम में कोई इतना नहीं कर सकता कि :

सूरए *अल्हाकुमुत्तकासुर* اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ पढ़ लिया करे।

(शोबुल्-ईमान लिल्-बैहक़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सूरए इख़्लास (पारा- 30)

हज़रत अबू दरदा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- क्या तुममें से कोई इससे भी आ़जिज़[2] है कि एक रात में तिहाई क़ुरआन पढ़ लिया करे, सहाबा किराम ने अर्ज़ किया कि एक रात में तिहाई क़ुरआन कैसे पढ़ा जा सकता है, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि '*क़ुल् हुवल्लाहु अहद*' قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ तिहाई क़ुरआन के बराबर है (तो जिसने रात में वही पढ़ी उसने गोया तिहाई क़ुरआन पढ़ लिया)।

(सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- जो शख़्स बिस्तर पर सोने का इरादा करे, फिर वह (सोने से पहले सौ बार *क़ुल् हुवल्लाहु अहद* पढ़े तो जब क़ियामत क़ायम होगी तो अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमाएगा-) ऐ मेरे बन्दे! अपने दाहिने हाथ पर जन्नत में चला जा। (तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-सामर्थ्य, 2-लाचार ।

सूरए मुअव्वज़तैन या सूरः फ़लक़ और सूरः नास

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- कि तुम्हें मालूम नहीं आज रात जो आयतें मुझ पर नाज़िल हुयीं (वह ऐसी बेमिसाल हैं कि उनकी मिस्ल[1] न कभी देखी गयीं, न सुनी गयीं)।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝

"क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिल् फ़लक़" और *"क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नास"*

(मआ़रिफ़ुल् हदीस, सहीह़ मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० का मामूल[2] था कि हर रात को जब आराम फ़रमाने के लिये अपने बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो अपने दोनों हाथों को मिला लेते (जिस तरह दुआ़ के वक़्त दोनों हाथ मिलाये जाते हैं) फिर हाथों पर फूँकते और *'क़ुल् हुवल्लाहु अहद'* और *'क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिल् फ़लक़'* और *'क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नास'* पढ़ते फिर जहाँ तक हो सकता अपने जिस्म मुबारक पर दोनों हाथ फेरते, सर मुबारक और चेहरा मुबारक और जसदे अतहर[3] के सामने के हिस्से से शुरू फ़रमाते (उसके बाद बाक़ी जिस्म पर जहाँ तक आप सल्ल० के हाथ जा सकते वहाँ तक फेरते) यह आप तीन बार करते।

(सहीह़ बुख़ारी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

आयतल्-कुर्सी

हज़रत उबई बिन काब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने (उनकी कुन्नियत[4] अबुल मुन्ज़िर से मुख़ातब करते हुए) उनसे फ़रमाया- ऐ अबुल मुन्ज़िर! तुम जानते हो कि किताबुल्लाह की कौन-सी आयत तुम्हारे पास सबसे ज़्यादा अ़ज़्मत वाली है? मैंने अ़र्ज़ किया- अल्लाह और उसके

1-सदृश, 2-नियम, 3-पवित्र शरीर, 4-लक़ब, उपाधि ।

रसूल को ज़्यादा इल्म है। आप सल्ल० ने (मुकर्रर) फ़रमाया- ऐ अबुल मुन्ज़िर! तुम जानते हो कि किताबुल्लाह की कौन सी आयत तुम्हारे पास सबसे ज़्यादा अज़्मत वाली है? मैंने अर्ज़ किया:

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ سورة بقرة آية: ٢٥٥

"अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवलहय्युल क़य्यूमु"

तो आप सल्ल० ने मेरा सीना ठोंका (गोया इस जवाब पर शाबाशी दी) और फ़रमाया- ऐ अबूलमुन्ज़िर तुझे यह इल्म मुवाफ़िक़ आए और मुबारक हो। (सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

सूरए बक़रा की आख़िरी आयतें

ऐफ़ा बिन अब्दुल कलामी रज़ि० से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह सल्ल० क़ुरआन की कौन-सी सूरत सबसे ज़्यादा अज़्मत वाली है? आप सल्ल० ने फ़रमाया- "*क़ुल् हुवल्लाहु अहद*" उसने अर्ज़ किया- और आयतों में क़ुरआन की कौन-सी आयत सबसे ज़्यादा अज़्मत वाली है? आप सल्ल० ने फ़रमाया- "*आयतल्-कुर्सी- अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूमु*" उसने अर्ज़ किया- और क़ुरआन की कौन-सी आयत है, जिसके बारे में आपकी ख़ास तौर पर ख़्वाहिश है कि उसका फ़ायदा और उसकी बरकात आपको और आपकी उम्मत को पहुँचे? आप सल्ल० ने फ़रमाया- सूरए 'बक़रा' की आख़िरी आयतें ('आमनर्रसूलु' से ख़त्म सूरत तक)।

फिर आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- ये आयतें अल्लाह तआला की रहमत के उन ख़ासुल् ख़ास ख़ज़ानों में से हैं जो उसके अर्शे अज़ीम के तहत है। अल्लाह तआला शानुहू ने ये आयाते रहमत इस उम्मत को अता फ़रमाई हैं। ये दुनिया और आख़िरत की हर भलाई और हर चीज़ को अपने अन्दर लिये हुए है। (मुस्नदे दारमी, मआरिफ़ुल् हदीस)

सूरए आले इम्रान की आख़िरी आयतें

हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० से रिवायत है, उन्होंने फ़रमाया कि जो कोई रात को सूरए आले इम्रान की आख़िरी आयात पढ़ेगा उसके लिये पूरी रात की नमाज़ का सवाब लिखा जाएगा।

''इन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल् अर्ज़ि''

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

से لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ○ *''ला तुख़्लिफ़ुल् मीआद''* तक

(मुस्नदे दारमी, मआरिफ़ुल् हदीस)

सूरए हश्र की आख़िरी तीन आयतें

रसूले अकरम सल्ल० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स सुबह इस तअव्वुज़ को सूरए हश्र की इन आयतों के साथ पढ़े तो अल्लाह तआला शानुहू उसके लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते मुक़र्रर करता है जो शाम तक उसके लिये दुआए मग़्फ़िरत करते हैं और अगर शाम को पढ़े तो सुबह तक उसके लिये मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं और अगर मर जाता है तो शहीद मरता है।

(तिर्मिज़ी, दारमी, इब्ने सअद, हिस्ने हसीन)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ○ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ سورة حشر، آية: ٢٢-٢٤

"अऊज़ु बिल्ला-हिस्समीइल् अलीमि मिनश्शैता-निर्रजीम, (तीन बार पढ़कर फिर पढ़े) *हुवल्लाहुल्-लज़ी ला इलाह इल्ला हुव, आलिमुल्-ग़ैबि वश्शहादति, हुवर्रहमानुर्-रहीम। हुवल्लाहुल्-लज़ी ला इलाह इल्ला हू। अल्मलिकुल् कुद्दूसुस्-सलामुल् मुअ्मिनुल् मुहैमिनुल् अज़ीज़ुल्-जब्बारुल् मुतकब्बिर, सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून। हुवल्लाहुल् ख़ालिकुल बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्माउल् हुस्ना, युसब्बिहु लहू माफ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि, व हुवल् अज़ीज़ुल् हकीम"।*

अनुवाद: वह अल्लाह (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह ग़ैब[1] का और पोशीदा[2] चीज़ों का जानने वाला है। वह रहमान और रहीम है। वह अल्लाह (ऐसा है) कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बादशाह है, पाक है, सलामती वाला है, अम्न देने वाला है, निगहबानी करने वाला है, अज़ीज़ है, जब्बार[3] है, ख़ूब बड़ाई वाला है। अल्लाह उस शिर्क से पाक है, जो वे करते हैं, वह अल्लाह पैदा करने वाला है, ठीक-ठीक बनाने वाला है। उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं, जो भी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं सब उसकी तस्बीह[4] करती हैं और वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

सूरए तलाक़ की आयत (रुकूअ़ 1, पारा- 28)

हज़रत अबू ज़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया है कि मुझको एक ऐसी आयत मालूम है कि अगर लोग उस पर अमल करें तो वही उनको काफ़ी है और वह आयत यह है:

﴿ وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ﴾

سورة الطلاق آية: ٢-٣

व मैंयत्तक़िल्लाह यज्अ़ल्लहू मख़्रजँव। व यर्ज़ुक़्हु मिन् हैसु ला यह्तसिबु,

(सूरए तलाक़, आयत : 2-3)

अनुवाद: जो शख़्स अल्लाह से डरता है तो अल्लाह उसके लिये हर

1-परोक्ष, 2-गुप्त, 3-अत्यन्त शक्तिशाली, टूटे हुए को जोड़ने वाला, 4-प्रशंसा।

मुश्किल और मुसीबत से नजात[1] का रास्ता निकाल देता है और उस जगह से रिज़्क़ देता है, जहाँ से उसका गुमान भी नहीं होता यानी जो शख़्स अल्लाह तआ़ला शानुहू से डरे, अल्लाह तआ़ला शानुहू उसके लिये नजात का रास्ता पैदा कर देता है और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ देता है, जहाँ से ख़्याल और गुमान तक नहीं था। (मुस्नदे अहमद, इब्ने माजा, दारमी, मिश्कात)

'दुआ'

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबीए करीम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला शानुहू इर्शाद फ़रमाता है।(हदीसे क़ुद्सी)

اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِیْ بِیْ وَاَنَا مَعَهٗ اِذَا دَعَانِیْ

"अना इन्द ज़न्नि अब्दी बी व अना मअ़हू इज़ा दआ़नी"

अनुवाद: मैं अपने बन्दे के लिये वैसा ही हूँ जैसा वह मेरे मुतअ़ल्लिक़ ख़्याल करे और जब वह पुकारता है तो मैं उसके साथ होता हूँ।

(बुख़ारी अल्-अदबुल् मुफ़रद)

हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि दुआ़ मांगना बेऐनिही[2] इबादत करना है। फिर आप सल्ल० ने बतौरे दलील क़ुरआन करीम की यह आयत तिलावत फ़रमाई:

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۔ سورۃ مومن آیۃ: ٦٠

"व क़ाल रब्बुकुमुद्-ऊनी अस्तजिब् लकुम"।

(सूरए मोमिन, आयत: 60)

अनुवाद: और तुम्हारे रब ने फ़रमाया है- मुझसे दुआ़ मांगा करो और मैं तुम्हारी दुआ़ क़बूल करूँगा।

(मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, हिस्ने हसीन, इब्ने माजा, अन्नसाई)

1-छुटकारा, 2-हूबहू, समान।

दुआ का तरीक़ा

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- अल्लाह से इस तरह हाथ उठा कर मांगा करो कि हथेलियों का रुख़ सामने हो, हाथ उल्टा करके न मांगा करो और जब दुआ़ कर चुको तो उठे हुए हाथ चेहरे पर फेर लो।

(सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत उबई बिन काब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब किसी को याद फ़रमाते और उसके लिये दुआ़ करना चाहते तो पहले अपने लिये मांगते, फिर उस शख़्स के लिये दुआ़ फ़रमाते।

(जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

फ़ुज़ाला बिन उ़बैद रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक शख़्स को सुना उसने नमाज़ में दुआ़ की जिसमें न अल्लाह की हम्द[1] की, न नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम पर दुरूद भेजा तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि इस आदमी ने दुआ़ में जल्दबाज़ी की। फिर आप सल्ल० ने उसको बुलाया और उससे या उसकी मौजूदगी में दूसरे आदमी को मुख़ातब करके आप सल्ल० ने फ़रमाया- जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो (दुआ़ करने से पहले) उसको चाहिये कि अल्लाह की हम्द व सना करे, फिर उसके बाद रसूल सल्ल० पर दुरूद भेजे, उसके बाद जो चाहे अल्लाह से मांगे।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, सुनने नसाई, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

दुआ़ में हाथ उठाना

हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ख़्याल है कि उन्होंने हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से यह सुना है कि वह फ़रमाती थीं कि रसूलुल्लाह सल्ल० को मैंने देखा कि आप सल्ल० दोनों हाथ

1-प्रशंसा।

उठाकर दुआ फ़रमाते थे और (दुआ में यह) फ़रमा रहे थे (ऐ अल्लाह!) मैं भी बशर हूँ। तू मुझसे मुआख़ज़ा[1] न फ़रमा। मैंने अगर किसी मोमिन को सताया हो या बुरा कहा हो तो उसके बारे में भी मुझसे मुआख़ज़ा न फ़रमा। (अल् अदबुल् मुफ़रद)

आमीन

अबू ज़ुहैर नमेरी रज़ि० से रिवायत है कि एक रात हम रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ बाहर निकले। हमारा गुज़र अल्लाह के एक नेक बन्दे पर हुआ जो बड़े इल्हाह़[2] से अल्लाह तआला से मांग रहा था। रसूलुल्लाह सल्ल० खड़े होकर उसकी दुआ और अल्लाह के हुज़ूर में उसका मांगना, गिड़गिड़ाना सुनने लगे। फिर आप सल्ल० ने हम लोगों से फ़रमाया- अगर उसने दुआ का ख़ात्मा सहीह किया और मुहर ठीक लगाई तो जो उसने मांगा है, उसका उसने फ़ैसला करा लिया। हम में से एक ने पूछा- हुज़ूर सल्ल०! सहीह ख़ात्मे का और मुहर ठीक लगाने का तरीक़ा क्या है? आप सल्ल० ने फ़रमाया- आख़िर में आमीन कहकर दुआ ख़त्म करे (तो अगर उसने ऐसा किया तो बस अल्लाह तआला से तय करा लिया।)

(अबू दाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

आफ़ियत[3] की दुआ (कल्याण की दुआ)

हदीस शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- तुममें से जिस शख़्स के लिये दुआ का दरवाज़ा खोल दिया गया (यानी दुआ मांगने की तौफ़ीक़ दे दी गई) उसके लिये रहमत के दरवाज़े खोल लिये गए। अल्लाह तआला से जो दुआ मांगी जाती है, उनमें अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा पसन्द यह है कि उससे (दुनिया और आख़िरत में) आफ़ियत की दुआ मांगी जाए।

(जामे तिर्मिज़ी, हिस्ने हसीन)

1-पकड़, 2-विनती, 3-सुख-कल्याण।

दुआ दाफ़े बला (दुआ मुसीबत दूर करने वाली)

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- क़ज़ा[1] व क़द्र[2] से बचने की कोई तद्बीर[3] फ़ायदा नहीं देती (हाँ) अल्लाह तआला शानुहू से दुआ मांगना उस (आफ़त और मुसीबत) में भी नफ़ा पहुँचाता है, जो नाज़िल हो चुकी है और उस मुसीबत में भी जो अभी तक नाज़िल नहीं हुई और बेशक बला नाज़िल होने को होती है कि इतने में दुआ उससे जा मिलती है। बस क़ियामत तक इन दोनों में कशमकश होती रहती है। (और इन्सान उस दुआ की बदौलत उस बला से बच जाता है।)

(हिस्ने हसीन, जामे तिर्मिज़ी)

दुआ यक़ीन के साथ

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए करीम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- जब अल्लाह तआला से मांगो और दुआ करो तो इस यक़ीन के साथ करो कि वह ज़रूर क़बूल फ़रमाएगा और जान लो और याद रखो कि अल्लाह तआला शानुहू उसकी दुआ क़बूल नहीं करेगा, जिसका दिल (दुआ के वक़्त) अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल और बेपर्वाह हो।

(जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

दुआ में उ़ज्लत (दुआ में जल्दी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- तुम्हारी दुआएँ उस वक़्त तक क़ाबिले क़बूल होती हैं कि जब तक जल्दबाज़ी से काम न लिया जाए (जल्दबाज़ी यह है) कि बन्दा कहने लगे कि मैंने दुआ की थी मगर क़बूल ही नहीं हुई।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-मृत्यु, 2-भाग्य, 3-उपाय।

दुआ में क़त्इय्यत (दुआ में अटलता)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया- तुममें से कोई दुआ करे तो इस तरह न कहे कि- "ऐ अल्लाह! तू अगर चाहे तो मुझे बख़्श दे और तू चाहे तो रहमत फ़रमा और तू चाहे तो मुझे रोज़ी दे। बल्कि अपनी तरफ़ से अ़ज़्म और (क़त्इय्यत) के साथ अल्लाह के हुज़ूर में मांगे और यक़ीन करे कि बेशक वह करेगा वही जो वह चाहेगा कोई ऐसा नहीं जो ज़ोर डालकर उससे करा सके।

(सहीह बुख़ारी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

मौत की दुआ की मुमानअ़त[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया-तुम लोग मौत की दुआ और तमन्ना मत करो। अगर कोई आदमी ऐसी दुआ के लिये मुज़्तर[2] ही हो (और किसी वजह से ज़िन्दगी उसके लिये दूभर ही हो) तो अल्लाह के हुज़ूर में यूँ अ़र्ज़ करे- ऐ अल्लाह! जब तक मेरे लिये ज़िन्दगी बेहतर है, मुझे ज़िन्दा रख और जब मेरे लिये मौत बेहतर हो तो दुनिया से मुझे उठा ले।

(सुनने नसाई, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सज्दे में दुआ

नबीए करीम सल्ल० का इर्शाद है "सज्दे की हालत में बन्दा अपने रब से बहुत ही क़ुर्बत[3] हासिल कर लेता है। पस तुम इस हालत में ख़ूब-ख़ूब दुआ मांगा करो।"

1-निषेध, 2-व्याकुल, 3-निकटता।

दुआ की क़बूलियत[1] पर शुक्र

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कौन-सी चीज़ तुममें से किसी शख़्स को इससे आजिज़ करती है (रोकती है) कि जब वह अपनी किसी दुआ के क़बूल होने का मुशाहदा[2] करे, मसलन किसी मरज़ से शिफ़ा[3] नसीब हो जाए या सफ़र से बख़ैरो-आफ़ियत वापस आ जाए तो कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِعِزَّتِهٖ وَجَلَالِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

अल्हम्दु लिल्ला हिल्लज़ी बिइज़्ज़तिही व जलालिही ततिम्मुस्-सालिहात।

(हिस्ने हसीन, हाकिम, इब्ने माजा)

मक़्बूल दुआएँ

नबीए करीम सल्ल० ने फ़रमाया- मोमिन की कोई दुआ ऐसी न होगी जिसके बारे में अल्लाह यह बयान न फ़रमा दे कि यह मैंने दुनिया में क़बूल की और यह तुम्हारी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा[4] करके रखी। उस वक़्त बन्दा मोमिन सोचेगा काश मेरी कोई दुआ भी दुनिया में क़बूल न होती इसलिए बन्दे को हर हाल में दुआ मांगते रहना चाहिये। (हाकिम)

नबीए करीम सल्ल० का इर्शाद है- दो चीज़ें अल्लाह तआला शानुहू के दरबार से रद नहीं की जातीं-

1- एक अज़ान के वक़्त की दुआ।

2- दूसरी जिहाद (सफ़-बन्दी) के वक़्त की दुआ। (अबू दाऊद)

नबीए करीम सल्ल० का इर्शाद है कि अज़ान और इक़ामत के दरमियानी वक़्फ़े की दुआ रद नहीं की जाती। सहाबा किराम रज़ि० ने दरयाफ़्त किया- या रसूलल्लाह सल्ल०! इस वक़्फ़े में क्या दुआ मांगा करें?

1-स्वीकृति, 2-अनुभव करना, निरीक्षण 3-रोगमुक्ति, 4-एकत्रित।

फ़रमाया- यह दुआ मांगा करो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَالاٰخِرَةِ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् अफ़्व वल् आफ़ियत फ़िद्दुन्या वल् आख़िरह।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- तीन दुआऐं हैं जो ख़ास तौर से क़बूल होती हैं, उनकी क़बूलियत में शक ही नहीं है:

1- औलाद के हक़ में माँ-बाप की दुआ

2- मुसाफ़िर और परदेसी की दुआ

3- मज़्लूम[1] की दुआ

(जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया- पांच आदमियों की दुआऐं ख़ास तौर पर क़बूल होती हैं:

1- मज़्लूम की दुआ जब तक वह बदला न लेवे।

2- हज करने वाले की दुआ जब तक वह लौटकर अपने घर वापस न आए।

3- अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की दुआ जब तक वह शहीद होके दुनिया से लापता न हो जाए।

4- बीमार की दुआ जब तक वह शिफ़ायाब[2] न हो जाए। और

5- एक भाई की दूसरे भाई के लिये ग़ाइबाना[3] दुआ।

यह सब बयान फ़रमाने के बाद आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया और इन दुआओं में सबसे जल्दी क़बूल होने वाली दुआ किसी भाई के लिये ग़ाइबाना दुआ है। (दावते कबीर लिल्-बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-पीड़ित, जिस पर अत्याचार किया जाए, 2-स्वस्थ, 3-परोक्षतः, अनुपस्थिति में।

भाई की दुआए ग़ाइबाना

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते थे कि मर्द मुसलमान की वह दुआ जो अपने भाई के लिये ग़ाइबाना करता है, ज़रूर क़बूल होती है। उस पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर रहता है। जब वह अपने भाई के लिये दुआए ख़ैर करता है तो फ़िरिश्ता उस पर आमीन कहता है और यह कहता है-

وَلَكَ مِثْلُ ذٰلِكَ

"व लक मिस्लु ज़ालिक" (अल्-अदबुल् मुफ़रद)

अपने छोटों से दुआ कराना

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से रिवायत है कि एक बार मैं ने उमरा करने के लिये मक्का मुअज़्ज़मा जाने की रसूलुल्लाह सल्ल० से इजाज़त चाही, तो आप सल्ल० ने मुझे इजाज़त अता फ़रमा दी और इर्शाद फ़रमाया- भय्या हमें भी अपनी दुआओं में शामिल करना और हमको भूल न जाना। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि आपने मुख़ातब फ़रमाकर यह भैया जो कलिमा कहा अगर मुझे उसके एवज़ में सारी दुनिया दे दी जाए तो मैं राज़ी न हूँगा। (सुनने अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम की बाज़[1] दुआएँ

सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से मर्वी है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम नबीए अक्रम सल्ल० के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया- ऐ मुहम्मद (सल्ल०!) क्या आपको तक्लीफ़ है? आप सल्ल० ने फ़रमाया- हाँ है।

1-अन्य।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह दुआ पढ़कर दम किया:

بِاسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَآءٍ يُّوْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ اَوْ عَيْنِ حَاسِدٍ اللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِاسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ

"बिस्मिल्लाहि, अर्क़ीक मिन् कुल्लि दाइंय् यूज़ीक मिन् शर्रि कुल्लि नफ़्सिन् अव् ऐनिन् हासिदि निल्लाहु यश्फ़ीक बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक।"

अनुवाद: अल्लाह के नाम से मैं आप सल्ल० पर दम करता हूँ हर मरज़ से जो आप सल्ल० को तक्लीफ़ दे। हर ज़ात के या नज़रे हासिद[1] के शर[2] से अल्लाह आप सल्ल० को शिफ़ा देगा। अल्लाह के नाम के साथ मैं आप सल्ल० पर दम करता हूँ। (ज़ादुल्-मआद)

मुतफ़र्रिक़ दुआएँ (विभिन्न दुआएँ)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से मर्वी है कि जब नबीए करीम सल्ल० को किसी बात का सद्मा होता तो आप सल्ल० आसमान की जानिब सिर मुबारक उठाते और *'सुब्हानल्लाहिल् अज़ीम'* पढ़ते और जब दुआ में ख़ूब सई[3] फ़रमाते तो *'या हय्यु या क़य्यूमु'* पढ़ते। (ज़ादुल्-मआद, तिर्मिज़ी)

नीज़[4] हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० को जब कोई फ़िक्र और परेशानी लाहिक़[5] होती तो आपकी दुआ यह होती थी:

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

"या हय्यु या क़य्यूमु बिरहमतिक अस्तग़ीस"

अनुवाद: ऐ हय्यु[6] और क़य्यूम[7]! बस तेरी ही रहमत से मदद चाहता हूँ। (ज़ादुल्-मआद)

1-डाह करने वाले की दृष्टि, 2-बुराई, 3-प्रयत्न, 4-इसके अतिरिक्त, 5-मिलने वाली, 6-बाक़ी रहने वाला, अल्लाह तआला का नाम है, 7-अमरबर, जिस अल्लाह के सहारे हर चीज़ का अस्तित्व है और वह स्वयं किसी के सहारे नहीं है।

और दूसरों से फ़रमाते- اَلِظُّوْا بِيَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

"अल्-ज़िमू बियाज़ल्जलालि वल् इक्राम"

अनुवाद: यानी इस कलिमा के ज़रिये अल्लाह तआला शानुहू से इस्तिग़ासा[1] और फ़रयाद करते रहो। (जामे तिर्मिज़ी)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का बयान है कि जंगे बदर[2] में जब मैं कुफ़्फ़ार से लड़ता हुआ आँहज़रत सल्ल० के पास हाज़िर हुआ तो मैंने देखा कि दो जहाँ के सरदार सल्ल० सज्दे में सिर रखे हुए "या हय्यु या क़य्यूमु" पढ़ रहे हैं। फिर मैं चला गया और लड़ाई में शरीक हो गया। फिर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ तो आप सल्ल० बदस्तूर[3] उसी तरह सज्दे में सिर रखे हुए "या हय्यु या क़य्यूमु" पढ़ रहे हैं। यहाँ तक कि अल्लाह तआला शानुहू ने आप सल्ल० को फ़तह की ख़ुशख़बरी सुना दी।

(नसाई, हाकिम, हिस्ने हसीन)

- जब आँहज़रत सल्ल० को किसी अम्र[4] में ज़्यादा परेशानी लाहिक़[5] होती तो आप सल्ल० चादर बिछा देते, खड़े हो जाते और दुआ के लिये अपने हाथ इतने लम्बे कर देते कि आप सल्ल० की बग़ल (काँख) की सफ़ेदी तक दिखाई देती।

- जब आप सल्ल० दुआ ख़त्म करते तो दोनों हाथों को चेहरे पर मल लिया करते। दुआ और इस्तिग़फ़ार के अल्फ़ाज़ तीन-तीन मर्तबा दोहराते।

- आप सल्ल० दुआ में सज्अ़ बन्दी[6] और क़ाफ़िया बन्दी[7] से काम न लेते और न इसको अच्छा जानते।

- आप सल्ल० जब किसी मज्लिस से खड़े होते तो यह दुआ पढ़ते:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ۔

"सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक अश्हदु अल्लाइलाह इल्ला अन्त अस्तग़्फ़िरुक व अतूबु इलैक"

1-मदद चाहना, 2-बदर की लड़ाई, 3-यथावत्, 4-कार्य, विषय 5-उपस्थित, 6-तुकबन्दी, अन्त्यानुप्रास, 7-तुकबन्दी।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मैं आपकी पाकी बयान करता हूँ। आपकी हम्द[1] के साथ दिल से इक़रार करता हूँ मैं कि नहीं कोई माबूद[2] सिवाय तेरे। मैं आपसे बख़्शिश चाहता हूँ और आपके सामने तौबा करता हूँ।

जब आँहज़रत सल्ल० को कोई ख़ुशी पेश आती तो इस तरह कहते:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिनिअ़मतिही ततिम्मुस्सालिहात।"

अनुवाद: शुक्र है अल्लाह तआ़ला का जिसके इन्आ़म से अच्छी चीज़ें कमाल को पहुँचती हैं।

और जब नागवारी की हालत पेश आती तो फ़रमाते:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ

"अल्हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हाल"

अनुवाद: शुक्र है अल्लाह का हर हाल में।

जब आप रास्ते में किसी का हाथ पकड़ते और फिर जुदा होते तो फ़रमाते:

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ٥

"अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतंव् व फ़िल् आख़िरति हसनतंव् वक़िना अ़ज़ाबन्नार।"

अनुवाद: ऐ अल्लाह! ऐ रब हमारे! दे हमें दुनिया में भलाई और आख़िरत में भी भलाई और बचा हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से।

किसी का क़र्ज़ अदा फ़रमाते तो यह दुआ देते:

بَارَكَ اللّٰهُ فِیْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ اِنَّمَا جَزَآءُ السَّلَفِ الْحَمْدُ وَالْاَدَآءُ

"बारकल्लाहु फ़ी अहलिक व मालिक। इन्नमा जज़ाउस्सलफ़ि अल्हम्दु वल्-अदाउ।"

1-प्रशंसा, 2-उपास्य।

अनुवाद: अल्लाह तेरे घर-बार और तेरे माल में बरकत दे। क़र्ज़ का बदला, तारीफ़ और (बर वक़्त[1]) अदायगी है।

जब कोई शख़्स नया लिबास पहन कर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होता तो आप सल्ल० उसकी तारीफ़ करते:

"हसनतुन् हसनतुन्" حَسَنَةٌ حَسَنَةٌ

'बहुत ख़ूब बहुत ख़ूब' या 'बहुत अच्छा बहुत अच्छा'

और फिर फ़रमाते: اَبْلِ وَاَخْلِقْ

'अब्लि व अख़्लिक़' यानी पुराना करो और बोसीदा[2] करो।

जब आप सल्ल० के पास कोई हदियतन्[3] फल आता और वह फल अव्वल मर्तबा[4] ही खाने के क़ाबिल होता तो उसको आप सल्ल० आँखों से लगा लेते, फिर दोनों होंठों से लगाते और फ़रमाते:

اَللّٰهُمَّ كَمَا اَرَيْتَنَا اَوَّلَهُ فَاَرِنَا اٰخِرَهُ

"अल्लाहुम्म कमा अरैतना अव्वलहू फ़अरिना आख़िरहू।"

अनुवाद: ऐ अल्लाह! जिस तरह आपने हमें इस फल का शुरू दिखाया पस इसका आख़िर भी दिखा।

फिर बच्चों को दे देते थे और बच्चे भी उस वक़्त आप सल्ल० के पास होते थे। (इब्ने माजा)

जब आप सल्ल० लश्कर[5] को रुख़सत करते तो यह दुआ पढ़ते:

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكُمْ وَاَمَانَتَكُمْ وَخَوَاتِيْمَ اَعْمَالِكُمْ

"अस्तौदिउल्लाह दीनकुम् व अमानतकुम् व ख़वातीम अअ्मलिकुम्।"

अनुवाद: मैं अल्लाह के सपुर्द करता हूँ तुम्हारे दीन को और तुम्हारी क़ाबिले हिफ़ाज़त चीज़ों को और तुम्हारे आमाल के अन्जामों को।

1-वक़्त पर, 2-सड़ा-गला, फटा पुराना, 3-उपहारस्वरूप, 4-प्रथम बार, 5-फ़ौज।

हुज़ूर नबीए करीम सल्ल० जब नया लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते[1] तो अल्लाह तआला की हम्द करते यानी पढ़ते:

"अल्-हम्दुलिल्ला हिल्लज़ी कसाना हाज़ा" اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ کَسَانَا هٰذَا

अनुवाद: तमाम तारीफ़ें अल्लाह पाक के लिये हैं जिसने हमें ये (लिबास) पहनाया। या और कोई कलिमा शुक्र का कहते और शुकाने की नमाज़ दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ते और पुराना कपड़ा किसी मोहताज को दे देते। (इब्ने अ़साकिर)

जब किसी के यहाँ खाना तनावुल[2] फ़रमाते तो मेज़बान के लिये हुज़ूर सल्ल० दुआ फ़रमाते:

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْلَهُمْ وَارْحَمْهُمْ

"अल्लाहुम्म बारिक्लहुम् फ़ीमा रज़क़्तहुम् वग़्फ़िरलहुम् वर्हम्हुम्।"

(सहीह् मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

जब आप सल्ल० किसी मज्लिस में बैठते और बात-चीत फ़रमाते तो जिस वक़्त वहाँ से उठने का इरादा फ़रमाते तो दस से लेकर पन्द्रह बार इस्तिग़्फ़ार[3] फ़रमाते। (इब्नुस् सुन्नी)

एक रिवायत में यह इस्तिग़्फ़ार आया है:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

"अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूमु व अतूबु इलैह।"

अनुवाद: मैं बख़्शिश चाहता हूँ अल्लाह से कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह ज़िन्दा है, आ़लम[4] को क़ायम रखने वाला है और मैं उसके सामने तौबा करता हूँ।

1-शरीर पर पहनते, 2-भोजन करना, 3-अल्लाह से छमा याचना, 4-ब्रह्माण्ड।

जब आप सल्ल० को कोई दुश्वारी पेश आती थी तो आप सल्ल० नफ़्ल नमाज़ पढ़ते थे। इस अ़मल से ज़ाहिरी व बातिनी, दुनियावी व उख़्रवी[1] नफ़ा होता है और परेशानी दूर हो जाती है। (अबू दाऊद)

जब रसूले अकरम सल्ल० किसी की इयादत फ़रमाते तो उससे आप सल्ल० यह फ़रमाते:

لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ تَعَالٰى

"ला बअ्स तहूरुन इन्शा अल्लाहु तआ़ला"

अनुवाद: कुछ डर नहीं कफ़्फ़ार-ए-गुनाह[2] है इन्शा अल्लाह तआ़ला।

(तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम की तालीम कर्दा बाज़ दुआ़एँ

(हुज़ूर सल्ल० की शिक्षात्मक कतिपय दुआ़एँ)

दुआ़-ए-सहरगाही

(प्रातः कालीन दुआ़)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि हर रात को जब रात का तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है, अल्लाह तआ़ला शानुहू आसमाने दुनिया पर नुज़ूले इज्लाल फ़रमाते[3] हैं और फ़रमाते हैं- जो मुझको पुकारेगा उसकी सुनूँगा, जो मुझसे मांगेगा अ़ता करूँगा, जो मुझसे मग़्फ़िरत और अ़फ़्व[4] तलब करेगा उसको बख़्श दूँगा।

(अल् अदबुल् मुफ़रद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद

1-परलोक सम्बन्धी, 2-किसी गुनाह से पाक होने के लिये जो कुछ दिया या किया जाता है उसे कफ़्फ़ारा कहा जाता है, 3-वैभव के साथ उतरते हैं, 4-क्षमा।

फ़रमाया- कि दीन आसान है और हर्गिज़ कोई शख़्स सख़्ती (और मुबालग़ा[1]) के साथ दीन पर ग़ालिब होने का इरादा न करेगा। मगर दीन ही उसको हरा देगा। पस सीधे चलो, क़रीब रहो और ख़ुशख़बरी हासिल करो और सुबह और शाम के वक़्त और किसी क़द्र रात के आख़िरी हिस्से से (काम में) सहारा लो। (ज़िक्रुल्लाह)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया- जो शख़्स किसी मज्लिस में बैठा जिसमें उससे बहुत-सी क़बिले मुआख़ज़ा[2] फ़ुज़ूल और लायानी[3] बातें सरज़द[4] हुयीं, मगर उसने उस मज्लिस से उठते वक़्त कहा:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

"सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक अश्हदु अल् ला इलाह इल्ला अन्त अस्तग़्फ़िरुक व अतूब इलैक।"

अनुवाद: ऐ अल्लाह मैं तेरी हम्द के साथ तेरी पाकी बयान करता हूँ और गवाही देता हूँ कि सिर्फ़ तू ही माबूदे बरहक़[5] है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। मैं अपने गुनाहों की तुझसे बख़्शिश चाहता हूँ और तेरे हुज़ूर में तौबा करता हूँ तो अल्लाह तआला शानुहू उसकी उन सब लग़्ज़िशों[6] को मुआफ़ कर देगा, जो मज्लिस में उससे सरज़द हुयीं।

(जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- जो शख़्स सोने के लिये बिस्तर पर लेटते वक़्त अल्लाह तआला के हुज़ूर में इस तरह तौबा और इस्तिग़्फ़ार करे और तीन बार अर्ज़ करे:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

"अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूमु व अतूबु इलैह।"

1-बात को बढ़ा चढ़ा कर कहना, 2-पकड़ के योग्य, 3-बेकार बातें, 4-घटित, 5-वास्तविक उपास्य, 6-ग़लती, अपराध।

अनुवादः मैं मग़फ़िरत और बख़्शिश चाहता हूँ उस अल्लाह तआला से जिसके सिवा कोई माबूद नहीं और वह हय्यु[1] और क़य्यूम[2] है, हमेशा रहने वाला है, सबका कारसाज़ है और उसके हुज़ूर में तौबा करता हूँ।

तो उसके सब गुनाह बख़्श दिये जायेंगे अगर्चे वे दरख़्तों के पत्तों और मशहूर रेगिस्तान आइज़[3] के ज़र्रों और दुनिया के दिनों की तरह बेशुमार[4] हों।

(मआरिफ़ुल् हदीस, जामे तिर्मिज़ी)

बेख़्वाबी के लिये दुआ

(अनिद्रा के लिये दुआ)

हज़रत बुरैदा रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्ल० से शिकायत की कि मुझे रात को नींद नहीं आती। रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- जब तुम बिस्तर पर लेटो तो अल्लाह तआला से यह दुआ कर लिया करोः-

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَآ اَظَلَّتْ وَرَبَّ الْاَرَضِيْنَ وَمَآ اَقَلَّتْ وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَآ اَضَلَّتْ كُنْ لِّيْ جَارًا مِّنْ شَرِّ خَلْقِكَ كُلِّهِمْ جَمِيْعًا اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيَّ اَحَدٌ عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَآؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ۔

अल्लाहुम्म रब्बस्समावातिस्सब्इ व मा अज़ल्लत् व रब्बल् अर्ज़ीन व मा अक़ल्लत् व रब्बश्शयातीनि वमा अज़ल्लत कुल्ली जारम् मिन् शर्रि ख़ल्क़िक कुल्लिहिम् जमीअन् अंय्यफ़्रुत अलय्य अहदुन् औ ऐंयब्ग़िय अलय्य अज़्ज़ जारुक व जल्ल सनाउक व ला इलाह ग़ैरुक ला इलाह इल्ला अन्त।

अनुवादः ऐ अल्लाह परवरदिगार[5] सातों आसमानों के और उस चीज़ के जिस पर उनका साया है और परवरदिगार ज़मीनों के और उस चीज़ के जिसको कि ज़मीन उठाये हुए है और परवरदिगार शैतानों के और उस चीज़ के जिसको उन्होंने गुमराह किया। मेरा निगहबान रहना अपनी तमामत्तर

1-ज़िन्दा रहने वाला, 2-शाश्वत, 3-एक रेगिस्तान का नाम, 4-अनगिनत, 5-पालनहार।

मख़्लूक़ की बुराई से (और) इससे कि ज़ुल्म करे उनमें से कोई मुझ पर या कि ज़्यादती करे मुझ पर, महफ़ूज़ है पनाह दिया हुआ तेरा और आपकी तारीफ़ बड़ी है और आपके सिवा कोई माबूद नहीं, आपके सिवा कोई माबूद नहीं है। (तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

फ़िक्र और परेशानी के वक़्त की दुआ

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया– जिस आदमी को परेशानी और फ़िक्र ज़्यादा हो तो उसे चाहिए कि वह अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर में इस तरह अ़र्ज़ करे:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ وَفِیْ قَبْضَتِكَ نَاصِیَتِیْ بِیَدِكَ مَاضٍ فِیَّ حُكْمِكَ عَدْلٌ فِیَّ قَضَائُكَ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّیْتَ بِهٖ نَفْسَكَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِیْ كِتَابِكَ اَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهٖ فِیْ مَكْنُوْنِ الْغَیْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ الْعَظِیْمَ رَبِیْعَ قَلْبِیْ وَجِلَاءَ هَمِّیْ وَغَمِّیْ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अ़ब्दुक वब्नु अ़ब्दिक वब्नु अमतिक व फ़ी क़ब्ज़तिक नासियती बियदिक माज़िन् फ़िय्य हुक्मिक अ़द्लुन् फ़िय्य क़ज़ाउक असअलुक बिकुल्लिस्मिन् हुव लक सम्मैत बिही नफ़्सक अव् अन्ज़ल्तहू फ़ी किताबिक अविस्तअ़सर्त बिही फ़ी मक्नूनिल् ग़ैबि इन्दक अन् तज्अ़लल् क़ुरआनल्–अ़ज़ीम रबीअ़ क़ल्बी व जिलाअ हम्मी व ग़म्मी।

अनुवाद: ऐ अल्लाह बन्दा हूँ तेरा और बेटा हूँ तेरे एक बन्दे का और एक तेरी बन्दी का और बिल्कुल तेरे क़ब्ज़े में हूँ और हमातन[1] तेरे दस्ते क़ुद्रत[2] में हूँ। नाफ़िज़[3] है मेरे बारे में तेरा हुक्म और ऐन अ़द्ल[4] है मेरे बारे में तेरा हर फ़ैसला, मैं तुझसे तेरे हर उस इस्मे पाक[5] के वास्ते से जिससे तूने अपनी मुक़द्दस[6] ज़ात को मौसूम[7] किया है या अपनी किसी किताब में उसको

1-पूर्णतया, 2-कुद्रत के हाथ में, 3-हुक्म जारी, क़ानून लागू, 4-वास्तविक न्याय, 5-पवित्र नाम, 6-पवित्र, 7-नाम रखा हुआ।

नाज़िल फ़रमाया है या अपने ख़ास मख़्फ़ी[1] ख़ज़ानए ग़ैब ही में उसको महफ़ूज़ रखा है। इस्तिद्आ[2] करता हूँ कि क़ुरआने अज़ीम को मेरे दिल की बहार बना दे और मेरी फ़िक्र और ग़मों को उसकी बर्कत से दूर फ़रमा दे।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि जो बन्दा भी इन कलिमात के ज़रिये अल्लाह तआला शानुहू से दुआ करेगा अल्लाह पाक उसकी फ़िक्रों को और परेशानियों को दूर फ़रमा कर ज़रूर बिल् ज़रूर उसको कुशादगी अता फ़रमा देगा। (रज़ीन, मआरिफ़ुल् हदीस)

रंजो[3]-ग़म और अदा-ए-क़र्ज़[4] के लिये

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन का ज़िक्र है आँहज़रत सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ लाए वहाँ एक अंसारी अबू उमामा रज़ि० बैठे थे, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि ऐ अबू उमामा! तू बेवक़्त मस्जिद में क्यों बैठा है? अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह सल्ल०! तरह-तरह के रंज और ग़म हैं और लोगों के क़र्ज़ मेरे पीछे चिपटे हुए हैं। फ़रमाया- मैं तुझे ऐसे चन्द कलिमे बताए देता हूँ कि उनके पढ़ने से अल्लाह तआला शानुहू तेरा रंज और ग़म दूर करेगा और क़र्ज़ अदा करेगा। तू सुबह और शाम यूँ कहा कर:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّیْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् हम्मि वल् हुज़्नि व अऊज़ु बिक मिनल् इज्ज़ि वल् कस्लि व अऊज़ु बिक मिनल् जुब्नि वल् बुख़्लि व अऊज़ु बिक मिन् ग़लबतिद्-दैनि व क़हरिर्रिजालि।

अनुवाद: या अल्लाह् मैं पनाह पकड़ता हूँ तेरी फ़िक्र से और ग़म से और पनाह पकड़ता हूँ तेरी कम हिम्मती और सुस्ती से और पनाह पकड़ता हूँ

1-गुप्त, 2-प्रार्थना, 3-शोक, 4-ऋण चुकाना।

तेरी बुज़्दिली और बुख़्ल[1] से और पनाह पकड़ता हूँ तेरी क़र्ज़ के घेर लेने से और लोगों के दबा लेने से।

—हज़रत अबू उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं चन्द ही रोज़ इन कलिमात को पढ़ने पाया था कि अल्लाह तआ़ला शानुहू ने मेरा रंज और ग़म दूर फ़रमा दिया और क़र्ज़ भी अदा कर दिया। (हिस्ने हसीन)

हज़रत अबू दर्दा रज़ि० को किसी ने आकर ख़बर दी कि आपका मकान जल गया है। हज़रत अबू दर्दा रज़ि० ने (बड़ी बेफ़िकी से) फ़रमाया कि हर्गिज़ नहीं जला। अल्लाह तआ़ला शानुहू हर्गिज़ ऐसा नहीं करेंगे, क्यों कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना है कि जो शख़्स ये कलिमात शुरू दिन में पढ़ ले तो शाम तक उसको कोई मुसीबत नहीं पहुँचेगी और जो शाम को पढ़ ले तो सुबह तक उस पर कोई मुसीबत न आएगी और बाज़ (दूसरी) रिवायात में है उसके नफ़्स में और अहलो-इयाल में और माल में कोई आफ़त न आवेगी और मैं ये कलिमात सुबह को पढ़ चुका हूँ, तो फिर मेरा मकान कैसे जल सकता है? फिर लोगों से कहा चल कर देखो। सबके साथ चलकर मकान पर पहुँचे तो देखते हैं कि मोहल्ले में आग लगी और अबू दर्दा रज़ि० के मकान के चारों तरफ़ मकानात जल गए और उनका मकान बीच में महफ़ूज़ रहा। वे कलिमात यह हैं:-

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ مَا شَآءَ
اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह इल्ला अन्त अ़लैक तवक्कल्तु व अन्त रब्बुल् अर्शिल् अ़ज़ीमि। माशा अल्लाहु कान व मालम् यशअ् लम् यकुन् ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अज़ीमि अअ़्लमु अन्नल्लाह अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। व अन्नल्लाह क़द् अहात बिकुल्लि शैइन इल्मा।

1-कृपणता, कंजूसी।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! आप मेरे रब हैं। आपके सिवा कोई माबूद नहीं। मैंने आप पर भरोसा किया और आप रब हैं अ़र्शे अ़ज़ीम के, जो अल्लाह पाक ने चाहा (वह) हुआ और जो न चाहा न हुआ। गुनाहों से फिरने और इबादत करने की ताक़त, अल्लाह ही की तरफ़ से है जो बुलन्द (और) अ़ज़ीम है। मैं जानता हूँ बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर[1] है और बेशक अल्लाह तआ़ला ने घेर लिया है हर चीज़ को अपने इल्म के ज़रिये।

मुसीबत और ग़म के मौक़े पर

मुस्नद में नबी सल्ल० से मर्वी है, कि कोई शख़्स अगर मुसीबत में मुब्तला[2] हो जाए तो यूँ दुआ करे:-

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ أْجُرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَاخْلُفْ لِيْ خَيْرًا مِّنْهَا ـ
زادالمعاد

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न। अल्लाहुम्म अर्जिनी फ़ी मुसीबती वख़्लुफ़ ली ख़ैरम् मिन्हा। (ज़ादुल्-मआ़द)

अनुवाद: बेशक हम अल्लाह ही के लिये हैं और हम अल्लाह की तरफ़ लौटने वाले हैं। ऐ अल्लाह मेरी मुसीबत में मुझे अज्र[3] दे और उसके इवज़ (बदले) में अच्छा बदला इनायत फ़रमा।

सहीहैन में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से मर्वी है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० बेचैनी के मौक़े पर यह दुआ पढ़ा करते थे:-

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْأَرْضِ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ـ زادالمعاد

ला इलाह इल्लल्लाहुल् अ़ज़ीमुल् हलीमु ला इलाह इल्लल्लाहु रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीमि। ला इलाह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावातिस्सब्इ व रब्बुल् अर्ज़ि रब्बुल् अ़र्शिल् करीम।

1-समर्थ, 2-ग्रस्त, 3-बदला।

अनुवाद: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं (जो) अज़ीम और बुर्दबार[1] है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं (जो) रब है अर्शे अज़ीम का, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं (जो) रब है सातों आसमानों का और रब है ज़मीन का (और) रब है बुज़ुर्गी वाले अर्श का।

जब कोई शख़्स किसी काम के करने से आजिज़ हो जाए या ज़्यादा क़ुव्वत और ताक़त चाहे तो उसको चाहिए कि सोते वक़्त-

1- सुब्हानल्लाह سُبْحَانَ اللهِ 33 (तैंतीस) बार,

2- अल्हम्दुलिल्लाह اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ 33 (तैंतीस) बार,

3- अल्लाहु अक्बर اَللّٰهُ اَكْبَرُ 34 (चौंतीस) बार पढ़ा करे।

(बुख़ारी व मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, हिस्ने हसीन)

किसी को मुसीबत में देखने के वक़्त की दुआ

अमीरुल् मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया- कि जिस आदमी की नज़र किसी मुसीबत में मुब्तला और दुखी पर पड़े तो वह कहे:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِىْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا۔

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब्तलाक बिही व फ़ज़्ज़लनी अला कसीरिम्-मिम्मन ख़लक़ तफ़्ज़ीला।

अनुवाद: हम्द[2] उसके लिये है जिसने मुझे आफ़ियत दी और महफ़ूज़ रखा उस बला और मुसीबत से जिसमें तुझको मुब्तला किया और अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर उसने मुझे फ़ज़ीलत[3] बख़्शी। तो वह उस बला और मुसीबत

1-सहनशील, 2-प्रशंसा, 3-प्रधानता।

से महफ़ूज़ रहेगा, चाहे वह कोई भी मुसीबत हो।

(जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

नीज़[1] हज़रत अस्मा (बिन्ते अमीस) रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मर्वी है, फ़रमाती हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक बार मुझसे फ़रमाया- क्या मैं तुमको ऐसे कलिमात न बताऊँ, जिन्हें तक्लीफ़ और कर्ब[2] के वक़्त या कर्ब की हालत में कह लिया करो। वे यह हैं:-

اَللّٰهُ رَبِّيْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

"अल्लाहु रब्बी ला उश्रिकु बिही शय्अन्"

अनुवाद: अल्लाह मेरा पालनहार है। मैं उसका किसी को शरीक नहीं बनाती।

एक रिवायत में है कि इसे सात बार कहा जाएगा। (ज़ादुल्-मआद)

सख़्त ख़तरे के वक़्त की दुआ

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि हम लोगों ने ग़ज़्वए ख़न्दक़ के दिन रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह सल्ल०! क्या इस नाज़ुक वक़्त के लिये कोई ख़ास दुआ है, जो हम अल्लाह तआला के हुज़ूर (दरबार) में अर्ज़ करें। हालत यह है कि हमारे दिल दहशत[3] के मारे उछल-उछल कर गलों में आ रहे हैं? तो आप सल्ल० ने फ़रमाया- हाँ, अल्लाह तआला के हुज़ूर यूँ अर्ज़ करो:-

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَاٰمِنْ رَوْعَاتِنَا

"अल्लाहुम्मस्तुर अव्रातिना व आमिन् रौआतिना"

अनुवाद: ऐ अल्लाह! हमारी पर्दादारी फ़रमा[4] और हमारी घबराहट को बेख़ौफ़ी और इत्मीनान से बदल दे।

1-इसके अतिरिक्त, 2-दुख, यातना, 3-भय, 4-दोष छिपा दे।

अबू सईद रज़ि० कहते हैं कि फिर अल्लाह तआला ने आंधी भेजकर दुश्मनों के मुँह फेर दिये और उस आंधी ही से अल्लाह तआला ने उनको शिकस्त[1] दी। (मआरिफुल् हदीस, मुस्नदे अहमद)

ख़्वाब में डरना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया जब तुममें से कोई (डरावना ख़्वाब देखकर) सोते में डर जाए तो इस तरह दुआ करे:-

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعَذَابِهٖ وَمِنْ شَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ۔

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् ग़ज़बिही व अज़ाबिही व मिन् शर्रि इबादिही व मिन् हमज़ातिश्शयातीनि व अँय्यह्ज़ुरूनि।

अनुवाद: मैं पनाह माँगता हूँ अल्लाह तआला के कलिमाते ताम्मात[2] के ज़रिये ख़ुद उसके ग़ज़ब[3] और अज़ाब से और उसके बन्दों के शर[4] से और शैतानी वसाविस[5] और असरात से और इस बात से कि शयातीन मेरे पास आयें और मुझे सतायें।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि फिर शयातीन उस बन्दे का कुछ न बिगाड़ सकेंगे। (मआरिफुल् हदीस)

जामे दुआ (व्यापक दुआ)

हज़रत अबू उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने बहुत सी दुआएँ फ़रमाईं, जो हमें याद न रहीं तो हमने आपसे अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह सल्ल०! आप सल्ल० ने बहुत-सी दुआएँ तालीम फ़रमाई थीं, उनको हम याद न रख सके (और चाहते ये हैं कि अल्लाह तआल से वे सब

1-पराजय, 2-सम्पूर्ण शब्दों, 3-क्रोध, 4-बुराई, 5-दुर्विचार।

दुआएँ मांगें, तो क्या करें?)

आप सल्ल० ने फ़रमाया मैं तुम्हें ऐसी दुआ बताए देता हूँ, जिसमें वह सारी दुआएँ आ जायेंगी। अल्लाह के हुज़ूर में यूँ अर्ज़ करो कि:-

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ ﷺ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ ﷺ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔

अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक मिन् ख़ैरि मा सअलक मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व नऊज़ु बिक मिन् शर्रि मस्तआज़ मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वअन्तल् मुस्तआनु व अलैकल् बलागु वला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! हम तुझसे वह सब ख़ैर मांगते हैं, जो तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुझसे मांगी और हम उन सब चीज़ों से पनाह चाहते हैं, जिनसे तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तेरी पनाह चाही। बस तू ही है जिससे मदद चाही जाए और तेरे ही करम पर मौक़ूफ़[1] है मक़ासिद[2] और मुरादों तक पहुँचना और किसी मक़्सद के लिये सई[3] व हरकत और उसको हासिल करने की क़ुव्वत व ताक़त बस अल्लाह ही से मिल सकती है। (जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

क़ुनूते[4] नाज़िला[5]

(विपत्ति की दुआ पढ़ना)

किसी आम मुसीबत मसलन क़हत[6], वबा[7] दुश्मनों के हमले वग़ैरा के वक़्त यह क़ुनूते नाज़िला फ़ज्र की नमाज़ में आख़िरी रकअत में रुकूअ के बाद

1-निर्भय, 2-उद्देश्यों, 3-प्रयत्न, कोशिश, 4-नमाज़ में चुप खड़े रहना, दुआ पढ़ना, 5-मुसीबत, 6-अकाल, 7-महामारी।

पढ़े। अगर इमाम पढ़े तो मुक़्तदी हर फ़िक़रे[1] पर धीरे से आमीन कहें:-

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْمَنْ هَدَيْتَ وَعَافِنِیْ فِیْمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنِیْ فِیْمَنْ تَوَلَّيْتَ وَبَارِكْ لِیْ فِيْمَآ اَعْطَيْتَ وَقِنِیْ شَرَّ مَا قَضَيْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِیْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ اِنَّهٗ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ نَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَيْكَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِیِّ۔ حصن حصين

अल्लाहुम्महदिनी फ़ी मन् हदैत। व आफ़िनी फ़ी मन् आफ़ैत। व तवल्लनी फ़ी मन् तवल्लैत व बारिक्ली फ़ीमा अअ़्तैत वक़िनी शर्र मा क़ज़ैत। फ़इन्नक तक़्ज़ी वला युक़्ज़ा अ़लैक। इन्नहू ला यज़िल्लु मैंव्वालैत। वला यइज़्ज़ु मन् आ़दैत। तबारक्त रब्बना व तआ़लैत नस्तग़्फ़िरुक व नतूबु इलैक। व सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यि। (हिस्ने हसीन)

अनुवाद: ऐ अल्लाह मुझको राह दिखा, उन लोगों में जिनको तूने रहा दिखाई और मुझको आफ़ियत[2] दे उन लोगों में जिनको तूने आफ़ियत बख़्शी और मेरी कारसाज़ी कर उन लोगों में जिनके आप कारसाज़ हैं और बरकत दे उस चीज़ में जो आपने मुझको अ़ता फ़रमाई और बचा मुझको उस चीज़ की बुराई से जिसको आपने मुक़द्दर फ़रमाया है, क्यों कि फ़ैसला करने वाले आप ही हैं। बेशक आपका दोस्त ज़लील नहीं हो सकता और आपका दुश्मन इज़्ज़त नहीं पा सकता। ऐ हमारे रब! आप बरकत वाले और बुलन्द व वाला[3] हैं। हम आपसे मग़्फ़िरत चाहते हैं और आपके सामने तौबा करते हैं और अल्लाह तआ़ला नबीए करीम सल्ल० पर रहमते कामिला[4] नाज़िल फ़रमाए।

बाज़ार की ज़ुल्माती फ़ज़ाओं में अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र का ग़ैर-मामूली सवाब

हज़रत उम्र रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद

1-वाक्य, 2-सुख-चैन, 3-श्रेष्ठ, 4-सम्पूर्ण कृपा।

फ़रमाया कि जो बन्दा बाज़ार गया और उसने (बाज़ार की ग़फ़लत और शोर व शर से भरपूर फ़ज़ा में दिल के इख़्लास[1] से) कहा:-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَیٌّ

لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ۔

ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु वलहुल् हम्दु युह्यी व युमीतु व हय्युल् ला यमूतु बियदिहिल् ख़ैरु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर।

अनुवाद: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है। उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी के लिये तमाम तारीफ़ है। वह ज़िन्दा करता है और मारता है और वह हमेशा-हमेशा ज़िन्दा रहेगा उसे कभी भी मौत नहीं, बेहतरी उसी के हाथ में है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसके लिये हज़ारों नेकियां लिखी जायेंगी और हज़ारों गुनाह मह्व[2] कर दिये जायेंगे और हज़ारों दर्जे उसके बुलन्द कर दिये जायेंगे और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसके लिये एक शानदार महल तैयार होगा।

(मआ़रिफुल् हदीस, जामे तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा)

आयाते शिफ़ा (रोग मुक्ति की आयात)

इमामे तरीक़त अबुल क़ासिम क़ुशैरी रहमतुल्लाह अ़लैह से मन्क़ूल है- वह फ़रमाते हैं कि उनका एक बच्चा बीमार हो गया। उसकी बीमारी इतनी सख़्त हो गई कि वह क़रीबुल्मर्ग[3] हो गया। वह बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम की ख़िदमत में बच्चे का हाल अ़र्ज़ किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया तुम आयाते

1-निष्कपटता, 2-ख़त्म, 3-मरने के निकट।

शिफ़ा से क्यों दूर रहते हो, क्यों इनसे तमस्सुक[1] नहीं करते और शिफ़ा नहीं मांगते? मैं बेदार[2] हो गया और उस पर ग़ौर करने लगा तो मैंने इन आयाते शिफ़ा को किताबे इलाही (यानी क़ुरआने मजीद) में छह जगह पाया वे यह हैं:

﴿ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۝ ﴾ سورة التوبة آية: ١٤

1- *व यशफ़ि सुदूर क़ौमिम्मुअ्मिनीन । (अत्तौबा : 9/14)*

अनुवाद: और अल्लाह तआला शिफ़ा देता है मोमिनीन के सीनों को।

﴿ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ ﴾ سورة يونس آية: ٥٧

2- *व शिफ़ाउल्लिमा फ़िस्सुदूर (यूनुस : 10/57)*

अनुवाद: सीनों में जो तक्लीफ़ है उनसे शिफ़ा है।

﴿ يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ ﴾ سورة النحل آية: ٦٩

3- *यख़्रुजु मिम्-बुतूनिहा शराबुम्-मुख़्तलिफ़ुन् अल्-वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल्-लिन्नासि (अन्नहल : 16/69)*

अनुवाद: उनके पेट से निकलती है पीने की चीज़ जिनके रंग मुख़्तलिफ़ होते हैं, लोगों के लिये उसमें शिफ़ा है।

﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴾ سورة الاسراء آية: ٨٢

4- *व नुनज़्ज़िलु मिनल्-क़ुरआनि मा हुव शिफ़ाउँव व रह्मतुल्लिल् मुअ्मिनीन। (बनी इस्राइल : 17/82)*

अनुवाद: और क़ुरआन में हम ऐसी चीज़ नाज़िल करते हैं जो मोमिनीन के लिये शिफ़ा और रहमत है।

﴿ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۝ ﴾ سورة الشعراء آية: ٨٠

1-ग्रहण करना, फ़ायदा हासिल करना, 2-जाग गया।

5- *व इज़ा मरिज़्तु फ़हुव यश्फ़ीन। (अश्शुअ़रा : 26/80)*

अनुवाद: और जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो अल्लाह तआला शिफ़ा देता है।

﴿قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَاۤءٌ﴾ سورة حم سجده آية: ٤٤

6- *कुल हुव लिल्लज़ीन आमनू हुदँव व शिफ़ाअ।*

(हामीम अस्सज्दा : 41/44)

अनुवाद: फ़रमा दीजिए आप सल्ल० कि मोमिनीन के लिये यह हिदायत और शिफ़ा है।

मैंने इन आयात को लिखा और पानी में घोल कर बच्चे को पिला दिया और वह बच्चा उसी वक़्त शिफ़ा पा गया, गोया कि उसके पाँव से गिरह[1] खोल दी गई हो। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

सलात[2] व सलाम

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है- ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर सलात व सलाम पढ़ो, चुनांचे इर्शाद फ़रमाया:-

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا﴾ سورة الاحزاب آية: ٥٦

या अय्युहल्लज़ीन आमनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा।

(सूरए अहज़ाब, आयत : 56)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जो शख़्स मुझ पर मेरी क़ब्र के पास दुरूद शरीफ़ पढ़ता है उसको मैं ख़ुद सुनता हूँ और जो मुझसे फ़ासले पर दुरूद पढ़ता है वह मुझको पहुँचा दिया जाता है यानी बज़रिये मलाइका। (बैहक़ी शोबुल्-ईमान, सुनने नसाई, मुस्नदे दारमी, सुनने अबी दाऊद, ज़ादुस्सईद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जो शख़्स

1-गांठ, 2-दुरूद।

मुझ पर दुरूद भेजे किसी किताब में तो हमेशा फ़िरिश्ते उसपर दुरूद भेजते रहेंगे, जब तक मेरा नाम उस किताब में रहेगा। (तबरानी, ज़ादुस्सईद)

जुमा के ख़ुत्बे में जब हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नामे मुबारक आवे या ख़तीब[1] यह आयत पढ़े:-

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا﴾ سورة الاحزاب آية:٥٦

या अय्युहल्लज़ीन आमनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा।

(सूरए अहज़ाब, आयत : 56)

तो अपने दिल में ज़बान को हरकत दिये बग़ैर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) कह ले। (दुर्रे मुख़्तार)

दुर्रे मुख़्तार में है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ते वक़्त आज़ा[2] को हरकत देना और आवाज़ बुलन्द करना जहल[3] है। इससे मालूम हुआ कि बाज़ जगह जो रस्म है कि नमाज़ों के बाद हल्क़ा बांधकर बहुत चिल्ला-चिल्ला कर दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं, यह मुनासिब नहीं है। जब इस्मे मुबारक[4] लिखे तो सलात व सलाम भी लिखे यानी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरा लिखे, इसमें कोताही न करे, सिर्फ़ ص یا صلعم (साद या सल्अ़म) पर इक्तिफ़ा[5] न करे।

आपके इस्मे गिरामी[6] से पहले सय्यिदना बढ़ा देना मुस्तहब[7] और अफ़ज़ल है। (दुर्रे मुख़्तार)

अगर एक मज्लिस में कई बार आपका नामे मुबारक ज़िक्र किया जाए, तो इमामे तहावी रहमतुल्लाहि अ़लैह का मज़्हब यह है कि हर बार में ज़िक्र करने वाले और सुनने वाले पर दुरूद पढ़ना वाजिब है, मगर फ़त्वा इस पर है कि एक बार दुरूद पढ़ना वाजिब है और फिर मुस्तहब है।

नमाज़ में बजुज़ तशहहुद आख़ीर के दूसरे अर्कान में दुरूद पढ़ना मक्रूह है। (दुर्रे मुख़्तार)

1-ख़ुत्बा पढ़ने वाला, 2-अंग, 3-अज्ञान, 4-पवित्र नाम, 5-पर्याप्त होना, 6-पवित्र नाम, 7-सवाब का कार्य।

बेवुज़ू दुरूद शरीफ़ पढ़ना जाइज़ और बावुज़ू पढ़ना नूरुन आला नूर[1]।
(ज़ादुस्सईद)

हदीस शरीफ़ में है कि जुमा के दिन तुम मुझ पर कस्रत से दुरूद पढ़ा करो। इस दुरूद में फ़िरिश्ते हाज़िर होते हैं और यह दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (इब्ने माजा, अबू दाऊद, नसाई, ज़ादुस्सईद)

अबू हफ़्स इब्ने शाहीन रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स मुझ पर हज़ार बार दुरूद पढ़े तो जब तक वह अपनी जगह जन्नत में न देख ले न मरेगा।

दुरूद शरीफ़ दुआ की क़बूलियत की शर्त

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया– दुआ आसमान और ज़मीन के दरमियान ही रुकी रहती है, ऊपर नहीं जा सकती जब तक कि नबीए पाक (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दुरूद न भेजा जाए। (जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस) यही हदीस हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू से भी मर्वी है।(मोजमे औसत, तबरानी)

अहादीस में दुरूदो-सलाम की तर्ग़ीबात[2] और फ़ज़ाइल व बरकात

अबू बुर्दा बिन दीनार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– मेरा जो उम्मती ख़ुलूसे दिल से मुझ पर सलात भेजे, अल्लाह तआला शानुहू उस पर दस सलातें भेजता है और उसके सिले में उसके दस दर्जे बुलन्द करता है और उसके हिसाब में दस नेकियां लिखाता है और उसके दस गुनाह महव[3] फ़रमा देता है। (सुनने नसाई, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-अत्यधिक शुभ व मांगलिक, 2-प्रेरणा, 3-ख़त्म।

हज़रत काब बिन उजा अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम लोगों से फ़रमाया– मेरे पास आ जाओ। हम लोग हाज़िर हो गए (आपको जो कुछ इर्शाद फ़रमाना था फ़रमाया, जब आप मिम्बर पर जाने लगे) तो जब मिम्बर के पहले दर्जे पर क़दम रखा तो आपने फ़रमाया– "आमीन", फिर जब दूसरे दर्जे पर क़दम रखा तो फिर फ़रमाया– "आमीन"। इसी तरह जब तीसरे दर्जे पर क़दम रखा तो फिर फ़रमाया– "आमीन" फिर जो कुछ फ़रमाना था फ़रमाया, जब उससे फ़ारिग़ हो कर आप मिम्बर से नीचे उतर आए तो हम लोगों ने अर्ज़ किया– या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! आज हमने आपसे एक ऐसी चीज़ सुनी जो हम पहले नहीं सुनते थे (यानी मिम्बर के हर दर्जे पर क़दम रखते वक़्त आज आप "आमीन" कहते थे, यह नई बात थी) आपने बताया कि जब मैं मिम्बर पर चढ़ने लगा तो जिब्रील अमीन आ गये, उन्हों ने कहा:–

1– तबाह व बर्बाद हो वह महरूम जो रमज़ानुल् मुबारक पाए और उसमें भी उसकी मग़्फ़िरत का फ़ैसला न हो, तो मैंने कहा "आमीन"। फिर जब मैंने मिम्बर के दूसरे दर्जे पर क़दम रखा तो उन्होंने कहा:–

2– तबाह व बर्बाद हो वह बेतौफ़ीक़ और बेनसीब जिसके सामने आपका ज़िक्र आए और वह उस वक़्त भी आप सल्ल० पर दुरूद न भेजे तो मैंने इस पर भी कहा– "आमीन", फिर जब मैंने मिम्बर के तीसरे दर्जे पर क़दम रखा तो उन्होंने कहा:–

3– तबाह व बर्बाद हो वह बदबख़्त आदमी जिसके माँ–बाप या उन दो में से एक उसके सामने बूढ़े हो जायें और वह (उनकी ख़िदमत करके और उनको राज़ी और ख़ुश करके) जन्नत का मुस्तहिक़[1] न हो जाए, इस पर भी मैंने कहा– "आमीन"। (जामे तिर्मिज़ी, मुस्तदरक हाकिम, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह

1-योग्य।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- क़ियामत के दिन मुझसे ज़्यादा क़रीब वे लोग होंगे जो मुझ पर दुरूद भेजते होंगे। (बैहक़ी, तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजना गुनाहों के धोने और उनसे पाक करने में, आग को सर्द पानी से बुझाने से ज़्यादा मुअस्सिर[1] व कार-आमद[2] है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलाम पेश करना गुलामों के आज़ाद करने से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है ग़रज़ेकि[3] नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूदो-सलाम भेजना मम्बा-ए-अनवार व बरकात[4] और मिफ़ताह[5] तमाम अबवाबे[6] ख़ैरो-सआदत[7] है और अहले सुलूक इस बाब में बहुत ज़्यादा शग़फ़[8] रखने की बिना पर फ़त्हे अज़ीम[9] के मुस्तौजिब[10] और मवाहिबे रब्बानिया[11] के मुस्तहिक़[12] हुए हैं।

बाज़ मशाइख़े[13] किराम रहिमहुमुल्लाह फ़रमाते हैं कि जब ऐसा शैख़े कामिल और मुर्शिद[14] कामिल मौजूद न हो जो उसकी तर्बियत कर सके तो उसे चाहिए कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजने को लाज़िम कर ले। यह ऐसा तरीक़ा है जिससे तालिब वासिले बहक़[15] हो जाता है और यही दुरूद व सलाम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ तवज्जोह करना, अहसन तरीक़े[16] से आदाबे नबवी सल्ल० और अख़्लाक़े जमीला मुहम्मदिया सल्ल० से उसकी तर्बियत कर देंगे और कमालात के बुलन्दतर मक़ामात और क़ुर्बे इलाही के मनाज़िल पर उसे फ़ाइज़ करेंगे और सय्यिदुल् काइनात[17] अफ़्ज़लुल् अम्बिया वल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ुर्ब से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

बाज़ मशाइख़ वसिय्यत करते हैं कि सूरए *"क़ुल हुवल्लाहु अहद"* पढ़ें और सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कस्रत से दुरूद भेजें और

1-प्रभाव डालने वाली, 2-उपयोगी, 3-सारांश यह कि, 4-प्रकाश और समृद्धि का स्रोत, 5-कुन्जी, 6-सबसे बड़ी कामयाबी, 7-खुशक़िस्मती, 8-दिलचस्पी, 9- सबसे बड़ी कामयाबी, 10-योग्य पात्र, 11-अल्लाह की बख़्शिश, 12-योग्य, 13-शैख़, 14-सही रास्ता बताने वाला, 15-हक़ यानी अल्लाह से संयुक्त, 16-उत्तम नियम, 17-ब्रह्माण्ड के सरदार।

फ़रमाते हैं कि "कुल हुवल्लाहु अहद" की क़िराअत ख़ुदाए वाहिद की मअ़रिफ़त[1] कराती है और सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद की कस्रत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की महब्बत व मइय्यत[2] से सरफ़राज़ करती है और जो कोई सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर कस्रत से दुरूद भेजेगा यक़ीनन उसे ख़्वाब व बेदारी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत[3] नसीब होगी। (मन्क़ूल अज़ शैख़ अहमद बिन मूसा अल्-मश्रुअ़ अन् शैख़ इमाम अ़ली मुत्तक़ी, दावाते कबीर, जामे तिर्मिज़ी, मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक दिन इस हाल में तशरीफ़ लाए कि आपकी आँखों से ख़ुशी व मसर्रत नुमायां थी[4] और आपका चेहरए अनवर[5] पुर-मसर्रत था। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! आज आपके रुख़े अनवर में ख़ुशी व मसर्रत की लहरे ताबाँ[6] हैं, क्या सबब है? फ़रमाया- जिब्रील अ़लैहिस्सलाम आए और उन्होंने कहा- ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)! क्या आपको यह अम्र[7] मस्रूर[8] नहीं करता कि हक़ तआ़ला फ़रमाता है कि आपकी उम्मत का जो बन्दा भी आप पर एक मर्तबा भी दुरूद भेजता है, मैं उसपर 10 मर्तबा सलातो-सलाम भेजता हूँ।

(सुनने नसाई, मुस्नदे दारमी)

तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि उन्होंने अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! मैं चाहता हूँ कि आप पर दुरूद भेजूँ, फ़रमाया- जितना चाहो। मैंने अ़र्ज़ किया- वज़ाइफ़[9] का चौथाई, फ़रमाया- जितना चाहो और अगर ज़्यादा भेजो तो तुम्हारे लिये और बेहतर है। अ़र्ज़ किया निस्फ़[10], फ़रमाया जितना चाहो अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिये और ज़्यादा बेहतर है। अ़र्ज़ किया- दो तिहाई, फ़रमाया जितना चाहो और अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिये और ज़्यादा बेहतर है। अ़र्ज़ किया

1-पहचान, 2-साथ, 3-दर्शन, 4-प्रसन्नता प्रकट थी, 5-प्रकाशमान मुख, 6-प्रकाशमान, 7-हुक्म, 8-खुश, 9- वज़ीफ़ा का बहुवचन, 10-आधा।

फिर तो मैं अपनी तमाम दुआ के बदले में आप पर दुरूद ही भेजूँगा। फ़रमाया– तब तो तूने अपनी हिम्मत पूरी कर ली और गुनाहों को मुआफ़ करा लिया। (जामे तिर्मिज़ी, मदारिजुन्नुबुव्वा)

दुरूद शरीफ़ की बरकात

सबसे ज़्यादा लज़ीज़तर[1] और शीरींतर[2] ख़ासियत दुरूद शरीफ़ की यह है कि इसकी बदौलत उश्शाक़[3] को ख़्वाब में हुज़ूर पुर-नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दौलते ज़ियारत मुयस्सर होती है। बाज़ दुरूदों को बिलख़ुसूस बुज़ुर्गों ने आज़माया है। शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी क़ुद्दिस सिर्रहुल् अज़ीज़ ने किताब "तर्ग़ीबुस्सादात" में लिखा है कि शबे जुमा में दो रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़े और हर रक्अ़त में ग्यारह बार "आयतल्कुर्सी" और ग्यारह बार "क़ुल् हुवल्लाह" और बाद सलाम सौ बार यह दुरूद शरीफ़ पढ़े, इन्शा अल्लाह तआ़ला तीन जुमे न गुज़रने पायेंगे कि ज़ियारत नसीब होगी। वह दुरूद शरीफ़ यह है:- (ज़ादुस्सईद)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ۔

"अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन्नबिय्यिल् उम्मिय्यि व आलिही व अस्हाबिही व सल्लम"

दीगर[4] नीज़[5] शैख़ मौसूफ़ ने लिखा है कि जो शख़्स दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े और हर रक्अ़त में "अल्हम्द" के बाद पचीस बार "क़ुल् हुवल्लाह" और सलाम के बाद यह दुरूद शरीफ़ हज़ार मर्तबा पढ़े उसे दौलते ज़ियारत नसीब हो:-

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ۔

"सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल उम्मिय्यि" (ज़ादुस्सईद)

1-स्वादिष्ट, 2-मधुर, 3-प्रेमियों, 4-अन्य, 5-इसके अतिरिक्त।

नीज़ शैख़ मौसूफ़ ने लिखा है कि सोते वक़्त सत्तर बार इस दुरूद शरीफ़ को पढ़ने से दौलते ज़ियारत नसीब होगी:-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بَحْرِ اَنْوَارِكَ وَمَعْدِنِ اَسْرَارِكَ وَلِسَانِ حُجَّتِكَ وَعُرُوْسِ مَمْلَكَتِكَ وَاِمَامِ حَضْرَتِكَ وَطِرَازِ مُلْكِكَ وَخَزَآئِنِ رَحْمَتِكَ وَطَرِيْقِ شَرِيْعَتِكَ الْمُتَلَذِّذِ بِتَوْحِيْدِكَ اِنْسَانِ عَيْنِ الْوُجُوْدِ وَالسَّبَبِ فِىْ كُلِّ مَوْجُوْدٍ عَيْنِ اَعْيَانِ خَلْقِكَ الْمُتَقَدِّمِ مِنْ نُّوْرِ ضِيَائِكَ صَلَاةً تَدُوْمُ بِدَوَامِكَ وَتَبْقٰى بِبَقَائِكَ لَا مُنْتَهٰى لَهَا دُوْنَ عِلْمِكَ صَلَاةً تُرْضِيْكَ وَتُرْضِيْهِ وَتَرْضٰى بِهَا عَنَّا يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन् बहरि अन्वारिक व मअ़दिनि अस्रारिक व लिसानि हुज्जतिक व उरूसि मम्लुकतिक व इमामि हज़्रतिक व तिराज़ि मुल्किक व ख़ज़ाइनि रहमतिक व तरीक़ि शरीअतिकल् मुतलज़्ज़िज़ि बितौहीदिक इन्सानि ऐ़निल् वुजूदि वस्सबबि फी कुल्लि मौजूदिन् ऐ़नि अअ़्यानि ख़ल्क़िकल् मुतक़द्दिमि मिन् नूरि ज़ियाइक सलातन् तदूमु बिदवामिक वतब्क़ा बि-बक़ाइक ला मुन्तहा लहा दून इ़ल्मिक सलातन् तुर्ज़ीक व तुर्ज़ीहि व तर्ज़ा बिहा अ़न्ना या रब्बल् आलमीन।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! रहमते कामिला नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर जो दर्या हैं तेरे नूर के और कान हैं तेरे भेदों के और ज़बान हैं तेरी वहदानियत[1] की हुज्जत के और दुल्हा तेरे मुल्क के और पेशवा तेरी दरगाह के और नक़्श व आराइश तेरे मुल्क के और ख़ज़ाने तेरी रहमत के और रास्ता तेरे दीन के, लज़्ज़त पाने वाले तेरी तौहीद[2] के साथ आँख मौजूदात[3] की और वास्ता पैदा होने हर मौजूद के आँख तेरे बन्दगाने मख़्लूक़ात की, सबके पहले-पहल ज़ाहिर हुए नूर से तेरी तजल्लिये[4] ज़ात की, ऐसा दुरूद कि हमेशा रहे साथ हमेशा रहने आपके और

1-अल्लाह को एक जानना और एक मानना, 2-अल्लाह को एक जानना और एक मानना, 3-संसार की समस्त वस्तुएँ, 4-प्रकाश।

बाक़ी रहे आपकी बक़ा[1] के साथ उसकी इन्तिहा न हो सिवाए आपके इल्म के (और) ऐसा दुरूद जो ख़ुश करे आपको और ख़ुश करे उनको और राज़ी हो जाए तू इस दुरूद से हम लोगों से, ऐ परवरदिगार तमाम आलम के।

दीगरः शैख़ ने लिखा है कि सोते वक़्त यह दुरूद शरीफ़ भी चन्द बार पढ़ना ज़ियारत के लिये मुअस्सिर है:-

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْحِلِّ وَالْحَرَمِ وَرَبَّ الْبَيْتِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الرُّكْنِ وَالْمَقَامِ اَبْلِغْ لِرُوْحِ سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مِّنَّا السَّلَامُ۔ زاد السعيد

अल्लाहुम्म रब्बल् हिल्लि वल्-हरमि व रब्बल् बैतिल् हरामि व रब्बर्रुक्नि वल्मक़ामि अब्लिग़् लिरूहि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिम् मिन्नस्सलामु।

(ज़ादुस्सईद)

अनुवादः ऐ अल्लाह! (मक़ामे) हिल्ल[2] व हरम[3] के रब और बैतुल हराम के रब और रुक्न व मक़ाम के रब, हमारे सरदार और हमारे आक़ा जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की रूहे मुबारक को सलाम पहुँचा दीजिए हमारी जानिब से।

सलाते तुन्जीना

मनाहिजुल् हसनात में इब्ने फ़ाकिहानी की किताब "फ़ज़्रे मुनीर" से नक़्ल किया है कि एक बुज़ुर्ग शैख़ सालेह मूसा ज़रीर (नाबीना[4]) थे। उन्होंने अपना गुज़रा हुआ क़िस्सा मुझसे नक़्ल किया कि एक जहाज़ डूबने लगा और मैं उसमें मौजूद था, उस वक़्त मुझको गुनूदगी[5] सी हुई। इस हालत में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझको यह दुरूद तालीम फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि जहाज़ वाले इसको हज़ार बार पढ़ें, हनोज़[6] तीन सौ बार पर नौबत न पहुँची थी कि जहाज़ ने निजात[7] पाई। वह दुरूद यह है-

1-नित्यता, 2-गन्तव्य, सभा, 3-काबा, 4-अंधे, 5-ऊँघ, 6-अभी तक, 7-मुक्ति।

''सलाते तुन्जीना'' (दुरूद)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَاةً تُنْجِيْنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِىْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّـَٔاتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا عِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَآ اَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيَاةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन् तुन्जीना बिहा मिन् जमीइल् अह्वालि वल्-आफ़ाति व तक़्ज़ी लना बिहा जमीअ़ल्हाजाति व तुतह्हिरुन बिहा मिन् जमीइस्सय्यिआति व तर्फ़उ़ना बिहा इन्दक अअ़्लद्दरजाति व तुबल्लिग़ुना बिहा अक़्सल् ग़ायाति मिन् जमीइल ख़ैराति फ़िल् हयाति व बअ़्दल् ममाति इन्नक अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! हमारे सरदार और हमारे आक़ा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व स ल्लम) पर दुरूद भेज, ऐसा दुरूद कि उसके ज़रिये तू हमें तमाम खौफ़ों और तमाम आफ़तों से नजात दे और उसके ज़रिये हमारी तमाम हाजात[1] पूरी करे और उसके ज़रिये तू हमें तमाम बुराइयों से पाक करे और उसके ज़रिये तू हमें अपने नज़्दीक बुलन्द दर्जों पर बुलन्द करे और उसके ज़रिये तू हमें तमाम नेकियों का मुन्तहाए मक़्सूद[2] बहम[3] पहुँचाए ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर[4] है।

इस दुरूद शरीफ़ के बरकात बेशुमार हैं और हर तरह की वबाओं और बीमारियों से हिफ़ाज़त होती है और क़ल्ब को अजीबो-ग़रीब इत्मीनान हासिल होता है, बुज़ुर्गों के मुजर्रबात[5] में है। (ज़ादुस्सईद)

1-आवश्यकताऐं, 2-उद्देश्य की पराकाष्ठा, 3-एक साथ, 4-समर्थ, 5-अनुभवों।

दीगर दुरूद शरीफ़

बज़्ज़ार व तबरानी ने सग़ीर और औसत में रुऐफ़ा से मर्फ़ूअन रिवायत की है कि जो इस दुरूद को पढ़े उसके लिये हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी शफ़ाअ़त[1] वाजिब और ज़रूरी है:-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिंव् व अन्ज़िल्हुल् मक़्अ़दल् मुक़र्रब इ़न्दक।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और आले[2] मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर दुरूद नाज़िल फ़रमा और आपको ऐसे ठिकाने पर पहुँचा जो तेरे नज़्दीक मुक़र्रब[3] हो।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से अबू दाऊद ने रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसको यह बात पसन्द हो कि हमारे घर वालों पर दुरूद पढ़ते वक़्त सवाब का पूरा पैमाना मिले तो यह दुरूद पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِالنَّبِيِّ وَاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّاتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन्नबिय्यि व अज़्वाजिही उम्महातिल् मुअ्मिनीन व ज़ुर्रिय्यातिही व अहलि बैतिही कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा नबीए करीम सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर और आपकी अज़्वाजे मुतह्हरात[4] पर जो तमाम मुसलमानों की माएँ हैं और आपकी औलाद और आपके घर

1-सिफ़ारिश, 2-सन्तान, 3-समीपवर्ती, 4-पवित्र पत्नियां।

वालों पर जैसा सय्यिदना इब्राहीम अ़लैहि० पर दुरूद नाज़िल फ़रमाया। बेशक तू सतूदा[1] सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

बुख़ारी ने 'अल्-क़ौलुल् बदीअ़' में ब-रिवायत इब्ने अबी आसिम रज़ि० मर्फूअ़न नक़्ल किया है कि जो कोई सात जुमा तक हर जुमा को सात बार इस दुरूद शरीफ़ को पढ़े उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब है।

(हाशिया दलाइल, ज़ादुस्सईद)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلَاةً تَكُوْنُ لَكَ رِضًا وَّلَهٗ جَزَآءً وَّلِحَقِّهٖ اَدَآءً وَّاَعْطِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَاجْزِهٖ عَنَّا مَا هُوَ اَهْلُهٗ وَاجْزِهٖ اَفْضَلَ مَاجَازَيْتَ نَبِيًّا عَنْ قَوْمِهٖ وَرَسُوْلًا عَنْ اُمَّتِهٖ وَصَلِّ عَلٰى جَمِيْعِ اِخْوَانِهٖ مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالصَّالِحِيْنَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन् अ़ब्दिक व रसूलिकन् नबिय्यिल् उम्मिय्यि व अ़ला आलि मुहम्मदिन् अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन् सलातन् तकूनु लक रिज़ँव व लहू जज़ाअँव व लि हक़्क़िही अदाअँव् व अअ़्तिहिल् वसीलत वल् फ़ज़ीलत वल् मक़ामल् महमूदल्लज़ी वअ़त्तहू व अज्ज़िही अ़न्ना मा हुव अहलुहू व अज्ज़िही अफ़्ज़ल मा जाज़ैत नबिय्यन् अन् क़ौमिही व रसूलन् अन् उम्मतिही व सल्लि अ़ला जमीइ इख़्वानिही मिनन्–नबिय्यीन वस्सालिहीन या अर्हमर्राहिमीन।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! अपने (बर्गुज़ीदा[2]) बन्दे और अपने रसूल नबी उम्मी सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर और सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की औलाद पर ऐसा दुरूद नाज़िल फ़रमा जो तेरी रज़ा का ज़रिया हो और हुज़ूर के लिये पूरा बदला हो और

1-प्रशंसित, 2-चुना हुआ, पुनीत।

आपके हक़ में अदाइगी हो और आपको वसीला और फ़ज़ीला और मक़ामे महमूद जिसका तूने वायदा फ़रमाया है, अ़ता फ़रमा और हुज़ूर को हमारी तरफ़ से ऐसी जज़ा अ़ता फ़रमा जो आपके शाने आ़ली के लाइक़ हो और आपको उन सबसे अफ़ज़ल बदला अ़ता फ़रमा जो तूने किसी नबी को उसकी क़ौम की तरफ़ से और किसी रसूल को उसकी उम्मत की तरफ़ से अ़ता फ़रमाया और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के तमाम बरादरान अम्बिया व सालिहीन पर, ऐ अर्हमर्राहिमीन[1] दुरूद नाज़िल फ़रमा। (किताब ज़ादुस्सईद से)

हज़रत उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिब्रीले अमीन ने मेरे हाथ की उंगलियों पर गिनकर दुरूद शरीफ़ के यह कलिमात तालीम फ़रमाए और बताया कि रब्बुल्इज़्ज़त जल्ल जलालुहू की तरफ़ से ये इसी तरह उतरे हैं। वह कलिमात यह हैं:-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ تَرَحَّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا تَرَحَّمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ تَحَنَّنْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا تَحَنَّنْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا سَلَّمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लैत

1-दया व कृपा करने वाले।

अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद। अल्लाहुम्म तरह्हम् अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा तरह्हम्मत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद। अल्लाहुम्म तहन्नन् अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा तहन्नन्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद। अल्लाहुम्म सल्लिम अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लम्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद। (मुस्नदे फ़िरदौस, शोबुल् ईमान लिल्-बैहक़ी, मआरिफुल् हदीस)

अनुवादः ऐ अल्लाह! सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और आले सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर दुरूद नाज़िल फ़रमा, जिस तरह तूने हज़रत इब्राहीम और हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद पर दुरूद नाज़िल फ़रमाया। बेशक तू सतूदा[1] सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

ऐ अल्लाह! सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने सय्यिदना इब्राहीम और सय्यिदना इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद पर रहमत भेजी, बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

ऐ अल्लाह! सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की औलाद पर महब्बत आमेज़ (भरी) शफ़्क़त फ़रमा जिस तरह तूने हज़रत इब्राहीम और हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद पर महब्बत आमेज़ शफ़्क़त फ़रमाई। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

ऐ अल्लाह! सलाम भेज सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की औलाद

1-प्रशंसित।

पर जिस तरह तूने सय्यिदना इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उनकी औलाद पर सलाम भेजा। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम मुझ पर दुरूद भेजो तो इस तरह कहा करो:-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى
اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ
كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन्नबिय्यिल् उम्मिय्यि व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम व बारिक् अ़ला मुहम्मदि निन्नबिय्यिल् उम्मिय्यि व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद।

(मुस्नदे अहमद, सहीह इब्ने हिब्बान, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया गया कि हज़रत! हम आप सल्ल० पर सलात (दुरूद) किस तरह पढ़ा करें? आप सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला शानुहू से यूँ अ़र्ज़ किया करो:-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ
عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔
رواه البخاری

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव् व अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव् व अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद। (रवाहुल् बुख़ारी)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! अपनी ख़ास नवाज़िश[1] और इनायत व रहमत फ़रमा हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर और आपकी (पाक) बीवियों और आपकी नस्ल पर जैसे कि आपने नवाज़िश और इनायत व रहमत फ़रमाई इब्राहीम पर, और ख़ास बरकत नाज़िल फ़रमा हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर और आपकी पाक बीवियों और आपकी नस्ल पर जैसे कि आपने बरकतें नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम पर। ऐ अल्लाह! तू सारी हम्द[2] व सताइश[3] का सज़ावार[4] है और तेरे ही लिये सारी अ़ज़्मत व बड़ाई है। (सहीह़ बुख़ारी, सह़ीह़ मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा अन्सारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है- फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया कि आप पर दुरूद किस तरह भेजी जाए? तो आपने फ़रमाया- मुझ पर दुरूद भेजा करो और ख़ूब एह्तिमाम और दिल लगा के दुआ़ किया करो और यूँ अ़र्ज़ किया करो:-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिंव व बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर अपनी ख़ास इनायत व रहमत और बरकत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने हज़रत इब्राहीम और आले इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) पर बरकतें नाज़िल फ़रमाई, तू हर हम्द व सताईश का सज़ावार है और अ़ज़्मत व बुज़ुर्गी तेरी सिफ़त है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि

1-कृपा, 2-प्रशंसा, 3-स्तुति, 4-योग्य।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने मुझ पर इस तरह दुरूद भेजा:-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَتَرَحَّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا تَرَحَّمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम व बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम व तरह्हम अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा तरह्हम्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और आले सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर जिस तरह तूने दुरूद नाज़िल फ़रमाया सय्यिदना इब्राहीम और आले सय्यिदना इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) पर और बरकत नाज़िल फ़रमा सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और आले सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर जिस तरह तूने बरकत नाज़िल फ़रमाई हज़रत इब्राहीम और आले सय्यिदना इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) पर और रहमत भेज सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर और आले सय्यिदना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर जिस तरह तूने रहमत भेजी सय्यिदना इब्राहीम(अ़लैहिस्सलाम) पर और सय्यिदना इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद पर।

सो मैं कियामत के दिन उसके लिये शहादत[1] दूँगा और उसकी शफ़ाअ़त[2] करूँगा। (तहज़ीबुल् आसार लिल् तबरी, मआ़रिफुल् हदीस)

1-गवाही, 2-सिफ़ारिश।

इस्तिग़्फ़ार (पापों की क्षमा-याचना)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- ख़ुदा की क़सम मैं दिन में सत्तर दफ़ा से ज़्यादा अल्लाह तआला के हुज़ूर में तौबा व इस्तिग़्फ़ार करता हूँ। (सहीह बुख़ारी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक नशिस्त[1] में शुमार कर लेते थे कि आप सौ-सौ दफ़ा अल्लाह तआला के हुज़ूर में अर्ज़ करते थे:-

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُوْرُ۔

रब्बिग़्फ़िर्ली वतुब् अलय्य इन्नक अन्तत्तव्वाबुल् ग़फ़ूर। (मआरिफ़ुल् हदीस, मुसनदे अहमद, जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, इब्ने माजा)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शादे गरामी है कि हर आदमी ख़ताकार है। कोई ऐसा नहीं है जिससे कोई ख़ता[2] या लग़्ज़िश[3] सर्ज़द न हो और ख़ताकारों में वह बहुत अच्छे हैं जो ख़ता व क़ुसूर के बाद मुख़्लिसाना[4] तौबा करें और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ़[5] हो जायें।

(मआरिफ़ुल् हदीस, जामे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, सुनने अबी दाऊद)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जो बन्दा (गुनाह करके) इस्तिग़्फ़ार करे (यानी सच्चे दिल से अल्लाह तआला से मुआफ़ी मांगे) फिर अगर वह दिन में सत्तर दफ़ा भी वही गुनाह करे तो (अल्लाह तआला शानुहू के नज़्दीक) वह गुनाह पर इसरार[6] करने वालों में नहीं है।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-बैठक, 2-गुनाह, दोष, 3-त्रुटि, 4-निश्छलता पूर्ण, 5-प्रवृत्त, 6-ज़िद, हट।

हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- कि जिस बन्दे ने इन अल्फ़ाज़ के साथ अल्लाह तआला के हुज़ूर में तौबा व इस्तिग़फ़ार किया तो वह बन्दा ज़रूर बख़्श दिया जाएगा अगर्चे उसने मैदाने जंग से भागने का गुनाह किया हो वह यह है:-

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ۔

अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल् हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैह।

(मआरिफ़ुल् हदीस, जामे तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

इस्तिग़्फ़ार की बरकात

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- कि जो बन्दा इस्तिग़फ़ार को लाज़िम पकड़ ले (यानी अल्लाह तआला से बराबर अपने गुनाहों की मुआफ़ी मांगता रहे) तो अल्लाह तआला उसके लिये तंगी और मुश्किल से निकलने और रिहाई[1] पाने का रास्ता बना देगा और उसकी हर फ़िक्र और परेशानी को दूर करके कुशादगी[2] और इत्मीनान अता फ़रमा देगा और उसको उन तरीक़ों से रिज़्क़[3] देगा जिनका उसको ख़्याल व गुमान भी न होगा। (मुस्नदे अहमद, सुनने अबी दाऊद, सुनने इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

बार-बार गुनाह और बार-बार इस्तिग़्फ़ार करने वाले

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया- अल्लाह तआला के किसी बन्दे ने गुनाह किया, फिर अल्लाह तआला से अर्ज़ किया- ऐ मेरे मालिक मुझसे गुनाह हो गया, मुझे मुआफ़ फ़रमा दे। तो अल्लाह तआला शानुहू ने फ़रमाया कि क्या मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई मालिक है

1-मुक्ति, 2-विस्तार, सुख 3-आजीविका।

जो गुनाहों पर पकड़ भी कर सकता है और मुआफ़ भी कर सकता है। मैंने अपने बन्दे का गुनाह बख़्श दिया और उसको मुआफ़ कर दिया। उसके बाद जब तक अल्लाह तआला ने चाहा वह बन्दा गुनाह से रुका रहा और फिर किसी वक़्त गुनाह कर बैठा, फिर अल्लाह तआला से अ़र्ज़ किया मेरे मालिक! मुझसे गुनाह हो गया तू उसको बख़्श दे और मुआफ़ फ़रमा दे, तो अल्लाह तआला ने फिर फ़रमाया- क्या मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई मालिक है जो गुनाह व क़ुसूर मुआफ़ भी कर सकता है और पकड़ भी कर सकता है। मैंने अपने बन्दे का गुनाह मुआफ़ कर दिया। उसके बाद जब तक अल्लाह तआला ने चाहा वह बन्दा गुनाह से रुका रहा और किसी वक़्त फिर कोई गुनाह कर बैठा और फिर अल्लाह तआला शानुहू से अ़र्ज़ किया- ऐ मेरे मालिक व मौला! मुझसे और गुनाह हो गया है तू मुझे मुआफ़ फ़रमा दे और मेरे गुनाह बख़्श दे तो अल्लाह तआला ने फिर इर्शाद फ़रमाया कि क्या मेरे बन्दे को यक़ीन है कि उसका कोई मालिक व मौला है जो गुनाह मुआफ़ भी कर सकता है और सज़ा भी दे सकता है। मैंने अपने बन्दे को बख़्श दिया, अब जो उसका जी चाहे करे। (सहीह् बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

मरने वालों के लिये सबसे बेहतर तोहफ़ा इस्तिग़्फ़ार (दुआ-ए-मग़्फ़िरत)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- क़ब्र में मदफ़ून[1] मुर्दे की मिसाल बिल्कुल उस शख़्स की सी है जो दर्या में डूब रहा हो और मदद के लिये चीख़ व पुकार कर रहा हो, वह बेचारा इन्तिज़ार करता है कि माँ-बाप, भाई-बहन या किसी दोस्त, आश्ना[2] की तरफ़ से दुआए रहमत व मग़्फ़िरत का तोहफ़ा पहुँचे। जब किसी की तरफ़ से उसको दुआ का तोहफ़ा पहुँचता है तो वह उसको दुनिया व मा-फ़ीहा[3] से ज़्यादा अ़ज़ीज़ व महबूब

1-दफ़न किये हुए, 2-परिचित, 3-संसार और इसके भीतर की समस्त वस्तुएँ।

होता है- और दुनिया में रहने, बसने वालों की दुआओं की वजह से क़ब्र के मुर्दों को इतना अज़ीम सवाब अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलता है जिसकी मिसाल पहाड़ों से दी जा सकती है- और मुर्दों के लिये ज़िन्दों का ख़ास हदिया[1] उनके लिये दुआए मग़्फ़िरत[2] है।

(शोबुल् ईमान लिल् बेहक़ी, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की तरफ़ से जन्नत में किसी मर्दे सालिह[3] का दर्जा एक दम बुलन्द कर दिया जाता है तो वह जन्नती बन्दा पूछता है कि ऐ परवरदिगार! मेरे दर्जे और मर्तबे में यह तरक़्क़ी किस वजह से और कहाँ से हुई? जवाब मिलता है कि तेरे वास्ते तेरी फ़लाँ औलाद के दुआए मग़्फ़िरत करने की वजह से।

(मुस्नदे अहमद, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जो बन्दा आ़म मोमिनीन[4] और मोमिनात[5] के लिये हर रोज़ (25 या 27 मर्तबा) अल्लाह तआला से मुआफ़ी और मग़्फ़िरत की दुआ करेगा वह अल्लाह तआला के उन मक़्बूल बन्दों में से हो जाएगा जिनकी दुआएँ क़बूल होती हैं और जिनकी बरकत से दुनिया वालों को रिज़्क़ मिलता है।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ۔

अल्लाहुम्मग़्फ़िर् लिल्-मुअ्मिनीन वल्-मुअ्मिनाति वल्-मुस्लिमीन वल् मुस्लिमाति अल्-अह्याइ मिन्हुम् वल्-अम्वाति।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! तमाम मोमिनीन और मोमिनात और तमाम मुस्लिमीन व मुस्लिमात की बख़्शिश फ़रमा जो उनमें से ज़िन्दा हों (उनकी भी) और जो उनमें से वफ़ात पा गए हों (उनकी भी)। (हिस्ने हसीन)

1-उपहार, 2-मोक्ष, नजात, 3-नेक, 4-मुसलमान मर्द, 5-मुसलमान औरतों।

सय्यिदुल् इस्तिग़फ़ार (सर्वोत्तम क्षमा याचना)

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सय्यिदुल् इस्तिग़फ़ार (यानी सबसे अअ़्ला इस्तिग़फ़ार) यह है कि बन्दा अल्लाह तआला के हुज़ूर में यूँ अ़र्ज़ करे:-

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ وَاَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ۔

अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह इल्ला अन्त ख़लक़्तनी व अना अ़ब्दुक व अना अ़ला अ़ह्दिक व वअ़्दिक मस्ततअ़्तु अऊज़ु बिक मिन् शर्रि मा सनअ़्तु व अबूउ लक बिनिअ़्मतिक अ़लय्य व अबूउ बिज़म्बी फ़ग़्फ़िर्ली फ़इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तूने मुझे पैदा फ़रमाया और मैं तेरा बन्दा और तेरे अहद पर और तेरे वादे पर क़ाइम हूँ जहाँ तक मुझसे हो सके। मैंने जो गुनाह किये उनके शर[1] से तेरी पनाह चाहता हूँ। मैं तेरी नेअ़्मतों का इक़रार करता हूँ और अपने गुनाहों का भी इक़रार करता हूँ लिहाज़ा मुझे बख़्श दे, क्योंकि तेरे अ़लावा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस बन्दे ने इख़्लास और दिल के यक़ीन के साथ दिन के किसी हिस्से में अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर में यह अ़र्ज़ किया (यानी इन कलिमात के साथ इस्तिग़फ़ार किया) और उसी दिन रात शुरू होने से पहले उसको मौत आ गई तो वह बिला शुब्हा जन्नत में जाएगा और इसी तरह अगर किसी ने रात के किसी

1-बुराई।

हिस्से में अल्लाह तआला के हुज़ूर में अर्ज़ किया और सुबह होने से पहले उसी रात में वह चल बसा तो वह बिला शुब्हा जन्नत में जाएगा।

(सहीह बुख़ारी, मआरिफुल् हदीस)

तश्रीह: इस इस्तिग़फ़ार की इस ग़ैर मामूली[1] फ़ज़ीलत का राज़ बज़ाहिर यही है कि इसके एक-एक लफ़्ज़ में अ़ब्दियत[2] की रूह भरी हुई है।

सलाते इस्तिग़फ़ार
(क्षमा-याचना की नमाज़)

हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मुझसे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बयान फ़रमाया (जो बिला शुब्हा सादिक़ व सिद्दीक़ हैं) कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना, आप फ़रमाते थे- जिस शख़्स से कोई गुनाह हो जाए फिर वह उठ कर वुज़ू करे नमाज़ पढ़े, फिर अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत और मुआफ़ी तलब करे तो अल्लाह तआ़ला उसको मुआफ़ फ़रमा ही देता है। उसके बाद आपने क़ुरआन मजीद की आयत तिलावत फ़रमाई:-

﴿ وَالَّذِيْنَ إِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوْا أَنْفُسَهُمْ ﴾ سورة آل عمران آية: ١٣٥

''वल्लज़ीन इज़ा फ़अ़लू फ़ाहिशतन् अव् ज़लमू अन्फुसहुम्''

(सूरए आले इम्रान, आयत: 135) (मआ़रिफुल् हदीस, जामे तिर्मिज़ी)

इस्तिआ़ज़ा[3]
(पनाह मांगने की बाज़ दुआएँ)

दुनिया और आख़िरत का कोई शर[4], कोई फ़साद, कोई फ़ित्ना[5], कोई बला और आफ़त इस आ़लमे वुजूद में ऐसी नहीं है जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह तआ़ला की पनाह न मांगी हो और

1-असाधारण, 2-भक्ति, 3-पनाह या शरण चाहना, 4-बुराई, 5-उपद्रव, विद्रोह।

उम्मत को उसकी तल्क़ीन[1] न फ़रमाई हो। ज़ैल[2] में बाज़ दुआएँ दर्ज की जाती हैं, बाज़ गुज़श्ता[3] मज़ामीन[4] के ज़ैल में आ चुकी हैं।

हज़रत शक्ल बिन हुमैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि वह बयान करते हैं- मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मुझे कोई तअव्वुज़[5] तालीम फ़रमा दीजिए जिसके ज़रिये मैं अल्लाह तआला से पनाह व हिफ़ाज़त तलब किया करूँ। आपने मेरा हाथ अपने दस्ते मुबारक में थाम कर फ़रमाया- कहो:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِی وَمِنْ شَرِّ بَصَرِی وَمِنْ شَرِّ لِسَانِی وَمِنْ شَرِّ قَلْبِی وَمِنْ شَرِّ مَنِیِّ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन् शर्रि सम्ई व मिन् शर्रि बसरी व मिन् शर्रि लिसानी व मिन् शर्रि क़ल्बी व मिन् शर्रि मनिय्यी।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ अपने कानों के शर्र से और अपनी निगाह के शर से और अपने क़ल्ब के शर से और अपने माद्दाए शहवत[6] के शर से।

(सुनने अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, नसाई, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थे:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَغْرَمِ وَالْمَأْثَمِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْغِنٰی وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَایَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِیْ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَيْنِیْ وَبَيْنَ خَطَايَایَ كَمَا

1-नसुपदेश, 2-नीचे, 3-विगत, 4-विषयों, 5-अल्लाह की पनाह चाहना किसी बुराई से, 6-स्त्री कामना की इच्छा।

بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् कस्लि वल् हरमि वल् मग़रमि वल् मअ्सिम अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् अज़ाबिन्नारि व फ़ित्नतिन्नारि व फ़ित्नतिल् क़ब्रि व अज़ाबिल् क़ब्रि व मिन् शर्रि फ़ित्नतिलग़िना व मिन् शर्रि फ़ित्नतिल् फ़क़्रि व मिन् शर्रि फ़ित्नतिल् मसीहिद्दज्जालि। अल्लाहुम्मग़्सिल् ख़तायाय बिमाइस्सल्जि वल्बर्दि वनक़्क़ि क़ल्बी कमा युनक़्क़स्सौबुल् अब्यज़ु मिनद्दनसि व बाइद बैनी व बैन ख़तायाय कमा बाअ़त्त बैनल् मश्रिक़ि वल् मग़्रिबि।

अनुवाद: ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ सुस्ती और काहिली से और इंतिहाई बुढ़ापे से (जो आदमी को बिल्कुल ही नाकारा कर दे) और क़र्ज़ के बोझ से और हर गुनाह से। ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ दोज़ख़ के अज़ाब से और दोज़ख़ के फ़ित्ने से, और फ़ितनए क़ब्र से और अज़ाबे क़ब्र से, और दौलत व सर्वत[1] के फ़ित्ने और शर से और मुफ़्लिसी और मोहताजी के फ़ित्ने और शर से और फ़ितनए दज्जाल के शर से। ऐ मेरे अल्लाह! मेरे गुनाहों के असरात धो दे ओले और बर्फ़ के पानी से और मेरे दिल को गन्दे आमाल व अख़्लाक़ की गन्दगियों से इस तरह पाक और साफ़ कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है। नीज़[2] मेरे और गुनाहों के दरमियान इतनी दूरी पैदा कर दे जितनी दूरी तूने मश्रिक़[3] व मग़्रिब[4] के दरमियान कर दी है।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं में से एक दुआ यह भी थी:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ وَجَمِيْعِ سَخَطِكَ۔ رواه مسلم، معارف الحديث

1-समृद्धि, एश्वर्य, 2-अपि, और, 3-पूर्व, 4-पश्चिम।

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् ज़वालि निअ्मतिक व तहव्वुलि आफ़ियतिक व फ़ुजाअति निक़्मतिक व जमीइ़ सख़तिक। (रवाहु मुस्लिम, मआरिफ़ुल्हदीस)

जुमुअ़तुल् मुबारक

हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जुमा की नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा करना हर मुसलमान पर लाज़िम और वाजिब है। इस वुजूब से चार क़िस्म के आदमी मुस्तस्ना[1] हैं:-

1- गुलाम जो बेचारा किसी का मम्लूक[2] हो,

2- औ़रत,

3- नाबालिग़ लड़का,

4- बीमार। (सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- लोगों को चाहिए कि नमाज़े जुमा हर्गिज़ तर्क न करें वर्ना अल्लाह तआ़ला उनके इस गुनाह की सज़ा में दिलों पर मुहर लगा देगा। (हिदायत से महरूम होकर) फिर वह ग़ाफ़िलों में हो जायेंगे। (मुस्लिम)

नामज़े जुमा का एहतिमाम और उसके आदाब
(जुमा की नमाज़ का प्रबन्ध तथा ढंग)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जो आदमी जुमा के दिन गुस्ल करे और जहाँ तक हो सके सफ़ाई और पाकीज़गी का एहतिमाम करे और जो तेल, ख़ुशबू उसके घर हो, वह लगाए (एक हदीस में है कि

1-मुक्त, 2-दास।

मिस्वाक ज़रूर करना चाहिए) (इब्ने माजा) फिर वह घर से नमाज़ के लिये जाये और मस्जिद में पहुँच कर इसकी एहतियात करे कि जो दो आदमी पहले से साथ बैठे हों, उनके बीच में न बैठे (यानी जगह तंग न करे) फिर जो नमाज़ यानी सुनन व नवाफ़िल की जितनी रकअतें उसके लिए मुक़द्दर हैं वे पढ़े। फिर जब इमाम ख़ुत्बा दे तो तवज्जोह और ख़ामोशी के साथ उसको सुने, तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उस जुमा और दूसरे जुमे के दरमियान उसकी सारी ख़ताएँ ज़रूर मुआफ़ कर दी जायेंगी।

(मआरिफ़ुल् हदीस, सहीह बुख़ारी)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जो शख़्स जुमा के दिन सूरए "कहफ़" पढ़ेगा तो उसके लिये दोनों जुमुओं के दरमियान एक नूर चमकता रहेगा। (नसाई)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि जुमा के दिन में एक ऐसी साअ़त[1] है कि अगर कोई मुसलमान उस वक़्त अल्लाह तआला से कोई दुआ मांगे तो ज़रूर क़बूल होती है। ऐक रिवायत में है कि वह साअ़त ख़ुत्बा पढ़ने के वक़्त से नमाज़ के ख़त्म होने तक है। एक और रिवायत में है कि वह साअ़त आख़िर दिन में है, अस्र से लेकर मग़्रिब तक है। (बिहिश्ती गौहर, बुख़ारी से)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जुमा के दिन मुझ पर कस्रत से दुरूद भेजा करो। इस रोज़ दुरूद में फ़िरिश्ते हाज़िर होते हैं और यह दुरूद मेरे हुज़ूर में पेश किया जाता है। (इब्ने माजा)

1-घड़ी, प्रहर।

मौत ब-रोज़े जुमा

(शुक्रवार के दिन की मृत्यु)

रोज़े जुमा और शबे जुमा[1] में मौत आने की फ़ज़ीलत में अहादीस व आसार मर्वी हैं कि मरने वाला अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहता है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है:-

مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَمُوْتُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ اَوْ لَيْلَةَ الْجُمُعَةِ اِلَّا وَقَاهُ اللّٰهُ فِتْنَةَ الْقَبْرِ ـ

मा मिम्मुस्लिमिय् यमूतु यौमल् जुमुअ़ति अव् लैलतल् जुमुअ़ति इल्ला वक़ाहुल्लाहु फ़ित्नतल् क़ब्रि।

अनुवाद: (कोई एक मुसलमान भी) ऐसा नहीं जो जुमा के दिन या उसकी रात में मरे मगर अल्लाह तआ़ला उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखेगा।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

जुमा के लिये अच्छे कपड़ों को एहतिमाम

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:- तुम में से किसी के लिये इसमें कोई मुज़ाइक़ा नहीं है कि अगर उसको वुस्अ़त[2] हो तो वह रोज़-मर्रह के काम-काज के वक़्त पहने जाने वाले कपड़ों के अ़लावा जुमा के दिन के लिये कपड़ों का एक ख़ास जोड़ा बना कर रख ले।

(सुनने इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

जुमा के दिन ख़त बनवाना और नाख़ून तरश्वाना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जुमा के दिन नमाज़ के लिये जाने से

1-शुक्रवार की रात, 2-गुंजाइश।

पहले अपने नाखून और अपनी लबें[1] तराशा करते थे।

(मुस्नदे बज़्ज़ार व मोजमे औसत लित्तबरानी, मआरिफुल् हदीस)

आप सल्ल० का जुमा का लिबास

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक खास जोड़ा था जो आप जुमा के दिन पहना करते थे और जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ होकर तशरीफ़ लाते थे तो हम उसको तह करके रख देते थे और फिर वह अगले जुमा ही को निकलता था। (हदीस ज़ईफ़ है) (तबरानी, मोजमे सग़ीर और औसत)

साहिबे "सफ़रुस्सआदा" फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लिबास आदतन चादर, रुमाल और सियाह कपड़ा था। लेकिन मिश्कात में मुस्लिम से बरिवायत हज़रत उम्र बिन हर्स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मर्वी है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस हाल में ख़ुत्बा फ़रमाते थे कि आपके सरे मुबारक पर सियाह अमामा[2] होता था और आप उसका शम्ला[3] अपने दोनों कंधों के दरमियान छोड़े हुए होते थे।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

जुमा के दिन अव्वल वक़्त मस्जिद जाने की फ़ज़ीलत

(शुक्रवार के दिन मस्जिद में पहले जाने की श्रेष्ठता)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– जब जुमा का दिन होता है तो फ़िरिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं और शुरू में आने वालों के नाम यके–बाद दीगरे लिखते हैं और अव्वल वक़्त दोपहर में आने

1-मूँछ के नीचे का वह भाग जो होठों पर रहता है, 2-काली पगड़ी, 3-पगड़ी का छोर।

वाले की मिसाल उस शख़्स की सी है जो अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर में ऊँट की क़ुर्बानी पेश करता है। फिर उसके बाद दोम[1] नम्बर पर आने वाले की मिसाल उस शख़्स की सी है जो गाय की क़ुर्बानी पेश करता है, फिर उसके बाद आने वाले की मिसाल मेंढा पेश करने वाले की है। फिर जब इमाम ख़ुत्बे के लिये मिम्बर की तरफ़ जाता है तो ये फ़िरिश्ते अपने लिखने के दफ़्तर लपेट लेते हैं और ख़ुत्बा सुनने में शरीक हो जाते हैं।

(मआ़रिफुल् हदीस, सहीह़ बुख़ारी व सहीह़ मुस्लिम)

नमाज़े जुमा के बाद की सुन्नतें

हज़रत अ़ली रज़ि० और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ि० से रिवायत है कि वे जुमा के बाद छ: रकअतें पढ़ा करते थे। (जामे तिर्मिज़ी)

नमाज़े जुमा व ख़ुत्बा के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल[2]

हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दो ख़ुत्बे दिया करते थे और दोनों के दरमियान (थोड़ी देर के लिये) बैठते थे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

इस असना[3] में आप सल्ल० कलाम न फ़रमाते थे।

(अबू दाऊद व मिश्कात)

आप सल्ल० इन ख़ुत्बों में क़ुरआने मजीद की आयात भी पढ़ते थे और लोगों को नसीहत भी फ़रमाते थे। आपकी नमाज़ भी दरमियाना होती थी और इसी तरह आपका ख़ुत्बा भी। (यानी ज़्यादा तवील[4] न होता था)

(मआ़रिफुल् हदीस, सहीह़ मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि

1-दूसरे, 2-नियम, 3-मध्य, 4-लम्बा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जुमा के दिन फ़ज्र की पहली रकअ़त में अलिफ़्० लाम्० मीम्० तन्ज़ील (यानी सूरए अस्-सज्दह) और दूसरी रकअ़त में *हल अता अलल् इन्सान* (यानी सूरए अद्दहर) पढ़ा करते थे (इन सूरतों को मुस्तहब समझ कर कभी-कभी पढ़ा करे और कभी तर्क कर दे।)

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस, बिहिश्ती गौहर)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जुमा की नमाज़ में सूरए "जुमुअ़ह" और सूरए "मुनाफ़िकून" (पारा: 28) या "*सब्बिहिस्म रब्बिकल्-अअ़्ला*" और "*हल् अताक हदीसुल् ग़ाशिया*" (पारा: 30) पढ़ते थे। (बिहिश्ती गौहर)

और एक सहाबी फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सूरए "क़ाफ़" (سورة ق) ख़ुत्बे में अक्सर पढ़ा करते थे और कभी सूरए "वल्-अस्र" और कभी:-

﴿لا يَسْتَوِى اَصْحَابُ النَّارِ وَاَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ اَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝﴾
سورة الحشر آية: ٢٠

ला यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल् जन्नति अस्हाबुल् जन्नति हुमुल् फ़ाइज़ून (सूरए हश्र, रुकूअ़ 3, पारा: 28) और कभी:-

﴿وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ اِنَّكُمْ مَّاكِثُوْنَ ۝﴾ سورة الزخرف آية: ٧٧
(بحر الرائق، بهشتى گوهر)

व नादौ या मालिकु लियक़्ज़ि अ़लैना रब्बुक क़ाल इन्नकुम् माकिसून।
(सूरए अज़्-ज़ुख़रुफ़, रुकूअ़ 7, पारा: 25) (बहरुर्राइक़, बिहिश्ती गौहर)

आप सल्ल० मुख़्तसर-सा ख़ुत्बा देते और नमाज़ तवील करते, ज़िक्रे इलाही कस्रत से करते और जामे कलाम फ़रमाते और आप फ़रमाया करते- आदमी की तवील नमाज़ और मुख़्तसर ख़ुत्बा उसकी फ़क़ाहत (समझ) की अ़लामत है। (मुस्लिम, मिश्कात)

और आप अपने ख़ुत्बात में सहाबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम को

क़वाइदे इस्लाम[1] और शरीअत सिखाते। (ज़ादुल्मआद)

ख़ुत्बे में आप दुआ या ज़िक्रुल्लाह (अल्लाह के ज़िक्र) के मौक़े पर शहादत की उंगली से इशारा फ़रमाते। जब बारिश कम होती तो आप ख़ुत्बे में बारिश के लिये दुआ करते। (ज़ादुल्मआद)

जुमा के ख़ुत्बे में आप ताख़ीर[2] करते यहाँ तक कि लोग जमा हो जाते। जब सब जमा हो जाते तो आप तन्हा बग़ैर किसी तरह की इज़्हारे निख़्वत[3] के तशरीफ़ लाते, न आपके आगे-आगे कोई सदा[4] दे रहा होता और न पीछे कोई चलता। आप तैलसतान[5] ज़ेबेतन[6] किये होते। जब आप मस्जिद में तशरीफ़ लाते तो पेशक़दमी करके सहाबा को ख़ुद सलाम करते। जब मिम्बर पर चढ़ते तो लोगों की तरफ़ चेहरा कर लेते, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बैठ जाते और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अज़ान शुरू कर देते।

जब (हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अज़ान से फ़ारिग़ होते तो नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम खड़े हो जाते। अज़ान और ख़ुत्बे के दरमियान बग़ैर वक़्फ़ा और बग़ैर किसी और काम की तरफ़ मुतवज्जेह हुए ख़ुत्बा शुरू कर देते।

फिर ज़रा देर ख़ुत्बा देने के बाद कुछ देर के लिये बैठ जाते, फिर खड़े हो जाते और दोबारा ख़ुत्बा देते। (ज़ादुल्-मआ़द)

जब आप ख़ुत्बे से फ़ारिग़ हो जाते तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इक़ामत कहते और आप लोगों को क़रीब हो जाने और ख़ामोश रहने का हुक्म देते और फ़रमाते- "अगर एक आदमी अपने साथी से यह कहे कि "ख़ामोश हो जाओ" तो उसने भी लग़्व[7] (हरकत) की" (ज़ादुल्-मआ़द)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़मीन पर खड़े होकर या

1-इस्लाम के नियम व सिद्धांत, 2-देर, 3-बिना अभिमान व अहंकार प्रकट किये, 4-आवाज़ 5-ख़ुत्बे के समय कंधे पर डालने वाली विशेष प्रकार की चादर या रुमाल, 6-शरीर पर डालना, 7-व्यर्थ।

मिम्बर पर खड़े होकर ख़ुत्बा दिया है, जब तक मिम्बर न बना था तो आप किसी लाठी या कमान से हाथ को सहारा दे लेते थे और कभी-कभी उस लकड़ी के सुतून[1] से जो मिम्बर के पास था, जहाँ आप ख़ुत्बा पढ़ते थे, तकिया लगा लेते थे, मिम्बर बन जाने के बाद फिर किसी लाठी वग़ैरा से सहारा लेना मन्क़ूल[2] नहीं है। (ज़ादुल्मआद)

जब आप सल्ल० ख़ुत्बा फ़रमाते तो आपकी आँखें सुर्ख़ हो जातीं, आवाज़ बुलन्द हो जाती और जलाल[3] बढ़ जाता, जैसे कि कोई किसी लश्कर[4] से डरा रहा हो कि सुबह या शाम आने वाला ही है और फ़रमाते थे मुझे और क़ियामत को इस तरह भेजा गया और शहादत की उंगली और दरमियानी उंगली को ज़रा फ़र्क़ से दिखाते और फ़रमाते कि इसके बाद सबसे बेहतर कलाम अल्लाह की किताब (क़ुरआन मजीद) है और बेहतरीन तोहफ़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है, सबसे बदतरीन काम बिद्अत[5] है और हर बिद्अत गुमराही है।

आप जो भी ख़ुत्बा देते अल्लाह तआला की तारीफ़ से उसका आग़ाज़ फ़रमाते। (ज़ादुल्-मआद)

ख़ुत्बा-ए-जुमा

पहले अल्लाह तआला शानुहू की हम्दो-सना[6] पढ़ कर आप फ़रमाते-

أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللّٰهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ

وَشَرُّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ أَنَا أَوْلَى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ

مَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِأَهْلِهِ وَمَنْ تَرَكَ دَيْنًا أَوْضَيَاعًا فَعَلَيَّ۔

अम्मा बअ्‌दु फ़इन्न ख़ैरल्‌हदीसि किताबुल्लाहि व ख़ैरल् हद्‌यि, हद्‌यु मुहम्मदिन्

1-खम्भा, 2-धर्मशास्त्र, 3-प्रताप, 4-सेना, 5-दीन में नई बात पैदा करना, 6-प्रशंसा और स्तुति।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व शर्रुल् उमूरि मुह्दसातुहा व कुल्लु बिद्अतिन् ज़लालह अना अव्ला बिकुल्लि मुअ्मिनिम् मिन् नफ़्सिही मन् तरक मालन् फ़लिअह्लिही व मन् तरक दैनन् अव् ज़ियाअन् फ़अलैय।

अनुवाद: बहरहाल हम्द व सलात के बाद पस सब कलामों से बेहतर अल्लाह का कलाम है और सब तरीक़ों से अच्छा तरीक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है और सब चीज़ों से बुरी नयी बातें हैं, हर बिद्अत दोज़ख़ में है। मैं हर मोमिन का उसकी जान से भी ज़्यादा दोस्त हूँ, जो शख़्स कुछ माल छोड़े तो उसके अइज़्ज़ा[1] का है और अगर कुछ क़र्ज़ छोड़े या कुछ अहलो-इयाल[2] तो वे मेरे ज़िम्मे हैं।

(कभी यह ख़ुत्बा पढ़ते थे:-)

يَا اَيُّهَا النَّاسُ تُوْبُوْا قَبْلَ اَنْ تَمُوْتُوْا وَبَادِرُوْا بِالْاَعْمَالِ الصَّالِحَةِ قَبْلَ اَنْ تُشْغَلُوْا وَصِلُوا الَّذِىْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ رَبِّكُمْ بِكَثْرَةِ ذِكْرِكُمْ لَهٗ وَكَثْرَةِ الصَّدَقَةِ بِالسِّرِّ وَالْعَلَانِيَةِ تُؤْجَرُوْا وَتُحْمَدُوْا وَتُرْزَقُوْا وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْكُمُ الْجُمُعَةَ مَكْتُوْبَةً فِىْ مَقَامِىْ هٰذَا فِىْ شَهْرِىْ هٰذَا فِىْ عَامِىْ هٰذَآ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ وَّجَدَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا فَمَنْ تَرَكَهَا فِىْ حَيَاتِىْ اَوْ بَعْدِىْ جُحُوْدًا بِهَآ اَوِاسْتِخْفَافًا بِهَا وَلَهٗ اِمَامٌ جَائِرٌ اَوْ عَادِلٌ فَلَا جَمَعَ اللّٰهُ شَمْلَهٗ وَلَا بَارَكَ لَهٗ فِىْ اَمْرِهٖ آلَا وَلَا صَلَاةَ لَهٗ آلَا وَلَا صَوْمَ لَهٗ آلَا وَلَا زَكٰوةَ لَهٗ آلَا وَلَا حَجَّ لَهٗ آلَا وَلَا بِرَّ لَهٗ حَتّٰى يَتُوْبَ فَاِنْ تَابَ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِ آلَا وَلَا تَؤُمَّنَّ اِمْرَاَةٌ رَجُلًا آلَا وَلَا يَؤُمَّنَّ اَعْرَابِىٌّ مُهَاجِرًا آلَا وَلَا يَؤُمَّنَّ فَاجِرٌ مُؤْمِنًا اِلَّآ اَنْ يَّقْهَرَهٗ سُلْطَانٌ يَّخَافُ سَيْفَهٗ وَسَوْطَهٗ۔ ابن ماجه

1-रिश्तेदार, 2-परिवार।

वा अय्युहन्नासु तूबू क़ब्ल अन् तमूतू व बादिरू बिल् अअ्मालिस्-सालिहति क़ब्ल अन् तुश्गलू वसिलुल्लज़ी बैनकुम् व बैन रब्बिकुम् बिकस्रति ज़िक्रिकुम् लहू व कस्रतिस्-सदक़ति बिस्सिर्रि वल् अलानियति तुर्ज़क़ू व तुहमदू व तुर्ज़क़ू वअ्लमू अन्नल्लाह क़द फ़रज़ अलैकुमत् जुमुअत मक्तूबतन् फ़ी मक़ामी हाज़ा फ़ी शहरी हाज़ा फ़ी आमी हाज़ा इला यौमिल्क़ियामति मैंव् यजद इलैहि सबीलन फ़मन् तरकहा फ़ी हयाती अव् बअ्दी जुहूदम् बिहा अविस्तिख़्फ़ाफ़म् बिहा वलहू इमामुन् जाइरुन् अव् आदिलुन् फ़ला जमअल्लाहु शम्लहू वला बारक लहू फ़ी अम्रिही अला वला सलात लहू अला वला सौम लहू अला वला ज़कात लहू अला वला हज्ज लहू अला वला बिर्र लहू हत्ता यतूब फ़इन् ताब ताबल्लाहु अलैहि अला वला तउम्मन्न इम्राअतुन् रजुलन् अला वला यउम्मन्न अअ्राबिय्युम् मुहाजिरन् अला वला यउम्मन्न फ़ाजिरुम् मुअ्मिनम् इल्ला अँय्यक़्हरहू सुल्तानुँय्यख़ाफ़ु सैफ़हू व सौतहू। (इब्ने माजा)

अनुवाद: ऐ लोगो ! तौबा करो मौत आने से पहले और जल्दी करो नेक काम करने में और पूरा करो उस अहद को जो तुम्हारे और तुम्हारे परवरदिगार के दरमियान है। उसके ज़िक्र की कस्रत और सदक़ा देने से ज़ाहिर[1] व बातिन[2] में उसका सवाब पाओगे और अल्लाह के नज़्दीक तारीफ़ किये जाओगे और रिज़्क़ पाओगे और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे ऊपर जुमा की नमाज़ फ़र्ज़ की है। मेरे इस मक़ाम में इस शहर में इसी साल में क़ियामत तक बशर्ते इम्कान जो शख़्स इसको तर्क करे मेरी ज़िन्दगी में या मेरे बाद इसकी फ़र्ज़ियत का इन्कार करके या सहल इन्कारी से बशर्ते कि उसका कोई बादशाह हो ज़ालिम या आदिल[3] तो अल्लाह उसकी परेशानियों को न दूर करे न उसके किसी काम में बरकत दे। सुनो! न उसकी नमाज़ क़बूल होगी, न रोज़ा, न ज़कात, न हज, न कोई नेकी यहाँ तक कि तौबा करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा को क़बूल कर लेगा। सुनो! न इमामत करे कोई औरत किसी मर्द की, न कोई आराबी यानी जाहिल किसी

1-बाह्य, 2-आन्तरिक, 3-न्यायनिष्ठ.

मुहाजिर यानी आलिम की, न कोई फ़ासिक़[1] किसी सालेह[2] की, मगर यह कि कोई बादशाह जबरन ऐसा कराए जिसकी तलवार और कोड़े का ख़ौफ़ हो।

(और कभी यह ख़ुत्बा पढ़ते:-)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهٗ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ رَشَدَ وَاهْتَدٰى وَمَنْ يَّعْصِهِمَا فَاِنَّهٗ لَا يَضُرُّ اِلَّا نَفْسَهٗ وَلَا يَضُرُّ اللّٰهَ شَيْئًا۔ ابوداؤد شریف ، بہشتی گوہر

अल्हम्दु लिल्लाहि नहमदुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नऊज़ु बिल्लाहि मिन् शुरूरि अन्फुसिना व मिन् सय्यिआति अअ्मालिना मंय्यह्-दिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ल लहू व मंय्युज़्लिल्हू फ़ला हादिय लहू व अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू अर्सलहू बिल्हक़्क़ि बशीरंव् व नज़ीरम् बैन यदयिस्साअति मंय्युतिइल्लाह व रसूलहू फ़क़द् रशद वह्तदा व मंय्यअ्सिहिमा फ़इन्नहू ला यज़ुर्रु इल्ला नफ़्सहू वला यज़ुर्रुल्लाह शयुआ। (अबू दाऊद शरीफ़, बिहिश्ती गौहर)

अनुवाद: अल्लाह तआला का शुक्र है कि हम उसकी तारीफ़ करते हैं और उससे गुनाहों की बख़्शिश चाहते हैं और अपने नफ़्सों की शरारत और आमाल की बुराई से पनाह मांगते हैं। जिसको अल्लाह तआला हिदायत करे, उसको कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसको वह गुमराह करे उसको कोई हिदायत नहीं कर सकता और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बन्दे और पैग़म्बर हैं,

1-पापी, दुराचारी, 2-नेक, सदाचारी।

उनको अल्लाह ने सच्ची बातों की बशारत[1] और उनसे डराने के लिये क़ियामत के क़रीब भेजा है, जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की ताबेदारी[2] करेगा वह हिदायत पाएगा और जो नाफ़रमानी करेगा वह अपना ही नुक़सान करेगा, अल्लाह का कुछ नुक़सान नहीं।

ख़ुत्बा-ए-जुमा के मसाइल[3]

ख़ुत्बा-ए-जुमा में बारह चीज़ें मस्नून[4] हैं:-

1- ख़ुत्बा पढ़ने की हालत में ख़ुत्बा पढ़ने वाले को खड़ा रहना।

2- दो ख़ुत्बे पढ़ना।

3- दोनों ख़ुत्बों के दरमियान इतनी देर तक बैठे रहना कि तीन मर्तबा सुब्हानल्लाह कह सकें।

4- हर तरह की नापाकी से पाक होना।

5- ख़ुत्बा पढ़ने की हालत में मुँह लोगों की तरफ़ रखना।

6- ख़ुत्बा शुरू करने से पहले अपने दिल में *"अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम"* कहना।

7- ख़ुत्बा ऐसी आवाज़ से पढ़ना कि लोग सुन सकें।

8- ख़ुत्बे में इन आठ क़िस्म के मज़ामीन का होना :

क- अल्लाह का शुक्र और उसकी तारीफ़

ख- ख़ुदावन्दे आलम की वहदत[5]

ग- नबी अलैहिस्सलाम की रिसालत की शहादत

1-ख़ुशख़बरी, 2-आज्ञा पालन, 3-विशेषताएँ, 4-सुन्नत 5-एकता।

घ- नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद

ङ- वाज़ो-नसीहत

च- क़ुरआन मजीद की आयतों या किसी सूरत का पढ़ना

छ- दूसरे ख़ुत्बे में फिर इन चीज़ों का इआ़दा करना[1]

ज- दूसरे ख़ुत्बे में बजाये वाज़ो-नसीहत के मुसलमानों के लिये दुआ़ करना।

9- ख़ुत्बे को ज़्यादा तूल न देना बल्कि नमाज़ से कम रखना।

10- ख़ुत्बा मिम्बर पर पढ़ना अगर मिम्बर न हो तो किसी लाठी वग़ैरा पर सहारा देकर खड़ा होना। (और मिम्बर के होते हुए भी किसी लाठी वग़ैरा पर हाथ रखकर खड़ा होना और हाथ का हाथ पर रख लेना जैसा कि बाज़ लोगों की हमारे ज़माने में आ़दत है, मन्क़ूल नहीं।)

11- दोनों ख़ुत्बों का अ़रबी ज़बान में होना और किसी दूसरी ज़बान में ख़ुत्बा पढ़ना या उसके साथ और किसी ज़बान के अश्आ़र वग़ैरा मिला देना जैसा कि हमारे ज़माने में बाज़ अ़वाम का दस्तूर है, यह ख़िलाफ़े सुन्नत और मक्रूहे तहरीमी[2] है।

12- दूसरे ख़ुत्बे में नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आल व अस्हाबे किराम और अज़्वाजे मुतह्हरात, ख़ुसूसन ख़ुलफ़ाए राशिदीन और हज़रत हम्ज़ह व हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के लिये दुआ़ करना मुस्तहब है। (बिहिश्ती गौहर)

1-पुनरावृत्ति, लौटाना, 2-इस्लाम मज़हब के अनुसार ऐसा खाद्य पदार्थ या कार्य जो हराम के लगभग पहुँच गया हो।

मस्जिद व मुतअ़ल्लिक़ाते मस्जिद

सुनने हुदा

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया- ऐ मुसलमानो! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के लिये "सुनने हुदा" मुक़र्रर फ़रमाई हैं (यानी ऐसे आमाल का हुक्म दिया है जो अल्लाह तआ़ला के मक़ामे क़ुर्ब[1] व रज़ा[2] तक पहुँचाने वाले हैं) और यह पाँचों नमाज़ें जमाअ़त से मस्जिद में अदा करना उन्हीं सुनने हुदा में से है और अगर तुम अपने घरों में नमाज़ पढ़ने लगो जैसा कि यह एक, जमाअ़त से अलग अपने घर में नमाज़ पढ़ता है (यानी उस ज़माने के किसी ख़ास शख़्स की तरफ़ इशारा था) तो तुम अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा छोड़ दोगे और जब तुम अपने पैग़म्बर (नबी) का तरीक़ा छोड़ दोगे तो तुम यक़ीन जानो कि तुम राहे हिदायत से हट जाओगे और गुमराही के ग़ार[3] में जा गिरोगे।

(सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

मस्जिद की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक यहूदी आ़लिम ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा- फ़रमाइये, सबसे बेहतर जगह कौन सी है? आप यह कहकर ख़ामोश हो रहे कि मैं ज़रा जिब्रील अ़लैहिस्सलाम के आने तक ख़ामोश रहता हूँ। उसके बाद जिब्रील अ़लैहिस्सलाम आ गए। आप सल्ल० ने उनसे यह सवाल किया- उन्होंने अ़र्ज़ किया कि जिससे आप पूछ रहे हैं उसको भी साइल[4] से ज़्यादा इसका इल्म नहीं, लेकिन देखिये मैं परवरदिगार से जाकर पूछता हूँ। उसके बाद उन्होंने अ़र्ज़ किया- ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! आज मुझे अल्लाह

1-निकट स्थान, 2-प्रसन्नता, 3-गर्त, 4-प्रश्नकर्ता।

तआला से इतना कुर्ब नसीब हुआ कि इससे क़ब्ल[1] कभी नसीब नहीं हुआ था। आप सल्ल० ने पूछा– ऐ जिब्रील! आख़िर कितना कुर्ब नसीब हो गया? अ़र्ज़ किया कि मेरे और उसके दरमियान नूर के सत्तर हज़ार हिजाब[2] क़ाइम थे (इन हिजाबात के अन्दर से इर्शाद फ़रमाया) सबसे बद्तर मक़ामात बाज़ार हैं और सबसे बेहतर मस्जिदें हैं। (इब्ने हिब्बान, तर्जुमानुस्सुन्ना)

शानदार मसाजिद

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से हुक्म नहीं दिया गया है मस्जिदों को बुलन्द और शान्दार बनाने का। यह हदीस बयान फ़रमाने के बाद हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने (बतौर पेशगोई[3]) फ़रमाया:–

यक़ीनन् तुम लोग अपनी मस्जिदों की आराइश[4] व ज़ेबाइश[5] इस तरह करने लगोगे जिस तरह यहूद व नसारा ने अपनी इबादत-गाहों में की है।

(सुनने अबी दाऊद)

सुनने इब्ने माजा में हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ही की एक रिवायत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया गया है:–

اَرَاكُمْ سَتُشَرِّفُوْنَ مَسَاجِدَكُمْ بَعْدِىْ كَمَا شَرَّفَتِ الْيَهُوْدُ كَنَائِسَهُمْ وَكَمَا شَرَّفَتِ النَّصَارٰى بِيَعَهَا۔ كنزل العمال بحواله ابن ماجه، معارف الحديث

अराकुम् सतुशर्रिफ़ून मसाजिदकुम् बअ़्दी कमा शर्रफ़तिल् यहूदु कनायिसहुम् व कमा शर्रफ़तिन्नसारा बियअ़हा।

(मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग भी एक वक़्त, जब मैं तुम में न हूँगा,

---

1-पूर्व, 2-पर्दा, 3-आगे की बात बताना, 4-सजावट, 5-श्रृंगार।

अपनी मस्जिदों को इसी तरह शानदार बनाओगे जिस तरह यहूद ने अपने कनीसे[1] बनाए हैं और नसारा ने अपने गिरजे।

(कन्ज़ुल् उम्माल, बहवाला इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

आदाबे मस्जिद

मस्जिद बनाना

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जो शख़्स कोई मस्जिद बनाये, जिससे मक़्सूद[2] अल्लाह तआला शानुहू को ख़ुश करना हो (और कोई ग़रज़ न हो) तो अल्लाह तआला उसके लिये उसी के मिसल[3] (उसका) घर जन्नत में बना देगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

फ़ाइदा- इस हदीस से निय्यत की दुरुस्ती की ताकीद भी मालूम हुई और अगर नयी मस्जिद न बनावे बल्कि बनी हुई मस्जिद की मरम्मत कर दे तो इसका सवाब भी इसमें मालूम हुआ, क्योंकि हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मस्जिदे नबवी की मरम्मत करके यह हदीस बयान की थी और दूसरी हदीसों से भी सुबूत मिलता है। (हयातुल्मुस्लिमीन)

मस्जिद में सफ़ाई

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जिसने मस्जिद में से ऐसी चीज़ बाहर कर दी, जिससे तकलीफ़ होती थी (जैसे कूड़ा-कर्कट, फ़र्श पर कंकड़-पत्थर) अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में एक घर बना देगा।

(इब्ने माजा, हयातुल्मुस्लिमीन)

1-यहूदियों के उपासना गृह, 2-उद्देश्य, 3-समान।

मस्जिद जाने का सवाब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स जमाअ़त के लिये मस्जिद की तरफ़ चले तो उसका एक क़दम एक गुनाह को मिटाता है और एक क़दम उसके लिये नेकी लिखता है, जाते में भी और लौटते में भी। (अहमद व तबरानी व इब्ने हिब्बान, हयातुल्मुस्लिमीन)

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है और वह नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स रात के अंधेरे में मस्जिद की तरफ़ चले, अल्लाह तआ़ला से क़ियामत के रोज़ नूर के साथ मिलेगा।

(तबरानी, सुनने अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, हयातुल्मुस्लिमीन)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी की नमाज़ अपने घर में एक ही नमाज़ के बराबर है और क़बीला या मोहल्ले की मस्जिद में पच्चीस नमाज़ों के बराबर और उस मस्जिद में जहाँ जुमा की नमाज़ होती है, सौ नमाज़ों के बराबर और मेरी मस्जिद में पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर और मस्जिदे हराम में एक लाख नमाज़ों के बराबर है।

(इब्ने माजा, मिश्कात शरीफ़)

मस्जिद में छोटे बच्चों को लाने और शोर व शग़ब[1] की मुमानअ़त[2]

वासिला इब्नुल असक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तुम अपनी मस्जिदों से दूर और अलग रखो अपने छोटे बच्चों को और दीवानों को (उनको मस्जिदों

1-कोलाहल, 2-निषेध।

में न आने दो) और इसी तरह मस्जिदों से अलग और दूर रखो अपनी ख़रीदो-फ़रोख़्त[1] को और अपने बाहमी झगड़ों और क़िस्सों को और अपने शोरो-शग़ब[2] को और हदों के क़ाइम करने को और तलवारों को नियाम[3] से निकालने को (यानी इनमें से कोई बात भी मस्जिद की हुदूद में न हो) ये सब बातें मस्जिद के तक़द्दुस[4] और एहतिराम के ख़िलाफ़ हैं।

(सुनन इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

मस्जिद में क़दम रखने का अदब

जब मस्जिद में दाख़िल हों तो बाहर पहले बायाँ पाँव जूते से निकालें, फिर दाहिना पाँव और मस्जिद में पहले दाहिना क़दम रखें फिर बायाँ क़दम, इसी तरह मस्जिद से निकलते वक़्त पहले बायाँ क़दम बाहर निकालें फिर दाहिना क़दम फिर जूता पहनने में पहले दाहिने पाँव में पहनें फिर बाएँ पाँव में। (बिहिश्ती गौहर)

नमाज़े फ़ज्र के लिये जाते वक़्त की दुआ

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को उन्होंने देखा कि नमाज़े फ़ज्र के लिये मस्जिद जाते वक़्त यह दुआ़ पढ़ रहे थे:-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّعَنْ يَمِيْنِيْ نُوْرًا وَّعَنْ شِمَالِيْ نُوْرًا وَّخَلْفِيْ نُوْرًا وَّمِنْ اَمَامِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ لِّيْ نُوْرًا وَّفِيْ عَصَبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ لَحْمِيْ نُوْرًا وَّفِيْ دَمِيْ نُوْرًا وَّفِيْ شَعْرِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَشَرِيْ نُوْرًا وَّفِيْ لِسَانِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِيْ نَفْسِيْ نُوْرًا وَّاَعْظِمْ لِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْنِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ فَوْقِيْ نُوْرًا وَّمِنْ تَحْتِيْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ نُوْرًا۔

1-क्रय-विक्रय, 2-बहुत अधिक कोलाहल, 3-मयान, 4-पवित्रता।

अल्लाहुम्मज्अ़ल फ़ी क़ल्बी नूरंव् व फ़ी बसरी नूरंव् व फ़ी सम्ई नूरंव् व अंय् यमीनी नूरंव् व अन् शिमाली नूरंव् व खल्फ़ी नूरंव् व मिन् अमामी नूरंव् वज्अ़ल्ली नूरंव् व फ़ी अ़सबी नूरंव् व फ़ी लह्मी नूरंव् व फ़ी दमी नूरंव् व फ़ी शअ़्री नूरंव् व फ़ी बशरी नूरंव् व फ़ी लिसानी नूरंव् वज्अ़ल फ़ी नफ़्सी नूरंव् व अअ़्ज़िम्ली नूरंव् वज्अ़ल्नी नूरंव् वज्अ़ल मिन् फ़ौक़ी नूरंव् व मिन् तह्ती नूरन् अल्लाहुम्म अअ़्तिनी नूरा।

अनुवादः ऐ अल्लाह! कर दीजिए मेरे दिल में नूर और मेरी बीनाई[1] में नूर और मेरी समाअ़त[2] में नूर और मेरे दाहिने नूर और मेरे बायें नूर और मेरे पीछे नूर और मेरे आगे नूर और कर दीजिए मेरे लिये एक ख़ास नूर और मेरे पटठों में नूर और मेरे गोश्त में नूर और मेरे ख़ून में नूर और मेरे बाल में नूर और मेरी खाल में नूर और मेरी ज़बान में नूर और मेरी जान में नूर और बढ़ा दीजिए मुझको नूर और कर दीजिए मुझको सरापा[3] नूर और कर दीजिए मेरे ऊपर नूर और मेरे नीचे नूर और या अल्लाह! दीजिए मुझको ख़ास नूर। (बुख़ारी व मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

मस्जिद में दाख़िल होने और बाहर आने की दुआ़

अबू उसैद साइदी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जब तुम में से कोई मस्जिद में दाख़िल होने लगे तो चाहिए कि अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करे:-

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ۔ مشکوٰۃ

अल्लाहुम्मफ़्तह्ली अब्वाब रह्मतिक। (मिश्कात)

अनुवादः ऐ अल्लाह तआ़ला! मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे। बाज़ रिवायात में यह ज़्यादा है:-

---

1-दृष्टि, 2-सुनने की शक्ति, 3-सर से लेकर पैर तक।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ۔ ابن ماجه

अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली ज़ुनूबी (इब्ने माजा)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को मुआफ़ कर दे।

मस्जिद में दाख़िल होने के बाद यह दुआ पढ़े:-

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔ الترغيب

अऊज़ु बिल्लाहिल्-अज़ीमि व बिवज्हिहिल् करीमि व सुल्तानिहिल्-क़दीमि मिनश्शैतानिर्रजीम। (अत्तरग़ीब)

और जब मस्जिद से बाहर जाने लगे तो यह दुआ करे:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन् फ़ज़्लिक।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे फ़ज़्ल[1] का सवाल करता हूँ तू मेरे लिये इसका फ़ैसला फ़रमा दे। (सहीह मुस्लिम, मआरिफुल् हदीस)

नमाज़े तहिय्यतुल् वुज़ू

हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स कामिल तरीक़े[2] से वुज़ू करने के बाद दो रकअत नफ़्ल इस तरह पढ़े कि ख़ुद से ख़यालात न लाए तो उसके तमाम गुनाहों (सग़ीरा यानी छोटे) की मग़्फ़िरत[3] हो जाती है। (तिर्मिज़ी)

वुज़ू के बाद इन दो नफ़्लों को तहिय्यतुल् वुज़ू कहते हैं अलावा औक़ाते मक्रूहा[4] के जब भी वुज़ू करें, यह दो रकअत नफ़्ल पढ़ लिया करें।

1-कृपा, 2-सम्पूर्ण विधि, 3-मुक्ति, 4-नापसन्दीदा, जिसको मना किया गया है ऐसा समय।

नमाज़े तहिय्यतुल् मस्जिद

यह नमाज़ उस शख़्स के लिये सुन्नत है, जो मस्जिद में दाख़िल हो। इस नमाज़ से मस्जिद की ताज़ीम[1] मक़्सूद है, दो रकअ़त नमाज़ पढ़े बशर्ते कि मकरूह वक़्त न हो यानी ज़ुहर, अ़स्र और इशा में पढ़े।

(बुख़ारी, मुअत्ता इमामे मालिक, दुर्रे मुख़्तार, बिहिश्ती गौहर)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम में से कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो बैठने से पहले दो रकअ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़े।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

अगर मकरूह वक़्त हो तो सिर्फ़ चार मर्तबा यह कलिमात कह लिये जायें:-

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

"सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर"

और इसके बाद कोई दुरूद शरीफ़ पढ़ ले। (बिहिश्ती गौहर)

मस्जिद में तस्बीहात पढ़ना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जब तुम बिहिश्त[2] के बाग़ों में जाओ तो वहाँ मेवे खाओ। आप से पूछा गया- या रसूलल्लाह! जन्नत के बाग़ क्या हैं? आपने फ़रमाया- मस्जिदें। पूछा गया या रसूलल्लाह! इनका मेवा क्या है? फ़रमाया:-

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

"सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर"

(तिर्मिज़ी, मिश्कात)

1-सम्मान, 2-जन्नत।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब मस्जिद में दाख़िल होते तो यह दुआ़ मांगते:–

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ بِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ-

अऊ़ज़ु बिल्लाहिल्-अ़ज़ीमि व बिवज्हिहिल्-करीमि व सुल्तानिहिल्-क़दीमि मिनश्शैतानिर्रजीम।

अनुवाद मैं पनाह मांगता हूँ शैताने मर्दूद[1] से उस अल्लाह की जो अ़ज़ीम है और उसकी ज़ाते करीम की और उसकी अज़्ली सल्तनत[2] की।

(अबू दाऊद, मिश्कात)

मस्जिद से बिला उ़ज़्र[3] बाहर जाना

हज़रत उसमान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया– जो शख़्स मस्जिद में हो और अज़ान हो जाए और वह उसके बाद भी बिला किसी ख़ास ज़रूरत के मस्जिद से बाहर चला जाए और नमाज़ में शिर्कत के लिये वापसी का इरादा भी न रखता हो तो वह मुनाफ़िक़[4] है। (इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल्हदीस)

बदबूदार चीज़ खाकर मस्जिद में आने की मुमानअ़त

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस बदबूदार दरख़्त (प्याज़ या लहेसन) से खाए वह हमारी मस्जिद में न आए, क्योंकि जिस चीज़ से आदमियों को तक्लीफ़ होती है, उससे फ़िरिश्तों को भी तक्लीफ़ होती है।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-तिरस्कृत, 2-अनादि कालिक साम्राज्य, 3-अकारण, 4-वह व्यक्ति जो ऊपर से दिखावे के लिए मुसलमान हो और अन्दर से मुसलमान न हो।

अज़ान व इक़ामत[1]

अज़ान का तरीक़ा

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मुअज़्ज़िन[2] बिलाल (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से फ़रमाया- कि जब तुम अज़ान दो तो आहिस्ता-आहिस्ता और ठहर-ठहर कर दिया करो (यानी हर कलिमे पर साँस तोड़ दो, और वक़्फ़ा[3] किया करो) और जब इक़ामत कहा करो तो रवाँ[4] कहा करो और अपनी अज़ान व इक़ामत के दरमियान इतना फ़ासला किया करो कि जो शख़्स खाने-पीने में मश्ग़ूल[5] है वह फ़ारिग़ हो जाए और जिसको इस्तिन्जा[6] का तक़ाज़ा[7] है वह जाकर अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़[8] हो ले और खड़े न हुआ करो जब तक मुझे न देख लो। (जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत सअद करज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो मस्जिदे क़ुबा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़र्रर किये हुए मुअज़्ज़िन थे, उनसे रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिलाल (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को हुक्म दिया कि अज़ान देते वक़्त अपनी दोनों उंगलियाँ कानों में दे लिया करें। आपने उनसे फ़रमाया कि ऐसा करने से तुम्हारी आवाज़ ज़्यादा बुलन्द हो जाएगी।

(मआरिफ़ुल् हदीस, सुनने इब्ने माजा)

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने बिलाल (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को देखा कि अब्तह (घाटी) की तरफ़ से निकले और अज़ान दी, फिर जब वह

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

"हय्या अलस्सलाह और हय्या अलल्-फ़लाह पर पहुँचे तो अपनी गर्दन

1-नमाज़ के लिए तक्बीर जो जमाअत खड़ी होने के वक़्त होती है, 2-अज़ान देने वाला, 3-अन्तराल, 4-प्रवाह रूप में, 5-व्यस्त, 6-शौच, 7-आवश्यकता, 8-मुक्त।

को दायीं और बायीं तरफ़ मोड़ा और सीने को घुमाया नहीं।"

(सहीह बुख़ारी, मआरिफ़ुल् हदीस)

अज़ान और इक़ामत का हक़

हज़रत ज़ियाद बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे हुक्म दिया कि तुम अज़ान कहो। मैंने अज़ान कही, उसके बाद जब इक़ामत कहने का वक़्त आया तो बिलाल (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने इरादा किया कि इक़ामत वह कहें तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो अज़ान कहे वही इक़ामत कहे।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

अज़ान का जवाब और दुआ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– जब मुअज़्ज़िन कहे *'अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर'* اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

(उसके जवाब में) तुम में से कोई कहे अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर। फिर मुअज़्ज़िन कहे:– اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

"अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह" तो वह जवाब देने वाला भी (उसके जवाब में) कहे:–

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

"अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह" फिर मुअज़्ज़िन कहे:–

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

"अश्हदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह" तो जवाब देने वाला भी (उसके जवाब में) कहे:-

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

"अश्हदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह" फिर मुअज़्ज़िन कहे:-

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ

"हय्य अलस्सलाह" तो जवाब देने वाला कहे:-

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

"ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह" फिर मुअज़्ज़िन कहे:-

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

"हय्य अलल्फ़लाह" तो जवाब देने वाला कहे:-

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

"ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह" फिर मुअज़्ज़िन कहे:-

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

"अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर" जवाब देने वाला भी यही कहे।

फिर मुअज़्ज़िन कहे:-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

"ला इलाह इल्लल्लाह" तो जवाब देने वाला भी कहे:-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

"ला इलाह इल्लल्लाह" और यह कहना दिल से हो तो वह जन्नत में जाएगा। (सहीह मुस्लिम)

बाक़ी मुअज़्ज़िन के अल्फ़ाज़ को दोहराना चाहिए, लेकिन सिर्फ़ -

حَيَّ عَلَى الصَّلاة   حَيَّ عَلَى الفَلاح

''हय्य अलस्सलाह'' और *''हय्य अलल्फ़लाह''* कहे तो उसके जवाब में:-

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

''ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह'' कहा जाए और फ़ज्र की अज़ान में:-

الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِنَ النَّوْمِ

''अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम'' के जवाब में:-

صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ

''सदक़्त व बररत'' कहा जाए।

इन मवाक़े[1] पर मुअज़्ज़िन के अल्फ़ाज़ न दोहराये जायें बल्कि उनकी जगह मज़्कूरा बाला[2] अल्फ़ाज़ कहे जायें, दोनों को जमा करने के लिये कोई रिवायत नहीं है और न महज़

حَيَّ عَلَى الصَّلاة   حَيَّ عَلَى الفَلاح

''हय्य अलल्फ़लाह'' और *''हय्य अलस्सलाह''* कहना कहीं मर्वी[3] है और बल्कि सुन्नत यह है कि इस मौक़े पर सिर्फ़:-

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

''लाहौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह'' कहा जाए। (ज़ादुलमआद)

इक़ामत में भी मज़्कूरा बाला तरीक़े पर वही अल्फ़ाज़ दोहराये जायें और *क़द्क़ामतिस्सलाह* के जवाब में:-

1- मवाक़े, 2- उपर्युक्त, 3- उद्धृत।

اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا *"अक़ामहल्लाहु व अदामहा"* कहा जाए।

अज़ान ख़त्म होने पर दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर इसके ज़ैल[1] मस्नून दुआ पढ़े, फिर उसके बाद अपने लिये दुआ करे और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल का तलबगार हो, उसकी दुआ क़बूल होगी। (ज़ादुलमआद)

अज़ान के बाद की दुआ

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– जो कोई बन्दा अज़ान ख़त्म होने पर अल्लाह तआला से यूँ दुआ करे–

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَ نِالْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ

وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا نِالَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ۔ بخاری

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद् दअ्‌वतित्ताम्मति वस्सलातिल् क़ाइमति आति मुहम्मदनिल् वसीलत वल्फ़ज़ीलत वब्असहु मक़ामम्महमूद निल्लज़ी व अत्तहू इन्नक ला तुख़्लिफ़ुल् मीआद। (बुख़ारी)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! इस दावते ताम्मा[2] कामिला और इस सलाते (नमाज़) क़ाइमा दाइमा के रब! यानी ऐ वह अल्लाह! जिसके लिये और जिसके हुक्म से यह अज़ान और यह नमाज़ है (अपने रसूले पाक) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वसीला और फ़ज़ीला[3] का ख़ास दर्जा अता फ़रमा (दे) और उनको उस मक़ामे महमूद[4] पर सर्फ़राज़ फ़रमा, जिसका तूने उन (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये वादा फ़रमाया। बेशक आप वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करते।

तो वह बन्दा क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत[5] का हक़दार होगा।

(मआरिफ़ुल् हदीस, सहीह बुख़ारी)

1-निम्नलिखित, 2-सम्पूर्ण, 3-महानता, प्रतिष्ठा, 4-श्रेष्ठ स्थान, 5-सिफ़ारिश,

और फ़रमाया कि अल्लाह तआला से दीन व दुनिया की फ़लाह[1] मांगो:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَفِیْ اَهْلِیْ وَمَالِیْ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक रिज़ाक वल्-अफ़्व वल्-आफ़ियत फ़िद्दुन्या वल् आख़िरति व फ़ी अह्ली व माली। (ज़ादुलमआद)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मैं आपसे आपकी ख़ुशनूदी[2] और दर्गुज़र[3] करना मांगता हूँ और दुनिया व आख़िरत में और माल में और घर-बार में आफ़ियत[4] (मांगता हूँ)

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनने के वक़्त (यानी जब वह अज़ान कहकर फ़ारिग़ हो जाए) कहे:-

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا۔

अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू रज़ीतु बिल्लाहि रब्बंव् व बिमुहम्मदिर् रसूलंव् व बिल् इस्लामि दीना।

तो उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

(सहीह मुस्लिम, शरीफ़, मआरिफ़ुल् हदीस)

अनुवाद: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद[5] नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। मैं अल्लाह तआला को रब मानने पर और इस्लाम को दीन मानने पर और मुहम्मद

1-भलाई, निजात, 2-प्रसन्नता, 3-क्षमा, 4-सुकून, चैन 5- उपास्य।

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नबी मानने पर राज़ी हूँ।

सफ़र में अज़ान व इक़ामत व इमामत

मालिक बिन अल्-हुवैरिस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मेरे चचाज़ाद भाई भी साथ थे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम सफ़र करो तो नमाज़ के लिये अज़ान और इक़ामत कहो और तुम में जो बड़ा हो वह इमामत करे और नमाज़ पढ़ाए।

(सहीह बुख़ारी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

अज़ान के मुतअ़ल्लिक़ मसाइल[1]

1- मुअज़्ज़िन को बुलन्द आवाज़ होना चाहिए।

2- अज़ान मस्जिद से बाहर (अ़लाहिदा) किसी ऊँचे मक़ाम पर कहना चाहिए।

3- इक़ामत मस्जिद के अन्दर होना चाहिए।

4- मस्जिद के अन्दर अज़ान कहना मकरूहे तन्ज़ीही[2] है (अल्बत्ता जुमा की दूसरी अज़ान मस्जिद के अन्दर मिम्बर के सामने कहना जाइज़ है।)

5- अज़ान कहते वक़्त कानों के सुराख़ों को उंगलियों से बन्द करना मुस्तहब[3] है।

6- अज़ान के अल्फ़ाज़ ठहर-ठहर कर अदा करना चाहिए और इक़ामत को जल्दी-जल्दी अदा करना सुन्नत है।

7- अज़ान और इक़ामत क़िब्ला-रु कहना सुन्नत है।

1- कर्तव्य सम्बन्धी आदेश, 2- जिन कार्यों का करना निषिद्ध नहीं है परन्तु उनका न करना ही उत्तम है, 3- जिन कार्यों का करना सवाब (पुण्य) है परन्तु उनका न करना गुनाह (पाप) नहीं है।

8- अज़ान में "हय्य अलस्सलाह" और "हय्य अलल्फ़लाह" कहते वक़्त दायें और बायें तरफ़ मुँह फेरना सुन्नत है ख़्वाह वह अज़ान नमाज़ की हो या और किसी चीज़ की (मसलन नवमौलूद[1] के कान में अज़ान कहना) लेकिन सीना और क़दम क़िब्ले से न फिरने पायें।

9- अज़ान के अल्फ़ाज़ तर्तीब वार कहना ज़रूरी है।

10- अगर कोई शख़्स अज़ान का जवाब देना भूल जाए या क़स्दन[2] जवाब न दे और अज़ान ख़त्म होने के बाद ख़्याल आवे या जवाब देने का इरादा करे तो ऐसी सूरत में अगर ज़्यादा वक़्त न गुज़रा हो तो जवाब दे दे वर्ना नहीं।

11- जो शख़्स अज़ान दे इक़ामत भी उसी का हक़ है।

(बिहिश्ती गौहर)

1-नवजात शिशु, 2-जान-बूझ कर।

जमाअत

कफ़्फ़ारात[1] व दरजात

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- मैंने अपने परवरदिगार बुज़ुर्ग व बरतर को निहायत ही उम्दा सूरत (ख़्वाब) में देखा। अल्लाह तआला ने दरयाफ़्त फ़रमाया- कि यह मुक़र्रब[2] फ़िरिश्ते किस बारे में झगड़ रहे हैं। मैंने अ़र्ज़ किया आपको ख़ूब मालूम है, फिर बयान फ़रमाया और अपना हाथ मेरे दोनों शानों[3] के दरमियान (सीने पर) रखा तो उसकी ठंडक (यानी राहत) मैंने अपने सीने पर महसूस की। पस ज़मीन व आसमान की तमाम अशिया[4] का (उस फ़ैज़ की वजह से) मुझको इल्म हो गया। फिर अल्लाह तआला ने फ़रमाया- ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अब तुमको मालूम हुआ कि मुक़र्रब फ़िरिश्ते किस बात पर बहस कर रहे हैं। मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ, कफ़्फ़ारात के बारे में और वह कफ़्फ़ारात यह हैं- नमाज़ के बाद मस्जिदों में ठहरना और जमाअ़तों की नमाज़ के लिये जाना और मुश्किल वक़्तों में (मसलन् सर्दी के वक़्त) कामिल[5] वुज़ू करना, पस जिसने ऐसा किया उसकी ज़िन्दगी भी अच्छी हुई और मौत भी अच्छी हुई और गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो गया जैसा वह उस रोज़ गुनाहों से पाक व साफ़ था जिस दिन उसकी माँ ने उसको जना था और अल्लाह तआला ने फ़रमाया- ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब तुम नमाज़ चुका करो तो यह दुआ पढ़ लिया करो:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَالُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنِ فَاِذَا

اَرَدْتَّ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً فَاقْبِضْنِیْ اِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ۔

अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक फ़िअ़लल्-ख़ैराति व तर्कल् मुन्कराति व हुब्बल्

1- गुनाहों से पाक होने के लिये जो कुछ किया जाता है, प्रायश्चित्त, 2- समीपवर्ती, अधिक निकटता, 3- कंधों, 4- वस्तुएँ, 5- सम्पूर्ण।

मसाकीनि फ़इज़ा अरत्त बिइबादिक फ़ित्नतन् फ़क़्बिज़्नी इलैक ग़ैर मफ़्तून।

अनुवादः ऐ अल्लाह! मैं आपसे मांगता हूँ भलाई के काम और बुराईयों से परहेज़ और मिस्कीनों[1] की महब्बत। पस जब आप अपने बन्दों को किसी फ़ित्ने में मुब्तला[2] करने का इरादा फ़रमायें तो आप मुझे उस हालत में अपनी तरफ़ उठा लीजिए कि मैं फ़ित्ने में मुब्तला न हुआ हूँ।

और फ़रमाया दरजात में तरक़्क़ी का बाइस[3] यह चीज़ें हैं- ख़ूब बाहम (आपस में) सलाम करना, खाना खिलाना और शब को नमाज़ पढ़ना, जब्कि लोग सोते हैं। (मिश्कात)

जमाअत की अहमियत[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स नमाज़ बाजमाअ़त के लिये मुअज़्ज़िन की पुकार सुने और उसकी ताबेदारी करने से (यानी जमाअ़त में शरीक होने से) कोई वाक़ई[5] उज़्र उस के लिये माने[6] न हो इसके बावजूद वह जमाअ़त में न आए (बल्कि अलग ही अपनी नमाज़ पढ़ ले) तो उसकी यह नमाज़ अल्लाह तआ़ला के यहाँ क़बूल नहीं होगी।

बाज़ सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाक़ई उज़्र क्या हो सकता है? आपने फ़रमाया- जान व माल का ख़ौफ़ या मरज़। (सुनने अबी दाऊद, सुनने दारे क़ुतनी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

जमाअ़त की निय्यत पर सवाब

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जिस शख़्स ने वुज़ू किया और अच्छी तरह (यानी पूरे आदाब के साथ वुज़ू किया फिर वह

1-फ़क़ीरों, 2-ग्रस्त, 3-कारण, 4-महत्व, 5-यथार्थता, 6-निवारक।

जमाअ़त के इरादे से मस्जिद की तरफ़ गया, वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि लोग जमाअ़त से नमाज़ पढ़ चुके और जमाअ़त हो चुकी तो अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को भी उन लोगों के बराबर सवाब देगा जो जमाअ़त में शरीक हुए और जमाअ़त से नमाज़ पढ़ी और यह चीज़ उन लोगों के अज्र व सवाब में कमी का बाइस[1] न होगी। (सुनने अबी दाऊद, नसाई, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सफ़े अव्वल (पहली सफ़ (पंक्ति)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- लोगो! पहले अगली सफ़[2] पूरी किया करो फिर उसके क़रीब वाली ताकि जो कमी व कसर रहे वह आख़िरी ही सफ़ में रहे। (सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

नमाज़ बाजमाअ़त की फ़ज़ीलत व बरकत

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाय- बाजमाअ़त नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने के मुक़ाबले में सत्ताइस दरजा ज़्यादा फ़ज़ीलत[3] रखता है। (सहीह़ बुख़ारी व सहीह़ मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् ह़दीस)

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तन्हा नमाज़ पढ़ने से एक आदमी के साथ नमाज़ पढ़ना बेहतर है और दो आदमियों के साथ और भी बेहतर है और जिस क़द्र ज़्यादा जमाअ़त हो उसी क़द्र अल्लाह तआ़ला को पसन्द है। (अबू दाऊद, बिहिश्ती गौहर)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुद्दते निशात[4] तक नफ़्ल नमाज़ पढ़ो और जब सुस्त पड़ जाओ तो बैठ जाओ।

(मिश्कात)

1-कारण, 2-पंक्ति, 3-प्रतिष्ठा, 4-ख़ुशी की अवधि।

तक्बीरे ऊला (तक्बीरे तह्रीमा)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- कि जो शख़्स चालीस दिन तक हर नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़े, इस तरह कि उसकी तक्बीरे ऊला भी फ़ौत[1] न हो तो उसके लिये दो बराअतें[2] (नजात) लिख दी जाती हैं- एक आतिशे दोज़ख़[3] से बराअत और दूसरे निफ़ाक़[4] से बराअत। (जामे तिर्मिज़ी)

जमाअ़त से उज़्र (जमाअ़त से विवशता)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि उन्होंने एक रात में जो बहुत सर्दी और तेज़ हवा वाली रात थी, अज़ान दी फिर खुद ही अज़ान के बाद पुकार कर फ़रमाया- लोगो! अपने घरों ही पर नमाज़ पढ़ लो। फिर आपने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दस्तूर था कि जब सर्दी और बारिश वाली रात होती तो आप सल्ल० मुअज़्ज़िन को हुक्म फ़रमा देते कि वह यह भी एलान कर दे कि आप लोग अपने घरों ही में नमाज़ पढ़ लें।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

इमामत

इमामत का हक़ और फ़र्ज़

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से जो अच्छे और बेहतर हों उनको अपना इमाम बनाओ, क्योंकि तुम्हारे मालिक और रब के हुज़ूर में वह तुम्हारे नुमाइन्दे[5] होते हैं।

(दारे क़ुत्नी, बैहक़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-छूटना, 2-छुटकारा, 3-जहन्नम की आग, 4-मिथ्याचार, मुनाफ़िक़, 5-प्रतिनिधि।

हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जमाअत की इमामत वह शख़्स करे जो उनमें सबसे ज़्यादा किताबुल्लाह (क़ुरआन मजीद) का पढ़ने वाला हो (यानी जो शख़्स किताबुल्लाह का इल्म और उससे तअल्लुक़ सबसे ज़्यादा रखता हो) और अगर उसमें सब यकसाँ[1] हों तो फिर वह शख़्स इमामत करे जो शरीअत व सुन्नत का ज़्यादा इल्म रखता हो, और अगर उसमें भी सब बराबर हों तो वह जिसने पहले हिजरत[2] की हो और उसमें भी सब बराबर हों तो फिर वह शख़्स इमामत करे जो सिन् (उम्र) के लिहाज़ से मुक़द्दम[3] हो और कोई आदमी दूसरे आदमी के हल्क़ए सियादत[4] व हुकूमत में उसका इमाम न बने (यानी उस हल्के के इमाम के पीछे मुक़्तदी बनकर नमाज़ पढ़े। हाँ, अगर वह ख़ुद ही इसरार[5] करे तो दूसरी बात है।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स जमाअत की इमामत करे उसको चाहिए कि अल्लाह तआला शानुहू से डरे और यक़ीन रखे कि वह मुक़्तदियों की नमाज़ का भी ज़ामिन यानी ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में भी सवाल होगा अगर उसने अच्छी नमाज़ पढ़ाई तो पीछे नमाज़ पढ़ने वाले मुक़्तदियों के मज्मूई[6] सवाब के बराबर उसको सवाब मिलेगा बग़ैर इसके कि मुक़्तदियों के सवाब में कोई कमी की जाए और नमाज़ में जो नक़्स[7] और क़ुसूर होगा उसका बोझ तन्हा इमाम पर होगा। (मोजमे औसत लित् तबरानी, मआरिफ़ुल् हदीस)

मुक़्तदियों की रिआयत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जब तुम में से कोई

1-समान, 2- दीन के लिये घर छोड़ कर दूसरी जगह बसना, 3-प्रधान, 4-प्रतिष्ठित स्थान, 5-हठ, गुज़ारिश, 6-सामूहिक, 7-त्रुटि, कमी।

लोगों का इमाम बनकर नमाज़ पढ़ाए तो चाहिए कि हल्की नमाज़ पढ़ाए (यानी ज़्यादा तूल न दे) क्योंकि मुक़्तदियों में बीमार भी होते हैं और कमज़ोर भी और बूढ़े भी, जिनके लिये तवील नमाज़ बाइसे ज़हमत[1] हो सकती है (और जब तुम में से किसी को अकेले नमाज़ पढ़नी हो तो जितनी चाहे तवील पढ़े।) (मआरिफुल् हदीस, सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

दुआ में इख़्फ़ा[2]

बाज़ उलमा फ़रमाते हैं कि ज़िक्र और दुआ के तमाम अक़्साम (सभी किस्मों) में अफ़्ज़ल इख़्फ़ा है यानी आहिस्ता पढ़ना ख़्वाह इमाम हो या मुन्फ़रिद[3] और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जह्र[4] फ़रमाना तालीमे उम्मत के लिये था।

और अगर किसी जगह इमाम जह्र व एलान में मस्लहत देखे और तालीमए एलाम[5] मक़्सूद हो तो दुरुस्त है बल्कि मुस्तहसन[6] है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

मुक़्तदियों[7] को हिदायत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम नमाज़ को आओ और हम सज्दे में हों तो तुम सज्दे में शरीक हो जाओ और इसको कुछ शुमार न करो और जिसने इमाम के साथ रुकूअ़ पा लिया उसने नमाज़ (यानी नमाज़ की वह रकअ़त) पा ली।

(सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इमाम इसलिये

1-तक्लीफ़ का कारण, 2-छिपाना, प्रकट न करना, 3-अकेला, 4-ज़ोर की आवाज़, 5-ज्ञान कराना, बताना, 6-उत्तम, 7-अनुयायियों।

बनाया गया है कि मुक्तदी लोग उसकी इत्तिबाअ़[1] व इक़्तिदा[2] करें। लिहाज़ा जब इमाम "अल्लाहु अक्बर" कहे तो तुम भी "अल्लाहु अक्बर" कहो और जब वह क़िराअत करे तो तुम ख़ामोशी से कान लगा कर सुनो।

(सुनने अबी दाऊद, नसाई, सुनने इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि लोगो! इमाम पर सबक़त[3] न करो (बल्कि उसकी इत्तिबाअ़ और पैरवी करो) जब वह अल्लाहु अक्बर कहे तो तुम भी अल्लाहु अक्बर कहो और जब वह क़िराअत करे तो तुम ख़ामोश रहो और जब वह "वलज़्ज़ाल्लीन" कहे तो तुम "आमीन" कहो और जब वह रुकूअ़ करे तो तुम रुकूअ़ करो और जब वह "समिअ़ल्लाहु लिमन् हमिदह" कहे तो तुम "अल्लाहुम्म रब्बना लकल्-हम्द" कहो।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

जमाअ़त में शिर्कत[4]

हज़रत अबू क़तादह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हम नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे तो अचानक आपने लोगों के दौड़ने की आवाज़ सुनी, तो जब नमाज़ पढ़ चुके, फ़रमाया- क्या बात थी? उन्होंने कहा हमने नमाज़ की तरफ़ आने में जल्दी की। फ़रमाया (ऐसा) मत करो। जब तुम नमाज़ को आओ तो इत्मीनान इख़्तियार करो पस जितनी पाओ पढ़ लो और जितनी तुम से छूट जाए उसे पूरा कर लो। (बुख़ारी)

नमाज़ में हदस (नमाज़ में वुज़ू टूटना)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि तुम में से जब किसी का नमाज़ में वुज़ू टूट जाए तो वह अपनी नाक को पकड़ ले

1- अनुसरण, 2- इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ना, पैरवी करना, 3- आगे निकल जाना, 4-सम्मिलित होना।

(ताकि लोग समझें कि नक्सीर फूटी है) और वुज़ू को चला जाए।

(मिश्कात)

इमाम से पहले सज्दे से सर उठाना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- क्या नहीं डरता वह शख़्स जो इमाम से पहले (सज्दे से) अपना सर उठा लेता है इससे कि अल्लाह तआला शानुहू उसके सर को गधे का सर बना दे।

(मिश्कात, बुख़ारी व मुस्लिम)

इस्तिन्जा की हाजत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अर्क़म रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि आप फ़रमाते थे जब जमाअ़त खड़ी हो जाए और तुम में से किसी को इस्तिन्जे[1] का तक़ाज़ा[2] हो तो उसको चाहिए कि पहले इस्तिन्जे से फ़ारिग़[3] हो।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सफ़ बन्दी

सफ़ की दुरुस्ती का एहतिमाम

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारी सफ़ों[4] को इस क़द्र सीधा और बराबर करते थे कि गोया उनके ज़रिये तीरों को सीधा करेंगे यहाँ तक कि आपको ख़्याल हो गया कि अब हम लोग समझ गये (कि हमको किस तरह बराबर खड़ा होना चाहिए) उसके बाद एक दिन ऐसा हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाये और नमाज़ पढ़ाने के लिये

1-शौच, 2-इच्छा, 3-मुक्त, 4-पंक्तियों।

3- अज़ान सुनकर नमाज़ के लिये इस तरह दुनियावी मशाग़िल[1] को तर्क कर देना गोया इन कामों से कोई सरोकार[2] ही नहीं है।

(नश्रुत्तीब, तिर्मिज़ी)

4- घर से बाहर आकर यह दुआ पढ़ते हुए चले:-

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ۔

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अ़लल्लाहि ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि।

5- रास्ते में चलते हुए यह दुआ पढ़ना भी अहादीस में है। सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इसके पढ़ने वाले के लिये दुआ करते हैं:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ السَّآئِلِيْنَ عَلَيْكَ وَبِحَقِّ مَمْشَايَ هٰذَا فَاِنِّىْ لَمْ اَخْرُجْ اَشَرًا وَّ لَا بَطَرًا وَّ لَا رِيَآءً وَّلَا سُمْعَةً وَّخَرَجْتُ اِتِّقَآءَ سَخَطِكَ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِكَ وَاَسْئَلُكَ اَنْ تُعِيْذَنِىْ مِنَ النَّارِ وَاَنْ تَغْفِرَلِىْ ذُنُوْبِىْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक बिहक़्क़िस्साइलीन अ़लैक व बिहक़्क़ि मम्शाय हाज़ा फ़इन्नी लम् अख़्रुज़् अशरंव् वला बतरंव् वला रियाअंव् वला सुम्अतंव् व ख़रज्तु इत्तिक़ाअ सख़तिक वब्तिग़ाअ मर्ज़ातिक व अस्अलुक अन् तुईज़नी मिनन्नारि व अन्-तग़्फ़िरली ज़ुनूबी फ़इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त।

अनुवादः ऐ अल्लाह! उस हक़ से कि जो सवाल करने वालों को तेरी जनाब में हासिल है और उस हक़ से कि जो तेरी इबादत करने वालों को तेरी जनाब से है।, अर्ज़ करता हूँ कि मैंने किसी तकब्बुर[3] या तम्कनत[4] के जज़्बे या दिखावे की ग़रज़ से क़दम बाहर नहीं निकाला बल्कि तेरी नाराज़गी के ख़ौफ़ से, तेरी रज़ा की जुस्तुजू में चला हूँ और तुम ही से इल्तिजा करता हूँ कि मुझे आग के अ़ज़ाब से पनाह दे दे। हमारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे। तेरे सिवा अब कोई नहीं जो गुनाह मुआफ़ कर सके। (इब्ने माजा)

1- सांसारिक कर्मों, 2- प्रयोजन, 3- अभिमान, 4- गर्व।

इमाम का वस्त[1] में होना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– लोगो! इमाम को अपने वस्त में लो (यानी इस तरह सफ़ बनाओ कि इमाम वस्त में हो) और सफ़ों में जो ख़ला हो उसको पूरा करो।

(सुनने अबी दाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

एक या दो मुक़्तदियों की जगह

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि (एक दफ़ा) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के लिये खड़े हुए (यानी आपने नमाज़ शुरू फ़रमाई) इतने में मैं आ गया और (निय्यत करके) आपके बायें जानिब खड़ा हो गया तो आपने मेरा हाथ पकड़ा और अपने पीछे की जानिब से मुझे घुमा के अपनी दाहिनी जानिब खड़ा कर लिया। फिर इतने में जब्बार बिन सख़र रज़ि० आ गये। वह निय्यत करके आपके बायें जानिब खड़े हो गये, तो आपने हम दोनों के हाथ पकड़ के पीछे की जानिब कर दिया और पीछे खड़ा कर लिया। (सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

मस्जिद के मुतअल्लिक़ अहकाम[2]

मस्जिद जाते वक़्त मन्दर्जा-ज़ैल[3] सुन्नतों का ख़्याल रखें और यह पाँचों वक़्त ख़्याल रखना होगा:–

1– हर नमाज़ के लिये बा-वुज़ू होकर घर से चलना। (बुख़ारी)

2– घर से चलते वक़्त नमाज़ पढ़ने की निय्यत से चलना यानी असल और मुक़द्दम निय्यत नमाज़ पढ़ने ही की करनी चाहिए। (बुख़ारी)

1- मध्य, बीच, 2- नियम, 3- निम्नांकित।

3- अज़ान सुनकर नमाज़ के लिये इस तरह दुनियावी मशाग़िल[1] को तर्क कर देना गोया इन कामों से कोई सरोकार[2] ही नहीं है।

(नशरुत्तीब, तिर्मिज़ी)

4- घर से बाहर आकर यह दुआ पढ़ते हुए चले:-

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ۔

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अलल्लाहि ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहि।

5- रास्ते में चलते हुए यह दुआ पढ़ना भी अहादीस में है। सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इसके पढ़ने वाले के लिये दुआ करते हैं:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ السَّائِلِیْنَ عَلَیْكَ وَبِحَقِّ مَمْشَایَ هٰذَا فَاِنِّیْ لَمْ اَخْرُجْ اَشَرًا وَّ لَا بَطَرًا وَّ لَا رِیَاءً وَّلَا سُمْعَةً وَّخَرَجْتُ اِتِّقَاءَ سَخَطِكَ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ وَاَسْئَلُكَ اَنْ تُعِیْذَنِیْ مِنَ النَّارِ وَاَنْ تَغْفِرَلِیْ ذُنُوْبِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ۔

अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक बिहक़्क़िस्साइलीन अलैक व बिहक़्क़ि मम्शाय हाज़ा फ़इन्नी लम् अख़्रुज् अशरंव् वला बतरंव् वला रियाअंव् वला सुम्अतंव् व ख़रज्तु इत्तिक़ाअ सख़तिक वब्तिग़ाअ मर्ज़ातिक व असअलुक अन् तुईज़नी मिनन्नारि व अन्-तग़्फ़िरली ज़ुनूबी फ़इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! उस हक़ से कि जो सवाल करने वालों को तेरी जनाब में हासिल है और उस हक़ से कि जो तेरी इबादत करने वालों को तेरी जनाब से है।, अर्ज़ करता हूँ कि मैंने किसी तकब्बुर[3] या तम्कनत[4] के जज़्बे या दिखावे की ग़रज़ से क़दम बाहर नहीं निकाला बल्कि तेरी नाराज़गी के ख़ौफ़ से, तेरी रज़ा की जुस्तुजू में चला हूँ और तुझ ही से इल्तिजा करता हूँ कि मुझे आग के अज़ाब से पनाह दे दे। हमारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे। तेरे सिवा अब कोई नहीं जो गुनाह मुआफ़ कर सके। (इब्ने माजा)

1- सांसारिक कर्मों, 2- प्रयोजन, 3- अभिमान, 4- गर्व।

6- नमाज़ पढ़ने के लिये चले तो बावक़ार[1] होकर क़द्रे[2] छोटे क़दम रखता हुआ चले कि ये निशाने क़दम लिखे जाते हैं और हर क़दम पर सवाब मिलता है। (अत्तर्ग़ीब)

7- मस्जिद में दाख़िल होने लगे तो पहले बायाँ पाँव जूते में से निकाल कर बायें जूते पर रख ले और फिर दाहिना पाँव जूते से निकाल कर अव्वल दायाँ पाँव मस्जिद में रखे।

8- बिला ज़रूरते शदीदा[3] दुनियवी बातें न करें, लोग नमाज़ पढ़ रहे हों तो तिलावत और ज़िक्र आहिस्ता करें, क़िब्ला-रु न थूकें, न क़िब्ला-रु पाँव फैलायें, न गाना गायें, न बाहर गुम हो जाने वाली चीज़ों को मस्जिद में तलाश करें, न उनका एलान करें, बदन, कपड़े या और किसी चीज़ से खेल न करें, उंगलियों में उंगलियां न डालें, अल्ग़रज़ मस्जिद के एहतिराम के ख़िलाफ़ कोई काम न करें। (तबरानी, मुस्नद इमामे अहमद)

9- तक्बीरे ऊला[4] के साथ नमाज़ पढ़ने का एहतिमाम रखें, हमेशा जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करने का एहतिमाम रखें। (मुस्लिम)

10- जब जमाअ़त खड़ी होने लगे तो तक्बीर होने से पहले सफ़ों को सीधा करें, उसके बाद तक्बीर कही जाए।

11- हमेशा जहाँ तक मुम्किन हो अगली सफ़ में जाकर बैठें, इमाम के बिल्कुल पीछे या दायीं तरफ़ वर्ना बायीं तरफ़, सफ़ में जगह न हो तो उसी तर्तीब से दूसरी, फिर तीसरी सफ़ बनाकर बैठें। अल्ग़रज़ जब तक अगली सफ़ में जगह मिलती हो तो पीछे न बैठें। (मुस्लिम, अबू दाऊद)

12- सफ़ों को बिल्कुल सीधा रखें, मिलकर खड़े हों, दरमियान में ख़ाली जगह न छोड़ें, कंधे और टख़ने एक दूसरे के बिल्मुक़ाबिल हों।

(सिहाह)

1-प्रतिष्ठित, 2-कुछ, 3-अत्यावश्यक, 4-पहली तक्बीर।

13- हर नमाज़ को इस तरह खुशूअ[1] व खुज़ूअ[2] से अदा करें गोया यह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है। (अत्तर्ग़ीब)

14- नमाज़ में दिल भी अल्लाह तआला की तरफ़ झुका हुआ हो और आज़ाए बदन[3] भी सुकून[4] में हों। (अबू दाऊद, नसाई)

आँखें खोल कर नमाज़ अदा करें, आँखें बन्द करना ख़िलाफ़े सुन्नत है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

15- फ़ज्र के फ़र्ज़ों के बाद थोड़ी देर ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल होना। (अत्तर्ग़ीब)

16- पाँचों वक़्त में नमाज़ से फ़ारिग़ होकर जब तक नमाज़ी अपनी नमाज़ की जगह बैठा रहता है उसके लिये फ़िरिश्ते बराबर दुआए मग़्फ़िरत[5] व दुआए रहमत करते रहते हैं। (अत्तर्ग़ीब)

17- नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ होकर इश्राक़ के वक़्त तक ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहना। (तिर्मिज़ी)

18- जब तक नमाज़ी जमाअत के इन्तिज़ार में बैठे रहते हैं, उनको बराबर नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलता रहता है। (बुख़ारी शरीफ़)

सुन्नतों और फ़र्ज़ों के दरमियान कोई ज़िक्र, तस्बीह या दुरूद वग़ैरा जारी रखें तो मज़ीद[6] सवाब के मुस्तहिक़[7] होंगे। फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ों के दरमियान एक तस्बीह سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही और एक तस्बीह-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर की पढ़ ले तो बहुत सवाब होता है।

1-एकाग्रचित्त होकर, 2-विनय एवं विनम्रता, 3-शरीर के अंग, 4-आराम, 5-मोक्ष, 6-अतिरिक्त, 7-योग्य।

माहे सियाम[1]

रमज़ानुल् मुबारक

रमज़ानुल् मुबारक का खुत्बा

रोज़े की फ़ज़ीलत (रोज़े की श्रेष्ठता)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि माहे शाबान की आख़िरी तारीख़ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमको एक खुत्बा दिया। उसमें आपने फ़रमाया- ऐ लोगो! तुम पर एक अज़्मत और बरकत वाला महीना साया अफ़्गन[2] हो रहा है। इस महीने की एक रात (शबेक़द्र[3]) हज़ार महीनों से बेहतर है। इस महीने के रोज़े अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ किये हैं और इसकी रातों में बारगाहे इलाही में खड़े होने (यानी नमाज़े तरावीह पढ़ने) को नफ़्ल इबादत मुक़र्रर किया है (जिसका बहुत बड़ा सवाब रखा है) जो शख़्स इस महीने में अल्लाह तआला की रज़ा और उसका क़ुर्ब हासिल करने के लिये कोई ग़ैर फ़र्ज़ इबादत (यानी सुन्नत या नफ़्ल) अदा करेगा तो दूसरे ज़माने के फ़र्ज़ों के बराबर उसको सवाब मिलेगा और इस महीने में फ़र्ज़ अदा करने का सवाब दूसरे ज़माने के सत्तर फ़र्ज़ों के बराबर मिलेगा। यह सब्र का महीना है और सब्र का बदला जन्नत है। यह हमदर्दी और ग़मख़्वारी का महीना है। और यही वह महीना है जिस में मोमिन बन्दों के रिज़्क़ में इज़ाफ़ा[4] किया जाता है। जिसने इस महीने में किसी रोज़ेदार को (अल्लाह की रज़ा और सवाब हासिल करने के लिये) इफ़्तार[5] कराया तो उसके लिये गुनाहों की मग़्फ़िरत और आतिशे दोज़ख़ (जहन्नम की आग) से आज़ादी का ज़रिया होगा। और उसको रोज़ेदार के

1-रोज़े का महीना, 2-रहम और कृपा करने वाला महीना उतर रहा है, 3-रमज़ान के महीने की 27 वीं तारीख़, इस रात की इबादत का बड़ा पुण्य है, 4-वृद्धि, 5-रोज़ा खोलने के लिए कुछ खाना-पीना।

बराबर सवाब दिया जायेगा, बग़ैर इसके कि रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी की जाये। आप से अ़र्ज़ किया गया कि या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) हममें से हर एक को तो इफ़्तार कराने का सामान मुयस्सर नहीं होता (तो क्या गुरबा[1] इस अ़ज़ीम सवाब से महरूम[2] रहेंगे), आपने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला यह सवाब उस शख़्स को भी देगा जो दूध की थोड़ी सी लस्सी पर या पानी के एक घूँट पर किसी रोज़ेदार का रोज़ा इफ़्तार करा दे। (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कलाम जारी रखते हुए आगे इर्शाद फ़रमाय कि) और जो कोई किसी रोज़ेदार को पूरा खाना खिला दे, उसको अल्लाह तआ़ला मेरे हौज़े कौसर से ऐसा सैराब[3] करेगा जिसके बाद उसको कभी प्यास न लगेगी ताऑंकि[4] वह जन्नत में पहुँच जायेगा।

(इसके बाद आपने फ़रमाया) इस माहे मुबारक का इब्तिदाई हिस्सा[5] रहमत है और दरमियानी हिस्सा मग़्फ़िरत है और आख़िरी हिस्सा आतिशे दोज़ख़ से आज़ादी है (इसके बाद आपने फ़रमाया) और जो आदमी इस महीने में अपने गुलाम व ख़ादिम के काम में तख़्फ़ीफ़[6] व कमी कर देगा, अल्लाह तआ़ला उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा देगा और उसे दोज़ख़ से रिहाई और आज़ादी देगा। (शोबुल्-ईमान लिल् बैहक़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

रोज़े में एहतिसाब[7]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग रमज़ान के रोज़े, ईमान व एहतिसाब के साथ रखेंगे उनके सब गुज़श्ता[8] गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जायेंगे और ऐसे ही जो लोग ईमान व एहतिसाब के साथ रमज़ान की रातों में नवाफ़िल (तरावीह व तहज्जुद) पढ़ेंगे उनके भी सारे पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जायेंगे, और इसी तरह जो लोग शबेक़द्र

1-ग़रीब लोग, 2-वन्चित, 3-तृप्त, 4-यहाँतक कि, 5-प्रारम्भिक भाग, 6-हल्कापन, 7-निषिद्ध (वर्जित) पदार्थों के खान-पान से रोकना, 8-पिछले।

में ईमान व एहतिसाब के साथ नवाफ़िल पढ़ेंगे उनके भी सारे पहले गुनाह मुआफ़ कर दिये जायेंगे। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

रोज़े की बरकत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– रोज़ा रखा करो, तन्दुरुस्त रहा करोगे (तबरानी) और रोज़े से जिस तरह ज़ाहिरी[1] व बातिनी[2] मज़र्रत[3] ज़ाइल[4] होती हैं इसी तरह इससे ज़ाहिरी व बातिनी मसर्रत[5] हासिल होती है।

रोज़े की अहमियत

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जब रमज़ानुल् मुबारक का अश्रए अख़ीर[6] शुरू होता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कमर कस लेते और शब्बेदारी (यानी पूरी रात इबादत और ज़िक्र व दुआ में मश्ग़ूल रहते) और अपने घर के लोगों यानी अज़्वाजे मुतह्हरात[7] और दूसरे मुतअल्लिक़ीन को भी जगा देते (ताकि वे भी इन रातों की बरकतों और सआदतों[8] में हिस्सा लें)।

(सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

रोज़ा छोड़ने का नुक़सान

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– जो आदमी सफ़र वग़ैरा की शरई रुख़्सत के बग़ैर और बीमारी जैसे किसी उज़्र[9] के बग़ैर रमज़ान का एक रोज़ा भी छोड़ेगा, वह अगर उसके बजाय उम्र भर भी रोज़े

1-प्रत्यक्ष, 2-अप्रत्यक्ष, 3-हानि, 4-समाप्त, 5-प्रसन्नता, 6-अन्तिम दस दिन, 7-पवित्र पत्नियाँ, 8-भलाई, 9-विवशता।

रखे तो जो चीज़ फ़ौत[1] हो गई वह पूरी अदा नहीं हो सकती।

(मुस्नदे अहमद, मआरिफ़ुल् हदीस)

रूयते हिलाल[2] (चाँद देखना)

रूयते हिलाल की तहक़ीक़[3] और शाहिद[4] की शहादत[5]

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत यह थी कि जब तक रूयते हिलाल का सुबूत न हो जाए या ऐनी[6] गवाह न मिल जाये आप रोज़े शुरू न करते जैसे कि आपने इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत क़बूल करके रोज़ा रखा। (ज़ादुल्-मआद)

और आप बादल के दिन का रोज़ा नहीं रखते थे न आपने इसका हुक्म दिया, बल्कि फ़रमाया- जब बादल हो तो शाबान के तीस दिन पूरे किये जायें। (ज़ादुल्मआद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाय- चाँद देखकर रोज़े रखो और चाँद देखकर रोज़े छोड़ दो, और अगर (29 तारीख़ को) चाँद दिखाई न दे तो शाबान की तीस की गिनती पूरी करो।

(सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

सहरी (प्रातः कालिन खान-पान)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शादे गरामी है कि सहरी में बरकत है, इसे हर्गिज़ न छोड़ो। अगर कुछ नहीं तो उस वक़्त पानी का एक घूँट ही पी लिया जाये क्योंकि सहर में खाने-पीने वालों पर अल्लाह तआला रहमत फ़रमाता है और फ़िरिश्ते उनके लिये दुआए ख़ैर करते हैं।

(मुस्नदे अहमद, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-समाप्त, 2-नवीन चन्द्रमा का दर्शन, 3-अनुसंधान, पुष्टि, 4-साक्षी, 5-गवाही, 6-प्रत्यक्षदर्शी।

इफ़्तार (सन्ध्या कालीन खान–पान)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि अपने बन्दों में मुझे वह बन्दा ज़्यादा महबूब है जो रोज़े के इफ़्तार में जल्दी करे (यानी गुरूबे आफ़ताब[1] के बाद बिल्कुल देर न करे।)

(मआ़रिफ़ुल् हदीस, जामे तिर्मिज़ी)

हज़रत सलमान बिन आ़मिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– कि जब तुममें से किसी का रोज़ा हो तो वह खजूर से इफ़्तार करे और अगर खजूर न पाए तो फिर पानी ही से इफ़्तार करे, इसलिये कि पानी को अल्लाह तआ़ला ने तहूर[2] बनाया है।

(मुस्नदे अहमद, अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मग़्रिब की नमाज़ से पहले चन्द तर खजूरों से रोज़ा इफ़्तार फ़रमाते थे और अगर तर खजूरें बर–वक़्त[3] मौजूद न होतीं तो ख़ुश्क खजूरों से इफ़्तार फ़रमाते थे और अगर ख़ुश्क खजूरें भी न होतीं तो चन्द घूँट पानी पी लेते थे। (जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब इफ़्तार फ़रमाते तो कहते थे:

ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَثَبَتَ الْاَجْرُ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ

"ज़हबज़्ज़मउ वब्तल्लतिल् उ़रूक़ु व सबतल् अज्रु इन्शा अल्लाह"

अनुवाद: प्यास चली गई, रगें तर हो गयीं और अल्लाह ने चाहा तो अज्र मिलेगा

मआज़ बिन ज़ुहैरा ताबई से रिवायत है वह कहते हैं कि मुझे यह बात

1-सूर्यास्त, 2-पवित्र करने वाला, 3-समय पर।

पहुँची है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब रोज़ा इफ़्तार फ़रमाते थे तो कहते थे:-

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ

अल्लाहुम्म लक सुम्तु व अ़ला रिज़्क़िक अफ़्तरतु।।

अनुवाद: ऐ अल्लाह तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरे रिज़्क़ से इफ़्तार किया। (सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि रोज़ेदार की एक भी दुआ़ इफ़्तार के वक़्त मुस्तरद[1] नहीं होती। (इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

तरावीह

अक्सर उलमा इस बात पर मुत्तफ़िक़[2] हैं कि तरावीह के मस्नून होने पर अहले सुन्नत वल् जमाअ़त का इज्माअ़[3] है। अइम्मा-ए-अर्बा[4] में से यानी इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैह और इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अ़लैह और इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अ़लैह इन सब हज़रात की फ़िक़ह की किताबों में इसकी तस्रीह[5] है कि तरावीह की बीस रकआ़त सुन्नते मुअक्कदा हैं। (ख़साईले नबवी)

क़ुरआन मजीद का सुनना

रमज़ान शरीफ़ में क़ुरआने मजीद का एक मर्तबा तरतीबवार तरावीह में पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है। अगर किसी उज़्र से इसका अन्देशा हो कि मुक़्तदी[6] तहम्मुल[7] न कर सकेंगे तो फिर 'अलम तर कैफ़' से अख़ीर तक दस सूरतें पढ़ दी जायें, हर रकअ़त में एक सूरत हो, फिर दस रकअ़त पूरी होने पर

1-रद, 2-सहमत, 3-किसी दीनी समस्या पर उलमा का एकमत होना, 4-चारों इमामों, 5-व्याख्या, 6-अनुयायी, 7-सहन।

फिर उन्हीं सूरतों को दोबारा पढ़ दे या और जो सूरतें चाहे पढ़े।

(बिहिश्ती गौहर)

तरावीह पूरे महीने पढ़ना

तरावीह का रमज़ानुल् मुबारक के पूरे महीने में पढ़ना सुन्नत है, अगर्चे क़ुरआन मजीद महीना ख़त्म होने से पहले ही ख़त्म हो जाये, मसलन पन्द्रह रोज़ में पूरा क़ुरआन मजीद पढ़ लिया जाये तो बाक़ी दिनों में भी तरावीह का पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है।

तरावीह में जमाअ़त

तरावीह में जमाअ़त सुन्नते मुअक्कदा है, अगर्चे एक क़ुरआन मजीद जमाअ़त के साथ ख़त्म हो चुका हो।

तरावीह दो-दो रक्अ़त करके पढ़ना

तरावीह दो-दो रक्अ़त करके पढ़ना चाहिए, चार रक्अ़त के बाद इस क़द्र तवक्कुफ़[1] करना चाहिए जिस क़द्र वक़्त नमाज़ में सर्फ़[2] हुआ है लेकिन मुक़्तदियों की रिआयत करते हुए वक़्त भी कम किया जा सकता है।

(बिहिश्ती गौहर)

तरावीह की अहमियत (तरावीह का महत्तव)

रमज़ानुल् मुबारक में तरावीह की नमाज़ भी सुन्नते मुअक्कदा है। इसका छोड़ देना और न पढ़ना गुनाह है। (औरतें अक्सर तरावीह की नमाज़ को छोड़ देती हैं।) ऐसा हर्गिज़ न करना चाहिए।

इशा के फ़र्ज़ और सुन्नतों के बाद बीस रक्अ़त नमाज़े तरावीह पढ़े। जब बीस रक्अ़त तरावीह पढ़ चुके तो उसके बाद वित्र पढ़े।(बिहिश्ती ज़ेवर)

1-विलम्ब, 2-व्यय।

तरावीह की बीस रक्अ़तों पर हदीस

عَنْ ابنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ اَنَّہٗ قَالَ: اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ یُصَلِّی فِی رَمَضَانَ عِشْرِیْنَ رَکْعَۃً وَالْوِتْرَ۔

अ़निब्नि अ़ब्बासिन् रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु क़ाल अन्ननबिय्य सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम युसल्ली फ़ी रमज़ान इश्रीन रक्अ़तन् वल्‌वित्र।

अनुवादः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रमज़ान में बीस रक्अ़तें और वित्र पढ़ा करते थे।

(मजमउज़्ज़वाइद, पेज 172, भाग-3, बहवाला तबरानी रहमतुल्लाहि अ़लैह०)

अगर्चे इस हदीस की सनद में एक रावी ज़ईफ़ है लेकिन चूँकि सहाबा किराम रज़ि० और ताबईन रहमतुल्लाहि अ़लैह का मुसलसल तआ़मुल[1] इस पर रहा है इसलिए मुहद्दिसीन और फ़ुक़हा रहमतुल्लाह अ़लैहिम के उसूल के मुताबिक़ यह हदीस मक़्बूल है।

हज़रत साइब बिन यज़ीद और यज़ीद बिन रूमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़माने में सहाबा किराम बीस रक्अ़त तरावीह पढ़ा करते थे। (आसारुस्सुनन, पेज 204, बहवाला मुअत्ता इमाम मालिक, व बैहक़ी)

तरावीह के दरमियान ज़िक्र

तरावीह में हर चार रक्अ़त के बाद जो ज़िक्र मशहूर है, वह किसी रिवायते हदीस में नहीं मिलता। अलबत्ता अल्लामा शामी रह० ने क़ुहस्तानी और मिन्हाजुल् इबाद के हवाले से नक़्ल किया है कि हर तरावीह के बाद यह ज़िक्र किया जाए:-

1-आपस में मिलकर कार्य करना।

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ
وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِی لَا يَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَآئِكَةِ
وَالرُّوْحِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ نَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ نَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ۔

सुब्हान ज़िलमुल्कि वल्मलकूति सुब्हान ज़िल् इज़्ज़ति वल् अज़्मति वल् कुदरति वलकिब्रियाइ वल्–जबरूति सुब्हानल् मलिकिल् हय्यिल्लज़ी ला यमूतु। सुब्बूहुन् कुद्दूसुन् रब्बुल् मलाइकति वर्रूहि ला इलाह इल्लल्लाहु नस्तग़्फ़िरुल्लाह नस्अलुकल् जन्नत व नऊज़ु बिक मिनन् नार।

अनुवाद: मैं पाकी बयान करता हूँ आलमे अज्साम[1] और आलमे अर्वाह[2] वाले की, पाक है इज़्ज़त व अज़्मत वाला और क़ुद्रत और बड़ाई और ग़लबे वाला, पाक है वह बादशाह जो ज़िन्दा है, मरता नहीं है। बड़ा पाक है, निहयात पाक है। फ़िरिश्तों और रूह का रब है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। हम अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत चाहते हैं और (ऐ अल्लाह!) हम आपसे जन्नत का सवाल करते हैं और दोज़ख़ से पनाह चाहते हैं।

रमज़ानुल् मुबारक की रातों में क़ियाम

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने रमज़ान के रोज़ों को फ़र्ज़ फ़रमाया और मैंने रमज़ान की शब्बेदारी को (तरावीह में तिलावते क़ुरआन पढ़ने-सुनने के लिये, तुम्हारे वास्ते अल्लाह तआला के हुक्म से) सुन्नत बनाया (कि मुअक्कदा होने के सबब[3] वह भी ज़रूरी है) जो शख़्स ईमान के साथ और सवाब के एतिक़ाद[4] से रमज़ान का रोज़ा रखे और रमज़ान की शबबेदारी करे वह अपने गुनाहों से उस दिन की तरह निकल जायेगा जिस दिन उसको उसकी माँ ने जना था।

(नसाई, हयातुल् मुस्लमीन)

1-मर्त्यलोक, 2-आत्माओं के रहने का लोक, 3-कारण, 4-विश्वास।

एतिकाफ़[1]

अहादीसे सहीहा में मन्कूल है कि जब रमज़ानुल् मुबारक का आख़िरी अश्रा[2] आता तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिये मस्जिद में एक जगह मख़्सूस कर दी जाती और वहाँ पर्दा चटाई वग़ैरा का डाल दिया जाता या कोई छोटा-सा ख़ेमा नस्ब[3] होता।

रमज़ान की 20वीं तारीख़ को फ़ज्र की नमाज़ के लिये आप मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते थे और ईद का चाँद देखकर वहाँ से बाहर तशरीफ़ लाते थे। (मआरिफ़ुल् हदीस)

जिसने रमज़ान के आख़िरी अश्रे में दस दिन का एतिकाफ़ किया तो वह एतिकाफ़ मिस्ल[4] दो हज और दो उम्रों[5] के होगा। (यानी इतना सवाब मिलेगा।) (बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

मुस्तहिब्बाते[6] एतिकाफ़

1- नेक और अच्छी बातें करना।

2- क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करना।

3- दुरूद शरीफ़ का विर्द[7] रखना।

4- उलूमे दीनिय्या का पढ़ना व पढ़ाना।

5- वाज़[8] व नसीहत करना।

6- नमाज़े पंजगाना वाली मस्जिद में एतिकाफ़ करना।

(बिहिश्ती ज़ेवर)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मर्वी है, फ़रमाया

1-एकान्त में अल्लाह की इबादत करना, 2-अन्तिम दस दिन, 3-स्थापित, 4-समान, 5-मक्के से तीन कोस पर 'तर्न्ईम' नामक स्थान पर नमाज़ पढ़कर काबा का तवाफ़ करना, 6-पुनीत, 7-वर्णन, पुनरावृत्ति, 8-धर्मोपदेश।

कि मोतकिफ़[1] के लिये शरई दस्तूर और ज़ाबिता यह है कि न वह मरीज़ की इयादत को जाए और न नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत के लिए बाहर निकले, और न औरत से मुक़ारबत[2] करे और अपनी ज़रूरतों के लिये भी मस्जिद से बाहर न जाए, सिवाय उन हवाइज[3] के जो बिल्कुल नागुज़ीर[4] हैं। (जैसे रफ़े हाजत, पेशाब-पाखाना वग़ैरा) और एतिकाफ़ रोज़े के साथ होना चाहिए बग़ैर रोज़े के नहीं। (सुनने अबी दाऊद, मआरिफुल् हदीस)

एतिकाफ़े मस्नून

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बिल्इल्तिज़ाम[5] रमज़ानुल् मुबारक के आख़िरी अश्रे में एतिकाफ़ करना अहादीसे सहीहा में मन्कूल है और यही सुन्नते मुअक्कदा अलल्-किफ़ाया है कि बाज़ के एतिकाफ़ कर लेने से सबकी तरफ़ से किफ़ायत[6] हो जाती है।

एतिकाफ़ और मोतिकफ़ के मस्नून आमाल

दस दिन का एतिकाफ़ सुन्नत है, इससे कम का नफ़्ल है। औरत के लिये अपने मकान में एतिकाफ़ करना सुन्नत है। हालते एतिकाफ़ में क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत या दूसरी दीनी कुतुब[7] का मुतालआ[8] करना भी पसन्दीदा है। (बिहिश्ती ज़ेवर)

शबे क़द्र

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि शबे क़द्र को तलाश करो, रमज़ान की आख़िरी दस रातों की ताक़[9] रातों में।

(सहीह बुख़ारी, मआरिफुल् हदीस)

1-एक कोने में बैठकर अल्लाह की इबादत करने वाला, 2-समीपता, 3-आवश्यकताएँ, 4-अनिवार्य, 5-निश्चित रूपेण, 6-पर्याप्त, 7-पुस्तकें, 8-अध्ययन, 9-विषम।

कि मक्कतुल् मुकर्रमा की गली, कूचों में मुनादी[1] कर दे कि सदक़ए फ़ित्र हर मुसलमान पर वाजिब है, ख़्वाह मर्द हो या औरत, आज़ाद हो या गुलाम, छोटा हो या बड़ा, दो मुद्द (तक़रीबन् दो सेर) गेहूँ के या इसके सिवा एक साअ़ (साढ़े तीन सेर से कुछ ज़ायद) गल्ले का। (तिर्मिज़ी)

ख़ुशी मनाना

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- तुम साल में दो दिन ख़ुशी मनाया करते थे, अब अल्लाह तआ़ला ने उनसे बेहतर तुमको दो दिन अ़ता फ़रमाए हैं- ईदुल्फ़ित्र और ईदुलअज़्हा। और इर्शाद फ़रमाया ये अय्याम[2] खाने-पीने और बाहम[3] ख़ुशी का लुत्फ़ उठाने और अल्लाह को याद करने के हैं। (शर्ह मआ़नियुल् आसार)

रमज़ानुल् मुबारक के अ़लावा दूसरे अय्याम के रोज़े

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आ़दते शरीफ़ा रोज़े बहुत रखने की थी। कभी-कभी आप मुसलसल कई-कई दिन रोज़े रखते थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल (रोज़े के मुआ़मले में) भी अ़जीब निराला था कि मसालिहे वक़्तिया[4] के तहत ख़ास-ख़ास अय्याम के रोज़े रखते और बसाऔक़ात[5] इफ़्तार फ़रमाते। (शर्ह शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शफ़ीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के रोज़ा रखने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा, उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कभी मुतवातिर[6] रोज़े रखते थे और हमारा ख़्याल होता था कि इस माह में इफ़्तार ही नहीं फ़रमायेंगे और कभी ऐसा मुसलसल इफ़्तार फ़रमाते थे कि हमारा ख़्याल होता कि इस

1-आवाज़ लगाना, 2-दिन समूह, 3-परस्पर, 4-समय की आवश्यकतानुसार, 5-प्रायः, 6-निरन्तर।

माह में रोज़ा ही न रखेंगे। लेकिन मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ आवरी के बाद रमज़ानुल् मुबारक के अलावा किसी माह तमाम माह के रोज़े नहीं रखे (ऐसे ही किसी माह को कामिल[1] इफ़्तार में गुज़ार दिया हो यह भी नहीं किया)।

(अबू दाऊद, शमाइले तिर्मिज़ी)

हर माह तीन रोज़े

हज़रत मआज़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा कहती हैं कि मैंने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से पूछा कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर माह में तीन रोज़े रखते थे? उन्होंने फ़रमाया– रखते थे। मैंने मुकर्रर[2] पूछा कि महीने के किन अय्याम में रखते थे? उन्होंने फ़रमाया कि इसका एहतिमाम न था, जिन अय्याम में मौक़ा होता रख लेते। (शमाइले तिर्मिज़ी)

दोशंबह[3], पंजशंबह[4] के रोज़े

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि दोशंबह और पंजशंबह के दिन हक़ तआला शानुहू की आली बारगाह में आमाल पेश होते हैं। मेरा दिल चाहता है कि मेरे आमाल रोज़े की हालत में पेश हों।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

मुसलसल रोज़े रखने की मुमानअत
(निरन्तर रोज़े रखने का निषेध)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (मेरे कसरते इबादत, नमाज़, रोज़ा के

1-सम्पूर्ण, 2-पुन:, दोबारा, 3-सोमवार 4-बृहस्पतिवार।

मुतअल्लिक इल्म होने पर) मुझसे फ़रमाया कि ऐसा न किया करो बल्कि कभी रोज़ा रखा करो और कभी इफ़्तार! इसी तरह रात को नमाज़ भी पढ़ा करो और सोया भी करो। तुम्हारे बदन का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी आँखों का भी तुम पर हक़ है (कि रात भर जागने से ज़ईफ़ हो जाती हैं) तुम्हारी बीवी का भी हक़ है, औलाद का भी हक़ है, मिलने वालों का भी हक़ है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

शव्वाल[1] के छह रोज़े

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने माहे रमज़ान के रोज़े रखे, उसके बाद माहे शव्वाल में छह नफ़्ली रोज़े रखे तो उसका यह अमल हमेशा रोज़ा रखने के बराबर होगा।

(सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

ख़ास रोज़े

हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि चार चीज़ें ये हैं, जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी नहीं छोड़ते थे:-

1- आशूरा[2] का रोज़ा।

2- अश्रा-ए-ज़िलहिज्जा यानी पहली ज़िलहिज्जा से यौमे-अर्फ़ा यानी नवीं ज़िलहिज्जा तक के रोज़े।

3- हर महीने के तीन रोज़े और

4- क़ब्ले फ़ज्र की दो रकअतें।

(सुनने नसाई, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-रमज़ान के बाद का महीना, 2-मुहर्रम की नवीं और दसवीं तारीख़।

अय्यामे बीज़[1] के रोज़े

हज़रत क़तादा बिन मिल्हान रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हम लोगों को हुक्म फ़रमाते थे कि हम अय्यामे बीज़ यानी महीने की तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं को रोज़ा रखा करें और फ़रमाते थे कि महीने के इन तीन दिनों के रोज़े रखना अज्रो-सवाब के लिहाज़ से हमेशा रोज़ा रखने के बराबर है।

(सुनने अबी दाऊद, नसाई, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

अश्रा-ए[2]-ज़िल्हिज्जा के रोज़े

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सब दिनों में से किसी दिन में भी बन्दे का इबादत करना अल्लाह तआ़ला को उतना महबूब नहीं जितना कि अश्रा-ए-ज़िल्हिज्जा में महबूब है। (यानी इन दिनों की इबादत अल्लाह तआ़ला को दूसरे तमाम दिनों से ज़्यादा महबूब है) इस अ़श्रे के हर दिन का रोज़ा साल भर के रोज़ों के बराबर है और इसकी हर रात की नवाफ़िल शबे-क़द्र के नवाफ़िल के बराबर हैं।

(जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

पन्द्रहवीं शाबान का रोज़ा

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब शाबान की पन्द्रहवीं रात आये तो उस रात में अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर में नवाफ़िल पढ़ो और उस दिन को रोज़ा रखो क्योंकि उस रात में आफ़ताब गुरूब[3] होते ही अल्लाह तआ़ला की ख़ास तजल्ली और रहमत पहले आसमान पर उतर आती है और वह इर्शाद फ़रमाता है: कोई बन्दा है जो मुझसे मग़्फ़िरत और

1-पूरे चाँद वाली रातें, 2-प्रथम दस दिन, 3-सूर्यास्त।

बख़्शिश तलब करे और मैं उसकी मग़्फ़िरत का फ़ैसला करूँ, कोई बन्दा है जो रोज़ी माँगे और मैं उसके लिये रोज़ी का फ़ैसला करूँ, कोई मुब्तलाए मुसीबत बन्दा है जो मुझसे सेहत व आफ़ियत[1] का सवाल करे और मैं उसे आफ़ियत अता करूँ। इसी तरह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के हाजतमन्दों[2] को अल्लाह तआला पुकारते हैं कि वे उस वक़्त अपनी हाजतें माँगें और मैं अता करूँ। ग़ुरूबे आफ़ताब से लेकर सुब्हे सादिक़ तक अल्लाह तआला की रहमत इसी तरह अपने बन्दों को उस रात में पुकारती रहती है।

(सुनन इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

पीर[3] व जुमेरात का रोज़ा

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पीर व जुमेरात के रोज़े रखा करते थे। (जामे तिर्मिज़ी, नसाई, मआरिफ़ुल् हदीस)

यौमे आशूरा[4] का रोज़ा

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यौमे आशूरा में रोज़े रखना अपना मामूल बना लिया और मुसलमानों को भी इसका हुक्म दिया, तो बाज़ अस्हाब ने अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह! इस दिन को यहूद व नसारा बड़े दिन की हैसियत से मानते हैं (और ख़ास इस दिन हमारे रोज़ा रखने से उनके साथ इश्तिराक[5] व तशब्बुह[6] वाली बात बाक़ी न रहे?) तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि इन्शाअल्लाह तआला जब अगला साल आयेगा तो हम नवीं को भी रोज़ा रखेंगे। अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं- लेकिन अगले साल का माहे मुहर्रम आने से पहले ही रसूलुल्लाह

1-चैन, सुकून, 2-ज़रूरतमन्दों, 3-सोमवार, 4-मुहर्रम की दसवीं तारीख़ (यौम-दिन), 5-समानता, 6-एकरूपता।

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात[1] वाके़[2] हो गई।

(सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सौमे-विसाल[3] (लगातार रोज़े रखना)

सौमे-विसाल पर आप सल्ल० का अ़मल लेकिन सहाबा को मुमानअ़त

आप सल्ल० रमज़ान शरीफ़ में कस़रत से कई अक़्साम[4] की इबादतें करते, चुनांचे रमज़ानुल् मुबारक में हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से आप क़ुरआन मजीद की मंज़िलों की तकरार करते। जब हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात होती तो आप सल्ल० तेज़ हवा से भी ज़्यादा शिद्दत के साथ सख़ावत[5] करते। आप सल्ल० तमाम लोगों से बहुत ज़्यादा सख़ी थे लेकिन रमज़ान में तो सदक़ात और एहसान, तिलावते क़ुरआन मजीद, नमाज़, ज़िक्र और एतिकाफ़ में अज़ हद इज़ाफ़ा[6] हो जाता और दूसरे महीनों की निस्बत[7] रमज़ानुल् मुबारक के महीने को इबादत के लिये मख़्सूस फ़रमा लेते यहाँ तक कि बाज़ औक़ात आप सौमे विसाल (मुसलसल रोज़े) रखते ताकि आप हर वक़्त अपने परवरदिगार की इबादत में मसरूफ़[8] रह सकें लेकिन आप सल्ल० सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम को सौमे विसाल से मना फ़रमाते थे। (ज़ादुल्-मआ़द)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रमज़ानुल् मुबारक की बाज़ रातों में पै-दर-पै[9] रोज़े रखते बग़ैर इसके कि खायें या पियें और इफ़्तार करें और सहाबा किराम को रहमत व शफ़्क़त और दूरअन्देशी के लिहाज़ से इस अम्र[10] से मना फ़रमाते और ना पसन्द करते जैसा कि उम्मुल् मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सौमे विसाल से मना फ़रमाया है।

1-निधन, 2-घटित, 3-लगातार रोज़े रखना, 4-प्रकार, 5-दानशीलता, 6-सीमा से अधिक वृद्धि, 7-अपेक्षाकृत, 8-व्यस्त, 9-निरन्तर, 10-कार्य।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम का इर्शाद है:-

لَا تُوَاصِلُوْا

"ला तुवासिलू" सौमे विसाल न रखो (मदारिजुन्नुबुव्वा)

तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! जब आप सौमे विसाल रखते हैं तो हमें क्यों मना करते हैं। बावजूदे कि हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुताबअत[1] की तमन्ना रखते हैं तो फ़रमाया:-

لَسْتُ كَأَحَدِكُمْ

"लस्तु कअहदिकुम" "मैं तुम में से किसी के मानिन्द[2] नहीं" और एक रिवायत में आया है कि:-

أَيُّكُمْ مِثْلِي

"अय्युकुम मिस्ली" तुम में से कौन मेरी मिस्ल[3] है।

إِنِّي أَبِيْتُ عِنْدَ رَبِّي

"इन्नी अबीतु इन्द *रब्बी"* मैं अपने रब के हुज़ूर शब बाशी[4] करता हूँ क्योंकि वह मेरा पालने वाला तर्बियत फ़रमाने वाला है।

يُطْعِمُنِي وَيَسْقِيْنِي

"युत्इमुनी व यस्क़ीनी" वह मुझे खिलाता और पिलाता है और एक रिवायत में है– वह खिलाने वाला और पिलाने वाला है जो खिलाता है और पिलाता है (और मुहक़्क़िक़ीन[5] के नज़्दीक इससे मुराद व मुख़्तार यह है कि ग़िज़ाए रूहानी मुराद है) वल्लाहु अअ्लमु बिहक़ीक़तिल हाल[6], इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैह भी सौमे विसाल को नाजाइज़ क़रार देते हैं।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-अनुसरण, 2-समान, 3-सदृश, 4-रात गुज़ारना, 5-खोज करने वाले, 6-वास्तविक स्थिति अल्लाह जाने।

ईदैन के आमाले मस्नूना

1- हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दोनों ईदों में गुस्ल करना साबित है। हज़रत ख़ालिद बिन सअद से मर्वी है कि आपकी आदते करीमा थी कि ईदुल्-फ़ित्र, यौमुन्नहर[1], यौमे अरफ़ा[2] में गुस्ल फ़रमाया करते थे।

2- हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईद के दिन ख़ूबसूरत और उम्दा लिबास ज़ेबे-तन फ़रमाते। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी सब्ज़ व सुर्ख़ धारीदार चादर शरीफ़ ओढ़ते थे। यह चादर यमन की होती जिसे बुर्दे-यमानी कहा जाता है, वह यही चादर है। ईद के लिये ज़ेबो-ज़ीनत[3] करना मुस्तहब[4] है, मगर लिबास मश्रूअ[5] हो।

3- हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते करीमा यह थी कि ईदुल्-फ़ित्र के दिन ईदगाह जाने से पहले चन्द खजूरें तनावुल[6] फ़रमाते थे उनकी तादात ताक़[7] होती यानी तीन, पांच, सात वग़ैरा ।

(बुख़ारी तबरानी)

4- ईदुल्-अज़्हा के दिन नमाज़ से वापस आने से पहले कुछ न खाते, चुनांचे हदीस शरीफ़ में है कि ईदुल्-फ़ित्र को बग़ैर कुछ खाये न निकलते और ईदुल्-अज़्हा को बग़ैर कुछ खाये निकलते जब तक कि नमाज़े ईद न पढ़ लेते और क़ुर्बानी न कर लेते न खाते थे, फिर अपनी क़ुर्बानी के गोश्त में से कुछ तनावुल फ़रमाते। (जामे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मदारिजुन्नुबुव्वा)

ईदगाह

5- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते करीमा थी कि नमाज़े ईद, ईदगाह (मैदान) में अदा फ़रमाते थे। (मुस्लिम, बुख़ारी)

1-हज की दसवीं तारीख़ जब क़ुर्बानी की जाती है, 2-अरबी ज़िल्हिज्जा महीने का नवां दिन, जिस दिन हज होता है, 3-सजना-सँवरना, 4-पुनीत, 5-इस्लामी नियमअनुसार उचित, 6-भोजन आदि खाना, 7-विषम संख्या,

यहाँ से मालूम होता है कि नमाज़े ईद के लिये मैदान में निकलना मस्जिद में नमाज़ अदा करने से अफ़ज़ल है, इसलिये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बावजूद इस फ़ज़्ल व शरफ़[1] के जो आपकी मस्जिद शरीफ़ को हासिल है, नमाज़े ईद के लिये ईदगाह (मैदान) में बाहर तशरीफ़ ले जाते थे लेकिन अगर कोई उज़्र[2] लाहिक़[3] हो तो नमाज़े ईद मस्जिद में भी जाइज़ है। (अबू दाऊद, मदारिजुन्नुबुव्वा)

6- ईदैन में बकस्रत तक्बीर कहना सुन्नत है। (तबरानी) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्फ़ूअ़न रिवायत है कि अपनी ईदों को बकस्रत तक्बीर से मुज़य्यन[4] करो। (तबरानी)

7- हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ईदगाह तक पापियादा[5] तशरीफ़ ले जाते (सुनन इब्ने माजा) और इस पर अ़मल करना सुन्नत है, बाज़ उलमा ने मुस्तहब[6] कहा है।

8- हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नमाज़े ईदुल्फ़ित्र में ताख़ीर फ़रमाते और नमाज़े ईदुल्-अज़्हा को जल्दतर पढ़ते।

(मदारिजुन्नुबुव्वा, मुस्नदे शाफ़ई)

9- हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब ईदगाह में पहुँच जाते तो फ़ौरन नमाज़ शुरू फ़रमा देते, न अज़ान न इक़ामत और न अस्सलातु जामिआ़[7] वग़ैरा की निदा[8] कुछ न होता।

10- तक्बीराते ईदैन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अ़मल में इख़्तिलाफ़ है और मज़्हबे हनफ़िया में मुख़्तार[9] यह है कि तीन तक्बीरें रकअ़ते अव्वल में क़िराअत से पहले और तीन तक्बीरें दूसरी रकअ़त में क़िराअत के बाद हैं।

11- हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नमाज़ ख़ुत्बा से पहले पढ़ते और जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो खड़े होकर ख़ुत्बा फ़रमाते।

1-प्रतिष्ठा, 2-विवशता, 3-मिलनेवाला, युक्त होने वाला, 4-सुसज्जित, 5-पैदल, 6-उचित, 7-नमाज़ के लिये लोगों को एकत्रित करने के लिये आवाज़ देना, 8-आवाज़, 9-इष्ट।

तज़्कीर[1] व मौइज़त[2]

15- नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ मुकम्मल फ़रमा लेते तो फ़ारिग़ होने के बाद लोगों के मुक़ाबिल खड़े हो जाते, लोग सफ़ों में बैठे होते तो आप उनके सामने वाज़ कहते, वसिय्यत करते, अम्र व नही फ़रमाते[3] और अगर लश्कर[4] भेजना चाहते तो उसी वक़्त भेजते या किसी बात का हुक्म करना होता तो हुक्म फ़रमाते, ईदगाह में कोई मिम्बर न था (जिस पर चढ़कर वाज़ फ़रमाते हों) न मदीना का मिम्बर यहाँ लाया जाता, बल्कि आप ज़मीन पर खड़े होकर तक़रीर करते। (ज़ादुल्-मआद)

16- नीज़[5] मर्वी[6] है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अरफ़ा के दिन नवीं तारीख़, फ़ज्र की नमाज़ से लेकर अय्यामे तश्रीक़ के आख़िरी दिन (तेरहवीं तारीख़) की नमाज़े अस्र तक इस तरह तक्बीरें कहते:-

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

"अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द" *(ज़ादुलमआद)*

नमाज़े ईद की तर्कीब

17- नमाज़ इस तरह शुरू करे कि क़िब्ला की तरफ़ मुँह करके इमाम की इक़्तिदा[7] में अल्लाहु अक्बर कहते हुए रफ़्-ए-यदैन करे[8] और हाथ बांध ले। पहली रकअत में 'सुब्हानकल्लाहुम्म' पढ़ने के बाद क़िराअत से पहले हाथ कानों तक उठाकर 'अल्लाहु अक्बर' कहे और हाथ छोड़ दे, दूसरी बार फिर कानों तक हाथ उठाकर तक्बीर कहे और फिर हाथ छोड़ दे, तीसरी बार भी इसी तरह हाथ उठाकर तक्बीर कहे और फिर हाथ बांध ले और क़िराअत

1-याद दिलाना, 2-सदुपदेश, 3-अच्छी बातों का हुक्म करते और बुरी बातों से मना फ़रमाते, 4-फ़ौज, 5-इसके अतिरिक्त, 6-उद्धृत, 7- अनुसरण, 8-दोनों हाथ उठाए।

सद्क़ा-ए-फ़ित्र का वुजूब[1]

24- हर मुसलमान आक़िल[2] आज़ाद (हर मर्द व औ़रत) पर वाजिब है जब्कि वह मालिके निसाब[3] या मुसावी[4] मालिके निसाबे हो, ख़्वाह नक़दी की शक्ल में या ज़रूरत से ज़्यादा सामान की शक्ल में हो या माले तिजारत हो, रिहाइशगाह के मकान से ज़ाइद मकान हो, अपनी तरफ़ से और अपने उन नाबालिग़ बच्चों की तरफ़ से जो उसकी ज़ेरे-कफ़ालत[5] हों निस्फ़ साअ़ (यानी पौने दो सेर गेहूँ) या उसकी क़ीमत अदा करे। सद्क़-ए-फ़ित्र नमाज़े ईदुल्-फ़ित्र से पहले अदा करना सुन्नत है। (बिहिश्ती गौहर)

मस्नून आमाले ईदुल्-अज़्हा

1- ईदुल्-अज़्हा की रात में तलबे सवाब के लिये बेदार रहना[6] और इबादत में मश्ग़ूल रहना सुन्नत है।

2- ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़ की सुबह से तेरहवीं तारीख़ की अ़स्र तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद जो बाजमाअ़त हो और मुक़ीम होने की हालत में अदा की जाए, एक मर्तबा तक्बीराते तश्रीक़ बुलन्द आवाज़ से अदा करना वाजिब है। मुसाफ़िर, औ़रत और मुन्फ़रिद[7] के लिये भी बाज़ उलमा का क़ौल है, इसलिये कह लें तो बेहतर है, लेकिन औ़रत अगर तक्बीर कहे तो आहिस्ता कहे।

3- नमाज़े ईदुल्-फ़ित्र से पहले कुछ खजूरें खाना और ईदुल्-अज़्हा में अगर क़ुर्बानी करें तो नमाज़े ईदुल्-अज़्हा से पहले कुछ न खाना, नमाज़ के बाद अपनी क़ुर्बानी के गोश्त में से खाना।

4- जिसका क़ुर्बानी का इरादा हो उसको बक़रा ईद का चाँद देखने के बाद जब तक क़ुर्बानी न कर ले उस वक़्त तक ख़त न बनवाना और नाख़ून न कतरवाना मुस्तहब[8] है। (बिहिश्ती गौहर)

1-वाजिब करना, अनिवार्यता, 2-बुद्धिमान, 3-धन का स्वामी, 4-समतुल्य, 5-भरण-पोषण के अधीन, 6-जागना, 7-अकेला, 8-पुनीत।

क़ुर्बानी का सवाब

5- हज़रत ज़ैद बिन अर्कम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सहाबा किराम ने पूछा या रसूलल्लाह! यह क़ुर्बानी क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया तुम्हारे (नसबी या रूहानी) बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तरीक़ा है। उन्होंने अर्ज़ किया हमको इसमें क्या मिलता है, या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आपने फ़रमाया- हर बाल के बदले में एक नेकी। उन्हों ने अर्ज़ किया कि अगर ऊन (वाला जानवर) हो? आपने फ़रमाया कि हर ऊन के बदले भी एक नेकी। (हाकिम)

उम्मत की तरफ़ से क़ुर्बानी

हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (एक दुंबे की अपनी तरफ़ से क़ुर्बानी की और) दूसरे दुंबे के ज़िब्ह में फ़रमाया कि यह (क़ुर्बानी) उसकी तरफ़ से है जो मेरी उम्मत में मुझ पर ईमान लाया और जिसने मेरी तस्दीक़[1] की।

(मूसली व तबरानी, कबीर व औसत- ये हदीसें जमउल्-फ़वाइद में हैं)

फ़ायदा: मतलब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी उम्मत को सवाब में शामिल करना था, न यह कि क़ुर्बानी सबकी तरफ़ से इस तरह हो गई कि अब किसी के ज़िम्मे क़ुर्बानी बाक़ी नहीं रही।

ग़ौर करने की बात है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुर्बानी में उम्मत को याद रखा तो अफ़्सोस है कि उम्मती हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को याद न रखें और एक हिस्सा भी आपकी तरफ़ से न करें। (हयातुल्-मुस्लिमीन)

1-सच्चा बताना, पुष्टि।

हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से क़ुर्बानी किया करो इससे महब्बत बढ़ती है। (अबू दाऊद)

उम्मुल् मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जब ज़िल्हिज्जा का पहला अश्रा शुरू हो जाए (यानी ज़िल्हिज्जा का चाँद देख लिया जाए) और तुममें से किसी का इरादा क़ुर्बानी करने का हो तो उसको चाहिए कि अब क़ुर्बानी करने तक अपने बाल या नाख़ून बिल्कुल न तराशे[1]। (यह मुस्तहब है ज़रूरी नहीं) (मआरिफ़ुल् हदीस, सहीह मुस्लिम)

क़ुर्बानी का तरीक़ा

जब आप सल्ल० क़ुर्बानी के लिये बकरी को ज़िब्ह करते तो अपना पाँव उसके चेहरे पर रखते फिर *"बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर"*

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहते और ज़िब्ह करते।

आपने लोगों को हुक्म दिया कि जब ज़िब्ह करें तो अच्छे अन्दाज़ से करें यानी छूरी तेज़ हो और जल्दी ज़िब्ह करें। (ज़ादुल्मआद)

अबू दाऊद में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि वह ईदगाह में ईदुल्-अज़्हा के दिन आप सल्ल० के हमराह[2] हाज़िर हुए। जब आपने ख़ुत्बा मुकम्मल कर लिया तो एक मेंढा लाया गया। आपने उसे अपने हाथ से ज़िब्ह किया और *बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर* पढ़ा और फ़रमाया कि यह मेरी तरफ़ से और मेरी उम्मत के हर उस आदमी की जानिब से है, जिसने ज़िब्ह नहीं किया और सहीहैन में मर्वी है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईदगाह में नह्र[3] और ज़िब्ह किया करते। (ज़ादुल्-मआद)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि क़ुर्बानी के दिन यानी ईदि क़ुर्बान के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

1-न काटे, 2-साथ, 3-ऊँट की क़ुर्बानी।

सियाह सफ़ेदी माइल सींगों वाले दो ख़स्सी मेंढों की क़ुर्बानी की। जब आपने उनका रुख़ सहीह यानी क़िब्ला की तरफ़ कर लिया तो यह दुआ पढ़ी:-

إِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ عَلٰی مِلَّةِ اِبْرَاهِیْمَ حَنِیْفًا ۝ وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۝ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ ۝ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ۔ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ عَنْ مُّحَمَّدٍ وَّاُمَّتِهٖ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ۔

"इन्नी वज्जहतु वज्हिय लिल्लज़ी फ़तरस्-समावाति वल् अर्ज़ अ़ला मिल्लति इब्राहीम हनीफ़ंव् व मा अना मिनल् मुश्रिकीन। इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन। ला शरीक लहू व बिज़ालिक उमिर्तु व अना अव्वलुल् मुस्लिमीन। अल्लाहुम्म मिन्क वलक अम् मुहम्मदिन् व उम्मतिही बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर।" फिर ज़िब्ह किया।

अनुवाद: मैंने उस ज़ात की तरफ़ अपना रुख़ मोड़ा जिसने आसमानों को और ज़मीनों को पैदा किया, इस हाल में कि मैं इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) हनीफ़ के दीन पर हूँ और मुश्रिकों में से नहीं हूँ। बेशक मेरी नमाज़, मेरी इबादत, मेरा मरना और जीना सब अल्लाह तआ़ला के लिये हैं, जो रब्बुल् आ़लमीन[1] है, जिसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ। ऐ अल्लाह! यह क़ुर्बानी तेरी तौफ़ीक़ से है और तेरे ही लिये है। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और उनकी उम्मत की तरफ़ से, शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, अल्लाह तआ़ला सबसे बड़ा है। (अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माजा, दारमी)

ज़िब्ह करने के बाद पढ़ने के लिये यह दुआ़ मासूर[2] है:-

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّیْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِیْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّخَلِیْلِكَ اِبْرَاهِیْمَ عَلَیْهِ السَّلَامُ۔

1-समस्त लोकों का स्वामी, 2-उद्धृत, पुण्यकर्म।

क़ुर्बानी का सवाब

5- हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सहाबा किराम ने पूछा या रसूलल्लाह! यह क़ुर्बानी क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया तुम्हारे (नसबी या रूहानी) बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तरीक़ा है। उन्होंने अर्ज़ किया हमको इसमें क्या मिलता है, या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आपने फ़रमाया- हर बाल के बदले में एक नेकी। उन्हों ने अर्ज़ किया कि अगर ऊन (वाला जानवर) हो? आपने फ़रमाया कि हर ऊन के बदले भी एक नेकी। (हाकिम)

उम्मत की तरफ़ से क़ुर्बानी

हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (एक दुंबे की अपनी तरफ़ से क़ुर्बानी की और) दूसरे दुंबे के ज़िब्ह में फ़रमाया कि यह (क़ुर्बानी) उसकी तरफ़ से है जो मेरी उम्मत में मुझ पर ईमान लाया और जिसने मेरी तस्दीक़[1] की।

(मूसली व तबरानी, कबीर व औसत- ये हदीसें जमउल्-फ़वाइद में हैं)

फ़ायदा: मतलब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी उम्मत को सवाब में शामिल करना था, न यह कि क़ुर्बानी सबकी तरफ़ से इस तरह हो गई कि अब किसी के ज़िम्मे क़ुर्बानी बाक़ी नहीं रही।

ग़ौर करने की बात है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुर्बानी में उम्मत को याद रखा तो अफ़्सोस है कि उम्मती हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को याद न रखें और एक हिस्सा भी आपकी तरफ़ से न करें। (हयातुल्-मुस्लिमीन)

1-सच्चा बताना, पुष्टि।

हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से क़ुर्बानी किया करो इससे महब्बत बढ़ती है। (अबू दाऊद)

उम्मुल् मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जब ज़िल्हिज्जा का पहला अ़श्रा शुरू हो जाए (यानी ज़िल्हिज्जा का चाँद देख लिया जाए) और तुममें से किसी का इरादा क़ुर्बानी करने का हो तो उसको चाहिए कि अब क़ुर्बानी करने तक अपने बाल या नाख़ून बिल्कुल न तराशे[1]। (यह मुस्तहब है ज़रूरी नहीं) (मआ़रिफ़ुल् हदीस, सहीह़ मुस्लिम)

क़ुर्बानी का तरीक़ा

जब आप सल्ल० क़ुर्बानी के लिये बकरी को ज़िब्ह करते तो अपना पाँव उसके चेहरे पर रखते फिर *"बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर"*

بِسْمِ اللهِ اَللهُ اَكْبَرُ कहते और ज़िब्ह करते।

आपने लोगों को हुक्म दिया कि जब ज़िब्ह करें तो अच्छे अन्दाज़ से करें यानी छूरी तेज़ हो और जल्दी ज़िब्ह करें। (ज़ादुल्मआ़द)

अबू दाऊद में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि वह ईदगाह में ईदुल्-अज़्हा के दिन आप सल्ल० के हमराह[2] हाज़िर हुए। जब आपने ख़ुत्बा मुकम्मल कर लिया तो एक मेंढा लाया गया। आपने उसे अपने हाथ से ज़िब्ह किया और *बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर* पढ़ा और फ़रमाया कि यह मेरी तरफ़ से और मेरी उम्मत के हर उस आदमी की जानिब से है, जिसने ज़िब्ह नहीं किया और सहीहैन में मर्वी है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ईदगाह में नह्र[3] और ज़िब्ह किया करते। (ज़ादुल्-मआ़द)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि क़ुर्बानी के दिन यानी ईदि क़ुर्बान के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

1-न काटे, 2-साथ, 3-ऊँट की क़ुर्बानी।

सियाह सफ़ेदी माइल सींगों वाले दो ख़स्सी मेंढों की क़ुर्बानी की। जब आपने उनका रुख़ सहीह यानी क़िब्ला की तरफ़ कर लिया तो यह दुआ पढ़ी:-

إِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ عَلٰى مِلَّةِ إِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا ٥ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ٥ إِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ۔ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ عَنْ مُحَمَّدٍ وَأُمَّتِهٖ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ أَكْبَرُ۔

"इन्नी वज्जहतु वज्हिय लिल्लज़ी फ़तरस्-समावाति वल् अर्ज़ अ़ला मिल्लति इब्राहीम हनीफ़ंव् व मा अना मिनल् मुश्रिकीन। इन्न सलाती व नुसुकी व मह्याय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन। ला शरीक लहू व बिज़ालिक उमिर्तु व अना अव्वलुल् मुस्लिमीन। अल्लाहुम्म मिन्क वलक अ़म् मुहम्मदिन् व उम्मतिही बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर।" फिर ज़िब्ह किया।

अनुवाद: मैंने उस ज़ात की तरफ़ अपना रुख़ मोड़ा जिसने आसमानों को और ज़मीनों को पैदा किया, इस हाल में कि मैं इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) हनीफ़ के दीन पर हूँ और मुश्रिकों में से नहीं हूँ। बेशक मेरी नमाज़, मेरी इबादत, मेरा मरना और जीना सब अल्लाह तआ़ला के लिये हैं, जो रब्बुल् आ़लमीन[1] है, जिसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ। ऐ अल्लाह! यह क़ुर्बानी तेरी तौफ़ीक़ से है और तेरे ही लिये है। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और उनकी उम्मत की तरफ़ से, शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, अल्लाह तआ़ला सबसे बड़ा है। (अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माजा, दारमी)

ज़िब्ह करने के बाद पढ़ने के लिये यह दुआ मासूर[2] है:-

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَخَلِيْلِكَ إِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ۔

1–समस्त लोकों का स्वामी, 2–उद्धृत, पुण्यकर्म।

"अल्लाहुम्म तक़ब्बलहु मिन्नी कमा तक़ब्बल्त मिन् हबीबिक मुहम्मदिंव् व ख़लीलिक इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम।"

अनुवाद: ऐ अल्लाह! इसे मेरी जानिब से क़बूल फ़रमा लीजिए जैसे कि आप अपने हबीब सय्यिदना मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और अपने ख़लील[1] सय्यिदना इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की क़ुर्बानियाँ क़बूल फ़रमा चुके हैं।

अगर यही दुआ दूसरे की तरफ़ से पढ़ी जाए तो दुआए मज़्कूरा[2] में 'मिन्नी' के बजाए 'मिन' (مِنْ) कहे और फिर उसका नाम ले।

□□□

हज

हज व उम्रा

हज की फ़र्ज़ियत[3]

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसके पास सफ़रे हज का ज़रूरी सामान हो, उसको सवारी मुयस्सर हो जो बैतुल्लाह[4] तक पहुँचा सके और फिर वह हज न करे तो कोई फ़र्क़ नहीं कि वह यहूदी होकर मरे या नस्रानी होकर और यह इसलिये कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि अल्लाह के लिये बैतुल्लाह का हज फ़र्ज़ है, उन लोगों पर जो उस तक जाने की इस्तिताअ़त[5] रखते हों। (जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

उम्रे की हक़ीक़त

हज के तर्ज़ की एक दूसरी इबादत और भी है यानी उम्रा जो कि

1-मित्र, 2-उपर्युक्त, 3-अनिवार्यताएँ, 4-अल्लाह के घर, 5-शक्ति।

सुन्नते मुअक्कदा है, जिसकी हक़ीक़त हज ही के बाज़े आशिक़ाना अफ़आल[1] हैं इसलिये इसका लक़ब हजे असग़र[2] है। (हयातुल् मुस्लिमीन)

हज और उम्रा की बरकत

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हज और उम्रा साथ-साथ करो, दोनों फ़क्र[3] व मुहताजी और गुनाहों को इस तरह दूर कर देते हैं जिस तरह लोहार और सुनार की भट्ठी लोहे और सोने-चाँदी का मैल-कुचैल दूर कर देती है और हजे मब्रूर[4] का सिला[5] और सवाब तो बस जन्नत ही है। (जामे तिर्मिज़ी, सुनने नसाई, मआरिफ़ुल् हदीस)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है:-

हज और उम्रा के लिये जाने वाले अल्लाह के ख़ुसूसी[6] मेहमान हैं। वे अल्लाह तआला शानुहू से दुआ करें तो अल्लाह क़बूल फ़रमाता है और मग़फ़िरत तलब करें तो बख़्श देता है। (तबरानी, मआरिफ़ुल् हदीस)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है- अल्लाह हर रोज़ अपने हाजी बन्दों के लिये एक सौ बीस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है, जिसमें साठ रहमतें उनके लिये होती हैं जो बैतुल्लाह का तवाफ़[7] करते हैं, चालीस उनके लिये जो वहाँ नमाज़ पढ़ते हैं और बीस उन लोगों के लिये जो सिर्फ़ काबा को देखते रहते हैं। (बैहक़ी)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया- जिसने पचास बार बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लिया वह अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो गया जैसे उसकी माँ ने उसको आज ही जन्म दिया है। (तिर्मिज़ी)

1-प्रेमियों जैसा कार्य-समूह, 2-छोटा हज, 3-दरिद्रता, 4-वह हज जो अल्लाह की ओर से सम्मानित किया गया हो, 5-बदला, 6-विशिष्ट, 7-परिक्रमा।

हाज़िरी-ए-अ़रफ़ात ऐने[1] हज है

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन यामर दुअली से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना, आप फ़रमाते थे- हज (का एक ख़ासुल-ख़ास रुक्न जिस पर हज का दारोमदार है) वुक़ूफ़े अ़रफ़ा[2] है, जो हाजी मुज़्दलिफ़ा[3] वाली रात में (यानी नवीं और दसवीं ज़िल्हिज्जा की दरमियानी शब में भी सुब्हे सादिक़ से पहले अ़रफ़ात में पहुँच जाये तो उसने हज पा लिया और उसका हज हो गया। यौमुन्नहर (यानी 10 ज़िल्हिज्जा) के बाद मिना में क़ियाम के तीन दिन में (जिनमें तीनों जमरों की रमी[4] की जाती है, 11, 12 और 13 ज़िल्हिज्जा) अगर कोई आदमी सिर्फ़ दोनों यानी 11 और 12 ज़िल्हिज्जा को रमी करके वहाँ से जाए तो उस पर भी कोई गुनाह और इल्ज़ाम नहीं है, दोनों बातें जाइज़ हैं। (जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, सुनने नसाई, सुनने इब्ने माजा, सुनने दारमी, मआ़रिफुल् हदीस)

अ़रफ़ात की मंज़िलत[5]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने (एक लम्बी हदीस में) फ़रमाया कि जब अ़रफ़ा[6] का दिन होता है (जिसमें हाजी लोग अ़रफ़ात में जमा होते हैं) तो अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़ख़्र के साथ फ़रमाता है कि बन्दों को देखो कि मेरे पास दूर-दराज़ रास्ते से इस हालत में आये हैं कि परेशान बाल हैं और ग़ुबार-आलूद[7] बदन हैं और धूप में जल रहे हैं। मैं तुमको गवाह करता हूँ कि मैंने इनको बख़्श दिया। (बैहक़ी व इब्ने ख़ुज़ैमा, हयातुल्-मुस्लिमीन)

हज़रत इब्ने अबी हातिम ने इसको इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत किया है। (कज़ा फ़िर्रूह व बयानुल् क़ुरआन)

1-यथार्थ, 2-अ़रफ़ा नामक स्थान पर ठहरना, 3-स्थान विशेष, 4-शैतान पर कंकड़ियां फेंकी जाती हैं।, 5-दर्जा, 6-ज़िल्हिज्जा की नवीं तारीख़, 7-धूल से भरे हुए।

अरफ़ात की दुआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– अरफ़ा के दिन बेहतरीन दुआ और बेहतरीन कलिमा जो मेरी ज़बान से और मुझसे पहले नबियों की ज़बान से अदा हुआ वह यह कलिमा है:–

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔

"ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु वलहुल् हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर।"

अनुवाद: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी के लिये हम्द[1] है और वह हर चीज़ पर क़ादिर[2] है। (जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ صَدْرِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَيَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّسْوَاسِ الصَّدْرِ وَشَتَّاتِ الْاَمْرِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ فِي اللَّيْلِ وَشَرِّ مَا يَلِجُ فِي النَّهَارِ وَشَرِّ مَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيَاحُ وَشَرِّ بَوَآئِقِ الدَّهْرِ۔

अल्लाहुम्मज्अ़ल् फ़ी क़ल्बी नूरंव् व फ़ी सद्री नूरंव् व फ़ी सम्ई नूरंव् व फ़ी बसी नूरा। अल्लाहुम्मश्रह्ली सद्री व यस्सिर्ली अम्री व अऊ़ज़ु बिक मिंव् वस्वासिस्सद्रि व शत्तातिल् अम्रि व फ़ित्नतिल् क़ब्र। अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन् शर्रि मा यलिजु फ़िल् लैलि व शर्रि मा यलिजु फ़िन्नहारि व शर्रि मा तहुब्बु बिहिर्रियाहु व शर्रि बवाइक़िद्दहरि।

1–प्रशंसा, 2–समर्थ।

अनुवादः ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर करे दे और मेरे कानों में नूर कर दे और मेरी आँखों में नूर कर दे। ऐ अल्लाह! मेरा सीना खोल दे और मेरे कामों को आसान फ़रमा दे और मैं सीने के वस्वसों[1] और कामों की बदनज़्मी[2] और क़ब्र के फ़ित्ने से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उस चीज़ के शर[3] से जो रात में दाख़िल होती है और उसके शर से जो दिन में दाख़िल होती है और उसके शर से जिसे हवाएँ लेकर चलती हैं और ज़माने की मुसीबतों के शर से।

और दुआ करते वक़्त आपने सीने तक दोनों हाथ उठा रखे थे, दस्ते तलब[4] बढ़ाते वक़्त आपने फ़रमाया कि यौमे अ़रफ़ा की दुआ तमाम दुआओं से बेहतर होती है। (ज़ादुलमआद)

मीक़ात[5]

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़ुलहुलैफ़ा को अहले मदीना का मीक़ात मुक़र्रर किया और हजफ़ा को अहले शाम (सीरीया वालों) का और क़र्नल्-मनाज़िल को अहले नज्द का और यलमलम को अहले यमन का, पस[6] ये चारों मक़ामात ख़ुद उनके रहने वालों के लिये मीक़ात हैं और उन सब लोगों के लिये जो दूसरे इलाक़ों से इन मक़ामात पर होते हुए आयें जिनका इरादा हज या उम्रे का हो। पस जो लोग उन मक़ामात के रहने वाले हों (उन मक़ामात से मक्का मुअ़ज़्ज़मा की तरफ़ रहने वाले हों) तो वह अपने घर ही से एहराम बाँधेंगे और यह क़ाइदा इसी तरह चलेगा, यहाँ तक कि ख़ास मक्का के रहने वाले मक्का ही से एहराम बाँधेंगे।

(सहीह मुस्लिम व बुख़ारी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-बुरी शंका, 2-अव्यवस्था, 3-बुराई, 4-मांगने के लिए हाथ, 5-हाजियों के एहराम (बिना सिली हुई दो चादरें) बाँधने का स्थान-विशेष, 6-अतः।

एहराम का लिबास

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया कि मुहरिम (हज व उम्रे का एहराम बाँधने वाला) क्या-क्या कपड़े पहन सकता है? आप सल्ल० ने फ़रमाया (हालते एहराम में) न तो कुर्ता, क़मीस पहनो और न (सर पर) अमामा[1] बाँधो और न शल्वार और पाजामा पहनो और न बारानी[2] पहनो और न पाँव में मोज़े पहनो, अलावा इसके कि किसी आदमी के पास पहनने के लिये चप्पल या जूता न हों (तो वह मज्बूरन पाँव की हिफ़ाज़त के लिये मोज़े पहन ले) और उनको टख़नों के नीचे से काट कर जूता सा बना ले (आगे आपने फ़रमाया कि एहराम में) ऐसा भी कोई कपड़ा न पहनो, जिसको ज़ाफ़रान या वर्स लगा हो।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप मना फ़रमाते थे औरतों को एहराम की हालत में दस्ताने पहनने से और चेहरे पर नक़ाब डालने और उन कपड़ों के इस्तेमाल से जिनको ज़ाफ़रान या वर्स लगी हो और इनके अलावा वह जो रंगीन कपड़ा चाहें तो पहन सकती हैं। कुसुम्बी कपड़ा हो या रेशमी और इसी तरह वह चाहें तो ज़ेवर भी पहन सकती हैं और शल्वार, क़मीस और मोज़े भी पहन सकती हैं।

(मआरिफ़ुल् हदीस, सुनने अबी दाऊद)

एहराम में मर्दों के लिये सिर्फ़ दो चादरें हैं- एक तहबन्द में बाँध ली जाती है, दूसरी बदन पर डाल ली जाती है, सर खुला रहता है, पाँव भी खुले रहते हैं, ऐसा जूता होना चाहिए कि जिससे पाँव के ऊपर का हिस्सा पंजे तक खुला रहे।

1-पगड़ी, 2-बरसाती या कोट आदि।

"अल्लाहुम्म तक़ब्बलहू मिन्नी कमा तक़ब्बल्त मिन् हबीबिक मुहम्मदिंव् व ख़लीलिक इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम।"

अनुवाद: ऐ अल्लाह! इसे मेरी जानिब से क़बूल फ़रमा लीजिए जैसे कि आप अपने हबीब सय्यिदना मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और अपने ख़लील[1] सय्यिदना इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की क़ुर्बानियाँ क़बूल फ़रमा चुके हैं।

अगर यही दुआ़ दूसरे की तरफ़ से पढ़ी जाए तो दुआ़ए मज़्कूरा[2] में 'मिन्नी' के बजाए 'मिन' (مِنْ) कहे और फिर उसका नाम ले।

ooo

हज

हज व उम्रा

हज की फ़र्ज़ियत[3]

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसके पास सफ़रे हज का ज़रूरी सामान हो, उसको सवारी मुयस्सर हो जो बैतुल्लाह[4] तक पहुँचा सके और फिर वह हज न करे तो कोई फ़र्क़ नहीं कि वह यहूदी होकर मरे या नस्रानी होकर और यह इसलिये कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि अल्लाह के लिये बैतुल्लाह का हज फ़र्ज़ है, उन लोगों पर जो उस तक जाने की इस्तिताअ़त[5] रखते हों। (जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

उम्रे की हक़ीक़त

हज के तर्ज़ की एक दूसरी इ़बादत और भी है यानी उम्रा जो कि

1-मित्र, 2-उपर्युक्त, 3-अनिवार्यताएँ, 4-अल्लाह के घर, 5-शक्ति।

का इरादा फ़रमाते तो सबसे बेहतरीन ख़ुशबू लगाते जो मुहय्या[1] हो सकती।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एहराम से क़ब्ल और एहराम खोलने के बाद ख़ुशबू लगाया करती थीं जिसमें मुश्क मिला होता था। गोया कि मैं आप सल्ल० के सरे मुबारक में ख़ुशबू की चमक देख रही हूँ। दर-आँहाले कि[2] आप सल्ल० मुहरिम[3] थे। (मुत्तफ़क़ अलैह, मिश्कात)

लेकिन जब मुहरिम हो जाए तो फिर ख़ुशबू इस्तेमाल करना मम्नूअ[4] है। एहराम की हालत में ख़ुशबू सूँघने के मुतअल्लिक़ जवामिउल फ़िक़ह लिअबी यूसुफ़ रह० में फ़रमाया है कि इसमें कोई हरज नहीं कि मुहरिम उस ख़ुशबू को सूंघ ले जो उसने एहराम से क़ब्ल लगा रखी है। (ज़ादुल्-मआद)

तल्बिया[5]

ख़ल्लाद बिन साइब ताबई अपने वालिद साइब बिन ख़ल्लाद अन्सारी से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरे पास जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आए और उन्होंने अल्लाह तआला की तरफ़ से मुझे हुक्म पहुँचाया कि मैं अपने साथियों को हुक्म दूँ कि वह तल्बिया बुलन्द आवाज़ से पढ़ें। (मुअत्ता इमाम मालिक, जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, नसाई, इब्ने माजा)

तल्बिया के कलिमात यह हैं:-

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ ـ

लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल् हम्द वन्निअ्मत लक वल् मुल्क ला शरीक लक।

1-उपलब्ध, 2-इस हाल में कि, 3-एहराम बांधने वाले, 4-निषिद्ध, 5-हाजियों का लब्बैक (हाज़िर हूँ) कहना।

अनुवादः मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, आपका कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूँ। बेशक सब तारीफ़ और नेअ़्मत आप ही के लिये है और सारा जहान भी आपका है। आपका कोई शरीक नहीं।

बस यही कलिमात आप तल्बिया में पढ़ते थे, इन पर किसी और कलिमात का इज़ाफ़ा नहीं फ़रमाते थे। (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)

दुआ बाद तल्बिया

अ़म्मारा बिन ख़ुज़ैमा बिन साबित अन्सारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब तल्बिया से फ़ारिग़ होते (यानी तल्बिया पढ़ कर मुहरिम होते) तो अल्लाह तआ़ला से उसकी रज़ा और जन्नत की दुआ़ करते और उसकी रहमत से दोज़ख़ से ख़लासी[1] और पनाह मांगते। (रवाहुश्शाफ़ई, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

तवाफ़[2] में ज़िक्र व दुआ़

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अस्साइब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तवाफ़ की हालत में रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद[3] के दरमियान (की मसाफ़त[4]) में यह दुआ़ पढ़ते हुए सुनाः–

﴿رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝﴾

[سورة البقرة آية: ۲۰۱

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतंव् व फ़िल् आख़िरति हसनतंव् वक़िना अ़ज़ाबन्नार।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रुक्ने यमानी पर सत्तर फ़िरिश्ते

1-छुटकारा, 2-परिक्रमा, 3-काला पत्थर, 4-दो स्थानों के मध्य की दूरी।

मुक़र्रर हैं जो हर उस बन्दे की दुआ पर आमीन कहते हैं जो उसके पास यह दुआ करे कि:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَالاٰخِرَةِ ـ رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ٥

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् अफ़्व वल्-आफ़ियत फ़िद्दुन्या वल् आख़िरति। रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतंव् व फ़िल् आख़िरति हसनतंव् वक़िना अज़ाबन्नारि। (मआरिफ़ुल् हदीस, सुनने इब्ने माजा)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मैं आपसे बख़्शिश और आफ़ियत[1] मांगता हूँ दुनिया में और आख़िरत में। ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।

इस्तिलाम[2]

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज्जतुल्-वदाअ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊँट पर सवार होकर बैतुल्लाह[3] का तवाफ़ किया। आप सल्ल० के हाथ में एक ख़म्दार[4] छड़ी थी, उसी से आप हज्रे अस्वद का इस्तिलाम फ़रमाते।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)

आबिस बिन रबीआ ताबई से रिवायत है कि मैंने हज़रत उम्र फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखा कि वह हज्रे अस्वद को बोसा[5] देते थे और कहते थे कि मैं यक़ीन के साथ जानता हूँ कि तू एक पत्थर है (तेरे अन्दर कोई ख़ुदाई की सिफ़त नहीं है) न तू किसी को नफ़ा पहुँचा सकता है, न नुक़्सान और अगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तुझे चूमते न देखा होता तो मैं तुझे न चूमता।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-सुख-शान्ति, 2-हाथ या मुँह से पत्थर चूमना, 3-अल्लाह का घर यानी काबा, 4-झुकी हुई, 5-चुम्बन।

मुल्तज़िम[1]

सुनने अबी दाऊद की रिवायत में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुल्तज़िम से इस तरह चिमट गये कि अपना सीना और अपना चेहरा उससे लगा दिया और हाथ भी पूरी तरह फैला कर उस पर रख दिये और फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इसी तरह करते देखा है। (मआ़रिफ़ुल् हदीस)

रमी[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दस्वीं ज़िल्हिज्जा को जम्र-ए-उक़्बा की रमी[3] चाश्त[4] के वक़्त फ़रमाई और उसके बाद अय्यामे तश्रीक़[5] में जम्रात[6] की रमी आप सल्ल० ने ज़वाले आफ़ताब[7] के बाद की।

(सहीह़ बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह अपने वालिद माजिद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुतअ़ल्लिक़ बयान फ़रमाते हैं कि रमीए जम्रात के बारे में उनका मामूल व दस्तूर यह था कि वह पहले जम्रा पर सात कंकड़ियां मारते और हर कंकड़ी पर ''अल्लाहु अक्बर'' कहते, उसके बाद आगे नशेब[8] में उतर के क़िब्ला-रु खड़े होते और हाथ उठाकर देर तक दुआ़ करते, फिर दरमियान वाले जम्रा पर भी इसी तरह सात कंकड़ियां मारते और हर कंकड़ी पर तक्बीर[9] कहते, फिर बायें जानिब नशेब में उतर के क़िब्ला-रु खड़े होते और देर तक खड़े रहते और हाथ उठाकर दुआ़ करते, फ़िर आख़िरी जम्रा (जम्रतुल्-उक़्बा) पर बतने वादी से सात कंकड़ियां मारते और हर

1-काबा में रुक्ने यमानी के सामने एक स्थान है जहाँ दुआ़ क़बूल होती है, 2-फेंकना, 3-अन्तिम जम्रे, (वह स्थान जहाँ शैतान ने इस्माईल अ़लैहिस्सलाम को बहकाने का प्रयत्न किया था) पर कंकड़ियां फेंकना, 4-सूर्योदय से एक पहर तक का समय, 5-ईदुल् अज़्हा में जो तीन दिन तक्बीरें पढ़ी जाती हैं, 6-तीनों जम्रों, 7-सूर्यास्त, 8-नीची ज़मीन, 9-अल्लाहु अक्बर।

कंकड़ी के साथ अल्लाहु अक्बर कहते इस जम्रा के पास खड़े न होते बल्कि वापस हो जाते और बताते थे कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसी तरह करते हुए देखा है। (सहीह बुख़ारी, मआरिफुल् हदीस)

हल्क़ कराने वालों के लिए दुआ
(सर मुंडवाने वालों के लिए दुआ)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल् वदाअ में फ़रमाया- अल्लाह तआला की रहमत हो उन पर जिन्होंने यहाँ अपना सर मुंडवाया। हाज़िरीन में से बाज़ ने अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह! रहमत की यह दुआ बाल तरश्वाने वालों के लिये भी कर दीजिए। आपने दोबारा इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह की रहमत हो सर मुंडवाने वालों पर। इन हज़रात ने फिर वही अर्ज़ किया तो तीसरी बार आपने फ़रमाया, और उन लोगों पर भी अल्लाह की रहमत हो, जिन्होंने यहाँ बाल तरश्वाए।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफुल् हदीस)

क़ुर्बानी के अय्याम[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन कुर्त रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के नज़्दीक सबसे ज़्यादा अज़्मत[2] वाला दिन यौमुन्नहर (क़ुर्बानी का दिन यानी दस ज़िल्हिज्जा का दिन) है। इसलिए क़ुर्बानी जहाँ तक हो सके 10 ज़िल्हिज्जा को कर ली जाए अगर किसी वजह से 10 तारीख़ को क़ुर्बानी न हो सके तो 11 ज़िल्हिज्जा को। अगर्चे 12 ज़िल्हिज्जा को भी जाइज़ है मगर अफ़्ज़ल[3] यह है कि 10 या 11 ज़िल्हिज्जा को क़ुर्बानी कर ली जाए।

(सुनने अबी दाऊद)

1-दिन समूह, 2-प्रतिष्ठित, 3-श्रेष्ठ।

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ुर्बानी का मन्ज़र[1]

उसी हदीस के रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ुर्त रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल करने के बाद अपना यह अजीबो-ग़रीब मुशाहदा[2] बयान करते हैं। एक बार पाँच-छह ऊँट क़ुर्बानी के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीब लाए गए तो उनमें से हर एक आप सल्ल० के क़रीब होने की कोशिश करता था ताकि पहले उसी को आप ज़िब्ह करें। (सुनन अबी दाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

तवाफ़े ज़ियारत

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तवाफ़े ज़ियारत को मुअख़्ख़र किया (यानी इसकी ताख़ीर[3] की इजाज़त दी) बारहवीं ज़िल्हिज्जा की रात तक।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

सवारी पर तवाफ़

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि (हज्जतुल्-वदाअ़ में) मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया- मुझे बीमारी की तकलीफ़ है (मैं तवाफ़ कैसे करूँ?) आप सल्ल० ने फ़रमाया तुम सवार होकर लोगों के पीछे-पीछे तवाफ़ कर लो, तो मैंने इसी तरह तवाफ़ किया और उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल्लाह के पहलू में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे और उसमें ''सूरए तूर'' तिलावत फ़रमा रहे थे। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-दृश्य, 2-अनुभव, आँखों देखा हाल, 3-विलम्ब।

औ़रतों का उज़्रे शरई[1]

हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हम लोग (हज्जतुल्-वदाअ़् वाले सफ़र में) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मदीना से चले। हमारी ज़बानों पर बस हज ही का ज़िक्र था, यहाँ तक कि जब (मक्का के बिल्कुल क़रीब) मक़ामे सरिफ़ पर पहुँचे (जहाँ से मक्का सिर्फ़ एक मन्ज़िल[2] रह जाता है) तो मेरे वह दिन शुरू हो गये जो औ़रतों को हर महीने आते हैं, तो मैं रोने लगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ेमे में तशरीफ़ लाये तो आप ने फ़रमाया- शायद तुम्हारे माहवारी के अय्याम[3] शुरू हो गये हैं? मैंने अ़र्ज़ किया- हाँ, यही बात है। आप सल्ल० ने फ़रमाया- (रोने की क्या बात है?) यह तो ऐसी चीज़ है जो अल्लाह तआ़ला ने आदम की बेटियों (यानी सब औ़रतों) के साथ लाज़िम कर दी है। तुम वह सारे अ़मल करती रहो, जो हाजियों को करने होते हैं सिवाय इसके कि बैतुल्लाह[4] का तवाफ़ उस वक़्त तक न करो जब तक उससे पाक-साफ़ न हो जाओ।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस, सहीह़ बुख़ारी व सहीह़ मुस्लिम)

तवाफ़े वदाअ़्

(परिक्रमा के लिए गमन)

हज़रत हारिस सक़्फ़ी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जो शख़्स हज व उम्रा करे तो चाहिए कि उसकी आख़िरी हाज़िरी बैतुल्लाह पर हो और आख़िरी अ़मल तवाफ़ हो। (मुस्नदे अहमद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-वह विवशता जो इस्लामी नियमों के अनुसार मान्य हो, 2-एक दिन की यात्रा, 3-मासिक धर्म के दिन, 4-अल्लाह का घर अर्थात् काबा।

ज़ियारत रौज़ा-ए-अक़्दस[1]
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

अगर गुंजाइश हो तो हज के बाद या हज से पहले मदीना मुनव्वरा हाज़िर होकर जनाब रसूल मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ए मुबारक और मस्जिदे नबवी की ज़ियारत से भी सआदत[2] व बरकत हासिल करे, इसकी निस्बत रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

مَنْ وَجَدَ سَعَةً وَلَمْ يَزُرْنِىْ فَقَدْ جَفَانِىْ

मंव् वजद सअतंव् व लम् यज़ुर्नी फ़क़द् जफ़ानी।

अनुवाद: जो शख़्स (माली) वुस्अत[3] रखे, फिर मेरी ज़ियारत को न आए तो उसने मेरे साथ बड़ी बेमुरव्वती[4] की।

مَنْ زَارَ قَبْرِىْ وَجَبَتْ لَهُ شَفَاعَتِىْ

मन् ज़ार क़ब्री वजबत् लहू शफ़ाअती

अनुवाद: जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की मुझ पर उसकी शफ़ाअत[5] वाजिब हो गई।

وَمَنْ زَارَنِىْ بَعْدَ مَمَاتِىْ فَكَاَنَّمَا زَارَنِىْ فِىْ حَيَاتِىْ

व मन् ज़ारनी बाद ममाती फ़कअन्नमा ज़ारनी फ़ी हयाती

अनुवाद: जिसने मेरी वफ़ात[6] के बाद मेरी ज़ियारत की उसको वही बरकत मिलेगी जैसे मेरी ज़िन्दगी में किसी ने ज़ियारत की।

(मराक़ियुल् फ़लाह, बैहक़ी फ़ी शोबिल् इमान, तबरानी फ़ित् कबीर)

नीज़[7] आपका यह इर्शाद भी है:-

وَصَلَاةٌ فِىْ مَسْجِدِىْ بِخَمْسِيْنَ اَلْفِ صَلَاةٍ

1-पवित्र मक़बरे का दर्शन, 2-कल्याण, 3-सामर्थ्य, 4-निर्दयता, 5-अल्लाह से अपने उम्मतियों के लिये बख़्शिश की पैरवी, 6-निधन, 7-इसके अतिरिक्त।

व सलातुन् फ़ी मस्जिदी बिख़म्सीन अल्फ़ि सलातिन्

अनुवाद: जो शख़्स मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़े उसको पचास हज़ार नमाज़ों का सवाब मिलेगा। (अहमद, इब्ने माजा)

हाजी की दुआ

हदीस शरीफ़ में है कि जब तू हाजी से मिले तो उसको सलाम कर और उससे मुसाफ़हा[1] कर और उससे दरख़्वास्त कर इस बात की कि वह तेरे लिये मग़्फ़िरत की दुआ करे इससे पहले कि वह अपने मकान में दाख़िल हो, इसलिये कि उसके गुनाह बख़्श दिये गये (पस वह मक़्बूल बारगाहे इलाही है) उसकी दुआ मक़्बूल होने की ख़ास तौर पर उम्मीद है और जो दुआ चाहे उससे वह दुआ कराए, दीन की या दुनिया की मगर उसके मकान में पहुँचने से पहले। (बिहिश्ती ज़ेवर)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हज व उम्रों की तादाद

रिवायात के मुताबिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हिज्रत से क़ब्ल दो हज किये, बाज़ कहते हैं कि तीन हज किये, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के उम्रों की तादाद चार बताई जाती है।

(बुख़ारी, मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज्जतुल्[2]-वदाअ़ में आख़िरी एलान

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हिज्रत के बाद (जो हिज्रत का दसवाँ साल था) एक हज किया जिसको हज्जतुल्-वदाअ़ और हज्जतुल्-इस्लाम कहते हैं, इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लोगों को अहकाम व मसाइल की तालीम फ़रमाई और फ़रमाया कि शायद आइन्दा

1-हाथ मिलाना, 2-हज की विदाई यानी अन्तिम हज।

साल तुम मुझको न पाओ, फिर आपने उन सबको सफ़रे आख़िरत[1] की बिना पर[2] रुख़्सत फ़रमाया और ख़ुत्बा दिया। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज्जतुल्-वदाअ़ की तफ़्सील[3]

(हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की एक तवील हदीस का इक़्तिबास[4]।)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की फ़रीज़ए हज अदा करने के लिये मदीनए तय्यिबा से रवानगी।

हुज़ूर ख़ातिमुल् मुर्सलीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब अपने इरादए हज का एलान फ़रमाया तो लोग इत्तिला पाकर चारों तरफ़ से बहुत बड़ी तादाद में आकर जमा हो गए। हर एक की ख़्वाहिश और आर्ज़ू यह थी कि इस मुबारक सफ़र में आपके साथ रहकर आप सल्ल० की पूरी-पूरी पैरवी करे और आप सल्ल० के नक़्शे क़दम पर चले।

24 ज़ीक़ादा[5] सन 10 हिज्री जुमा का दिन था, उस दिन आपने ख़ुत्बे में हज के सफ़र से मुतअ़ल्लिक़ ख़ुसूसियत से हिदायतें दीं और अगले दिन 25 ज़ीक़ादा 10 हिज्री बरोज़ शंबह[6] बाद नमाज़े ज़ुहर मदीना तय्यिबा से एक अज़ीमुश्शान क़ाफ़िले के साथ रवानगी हुई और अ़स्र की नमाज़ ज़ुलहुलैफ़ा जाकर पढ़ी, जहाँ आपको पहली मन्ज़िल करना थी और यहीं से एहराम बाँधना था, रात भी वहीं गुज़ारी और अगले दिन यानी यकशंबह[7] को ज़ुहर की नमाज़ के बाद आप सल्ल० ने और आप सल्ल० के सहाबा ने एहराम बाँधा। (नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आपने ग़ुस्ल फ़रमाया, सर में तेल डाला, लिबास बदला और चादर ओढ़ी) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि आप सल्ल० ने मस्जिद ज़ुलहुलैफ़ा में एहराम की दो रकअ़त नमाज़ पढ़ने के बाद मुत्तसिलन[8] पहला तल्बिया पढ़ा, उसके

1-अन्तिम यात्रा, 2-आधार पर, 3-विवरण, 4-उद्धरण, 5-इस्लामी साल का ग्यारहवाँ महीना, 6-शनिवार के दिन, 7-रविवार, 8-समीप, शीघ्र।

बाद आप सल्ल० नाक़ा[1] पर सवार हुए, उस वक़्त आप सल्ल० ने फिर तल्बिया पढ़ा, उसके बाद आप मक़ामे बैदा पर पहुँचे तो आप सल्ल० ने बुलन्द आवाज़ से तल्बिया पढ़ा:-

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ۔

लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल् हम्द वन्निअ़मत लक वल् मुल्क ला शरीक लक।

इसके बाद आप मक्का मुअ़ज़्ज़मा की तरफ़ रवाना हो गये। नवें दिन 4 ज़िल्हिज्जा को आप सल्ल० मक्का मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए। इस सफ़र में आप सल्ल० के साथ हज करने वालों की तादाद मुख़्तलिफ़ रिवायतों में चालीस हज़ार से लेकर एक लाख तीस हज़ार तक बयान की गई है।

(मआरिफ़ुल् हदीस)

बैतुल्लाह में हाज़िरी
(अल्लाह के घर में उपस्थिति)

तबरानी ने बयान किया है कि आप बाबे बनी अ़ब्दे मनाफ़ से जो अब बनी शैबा के नाम से मारूफ़[2] है, दाख़िल हुए। तबरानी का बयान है जब आप की नज़रे मुबारक काबा शरीफ़ पर पड़ी तो आपने फ़रमाया:-

اَللّٰهُمَّ زِدْ بَيْتَكَ هٰذَا تَشْرِيْفًا وَّتَعْظِيْمًا وَّتَكْرِيْمًا وَّمَهَابَةً

अल्लाहुम्म ज़िद बैतक हाज़ा तश्रीफ़ँव् व ताज़ीमँव् व तक्रीमँव् व महाबतन।

यानी 'ऐ अल्लाह! अपने इस घर की इज़्ज़त, हुर्मत[3] व अ़ज़्मत और बुज़ुर्गी और ज़्यादा बढ़ा दे''

एक और रिवायत में है कि आप हाथ उठाते और तक्बीर कहते और फ़रमाते थे:-

1-ऊँटनी, 2-प्रसिद्ध, 3-प्रतिष्ठा।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ حَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ اَللّٰهُمَّ زِدْ هٰذَا الْبَيْتَ تَشْرِيْفًا وَّ تَعْظِيْمًا وَّتَكْرِيْمًا وَّمَهَابَةً وَّزِدْ مَنْ حَجَّهُ اَوِ اعْتَمَرَهُ تَكْرِيْمًا وَّتَشْرِيْفًا وَّتَعْظِيْمًا وَّبِرًّا۔

अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु हय्यिना रब्बना बिस्सलामि अल्लाहुम्म ज़िद् हाज़ल् बैत तश्रीफ़ंव् व ताज़ीमंव् व तक्रीमंव् व माहाबतंव् व ज़िद मन् हज्जहू अविअ्तमरहू तक्रीमंव् व तश्रीफ़ंव् व ताज़ीमंव् व बिर्रा।

यानी ऐ अल्लाह! जो तेरे इस घर का हज करे या उम्रा करे उसकी भी बुज़ुर्गी, इज़्ज़त, बड़ाई और अ़ज़्मत में और ज़्यादा इज़ाफ़ा फ़रमाइए।

जब आप सल्ल० मस्जिद में आए तो काबा की तरफ़ बढ़े, हज्रे अस्वद[1] की तरफ़ कुछ रुख़-सा किया, दाहिनी तरफ़ से तवाफ़ शुरू किया, काबा आपके बायें जानिब था।

आप सल्ल० का तवाफ़ फ़रमाना[2]

बैतुल्लाह पर पहुँच कर आप सल्ल० ने सबसे पहले हज्रे अस्वद का इस्तिलाम[3] किया, फिर आपने तवाफ़ शुरू किया, जिसमें तीन चक्करों में रम्ल किया (यानी वह ख़ास चाल चले जिसमें क़ुव्वत[4] व शुजाअ़त[5] का इज़्हार होता है) और बाक़ी चार चक्करों में अपनी आ़दत के मुताबिक़ चले।

(ज़ादुल्-मआ़द)

तवाफ़ करने की हालत में आप चादर यूँ ओढ़े थे कि उसका एक सिरा बग़ल के नीचे से निकाल कर शाने[6] पर डाल लिया था। जब हज्रे अस्वद के सामने आते, तो उसकी तरफ़ इशारा फ़रमाते। हाथ में एक छड़ी थी, उससे उसको छूते, फिर लकड़ी को चूम कर आगे बढ़ जाते। उस छड़ी का सिरा मुड़ा हुआ था।

1-काला पत्थर, 2-परिक्रमा करना, 3-चुम्बन, 4-शक्ति, 5-पौरुष, 6-कंधे।

तबरानी ने अस्नादे जय्यिद[1] के साथ रिवायत किया है कि आप जब रुक्ने यमानी को छूते थे तो फ़रमाते थे:-

بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

"बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अक्बर" और जब हजे अस्वद के पास आते तो फ़रमाते:- اَللّٰهُ أَكْبَرُ

"अल्लाहु अक्बर" फिर (तवाफ़ के सात चक्कर पूरे करके) आप मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ बढ़े और यह आयत तिलावत फ़रमाई:-

﴿ وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ﴾ سورة البقرة آية: ١٢٥

"वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राहीम मुसल्ला"

"और मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ अदा करो" फिर इस तरह खड़े होकर कि मक़ामे इब्राहीम आपके और बैतुल्लाह के दरमियान था, आप सल्ल० ने दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी (यानी दोगान-ए-तवाफ़ अदा किया) हदीस के रावी इमाम जाफ़र सादिक़ रहमतुल्लाहि अ़लैह बयान करते हैं कि मेरे वालिद ज़िक्र करते थे कि उन दो रक्अ़तों में आपने:-

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ ○ قُلْ يَا أَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ○

"क़ुल या अय्युहल काफ़िरून" और *"क़ुल हुवल्लाहु अहद"* की क़िराअत की।

आप सल्ल० की सई[2]

इसके बाद आप फिर हजे अस्वद की तरफ़ वापस आए और फिर उसका इस्तिलाम[3] किया, फिर एक दरवाज़े से (सई के लिये) सफ़ा पहाड़ी की तरफ़ चले गये और उसके बिल्कुल क़रीब पहुँच कर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई:-

---

1-शुद्ध प्रमाण, 2-प्रयत्न, दौड़ना, 3-चुम्बन।

﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ﴾ سورة البقرة آية: ١٥٨

"इन्नस्सफ़ा वल् मर्वत मिन् शआइरिल्लाह" (सूरए बक़रा, पारा: 2)

अनुवाद: बिला शुब्ह[1] सफ़ा और मर्वा[2] अल्लाह के शआइर[3] में से हैं जिनके दरमियान सई[4] का हुक्म है। इसके बाद आपने फ़रमाया- "मैं इस सफ़ा से सई शुरू करता हूँ जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने इस आयत में पहले किया है।"

चुनांचे आप पहले सफ़ा पर आए और इस हद तक उसकी बुलन्दी पर चढ़े कि बैतुल्लाह आपकी नज़र के सामने आ गया। उस वक़्त आप क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करके खड़े हो गये और अल्लाह तआला की तक्बीर व तम्जीद[5] में मस्रूफ़[6] हो गये। आप सल्ल० ने कहा:-

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ

ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु वलहुल् हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू अन्जज़ वअ़्दहू व नसर अ़ब्दहू व हज़मल् अह्ज़ाब वह्दहू।

अनुवाद: अल्लाह के सिवा कोई इबादत और परस्तिश के लाइक़ नहीं, वही तन्हा माबूद[7] व मालिक है, कोई उसका शरीक, साझी नहीं, सारी काइनात[8] पर उसी की फ़रमांरवाई[9] है और हम्दो-सताइश[10] उसी का हक़ है। वह हर चीज़ पर क़ादिर है। वही तन्हा माबूद व मालिक है, उसी ने (मक्का पर और सारे अ़रब पर इक़्तिदार[11] बख़्शने और अपने दीन को सर बुलन्द करने का) अपना वायदा पूरा फ़रमा दिया। अपने बन्दे की उसने भरपूर मदद फ़रमाई और कुफ़्र व शिर्क के लश्करों को तन्हा उसी ने शिकस्त दी।

1-निस्सन्देह, 2-दो पहाड़ियों के नाम, 3-इबादतों, 4-दौड़ना, 5-स्तुति करना, 6-व्यस्त, 7-उपास्य, 8-ब्रह्माण्ड, 9-शासन, 10-प्रशंसा, 11-सत्ता।

आप सल्ल० ने तीन बार यह कलिमात फ़रमाये और इनके दरमियान दुआ की, उसके बाद आप उतर कर मर्वा की जानिब चले यहाँ तक कि आपके क़दम वादी के नशेब में पहुँचे तो आप कुछ दौड़ कर चले, फिर आप जब नशेब से ऊपर आ गये तो अपनी आम रफ़्तार के मुताबिक़ चले यहाँ तक कि मर्वा पहाड़ी पर आ गये और यहाँ आपने बिल्कुल वही किया जो सफ़ा पर किया था (यानी वही सब कलिमात अदा फ़रमाए) यहाँ तक कि आप आख़िरी (सातवाँ) फेरा पूरा करके मर्वा पर पहुँचे।

मिना में क़ियाम[1]

फिर जब यौमुत्तर्वियह (यानी 8 ज़िल्हिज्जा का दिन) हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी नाक़ा[2] पर सवार होकर मिना को चले, फिर वहाँ पहुँच कर आपने (और सहाबा किराम ने मस्जिदे ख़ैफ़ में) ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा और फ़ज्र पाँचों नमाज़ें (अपने-अपने वक़्त पर) पढ़ीं। फ़ज्र की नमाज़ के बाद थोड़ी देर आप मिना में और ठहरे यहाँ तक कि जब सूरज निकल आया तो आप अरफ़ात की तरफ़ रवाना हुए।

अरफ़ात में आप सल्ल० का ख़ुत्बा व वुक़ूफ़[3]

ख़ुत्बा हज्जतुल्-वदाअ

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक तवील हदीस में हज्जतुल्-वदाअ की तफ़्सील बयान की है, उसमें 9 ज़िल्हिज्जा के हालात बयान करते हुए फ़रमाते हैं- जब आफ़्ताब[4] ढल गया तो आप सल्ल० ने नाक़ा क़स्वा पर कजावा[5] कसने का हुक्म दिया, चुनांचे उस पर कजावा कस दिया गया। आप सल्ल० उस पर सवार होकर वादिए अरफ़ा के दरमियान

1-ठहरना, 2-ऊँटनी, 3-ठहरना, 4-सूर्य, 5-ऊँट का हौदा जिसमें दोनों ओर आदमी बैठते हैं,

आए और आपने ऊँटनी की पुश्त[1] ही पर से लोगों को ख़ुत्बा दिया, जिसमें फ़रमाया:-

लोगो! तुम्हारे ख़ून और तुम्हारे माल तुम पर हराम हैं (यानी नाहक़ किसी का ख़ून करना और नाजाइज़ तरीक़े से किसी का माल लेना तुम्हारे लिये हमेशा-हमेशा के लिये हराम है) बिल्कुल उसी तरह जिस तरह कि आज यौमुल्-अरफ़ा के दिन ज़िल्हिज्जा के इस मुबारक महीने में अपने इस मुक़द्दस[2] शहर मक्का में (तुम नाहक़ किसी का ख़ून करना और किसी का माल लेना हराम जानते हो) ख़ूब ज़ेहन नशीन[3] कर लो कि जाहिलिय्यत की सारी चीज़ें (यानी इस्लाम की रोशनी के दौर से पहले तारीकी[4] और गुमराही[5] के ज़माना की सारी बातें और सारे क़िस्से ख़त्म हैं) ये सब मेरे दोनों क़दमों के नीचे दफ़्न और पामाल[6] हैं (मैं इनके ख़ातिमे और मन्सूख़ी[7] का एलान करता हूँ) और ज़मान-ए-जाहिलिय्यत के किसी ख़ून का बदला नहीं लिया जायेगा और सबसे पहले मैं अपने घराने के एक ख़ून रबीआ बिन अल्हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब के ख़ून के ख़त्म और मुआफ़ किये जाने का एलान करता हूँ जो क़बीलए बनी साअ्द के एक घर में दूध पीने के लिये रहते थे उनको क़बीलए हुज़ैल के आदमियों ने क़त्ल कर दिया था (हुज़ैल से उस ख़ून का बदला लेना अभी बाक़ी था लेकिन अब मैं अपने ख़ानदान की तरफ़ से एलान करता हूँ कि अब यह क़िस्सा ख़त्म है, बदला नहीं लिया जाएगा) और ज़मान-ए-जाहिलिय्यत के तमाम सूदी मुतालबात (जो किसी के ज़िम्मे बाक़ी हैं वह सब भी) ख़त्म और सोख़्त[8] हैं (अब कोई मुसलमान किसी से अपना सूदी मुतालबा वुसूल नहीं करेगा) और इस बाब[9] में भी मैं सबसे पहले अपने ख़ानदान के सूदी मुतालबात में से अपने चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के सूदी मुतालबात के ख़त्म और सोख़्त होने का एलान करता हूँ (अब वह किसी से अपना सूदी मुतालबा वुसूल नहीं करेंगे।) उनके सारे सूदी मुतालबात आज ख़त्म कर दिये गए।

1-पीठ, 2-पवित्र, 3-दिमाग़ में बैठाना, 4-अज्ञान, अन्धकार, 5-पथ भ्रष्टता, 6-पाँव तले रौंदा हुआ, 7-रद्द होना, 8-समाप्त, 9-संबंध।

और ऐ लोगो! औरतों के हुक़ूक़ और उनके साथ बर्ताव के बारे में अल्लाह से डरो, इसलिये कि तुमने उनको अल्लाह की अमानत के तौर पर लिया है और अल्लाह के हुक्म और उसके क़ानून से उनके साथ तमत्तो[1] तुम्हारे लिये हलाल हुआ है और तुम्हारा ख़ास हक़ उन पर यह है कि जिस आदमी का घर में आना और तुम्हारी जगह और तुम्हारे बिस्तर पर बैठना तुमको पसन्द न हो, वह उसको इसका मौक़ा न दें। लेकिन अगर वह यह ग़लती करें तो तुम (तंबीह[2] और आइन्दा सद्दे बाब[3] के लिये अगर कुछ सज़ा देना मुनासिब समझो तो) उनको कोई ख़फ़ीफ़[4]-सी सज़ा दे सकते हो और उनका ख़ास हक़ तुम पर यह है कि अपने मक़्दूर[5] और हैसियत के मुताबिक़ उनके खाने, पहनने का बन्दोबस्त करो और मैं तुम्हारे लिये वह सामाने हिदायत छोड़ रहा हूँ कि अगर तुम उससे वाबस्ता रहे और उसकी पैरवी करते रहे तो फिर कभी तुम गुमराह न होगे। वह है- "किताबुल्लाह (यानी क़ुरआने मजीद)" और क़ियामत के दिन मेरे मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा (कि मैंने तुमको अल्लाह की हिदायत और उसके अहकाम[6] पहुँचाये या नहीं) तो बताओ वहाँ तुम क्या कहोगे और क्या जवाब दोगे? हाज़िरीन[7] ने अ़र्ज़ किया कि हम गवाही देते हैं और क़ियामत के दिन भी गवाही देंगे कि आप सल्ल० ने अल्लाह तआ़ला शानुहू का पैग़ाम और उसके अहकाम हमको पहुँचा दिये और रहनुमाई[8] और तब्लीग़[9] का हक़ अदा कर दिया और नसीहत और ख़ैरख़्वाही में कोई दक़ीक़ा[10] उठा न रखा इस पर आपने अपनी अंगुश्ते शहादत[11] आसमान की तरफ़ उठाते हुए और लोगों के मज्मा की तरफ़ इशारा करते हुए तीन दफ़ा फ़रमाया:-

اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ

अल्लाहुम्मश्हद् अल्लाहुम्मश्हद् अल्लाहुम्मश्हद्

यानी ऐ अल्लाह! तू गवाह रह कि मैंने तेरा पैग़ाम और तेरे अहकाम तेरे बन्दों तक पहुँचा दिये और तेरे ये बन्दे इक़रार[12] कर रहे हैं।

(सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-लाभ-प्राप्ति, 2-चेतावनी, 3-निवारण, 4-हल्की, 5-सामर्थ्य, 6-आदेश, 7-उपस्थित लोगों, 8-मार्गदर्शन, 9-धर्म प्रचार, 10-कमी, 11-तर्जनी, 12- स्वीकार।

उसके बाद (आप सल्ल० के हुक्म से) हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अज़ान दी फिर इक़ामत कही और आपने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई, उसके बाद बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इक़ामत कही और आप सल्ल० ने अस्र की नमाज़ पढ़ाई।

अरफ़ात में आप सल्ल० का वुक़ूफ़[1]

(जब ज़ुहर और अस्र की नमाज़ एक साथ बिला फ़स्ल[2] पढ़ चुके तो) अपनी नाक़ा पर सवार होकर आप सल्ल० मैदाने अरफ़ात में ख़ास वुक़ूफ़ की जगह पर तशरीफ़ लाये और अपनी नाक़ा का रुख़ आप सल्ल० ने उस तरफ़ कर दिया जिधर पत्थर की बड़ी-बड़ी चटानें हैं और पैदल मज्मा को आप सल्ल० ने अपने सामने कर लिया और आप सल्ल० क़िब्ला-रु हो गये और वहीं खड़े रहे यहाँ तक कि ग़ुरूबे आफ़्ताब[3] का वक़्त आ गया और (शाम के आख़िरी वक़्त में फ़ज़ा में जो ज़र्दी होती है वह) ज़र्दी भी ख़त्म हो गई और आफ़्ताब बिल्कुल डूब गया तो आप सल्ल० (अरफ़ात से मुज़्दलिफ़ा के लिये) रवाना हो गए।

मुज़्दलिफ़ा में क़ियाम[4] व वुक़ूफ़

यहाँ पहुँच कर आपने मग़रिब और इशा की नमाज़ें एक साथ पढ़ीं और इन दोनों नमाज़ों के दरमियान आपने सुन्नत या नफ़्ल की रकअतें बिल्कुल नहीं पढ़ीं।

उसके बाद आप लेट गये और लेटे रहे यहाँ तक कि सुब्ह सादिक़ के ज़ाहिर होते ही अज़ान और इक़ामत के साथ नमाज़े फ़ज्र अदा की उसके बाद आप मश्अ़रे हराम के पास आये (राजेह[5] क़ौल के मुताबिक़ यह एक बुलन्द टीला-सा था, मुज़्दलिफ़ा के हुदूद में अब भी यही सूरत है और वहाँ निशानी के तौर पर एक आलीशान मस्जिद बना दी गई है) यहाँ आकर आप सल्ल०

1-ठहरना, 2-बिना अन्तर, लगातार, 3-सूर्यास्त, 4-थोड़े दिनों का प्रवास, 5-बेहतर।

क़िब्ला-रु खड़े हुए और दुआ और अल्लाह की तक्बीर व तह्लील[1] और तौहीद[2] व तह्मीद[3] में मश्ग़ूल रहे यहाँ तक कि ख़ूब उजाला हो गया। इस रात में आप ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म दिया कि वह आप के लिये सात अदद जिमार[4] के लिये कंकड़ चुनें। उन्होंने पत्थर के ढेर से सात कंकड़ियाँ चुन लीं। चुनांचे आप उन्हें अपने हाथ में उछालने लगे और फ़रमाने लगे इस तरह रमी करो और दीन में ग़ुलू[5] करने से बचो क्योंकि तुम से पहले जिन लोगों ने दीन में ग़ुलू किया, वे हलाक हो गये।

(ज़ादुल्मआद)

आप सल्ल० का रमी फ़रमाना

(आप सल्ल० का कंकरियां फेंकना)

फिर तुलूऐ आफ़्ताब[6] से कुछ पहले आप सल्ल० मिना के लिये रवाना हो गये और जम्रे उक़्बा (आख़िरी जम्रा) पर पहुँचे। (ज़ादुल्मआद)

आप सल्ल० सवारी पर थे, वादी के नीचे जानिब ठहरे (बायें तरफ़ काबा शरीफ़, दाहिनी तरफ़ मिना, और सामने जम्रा था) सात संगरेज़े[7] उस पर फेंक कर मारे जिनमें से हर एक के साथ आप तक्बीर कहते थे, ये संगरेज़े ख़ज़फ़ के संगरेज़ों की तरह थे (यानी छोटे-छोटे थे, जैसे कि उंगलियों में रखकर फेंके जाते हैं जो क़रीबन चने और मटर के दाने के बराबर होते हैं) आपने जम्रा पर ये संगरेज़े (जम्रा के क़रीब वाली) नशेबी जगह से फेंक कर मारे।

ख़ुत्ब-ए-मिना

फिर रमी से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल० मिना वापस हुए और एक फ़सीह[8] व बलीग़[9] ख़ुत्बा फ़रमाया- जिसमें लोगों को क़ुर्बानी के दिन की

1-एक अल्लाह को ही मानना और उसीकी स्तुति करना, 2-एक अल्लाह को मानना उसके साथ किसी को साझी न करना, 3-अल्लाह की तारीफ़ करना, 4-हज की एक प्रथा जिसमें शैतान को कंकरियां मारते हैं, 5-हद से गुजरना, 6-सूर्योदय, 7-पत्थर के टुकड़े, 8-किसी बात को साफ़-साफ़ और स्पष्ट रूप से कहना, 9-किसी बात को बेहतरीन अंदाज़ से कहना।

हुर्मत[1] व अज़्मत और अल्लाह के नज़्दीक उसकी फ़ज़ीलत से आगाह किया और तमाम ममालिक[2] पर मक्का मुकर्रमा की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई और किताबुल्लाह के मुताबिक़ हुक्मरानी करने वालों की सम्अ़[3] व इताअ़त का हुक्म दिया। फिर इर्शाद फ़रमाया कि लोगो! आपसे मनासिके हज[4] सीख लें और फ़रमाया- कि शायद मैं इस साल के बाद हज न कर सकूँ और लोगों को हुक्म दिया कि आपके बाद मुब्तला-ए-कुफ़्र[5] न हो जायें और एक दूसरे की गर्दनें न मारें। फिर अपनी तरफ़ से तब्लीग़ का हुक्म दिया और फ़रमाया- कई लोग ऐसे होते हैं जिनको मस्अला पहुँचाया जाता है, वह सुनने वाले से ज़्यादा महफ़ूज़ (फ़हमो-फ़िरासत[6] के मालिक) होते हैं।

नीज़ आपने ख़ुत्बे में फ़रमाया कि कोई आदमी अपनी जान पर ज़ुल्म न करे अल्लाह तआ़ला ने (आपके ख़ुत्बे के ख़ातिर) लोगों की कुव्वते समाअ़त[7] खोल दी यहाँ तक कि अहले मिना ने अपने-अपने घरों में आपका ख़ुत्बा सुना।

आप सल्ल० का क़ुर्बानी फ़रमाना

फिर आप सल्ल० क़ुर्बानी के लिये तशरीफ़ ले गये। क़ुर्बानगाह में आपने 63 ऊँटों की क़ुर्बानी अपने हाथ से की, फिर जो बाक़ी रहे वह हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के हवाले फ़रमा दिये, उन सब की क़ुर्बानी उन्होंने की और आपने उनको अपनी क़ुर्बानी में शरीक फ़रमाया। फिर आपने हुक्म दिया कि क़ुर्बानी के हर ऊँट में से एक पार्चा[8] ले लिया जाए। ये सारे पार्चे एक देग में डाल कर पकाए गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु दोनों ने उसमें से गोश्त खाया और शोरबा पिया।

1-प्रतिष्ठा, 2-देशों, 3-सुनना, 4-हज के नियम व सिद्धान्त, 5-कुफ़्र में पड़ना, 6-समझ-बूझ, 7-श्रवण-शक्ति, 8-टुकड़ा।

आप सल्ल० का हल्क़ कराना[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (10 ज़िल्हिज्जा की सुबह मुज़्दलिफ़ा से) मिना तशरीफ़ लाए तो पहले जम्रतुल्-उक़्बा पर पहुँच कर उसकी रमी की फिर आप सल्ल० अपने ख़ेमे पर तशरीफ़ लाये और क़ुर्बानी के जानवरों की क़ुर्बानी की, फिर आप सल्ल० ने हज्जाम को तलब फ़रमाया और पहले अपने सरे मुबारक की दाहिनी जानिब उसके सामने की, उसने उस जानिब के बाल मूंडे। आप सल्ल० ने अबू तल्हा अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तलब किया और वह बाल उनके हवाले कर दिये। उसके बाद आप सल्ल० ने अपने सर की बायें जानिब हज्जाम के सामने की और फ़रमाया अब इसको भी मूंड दो। उसने उस जानिब को भी मूंड दिया, तो आप सल्ल० ने वह बाल भी अबू तल्हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ही के हवाले फ़रमा दिये और इर्शाद फ़रमाया- इन बालों को लोगों के दरमियान तक़्सीम कर दो।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

तवाफ़े ज़ियारत व ज़मज़म

उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी नाक़ा[2] पर सवार होकर तवाफ़े ज़ियारत के लिये बैतुल्लाह की तरफ़ चल दिये और ज़ुहर की नमाज़ आप सल्ल० ने मक्का में जाकर पढ़ी, तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर (अपने अहले ख़ानदान) बनी अब्दुल मुत्तलिब के पास आये जो ज़मज़म[3] से पानी खींच-खींच कर लोगों को पिला रहे थे तो आप सल्ल० ने उनसे फ़रमाया- अगर यह ख़तरा न होता कि दूसरे लोग ग़ालिब[4] आकर तुम से यह ख़िदमत छीन लेंगे तो मैं भी तुम्हारे साथ डोल खींचता। उन लोगों ने

1-बाल कटवाना, 2-ऊँटनी, 3-मक्के का एक कुआँ जिसका पानी बहुत ही पवित्र समझा जाता है, 4-शक्तिशाली।

आपको भरके एक डोल ज़मज़म का दिया तो आप सल्ल० ने उसमें से नोश फ़रमाया[1]। (सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आख़िरी ख़ुत्बा और मदीना मुनव्वरा को वापसी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक ख़ुत्बा मिना में नह्र[2] से पहले फ़रमाया था, दूसरा ख़ुत्बा अय्यामे तश्रीक़ के वस्त[3] में फ़रमाया जिसमें आपने फ़रमाया कि आज अय्यामे तश्रीक़ का वस्ती[4] दिन है और यह जगह मश्अ़रे हराम है, फिर फ़रमाया कि शायद अब दोबारह तुमसे न मिल सकूँ, याद रखो तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल और तुम्हारी आबरु तुम पर उसी तरह हराम हैं जैसे तुम्हारे इस शहर में आज के दिन हुर्मत[5] है यहाँ तक कि तुम अपने रब से जा मिलो, फिर वह तुमसे तुम्हारे आमाल के मुतअ़ल्लिक़ पुर्सिश[6] करेगा। ख़बरदार! तुम्हारा क़रीब दूर वाले को यह बात पहुँचा दे, ख़बरदार! क्या मैंने पहुँचा दिया।

तवाफ़े विदाअ्
(बिदाई का तवाफ़)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (मिना में) दो दिन वापसी में जल्दी नहीं फ़रमाई बल्कि तीसरे दिन तक ताख़ीर फ़रमाई[7] और अय्यामे तश्रीक़[8] के तीन दिन पूरे किये यानी 13 ज़िल्हिज्जा और मंगल को ज़ुहर की नमाज़ पढ़ कर आप सल्ल० मक़ामे मुहस्सब की तरफ़ रवाना हो गये। यह

1-पिया, 2-क़ुर्बानी, 3-मध्य, 4-मध्य का, 5-निषेध, 6-पूछ-ताछ, 7-विलम्ब किया, 8-नवीं ज़िल्हिज्जा की फ़ज्र से लेकर 13 वीं ज़िल्हिज्जा की अ़स्र तक निम्नांकित तक्बीर पढ़ी जाती है, इसी को तश्रीक़ कहते हैं, जिन दिनों में यह तक्बीर पढ़ी जाती है उनको अय्यामे तश्रीक़ कहते हैं। यह तक्बीर है: اللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल् हम्द,

एक रेगिस्तानी मैदान है। आपने यहाँ जुहर, अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ अदा फ़रमाई और कुछ देर सो गये। फिर आप मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाये और रात को सहरी के वक़्त तवाफ़े वदाअ़ किया। इस तवाफ़ में आपने रमल[1] नहीं किया, फिर आप मदीना मुनव्वरा के लिये रवाना हो गये।

(ज़ादुल्मआद)

ज़कात व सद्क़ा

ज़कात की हलावत[2]

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी[3] है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तीन काम ऐसे हैं कि जो शख़्स उनको करेगा वह ईमान का ज़ाइक़ा[4] चखेगा- सिर्फ अल्लाह की इबादत करे, यह अ़क़ीदा[5] रखे कि सिवाय अल्लाह के कोई इबादत के लाइक़ नहीं और अपने माल की ज़कात हर साल इस तरह दे कि उसका नफ़्स उसपर ख़ुश हो और उस पर आमादा करता हो (यानी उसको रोकता न हो)

फ़- ज़कात का मर्तबा तो इससे ज़ाहिर हुआ कि इसको तौहीद[6] के साथ ज़िक्र फ़रमाया और इसका असर इससे ज़ाहिर हुआ कि इससे ईमान का मज़ा बढ़ जाता है। (हयातुल् मुस्लिमीन)

ज़कात न देने पर वईद[7]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो, फिर वह उसकी ज़कात अदा न करे, क़ियामत के दिन वह माल एक गंजे साँप की शक्ल बना दिया जायेगा जिसकी दोनों आँखों के ऊपर दो नुक़्ते होंगे (ऐसा साँप बहुत ज़हरीला होता है) वह साँप ज़कात न अदा

1-एक ख़ास क़िस्म का तवाफ़ है, इसमें बहुत तेज़ी से चला जाता है, 2-मधुरता, 3-उद्धृत, 4-स्वाद, 5-विश्वास, 6-अल्लाह को एक मानना, 7-सज़ा का वादा।

करने वाले बख़ील[1] के गले में तौक़ (यानी हंसली) की तरह डाल दिया जायेगा (यानी उसके गले में लिपट जायेगा) और उसकी दोनों बाछें[2] पकड़ेगा और काटेगा और कहेगा मैं तेरा माल हूँ, मैं तेरी जमा की हुई दौलत हूँ। फिर आपने (इसकी तस्दीक़[3] में) सूरए "आले इम्रान" की यह आयत पढ़ी:-

﴿ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ (اِلٰى) يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ﴾ سورة آل عمران آية ١٨٠

वला यहसबन्नल्लज़ीन यब्ख़लून (से) यौमिल् क़ियामति तक

(सूरए आले इम्रान, आयत, 180 पारा: 4)

(इस आयत में माल के तौक़ बनाये जाने का ज़िक्र है) जिसका तर्जुमा यह है- "और न गुमान करें वह लोग जो बुख़्ल[4] करते हैं उस माल व दौलत में जो अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्लो-करम से उनको दिया है (और उसकी ज़कात नहीं निकालते) कि वह माल व दौलत उनके हक़ में बेहतर है बल्कि अंजाम के लिहाज़ से उनके लिये बदतर और शर[5] है, क़ियामत के दिन उनके गलों में वह दौलत जिसमें उन्होंने बुख़्ल किया (और जिसकी ज़कात अदा नहीं की) तौक़ बना कर डाली जाएगी। (बुख़ारी, नसाई, हयातुल् मुस्लिमीन)

सद्क़े[6] की तर्ग़ीब[7]

हज़रत अस्मा बिन्त अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया- तुम अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखो, उसकी राह में कुशादा-दस्ती[8] से ख़र्च करती रहो और गिनो मत (यानी इस फ़िक्र में मत पड़ो कि मेरे पास कितना है और इसमें से कितना अल्लाह की राह में दूँ) अगर तुम उसकी राह में इस तरह हिसाब कर-करके दोगी तो वह भी तुम्हें हिसाब ही से देगा और अगर बेहिसाब दोगी तो वह भी अपनी नेअ़्मतें तुम पर बेहिसाब उंडेलेगा और

1-कृपण, 2-दोनों होंठों के किनारे, 3-पुष्टि, 4-कंजूसी, 5-बुराई, 6-ख़ैरात, दान, 7-प्रेरणा देना, 8-खुले हाथ।

दौलत जोड़-जोड़ कर और बन्द करके न रखो वर्ना अल्लाह तआला शानुहू भी तुम्हारे साथ यही मुआमला करेगा (कि रहमत और बरकत के दरवाज़े तुम पर ख़ुदानख़्वास्ता[1] बन्द हो जायेंगे) लिहाज़ा थोड़ा बहुत जो कुछ हो सके और जिसकी तौफ़ीक़[2] मिले, अल्लाह के रास्ते में कुशादा-दस्ती से देती रहो।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

सद्क़े की बरकात

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सद्क़ा अल्लाह तआला शानुहू के ग़ज़ब[3] को ठंडा करता है, और बुरी मौत से हिफ़ाज़त करता है।

(जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ख़ैरात करने में (हत्तल् इम्कान[4]) जल्दी किया करो, क्योंकि बला उससे आगे बढ़ने नहीं पाती।

(रज़ीन, हयातुल्-मुस्लिमीन)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सद्क़े से माल में कमी नहीं आती। (बल्कि इज़ाफ़ा[5] होता है) और क़ुसूर मुआफ़ कर देने से आदमी नीचा नहीं होता बल्कि अल्लाह तआला उसको सर-बुलन्द कर देता है और उसकी इज़्ज़त में इज़ाफ़ा हो जाता है और जो बन्दा अल्लाह तआला के लिये फ़रोतनी[6] और ख़ाकसारी का रवय्या[7] इख़्तियार करेगा, अल्लाह तआला उसको रफ़अत[8] और बालातरी[9] बख़्शेगा। (सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया सात चीज़ें हैं जिनका

1-अल्लाह ऐसा न करे, 2-सामर्थ्य, 3-प्रकोप, 4-यथा सम्भव, 5-वृद्धि, 6-विनम्रता प्रकट करना, 7-आचार व्यवहार, 8-ऊँचाई, 9-बहुत ऊँचाई।

सवाब बन्दे को मरने के बाद भी जारी रहता है और यह क़ब्र में पड़ा रहता है- जिसने इल्म (दीन) सिखलाया, या कोई नहर खोदी या कोई कुँआ खुदवाया या कोई दरख़्त लगाया या कोई मस्जिद बनाई या क़ुरआन तर्के[1] में छोड़ गया या कोई औलाद छोड़ी जो उसके मरने के बाद बख़्शिश की दुआ करे। (तर्ग़ीब, अज़ बज़्ज़ार व अबू नईम)

और इब्ने माजा ने बजाए दरख़्त लगाने और कुँआ खुदवाने के सद्क़ा का और मुसाफ़िर ख़ाने का ज़िक्र किया है (तर्ग़ीब) इस हदीस से दीनी मदरसों की और रिफ़ाहे आम[2] के कामों की फ़ज़ीलत साबित हुई।

(हयातुल्-मुस्लिमीन)

सद्क़े का मुस्तहिक़[3]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- असली मिस्कीन[4] (जिसकी सद्क़े से मदद करनी चाहिए) वह आदमी नहीं है जो (मांगने के लिये) लोगों के पास आता-जाता है। (दर-दर फिरता और साइलाना[5] चक्कर लगाता है) और एक दो लुक़्मे या एक दो खजूर (जब उसके हाथ पर रख दी जाती हैं तो) लेकर वापस लौट जाता है, बल्कि मिस्कीन वह बन्दा है जिसके पास अपनी ज़रूरतें पूरी करने का सामान भी नहीं है (और चूँकि वह अपने इस हाल को लोगों से छिपाता है इसलिये) किसी को उसकी हाजतमन्दी[6] का एहसास भी नहीं होता कि सद्क़े से उसकी मदद की जाए और न वह चल-फिर कर लोगों से सवाल करता है।

(सहीह बुख़ारी, मआरिफुल् हदीस, सहीह मुस्लिम)

1-पैतृक सम्पत्ति, विरासत, 2-जन-साधारण की भलाई, 3-योग्य, 4-दरिद्र 5-याचक सदृश, 6-आवश्यकता।

अपनी हाजतों का इख़्फ़ा[1]

(अपनी आवश्यकताओं का छिपाना)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस आदमी को कोई सख़्त हाजत पेश आई और उसने उसको बन्दों के सामने रखा (और उनसे मदद चाही) तो उस मुसीबत से मुस्तक़िल[2] नजात[3] नहीं मिलेगी और जिस आदमी ने उसे अल्लाह तआ़ला के सामाने रखा और दुआ़ की तो पूरी उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला शानुहू जल्द ही उसकी यह हाजत[4] ख़त्म कर देगा या तो जल्द ही मौत देकर (अगर उसकी मौत का मुक़र्रर[5] वक़्त आ गया हो) या कुछ ताख़ीर[6] से ख़ुशहाल कर दे।

(सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कभी मुझे कुछ अ़ता फ़रमाते थे तो मैं अ़र्ज़ करता था कि हज़रत किसी ऐसे आदमी को दे दीजिए जिसको मुझसे ज़्यादा इसकी ज़रूरत हो तो आप सल्ल० फ़रमाते कि उ़मर इसको ले लो और अपनी मिलकियत बना लो (फिर चाहो तो) सद्क़े के तौर पर किसी हाजतमन्द को दे दो (और अपना यह उसूल बना लो कि) जब कोई माल तुम्हें इस तरह मिले कि न तो तुमने उसके लिये सवाल किया हो और न तुम्हारे दिल में उसकी चाहत और तमअ़[7] हो (तो उसको अल्लाह तआ़ला का अ़तिया[8] समझ कर) ले लिया करो और जो माल इस तरह तुम्हारे पास न आए तो उसकी तरफ़ तवज्जोह[9] भी न करो।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-छिपाना, 2-निरन्तर, 3-मुक्ति, 4-ज़रूरत, 5-निश्चित, 6-देर, 7-लोभ, 8-अनुदान, उपहार, 9-ध्यान।

सद्के की हक़ीक़त

हज़रत अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया-अपने भाई की ख़ुशी की ख़ातिर ज़रा-सा मुस्कुरा देना भी सद्क़ा है, कोई नेक बात कह देनी भी सद्क़ा है, तुम्हारा किसी को बुरी बात से रोक देना भी सद्क़ा है, किसी बेनिशान ज़मीन का किसी को रास्ता बता देना भी सद्क़ा है, जिस शख़्स की नज़र कमज़ोर हो उसकी मदद कर देना भी सद्क़ा है, रास्ते से पत्थर, कांटा और हड्डी का हटा देना भी तुम्हारे लिये एक सद्क़ा है और अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना भी सद्क़ा है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, तर्जुमानुस्सुन्ना)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है (यानी देना लेने से बेहतर है) तो शुरू कर अपने अहलो-इयाल[1] से (यानी पहले उन्हीं को दे) इयाल कौन हैं- तेरी माँ, तेरा बाप, तेरी बहन, तेरा भाई, फिर जो ज़्यादा क़रीब-तर हो, फिर उसके बाद जो क़रीब-तर हो। (मआरिफ़ुल् हदीस, तबरानी, मुस्लिम व बुख़ारी)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- मर्द ने जो अपने ऊपर और अपनी औलाद पर, अपने अहल अपने ज़ी-रहम[2] और ज़ी-क़राबत[3] पर ख़र्च किया वह सब उसके लिये सद्क़ा है। (तबरानी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जिसकी तीन लड़कियाँ हैं वह उनको अदब सिखाता है, उन पर रहम करता है, उनका कफ़ील[4] है तो उसके लिये यक़ीनन् जन्नत वाजिब की गई। किसी ने कहा- या रसूलल्लाह!

1-परिवार, 2-सम्बन्धी, 3-निकटवर्ती सम्बन्धी, 4-भरण-पोषण करने वाला।

(सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) भला अगर दो ही लड़कियाँ हों, फ़रमाया- गो दो ही हों। बाज़ लोगों ने समझा कि अगर एक लड़की के लिये सवाल किया जाता तो एक को भी आप सल्ल० फ़रमा देते। तबरानी ने यह ज़्यादा किया है कि उसने उनका निकाह भी कर दिया। (अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जो मुसलमान बन्दा कोई दरख़्त लगाये या खेती करे तो उस दरख़्त या उस खेती में से जो फ़ल या जो दाना कोई इन्सान या कोई परिन्दा या कोई चौपाया खाएगा वह उस (दरख़्त या खेती वाले) बन्दे के लिये सद्क़ा और अज्रो-सवाब का ज़रिया होगा। (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में उन्होंने अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) कौन सद्क़ा अफ़्ज़ल[1] है। आप सल्ल० ने फ़रमाया- वह सद्क़ा अफ़्ज़ल-तरीन सद्क़ा है जो ग़रीब आदमी अपनी कमाई में से करे और पहले उन पर ख़र्च करे जिसका वह ज़िम्मेदार हो (यानी अपनी बीवी-बच्चों पर)। (सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

जिस्म के हर जोड़ पर सद्क़ा

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जितने इन्सान हैं सबके जिस्म में तीन सौ साठ जोड़ बनाए गए हैं (हर जोड़ की तरफ़ से एक सद्क़ा अदा करना वाजिब होता है) तो जिसने *'अल्लाहु अक्बर'* कहा या *'अल्-हम्दु लिल्लाह'* या *'ला इलाह इल्लल्लाह'* या *'सुब्हानल्लाह'* या *'अस्तग़्फ़िरुल्लाह'* कहा, हर एक-एक सद्क़ा शुमार हो जाता है। इसी तरह जिसने लोगों के रास्ते से तक्लीफ़देह चीज़ को हटा दिया। (तर्जुमानुस्सुन्ना, अदबुल्-मफ़रद)

1-उत्तम।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है- अगर तुम से कुछ और न हो सके तो बेकस[1] और हाजतमन्द[2] की मदद ही किया करो। (बुख़ारी) नीज़[3] यह भी इर्शाद फ़रमाया- भूले-भटके हुए को और किसी अंधे को रास्ता बताना भी सद्क़ा है। (तिर्मिज़ी)

यह भी इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स रास्ता चलने में कोई कांटा रास्ते से हटा दे तो अल्लाह तआ़ला उसके काम की क़दर करता है और उसका गुनाह मुआ़फ़ करता है। (तिर्मिज़ी, सीरतुन्नबी सल्ल०)

ईसाले सवाब[4] सद्क़ा है

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया- हज़रत सल्ल० मेरे वालिद का इन्तिक़ाल हो गया है और उन्हों ने तर्का में कुछ माल छोड़ा है और सद्क़ा वग़ैरा की कोई वसिय्यत नहीं की है तो अगर मैं उनकी तरफ़ से सद्क़ा करूँ तो क्या मेरा यह सद्क़ा कफ़्फ़ारा-ए-सय्यिआत[5] और मग़्फ़िरत व नजात[6] का ज़रिया बन जाएगा? आप सल्ल० ने फ़रमाया- हाँ (अल्लाह तआ़ला से इसी की उम्मीद है)।

(तहज़ीबुल् आसार लि-इब्ने जरीर, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हिजरत[7]

जिहाद व शहादत

हिजरत:- हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है, बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना आप फ़रमाते थे कि सब आमाले इन्सानी का दारोमदार बस निय्यतों

1-निःसहाय, 2-याचक, 3-इसके अतिरिक्त, 4-मुर्दों की रूह को सवाब पहुँचाना, 5-गुनाहों का कफ़्फ़ारा, किसी गुनाह से शुद्धि के लिए किया गया कर्म, 6-मुक्ति, 7-अल्लाह व रसूल की महब्बत में अपने निवास स्थान को छोड़ना।

पर है और आदमी को उसकी निय्यत ही के मुताबिक़ फल मिलता है तो जिस शख़्स ने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ हिजरत की (और अल्लाह और रसूल की रिज़ाजोई[1] और इताअ़त के सिवा उसकी हिजरत का और कोई बाइस[2] न था) तो उसकी हिजरत दर-हक़ीक़त अल्लाह और रसूल की तरफ़ हुई (और बेशक वह अल्लाह व रसूल का सच्चा मुहाजिर[3] है और उसको उसकी हिजरत इलल्लाह वर्रसूल[4] का मुक़र्रर अज्र[5] मिलेगा) और जो किसी दुनियवी ग़रज़ के लिये या किसी औ़रत से निकाह करने की ख़ातिर मुहाजिर बना तो (उसकी हिजरत अल्लाह व रसूल के लिये न होगी बल्कि) फ़िल्वाक़े[6] जिस दूसरी ग़रज़ और निय्यत से उसने हिजरत इख़्तियार की है, इन्दल्लाह[7] बस उसी की हिजरत मानी जाएगी।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

जिहाद[8]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया– (हदीसे क़ुदसी) जो शख़्स मेरे रास्ते में जिहाद करने और सिर्फ़ मुझ पर ईमान रखने और मेरे रसूलों की तस्दीक़ करने की वजह से (अपने घर से) निकला है तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसका ज़ामिन[9] है कि या उसको जन्नत में दाख़िल कर देगा (अगर वह शहीद हो गया) या उसको मकान की तरफ़ जिससे वह (जिहाद के लिये) निकला है, कामयाब वापस पहुँचा देगा। सवाब के साथ या ग़नीमत के साथ और क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (सल्ल०) की जान है कि वो कोई ज़ख़्म ख़ुदा के रास्ते में नहीं खाएगा मगर क़ियामत के दिन उसको उसी हालत में लेकर हाज़िर होगा जैसा ज़ख़्म खाने के वक़्त था। उसका रंग सुर्ख़ होगा और बू मुश्क की

1-ख़ुशनूदी की तलाश, 2-कारण, 3-हिजरत करने वाला, 4-अल्लाह और रसूल की तरफ़ से, 5-बदला, सवाब, 6-यथार्थता, 7-अल्लाह के समीप, 8-धर्म के लिये विधर्मियों और पापियों से लड़ना, 9-प्रतिभू।

ख़ुशबू जैसी होगी और क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मैं मुसलमानों पर गिरानी[1] महसूस न करता तो मैं किसी लश्कर से जो जिहाद कर रहा है कभी पीछे न बैठता, न मैं ख़ुद इतनी वुस्अ़त[2] पाता हूँ कि सबको सवारी दूँ और न मुसलमानों ही में इतनी वुस्अ़त है और यह उन पर गिराँ है कि मैं (जिहाद के लिये) चला जाऊँ और वह मुझसे पीछे रह जायें और क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, बेशक मैं तमन्ना रखता हूँ कि ख़ुदा के रास्ते में जिहाद करूँ और शहीद हो जाऊँ, फिर जिहाद करूँ फिर शहीद हो जाऊँ, फिर जिहाद करूँ फिर शहीद हो जाऊँ।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जो शख़्स इस हाल में मरा कि न तो उसने कभी जिहाद किया और न अपने जी में उसकी तज्वीज़ें[3] सोचीं और तमन्ना की तो वह निफ़ाक़[4] की एक सिफ़त पर मरा"।

तशरीह (व्याख्या)- यानी ऐसी ज़िन्दगी जिसमें दावा-ए-ईमान के बावजूद न कभी अल्लाह के रास्ते में जिहाद की नौबत आये और न दिल में उसका शौक़ और उसकी तमन्ना हो। यह मुनाफ़िक़ों की ज़िन्दगी है और जो इसी हाल में इस दुनिया से जावेगा वह निफ़ाक़ की एक सिफ़त के साथ जाएगा। (अल्इयाज़ु-बिल्लाहि) (मआ़रिफ़ुल् हदीस)

शहादत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जो सिद्क़[5] दिल से शहादत तलब करता है, उसको शहादत का दर्जा मिल जाता है अगर्चे वह शहीद न हो। (मुस्लिम)

हज़रत जाबिर बिन अ़तीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से (एक तवील

1-भार, 2-सामर्थ्य, 3-उपाय, 4-नफ़ुता, 5-सच्चे दिल से।

यानी लम्बी हदीस में) रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तुम लोग शहादत किसे शुमार करते हो, अ़र्ज़ किया गया अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हो जाने को। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हो जाने के अ़लावा सात और शहादतें हैं:-

1- मर्ज़े हैज़ा में मरने वाला।

2- डूब कर मरने वाला।

3- ज़ातुल् जन्ब[1] से मरने वाला।

4- ताऊन (प्लेग) से मरने वाला।

5- जलकर मरने वाला।

6- इमारत के नीचे दब कर मरने वाला। और

7- वह औ़रत जो बच्चे के पेट ही में रह जाने और पैदा न होने की वजह से मर जाए। ये सब शहीद हैं।

(अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-निमोनिया।

बाब- 3 (तृतीय परिच्छेद) मुआ़मलात (व्यवहार)

हुक़ूक़ (अधिकार समूह)

हुक़ूक़ुन्नफ़्स (इन्द्रियों का अधिकार)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुसलसल शब्बेदारी[1] और नफ़्ल रोज़े में ज़्यादती की मुमानअ़त[2] में फ़रमाया कि तुम्हारे बदन का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी आँख का भी तुम पर हक़ है।

(बुख़ारी व मुस्लिम, हयातुल् मुस्लिमीन)

(फ़ायदा)- मतलब यह है कि ज़्यादा मेहनत करने से और ज़्यादा जागने से सेहत ख़राब हो जायेगी और आँखें आशोब[3] कर आयेंगी।

हज़रत अम्र बिन मैमून रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक शख़्स से नसीहत करते हुए फ़रमाया- पाँच चीज़ों को पाँच चीज़ों (के आने) से पहले ग़नीमत समझो (और उनको दीन के कामों का ज़रिया बना लो)

1- जवानी को बुढ़ापे से पहले,

2- सेहत को बीमारी से पहले,

3- मालदारी को इफ़्लास[4] से पहले,

4- बेफ़िक्री को परेशानी से पहले और

5- ज़िन्दगी को मौत से पहले। (तिर्मिज़ी, हयातुल्-मुस्लिमीन)

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने बीमारी और दवा दोनों चीज़ें उतारीं और हर बीमारी के लिये दवा भी बनाई

1-रात्रि जागरण, 2-निषेध, 3-आँखें दुखने का रोग, 4-निर्धनता।

सो तुम दवा (इलाज) किया करो और हराम चीज़ से दवा मत करो।

(अबू दाऊद)

फ़ायदा:-इसमें साफ़ हुक्म है तहसीले सेहत[1] का। (हयातुलमुस्लिमीन)

हुज़ूर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि ये चीज़ें फ़ित्रते सलीमा[2] का मुक़्तज़ा[3] हैं:- ख़त्ना करना, ज़ेर नाफ़[4] के बाल साफ़ करना, बग़ल के बाल लेना, लबें काटना (यानी मूँछ और होंठ पर लटके हुए बालों को काटना) इन सबके लिये चालीस दिन से ज़्यादा छोड़ने की इजाज़त नहीं। (मुस्लिम, अल्-अदबुल्-मुफ़रद)

हुक़ूके वालिदैन
(माता-पिता के अधिकार)

1- हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुसलमानों! अपने वालिदैन के साथ नेकी का बर्ताव करो ताकि तुम्हारी औलाद भी तुम्हारे साथ नेकी से पेश आए। (अबुश्शैख़ फ़िस्तौबीख़, अल्‌अदबुल्-मुफ़रद)

2- हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया- बेहतरीन अ़मल कौन-सा है, जो हक़ तआ़ला शानुहू को सबसे ज़्यादा पसन्द हो। सरकार ने इर्शाद फ़रमाया- "वक़्त पर नमाज़ पढ़ना"। मैंने अ़र्ज़ किया- उसके बाद, आपने फ़रमाया- "माँ-बाप से अच्छा बर्ताव करना"। मैंने अ़र्ज़ किया- फिर कौन-सा अ़मल? इर्शाद फ़रमाया "अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना"। (बुख़ारी व मुस्लिम)

3- हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स रिज़्क़ की कुशादगी[5] और उम्र की ज़्यादती का ख़्वाहिशमन्द हो उसको चाहिए कि सिला-ए-रहमी[6] करे और

1-स्वास्थ्य प्राप्त करना, 2-शान्त स्वभाव, 3-आवश्यकता, मांग, 4-नाभि के नीचे, 5-वृद्धि, 6-अपने परिवार वालों से प्रेम रखना और यथाशक्ति उनकी सहायता करना।

माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करे। (मुस्नदे अहमद, अल्अदबुल्-मुफ़्रद)

4- हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला की रिज़ा माँ-बाप की रिज़ा में और अल्लाह तआला का गुस्सा माँ-बाप के गुस्से में पोशीदा[1] है।

(अल्अदबुल्-मुफ़्रद)

5- कबीरा गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शिर्क करना और माँ-बाप की नाफ़रमानी करना है।

(अल्अदबुल्-मुफ़्रद, बुख़ारी व मुस्लिम)

6- तीन शख़्स हैं जिन पर अल्लाह तआला ने जन्नत को हराम कर दिया है, उनमें से एक माँ-बाप का नाफ़रमान भी है।

(अल्अदबुल-मुफ़्रद, अहमद)

7- हर गुनाह के बदले में अज़ाब और हर जुर्म की गिरिफ़्त को मुअख़्ख़र[2] किया जा सकता है लेकिन माँ-बाप की नाफ़रमानी का गुनाह ऐसा सख़्त है कि उसका मुआख़ज़ा[3] मरने से पहले ही कर लिया जाता है।

(अल्अदबुल्-मुफ़्रद, हाकिम)

8- बाप के दोस्तों के साथ नेकी से पेश आना, ख़ुद बाप के साथ नेकी से पेश आना है। (अल्अदबुल्मुफ़्रद)

9- जो आदमी अपने माँ-बाप के मरने के बाद उनका क़र्ज़ अदा कर देता है और उनकी मानी हुई बात पूरी कर देता है, वह अगर्चे ज़िन्दगी में उनका नाफ़रमान रहा हो फिर भी वह अल्लाह के नज़्दीक उनका फ़रमा-बरदार समझा जाएगा और जो आदमी अपने माँ-बाप के मरने के बाद न उनका क़र्ज़ अदा करता है, न मानी हुई मिन्नत को पूरा करता है, वह अगर्चे ज़िन्दगी में उनका फ़रमांबरदार रहा हो फिर भी अल्लाह तआला के नज़्दीक उनका नाफ़रमान समझा जाएगा। (अल्अदबुल्-मुफ़्रद)

1-छिपा हुआ, 2-विलम्ब, 3-पकड़।

माँ के साथ अच्छा सुलूक

10- बहज़ बिन हकीम रहमतुल्लाहि अलैह अपने बाप से, वह अपने दादा से यूँ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया कि मैं एहसान का मुआमला किसके साथ करूँ? आपने फ़रमाया- "अपनी माँ से"। मैंने (फिर) पूछा किससे नेकी करूँ, फ़रमाया- "अपनी माँ से"। मैंने तीसरी मर्तबा फिर अपना यही सवाल दोहराया तो आप ने फिर फ़रमाया- माँ के साथ। मैंने (चौथी मर्तबा फिर) पूछा- किससे भलाई करूँ, आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- "बाप के साथ", फिर जो क़रीबी रिश्तेदार हो वह मुक़द्दम[1] है। (अलअदबुल्-मुफ़रद)

11- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस मुसलमान के माँ-बाप मुसलमान हैं और वह सुब्ह-दम[2] अज्रो-सवाब की निय्यत से उनकी ख़िदमत में (सलाम व मिज़ाज पुर्सी के लिये) हाज़िर होता है तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत के दो दरवाज़े खोल देता है और अगर वालिदैन में से एक है तो जन्नत का एक दरवाज़ा खोल देता है और अगर दोनों में से किसी एक को उसने ख़फ़ा कर दिया और ग़ुस्सा दिलाया तो जब तक वे राज़ी और ख़ुश न हों, अल्लाह तआला भी ख़ुश नहीं होता (हाज़िरीन में से) किसी ने कहा:-

وَإِنْ ظَلَمَاهُ، قَالَ : وَإِنْ ظَلَمَاهُ

"व इन् ज़लामाहु, क़ाल व इन् ज़लमाहु" यानी अगर्चे माँ-बाप उसपर ज़ुल्म करें (तो जवाब में कहा गया) हाँ अगर्चे वे दोनों उसपर ज़ुल्म करें।

फ़ाइदा:- यह अम्र[3] दलील है कि माँ-बाप का हक़ बहुत बड़ा है हत्ताकि अगर उनसे औलाद के हक़ में कोई ऐसी कार्रवाई सरज़द भी हो जाय जो इंसाफ़ के ख़िलाफ़ हो, तब भी उनकी इताअत से सरताबी[4] न करनी

1-मुख्य, 2-प्रातःकाल, 3-आदेश, 4-अवज्ञा, नाफ़रमानी करना।

चाहिए, क्योंकि अल्लाह तआला की रिज़ामन्दी और नाराज़गी, माँ-बाप की ख़ुशी-नाख़ुशी पर मौक़ूफ़[1] है। (अलअदबुल्-मुफ़रद)

12- नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है- कि वह आदमी ज़लील हो, फिर ज़लील हो, फिर ज़लील हो, लोगों ने पूछा- ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! कौन आदमी? आपने फ़रमाया- वह आदमी जिसने अपने माँ-बाप को बुढ़ापे की हालत में पाया, दोनों को पाया या किसी एक को और फिर (उनकी ख़िदमत करके) जन्नत में दाख़िल न हुआ। (मुस्लिम, अलअदबुल्-मुफ़रद)

13- हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- जो नेक औलाद भी माँ-बाप पर महब्बत भरी एक नज़र डालती है उसके बदले अल्लाह तआला शानुहू उसको एक हज्जे मक़बूल का सवाब बख़्शता है। लोगों ने पूछा- ऐ अल्लाह के रसूल! अगर कोई एक दिन में सौ बार इसी तरह रहमत व महब्बत की नज़र डाले, आप सल्ल० ने फ़रमाया- जी हाँ, अगर कोई सौ बार ऐसा करे तब भी। अल्लाह (तुम्हारे तसव्वुर से) बहुत बड़ा और (तंगदिली जैसे ऐबों से) बिल्कुल पाक है। (मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

14- एक शख़्स रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! मेरे पास माल है और मेरे बाप को मेरे माल की ज़रूरत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारा माल और तुम अपने वालिदैन के लिये हो। बेशक तुम्हारी औलाद तुम्हारी पाक कमाई है, इसलिए तुम अपनी औलाद की कमाई से बिला तकल्लुफ़[2] खाओ। (इब्ने माजा, अबू दाऊद)

1-निर्भर 2-निःसंकोच।

वालिदैन का हक़ बादे मौत

15- एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) क्या वालिदैन के मरने के बाद उनके साथ सुलूक करने की कोई सूरत बाक़ी है? (यानी कोई सूरत हो सकती है) फ़रमाया- ''उनके लिये दुआ़ करना'' (जिसमें नमाज़े जनाज़ा भी शामिल है) और उनके लिये इस्तिग़फ़ार करना और उनके मरने के बाद उनकी वसिय्यत को पूरा करना (बशर्ते कि ख़िलाफ़े शर्अ़ न हो) उनके क़राबतदारों[1] से सिल-ए-रहमी[2] करना, जो महज़ उनकी क़राबत की वजह से की जाए (इस निय्यत से कि रिज़ा-ए-वालिदैन हासिल हो और रिज़ा-ए-वालिदैन से रिज़ा-ए-हक़ हासिल हो) और वालिदैन के दोस्तों की ताज़ीम करना। (मिश्कात, अबू दाऊद, अल्‌अदबुल्-मुफ़्रद)

16- हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- अगर कोई बन्दा-ए-ख़ुदा ज़िन्दगी में माँ-बाप का नाफ़रमान रहा और वालिदैन में से किसी एक का या दोनों का उसी हाल में इन्तिक़ाल हो गया तो अब उसको चाहिए कि वह अपने वालिदैन के लिये बराबर दुआ़ करता रहे और अल्लाह से उनकी बख़्शिश की दरख़्वास्त करता रहे। यहाँ तक कि अल्लाह उसको अपनी रहमत से नेक लोगों में लिख दे। (बैहक़ी)

17- वालिदैन की ख़िदमत का यह भी ततिम्मा[3] समझना चाहिए कि उनके इन्तिक़ाल के बाद उनके मिलने वालों से सुलूक व एहसान किया जाए।

(बुख़ारी, अल्‌अदबुल्-मुफ़्रद)

वालिद के दोस्त का हक़

18- रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अपने बाप के दोस्त का ख़्याल रखो, उससे क़तअ़ तअ़ल्लुक़[4] न करो (ऐसा न हो

1-रिश्तेदारों,2-प्रेमपूर्ण व्यवहार करना एवं यथाशक्ति सहायता करना, 3-पूरक, 4-सम्बन्ध विच्छेद

कि उसकी दोस्ती कतअ़ करने की वजह से) अल्लाह तआ़ला तुम्हारा नूर बुझा दे। (अल्अदबुल्-मुफ़रद)

माँ-बाप पर लानत भेजना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक हदीस में इस तरह इर्शाद फ़रमाया कि "सबसे बड़ा गुनाह यह है कि आदमी अपने माँ-बाप पर लानत भेजे। अ़र्ज़ किया गया- या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! कोई अपने माँ-बाप पर क्यों कर लानत भेज सकता है? फ़रमाया- (इस तरह कि जब कोई किसी के माँ-बाप को बुरा-भला कहेगा तो वह भी उसके माँ-बाप दोनों को बुरा-भला कहेगा"। (बुख़ारी, सीरतुन् नबी सल्ल०)

शौहर व बीवी के हुक़ूक़
(दाम्पत्याधिकार)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी बीवियों के दरमियान हुक़ूक़ की तक़्सीम[1] में इंसाफ़ फ़रमाते थे कि ऐ अल्लाह! यह मेरी तक़्सीम है उन चीज़ों में जिन पर मेरा क़ाबू है, पस तू उस चीज़ में मेरी मलामत[2] न कर जो ख़ालिस[3] तेरे क़ब्ज़े में है और मेरे क़ब्ज़े में नहीं (यानी महब्बत)। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया गया कि कौन-सी औरत अच्छी है? आपने फ़रमाया- जो ऐसी हो कि जब शौहर उसको देखे (दिल) ख़ुश हो जाये और जब उसको कोई हुक्म दे तो उसको बजा लाये और अपनी ज़ात और माल के बारे में नागवार बात करके उसके ख़िलाफ़ न करे। (नसाई, हयातुल् मुस्लिमीन)

फ़- ख़ुशी और फ़रमांबरदारी और मुवाफ़क़त[4] के कितने बड़े फ़ायदे हैं। (हयातुल् मुस्लिमनी)

1-विभाजन, 2-धिक्कारना, 3-केवल, 4-समानता, मैत्री।

एक और हदीस में है कि जब शौहर कहीं बाहर जाये तो उसकी ग़ैर मौजूदगी में उसके घर-बार और हर अमानत की हिफ़ाज़त करे।

(सुनने अबी दाऊद)

हज़रत हकीम बिन मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि मैंने अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारी बीवी का हम पर क्या हक़ है? आपने फ़रमाया यह है कि जैसा तुम खाना खाओ उसको भी खिलाओ और जैसा कपड़ा पहनो उसको भी पहनाओ और उसके मुँह पर मत मारो (यानी कुसूर पर भी मत मारो और बेक़ुसूर मारना तो सब जगह बुरा है) और न उसको बुरा कोसना दो और न उससे मिलना-जुलना छोड़ो मगर घर के अन्दर-अन्दर रहकर (यानी रूठकर घर से बाहर मत जाओ)। (अबू दाऊद, हयातुल मुस्लिमीन)

हज़रत उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो औरत इस हाल में वफ़ात[1] पाए कि उसका शौहर उससे राज़ी और ख़ुश हो, वह जन्नत में दाख़िल होगी। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि चार चीज़ें ऐसी हैं कि जिसको ये मिल जायें तो दीन व दुनिया की भलाई उसको नसीब हो जाये:-

1- शुक्र गुज़ार दिल, 2-हर हाल में अल्लाह तआला को याद रखने वाली ज़बान, 3-बलाओं पर सब्र करने वाला जिस्म, 4-वह औरत जो अपनी ज़ात और अपने शौहर के माल में ख़ियानत[2] न करे। (बैहक़ी, मिश्कात)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि औरत पर सबसे बड़ा हक़ उसके शौहर का है और मर्द पर सबसे बड़ा हक़ उसकी माँ का।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह

1-मृत्यु, 2-धरोहर को हड़पना।

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन आदमी हैं जिनकी नमाज़ क़बूल नहीं होती- एक वह आदमी जो लोगों पर सरदारी करे और ये लोग उससे नाराज़ हों, दूसरे वह औ़रत जिसका शौहर उससे नाराज़ हो और वह आराम से पड़ी सो रही हो और तीसरे वह आदमी जो अपने भाई से क़तअ़ तअ़ल्लुक़[1] करे। (बुख़ारी)

हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- ईमान रखने वाली औ़रत के लिये जाइज़ नहीं कि वह अपने शौहर के घर में किसी ऐसे शख़्स को आने की इजाज़त दे जिसका आना शौहर को नागवार हो और वह घर से ऐसी सूरत में निकले जब कि उसका निकलना शौहर को नागवार हो और औ़रत शौहर के मुआमले में किसी की इताअ़त[2] न करे। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब कोई मर्द रात में अपनी बीवी को जगाता है और वे दोनों मिलकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते हैं तो शौहर का नाम ज़िक्र करने वालों में और बीवी का नाम ज़िक्र करने वालियों में लिख लिया जाता है। (अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- अगर किसी शख़्स की दो बीवियाँ हों और उसने उनके साथ इन्साफ़ और बराबरी का सुलूक न किया तो क़ियामत के दिन वह शख़्स इस हाल में आयेगा कि उसका आधा धड़ गिर गया होगा। (तिर्मिज़ी)

नबीए अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है- औ़रत जब पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़े, अपनी आबरू[3] की हिफ़ाज़त करे, अपने शौहर की फ़रमाँबरदारी करे तो वह जन्नत में जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाये।

(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- अल्लाह

1-सम्बन्ध, विच्छेद, 2-आज्ञा-पालन, 3-सतीत्व।

तआला क़ियामत के दिन उस औरत की तरफ़ नज़र उठाकर भी न देखेगा जो शौहर की नाशुक्र-गुज़ार होगी, हालाँकि औरत किसी वक़्त भी शौहर से बेनियाज़[1] नहीं हो सकती। (नसाई, अलअदबुल्-मुफ़रद)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- मोमिन के लिये अल्लाह के ख़ौफ़ के बाद ज़्यादा मुफ़ीद[2] और बाइसे ख़ैर[3] व नेअ्मत नेक बीवी है कि जब वह उससे किसी काम को कहे तो वह ख़ुशदिली से अंजाम दे और जब वह उस पर निगाह डाले तो वह उसको ख़ुश कर दे और जब वह उसके भरोसे पर क़सम खा बैठे तो वह उसकी क़सम पूरी कर दे और जब वह कहीं चला जाये तो वह उसके पीछे अपनी इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करे और शौहर के माल व अस्बाब की निगरानी में शौहर की ख़ैरख़्वाह व वफ़ादार रहे। (इब्ने माजा, अलअदबुल्-मुफ़रद)

औलाद के हुक़ूक़

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इर्शादात हैं कि:-

1- मुसलमानो! अल्लाह चाहता है कि तुम अपनी औलाद के साथ बर्ताव करने में इन्साफ़ को हाथ से न जाने दो। (तबरानी)

2- जो मुसलमान अपनी लड़की को उम्दा तर्बियत करे और उसको उम्दा तालीम दे और उसकी पर्वरिश करने में अच्छी तरह सर्फ़ करे[4] वह दोज़ख़ की आग से महफ़ूज़ रहेगा। (तबरानी)

3- मुसलमानो! अपनी औलाद की तर्बियत अच्छी तरह किया करो। (तबरानी)

4- नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है- बाप अपनी औलाद को जो कुछ दे सकता है उसमें बेहतर अतिया[5] औलाद की अच्छी तालीम व तर्बियत है। (मिश्कात)

5- नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है- अपने

1-उदासीन, 2-लाभदायक, 3-कल्याणकारी, 4-ख़र्च, 5-उपहार।

बच्चों को नमाज़ पढ़ने की तल्कीन[1] करो जब वे सात साल के हो जायें, और नमाज़ के लिये उनको सज़ा दो जब वे दस साल के हो जायें और इस उम्र को पहुँचने के बाद उनके बिस्तर अलग कर दो। (मिश्कात शरीफ़)

6- लोगो! तुम क़ियामत में अपने और बापों के नामों से पुकारे जाओगे, पस[2] अपना नाम अच्छा रखा करो। (अबू दाऊद)

7- जिस नाम में इबादत और अल्लाह की तारीफ़ का ज़ुहूर होता है वह नाम अल्लाह को बहुत प्यारा है। (बुख़ारी)

8- सबसे मुक़द्दम[3] अपने अहलो-इयाल[4] पर ख़र्च करना ज़रूरी है, फिर जो लोग रिश्ते में क़रीब हों उन पर ख़र्च करना चाहिए। (तबरानी)

9- एक दीनार जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह (अल्लाह के रास्ते जिहाद में) ख़र्च किया जाये और एक दीनार किसी ग़ुलाम को आज़ाद कराने में और एक दीनार किसी मिस्कीन को दिया जाये और एक दीनार अपने अहलो-इयाल पर ख़र्च किया जाये तो इन सब में अज्रो-सवाब के लिहाज़ से अफ़ज़ल[5] वह दीनार है जो अहलो-इयाल के नान-नफ़्क़ा[6] पर ख़र्च किया जाये। (मुस्लिम)

(यानी बच्चों पर ख़र्च करना भी सवाब व इबादत के दर्जे में है, इसलिए उन पर तंगी न की जाये).

औलाद का नाम और अदब

10- हज़रत अबू वहब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने फ़रमाया कि तुम पैग़म्बरों के नाम पर नाम रखा करो और अल्लाह तआला के नज़्दीक ज़्यादा प्यारा नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान है और सबसे सच्चा नाम हारिस और हुमाम है। (अबू दाऊद, नसाई)

11- हज़रत हब्बह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- जिन दो मुसलमानों के तीन बच्चे

1-निर्देश, 2-अतः, 3-प्रधान, 4-परिवार, 5-श्रेष्ठ, 6-रोटी-कपड़ा।

सिन्ने बुलूग़[1] को पहुँचने से पहले मर गए, उनको क़ियामत के दिन लाकर जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा करके कहा जाएगा, बिहिश्त में दाख़िल हो, वह कहेंगे (हम जब बिहिश्त में दाख़िल होंगे जब) हमारे माँ-बाप भी दाख़िल हों। इस पर उनसे यह कहा जाएगा- अच्छा तुम भी बहिश्त में दाख़िल हो और तुम्हारे माँ-बाप भी। (तबरानी, कबीर)

लड़कियों की पर्वरिश

12- हदीस शरीफ़ में है कि जब किसी के यहाँ लड़की पैदा होती है, तो अल्लाह तआला उसके यहाँ फ़िरिश्ते भेजता है, जो आकर कहते हैं- 'ऐ घरवालो! तुम पर सलामती हो। वह लड़की को अपने परों के साये में ले लेते हैं और उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं- ''यह कमज़ोर जान है जो एक कमज़ोर जान से पैदा हुई, जो बच्ची की निगरानी और पर्वरिश करेगा, क़ियामत तक अल्लाह की मदद उसके शामिले हाल रहेगी''। (तबरानी)

13- हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया- जो शख़्स भी लड़कियों की पैदाइश के ज़रिये आज़माया जाये और उनके साथ अच्छा सुलूक करके आज़माइश में कामयाब हो तो ये लड़कियाँ उसके लिये क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से ढाल बन जायेंगी। (मिश्कात)

औलादे सालेह[2]

14- हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- ''बन्दा'' जब मर जाता है तो उसके आमाल का सिल्सिला मुन्क़तअ़[3] हो जाता है, मगर तीन चीज़ें (कि उनका सवाब बराबर मिलता रहता है)- 1. सदक़-ए-जारिया, 2. वह इल्म जिससे नफ़ा उठाया जाता रहे और, 3. सालेह और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ-गो[4] रहे। (अल्अदबुल्-मुफ़रद)

1-युवावस्था, 2-सदाचारी सन्तान, नेक औलाद, 3-विच्छिन्न, 4-दुआ करने वाला।

वसिय्यत

15- हदीस शरीफ़ में है कि हर मुसलमान जिसके पास वसिय्यत करने के काबिल कोई चीज़ हो उस पर यह हक़ है कि दो रातें उस पर न गुज़रें मगर यह कि वसिय्यत उसके पास मौजूद हो।

16- हदीस शरीफ़ में है कि अगर एक बेटे को कोई चीज़ दी तो दूसरे को भी वैसी ही दो वर्ना नाइन्साफ़ी बुरी बात है। (तिर्मिज़ी)

नाजाइज़ वसिय्यत

17- हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई मर्द और इसी तरह कोई औरत साठ साल तक अल्लाह तआ़ला की इबादत व ताअ़त[1] में गुज़ारते हैं, फिर उनके मरने का वक़्त आता है तो वसिय्यत के ज़रिये वर्सा[2] को नुक़्सान पहुँचा देते हैं तो उन दोनों के लिये जहन्नम वाजिब हो जाती है। उसके बाद अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हदीस के मज़्मून की ताईद में क़ुरआन शरीफ़ की आयत पढ़ी:-

﴿ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ से وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○ तक ﴾
سورة النساء آية ١٢-١٣

मिम् बअ़दि वसिय्यतिंय्यूसा बिहा अव्दैनिन् ग़ैर मुज़ार्रिन् से व ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अज़ीम। तक (सूरए निसा, रुकू 13, पाराः 4) (मुस्नदे अहमद)

भाई और बहनों के हुक़ूक़

बड़े भाई, बहन और बेटियों का हक़

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बड़े भाई का हक़ छोटे भाई पर वैसा ही है जैसा बाप का हक़ बेटे पर। (मिश्कात)

1-उपासना, 2-मरने वाले की संतान व सम्बंधी।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने पर्वरिश की दो या तीन बेटियों की या दो या तीन बहनों की ताआँकि[1] वह उससे जुदा हो जायें (ब्याह-शादी के बाद) या फ़ौत हो जायें तो मैं और वह शख़्स जन्नत में इस तरह साथ-साथ होंगे (जिस तरह ये दो उंगलियां) और आप सल्ल० ने अंगुश्ते शहादत[2] और दरमियानी उंगली की तरफ़ इशारा फ़रमाया।

(अल्अदबुल्-मुफ़्रद)

यतीम का हक़

यतीम पर रहम करना

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो आदमी किसी यतीम लड़के या लड़की के साथ नेकी या भलाई से पेश आता हो, मैं और वह दोनों जन्नत में पास-पास होंगे जिस तरह मेरे हाथ की ये दो उंगलियां क़रीब-क़रीब हैं (दस्ते मुबारक की दो उंगलियां मिलाकर इशारा फ़रमाया)। (हाकिम अन् अनस, अल्अदबुल्-मुफ़्रद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "मुसलमानों के घरों में सबसे बेहतर घर वह है जिसमें यतीम हो और उसके साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और मुसलमानों में सबसे बदतर घर वह है जिसमें यतीम हो और उसके साथ बुरा सुलूक किया जाता हो। (इब्ने माजा)

यतीम का माल खाने वाले इस हाल में क़ब्रों से उठाये जायेंगे कि उनके मुंह से आग के शोले निकलते होंगे। (अबू यअ्ला)

यतीम की पर्वरिश

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि मैं और

1-यहाँ तक कि, 2-तर्जनी।

सियाह रुख़्सारों[1] वाली औरत क़ियामत के दिन इस तरह होंगे। (यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ इस हदीस के एक रावी ने दरमियानी और शहादत की उंगली की तरफ़ इशारा करके बताया कि जिस तरह ये उंगलियां क़रीब-क़रीब हैं इसी तरह आप और वह औरत क़ियामत के दिन क़रीब-क़रीब होंगे) और सियाह रुख़्सारों वाली औरत की तशरीह करते हुए बताया कि इससे मुराद वह औरत है जिसका शौहर मर गया हो या उसने तलाक़ दे दी हो और वह औरत जाह[2] व जमाल[3] रखती हो लेकिन उसने यतीम बच्चों की पर्वरिश के ख़्याल से दूसरा निकाह न किया हो और अपनी ख़्वाहिशात को रोका हो, यहाँ तक कि उसके बच्चे जवान होकर उससे जुदा हो गये हों।

(अबू दाऊद, मिश्कात, हयातुल् मुस्लिमीन)

यतीम से महब्बत व शफ़्क़त
(अनाथ से प्रेम व सहानुभूति)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जो शख़्स यतीम के सर पर हाथ फेरे और महज़ अल्लाह ही के लिये फेरे तो जितने बालों पर उसका हाथ गुज़रा है, उतनी ही नेकियाँ उसको मिलेंगी और जो शख़्स यतीम लड़के और लड़की के साथ एहसान करे जो कि उसके पास रहता हो तो मैं और वह जन्नत में इस तरह रहेंगे, जैसे- शहादत की उंगली और बीच की उंगली पास-पास हैं।" (बिहिश्ती ज़ेवर)

सिला रहमी
(अपने परिवार वालों से प्रेम तथा यथाशक्ति उनकी सहायता करना)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- लोगो!, तुम्हें अपने

1-काले गालों, 2-इज़्ज़त, 3-सुन्दरता।

हसबो-नसब[1] के मुतअ़ल्लिक़ इस क़द्र इल्म हासिल करना ज़रूरी है जिसकी वजह से तुम अपने रिश्तेदारों के साथ सिल-ए-रहमी कर सको (मसलन बाप, दादा और माएँ और जद्दात[2] और उनकी औलाद, मर्द और औ़रत कि उन्हें पहचानना और उनके नाम याद रखना ज़रूरी है कि यही ज़विल्‌अर्हाम[3] कहलाते हैं और इन्हीं के साथ सिल-ए-रहमी करने का हुक्म है) क्योंकि सिल-ए-रहमी करने से क़राबतदारों[4] में महब्बत पैदा होती है, माल में कसरत व बरकत होती है और उम्र में ज़्यादती होती रहती है। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! मेरे चन्द क़राबतदार हैं और अ़जीब तरह की तबीअ़त के वाक़े हुए हैं। मैं उनके साथ सिल-ए-रहमी करता हूँ और ये क़तअ़-रहमी[5] करते हैं। मैं उनसे नेकी करता हूँ ये मुझसे जिहालत करते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसके जवाब में फ़रमाया कि अगर वाक़ई में तू ऐसा ही है जैसा कहता है तो गोया तू उनके मुँह में गरम-गरम भंभूल (गर्म रेत) डालता है (यानी तेरी अ़ता[6] उनके हक़ में हराम है और उनके शिकम[7] में आग का हुक्म रखती है) अल्लाह तआ़ला हमेशा उन पर तेरी मदद करता रहेगा जब तक तू इस सिफ़त पर क़ाइम रहेगा। (मुस्लिम, अल्‌अदबुल्-मुफ़रद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि हर जुमेरात की शाम, जुमा की रात को लोगों के आमाल अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश किये जाते हैं। पस अल्लाह रिश्त-ए-क़राबत तोड़ने वाले के आमाल को क़बूल नहीं करता। (अल्‌अदबुल्-मुफ़रद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मर्फ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तीन चीज़ें ऐसी हैं कि अगर वे किसी शख़्स में होंगी तो अल्लाह तआ़ला उसका हिसाब सहूलत व आसानी से लेगा और अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल करेगा। पूछा गया

1-कुलीनता और श्रेष्ठता, 2-दादा, नाना, 3-ख़ूनी रिश्तेदारी, 4-रिश्तेदारों, 5-विच्छेद, 6-देना, 7-पेट।

कि या रसूलल्लाह! वह क्या हैं? आपने फ़रमाया जो तुमको महरूम करे उसको दो, जो तुम से रिश्ता तोड़े उससे नाता जोड़ो, जो तुम पर ज़ुल्म करे उसको मुआफ़ कर दो। जब तू यह कर लेगा तो अल्लाह तआला तुझको जन्नत में ले जाएगा।

(तबरानी, वल्हाकिम व काल सहीहुल् अस्नाद, अदबुल्-मुफ़रद)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात हैं कि क़रीबी रिश्तेदारों के साथ भलाई करना उम्र को दराज़ करता है और छिपाकर ख़ैरात करना अल्लाह के गुस्से को फ़रो[1] करता है।

(अल्फ़ज़ाई अन् इब्ने मस्ऊद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है- मेरा नाम अल्लाह है, मेरा नाम रहमान है। मैंने अपने नाम को रहम से मुश्तक़[2] किया है, जो उसको मिलायेगा मैं उसको मिलाऊँगा, जो क़तअ़-रहमी[3] करेगा मैं उसको क़तअ़ करूँगा। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

शाबान की पन्द्रहवीं शब में तक़रीबन सब लोग आज़ाद कर दिये जाते हैं (यानी उनके गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं) मगर क़ाते रहम[4], माँ, बाप का नाफ़रमान और शराब का आदी, ये तीनों इस रात में भी आज़ाद नहीं किये जाते। (बैहक़ी, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

पड़ोसी के हुक़ूक़

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे उस परवरदिगार की क़सम जिसके क़ब्ज़ा-ए-क़ुद्रत में मेरी जान है कि कोई मुसलमान, मुसलमान नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने हमसाए[5] के लिये वही भलाई न चाहे जो अपने लिये चाहता है। (सहीह मुस्लिम, अल्अदबुल्-मुफ़रद)

1-कम, 2-वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द से निकला हो, 3-सम्बन्ध तोड़ना, 4-सम्बन्ध तोड़ने वाला, 5-पड़ोसी।

हज़रत मुआविया बिन हैदह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हमसाये का हक़ यह है कि:–

1- वह बीमार हो जाये तो उसकी बीमार-पुर्सी की जाये।

2- अगर वह मर जाये तो उसके जनाज़े के साथ जाये।

3- अगर वह उधार मांगे तो उसे क़र्ज़ दे।

4- अगर वह नंगा है तो उसको कपड़े पहनाये।

5- अगर कोई ख़ुशी उसको हासिल हो तो उसको मुबारक बाद दे।

6- अगर कोई मुसीबत उस पर तारी हो तो उसको तसल्ली दे।

7- और अपने मकान को उसके मकान से ऊँचा न करे, ताकि व हवा से महरूम[1] न रहे।

8- अपने चूल्हे के धुवें से उसको ईज़ा[2] न पहुँचाये। (तबरानी)

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– ''जब कोई मुसलमान बन्दा मरता है और उसके क़रीबतर पड़ोसियों में से तीन आदमी उस पर ख़ैर की गवाही देते हों तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं– मैंने बन्दों की शहादत उनके इल्म के मुताबिक़ क़बूल कर ली और जो कुछ मैं जानता हूँ, उसको मैंने बख़्श दिया''। (मुस्नदे अहमद)

दोस्त का हक़

हज़रत इब्ने औन रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अपने दोस्त का एज़ाज़ो-इकराम[3] इस तौर पर न करो जो उसे शाक़[4] गुज़रे। (अल्‌अदबुल्-मुफ़रद)

फ़ायदा: यानी हर शख़्स के साथ उसके मर्तबे के शयाने-शान बर्ताव करो।

1-वंचित, 2-कष्ट, 3-आदर-सत्कार, 4-असह्य।

मुसलमान के हुक़ूक़

हिफ़ाज़ते मुस्लिम
(मुसलमान की सुरक्षा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है– पूरा मुसलमान तो वह है जिसकी ज़बान और हाथ की ईज़ा से तमाम मुसलमान महफ़ूज़ रहें, और पक्का मुहाजिर वह है जो उन तमाम बातों को छोड़ दे, जिनसे अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

तिर्मिज़ी व नसाई ने इस हदीस में इतना और इज़ाफ़ा किया है कि कामिल मोमिन वह है जिसको लोग अपनी जान व माल के बारे में अमानतदार समझें। (तर्जुमानुस्सुन्ना)

दोस्तों को जुदा[1] करना

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ग़नम और हज़रत असमा बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया बन्दगाने ख़ुदा में सबसे बदतर वे लोग हैं जो चुग़लियां खाते हैं और दोस्तों में जुदाई डलवा देते हैं। इला-आख़िर

(अहमद व बैहक़ी)

दोस्तों की दिलशिक्नी[2]
(मित्रों का हृदय तोड़ना)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आपने फ़रमाया कि अपने भाई (मुसलमान) से (ख़्वाहमख़्वाह यानी बेकार) बहस न किया करो और न उससे (ऐसी) दिल्लगी करो (जो उसको नागवार हो) और

1-अलग, 2-दिल तोड़ना।

न उससे कोई ऐसा वायदा करो जिसको पूरा न करो। (तिर्मिज़ी)

फ़- अल्बत्ता अगर किसी उज़्र[1] के सबब पूरा न कर सके तो माज़ूर[2] है। चुनांचे ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि कोई शख़्स अपने भाई से वादा करे और उस वक़्त वादा पूरा करने की निय्यत थी मगर वादा पूरा नहीं कर सका और (अगर आने का वादा था तो) वक़्त पर न आ सका। (इसका यही मतलब है कि किसी उज़्र के सबब ऐसा हो गया) तो उस पर गुनाह न होगा। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, हयातुल्-मुस्लिमीन)

मश्वरा देना
(परामर्श देना)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जब तुम में से कोई शख़्स अपने (मुसलमान) भाई से मश्वरा लेना चाहे तो उसको मश्वरा देना चाहिए।

(इब्ने माजा, हयातुल्-मुस्लिमीन)

लोगों पर रहम करना

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "अल्लाह तआला ऐसे शख़्स पर रहम नहीं फ़रमाता जो लोगों पर रहम नहीं करता।"

(बुख़ारी व मुस्लिम)

मुसलमान को हक़ीर[3] समझना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया कि आदमी के लिये यह शर[4] काफ़ी है कि अपने भाई मुसलमान को हक़ीर समझे (यानी

1-विवशता, 2-लाचार, 3-तुच्छ, 4-बुराई।

अगर किसी में यह बात हो और कोई शर की बात न हो तब भी उसमें शर की कमी नहीं) मुसलमान की सारी चीज़ें दूसरे मुसलमना पर हराम हैं। उसकी जान और माल और उसकी आबरू (यानी न उसकी जान को तक्लीफ़ देना जाइज़, न उसके माल का नुक़्सान करना और न उसकी आबरू को कोई सद्मा पहुँचाना, मसलन उसका ऐब खोलना, उसकी ग़ीबत[1] करना वग़ैरा)

(मुस्लिम, हयातुल्-मुस्लिमीन)

दोस्त से मुलाक़ात करना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जिस वक़्त कोई मुसलमान अपने भाई की बीमार पुर्सी करता है या वैसे ही मुलाक़ात के लिये जाता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है- तू भी पाकीज़ा[2] है और तेरा चलना भी, तूने जन्नत में अपना मक़ाम बना लिया है। (तिर्मिज़ी)

हुक़ूक़े मुस्लिम
(मुसलमान के अधिकार)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत्त है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान के हुक़ूक़ मुसलमान पर छह हैं (उस वक़्त इन्हीं छह के ज़िक्र का मौक़ा था) अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह (सल्ल०)! वे क्या हैं? आपने फ़रमाया:-

1- जब उससे मुलाक़ात हो तो उसको सलाम कर,

2- जब वह तुझको खाने के लिए बुलावे तो क़बूल कर,

3- जब तुझसे ख़ैरख़्वाही चाहे तो उसकी ख़ैरख़्वाही कर,

4- छींक ले और "अल्हम्दुलिल्लाह" कहे तो "यर्हमुकल्लाह" कह,

1-निन्दा, 2-पवित्र।

5- जब बीमार हो जाये तो उसकी इयादत[1] कर और,

6- मर जाये तो उसके जनाज़े के साथ जा (तिर्मिज़ी, हयातुल्-मुस्लिमीन)

क़तअ् तअ़ल्लुक़

(सम्बन्ध-विच्छेद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि किसी शख़्स के लिये यह जाइज़ नहीं कि मोमिन को तीन दिन तक छोड़े रखे, जब तीन दिन गुज़र जायें तो उसे चाहिए कि वह उससे मिले और सलाम करे, अगर (दूसरे ने) सलाम का जवाब दे दिया तो दोनों शरीके अज्रो-सवाब होंगे और अगर सलाम का जवाब न दिया तो सलाम करने वाला बरी-उज़्ज़िम्मा[2] हो गया। उस पर क़तअ़-तअ़ल्लुक़ का गुनाह नहीं रहा।

(अल्अदबुल्-मुफ़्रद, बुख़ारी व मुस्लिम)

मुसलमानों की आबरू[3] का हक़

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "जो शख़्स किसी मुसलमान को ऐसे मौक़े पर ज़लील[4] करेगा, जहाँ उसकी हत्क[5] हो या उसकी इज़्ज़त में कुछ कमी आये तो अल्लाह तआ़ला उसको ऐसे मक़ाम पर ज़लील करेगा जहाँ वह अल्लाह तआ़ला की मदद का तलबगार होगा। और जो शख़्स किसी ऐसी जगह किसी मुसलमान की मदद करेगा जहाँ उसकी बेइज़्ज़ती और हत्क होती हो तो अल्लाह तआ़ला ऐसे मक़ाम पर उसकी मदद करेगा जहाँ उसको अल्लाह तआ़ला की मदद दरकार[6] होगी। (अबू दाऊद)

1-रोगी का हाल पूछने और तसल्ली देने उसके घर जाना, 2-ज़िम्मेदारी से अलग, 3-प्रतिष्ठा, 4-अपमानित, 5-अपमान, 6-वांछित।

हक़्क़े तरीक़ (रास्ता)

(पथ के नियम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि राहों पर बैठने से बचो और अगर तुम बैठने से बाज़ न रहो तो रास्ते में बैठने का हक़ अदा करो। सहाबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम ने दरयाफ़्त किया (पूछा)- या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! रास्ते का हक़ क्या है? आपने फ़रमाया आँखों का बन्द करना (यानी हराम चीज़ों पर नज़र न डाले) और ईज़ा[1] से बाज़ रहना (यानी कोई हरकत ऐसी न हो जिससे रास्ता चलने वालों को तक्लीफ़ हो, मसलन रास्ता तंग कर दे) और सलाम का जवाब देना (जवाब देना इसलिए कहा कि सुन्नत यह है कि चलने वाला बैठने वाले को सलाम करे) और लोगों को मअ्रूफ़[2] बातों का हुक्म करे और ना-मअ्रूफ़ बातों से मना करे। (मिश्कात)

हुक़ूक़े मरीज़-इ़यादत

(रोगी के अधिकार, उसका कुशल-क्षेम पूछने जाना)

मुसलमानों! जब तुम किसी बीमार के पास जाओ तो उसको देर तक ज़िन्दा रहने की ख़ुशख़बरी दो क्योंकि तुम्हारे कहने से किसी इन्सान की ज़िन्दगी दराज़[3] नहीं हो सकती, मगर बीमार की तबीअ़त ख़ुश हो जायेगी।

(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, अन अबी सईद)

बीमार की मुनासिब बीमार-पुर्सी यह है कि मिज़ाज-पुर्सी करने वाला उसके पास से जल्द उठ आये। (मुस्नदुल फ़िरदौस लिद्दैलमी)

1-यातना, 2-इस्लामी क़ानून के अनुसार जो जाइज़ हो वह "मअ्रूफ़" है और जो नाजाइज़ है वह "नामअ्रूफ़" है, 3-लम्बी।

मिस्कीन का हक़

(दरिद्र का अधिकार)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है जिसने मेरी मख़्लूक़ में से किसी ऐसे कमज़ोर के साथ भलाई की जिसकी कोई किफ़ायत (कफ़ालत[1]) करने वाला नहीं था तो ऐसे बन्दे की किफ़ायत और कफ़ालत का मैं ज़िम्मेदार हूँ।" (ख़तीब)

जानवर का हक़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- हर हस्सास[2] जानवर जिसको भूख-प्यास की तकलीफ़ होती हो उसके खिलाने-पिलाने में सवाब है।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हुक़ूक़े हाकिम व महकूम

(शासक व प्रजा के अधिकार)

हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बादशाह रूए ज़मीन पर (मख़्लूक़ पर रहमत व शफ़्क़त करने में) अल्लाह का साया होता है। अल्लाह के बन्दे जो मज़्लूम[3] हों उस साये में पनाह लेते हैं अगर वह इन्साफ़ करे तो उसको सवाब दिया जाता है और रइय्यत[4] पर उसका शुक्र अदा करना वाजिब होता है और अगर वह ज़ुल्म करे या अल्लाह की अमानत में ख़यानत करे तो बारे-गुनाह उस पर है और रईय्यत को सब्र करना लाज़िम है।

(बैहक़ी, मिश्कात)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि

1-भरण-पोषण, 2-संवेदनशील, 3-जिस पर ज़ुल्म व अत्याचार किया जाता है, 4-प्रजा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुसलमानो! अपने हुक्मरानों[1] को बुरा न कहो अल्लाह से उनकी भलाई की दुआ मांगा करो, क्योंकि उनकी भलाई में तुम्हारी भलाई है। (तबरानी)

हज़रत इब्ने उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुसलमानो! तुम में से हर एक हुक्मरां है और हर एक से उसकी रइय्यत की निस्बत सवाल किया जायेगा, जो आदमी लोगों पर हुकूमत करता है, वह उनका राई[2] है और लोग उसकी रइय्यत हैं। पस हाकिम से उसकी रइय्यत की निस्बत बाज़-पुर्स[3] की जायेगी। हर आदमी अपने घरवालों का राई है और घरवाले उसकी रइय्यत हैं, पस हर आदमी से उसके घरवालें की निस्बत बाज़-पुर्स होगी। हर औ़रत अपने ख़ाविन्द[4] के घर पर राई है और ख़ाविन्द का घर उसकी रइय्यत है। पस हर औ़रत से उसके ख़ाविन्द के घर की निस्बत बाज़-पुर्स की जाएगी। हर नौकर अपने आक़ा के माल व अस्बाब पर राई है और आक़ा का माल व अस्बाब उसकी रइय्यत है, पस हर नौकर से उसके आक़ा के माल व अस्बाब की निस्बत बाज़-पुर्स की जायेगी।

(मुस्नदे अहमद, बुख़ारी व मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि "मुसलमानो! जब तुम्हारे हाकिम नेक दिल हों और तुम्हारे अमीर[5] फ़य्याज़[6] हों और तुम्हारे मुआ़मलात की बुन्याद मश्वरे पर हो तो ज़मीन की सतह पर तुम्हारा रहना ज़मीन के पेट में जाने से बेहतर है और जब तुम्हारे हाकिम शरीर[7] हों और तुम्हारे अमीर बख़ील[8] हों और मुआ़मलात का फ़ैसला औ़रत की राय पर हो तो ज़मीन के पेट में तुम्हारा जाना ज़मीन पर रहने से बेहतर है।" (तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि हाकिम के हुक्म को सुनना

1-शासक, 2-ज़िम्मेदार, 3-पूछ-ताछ, 4-पति, 5-सरदार, 6-दानशील, 7-दुष्ट, 8-कृपण, कंजूस।

और इताअ़त[1] करना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है, ख़्वाह हुक्म पसन्द न आए जब तक हाकिम किसी गुनाह का हुक्म न दे और जब यह किसी गुनाह का हुक्म दे तो मुसलमान पर उसकी इताअ़त वाजिब नहीं।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात)

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि गुनाह के काम में किसी की इताअ़त वाजिब नहीं, इताअ़त सिर्फ़ नेक कामों में वाजिब है।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात)

हज़रत उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम पर ऐसे हाकिम मुक़र्रर[2] किये जायेंगे जो अच्छे काम भी करेंगे और बुरे काम भी करेंगे। पस जिस शख़्स ने इन्कार किया यानी उसके बुरे फ़े'ल[3] की निस्बत उसके मुँह पर कह दिया कि तुम्हारा यह फ़े'ल शर्अ़[4] के ख़िलाफ़ है, वह अपने फ़र्ज़ से बरी हो गया और जिस शख़्स ने ऐसा न किया यानी उसको इतनी जुर्अत न हुई कि वह ज़बान से कह दे लेकिन दिल से उस फ़े'ल को बुरा समझा, वह सालिम[5] रहा यानी उसके गुनाह में शरीक होने से सालिम (महफ़ूज़) रहा। लेकिन जो शख़्स उसके फ़े'ल पर राज़ी हुआ और उनकी पैरवी की, वह उनके गुनाह में शरीक हुआ। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया- क्या उनसे लड़ें, या रसूलल्लाह! आपने फ़रमाया- "नहीं, जब तक वह नमाज़ पढ़ें, नहीं, जब तक वह नमाज़ पढ़ें"। (मुस्लिम, मिश्कात)

हज़रत वाइल बिन हज्र सलमा बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि ऐ अल्लाह के नबी! आप इस बारे में क्या फ़रमाते हैं कि अगर हम पर ऐसे हाकिम मुसल्लत हों जो हमसे अपना हक़ मांगें और हमारे हुक़ूक़[6] से इन्कार करें। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि उनके अहकाम[7] को सुनो और उनकी इताअ़त करो इसलिए कि

1-आज्ञा-पालन, 2-नियुक्त, 3-कार्य, 4-इस्लामी क़ानून, 5-सुरक्षित, 6-अधिकारों, 7-आदेशों।

उन पर वह बात फ़र्ज़ है, जो उन्होंने अपने ज़िम्मे ली है और तुम पर वह चीज़ फ़र्ज़ है जो तुमने उठाई है। (मुस्लिम, मिश्कात)

हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ज़ालिम अमीर की दुआ कबूल नहीं होती। (हाकिम)

दूसरी हदीस में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "तीन शख़्सों का कलिमा भी क़बूल नहीं होता– एक उनमें से वह हाकिम है जो अपनी रिआया[1] पर ज़ुल्म करता है।" (तबरानी)

हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जिस बन्दे को अल्लाह तआला रइय्यत की निगहबानी सुपुर्द करे और वह भलाई और ख़ैरख़्वाही के साथ निगहबानी न करे, वह बिहिश्त[2] की बू न पायेगा।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुआ करते हुआ सुना है कि ऐ अल्लाह! जिस शख़्स को मेरी उम्मत का किसी काम का वाली[3] और मुतसर्रिफ़[4] बनाया गया हो और वह मेरी उम्मत पर मशक़्क़त[5] और मुसीबत डाले तो तू भी उस पर मशक़्क़त और मुसीबत डाल और जो शख़्स (हाकिम व वाली) मेरी उम्मत पर रहम व नर्मी करे तो तू भी उस पर रहम व नर्मी कर। (मुस्लिम, व मिश्कात)

फ़रीक़ैन का फ़ैसला

(उभयपक्ष का निर्णय)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

1-प्रजा, 2-जन्नत, 3-शासक, 4-अधिकारी, 5-कष्ट।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब दो आदमी तुम्हारी तरफ़ क़ज़िय्या[1] पेश करें (और उनमें का एक शख़्स इज़्हारे मुद्दआ[2] कर चुके) तो जब तक तुम दूसरे की बात न सुन लो अव्वल शख़्स के मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करो, क्योंकि यह सूरत इस बात के लायक़तर[3] है कि तुम्हारे लिये क़ज़िय्या की पूरी कैफ़ीयत ज़ाहिर हो जाये। (तिर्मिज़ी)

ख़िदमतगार का हक़
(सेवक का अधिकार)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- लौंडी व गुलाम तुम्हारे भाई हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको तुम्हारे क़ब्ज़े में दे रखा है। पस तुम में से जिस किसी के क़ब्ज़े व तसर्रुफ़[4] में अल्लाह तआला ने किसी को दे रखा है तो उसको चाहिए कि उसको वही खिलाए जो वह ख़ुद खाता है और उसे वैसा ही लिबास पहनाये जो वह ख़ुद पहनता है और उस पर काम का उतना ही बोझ डाले जो उसके सहार[5] से ज़्यादा न हो और अगर वह उस काम को न कर पा रहा हो तो ख़ुद उस काम में उसकी मदद करे।

(बुख़ारी व मुस्लिम, अल्अदबुल्-मुफ़रद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुसलमानो! अगर तुम में से किसी का ख़ादिम खाना लाये और उसने खाना तैयार करने में धुवें की तक्लीफ़ उठाई हो तो तुमको चाहिए कि उस ख़ादिम को अपने खाने पर न बिठाओ तो एक-दो लुक़्मे उसको ज़रूर दे दो। (बुख़ारी, मुस्लिम, इब्नेमाजा)

कस्बे मआश (जीविकोपार्जन करना)
माल की क़द्र

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

1-झगड़ा, मुक़द्दमा, 2-आशय, अपनी बात कहना, 3-योग्य, 4-अधिकार, 5-सामर्थ्य।

अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो आदमी दौलत को पसन्द नहीं करता उसमें कोई ख़ूबी नहीं है क्योंकि उसके वसीते[1] से रिश्तेदारों के हक़ पूरे किये जाते हैं और अमानत अदा की जाती है और उसकी बरकत से आदमी दुनिया के लोगों से बेनियाज़[2] हो जाता है। (बैहक़ी)

क़नाअ़त (भाग्य तुष्टि)

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को जो कुछ देता है, उससे उनकी आज़माइश करता है। अगर वे अपनी क़िस्मत पर राज़ी हो जायें तो उनकी रोज़ी में बरकत अ़ता फ़रमाता है और अगर राज़ी न हों तो उनकी रोज़ी वसीअ़[3] नहीं करता। (मुस्नदे अहमद)

हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वजहहू फ़रमाते हैं कि इर्शाद फ़रमाया जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो आदमी थोड़ी-सी रोज़ी पर राज़ी हो जाता है, अल्लाह तआ़ला उसके थोड़े से अ़मल से राज़ी हो जाता है। (बैहक़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख़्स किसी काम में कामयाब हो उस को लाज़िम है कि उसको न छोड़े। (बैहक़ी)

मुआ़मले में सदाक़त
(व्यवसाय में सत्यता)

हज़रत मआ़ज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर रसूल मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि सबसे उम्दा पेशा उन सौदागरों का है जो बोलते हैं तो सच्च बोलते हैं (झूठ नहीं बोलते) और अगर उनके पास अमानत रखवाई जाए तो ख़यानत नहीं करते और जब

1-माध्यम, 2-निस्पृह, बेपर्वाह, 3-विस्तृत।

वादा करते हैं तो उस वादे के ख़िलाफ़ कभी नहीं करते और जब कोई चीज़ फ़रोख़्त करते हैं तो उसकी बेहद तारीफ़ नहीं करते और जब कोई चीज़ ख़रीदते हैं तो उसकी क़ीमत अदा करने में देर नहीं करते और अगर उनका क़र्ज़ किसी के ज़िम्मे हो तो मक़रूज़[1] पर सख़्ती नहीं करते। (बैहक़ी)

हलाल रोज़ी की तलाश

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "अल्लाह तआला इस बात को पसन्द फ़रमाता है कि अपने बन्दे को हलाल रोज़ी की तलाश में मेहनत करता और तक्लीफ़ उठाता देखे।" (अद्दैलमी, तिर्मिज़ी)

वालिदैन[2] और औलाद के लिये नान-नफ़्क़ा[3] मुहैया[4] करना

(माता-पिता व संतान के लिये रोटी, कपड़ा तथा आवश्यक वस्तुओं का प्रबन्ध करना)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "जो आदमी अपने बूढ़े वालिदैन के लिये रोज़ी कमाता और दौड़-धूप में रहता है, वह अल्लाह के रास्ते में है और जो आदमी अपने छोटे बच्चों की पर्वरिश के लिये मेहनत करता है वह भी अल्लाह के रास्ते में है और जो आदमी अपनी ज़ात के लिये मेहनत करता है ताकि लोगों से सवाल न करना पड़े, वह भी अल्लाह के रास्ते में है"।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

नाजाइज़ आमदनी

हदीस शरीफ़ में है कि (इन्सान का जिस्म) जिस गोश्त ने हराम आमदनी से नश्वो-नुमा पाई[5] वह जन्नत में (सज़ा पाए बग़ैर) दाख़िल नहीं होगा। (मिश्कात बहवाला अहमद व दारमी)

1-ऋणी, 2-माता-पिता, 3-रोटी, कपड़ा और ज़रूरत की चीज़ें, 4-प्रबन्ध करना, 5-पर्वरिश करना।

अपने हाथ की कमाई

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "जो चीज़ तुम खाते हो, उसमें सबसे बेहतर वह है जो तुम अपने हाथों से कमा कर खाओ और तुम्हारी औलाद की कमाई भी जाइज़ है"।

(तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, मिश्कात)

हलाल कमाई

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि पाक व हलाल कमाई फ़र्ज़ है। फ़र्ज़ के बाद यानी फ़राइज़ के बाद जो अल्लाह तआला ने मुक़र्रर फ़रमाये हैं, हलाल कमाई भी फ़र्ज़ है। (बैहक़ी, मिश्कात)

तलाशे रिज़्क़ का वक़्त

(जीविकोपार्जन का समय)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है- "रिज़्क़ की तलाश और हलाल कमाई के लिये सुबह-सवेरे ही चले जाया करो क्योंकि कामों में बरकत और कुशादगी[1] होती है।"

मुआमला[2] में नर्मी

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहम फ़रमाये जो ख़रीदो-फ़रोख़्त[3] और तक़ाज़ा करने में नर्मी और ख़ुश-अख़्लाक़ी से काम लेता है। (बुख़ारी)

(इस हदीस में आप सल्ल० ने ऐसे शख़्स के लिये दुआ फ़रमाई है)

1-बढ़ोतरी, 2-व्यापार, 3-क्रय-विक्रय।

ताजिर[1] की नेक ख़स्लतें[2]

(व्यापारी के उत्तम गुण)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ताजिरों में जब तीन ख़स्लतें हों तो उनकी कमाई उम्दा और हलाल होगी:-

1- जब वे (किसी से कोई चीज़ ख़रीदें तो उसकी) बुराई न करें और

2- जब वे (किसी के हाथ कोई चीज़) फ़रोख़्त करें तो (उसकी बेजा यानी बेकार) तारीफ़ न करें और बैअ़[3] में तद्लीस न करें। (यानी ख़रीदार से माल का ऐब न छिपायें) और

3- उस (मुआमला) के दर्मियान (झूठी) क़सम न खायें। (अस्बहानी)

मज़्दूर की उज्रत[4] (श्रमिक का पारिश्रमिक)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मज़्दूर को उसकी मज़्दूरी क़ब्ल इसके कि उसका पसीना ख़ुश्क हो अदा कर दो। (इब्ने माजा)

रिज़्के मुक़द्दर (भाग्य की आजीविका)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे वह़ी[5] भेजी है कि कोई शख़्स नहीं मरता जब तक कि वह अपना मुक़द्दर रिज़्क़ पूरा नहीं कर लेता अगर्चे देर से उसको पहुँचे। पस जब यह बात है तो तुम अल्लाह तआला की नाफ़रमानी से बचो और रोज़ी तलाश करने में हद्दे

1-व्यापारी, 2-स्वभाव, गुण, 3-बेचना, 4-मज़्दूरी, 5-अल्लाह की ओर से आया हुआ पैग़म्बर के लिये आदेश।

एतिदाल[1] से तजावुज़[2] मत करो और ताख़ीरे रिज़्क़ की सूरत में गुनाहों के साथ रिज़्क़ तलब न करने लगना और जो रिज़्क़ हलाल अल्लाह तआला के पास है वह ताअ़त[3] ही से हासिल होता है। (बज़्ज़ार)

रिआयते बाहमी[4]

(परस्पर कृपापूर्ण व्यवहार)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बिला शक अल्लाह तआला ख़रीद व फ़रोख़्त में और क़र्ज़ की अदायगी में रिआयत व मुरव्वत करने वाले को दोस्त रखते हैं। (तिर्मिज़ी)

तिजारत में सिद्क़[5] व अमानत

हज़रत उबैद बिन रिफ़ाआ रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु अपने वालिद माजिद हज़रत रिफ़ाआ रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से यह रिवयात की कि आपने इर्शाद फ़रमाया "ताजिर लोग क़ियामत के रोज़ बदकार[6] उठाये जायेंगे (यानी आम ताजिरों का हश्र बदकारों के साथ होगा) सिवाय उन (ख़ुदा-तर्स[7] व ख़ुदा-परस्त) ताजिरों के जिन्होंने अपनी तिजारत में तक़्वा[8], नेकी, हुस्ने सुलूक[9] और सच्चाई को बरता होगा।

(जामे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

ताजिर की सदाक़त

(व्यापारी की सत्यता)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है कि

1-सन्तुलन, 2-सीमोल्लंघन, 3-इबादत, 4-पारस्परिक, 5-सत्यता, 6-दुराचारी, 7-अल्लाह से डरने वाले, 8-धर्म निष्ठा, परहेज़गारी, 9-सद्व्यवहार।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सच्चा और अमानतदार सौदागर अम्बिया, सिद्दीक़ीन और शुहदा के साथ होगा।

(जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

कम नापना और तौलना

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नापने और तौलने वालों से इर्शाद फ़रमाया- "तुम्हारे हाथ में दो ऐसे काम हैं जिनके सबब से तुमसे पहली क़ौमें हलाक हुयीं (यानी पूरा वज़न न नापने और कम देने के सबब[1] हलाक हुयीं, तुम ऐसा न करना।) (तिर्मिज़ी)

ज़ख़ीरा अन्दोज़ी[2]

(संग्रह करना)

हज़रत उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ताजिर को अल्लाह तआ़ला की जानिब से रिज़्क़ दिया जाता है (क़हत[3] के ज़माने में) ग़ल्ला को गिरानी[4] के ख़्याल से रोकने और बन्द रखने वाला मलऊन[5] है।

(इब्ने माजा, दारमी, मिश्कात)

माल का सद्क़ा

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ताजिरों को हिदायत फ़रमाई, ऐ कारोबार करने वालो! माल के बेचने में लग़्वियात[6] करने और झूठी क़सम खा जाने का बहुत इम्कान[7] रहता है तो तुम लोग अपने मालों में से सद्क़ा ज़रूर किया करो। (अबू दाऊद)

1-कारण, 2-संग्रह, 3-अकाल, 4-मंहगाई, 5-जिस पर लानत की गई हो, धिक्कृत, 6-झूठ बातें, 7-सम्भावना।

क़र्ज़ (ऋण)

क़र्ज़दार की रिआयत

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में जो शख़्स क़र्ज़ के बार में पड़ जाये, फिर उसके अदा करने में पूरी कोशिश करे और फिर अदा करने से पहले मर जाये तो मैं उसका मददगार हूँ। (अहमद, तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जिस शख़्स को यह ख़्वाहिश हो कि अल्लाह तआला उसको क़ियामत के ग़म और घुटन से बचाये तो उसको चाहिये कि तंगदस्त[1] क़र्ज़दार को मोहलत दे या क़र्ज़ का बोझ उसके सर से उतार दे। (मुस्लिम)

क़र्ज़ की लअ़नत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से (एक तवील हदीस में) रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़र्ज़ के बारे में फ़रमाया (यानी किसी का माले हक़ जो किसी के ज़िम्मे आता हो) क़सम उस ज़ात की कि मेरी जान उसके क़ब्ज़े में है कि अगर कोई शख़्स जिहाद में शहीद हो जाये फिर ज़िन्दा होकर (दोबारा) शहीद हो जाये, फिर ज़िन्दा होकर (सेहबारा यानी तीसरी बारा) शहीद हो जाये और उसके ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ आता हो, वह जन्नत में न जायेगा जब तक उसका क़र्ज़ अदा न किया जायेगा। (तर्ग़ीब, नसाई, तबरानी, हाकिम, हयातुल्-मुस्लिमीन)

क़र्ज़ की अदाइगी की निय्यत

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो आदमी क़र्ज़ लेता है और उसको अदा करने का इरादा रखता है, क़ियामत के दिन अल्लाह तबारक व तआला उसकी तरफ़ से उस क़र्ज़ को अदा कर देगा और

1-निर्धन।

जो क़र्ज़ लेकर अदा करना नहीं चाहता और उसी हालत में मर जाता है, तो क़ियामत के दिन अल्लाह जल्ल जलालुहू उससे फ़रमाएगा कि ऐ मेरे बन्दे! तूने शायद ख़्याल किया था कि मैं अपने बन्दे का हक़ तुझसे नहीं लूँगा। फिर मक़रूज़[1] की कुछ नेकियाँ क़र्ज़ख़्वाह[2] को दी जायेंगी और अगर मक़रूज़ ने नेकियाँ न की होंगी तो क़र्ज़ख़्वाह के कुछ गुनाह लेकर मक़रूज़ को दिये जायेंगे। (तबरानी, हाकिम)

क़र्ज़ का वबाल

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुसलमानो क़र्ज़ लेने से बचो, क्योंकि वह रात के वक़्त रंज व फ़िक्र पैदा करता है और दिन को ज़िल्लत व ख़्वारी[3] में मुब्तला करता है। (बैहक़ी फ़ी शोबिल् ईमान)

क़र्ज़ से पनाह

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमानो! अगर तुममें से कोई आदमी पैवन्द पर पैवन्द लगाए और फटे-पुराने कपड़े पहने है तो इससे बेहतर है कि वह क़र्ज़ ले और उसके अदा करने की ताक़त न रखता हो। (मुस्नदे अहमद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुसलमानो मुहताजी और मुफ़्लिसी और ज़िल्लतो-ख़्वारी से अल्लाह की पनाह मांगा करो। (नसाई, हाकिम, इब्ने हिब्बान)

दुआ अदा-ए-क़र्ज़

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से मर्वी[4] है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से फ़रमाया कि मैं तुमको क्या ऐसी दुआ न बताऊँ कि अगर तुम्हारे सर पर पहाड़ के बराबर क़र्ज़ हो तो उसको भी हक़ तआ़ला शानुहू

1-ऋणी, 2-ऋणदाता, 3-तिरस्कार, 4-उद्धृत।

अदा फ़रमा दें। तुम यूँ कहा करो:-

اَللّٰهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ يَا رَحْمَانَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَرَحِيْمَهُمَا تُعْطِيْهُمَا مَنْ تَشَاءُ وَتَمْنَعُ مِنْهُمَا مَنْ تَشَاءُ اِرْحَمْنِىْ رَحْمَةً تُغْنِيْنِىْ بِهَا عَنْ رَّحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ۔

अल्लाहुम्म मालिकल्मुल्कि तुअ्तिल् मुल्क मन्तशाउ व तन्ज़िउल मुल्क मिम्मन तशाउ व तुइज़्ज़ु मन तशाउ व तुज़िल्लु मन् तशाउ बियदिकल् ख़ैर। इन्नक अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर। या रह्मानद्दुन्या वल् आख़िरति व रहीमहुमा तुअ्तीहुमा मन् तशाउ व तम्नउ मिन्हुमा मन् तशाउ इर्हम्नी रह्मतन् तुग्नीनी बिहा अंर्रह्मति मन् सिवाक।

अनुवादः ऐ अल्लाह! मालिक तमाम मुल्क के, आप मुल्क जिसको चाहते हैं दे देते हैं और जिससे चाहते हैं मुल्क ले लेते हैं और जिसको आप चाहें ग़ालिब कर देते हैं और जिसको आप चाहें पस्त कर देते हैं। आप ही के इख़्तियार में है सब भलाई। बिला-शुब्हा आप हर चीज़ पर पूरी तरह क़ुद्रत रखने वाले हैं। ऐ दुनिया व आख़िरत में रहमान और इन दोनों में रहीम! आप देते हैं ये दोनों जहान जिसको चाहते हैं और रोक देते हैं इन दोनों से जिसको चाहते हैं। मुझ पर ऐसी रहमत फ़रमाइये कि उसके सबब आप मुझे अपने ग़ैर की रहमत से मुस्तग़नी[1] फ़रमा दें।

(तबरानी फ़िल्सग़ीर, बिहिश्ती ज़ेवर)

क़र्ज़ देने का सवाब

फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने- "मैंने शबे मेराज में बिहिश्त के दरवाज़े पर लिखा हुआ देखा कि ख़ैरात का सवाब दस हिस्सा मिलता है और क़र्ज़ देने का सवाब अठारह हिस्से मिलते हैं। (बिहिश्ती ज़ेवर)

1-निःस्पृह।

क़र्ज़दार को मोहलत देना

फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने "जब तक क़र्ज़ अदा करने के वादे का वक़्त न आया हो उस वक़्त तक अगर किसी ग़रीब को मोहलत दे तो हर रोज़ इतना सवाब मिलता है जैसे उतना रुपया ख़ैरात दे दिया और जब उसका वक़्त आ जाये और फिर मोहलत दे तो हर रोज़ ऐसा सवाब मिलता है जैसे उतने रुपये से दुगना रुपया रोज़मर्रह ख़ैरात कर दिया"। (बिहिश्ती ज़ेवर)

हुर्मते[1] सूद

सूद का गुनाह

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सूद के गुनाह के सत्तर हिस्से हैं। एक मामूली-सा हिस्सा यह है कि उसका गुनाह ऐसा है जैसे कोई शख़्स अपनी माँ से जिमाअ़[2] करे। (इब्ने माजा, बैहक़ी, मिश्कात)

मक़रूज़ के हदिये से एहतियात

(ऋणी के उपहार से सावधानी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कोई किसी को क़र्ज़ दे तो फिर क़र्ज़ लेने वाले से कोई हदिया क़बूल न करे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सूद का वबाल

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "एक ज़माना ऐसा आयेगा कि सिवाय सूद खाने वालों के कोई बाक़ी न रहेगा और अगर कोई शख़्स

1-हराम होना, जिसको अल्लाह ने पूरी तरह से मना किया है, 2-सम्भोग।

होगा भी तो उसको सूद का बुख़ार (असर) पहुँचेगा और एक रिवायत में है कि उसको सूद का ग़ुबार[1] पहुँचेगा"।

(मुस्नदे अहमद, अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजा, मिश्कात)

सूद का मुआमला

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लानत फ़रमाई सूद के खाने वाले (यानी लेने वाले) पर, उसके खिलाने वाले (यानी देने वाले) पर, उसके लिखने वाले पर, उसके गवाह पर और फ़रमाया कि ये सब बराबर हैं (यानी बाज़ बातों में)।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हुर्मते[2] रिश्वत (उत्कोच का निषेध)

रिश्वत पर लानत

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लानत फ़रमाई है रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले पर। (अबू दाऊद व मुस्लिम)

इब्ने माजा व तिर्मिज़ी ने हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में यह भी ज़्यादा किया है कि लानत फ़रमाई है उस शख़्स पर जो इन दोनों के दरमियान मुआमला ठहराने वाला हो। (मुस्नदे अहमद, बैहक़ी)

रिश्वत पर दोज़ख़ का अज़ाब

हदीस शरीफ़ में है कि रिश्वत देने वाला और रिश्वत लेने वाला दोनों दोज़ख़ की आग में झोंके जायेंगे। (तबरानी, अल्-मोअ्जमुल्-कबीर)

फ़- अल्बत्ता जहाँ बग़ैर रिश्वत दिये ज़ालिम के ज़ुल्म से न बच सके, वहाँ (इक्राहन[3]) देना जाइज़ है मगर लेना वहाँ भी हराम है।

(हयातुल् मुस्लिमीन)

1-मलिनता, 2-हराम, 3-घृणा के साथ, मजबूरी के वक़्त।

बाब-4 (चतुर्थ परिच्छेद) मुआ़शरियात (सामाजिकता)

मुआ़शरत (सामाजिक जीवन)

घर में दाख़िल होने के आदाब

इस्तीज़ान (अनुमति चाहना)

अ़ता बिन यसार रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क्या मैं अपने घर में दाख़िल होते वक़्त जब मेरी माँ वहाँ हो तब भी इजाज़त तलब करूँ? हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया- हाँ, तो उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मैं तो अपनी माँ के साथ एक ही घर में रहता हूँ, ऐसा नहीं कि वह अ़लाहदा घर में रहती हों और मैं अ़लाहिदा रहता हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "फिर भी तुम इजाज़त माँगो। फिर उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर! ख़िदमत के लिए मेरा बार-बार घर में आना-जाना रहता है, इस पर भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम इजाज़त लेकर अन्दर जाओ, क्या तुम को यह पसन्द है कि तुम किसी मौक़े पर अपनी माँ को खुली हालत में देखो? साइल[1] ने अ़र्ज़ किया कि नहीं, तो आप ने फ़रमाया फिर इजाज़त लो। (मिश्कात शरीफ़)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मन्क़ूल[2] है कि आप ने फ़रमाया कि इज़्न[3] चाहना तीन बार होता है, इसलिए अगर इजाज़त मिल जाए तो अच्छा है वर्ना लौट जाओ। (ज़ादुल्-मआ़द)

सहीह मस्अला यह है कि इज़्न चाहने से क़ब्ल सलाम करना चाहिए और अपना नाम ज़ाहिर करे, यह न कहे कि मैं हूँ। (ज़ादुल्-मआ़द)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि नबी करीम

1-प्रश्नकर्ता, 2-नक़्ल किया गया है, 3-अनुमति।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "तीन शख़्स हैं कि अल्लाह तआला उन सबका ज़ामिन[1] है, ज़िन्दगी में अल्लाह तआला उनको काफ़ी है, मरने के बाद जन्नत उनका मक़ाम है।"

1- जो अपने घर में सलाम करके दाख़िल हो, अल्लाह तआला उसका ज़ामिन है।

2- जो मस्जिद की तरफ़ गया (ताकि नमाज़ पढ़े) वह अल्लाह तआला की ज़मानत में है।

3- जो अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद के लिये निकला, वह अल्लाह तआला की ज़मानत में है। (अल्अदबुल्-मुफ़रद)

सोते हुए को सलाम करना

हज़रत मिक़दाद बिन अस्वद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर रात के वक़्त घर में तशरीफ़ लाते तो इस तरह सलाम फ़रमाते कि सोने वाले की नींद न उचटे और जागता हुआ उसे सुन ले। (अल्अदबुल्-मुफ़रद)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते तय्यिबा[2]

अगर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद किसी से मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ ले जाते तो आदते तय्यिबा थी कि तीन मर्तबा सलाम करके इजाज़ते दाख़िला तलब फ़रमाते, अगर जवाब न मिलता तो वापस तशरीफ़ ले जाते। (ज़ादुल्-मआद)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते महमूदा[3] थी कि कभी दरवाज़े के सामने खड़े होकर इजाज़ते दाख़िला नहीं फ़रमाते, बल्कि दरवाज़े की दायीं या बायीं जानिब खड़े होकर सलाम करते और फिर अन्दर

1-प्रतिभू, ज़मानतदार, 2-पवित्र स्वभाव, 3-प्रशंसनीय।

आने की इजाज़त चाहते ताकि इजाज़त से क़ब्ल मकान के अन्दर नज़र न पहुँचे। (ज़ादुल्-मआद)

सलाम के आदाब

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है, "वह आदमी अल्लाह रब्बुल् इज़्ज़त से ज़्यादा क़रीब है जो सलाम करने में पहल करता हो।" (अबू दाऊद)

सलाम की इब्तिदा[1] के वक़्त आप सल्ल० इस तरह सलाम करते:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

"अस्सलामु अ़लैकुम् व रहमतुल्लाह" (ज़ादुल्-मआ़द)

एक शख़्स ने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

"अस्सलामु अ़लैकुम् व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू" आपने उसका जवाब दिया और फ़रमाया इस शख़्स को तीस नेकियाँ मिलीं। (नसाई, तिर्मिज़ी)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आ़दते तय्यिबा यह थी कि आप हाथ, सर या उँगली के इशारे से सलाम का जवाब न देते थे।

(ज़ादुल्-मआ़द)

अबू अ़ब्दुल्लाह (यानी इमाम बुख़ारी) रहमतुल्लाहि अ़लैह कहते हैं कि बीबी कैलह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा कहती हैं कि एक मर्द ने कहा-

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

"अस्सलामु अ़लैक या रसूलल्लाह" आप ने जवाब में फ़रमाया:

وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

"व अ़लैकस्सलामु व रहमतुल्लाहि" (अदबुल्-मुफ़रद)

1-आरम्भ।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा मुझसे फ़रमाया– ऐ आइशा! यह जिब्रील हैं, तुम्हें सलाम कहते हैं। मैंने कहा–

وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

"व अलैहिस्सलामु व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहू।"

आप जो कुछ देखते हैं, मैं नहीं देख पाती। यह ख़िताब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से था। (बुख़ारी, अदबुल्–मुफ़रद)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे नज़दीक सलाम के जवाब की तरह ख़त का जवाब देना भी ज़रूरी है।

(अदबुल्–मुफ़रद)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है: "तुम लोग जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि मोमिन नहीं बनते और तुम मोमिन नहीं बन सकते जब तक कि एक–दूसरे से महब्बत न करो। मैं तुम्हें वह तदबीर[1] क्यों न बताऊँ जिसको इख़्तियार करके तुम आपस में एक दूसरे से महब्बत करने लगो: आपस में सलाम को फैलाओ।" (मिश्कात)

हज़रत क़तादह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जब तुम घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करो और जब तुम घर से बाहर जाओ तो घर वालों को सलाम करके रुख़्सत हासिल करो। (बैहक़ी, मिश्कात)

जब कोई शख़्स मज्लिस में पहुँचे तो सलाम करे और अगर बैठने की ज़रूरत हो तो बैठ जाय और फिर जब चलने लगे तो दोबारा सलाम करे, इसलिए कि पहली मर्तबा सलाम करना दूसरी मर्तबा सलाम करने से बेहतर नहीं, यानी दोनों सलाम हक़ और मस्नून[2] हैं। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– "ग़रीबों को

1–उपाय, 2–सुन्नत।

खाना खिलाओ और हर मुसलमान को सलाम करो, चाहे तुम्हारी उससे जान पहचान हो या न हो।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ताकीद फ़रमाई कि प्यारे बेटे! "जब तुम अपने घर में दाख़िल हुआ करो तो पहले घर वालों को सलाम किया करो। यह तुम्हारे लिये और तुम्हारे घर वालों के लिये ख़ैरो-बरकत की बात है।" (तिर्मिज़ी)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है: जो शख़्स अपने मुसलमान भाई से मिले तो उसको सलाम करे और अगर दरख़्त या दीवार या पत्थर बीच में ओट बन जाये और फिर उसके सामने आये तो फिर सलाम करे। (रियाज़ुस्सालिहीन, ज़ादुल्-मआ़द)

हज़रत अ़म्र बिन शुऐ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स हम मुसलमानों के सिवा दूसरी क़ौमों के साथ तश्बीह[1] करे वह हमारे तरीक़े पर नहीं है। फिर आपने दूसरी क़ौमों के साथ तश्बीह करने की तश्रीह[2] फ़रमाई कि (यहूदियों की मुशाबहत[3] इख़्तियार न करो और न नसारा की, क्योंकि यहूदी उँगलियों के इशारे से सलाम करते हैं और नसारा हथेलियों के इशारे से करते हैं। (तिर्मिज़ी)

सलाम के हुक़ूक़ (सलाम के नियम)

1- मुसलमान, मुसलमान से मिले तो उसको सलाम करना चाहिये।

2- चलने वाला बैठे हुए को सलाम करे।

3- सवार, बैठे हुए को सलाम करे।

4- कम तादाद[4], बड़ी तादाद को सलाम करे।

1-सादृश्य, 2-व्याख्या, 3-समानता, 4-संख्या।

5- छोटा बड़े को सलाम करे।

6- इशारा से सलाम करना जब मुख़ातब दूर हो।

7- ज़ोर से सलाम करना ताकि मुख़ातब सुन ले। (अलअदबुल्-मुफ़्रद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत से क़ब्ल की मिनजुम्ला[1] और अलामात के चन्द अलामात ये हैं-

1- सलाम का रिवाज ख़ास-ख़ास दाइरों में महदूद[2] हो जाना।

2- तिजारत का इतना आम तौर पर रिवाज पाना कि बीवी अपने शौहर की मदद करने लगे।

3- अहल[3] और नाअहल[4] सबका क़लम चल पड़े।

4- झूठी शहादत[5] देने में बहादुर बन जाना और सच्ची शहादत का इख़्फ़ा[6] करना। (अलअदबुल्-मुफ़्रद)

मुसाफ़हा, मुआनक़ा व दस्तबोसी

(हाथ मिलाना, गले मिलना व हाथ चूमना)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी[7] है कि एक शख़्स को मैंने सुना, वह नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त कर रहा था कि आदमी जब अपने भाई या दोस्त से मुलाक़ात करे तो क्या उसके सामने झुक जाये? आपने फ़रमाया- नहीं! उसने पूछा, क्या उसके साथ मुआनक़ा करे और उसको बोसा दे। आपने फ़रमाया नहीं! उसने कहा कि क्या उसका हाथ अपने हाथ में ले और उसके साथ मुसाफ़हा करे। आपने फ़रमाया- हाँ। (तिर्मिज़ी)

1-सब में से, 2-सीमित, 3-योग्य, 4-अयोग्य, 5-गवाही, 6-छिपाना, 7-उद्धृत।

ज़रीन रहमतुल्लाहि अ़लैह ने इतना और ज़्यादा किया है, मगर यह कि वह भाई या दोस्त सफ़र से आया हो (तो मुआ़नक़ा कर सकता है।) (मिश्कात) और बतौर तक्रीम[1] हाथ का बोसा दे सकता है।

(अज़-अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्मुन्ज़िरी)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मरीज़ की पूरी इ़यादत यह है कि तुम अपना हाथ मरीज़ की पेशानी पर या हाथ पर रखकर उससे उसका हाल पूछो और पूरा सलाम करना यह है कि सलाम के बाद तुम मुसाफ़हा भी करो। (अहमद, तिर्मिज़ी, मिश्कात)

हज़रत शाबी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जाफ़र इब्ने अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मिले और उनको गले लगा लिया और उनकी आँखों के दरमियान बोसा दिया।

(अबू दाऊद, बैहक़ी, मिश्कात)

हज़रत ज़ारिअ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो अ़ब्दुल् क़ैस के वफ़्द[2] में शामिल थे, कहते हैं कि जब हम मदीना में आये तो जल्दी-जल्दी अपनी सवारियों से उतरे और हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हाथों और पाँवों को बोसा दिया। (अबू दाऊद, मिश्कात)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने एक मर्तबा ग़ायत दर्जा[3] फ़र्हत[4] व लज़्ज़त के साथ बयान फ़रमाया कि मैंने अपने इन हाथों से हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मुसाफ़हा किया। मैंने कभी किसी क़िस्म की हरीर[5] या रेशम हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हाथों से ज़्यादा नर्म नहीं देखी। उनके शागिर्द ने जिसके सामने यह बयान किया गया उसी शौक़ से अ़र्ज़ किया कि मैं भी उन हाथों से मुसाफ़हा करना चाहता हूँ, जिन हाथों ने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुसाफ़हा किया है। (उसके बाद से यह सिलसिला ऐसा जारी हुआ कि आज

1-आदर, 2-प्रतिनिधि मण्डल, 3-अत्यधिक, 4-ख़ुशी, 5-एक रेशमी और बारीक कपड़ा।

तक जारी है और मुसाफ़हा की हदीस के बारे में यह मश्हूर है कि इस हदीस में मुसल्सल मुसाफ़हा होता आया है।) (ख़साइले नबवी)

हज़रत अनस (इब्ने मालिक) रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम् अज्मईन जब आपस में मुलाक़ात किया करते थे तो मुसाफ़हा किया करते थे और जब सफ़र से वापस आते तो आपस में मुआनका[1] किया करते थे। (तबरानी, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, लिल्मुन्ज़िरी)

हज़रत ज़ैद इब्ने हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मदीना आये तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहाँ पहुँच कर दरवाज़ा खटखटाया। आप अपनी चादर घसीटते हुए दरवाज़े पर पहुँचे, उनसे मुआनका किया और पेशानी को बोसा दिया। (तिर्मिज़ी)

हाथ-चूमना

हज़रत साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि आपने कभी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने हाथ से छुआ है? उन्होंने कहा हाँ, तो हज़रत साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला के हाथ को चूम लिया। (अल्‌अदबुल्-मुफ़्रद)

हदिय्या (उपहार)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "तहादू तहाब्बू[2]" आपस में हदिय्या और तहाइफ़[3] का तबादला करते रहो कि बाहमी[4] महब्बत बढ़े।"

(बुख़ारी, अल् अदबुल्-मुफ़्रद)

हदीस शरीफ़ में है कि हदिय्या ऐसे शख़्स का क़बूल करो जो हदिया

1-आलिंगन, 2-हदिय्या दो और लो (इससे) महब्बत बढ़ती है, 3-उपहारों, 4-आपसी।

का तालिब[1] न हो वर्ना बाहमी रंज की नौबत आवेगी। लेकिन तुम अपनी तरफ़ से कोशिश करो कि उसको कुछ बदला दिया जाये और अगर बदला देने को मुयस्सर न हो तो उसकी सना व सिफ़त[2] ही बयान करो और लोगों के रूबरू उसके एहसान को ज़ाहिर कर दो और सना व सिफ़त के लिये इतना कह देना काफ़ी है: جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا "जज़ाकल्लाहु ख़ैरा" (अल्लाह तुम्हें बेहतर बदला दे) और जब मुहसिन[3] का शुक्रिया अदा न किया तो अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा न होगा, और जिस तरह मिली हुई नेअ्मत की नाशुक्री बुरी है इसी तरह मिली हुई चीज़ पर शेख़ी बघारना कि हमारे पास इतना-इतना आया, यह भी बुरा है। (मुस्नदे अहमद)

हदीस शरीफ़ में है कि अगर कोई तुम्हारी ख़ातिरदारी को ख़ुशबू, तेल, दूध या तकिया पेश करे कि ख़ुशबू सूँघ लो या तेल लगा लो, दूध पी लो या तकिया कमर से लगा लो तो क़बूल कर लो, इन्कार व उज़्र[4] मत करो, क्योंकि इन चीज़ों में लम्बा चौड़ा एहसान नहीं होता जिसका बार तुमसे न उठ सकता हो और दूसरे का दिल ख़ुश हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शादे गिरामी है कि बाहम तोहफ़ा-तहाइफ़[5] देते रहा करो। इससे दिलों की सफ़ाई होती है, महब्बत बढ़ती है। और कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन को बकरी के पाये का कोई टुकड़ा भेजने को हक़ीर[6] न समझे और यह ख़्याल न करे कि थोड़ी चीज़ है क्या भेजें, जो कुछ हो बेतकल्लुफ़ दो और लो।

छींक और जमाई

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम छींक लेते तो *'अल्हम्दु लिल्लाह'* फ़रमाते, हाथ या कपड़ा मुँह पर रख लेते और आवाज़ को पस्त[7] फ़रमाते, अगर कोई हम जलीस[8] يَرْحَمُكَ اللّٰهُ *'यर्हमुकल्लाह'* कहता तो हुज़ूरे

1-चाहने वाला, 2-प्रशंसा व गुण, 3-उपकारी, 4-टालना, विवशता, 5-उपहार, 6-तुच्छ, 7-कम करते, 8-साथ बैठने वाला।

अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम:

يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ "यह्दीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम्" से उसका जवाब देते। (तिर्मिज़ी)

ग़ैर मज़ाहिब[1] वालों की छींक का जवाब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ *'यह्दीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम्'* से देते يَرْحَمُكَ اللّٰهُ यर्हमुकल्लाह से उनको जवाब देना ना पसन्द फ़रमाते।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम छींक बहुत पस्त आवाज़ से लेते और इसी को पसन्द फ़रमाते। (ज़ादुल्मआ़द)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला छींकने को दोस्त रखता है (क्योंकि छींकने से दिमाग़ में ख़िफ़्फ़त[2] और क़ुवाए इद्‌राकिया[3] में सफ़ाई आ जाती है जो बाइस[4] व मुईन[5] हो जाती है ताअ़त[6] में निशात[7] और हुज़ूरे क़ल्ब के लिये।) (मिश्कात)

और अल्लाह तआ़ला जमाई को नापसन्द करता है (क्योंकि जमाई इम्तिला[8] व सिक़्ले[9] नफ़ूस से होती है और जो कुदूरते हवास[10] व ग़फ़लत व सुस्ती व बद्‌हज़्मी[11] के बाइस हो जाती है और ताअ़त में निशात नहीं होने देती। पस अल्लाह तआ़ला तो नाख़ुश होता है लेकिन शैतान ख़ुश होता है) बस इसी नतीजे के एतिबार से हत्तल्‌वुस्अ़[12] उसको दफ़अ़[13] करे। पस तह्क़ीक़[14] कि जिस वक़्त तुममें से कोई जमाई लेता है यानी मुँह खोलता है तो शैतान उससे हँसता है। (मिश्कात, अल्‌अदबुल्-मुफ़्रद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की हदीसे मर्फ़ूअ़ में है कि तुममें से जिस किसी शख़्स को जमाई आये तो उसको चाहिए कि इम्कान भर[15] उसको रोके वर्ना बायां हाथ मुँह पर रख ले। (अल्‌अदबुल्-मुफ़्रद)

1-अन्य धर्म, 2-हल्कापन, 3-ज्ञानशक्ति, 4-कारण, 5-सहायक, 6-आज्ञाकारी, 7-आनन्द, 8-बदहज़्मी, अफारा, 9-भारीपन, बदहज़्मी, 10-इन्द्रियों की मलिनता, 11-क़ब्ज़ होना, 12-जहाँ तक हो सके, 13-दूर करना, 14-खोज, 15-यथा सम्भव।

सरनामा[1] पर बिस्मिल्लाह लिखना

हज़रत अबू मस्ऊद जरीरी रहमतुल्लाहि अ़लैह कहते हैं कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से किसी ने- بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' लिखने के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया तो आपने कहा यह तो हर तहरीर[2] का सरनामा है। (अल्अदबुल्-मुफ़रद)

ख़त लिखने के आदाब (पत्र लिखने के नियम)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को जो मुरासला[3] लिखा उसका मज़्मून यह था: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'। अल्लाह के बन्दे मुआ़विया अमीरुल् मोमिनीन की ख़िदमत में ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) की तरफ़ से सलामु अ़लैक या अमीरल् मोमिनीन! व रहमतुल्लाह! मैं आप के सामने उस माबूद की हम्दो-सना[4] करता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, अम्मा बाद (मज़्मूने ख़त) (आख़िर के अल्फ़ाज़ यह हैं) और हम अल्लाह ही से सवाल करते हैं, हिदायत व हिफ़ाज़त (अज़ ख़ता[5]) और अपने कामों में मुआ़मला-फ़हमी[6] का और सलाम हो आप पर ऐ अमीरुल् मोमिनीन और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकत और उसकी मग़्फ़िरत। (यह ख़त) वाहिब[7] ने जुमेरात के दिन कि रमज़ान 42 हिजरी के 12 दिन बाक़ी थे, लिखा। फ़क़त

(अल्अदबुल्-मुफ़रद)

क़लम की अ़ज़्मत[8]

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं- मैंने सुना कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक कातिब[9] से फ़रमाया कि क़लम की ताज़ीम[10] करो और उसकी ताज़ीम यह है कि उसको अपने कान

1-पत्र का शीर्ष भाग, 2-लेख, 3-पत्र, 4-प्रशंसा व स्तुति, 5-दोष से, 6-समझदारी, 7-देने वाला, 8-सम्मान, महत्तव, 9-लेखक, 10-आदर।

घर रख लिया करो क्योंकि कलम अंजाम-कार को ख़ूब याद दिलाता है। (तिर्मिज़ी)

हर तहरीर[1] की इब्तिदा[2] में दुरूद शरीफ़

(प्रत्येक लेखन के आरम्भ में दुरूद शरीफ़)

इब्तिदाए कुतुब[3] व रसाइल[4] में बिस्मिल्लाह व 'हम्द' के बाद दुरूद व सलाम का लिखना इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा है कि यह रस्म अव्वल हज़रत सय्यिदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में जारी हुई। ख़ुद उन्होंने अपने ख़ुतूत में इसी तरह लिखा-

مثلا: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ۔ زادالسعید

मसलन्: *बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्लिी अला रसूलिहिल् करीम।* (ज़ादुस्सईद)

इम्तियाज़े क़ौमी और लिबास

(क़ौमी विशिष्टता एवं वेश-भूषा)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि फ़रमाया अल्लाह तआला ने, 'और शैतान ने यूँ कहा कि मैं उनको (और भी) तालीम दूँगा', जिससे वे अल्लाह तआला की बनाई हुई सूरत को बिगाड़ा करेंगे, (जैसे दाढ़ी मुँडवाना, बदन गोदना वग़ैरा) (नसाई)

फ़- बाज़ तब्दीली[5] तो सूरत बिगाड़ना है और हराम है जैसे ऊपर मिसालें लिखी गयीं, और बाज़ तब्दीलियाँ सूरत का संवारना है और यह वाजिब है, जैसे लबें[6] तरश्वाना, नाख़ुन तरश्वाना, बग़ल और ज़ेरे नाफ़[7] के बाल लेना और बाज़ तब्दीली जाइज़ है, जैसे मर्द को सर के बाल मुंडा देना

1-लिखावट, 2-आरम्भ, 3-किताबों के पूर्व, 4-पत्रिकाओं, 5-परिवर्तन, 6-मूँछें, 7-नाभि के नीचे।

या कटा देना या मुट्ठी से ज़्यादा दाढ़ी कटा देना और इसका फ़ैसला शरीअ़त से होता है, न कि रिवाज से, क्योंकि अव्वल तो रिवाज का दर्जा शरीअ़त के बराबर नहीं, दूसरे हर जगह का रिवाज मुख़्तलिफ़ है, फिर वह हर ज़माने में बदलता भी रहता है। (हयातुल् मुस्लिमीन)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- 'जो शख़्स (वज़अ़[1] वग़ैरह में) किसी क़ौम की मुशाबहत[2] इख़्तियार करेगा, वह उन्हीं में है।

(मुस्नदे अहमद, अबू दाऊद)

फ़- यानी जो कुफ़्फ़ार[3] व फ़ुस्साक़[4] की वज़अ़[5] बनावेगा वह गुनाह में उनका शरीक होगा।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- 'अल्लाह तआ़ला लानत करे उन मर्दों पर जो औ़रतों की मुशाबहत करते हैं और उन औ़रतों पर जो मर्दों की मुशाबहत करती हैं। (बुख़ारी)

हज़रत सुवैद बिन वहब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत की जाती है, जो शख़्स ज़ीनत[6] के लिबास को तर्क कर दे इस हालत में कि वह उसके पहनने की इस्तिताअ़त[7] व कुव्वत[8] रखता हो और किसी दूसरी रिवायत में है कि जो शख़्स ज़ेबो-ज़ीनत[9] के लिबास को कस्रे-नफ़्सी[10] या तवाज़ो[11] के तौर पर छोड़ दे, अल्लाह तआ़ला उसको अ़ज़्मत व बुज़ुर्गी का लिबास पहनायेगा और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के लिये निकाह करे तो अल्लाह तआ़ला उसके सर पर बादशाहत का ताज रखेगा। (अबू दाऊद, मिश्कात)

1-वेश-भूषा, श्रृंगार, 2-समानता, 3-जो अल्लाह को नहीं मानते, 4-दुराचारी, 5-श्रृंगार, 6-श्रृंगार, 7-सामर्थ्य, 8-शक्ति, 9-बनाव-श्रृंगार, 10-नम्रता, 11-विनीतता।

मुतकब्बिराना लिबास

(अहंकार युक्त वस्त्र)

हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- 'लटकाना, पाजामा, तहबन्द, कुर्ते और साफ़े में भी हो सकता है, जो आदमी तकब्बुर के ख़्याल से पाजामा, तहबन्द, कुर्ता या साफ़े का शम्ला[1] ज़्यादा नीचा लटकायेगा उसकी तरफ़ अल्लाह तआला नज़रे रहमत से न देखेगा।'

(अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजा)

लिबास के आदाब

पाजामा या शल्वार पहने तो अव्वल[2] दायें पाँव में पाइंचा पहने फिर बायें पाँव में पहने। कुर्ता पहने तो पहले दाहिनी आस्तीन दायें हाथ में पहने, फिर बायें हाथ में बायीं आस्तीन पहने। इसी तरह सद्री, अचकन, शेरवानी वग़ैरह दायीं तरफ़ से पहनना शुरू करे, ऐसे ही जूता पहले दायें क़दम में फिर बायें क़दम में पहनना चाहिए और जब उतारे तो पहले बायीं तरफ़ का उतारे फिर दायीं तरफ़ का उतारे। (तिर्मिज़ी)

मेज़बानी[3] व मेहमानी के हुक़ूक़

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब मुअज़्ज़ज़[4] मेहमान आते तो आप ख़ुद बनफ़्से नफ़ीस[5] उनकी ख़ातिरदारी फ़रमाते।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

जब आप मेहमान को अपने दस्तरख़्वान पर खाना खिलाते तो बार-बार फ़रमाते और खाइये, और खाइये। जब मेहमान ख़ूब आसूदा[6] हो जाता और इन्कार करता तब आप इसार[7] से बाज़ आते।

1-पगड़ी का सिरा जो पीछे लटकता है, 2-पहले, 3-आतिथ्य, 4-प्रतिष्ठित, 5-स्वयं, 6-संतुष्ट, 7-बार-बार कहना।

हज़रत अबू शुरैह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इर्शाद फ़रमाते हैं, 'मेरी इन दोनों आँखों ने देखा और इन दोनों कानों ने सुना कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिदायत दे रहे थे कि जो अल्लाह और यौमे आख़िरत[1] पर ईमान रखता हो, उसे अपने हमसाये[2] की इज़्ज़त व इकराम[3] करना चाहिए और जो अल्लाह तआला और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि अपने मेहमान की इज़्ज़त करे और उसका जाइज़ा दे (हक़ अदा करे)। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! जाइज़ा क्या है? आपने फ़रमाया- एक दिन-रात उसकी ख़िदमत करना। ऐसे मेहमानदारी तीन दिन-रात की है इस पर मज़ीद[4] जो हो वह मेहमान के लिये सद्क़ा है और जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता हो उसे चाहिए कि वह मुँह से अच्छी बात ही निकाले वर्ना चुप रहे।

(बुख़ारी व मुस्लिम, अल्‌अदबुल्-मुफ़रद)

और मेहमान के लिये यह हलाल (दुरुस्त) नहीं कि वह किसी के यहाँ इतना ठहरे कि मेज़बान[5] को तंगदिल कर दे। (बुख़ारी, अल्‌अदबुल्-मुफ़रद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि आदमी अपने मेहमान का इस्तिक़्बाल[6] दरवाज़े से बाहर निकल कर करे और रुख़्सत के वक़्त घर के दरवाज़े तक पहुँचाये। (इब्ने माजा, बैहक़ी, मिश्कात, बुख़ारी)

इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब दस्तरख़्वान बिछाया जाये तो उस पर से कोई शख़्स न उठे यहाँ तक कि दस्तरख़्वान उठा लिया जाये और अपना हाथ न उठाये अगर्चे वह सैर[7] हो चुका हो यहाँ तक कि लोग भी फ़ारिग़ हो जायें (और अगर मज्बूरन उठना पड़े तो चाहिए कि उज़्र[8] करे) इसलिए कि उसके इस तरह करने से (यानी उठ जाने से) उसका साथी शर्मिन्दा हो जाता है तो वह भी अपना हाथ रोक लेगा और शायद उसको

1-आख़िरत के दिन, 2-पड़ोसी, 3-सम्मान, 4-अतिरिक्त, 5-आतिथेय, 6-स्वागत, 7-तृप्त, 8-विवशता।

अभी खाने की ख़्वाहिश हो। (बुख़ारी, ज़ादुल्-मआद)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- 'अपने भाई को सिला[1] दो'। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया (पूछा)- क्या सिला दें, या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! फ़रमाया- 'जब आदमी अपने भाई के यहाँ जाये और वहाँ खाय-पीये तो उसके हक़ में ख़ैरो-बरकत की दुआ करे। यह उसका सिला है।' (अबू दाऊद)

हज़रत अबू करीमतुस्सामी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- 'रात के आने वाले मेहमान की मेज़बानी हर मुसलमान पर (जिसके पास मेहमान आये) वाजिब है।'

दावते तआ़म[2]

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि जो शख़्स वलीमा की दावत करे उसको क़बूल कर लेना चाहिए और मुस्लिम की रिवायत में ये अल्फ़ाज़ हैं कि वलीमा की दावत को क़बूल करे या इसी क़िस्म की किसी और दावत को क़बूल करे। (बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को खाने पर (ख़्वाह वह शादी का हो या ग़ैरशादी का) बुलाया जाये, उसको चाहिए कि दावत को क़बूल करे और वहाँ जाकर फिर खाये या न खाये। (मुस्लिम, मिश्कात)

फ़ासिक़[3] की दावत (पापी का भोज)

हज़रत इमरान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु (बिन हसीन) फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़ासिक़ लोगों की दावत क़बूल करने से मना फ़रमाया है। (मिश्कात)

1-भलाई का बदला, 2-खाना, भोजन, 3-दुराचारी।

खाने में तकल्लुफ़[1]

हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने खाना लाया गया, फिर हमारे सामने खाना पेश किया गया। हमने अ़र्ज़ किया कि हमको ख़्वाहिश नहीं है। (हालाँकि भूकी थीं लेकिन ये अल्फ़ाज़ तकल्लुफ़न् कह दिये) आप सल्ल० ने फ़रमाया कि भूख और झूठ को जमा न करो।

(इब्ने माजा, मिश्कात)

साथ मिलकर खाना

हज़रत वह्शी इब्नुल्हर्ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हमने जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! हम खाना खाते हैं मगर पेट नहीं भरता। आपने फ़रमाया- तुम मिलकर खाते हो या अलाहिदा-अलाहिदा[2]। हमने अ़र्ज़ किया कि हम सब अलग-अलग खाते हैं। आपने इर्शाद फ़रमाया- 'एक दस्तरख़्वान पर मिलकर खाया करो और खाने के वक़्त बिस्मिल्लाह بِسْمِ اللّٰہِ पढ़ लिया करो। तुम्हारे खाने में बरकत होगी। (अबू दाऊद)

औरतों के मुतअ़ल्लिक़ (स्त्रियों के विषय में)

मुस्लिम ख़्वातीन के लिये अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अहकामात

(मुस्लिम स्त्रियों के लिये अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आदेश)

इर्शादे बारी तआ़ला है: कि किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत के लिये गुन्जाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी काम का

1-संकोच, 2-पृथक्-पृथक् (अलग-अलग),।

हुक्म दें तो उनको उस काम में कोई इख़्तियार हो और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कहना न मानेगा तो वह सरीहन्[1] गुमराह हो गया। (पारा 22, रुकूअ: 2)

पर्दे के अहकाम (पर्दे का आदेश)

इर्शादे बारी तआला है- कह दीजिए- ईमानदार मर्दों से कि अपनी आँखों को नामहरम[2] औरतों के देखने से बचाए रखें (यानी ऐसी औरतों को खुले तौर न देखें जो शहवत[3] का महल हो सकती हों और ऐसे मौक़े पर निगाह को पस्त यानी नीचे रखें) और अपने सत्र[4] की जगह को जिस तरह भी मुम्किन हो बचावें। (ऐसा ही कानों को नामहरमों से बचायें यानी नामहरम के गाने-बजाने और ख़ुशइल्हानी[5] की आवाज़ें न सुनें और उनके हुस्न के क़िस्से न सुनें जैसा कि दूसरे नुसूस में है) यह तरीक़ा (नज़र और दिल के पाक रहने के लिये) उम्दा है। बेशक! अल्लाह तआला को ख़बर है जो कुछ वे करते हैं।

और ऐसा ही ईमानदार औरतों से कह दीजिए कि वह भी अपनी आँखों को नामहरम मर्दों के देखने से बचायें (यानी उनकी पुर-शहवत आवाज़ें न सुनें जैसा कि दूसरी नुसूस में है) और अपनी सत्र की जगह को पर्दे में रखें और अपनी ज़ीनत के अअ्ज़ा[6] को किसी ग़ैर-महरम[7] पर न खोलें सिवाय इसके जो ज़ाहिर है और अपनी ओढ़नी को इस तरह सर पर लें कि गिरीबान[8] से होकर सर पर आ जाय (यानी गिरीबान और दोनों कान और सर और कनपटियाँ सब चादर के पर्दे में रहें) यह वह तदबीर[9] है कि जिसकी पाबन्दी ठोकर से बचा सकती है।

और (दूसरा तरीक़ा बचने के लिये यह है कि) ऐ मुसलमानो! अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ् करो[10] सबके सब (और उससे दुआ करो ताकि ठोकर

1-स्पष्टत, 2-वह स्त्री जिससे शादी करना जाइज़ हो, 3-कामातुरता, 4-शरीर का वह भाग जिसका इस्लामी क़ानून के अनुसार छिपाना आवश्यक है, 5-मधुर स्वर, 6-अंग, 7-जिससे शादी जाइज़ हो, 8-गले, 9-उपाय, 10-प्रवृत्त।

से बचावे और लग़्ज़िश[1] से नजात दे।) उम्मीद है कि तुम फ़लाह[2] पाओ और ज़िना[3] के क़रीब मत जाओ (यानी ऐसी तरकीबों[4] से दूर रहो जिन से ख़्याल भी दिल में पैदा हो सकता है और उन राहों को इख़्तियार न करो जिनसे उस गुनाह के वुक़ूअ़[5] का अंदेशा हो) ज़िना निहायत दर्जे की बेहयाई है। ज़िना की राह बहुत बुरी है (यानी मंज़िले मक़्सूद[6] से रोकती है और तुम्हारी उख़्रवी[7] मंज़िल के लिये सख़्त ख़तरनाक है। (अल्-क़ुरआन)

औरतों के हुक़ूक़ का तहफ़्फ़ुज़[8]

(स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा)

हज़रत अ़म्र बिन अहवस हैसमी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हज्जतुल्-वदाअ़ में जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना, पहले आप सल्ल० ने अल्लाह तआ़ला की हम्दो-सना फ़रमाई[9] फिर कुछ बातों की नसीहत की, फिर फ़रमाया लोगो सुनो! औरतों के साथ अच्छे सुलूक से पेश आओ क्योंकि वे तुम्हारे पास क़ैदियों की तरह हैं। तुम्हें उनके साथ सख़्ती करने का कोई हक़ नहीं, सिवाय उस सूरत के कि जब उनकी तरफ़ से खुली हुई नाफ़रमानी सामने आये। अगर वे ऐसा कर बैठें तो ख़्वाबगाहों में उनसे अलाहिदा रहो और उन्हें मारो भी लेकिन ऐसी मार हो कि कोई शदीद[10] चोट न आये। फिर अगर वे तुम्हारा कहना मानने लगें तो उनको ख़्वाहमख़्वाह सताने की राहें मत ढूंढो।

देखो सुनो! तुम्हारे कुछ हुक़ूक़ तुम्हारी बीवियों पर हैं और तुम्हारी बीवियों के कुछ हुक़ूक़ तुम पर हैं। उन पर तुम्हारा यह हक़ है कि वे तुम्हारे बिस्तरों को उन लोगों से न रौंदवायें जिनको तुम नापसन्द करते हो और तुम्हारे घरों में ऐसे लोगों को हर्गिज़ न घुसने दें जिनका आना तुम्हें नागवार हो और सुनो! तुम पर उनका यह हक़ है कि तुम उन्हें अच्छा खिलाओ और अच्छा पहनाओ। (तिर्मिज़ी)

1-ग़लतियों, 2-कामयाबी, 3-व्यभिचार, 4-उत्सवों, शादियों, 5-घटित होने, 6-गन्तव्य स्थल, 7-आख़िरत या परलोक से सम्बन्धित, 8-सुरक्षा, 9-प्रशंसा की, 10-कठोर।

इन्दल्लाह मुस्लिम ख़्वातीन का वक़ार व हया

(अल्लाह के समीप मुस्लिम महिलाओं की मान-मर्यादा व लज्जा)

इर्शादे बारी तआला है कि ऐ पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! आप मुसलमान मर्दों से कह दीजिए कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफ़ाज़त करें। यह उनके लिये ज़्यादा सफ़ाई की बात है, बेशक अल्लाह तआला को सबकी ख़बर है, जो कुछ लोग किया करते हैं। और (इसी तरह) मुसलमान औरतों से (भी) कह दीजिए कि (वे भी) अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी आबरू की हिफ़ाज़त करें और अपना हुस्नो-जमाल न दिखाया करें मगर जो चीज़ उसमें (ग़ालिबन्[1]) खुली हुई रहती है (जिसे हर वक़्त छिपाने में दुश्वारी है) और अपनी ओढ़नियाँ अपने सीनों पर डाले रहा करें और अपने हुस्नो-जमाल को (किसी पर) ज़ाहिर न होने दें। (सिवाय उनके जो शर्अन् महरम हैं) और मुसलमानो! (तुम से जो इन अहकाम में कोताही हो गई तो) तुम सब अल्लाह तआला के सामने तौबा करो ताकि तुम फ़लाह[2] पाओ वर्ना मासियत[3] माने[4] फ़लाहे कामिल[5] हो जाती है। (अल्-क़ुरआन)

नाबीना[6] ग़ैरमहरम[7] से पर्दा

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मर्वी है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थीं और हज़रत मैमूना रज़ि० भी आप सल्ल० के पास थीं कि अचानक हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ि० (नाबीना) आ गये। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया- इब्ने मक्तूम से पर्दा करो। हज़रत उम्मे सलमा कहती हैं कि मैंने अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह! क्या यह नाबीना नहीं हैं, वह तो हमें देख

1-संभवतः, 2-सफ़लता, 3-गुनाह, 4-बाधक, 5-पूर्ण सफ़लता की, 6-दृष्टिहीन, 7-जिससे विवाह हो सकता हो।

नहीं सकते। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- 'क्या तुम दोनों भी नाबीना हो कि तुम उन्हें नहीं देख सकतीं।

(अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, हयातुल्-मुस्लिमीन)

औ़रत के बाहर निकलने का ज़ाबिता[1]

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि औ़रतों के लिये (घर से) बाहर निकलने में कोई हिस्सा नहीं मगर बहालते इज़्तिरार[2] व मज्बूरी (इसी हदीस में यह भी है कि) औ़रतों के लिये रास्तों में (चलने का) कोई हक़ नहीं सिवाय किनारों के (यानी बहालते मज्बूरी भी निकलें तो रास्ते के बीच में न चलें ताकि मर्दो से इख़्तिलात[3] न हो।) (तबरानी)

औ़रतों के साथ तन्हाई

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- 'नामहरम औ़रतों के पास मत जाओ'। एक अन्सारी रज़ि० ने अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! देवर के बारे में क्या राय है? आप सल्ल० ने फ़रमाया- 'देवर तो मौत है यानी उससे बहुत मोहतात[4] रहने की ज़रूरत है'। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है- 'ग़ैर औ़रतों के साथ तन्हाई में रहने से बचो। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि जब भी कोई मर्द किसी ग़ैर औ़रत के साथ तन्हाई में होता है तो उनके दरमियान तीसरा शैतान आ दाख़िल होता है (और अपना जाल फैलाने लगता है)

1-नियम, 2-आतुरता, शीघ्रता, 3-मेल-जोल, 4-सावधान।

सत्रे औरत

(स्त्री का पर्दा)

औरत को सारा बदन सर से पैर तक छिपाये रखने का हुक्म है। ग़ैर महरम के सामने बदन खोलना दुरुस्त नहीं (सर के बाल खुले रहने पर फ़िरिश्तों की लानत आई है) ग़ैर महरम के सामने एक बाल भी न खुलना चाहिए।

औरत की आवाज़

जिस तरह औरत को एहतियात ज़रूरी है कि ग़ैर मर्दों के कान में उसकी आवाज़ न पड़े इसी तरह मर्द को एहतियात वाजिब है कि ख़ुशआवाज़ी से ग़ैर औरतों के रूबरू[1] अश्आर वग़ैरह पढ़ने से इज्तिनाब[2] करे क्योंकि औरतें रक़ीकुल्-क़ल्ब[3] होती हैं। उनकी ख़राबी का अन्देशा है।

(मुत्तफ़क़ अलैह)

नामहरम औरत को देखना

हज़रत अबू उमामा बाहली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– 'जो कोई मुसलमान किसी औरत के महासिन[4] यानी हुस्न व जमाल को देखकर अपनी आँख बन्द कर लेता है तो अल्लाह तआला उसके लिए एक ऐसी इबादत निकाल देता है जिसकी हलावत[5] वह अपने दिल में पाता है। तबरानी ने नज़रे अव्वल की क़ैद लगाई है। (अहमद व तबरानी)

नामहरम के घर में जाना

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मत दाख़िल हो तुम ऐसी

1-1-मुख, 2-दूर रहे, 3-दिल की कोमल, 4-सौन्दर्य, 5-मधुरता।

औरतों के पास जिनके शौहर मौजूद नहीं हैं, क्योंकि शैतान तुम्हारी रगों में ख़ून के साथ चलता है। (यानी ग़ल्बए शह्वत[1] में शैतानी वस्वसों[2] से बचना निहायत मुश्किल है।) (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

जन्नत से महरूमी[3]

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्फ़ूअन् रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- 'तीन शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे- 1. दैयूस[4], 2. मर्दानी शक्ल बनाने वाली औरतें, 3. हमेशा शराब पीने वाला। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया दैयूस कौन है? फ़रमाया- 'जिसको इसकी पर्वाह (फ़ुर्सत) न हो कि उसकी घर वालियों के पास कौन आता है, कौन जाता है। (तबरानी)

नामहरम औरतों से सलाम व मुसाफ़हा

हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुममें से किसी के सर में सूई चुभो दी जाये यह इससे बेहतर है कि वह ऐसी औरत को छुए जो उसके लिए हलाल नहीं। (तबरानी)

(अजनबी) औरतों को सलाम करना, इसी तरह (अजनबी) मर्दों को सलाम करना जाइज़ नहीं है (इसको अलुक़य्यिम ने हिल्या में अता ख़ुरासानी से मुर्सलन् रिवायत किया है)

आदमी का गारे में अटे हुए और बदबूदार सड़ी हुई कीचड़ में लथड़े हुए सुअर से टकरा जाना गवारा है, इसके मुक़ाबले में कि उसके शाने[5] किसी ऐसी औरत से टकरा जायें जो उसके लिये हलाल न हो।

(तबरानी, अबू दाऊद)

1-कामातुरता के प्रभुत्व, 2-अनिष्ट की शंका, 3-दूरी, वंचित, 4-वह व्यक्ति जो अपनी स्त्री की कमाई खाये और उसे दूसरों के पास जाने दे, 5-कन्धे।

औरत की वज़अ्[1] क़तअ्[2] और लिबास

(स्त्री की दशा, वेश–भूषा तथा वस्त्र)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस मर्द पर लानत फ़रमाई जो औरत की वज़अ् क़तअ् का लिबास पहने। हज़रत इब्ने अबी मुलैका से रिवायत है कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० से कहा गया- एक औरत (मर्दाना) जूता पहनती है। उन्होंने फ़रमाया कि: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मर्दानी (वज़अ क़त्अ़ बनाने वाली) औरतों पर लानत फ़रमाई है। (अबू दाऊद, हयातुल्-मुस्लिमीन)

औरतों को मस्नूई[3] बालों का चूंड़ा बाँधने से भी ज़बरदस्त वईद[4] से रोका है। (मुस्लिम)

हदीस शरीफ़ में है कि औरत को ऐसा बारीक दुपट्टा न ओढ़ना चाहिए कि सर के बाल और जिस्म नज़र आये। (अबू दाऊद)

औरतों के लिये यह ज़रूर है कि वे ऐसा कपड़ा पहनें जिसकी आस्तीनें पूरी हों, आधी आस्तीन का कुर्ता या क़मीज़ पहनना सख़्त गुनाह है और ऐसा बारीक लिबास पहनना भी मना है, जिससे बदन झलकता हो। ऐसी औरतें क़ियामत में बरहना[5] उठाई जायेंगी। (मिश्कात, बिहिश्ती ज़ेवर)

मम्नूआते शईय्या

(इस्लामी क़ानून के अनुसार निषिद्ध)

हुर्मते शराब (शराब की मनाही)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि सबसे पहले इस्लाम में जिस चीज़ को उल्टा जायेगा, जिस तरह भरे बर्तन को उलट दिया जाता है वह शराब होगी यानी इस्लाम में सबसे पहले अल्लाह तआला

1-दशा, वेश-भूषा, 2-रंग, वेश-भूषा, 3-कृत्रिम, 4-दण्ड की धमकी, 5-नंगी।

के जिस हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी[1] की जायेगी और उसके हुक्म को उलट दिया जायेगा, वह शराब की मुमानअ़त का हुक्म होगा और पूछा गया, या रसूलल्लाह! क्योंकर होगा, हालाँकि शराब के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला के अहकाम बयान हो चुके हैं और सब पर ज़ाहिर हैं। आपने फ़रमाया- "इस तरह होगा कि शराब का दूसरा नाम रख लेंगे और उसको हलाल क़रार देंगे। (दारमी, मिश्कात)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसी सब चीज़ों से मना फ़रमाया है जो नशा लायें (यानी अ़क़्ल में फ़ुतूर[2] लायें या जो हवास[3] में फ़ुतूर लायें।) (अबू दाऊद, हयातुस्-मुस्लिमीन)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने लानत फ़रमाई है शराब पर, इसके पीने वाले पर इसके निचोड़ने वाले पर, इसके बेचने वाले पर, इसके ख़रीदने वाले पर, इसके पिलाने वाले पर, इसके उठाने वाले पर, और उस शख़्स पर जिसके लिये उठाकर ले जाई गई।

(अबू दाऊद, इब्ने माजा, मिश्कात)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जो चीज़ ज़्यादा मिक़्दार में इस्तेमाल करने से नशा लाये, उसका थोड़ी मिक़्दार में इस्तेमाल करना भी हराम है। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, मिश्कात)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि चार शख़्सों के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला ने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है कि उनको जन्नत में न भेजेगा और न उनको जन्नत की नेअ़मतों से कुछ हिस्सा मिलेगा, 1-शराब का आ़दी, 2-सूदख़्वार[4], 3-यतीम का माल खाने वाला, और 4-माँ-बाप का नाफ़रमान। (हाकिम)

1-उल्लंघन, 2-विकार, दोष, 3-इन्द्रियाँ, 4-सूद खाने वाला।

शराब, सूद और अय्याशी

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- इस उम्मत के बाज़ अफ़राद[1] रात-दिन शराब, लह्वोलइब[2] में गुज़ारेंगे तो एक दिन सुबह को ये लोग बन्दर और सुअर की सूरतों में मस्ख़[3] कर दिये जायेंगे। उनमें ख़स्फ़[4] भी होगा (यानी ज़मीन में धंसा दिये जायेंगे) उन पर आसमान से पत्थर भी बरसेंगे। लोग कहेंगे आज की रात फ़लाँ मोहल्ला धंस गया। उन पर क़ौमे लूत की तरह पत्थर बरसेंगे और क़ौमे आद की तरह आँधियों से तबाह किये जायेंगे। इसकी वजह यह होगी कि यह लोग शराब पियेंगे और सूद खायेंगे, रेशमी लिबास इस्तेमाल करेंगे, गाने वालियाँ उनके पास जमा होंगी और ये लोग क़तअ़-रहिम[5] करेंगे। (मुस्नदे अहमद, इब्ने अबिद्दुन्या)

लग़्व, खेल-शतरंज वग़ैरह

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शराब पीने, जुवा खेलने से मना फ़रमाया है और नर्द (चौसर, गोट) और शतरंज, नक़्क़ारा और बर्बत[6] से भी मना फ़रमाया है और फ़रमाया है- हर नशा वाली चीज़ हराम है।

(अबू दाऊद, मिश्कात)

हज़रत इब्ने शिहाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान किया है कि शतरंज वही शख़्स खेलता है जो ख़ताकार और गुनहगार है। (बैहक़ी, मिश्कात)

शतरंज लग़्व[7] और बातिल[8] खेल है और अल्लाह तआला लग़्व और बातिल को पसन्द नहीं फ़रमाता। (बैहक़ी, मिश्कात)

1-कुछ लोग, 2-खेल-कूद, 3-विकृत, 4-ज़मीन में धँसना, 5-सम्बन्ध,-विच्छेद, 6-एक प्रकार का बाजा जो सितार की तरह होता है, 7-व्यर्थ, 8-झूठा।

तसावीर[1]

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक ग़ज़्वे[2] के लिए तशरीफ़ ले गये थे। मैंने (आपके पीछे) एक नक़्शीन[3] चादर लेकर दरवाज़े के ऊपर डाल दी, जब आप तशरीफ़ लाये और आपने वह चादर पड़ी हुई देखी तो उसको खींच कर फाड़ डाला और फ़रमाया- "अल्लाह तआ़ला ने हमको यह हुक्म नहीं दिया कि हम पत्थर और गारे को लिबास पहनाया करें।" (मुत्तफ़क़ अ़लैह)

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है[4] कि उन्होंने कहा- मैं इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास था। उनसे तस्वीरों के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया जा रहा था। इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने जवाबन् अ़र्ज़ किया, मैंने हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह बात फ़रमाते हुए सुना, जो शख़्स दुनिया में तस्वीरें बनायेगा उसे क़ियामत के दिन उनमें रूह डालने के लिए ज़ोर दिया जायेगा मगर वह उनमें रूह नहीं डाल सकेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सख़्त-तरीन अ़ज़ाब में वे लोग मुब्तला[5] होंगे जिन्होंने अल्लाह तआ़ला के नबी से क़िताल[6] किया हो या उनसे अल्लाह तआ़ला के नबी ने क़िताल किया हो या वह लड़का जिसने अपने वालिदैन[7] को क़त्ल किया हो। इसी तरह मुसव्विर[8] और वह आ़लिम जिसके इल्म से लोगों ने नफ़ा[9] हासिल न किया हो यानी उलमा जो अपने इल्म से लोगों को नफ़ा न पहुँचाएं, सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला होंगे।

(मिश्कात शरीफ़)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि

1-चित्र, मूर्तियां 2-हज़रत मुहम्मद सल्ल० के समय के वे युद्ध जिनमें वे शरीक हुए हों, 3-चित्रकारी की हुई, 4-उद्धृत, 5-ग्रस्त, 6-रक्तपात, लड़ाई, 7-माता-पिता, 8-चित्रकार, 9-लाभ।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम आए थे, कह रहे थे कि रात हाज़िर हुआ था लेकिन घर के दरवाज़े पर किसी जानदार का मुजस्समा[1] सा था, घर के एक ताक़ के पर्दे पर कुछ तस्वीरें थीं और घर में कुत्ता भी था। आप मुजस्समे का सर कटवा दें, पर्दे का तकिया बनवा लें (ताकि तस्वीरें छिप जायें) और कुत्ते को निकलवा दें, चुनांचे आपने ऐसा ही किया। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, मिश्कात)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस घर में तस्वीर या कुत्ता हो उसमें (रहमत के) फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि इन तीन ग़रज़ों के अ़लावा अगर किसी और ग़रज़ से कोई कुत्ता पाले तो उसके सवाब में हर रोज़ एक क़ीरात[2] घटता रहेगा (यानी सिर्फ़ मुन्दर्जा-ज़ैल[3] अग़राज़[4] के लिये कुत्ता पाला जा सकता है:

1- मवाशी (चौपायों या मवेशियों) की हिफ़ाज़त के लिये,

2- खेत की हिफ़ाज़त के लिये और,

3- शिकार के लिये। (मिश्कात शरीफ़)

राग-रागनी

सहीह़ बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो शराब और गाने बजाने को हलाल समझने लगेंगे।

मुस्नद इमामे अहमद में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया- "अल्लाह तआ़ला ने मुझे रहमतुल्-लिल्आ़लमीन बनाकर भेजा है और मुझे हुक्म दिया है, साज़ और बाजों को मिटा दूँ।" (तिर्मिज़ी)

1-प्रतिमा, 2-एक तौल जो चार जौ के बराबर होती है, रत्तियों के हिसाब से तीन रत्ती, 3-निम्नांकित, 4-हेतुओं।

सुनने अबी दाऊद में हज़रत नाफ़े रज़ि० से मर्वी है। उन्होंने कहा- हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने साज़ सुना, तो उन्होंने अपने कानों में उँगलियाँ दे लीं और फ़रमाया- "मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ऐसे ही एक मौक़े पर था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मज़ामीर[1] की आवाज़ सुनी और आपने भी अपनी अंगुश्त[2] मुबारक अपने कानों में दे लीं।" (अबू दाऊद, इब्ने माजा, मुस्नदे अहमद)

सुनने इब्ने माजा में मर्वी है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि बाज़े[3] लोग शराब का नाम बदल कर उसको पियेंगे और उनके सरों पर मआज़िफ़[4] (बाजा, सितार, वग़ैरह) और गाने वालियों से बाजा बजवाया और गवाया जायेगा। अल्लाह तआला उनको ज़मीन में धँसा देगा और उनको बन्दर और ख़िन्ज़ीर[5] बना देगा।

जामे तिर्मिज़ी में है कि इर्शाद फ़रमाया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने- "मेरी उम्मत में ख़स्फ़ और मस्ख़ वाक़े[6] होगा, जब अलल् एलान[7] हो जावें गाने वालियाँ और मआज़िफ़ (बाजा व सितार) वग़ैरह।"

मुस्नदे अबिद्दुन्या में मर्वी है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि एक क़ौम इस उम्मत से आख़िर ज़माने में बन्दर और ख़िन्ज़ीर बन जावेगी। सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! क्या वे लोग لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ *"ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* के क़ाइल[8] न होंगे। आपने फ़रमाया- क्यों न होंगे, बल्कि सौम व सलात[9] व हज सब कुछ करते होंगे।" किसी ने अर्ज़ किया- फिर इस सज़ा की क्या वजह? आप ने फ़रमाया कि उन्होंने मआज़िफ़ (बाजा व सितार वग़ैरह) और गाने वालियों का मश्ग़ला[10] इख़्तियार किया होगा।

इब्ने अबिद्दुन्या और बैहक़ी ने शाबी से रिवायत किया है कि फ़रमाया

1-बाँसुरियाँ, 2-उँगली, 3-कुछ, 4-वाद्य-यन्त्र, 5-सुअर, 6-घटित, 7-खुल्लम-खुल्ला, 8-बोलने वाले, 9-रोज़ा व नमाज़, 10-व्यवसाय।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि अल्लाह तआला लानत करे गानेवालियों पर और उस पर जिसकी ख़ातिर गाया जाए।

दु-र-रे मन्सूरह

(बिखरे हुए मोती)

क़ुरआने मजीद की बरकत

हज़रत अनस व जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमानो! अपने घरों में अक्सर क़ुरआन मजीद पढ़ते रहा करो, क्योंकि जिस घर में क़ुरआन मजीद नहीं पढ़ा जाता उसमें ख़ैरो-बरकत नहीं होती।

(दारे क़ुतनी फ़िस्सुनन)

सुहबते नेकाँ (सत्संगति)

मुसलमानो! अपने से बड़ों के पास बैठा करो, आलिमों से सवाल किया करो और दानिश्मन्दों[1] से मिला करो। (तबरानी)

हर इन्सान अपने दोस्त के मज़्हब[2] पर होता है, पस पहले ही से देख लेना चाहिए कि वह किसको दोस्त बनाता है। (मिश्कात)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर एक शख़्स ने अर्ज़ किया- "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! एक शख़्स किसी नेक आदमी से उसके आमाल के बाइस[3] महब्बत करता है मगर वह ख़ुद नेक आमाल इतने नहीं करता, जैसे उस नेक आदमी के आमाल हैं।" सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "कोई मज़ाइक़ा[4] नहीं, आदमी क़ियामत में उसी के साथ होगा, जिसके साथ महब्बत करता है" (यानी उस नेक की महब्बत का उसे सिला[5] मिलेगा।")

(बुख़ारी)

1-बुद्धिमानों, 2-मत, 3-कारण, 4-हानि, 5-बदला।

अहद शिक्नी का वबाल

(प्रतिज्ञा तोड़ने की विपदा)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस क़ौम में अहद शिकनी की आदत फैल जाती है, ख़ूँरेज़ी[1] बढ़ जाती है और जिस क़ौम में बदकारी[2] फैल जाती है, उसमें मौतों की तादाद बढ़ जाती है।

(अबू दाऊद, हाकिम, नसाई)

हमनशीन का असर (मित्र का प्रभाव)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है- "बुरे हमनशीन के पास बैठने से तन्हाई बेहतर है और अच्छे हमनशीन के पास बैठना तन्हाई से बेहतर है और नेक बात ज़बान से निकालना ख़ामोशी से बेहतर है और ख़ामोश रहना बुरी बात ज़बान से निकालने से बेहतर है।

(हाकिम, बैहक़ी फ़ी शोबिलुईमान)

किसी की ज़मीन ग़स्ब[3] करने का वबाल

(किसी की भूमि हड़पने की विपदा)

हदीस शरीफ़ में है कि जो आदमी अपनी और दूसरे आदमी की ज़मीन की हद बदल डाले, उस पर क़ियामत तक अल्लाह तआला शानुहू की लानत है। (तबरानी)

हम्साये का इंतिख़ाब (पड़ोसी का चयन)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुसलमानो! घर बनाने या लेने से पहले हमसाय को तलाश किया करो और रास्ता चलने से पहले अच्छे साथी को ढूँढ लिया करो। (तबरानी)

1-रक्तपात, 2-बुराई, 3-ज़बरदस्ती या ज़ुल्म से किसी के माल पर क़ब्ज़ा करना।

परेशानहाल की मदद

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी परेशानहाल इन्सान की मदद करे, अल्लाह तआला उसके लिये 73 मग़्फ़िरत लिखेगा, जिनमें से एक मग़्फ़िरत तो उसकी तमाम कामों की इस्लाह[1] के लिए काफ़ी है और 72 मग़्फ़िरत क़ियामत के दिन उसके लिए दर्जात की बुलन्दी का सबब बन जायेंगी। (बैहक़ी, हयातुल्-मुस्लिमीन)

अहलो-इयाल[2] का फ़ित्ना[3]

हज़रत इब्ने मस्ऊद व अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि आदमी की हलाकत[4] उसकी बीबी और माँ-बाप और औलाद के हाथों होगी कि ये लोग उस शख़्स को नादारी[5] से आर[6] दिलायेंगे और ऐसी बातों की फ़रमाइश करेंगे, जिनको यह उठा न सकेगा, सो यह ऐसे कामों में घुस जावेगा जिनसे उसका दीन जाता रहेगा, फिर यह बर्बाद हो जायेगा। (बैहक़ी, हयातुल्-मुस्लिमीन)

मुसलमान भाई से बहस व दिल्लगी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अपने भाई (मुसलमान) से (ख़्वाहमख़्वाह) बहस न किया करो और न उससे ऐसी दिल्लगी करो (जो उसको नागवार हो) और न उससे कोई ऐसा वादा करो, जिसको तुम पूरा न कर सको। (तिर्मिज़ी, हयातुल्-मुस्लिमीन)

1-सुधार, 2-परिवार, 3-उपद्रव, 4-वध, पतन, 5-दरिद्रता, 6-लज्जा, दोष।

ग़ीबत[1] पर हिमायत[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसके सामने उसके मुसलमान भाई की ग़ीबत होती हो और वह उसकी हिमायत पर कुद्रत[3] रखता हो और उसकी हिमायत करे तो अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उसकी हिमायत फ़रमाएगा और अगर उसकी हिमायत न की हालाँकि वह उसकी हिमायत पर क़ादिर[4] था तो दुनिया व आख़िरत में अल्लाह तआला उस पर गिरिफ़्त फ़रमायेगा। (शर्हुस्सुन्ना, हयातुल्-मुस्लिमीन)

पाकी व सफ़ाई

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है 'मुसलमानो! अपने घरों के सहनों को साफ़ रखा करो, क्योंकि वे यहूदियों के मुशाबिह[5] हैं जो अपने घरों के सहनों को उमूमन[6] गन्दा रखते हैं। (तबरानी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुसलमानो! अपने घरों में नमाज़ पढ़ा करो और उनको मक़्बरे न बनाओ।

(मुस्नदे अहमद, मुस्लिम व बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि अल्लाह तआला ने इस्लाम की बुन्याद पाकीज़गी[7] और सफ़ाई पर रखी है और जन्नत में वही आदमी दाख़िल होगा जो पाक और साफ़ होगा, जो पाक और साफ़ रहने वाला है। (अबुस्सनआ)

हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- ''मुसलमानो! अपने जिस्मों को पाक-साफ़ रखा करो। (तबरानी)

1-निन्दा, चुग़ली 2-पक्षपात, हिम्मत बढ़ाना, 3-सामर्थ्य, 4-समर्थ, 5-समान, 6-प्राय, 7-पवित्रता।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के बन्दो! इलाज कराया करो, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने बुढ़ापे के सिवा हर बीमारी की दवा पैदा की है।

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बरकत खाने के बीच में नाज़िल्[1] की जाती है, इसलिए तुम बर्तन के किनारे से खाओ, बीच में से मत खाओ। (तिर्मिज़ी)

जिस्मानी आराइश (शारीरिक सजावट)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे यहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुलाक़ात की ग़रज़ से तशरीफ़ लाये तो आपने एक आदमी को देखा जो गर्दो-ग़ुबार से अटा हुआ था और बाल बिखरे हुए थे। आप सल्ल० ने फ़रमाया- "क्या इस आदमी के पास कोई कंघा नहीं है जिससे यह अपने बालों को दुरुस्त कर लेता? और आपने एक दूसरे आदमी को देखा जिसने मैले कपड़े पहन रखे थे। आप सल्ल० ने फ़रमाया- "क्या इस आदमी के पास वह चीज़ (साबुन वग़ैरह) नहीं है जिससे यह अपने कपड़े धो लेता।" (मिश्कात)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स के सर पर बाल और दाढ़ी के बाल हों, उसको चाहिए कि उनको अच्छी तरह रखे।

(अबू दाऊद, मिश्कात)

मदह में मुबालग़ा (हद से बढ़कर प्रशंसा करना)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक मर्तबा एक शख़्स को दूसरे शख़्स की मुबालग़ा आमेज़[2] तारीफ़ करते हुए सुना तो फ़रमाया- "तुमने तो उस को बरबाद कर दिया।" एक और मौके पर किसी से

1-अवतरित, 2-बहुत ज़्यादा किसी की तारीफ़ करना।

फ़रमाया– "तुमने तो अपने साथी की गर्दन मार दी।" अगर तुमको तारीफ़ ही करनी हो तो यूँ कहो कि मैं यह गुमान करता हूँ, बशर्ते कि उसके इल्म में वह वाक़ई ऐसा हो और क़त्इय्यत[1] के साथ ग़ैब[2] पर हुक्म न लगाना चाहिए। (सहीह़ बुख़ारी, सीरतुन्नबी सल्ल०)

क़नाअ़त (संतुष्टि)

हज़रत फ़ुज़ाला बिन उ़बैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– "ख़ुशख़बरी हो उसको जिसको इस्लाम की हिदायत मिली और उसकी रोज़ी ज़रूरत के मुताबिक़ है और अल्लाह तआ़ला ने उसको उस पर क़ानेअ़[3] बना दिया है।

(ज़वाइद सहीह़, इब्ने हिब्बान, सीरतुन्नबी सल्ल०)

बुह्तान (आरोप)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– "जो कोई अपने ग़ुलाम (नोकर) पर तोहमत लगायेगा हालाँकि वह बेगुनाह हो यानी उसने वह गुनाह नहीं किया था, तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस मालिक की पीठ पर कोड़े लगायेगा।" नीज़[4] आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया– "जिसमें जो बुराई नहीं उसकी निस्बत उसकी तरफ़ करना बुह्तान है, (यानी इससे बचना चाहिए)। (सुनने अबीदाऊद, सीरतुन्नबी सल्ल०)

बूढ़े की ताज़ीम[5] (वृद्ध का आदर)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– "जिस ने किसी बूढ़े शख़्स की उसके बुढ़ापे के सबब ताज़ीम व तक्रीम[6] की, अल्लाह तआ़ला उसके

1–अटलपन,निश्चितता, 2–परोक्ष, 3–जो कुछ हो उसी पर संतोष या सब्र करने वाला, 4–अतिरिक्त, 5–आदर, 6–सत्कार।

बुढ़ापे के लिये ऐसे शख़्स को मुक़र्रर[1] करेगा जो उसकी ताज़ीम व तकरीम करेगा।

(तिर्मिज़ी, मिश्काता)

ज़ालिम व मज़्लूम[2] की इआनत[3]

(पीड़क व पीड़ित की सहायता)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मज़्लूम की फ़र्यादरसी[4] करे, अल्लाह तआला उसके लिये 73 बख़्शिशें लिख देता है। जिनमें से एक बख़्शिश वह है जो उसके तमाम कामों की इस्लाह[5] की ज़ामिन[6] है और 72 बख़्शिशें क़ियामत के दिन उसके दर्जात बुलन्द करने का सबब होंगी (बैहक़ी, मिश्कात)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि मुसलमान भाई की मदद करो, ज़ालिम हो या मज़्लूम। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! मज़्लूम की इआनत तो मैं करता हूँ, ज़ालिम की मदद क्यों कर करूँ? आप सल्ल० ने फ़रमाया- तू उसको ज़ुल्म से रोक, तेरा उसको ज़ुल्म से बाज़ रखना[7] ही मदद करना है।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात)

मुसीबत-ज़दा का मज़ाक़

हज़रत वासिला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "तू अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़्हार न कर, वर्ना अल्लाह तआला उस पर रहम फ़रमाएगा और तुझे मुसीबत में मुब्तला कर देगा। (तिर्मिज़ी)

1-नियुक्त, 2-जिस पर अत्याचार किया जाता हो, 3-सहायता, 4-न्याय करना, फ़र्याद सुनना, 5-शुद्धि, 6-प्रतिभू, ज़मानत करने वाली, 7-रोकना।

चन्द नसीहतें

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सात चीज़ों के करने का हमको हुक्म दिया है और चन्द चीज़ों से हमको मना किया है। हमको हुक्म किया है:

1- मरीज़ की इयादत करने का,

2- जनाज़े के साथ जाने का,

3- छींकने वाले के लिए यर्हमकल्लाह يَرْحَمُكَ اللهُ कहने का,

4- क़सम के पूरा करने का,

5- मज़्लूम की मदद करने का,

6- सलाम को रिवाज देने का और,

7- दावत देने वाले की दावत क़बूल करने का।

और हमको मना फ़रमाया है:-

1- सोने की अँगूठी रखने से,

2- चाँदी के बर्तनों के इस्तेमाल से,

3- सुर्ख़ कपड़े पहनने और ज़ीनपोश[1] बनाने से,

4- और कसी[2] और ताफ़्ता[3] और दीबा[4] और हरीर[5] पहनने से।

दोस्त से मुलाक़ात

हज़रत अबी रज़ीन रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह

1-घोड़े की काठी के ऊपर डाला जाने वाला वस्त्र, 2-रेशमी वस्त्र, 3-चमकदार रेशमी वस्त्र, 4-बारीक चित्रित रेशमी वस्त्र, 5-बारीक रेशमी वस्त्र।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया– मैं तुझको इस अम्र (दीन) की जड़ बता दूँ कि तू उसके ज़रिये से दुनिया व आख़िरत की भलाई को हासिल कर सके। (मुत्तफ़क़ अलैह)

1– तू अहले ज़िक्र की मज्लिसों में बैठा कर (यानी) उन लोगों के पास जो अल्लाह तआला का ज़िक्र करते हैं।

2– और जब तन्हा हो तो जिस क़द्र मुम्किन हो अल्लाह तआला की याद में अपनी ज़बान को हर्कत में रख।

महज़ अल्लाह तआला शानुहू की ख़ुशनूदी के लिए महब्बत कर और अल्लाह तआला शानुहू की रिज़ामन्दी के लिये बुग़्ज़[1] रख।

ऐ अबू रज़ीन! क्या तू जानता है कि जब कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई की ज़ियारत व मुलाक़ात के इरादे से घर से निकलता है तो क्या होता है? उसके ए   गर हज़ार फ़िरिश्ते होते हैं जो उसके लिए दुआ व इस्तिग़्फ़ार करते हैं औ. कहते हैं– 'ऐ परवरदिगार! इस शख़्स ने महज़ तेरी रिज़ा के लिये मुलाक़ात की। तू इसको अपनी रहमत व शफ़्क़त से मिला दे।" पस अगर तुझसे यह मुम्किन हो यानी अपने भाई मुसलमान की मुलाक़ात के लिये जाना तो ऐसा कर (यानी अपने भाई मुसलमान से मुलाक़ात कर) (बैहक़ी, मिश्कात)

मुसलमान दूसरे मुसलमान का आईना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मोमिन अपने भाई का आईना है। जब कोई उसमें ऐब देखता है तो उसकी इस्लाह[2] की तरफ़ मुतवज्जह[3] कर देता है। (बुख़ारी, अलअदबुल्-मुफ़रद)

1-द्वेष, 2-सुधार, 3-ध्यान देने वाला।

सवाल की मज़म्मत[1] (याचना की निन्दा)

हदीस शरीफ़ में है कि सद्का लेना मुहम्मद व आले मुहम्मद[2] (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये हलाल नहीं। (अल्-ख़तीब)

जो आदमी बग़ैर ज़रूरत सवाल करता (मांगता) है, वह गोया आग की चिंगारियों में हाथ डालता है। (बैहक़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "क़सम है उस परवरदिगार की! जिसके क़ब्ज़-ए-क़ुद्रत में मेरी जान है कि-अगर तुममें से कोई आदमी रस्सी लेकर जंगल को चला जाये और लकड़ियों का गट्ठा बाँध लाये, तो यह इससे बेहतर है कि वह किसी के पास जाकर सवाल करे और वह दे या न दे। (मालिक)

हदीस शरीफ़ में है- "लोगों से कोई चीज़ मत मांगो और अगर तुम्हारा कोड़ा गिर पड़े तो उसको भी ख़ुद घोड़े से उतर कर उठाओ।"

(मुस्नदे अहमद)

हदीस शरीफ़ में है- मुसलमानो! सवाल बिल्कुल न करो और अगर ज़रूरत मज्बूर करे तो ऐसे लोगों से सवाल करो जो नेक दिल हों।"

(मुस्नदे अहमद)

मुसलमान को देखकर मुसकराना सद्क़ा है

हदीस शरीफ़ में है कि अपने भाई को देखकर मुसकरा देना भी सदक़ा है। (तिर्मिज़ी)

उज़्र[3] क़बूल करना (विवशता स्वीकार करना)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जिसने किसी मुसलमान भाई से अपनी ग़लती पर उज़्र किया और उसने उसको माज़ूर न

1-तिरस्कार, 2-मुहम्मद सल्ल० की संतान, 3-विवशता।

समझा या उसके उज़्र को कबूल न किया, उस पर इतना गुनाह होगा जितना एक नाजाइज़ महसूल[1] वुसूल करने वाले पर उसके जुल्म व ज़्यादती का गुनाह होता है।

ईमान के साथ अमल

एक मर्तबा हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया– या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ईमान के साथ कोई अमल बताइये। फ़रमाया– "जो रोज़ी अल्लाह तआला ने दी है उसमें से दूसरों को दे।" अर्ज़ किया– "ऐ अल्लाह के रसूल! अगर वह ख़ुद मुफ़्लिस हो। फ़रमाया– "अपनी ज़बान से नेक काम करे।" अर्ज़ किया अगर उसकी ज़बान माज़ूर हो? फ़रमाया– मग्लूब[2] की मदद करे।" अर्ज़ किया अगर वह ज़ईफ़[3] हो, मदद की कुव्वत[4] न रखता हो, फ़रमाया– "जिसको कोई काम करना न आता हो उसका काम कर दे।" अर्ज़ किया अगर वह ख़ुद भी एसा ही नाकारा हो। फ़रमाया– अपनी ईज़ारसानी[5] से लोगों को बचाये रखे।

(मुस्तदरक हाकिम, सीरतुन्नबी सल्ल०)

एहसान का शुक्रिया

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स इन्सानों का शुक्रिया अदा नहीं करता, वह अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा नहीं करता।

(मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी, मिश्कात)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स के साथ एहसान किया जाये और वह अपने मुहसिन[6] के हक़ में ये अल्फ़ाज़ कहे जज़ाकल्लाहु ख़ैरा (अल्लाह तुमको जज़ा-ए-ख़ैर दे यानी बेहतरीन बदला दे) तो उसने अपने मुहसिन की पूरी तारीफ़ की। (मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी, मिश्कात)

1-किराया, 2-अधीन, 3-वृद्ध, 4-शक्ति, 5-दुख देना, 6-एहसान करने वाला।

सिफ़ारिश

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया कि जब कोई हाजतमन्द[1] साइल[2] सवाल करे तो उसकी सिफ़ारिश करो कि तुमको सिफ़ारिश का सवाब मिले और अल्लाह तआला अपने रसूल की ज़बान से जो हुक्म चाहता है जारी फ़रमाता है।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात, हयातुल्-मुस्लिमीन)

सर्गोशी (कानाफूसी)

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तीन आदमी हों तो तीसरे को छोड़कर दो आपस में कानाफूसी न करें। (अल्अदबुल्-मुफ़रद)

सोने-चाँदी के बर्तन का इस्तेमाल

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है, हरीर व दीबा (रेशमी कपड़ों) को न पहनो, चाँदी और सोने के बर्तन में न पियो और सोने-चाँदी की रकाबियों और प्यालों में न खाओ, इसलिए कि ये चीज़ें दुनिया में काफ़िरों के लिये हैं और तुम्हारे लिये आख़िरत में।

(बुख़ारी, व मुस्लिम, मिश्कात)

फ़ुहश-कलामी (अश्लील वाणी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का बयान है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "अल्लाह तआला की नज़र

1-ज़रूरतमन्द, 2-याचक।

में बदतरीन[1] आदमी क़ियामत के दिन वह होगा जिसकी बदज़बानी[2] और फ़ुहश-कलामी की वजह से लोग उससे मिलना छोड़ दें।"

(बुख़ारी, व मुस्लिम)

बेजा मद्ह (अनुचित प्रशंसा)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जिस वक़्त तुम तारीफ़ करने वाले को (बिजा तारीफ़ करते हुए) देखो तो उसके मुँह में मिट्टी झोंक दो।" (यानी उस पर नागवारी का इज़्हार करो।) (मिश्कात)

फ़ासिक़ की मद्ह (पापी या दुराचारी की प्रशंसा)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस वक़्त फ़ासिक़ की तारीफ़ की जाती है तो अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ुस्सा होता है और उसकी तारीफ़ की वजह से अ़र्श हिल उठता है। (मिश्कात)

सिह्हत[3] और ख़ुशबू

मुस्नदे बज़्ज़ार में आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है, आपने फ़रमाया- "अल्लाह तआ़ला तय्यिब[4] है, तय्यिब को महबूब रखता है, पाक है और पाक को पसन्द करता है, करीम[5] है करम को पसन्द फ़रमाता है, सख़ी[6] है सख़ावत[7] को पसन्द फ़रमाता है। इसलिये अपने मकान और सहन को साफ़ शफ़्फ़ाफ़[8] रखो। (ज़ादुल्-मआ़द)

सहीह रिवायत में आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से साबित है कि अल्लाह तआ़ला का हर मुसलमान पर यह हक़ है कि वह हर सात दिन में कम से कम एक बार ग़ुस्ल करे और अगर उसके पास ख़ुशबू हो तो वह भी लगाये और ख़ुशबू में यह ख़ासियत है कि मलाइका (फ़िरिश्ते) उस आदमी से जो मुअ़त्तर[9] होता है, महब्बत करते हैं और शयातीन उससे नफ़रत

1-दुष्ट, 2-बुरी बात, 3-स्वास्थ्य, शुद्धि, 4-शुद्ध, पवित्र, 5-दयालु, 6-दानी, 7-दानशीलता, 8-स्वच्छ, निर्मल, 9-सुवासित, ख़ुशबू इस्तेमाल करने वाला।

करते हैं और शयातीन के लिये सबसे ज़्यादा दिल पसन्द और मर्ग़ूब[1], मक्रूह और बदबूदार चीज़ है। चुनांचे अर्वाहे तय्यिबा[2] को राइह-ए-तय्यिबा[3] महबूब होती है और अर्वाहे ख़बीसा[4] को राइह-ए-ख़बीसा[5] पसन्द होती है यानी हर रूह अपनी पसन्द की तरफ़ माइल[6] होती है। (ज़ादुल्-मआ़द)

ज़मीन का तबादला

अगर किसी घर या ज़मीन को बेमेल होने की वजह से फ़रोख़्त करो तो मस्लहत यह है कि जल्दी से उसका दूसरा मकान या ज़मीन ख़रीद लो वर्ना रुपया रहना मुश्किल है यूँ ही उड़ जायेगा।

(ज़्यातुल्-मुस्लिमीन, इब्ने माजा)

ग़ैरत[7] व एहसान

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम दूसरों के मश्वरों के मोहताज न बनो बल्कि ख़ुद साहिबुर्राय[8] और पुख़्ता इरादा करने वाले बनो और बेबुलाए किसी के घर ख़ाना खाने न जाया करो। तुम कहते हो कि जो हमसे नेकी करेगा, हम भी उससे नेकी करेंगे और जो बुराई करेगा हम भी उससे बुराई करेंगे, लेकिन तुमको चाहिए कि तुम अपने आपको इस बात का आ़दी बना लो कि जो तुम्हारे साथ एहसान करे तुम भी उसके साथ एहसान करो और जो तुमसे बदी[9] करे तुम उससे भी बदी न करो बल्कि उस पर एहसान करो। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

ऐशो-इश्रत (भोग-विलास)

हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया- 'देखो! ज़्यादा चैन और मज़े न करना। अल्लाह के नेक बन्दे चैन नहीं किया करते।'' (मुस्नदे अहमद, बैहक़ी)

1-रुचिकर, 2-पवित्र आत्माओं, 3-सुगन्ध, 4-अपवित्र आत्माओं, 5-दुर्गन्ध, 6-आकृष्ट, 7-लज्जा, 8-जिसकी राय अच्छी और उम्दा हो, 9-बुराई।

बाहम[1] दावत करना

हज़रत हम्ज़ा बिन सुहैब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुसलमानों तुममें अच्छे वे हैं जो बाहम एक दूसरे की दावतें करते रहते हैं और मुलाक़ात के वक़्त एक दूसरे को सलाम करते हैं। (इब्ने स.अद)

आदाबे दुआ (दुआ के नियम)

दुआ के उम्दा तरीन आदाब यह हैं कि हलाल रोज़ी का होना, रास्तगोई[2] की आदत और दुआ में गिड़गिड़ाना, क़बूलियत के लिए जल्दी न करना, शुरू में अल्लाह तआला की हम्दो-सना करना, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ना, आपकी आल (औलाद) व असहाब पर सलाम भेजना वग़ैरह।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दुआ करते तो अपने दोनों हाथों को मिलाकर उनकी हथेलियों को चेहरे के मुक़ाबिल[3] करते थे और ख़त्मे दुआ के बाद हाथों को चेहरे पर मलना भी आदाबे दुआ में है, जब्कि नमाज़ की हालत के अलावा हो। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

आराम-तलबी की आदत अच्छी नहीं

हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमको ज़्यादा आराम-तलबी से मना फ़रमाते थे और हमको हुक्म देते थे कि कभी-कभी नंगे पाँव भी चला करें।

(अबू दाऊद)

हज़रत इब्ने अबी हदरद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि

1-परस्पर, 2-सत्य बोलना, 3-सामने।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया "तंगी से गुज़र[1] करो और मोटा चलन रखो और नंगे पाँव चला करो।"

(जम्उल् फ़वाइद, तबरानी कबीर व औसत)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हम लोग बद्र के दिन तीन-तीन आदमी एक-एक ऊँट पर थे और हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और हज़रत अ़ली रज़ि० रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के शरीक सवार थे। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चलने की बारी आती तो वे दोनों अ़र्ज़ करते कि हम आपकी तरफ़ से पियादा[2] चलेंगे। आप सल्ल० फ़रमाते- "तुम मुझसे ज़्यादा क़वी[3] नहीं हो और मैं तुमसे ज़्यादा सवाब से बेनियाज़ नहीं हूँ। यानी पियादा चलने में जो सवाब है उसकी मुझको भी हाजत[4] है। (शर्हुस्सुन्ना)

कस्बे हलाल (हलाल कमाई)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि फ़र्ज़ इबादात की बजाआवरी[5] के बाद हलाल तरीक़े से रिज़्क़-हासिल करना सबसे अहम फ़र्ज़ है। (मिश्कात)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "किसी शख़्स की हराम माल की कमाई में से न सदक़ा क़बूल किया जाता है, न उसके ख़र्च में बरकत दी जाती है और जो शख़्स हराम माल छोड़ कर मरता है, वह माल उसके लिये जहन्नम का ज़ादेराह[6] होता है। अल्लाह तआ़ला बुराई को भलाई के ज़रिये मिटाता है, क्योंकि ख़बीस, ख़बीस को नहीं मिटा सकता है।"

(बुख़ारी, मुस्लिम, अहमद)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से (एक लम्बी हदीस

1-निर्वाह, 2-पैदल, 3-शक्तिशाली, 4-आवश्यकता, 5-आज्ञा पालन करना, 6-रास्ते का ख़र्च।

में) रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "यह माल ख़ुशनुमा, ख़ुशमज़ा है, जो शख़्स इसको हक़ के साथ (यानी शर्अ़ के मुवाफ़िक़) हासिल करे और हक़ में (यानी जाइज़ मौक़े में) ख़र्च करे तो वह अच्छी मदद देने वाली चीज़ है।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि मैंने अ़र्ज़ किया- "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरा अ़हद यह है कि मैं हमेशा सच बोलूँगा और अपने तमाम माल को अल्लाह और रसूलुल्लाह की नज़्र[1] करके उससे दस्तबर्दार[2] हो जाऊँगा।" आप सल्ल० ने फ़रमाया कुछ माल थाम लेना चाहिए यह तुम्हारे लिये बेहतर (और मस्लहत) है।" (वह मस्लहत यही है कि गुज़र का सामान अपने पास होने से परेशानी नहीं होती।) मैंने अ़र्ज़ किया, तो मैं अपना वह हिस्सा थामे लेता हूँ जो ख़ैबर में मुझको मिला है। (तिर्मिज़ी)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन को लायक़ नहीं कि अपने नफ़्स को ज़लील करे। अ़र्ज़ किया गया- या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! इससे क्या मुराद है? फ़रमाया- नफ़्स को ज़लील करना यह है कि जिस बला[3] को सहार[4] न सके उसका सामना करे। (तिर्मिज़ी)

सादगी

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- सादा ज़िन्दगी गुज़ारना ईमान से है। (अबू दाऊद, हयातुल्-मुस्लिमीन)

1-भेंट, 2-विरक्त, 3-आपत्ति, विपत्ति 4-सहन।

बिद्अ़त[1] (धर्म में नवीनता)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की हम्द[2] के बाद मालूम होना चाहिए कि सबसे बेहतर हदीस (सुन्नत) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की राह है और बदतरीन चीज़ों में वह चीज़ है जिसको (दीन में) नया निकाला गया हो और हर बिद्अ़त गुमराही है।

बिद्अ़त की मुमानअ़त[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जिसने हमारे काम (यानी दीन) में कोई नयी बात पैदा की जो उसमें नहीं है तो वह मर्दूद[4] है।

(बुख़ारी, मुस्लिम, हयातुल्-मुस्लिमीन)

तिब्बे नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम (दुआ़ओं और दवाओं से इलाज)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जिस्मों का इलाज फ़रमाना तीन क़िस्म का था:

1- एक तबई दवाओं[5] से जिन्हें अज्ज़ा-ए-जमादाती[6] व हैवानी[7] से ताबीर किया जाता है।

2- रूहानी और इलाही दुआ़ओं से जो कुछ अदइय्या[8], अज़्कार[9] व आयाते क़ुरआनिया हैं और

1-इस्लामी क़ानून में जो बातें मना की गई हैं या जो बातें नहीं हैं उनका लाना, 2-प्रशंसा, 3-निषेध, 4-बहिष्कृत, 5-प्राकृतिक औषधियों, 6-जड़ तत्त्वों, 7-पशु, 8-दुआ़एँ, 9-जप-तप आदि।

3- तीसरा अद्‌विय्या[1] का मुरक्कब[2] है जो इन दोनों क़िस्मों से मुरक्कब है यानी दवाओं से भी और दुआओं से भी।

दुआओं से इलाज

क़ुरआन शरीफ़ से बढ़कर कोई भी (चीज़) अअ़म्म[3] व अन्फ़अ़[4] व आज़मे शिफ़ा[5] नाज़िल नहीं हुई, जैसा कि इर्शादे बारी तआला है:

﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴾ سورة بنی اسرائیل آیة: ۸۲

व नुनज़्ज़िलु मिनल् क़ुरआनि मा हुव शिफ़ाउँव् व रहमतुल् लिल् मुअ्मिनीन।

अनुवाद: और हमने क़ुरआन से वह नाज़िल फ़रमाया जो मुसलमानो के लिए शिफ़ा और रहमत है।

अब रहा अम्राज़े जिस्मानिया[6] के लिए क़ुरआने करीम का शिफ़ा होना तो यह इसी वजह से है कि इसकी तिलावत के ज़रीये बरकत व तयम्मुन[7] बहुत से अम्राज़[8] व इलल्[9] में नाफ़े[10] और उनका दाफ़े[11] है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स को शिफ़ाए क़ुरआन पढ़कर भी शिफ़ा न हो, उसे हक़ तआ़ला कभी शिफ़ा न देगा। हदीस में है कि फ़ातिहतुल्-किताब (सूरए फ़ातिहा) हर मरज़ की दवा है। ज़हरीले जानवर के काटे का अफ़्सूँ[12], मज्नून[13] व मातूह[14] का फ़ातिहतुल् किताब से इलाज हदीसों में साबित-शुदा (हुआ) व मुसल्लमा[15] है। अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना अ़ली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू की हदीस में है, जो इब्ने माजा में मर्फ़ूअ़न मर्वी है- *''ख़ैरुद्दवाइ अल्-क़ुरआन''* (बेहतरीन इलाज क़ुरआन है)।

मुअ़व्वज़तैन[16] वग़ैरा से जो कि अस्माए इलाही (अल्लाह के नाम) से

1-औषधियों, 2-मिश्रण, 3-सामान्य, 4-लाभप्रद, 5-सर्वोत्कृष्ट रोग-मुक्ति, 6-शारीरिक रोगों, 7-सौभाग्य, कल्याण, 8-रोगों, 9-बीमारियों, 10-लाभदायक, 11-निवारक, 12-जादू, मंत्र, 13-पागल, 14-पागल, दीवाना, 15-प्रमाणित, 16-सूरः फ़लक़ और सूरः नास (पारः30)

हैं, इनसे तलबे शिफ़ा भी अज़-क़िस्म तिब्बे रूहानी[1] है अगर वह नेकों, मुत्तक़ियों और परहेज़गारों की ज़बान पर पूरी हिम्मत व तवज्जोह के साथ जारी हों लेकिन चूँकि इस क़िस्म का वुजूद शाज़ो-नादिर[2] है, इसलिए लोग तिब्बे जिस्मानी[3] की तरफ़ दौड़ते हैं और इससे बेपर्वाह रहते हैं। मुअव्वज़ात से मुराद वह है जो हदीस शरीफ़ में आया है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमः-

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝﴾

"कुल अऊज़ु बिरब्बिल् फ़लक़ि" और

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝﴾

"कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि"

पढ़ कर अपने ऊपर दम फ़रमाया करते थे। और बाज़

﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ ۝﴾

"कुल हुवल्लाहु अहद" और

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝﴾

"कुल या अय्युहल काफ़िरून" भी मुराद लेते हैं।

उलमा-ए-किराम ने तीन शर्तों के जमा होने के वक़्त दुआ-ए-शिफ़ा के जाइज़ होने पर इज्माअ[4] किया है। पहली शर्त यह है कि वह दुआ कलामुल्लाह और उसके अस्मा[5] व सिफ़ात के साथ हो, ख़्वाह अरबी ज़बान में हो या किसी और ज़बान में, मगर यह कि उसके मअ़्ना जाने जाते हों और इस एतिक़ाद[6] के साथ हो कि मुअस्सिरे हक़ीक़ी[7] हक़ तबारक व तआला ही हैं और इस दुआ की तासीर उसकी मशिय्यत[8] और उसकी तक़्दीर पर मौक़ूफ़[9] है।

1-आध्यात्मिक उपचार, 2-कभी-कभी, 3-शारीरिक औषधि विज्ञान, 4-एकमत, 5-अल्लाह के नाम, 6-विश्वास, 7-वास्तविक प्रभाव डालने वाले, 8-अल्लाह की इच्छा व शक्ति, 9-निर्भर।

तावीज़ की सनद भी अहादीस से मिलती है। इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन बच्चों को जो अक्ल रखते उनको सिखाते और वे बच्चे जो अक्लो-समझ नहीं रखते, उन्हें काग़ज़ के टुकड़े पर लिख कर गर्दन में लटकाते। उलमा इसे जाइज़ रखते हैं। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

नज़रे बद के लिये झाड़-फूँक

सहीहैन में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मर्वी है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे हुक्म दिया या किसी को हुक्म दिया कि हम नज़र (के मरज़) में झाड़-फूँक करवा लिया करें।

(ज़ादुल्-मआद)

हज़रत अस्मा बिन्ते अमीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने एक मर्तबा अर्ज़ किया- ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! इब्ने जाफ़र को नज़र लग जाती है, क्या मैं उनके लिये झाड़-फूँक करवा लूँ? आप सल्ल० ने फ़रमाया- "हाँ, अगर कोई चीज़ क़ज़ा[1] पर सबक़त[2] कर जाती तो वह नज़र हो सकती थी। यह हदीस हसन सहीह है। (ज़ादुल्-मआद)

फ़रमाया कि अपने मरीज़ों का इलाज सदक़ा के ज़रिये से करो।

(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

और जब आइन (नज़र लगाने वाले) को अपनी नज़र लग जाने का अन्देशा हो तो उसे यह दुआ पढ़ कर उस शर[3] को दूर करना चाहिए। दुआ यह है:- اللّٰهم بارك عليه

"अल्लाहुम्म बारिक अलैहि" यानी ऐ अल्लाह! इस पर बरकत फ़रमा।

जैसे नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया--- "जब सहल बिन हनीफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें नज़र लगाई, क्या तुमने दुआए बरकत नहीं की यानी *"अल्लाहुम्म बारिक अलैह"* नहीं पढ़ा। नीज़

1-अल्लाह के फ़ैसले, 2-आगे निकल जाना, 3-बुराई।

مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

"माशा अल्लाहु ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह" से भी नज़र दूर हो जाती है। (ज़ादुलमआद)

बद नज़री का नबवी इलाज

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसका इलाज मुअव्वज़तैन (यानी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) से फ़रमाते, यानी उन आयात व कलिमात से जिनमें शुरूर[1] से इस्तिआज़ा[2] है, जैसे- मुअव्वज़तैन, सूरए फ़ातिहा, आयतल्-कुर्सी वग़ैरा। उलमा कहते हैं कि सबसे अहम व आज़म दुआए शिफ़ा, सूरए फ़ातिहा, आयतल् कुर्सी और मुअव्वज़तैन का पढ़ना है।

और नज़रे बद के दफ़इय्या[3] के लिये यह कहना चाहिए:-

مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

"माशा अल्लाहु ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह" और अगर देखने वाला इससे ख़ौफ़ज़दा है कि अपनी ही नज़र का ज़रर उसे न पहुँचे तो वह यह कहे: *"अल्लाहुम्म बारिक् अलैह"*। यह नज़रे बद को दूर कर देगा।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम अम्राज़े जिस्मानी के लिये रुक़्या[4] और दुआ करते थे। मसलन- बुख़ार, तिप व लर्ज़ा (बुख़ार जाड़ा), मिर्गी, सुदाअ[5], ख़ौफ़ व वहशत, बेख़्वाबी[6] समूम[7], हुमूम[8], अलम (रंज) मसाइब (परेशानियाँ) ग़म व अन्दोह[9], शिद्दत व सख़्ती, बदन में दर्द-तकलीफ़, फ़क्रो-फ़ाक़ा, क़र्ज़, जलना, दर्देदन्दाँ (दाँतों का दर्द) हब्से बौल[10] इख़्तिलाज[11], नक्सीर, वज़्ए-हमल[12] की तकलीफ़ वग़ैरा। इन सब की दुआएँ और तावीज़ हदीस की किताबों में मज़्कूर हैं, वहाँ तलाश करना चाहिए।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-शरारतों, बुराइयों, 2-पनाह लेना, शरणागति, 3-रोक, 4-तावीज़, 5-सर दर्द, 6-अनिद्रा, 7-लू, 8-आने वाली मुसीबत का रंज, दुख, 9-तकलीफ़, चिन्ता, 10-पेशाब रुकना (हब्स-बौल, रुकावट, बौल पेशाब), 11-दिल की धड़कन, दिल की घबराहट, 12-बच्चा जनना।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ास दुआ नज़र और तमाम बलाओं और मरज़ों और आफ़तों के लिये यह थी:-

اَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَائُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا۔ مدارج النبوة

अज़्हिबिल् बअ्स रब्बन्नासि वश्फ़ि अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ाअ इल्ला शिफ़ाउक शिफ़ाअन् ला युग़ादिरु सक़मा। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

अनुवाद: ऐ लोगों के रब! तक्लीफ़ को दूर फ़रमा और शिफ़ा दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरी शिफ़ा के सिवा कोई शिफ़ा नहीं है, ऐसी शिफ़ा दे जो ज़रा (भी) मरज़ न छोड़े।

"लाहौल वला क़ुव्वत" का अ़मल

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसे ग़म व अफ़्कार[1] घेरे लें, उसे चाहिए कि *"ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह"*

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

बकस्रत पढ़ा करे। उलमाए इज़ाम[2] फ़रमाते हैं कि इस कलिमे के अ़मल से बढ़ कर कोई चीज़ मददगार नहीं है।

आयतल्-कुर्सी

हदीस शरीफ़ में है कि जो कोई मुसीबत व सख़्ती में आयतल्-कुर्सी पढ़े और सूरए बक़रा की आख़िरी आयतें पढ़ेगा, अल्लाह तआ़ला उसकी फ़रयादरसी करेगा[3]। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-चिन्ताएँ, 2-बुज़ुर्ग, विद्वान, 3-पुकार सुनेगा

जामेअ् दुआ

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया– बिला शुब्हा और यक़ीनन् मैं उस कलिमा को जानता हूँ कि नहीं कहता इसे हर मुसीबतज़दा मगर यह कि उस कलिमा की बदौलत हक़ तआ़ला सुब्हानुहू उससे उसको नजात अ़ता फ़रमा देता है। वह कलिमा मेरे भाई यूनुस अ़लैहिस्सलाम का है कि उन्होंने तारीकियों में निदा[1] की थी:–

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝

ला इलाह इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन।

अनुवाद: (ऐ अल्लाह!) आपके सिवा कोई माबूद नहीं है आपकी ज़ात पाक है, बेशक मैं ख़ताकार हूँ। और इस हदीस को तिर्मिज़ी ने भी ज़िक्र किया है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

दुआ़-ए-फ़क्र (दरिद्रता की दुआ़)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया। उसने अ़र्ज़ किया– "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! दुनिया ने मुझसे पीठ फेर ली है और मुझको दुनिया ने छोड़ दिया है।" हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया– "तुझसे सलाते मलाइका (यानी फ़िरिश्तों की दुआ़) और वह तस्बीहे ख़लाइक़[2] जिसकी बदौलत उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है, कहाँ गई? फिर फ़रमाया– तुलू-ए-फ़ज्र[3] के वक़्त इस दुआ़ को 100 मर्तबा पढ़ो:–

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

"सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल् अ़ज़ीमि व बिहम्दिही

1-पुकारना, 2-संसार के सभी प्राणी, 3-फ़ज्र का वक़्त शुरू होते ही, सूर्योदय से पूर्व।

अस्तग़्फ़िरुल्लाह" तो दुनिया तेरे पास पस्त[1] व ज़लील[2] होकर आयेगी।" फिर वह शख़्स चला गया और अर्सा तक नहीं आया। फिर वह आया और उसने अर्ज़ किया- "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरे पास दुनिया इतनी वाफ़िर[3] आई कि मैं नहीं जानता इसे कहाँ रखूँ। यह नमाज़े फ़ज्र की सुन्नत और फ़र्ज़ के दरमियान बुज़ुर्गों ने पढ़ी है और इसके साथ एक तस्बीह:-

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

"ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अज़ीम" की भी पढ़ी, जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि तमाम गुनाहों की मग़्फ़िरत[4] का मूजिब[5] होगा और यह वुस्अते रिज़्क़[6] का सबब भी है इस लिए कि इस्तिग़्फ़ार[7] इसका बाइस है और गुनाहों की वजह ही से रिज़्क़ में तंगी और हर तरह के ग़म और परेशानी पैदा होती है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

दर्दे सर की दुआ

हुमैदी बरिवायत यूनुस बिन याकूब अब्दुल्लाह से दर्दे सर की दुआ नक़ल करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दर्दे सर में अपने इस इर्शाद से तअव्वुज़[8] फ़रमाते थे:-

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ وَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ كُلِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَّمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ

बिस्मिल्लाहिल् कबीरि व अऊज़ु बिल्लाहिल् अज़ीमि मिन् कुल्लि इर्क़िन् नअ़आरिंव व मिन् शर्रि हर्रिन्नारि।

अनुवाद: अल्लाह जल्ल शानुहू के नाम के साथ जो बड़ा है और मैं पनाह चाहता हूँ अल्लाह बुज़ुर्ग की, हर रग उछलने वाली की और आग की गरमी के नुक़सान से।

1-नीचा, छोटा, 2-अपमानित, हीन, 3-अधिक, 4-छुटकारा, मुक्ति, 5-कारण, साधन, 6-आजीविका में वृद्धि, 7-क्षमा याचना करना, 8-शरण लेना।

हर दर्द व बला[1] की दुआ

हज़रत अबान बिन उसमान अपने वालिद उसमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि जो कोई तीन मर्तबा शाम के वक़्त:-

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اِسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاۤءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ۔

"बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअ़स्मिही शैउन् फ़िल्अर्ज़ि वला फ़िस्समाइ व हुवस्समीउ़ल् अ़लीम"

पढ़े तो सुबह तक कोई नागहानी[2] बला व मुसीबत न पहुँचेगी और जो शख़्स इसे सुबह के वक़्त पढ़े तो शाम तक उसे कोई नागहानी बला व मुसीबत न पहुँचेगी। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

अनुवाद: शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम के साथ, जिसके नाम के साथ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती कोई चीज़ ज़मीन में और न आसमान में और वह सुनता और जानता है।

दुआए तआम (भोजन की दुआ)

इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैह अपनी तारीख़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि जो शख़्स खाना सामने आने के बाद पढ़े:-

بِسْمِ اللّٰهِ خَيْرِ الْاَسْمَاۤءِ فِى الْاَرْضِ وَالسَّمَاۤءِ لَا يَضُرُّ مَعَ اِسْمِهٖ دَاۤءٌ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْهِ رَحْمَةً وَّشِفَاۤءً۔

बिस्मिल्लाहि ख़ैरिल् अस्माइ फ़िल् अर्ज़ि वस्समाइ ला यज़ुर्रु मअ़ इस्मिही दाउन्। अल्लाहुम्मज्अ़ल् फ़ीही रहमतंव् व शिफ़ाअन्।

1-विपत्ति, मुसीबत, 2-आकस्मिक।

अनुवाद: शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम के साथ जो सब नामों से बेहतर है ज़मीन और आसमान में, नहीं नुक़्सान देती है उसके नाम के साथ कोई बीमारी। ऐ अल्लाह! कर दे इसमें शिफ़ा और रहमत।

उसको कोई चीज़ ज़रर[1] नहीं पहुँचायेगी। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

दाँत के दर्द की दुआ

बैहक़ी अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा से नक़्ल करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दर्दे दाँत की शिकायत की तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपना दस्ते मुबारक उनके उस रुख़्सार पर जिसमें दर्द था रखकर सात मर्तबा पढ़ा:-

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنْهُ مَا يَجِدُ وَفُحْشَهُ بِدَعْوَةِ نَبِيِّكَ الْمِسْكِيْنِ الْمُبَارَكِ عِنْدَكَ۔

अल्लाहुम्म अज़्हिब् अ़न्हु मा यजिदु व फ़ुह्शहू बि-दअ़्वति नबिय्यिकल्-मिस्कीनिल् मुबारकि इन्दक।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! जो तक्लीफ़ यह शख़्स महसूस कर रहा है इसको और इसकी सख़्ती को दूर फ़रमा दीजिए, अपने नबी मिस्कीन की दुआ़ से जो आपके नज़्दीक बाबरकत है। दस्ते मुबारक उठाने से पहले अल्लाह तआ़ला ने उनके दर्द को रफ़अ़[2] फ़रमा दिया। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

दवाओं से इलाज

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तिब्बी[3] दवाओं के ज़रिये भी अक्सर मरज़ों में इलाज करते थे। ज़ाहिर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तिब्ब वही के ज़रिये हासिल होती थी, अगर्चे बाज़ मौक़े में क़ियास[4] व इज्तिहाद[5] और तज्रिबा[6] भी होगा। यह कोई बईद (दूर) नहीं लेकिन अदविय्य-ए-रूहानिया[7] पर इन्हिसार[8] करना इस बिना पर कि वे अतम्म[9] व अ़अ़्ला[10] और अख़स्स[11] व अक्मल[12] हैं।

1-हानि, 2-दूर, 3-यानी दवाएँ, 4-अनुमान, 5-रास्ता ढूँढना, विवेक से काम लेना, 6-अनुभव, 7-आध्यात्मिक औषधियाँ, 8-निर्भर, 9-परिपूर्ण, 10-महान, 11-बहुत ही ख़ास, 12-पूर्णतम।

अमराज़ व इलाज (रोग व उपचार)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नते तय्यिबा थी कि आप अपना और अपने अहलो-इयाल और सहाबा किराम का मुआलजा[1] फ़रमाया करते थे। आप सल्ल० की ज़्यादा तर अदविय्या[2] मुफ़रदात[3] पर मुश्तमिल[4] थीं।

पेट में खाने का अन्दाज़ा

हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आदमी ने पेट से ज़्यादा बर्तन कभी पुर नहीं किया। इब्ने आदम[5] को चन्द लुक़्मे काफ़ी हैं जिनसे उसकी कमर सीधी रहे। अगर ज़रूरी (ज़्यादा) खाना हो तो फिर तिहाई हिस्सा खाना, खाना चाहिए और तिहाई हिस्सा पानी के लिये वक़्फ़ है और तीसरा हिस्सा सांस के लिये। (मुस्नद, ज़ादुल्मआद)

मरीज़ की ग़िज़ा (रोगी का आहार)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मरीज़ों को खाने-पीने पर मज्बूर न करो, क्योंकि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल[6] उन्हें खिलाता और पिलाता है। (जामे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, ज़ादुल्मआद)

नीज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मन्कूल है आपने फ़रमाया- "जिसने शराब से इलाज किया, उसे अल्लाह शिफ़ा न दे।

(ज़ादुल्-मआद)

हराम चीज़ में शिफ़ा नहीं है

और सुनन में मर्वी है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दवा में शराब डालने के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया- "यह मरज़ है, इलाज नहीं।" (यह रिवायत अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने नक़्ल की है) नीज़ नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मन्कूल है आपने फ़रमाया "जिस ने शराब से इलाज किया, उसे अल्लाह शिफ़ा न दे। (ज़ादुल्-मआद)

1-इलाज, 2-दवाएँ, 3-वे दवाएँ जो मिश्रित न हों बल्कि पृथक रूप में हों, 4-आधारित, 5-आदम की सन्तान अर्थात मनुष्य, 6-महान।

मरज़ में दूध का इस्तेमाल

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मन्कूल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दूध का सरीद (दूध में रोटी भीगी हुई या और कोई गिज़ा) मरीज़ के कल्ब[1] को कुव्वत देती हैं और ग़म दूर करती है।

जब कभी आप सल्ल० से अर्ज़ किया जाता कि फ़लाँ को दर्द है और वह खाना नहीं खाता तो आप फ़रमाते- "तल्बीना (दूध आमेज़ गिज़ा[2]) बना कर उसे पिलाना चाहिए" और फ़रमाते- "क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! यह तुम्हारे पेट को इस तरह धो देता है कि जैसे तुम अपने चेहरों को मैल से साफ़ कर दो"। (ज़ादुलमआद)

शहद की तासीर[3]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है- "जो शख़्स हर महीने में तीन दिन सुबह के वक़्त शहद चाट ले, फिर वह किसी बड़ी मुसीबत व बला में मुब्तला[4] नहीं होता"। (इब्ने माजा, बैहक़ी, मिश्कात)

क़ुरआन व शहद में शिफ़ा[5]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दो शिफ़ा देने वाली चीज़ों को अपने ऊपर लाज़िम कर लो (यानी उनका इस्तेमाल ज़रूर किया करो) एक तो शहद दूसरे क़ुरआन (यानी आयाते क़ुरआन)।

(इब्ने माजा, बैहक़ी, मिश्कात)

मरज़ लगना और फ़ालेबद[6]

हज़रत सअद बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि

1-हृदय, 2-दूध में मिला हुआ भोजन, 3-गुण, 4-ग्रस्त, 5-रोगमुक्ति, 6-अपशकुन।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- हाम्मा, बीमारी लगना और शगूने बद[1] कोई चीज़ नहीं है। (अबू दाऊद, मिश्कात)

कलौंजी की तासीर

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि कलौंजी में हर बीमारी से शिफ़ा है मगर मौत से नहीं। (बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात)

मन्त्रों का इस्तेमाल

हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तक मन्त्रों में शिर्क न हो, कोई हरज नहीं।

(मुस्लिम, मिश्कात)

रोग़ने ज़ैतून (ज़ैतून का तेल)

हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़ातुल्जंब[2] की बीमारी में रोग़ने ज़ैतून और वर्स (एक बूटी) की तारीफ़ की है। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

दवा में हराम चीज़ की मुमानअ़त[3]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि तुम दवा से बीमारी का इलाज करो, लेकिन हराम चीज़ से इलाज न करो।

(अबू दाऊद, मिश्कात)

ज़ोफ़े क़ल्ब[4] का इलाज (हृदय की दुर्बलता का उपचार)

सुनने इब्ने माजा में हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि से मर्वी है कि उन्हें हज़रत सईद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत पहुँची है, फ़रमाया

1-बदशगुन, 2-पसली का दर्द, 3-मनाही, 4-दिल की कमज़ोरी,

कि मैं बीमार हो गया था, जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरी इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाये। आपने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर रखा। मैंने उसकी ठंडक अपने दिल में महसूस की। आपने फ़रमाया- "तुझे दिल का मरज़ है, मदीना की सात अ़ज्वा खजूरें उनकी गुठलियाँ निकाल कर इस्तेमाल करो" (इस मरज़ में खजूर एक अ़जीब ख़ासियत रखती है, खुसूसन मदीना तय्यिबा की अ़ज्वा खजूर। यह वही[1] से मुतअ़ल्लिक़ है)

सहीहैन में हज़रत आ़मिर बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि उन्हें अपने वालिद से रिवायत पहुँची है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो सुबह को इनमें से सात खुजूरें खा ले, उसे उस रोज़ कोई ज़हर या जादू नुक़्सान न करेगा।

(ज़ादुल्मआ़द)

मिरगी

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अक्सर औक़ात आफ़तज़दह[2] के कान में यह आयत पढ़ा करते थे:-

﴿ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴾ سورة المؤمنون آية: ١١٥

"अफ़हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक़्नाकुम् अबसंव् व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जऊ़न"

और आयतल्-कुर्सी से भी इसका इलाज किया जाता था और आफ़त-ज़दह को भी इसका विर्द[3] रखने का हुक्म दिया करते थे और मुअ़व्वज़तैन (सूरए फ़लक़ व सूरए नास) पढ़ने को भी फ़रमाया करते थे। (ज़ादुल्-मआ़द)

मक्खी

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम में से किसी के बर्तन में मक्खी गिर जाये तो उसे ग़ोते[4] देकर निकाल दो, क्यों कि उसके एक पर में बीमारी है और दूसरे में शिफ़ा। (सहीहैन, ज़ादुल्-मआ़द)

1-जिब्रील अ़लैहिस्सलाम के द्वारा अल्लाह की ओर से पैग़म्बर के पास आये हुए अहकाम, आदेश आदि, 2-विपद्ग्रस्त, 3-किसी बात को बार-बार कहना या करना, 4-डुबाना।

बाब-5 (पांचवां परिच्छेद) अख़्लाक़ियात (शिष्टाचार)

अख़्लाक़े हमीदा (उत्कृष्ट शिष्टाचार)

हुस्ने अख़्लाक़ (सुशीलता)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि साहिबे ईमान बन्दा अपने अच्छे अख़्लाक़ से उन लोगों का दर्जा इख़्तियार कर लेता है जो रात भर नफ़्ल नमाज़ पढ़ते हों और दिन को हमेशा रोज़ा रखते हों। (अबू दाऊद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम सबमें मुझको ज़्यादा महबूब और आख़िरत में सबसे ज़्यादा मुझसे क़रीब वह शख़्स है, जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों और तुम सबमें मुझको ज़्यादा बुरा लगने वाला और आख़िरत में मुझसे सबसे ज़्यादा दूर रहने वाला वह शख़्स है जिसके अख़्लाक़ बुरे हों। (बिहिश्ती ज़ेवर)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "ईमान वालों में ज़्यादा कामिल ईमान वाले वे लोग हैं जो अख़्लाक़ में ज़्यादा अच्छे हैं।

(अबू दाऊद, दारमी, मआरिफुल हदीस)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी दुआ में अल्लाह तआला से अर्ज़ किया करते थे- " ऐ मेरे अल्लाह! तूने अपने करम से मेरे जिस्म की ज़ाहिरी बनावट अच्छी बनाई है, इसी तरह मेरे अख़्लाक़ भी अच्छे कर दे।

(रवाहु अहमद, मआरिफुल हदीस)

रिवायत है कि बाज़ सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! इन्सान को जो कुछ अता[1] हुआ

1-प्राप्त।

है, उसमें सबसे बेहतर क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अच्छे अख़्लाक़। (बैहक़ी, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो आख़िरी वसिय्यत मुझे की थी जब्कि मैं ने अपना पाँव अपनी सवारी की रिकाब[1] में रख लिया था। वह यह थी कि आप सल्ल० ने फ़रमाया- "लोगों के लिए अपने अख़्लाक़ को बेहतर बनाओ यानी बन्दगाने ख़ुदा के साथ अच्छे अख़्लाक़ से पेश आओ।

(मुअत्ता इमाम मालिक, मआरिफुल् हदीस)

साय-ए-इलाही के मुस्तहिक़

(अल्लाह की शरण के अधिकारी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जिस रोज़ कि साय-ए-इलाही के सिवा और कोई साया न होगा, सात शख़्स होंगे जिनको अल्लाह तआला अपने साय में रखेगा"।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "सात क़िस्म के आदमी हैं, जिन्हें अल्लाह तआला अपनी रहमत के साय में जगह देगा क़ियामत के उस दिन में जिस दिन कि उसके साय-ए-रहमत के सिवा कोई दूसरा साया न होगा:-

1- अदल व इन्साफ़ से हुक्मरानी[2] करने वाला फ़रमांरवा[3]

2- वह जवान जिसकी नशो-नुमा[4] अल्लाह तआला की इबादत में हुई यानी जो बचपन से इबादत गुज़ार था और जवानी में भी इबादत गुज़ार रहा और जवानी की मस्तियों ने उसे ग़ाफ़िल नहीं किया।

1-घोड़े की काठी का पायदान जिसमें पाँव रखकर चढ़ते हैं, 2-शासन चलाना, 3-शासक, 4-बढ़ना।

3- वह मर्दे मोमिन जिसका हाल यह है कि मस्जिद से बाहर जाने के बाद भी उसका दिल मस्जिद ही से अटका रहता है कि जब तक फिर मस्जिद में न आ जाय।

4- वे दो आदमी जिन्होंने अल्लाह तआला के लिए बाहम महब्बत की, उसी पर जुड़े रहे और उसी पर अलग हुए, (यानी उनकी महब्बत सिर्फ़ मुँह देखे की महब्बत नहीं, जैसे कि अह्ले दुनिया की महब्बतें होती हैं बल्कि उनका हाल यह है कि जब यकजा[1] और साथ हैं, जब भी महब्बत है और जब एक दूसरे से अलग और ग़ाइब होते हैं जब भी उनके दिल लिल्लाही महब्बत से लबरेज़[2] होते हैं।)

5- अल्लाह तआला का वह बन्दा जिसने अल्लाह तआला को याद किया तन्हाई में तो उसके आँसू बह पड़े।

6- वह मर्दे ख़ुदा जिसे हराम की दावत दी किसी ऐसी औरत ने जो ख़ूबसूरत भी है और साहिबे वजाहत[3] व इज़्ज़त भी, तो उस बन्दे ने कहा कि मैं अल्लाह तआला शानुहू से डरता हूँ। (इसलिए हराम की तरफ़ क़दम नहीं उठा सकता।)

7- और वह शख़्स जिसने अल्लाह तआला की राह में सद्क़ा किया और इस तरह छिपाकर किया कि गोया उसके बायें हाथ को भी ख़बर नहीं कि उसका दाहिना हाथ अल्लाह तआला की राह में क्या ख़र्च कर रहा है और किसको दे रहा है।" (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

नेक काम का इज्रा[4] (पुण्य कार्य का प्रारम्भ)

हज़रत अबी जुहैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है- "जो शख़्स इस्लाम में अच्छा तरीक़ा निकालता है उसको उसका सवाब और उसके बाद जो उस तरीक़े पर अमल करेंगे उन सबका सवाब मिलेगा और अमल करने वालों का सवाब भी

1-एकत्र, 2-परिपूर्ण, 3-सुन्दर मुख वाली, 4-शुरुआत करना, जारी करना।

कम नहीं किया जाता और जो शख़्स इस्लाम में किसी बुरे तरीक़े की बुन्याद डालता है उसकी गर्दन पर उसका गुनाह और उन तमाम लोगों का गुनाह होता है जो उसके बाद उस तरीक़े पर अ़मल करेंगे और अ़मल करने वालों के ज़िम्मे जो गुनाह हैं उनमें भी कुछ कमी नहीं आती।" (इब्ने माजा)

एहसान

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "तुम दूसरों की देखा-देखी काम करने वाले मत बनो और न यह कहने वाले बनो कि अगर और लोग एहसान करेंगे तो हम भी एहसान करेंगे और अगर दूसरे लोग ज़ुल्म का रवय्या[1] इख़्तियार करेंगे तो हम भी वैसा ही करेंगे। बल्कि अपने दिलों को इस पर पक्का कर लो कि अगर और लोग एहसान करें तब भी तुम एहसान करोगे और अगर और लोग बुरा सुलूक करें तब भी तुम ज़ुल्म व बुराई का रवय्या इख़्तियार न करोगे। (बल्कि एहसान ही करोगे।) (रवाहु तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह का जो बन्दा बे-शौहर वाली और बे-सहारा किसी औ़रत और किसी मिस्कीन[2] और हाजतमन्द आदमी के कामों में दौड़-धूप करता हो, वह अज्रो-सवाब में उस मुजाहिद[3] बन्दे की तरह है जो अल्लाह की राह में दौड़-धूप करता हो। रावी कहते हैं- और मेरा ख़्याल है कि आप सल्ल० ने यह भी फ़रमाया था कि और उस शब्बेदार[4] की तरह है जो रात भर नमाज़ पढ़ता हो और थकता न हो और उस दाइमी[5] रोज़ेदार की तरह है जो हमेशा रोज़ा रखता हो, कभी बग़ैर रोज़े के रहता ही न हो। (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम,मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-व्यवहार, 2-दरिद्र, 3-विधर्मियों व बद्दीनों से युद्ध करने वाला, 4-रात को जागने वाला, 5-हमेशा के।

तवक्कुल[1] और रिज़ा बिल्-क़ज़ा[2]

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में से 70 हज़ार बग़ैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे। ये वे बन्दगाने ख़ुदा होंगे जो मन्त्र नहीं कराते और शगूनेबद नहीं लेते और न फ़ाले बद के क़ाइल[3] हैं और अपने परवरदिगार पर तवक्कुल करते हैं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी की नेकबख़्ती और ख़ुशनसीबी में से यह भी है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके लिए जो फ़ैसला हो वह उस पर राज़ी रहे और आदमी की बदबख़्ती[4] और बदनसीबी में से यह है कि वह अल्लाह तआला से अपने लिये ख़ैर और भलाई का तालिब[5] न हो और उसकी बदनसीबी और बदबख़्ती यह भी है कि वह अपने बारे में अल्लाह तआला शानुहू के फ़ैसले से नाख़ुश हो।

(मुस्नदे अहमद, जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

काम में मतानत[6] व वक़ार[7]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सर्जस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- अच्छी सीरत[8] और इत्मीनान व वक़ार से अपने काम अन्जाम देने की आदत और मियाना-रवी[9] एक हिस्सा है नुबुव्वत के 24 हिस्सों में से। (तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुलहदीस)

सिद्क़े मक़ाली[10] और इन्साफ़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत

1-सांसारिक साधनों का भरोसा हटाकर सारे काम अल्लाह की मर्ज़ी पर छोड़ना, 2-अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी होना, 3-कहने वाले, 4-दुर्भाग्य, 5-चाहने वाला, 6-गंभीरता, 7-मान-मर्यादा, गंभीरता, 8-जीवन चरित्र, 9-बीच की चाल, 10-वचन की दृढ़ता।

उसी वक़्त तक सरसब्ज़ रहेगी जब तक ये तीन ख़स्लतें[1] बाक़ी रहेंगी:-

1- एक तो यह कि जब वे बात करें, तो सच बोलें,

2- दूसरे यह कि जब वे लोग मुआमलात का फ़ैसला करें तो इन्साफ़ को हाथ से न जाने दें,

3- तीसरे यह कि जब उनसे रहम की दरख़्वास्त की जाये तो वे कमज़ोरों पर रहम करें। (मुत्तफ़क़ अ़लैह, अबू यअ़ला)

जज़्बात पर क़ाबू

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शादे गरामी है कि जिस आदमी में ये तीन बातें न हों, उसका कोई अ़मल काम न आएगा- एक तो यह कि वह अपने जज़्बाते नफ़्सानी[2] की बाग[3] ढीली न होने दे, दूसरे यह कि अगर कोई नादान आदमी उस पर हमला करे तो वह तहम्मुल[4] से ख़ामोश हो जाये, तीसरे यह कि लोगों के दरमियान हुस्ने अख़्लाक़[5] के साथ ज़िन्दगी बसर करे। (तबरानी)

जन्नत की ज़िम्मेदारी

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुसलमानो! अगर तुम छह बातों का ज़िम्मा कर लो तो मैं तुम्हारे लिये जन्नत का ज़िम्मा लेता हूँ- एक तो यह कि जब तुम बोलो तो सच बोलो, दूसरे यह कि जब तुम वादा करो तो उसको पूरा करो, तीसरे यह कि जब तुम्हारे पास अमानत रखवाई जाए तो उसमें ख़्यानत न करो, चौथे यह कि तुम अपनी नज़रें नीची रखा करो, पाँचवें यह कि ज़ुल्म करने से अपना हाथ रोके रखो, छठे यह कि अपने जज़्बाते नफ़्सानी की बाग ढीली न होने दो।

(मुस्नदे अहमद, हाकिम)

1-आ़दतें, 2-काम-भावनाओं, 3-लगाम, 4-धैर्य, 5-सदाचरण।

जन्नत की बशारत[1]

एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जन्नत का ज़िक्र फ़रमाया और उसकी ख़ूबी और वुस्अ़त[2] बयान की। एक सहाबी जो मज्लिस में हाज़िर थे, बेताबाना बोले कि या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! यह जन्नत किसको मिलेगी? फ़रमाया- जिसने ख़ुशकलामी[3] की, भूखों को खाना खिलाया, अक्सर रोज़े रखे और उस वक़्त नमाज़ पढ़ी जब दुनिया सोती हो। (तिर्मिज़ी, सीरतुन्नबी सल्ल०)

सिद्क़[4] व अमानत और किज़्ब[5] व ख़यानत

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तुम सच्चाई को लाज़िम पकड़ो और हमेशा सच बोलो, क्योंकि सच बोलना नेकी के रास्ते पर डाल देता है और नेकी जन्नत तक पहुँचा देती है और जब आदमी हमेशा सच बोलता है और सच्चाई ही को इख़्तियार कर लेता है तो वह मक़ामे सिद्दीक़ियत[6] तक पहुँच जाता है और अल्लाह के यहाँ सिद्दीक़ीन[7] में लिख लिया जाता है और झूठ से बचते रहो, क्योंकि झूठ बोलने की आ़दत आदमी को बदकारी[8] के रास्ते पर डाल देती है और बदकारी उसको दोज़ख़ तक पहुँचा देती है और आदमी झूठ बोलने का आ़दी हो जाता है और झूठ को इख़्तियार कर लेता है, तो अन्जाम यह होता है कि वह अल्लाह के यहाँ कज़्ज़ाबीन[9] में लिख लिया जाता है।

(सहीह़ बुख़ारी, सहीह़ मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-ख़ुशख़बरी, 2-विस्तार, 3-मधुर बोलना, 4-सत्य, 5-मिथ्या, 6-सच्चाई के साथ, 7-सत्यवादियों, 8-दुराचार, 9-मिथ्यावादियों,

अल्लाह, रसूल की हक़ीक़ी[1] महब्बत

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी क़राद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन वुज़ू किया, तो आप सल्ल० के सहाबा किराम रज़ि० वुज़ू का पानी ले लेकर (अपने चेहरों और जिस्मों पर) मलने लगे। आप सल्ल० ने फ़रमाया- "तुम को क्या चीज़ इस फ़े'ल[2] पर आमादा करती है और कौन-सा जज़्बा तुम से यह काम कराता है? उन्होंने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल की महब्बत! उनका यह जवाब सुनकर आपने फ़रमाया- जिस शख़्स की यह ख़ुशी हो और वह यह चाहे कि उसको अल्लाह और रसूल से हक़ीक़ी महब्बत हो या यह कि अल्लाह और रसूल उससे महब्बत करें तो उसे चाहिए कि जब वह बात करे तो सच बोले और जब कोई अमानत उसके सुपुर्द की जाये तो अदना ख़यानत के बग़ैर उसको अदा करे और जिसके पड़ोस में उसका रहना हो उसके साथ बेहतर सुलूक करे।"

(शोबुल्-ईमान लिल् बैहक़ी, मआरिफ़ुल्हदीस)

अमानत

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जब कोई शख़्स किसी से बात कहे (यानी ऐसी बात जिसका इख़्फ़ा[3] वह पसन्द करता है) और फिर वह चला जाये तो वह अमानत है (यानी सुनने वाले के लिये अमानत के मानिन्द है और उस बात की हिफ़ाज़त अमानत की तरह करनी चाहिए।)

(तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, मिश्कात)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई ख़ुत्बा शायद ही ऐसा हो जिसमें आपने यह न फ़रमाया हो कि जिसमें अमानत नहीं उसका ईमान नहीं और जिसका अहद[4] मज़्बूत नहीं उसका दीन नहीं। (मिश्कात)

1-वास्तविक, 2-कार्य, व्यवहार, 3-छिपाना, 4-वादा

उम्र का लिहाज़

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो अपने छोटों पर रहम न खाये, बड़ों की ताज़ीम न करे और अम्र बिल् मारूफ़ और नही अनिल् मुन्कर[1] न करे, वह हमारे मशरब[2] का इन्सान नहीं। (तिर्मिज़ी, तर्जुमानुस्सुन्ना)

शर्म व हया

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शादे गिरामी है, "हर दीन का एक अख़्लाक़ मुम्ताज़[3] होता है, हमारे दीन का मुम्ताज़ अख़्लाक़ शर्म करना है।" (मालिक, मआरिफ़ुल् हदीस)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "जब अल्लाह किसी बन्दे को हलाक करना चाहता है तो उससे हया छीन लेता है। जब उसमें शर्म नहीं रहती तो वह लोगों की नज़रों में हक़ीर[4] व मब्ग़ूज़[5] बन जाता है। जब उसकी हालत इस नौबत को पहुँच जाती है तो फिर उससे अमानत की सिफ़त भी छीन ली जाती है। जब उसमें अमानतदारी नहीं रहती तो वह ख़यानत दर ख़यानत में मुब्तला होने लगता है, इसके बाद उससे सिफ़ते रहमत उठा ली जाती है, फिर तो वह फ़टकारा मारा-मारा फिरने लगता है। जब तुम उसको इस तरह मारा-मारा फिरता देखो तो वह वक़्त क़रीब आ जाता है कि जब उससे रिश्त-ए-इस्लाम ही छीन लिया जाता है।"

(इब्ने माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "अल्लाह तआला से ऐसी हया करो जैसी उससे हया करनी चाहिए।" मुख़ातबीन ने अर्ज़ किया अलहम्दुलिल्लाह! हम अल्लाह से हया करते हैं। आपने फ़रमाया- यह नहीं,

---

1-अच्छी बातों का हुक्म करे और बुरी बातों से रोके, 2-मत, अक़ीदा, 3-उत्कृष्ट शिष्टाचार, 4-तुच्छ, 5-शत्रु।

(यानी हया का मफ़्हूम इतना महदूद नहीं है जितना कि तुम समझ रहे हो) बल्कि अल्लाह तआला से हया करने का हक़ यह है कि सर और सर में जो अफ़्कार[1] व ख़यालात हैं, उन सबकी निगहदाश्त[2] करो, और पेट की और जो कुछ उसमें भरा है, उन सबकी निगरानी करो (यानी बुरे ख़यालात से दिमाग़ की और हराम और नाजाइज़ ग़िज़ा[3] से पेट की हिफ़ाज़त करो) और मौत और मौत के बाद में जो हालत होनी है, उसको याद करो, और जो शख़्स आख़िरत को अपना मक़्सूद[4] बनायेगा वह दुनिया की आराइश[5] व इश्रत[6] से दस्तबर्दार[7] हो जायेगा और इस चन्द-रोज़ा ज़िन्दगी के ऐश के मुक़ाबले में आगे आनेवाली ज़िन्दगी की कामयाबी को अपने लिये पसन्द और इख़्तियार करेगा। पस जिसने यह किया, समझो कि उसने अल्लाह से हया करने का हक़ अदा किया। (जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

नर्म मिज़ाजी (नम्र स्वभाव)

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया- जो आदमी नर्मी की सिफ़त से महरूम किया गया, वह सारे ख़ैर से महरूम किया गया। (मआरिफ़ुल् हदीस, सहीह् मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "क्या मैं तुमको ऐसे शख़्स की ख़बर न दूँ जो दोज़ख़ के लिये हराम है और दोज़ख़ की आग उसपर हराम है, सुनो, सुनो ! मैं बताता हूँ कि दोज़ख़ की आग हराम है हर ऐसे शख़्स पर जो मिज़ाज का तेज़ न हो, नर्म हो, लोगों से क़रीब होने वाला हो, नर्म ख़ू[8] हो।

1-चिन्ताएँ, 2-निगरानी, 3-भोजन, 4-उद्देश्य, 5-सजावट, 6-भोग-विलास, 7-विरक्त, 8-नर्म स्वभाव।

ईफ़ाए वादा और वादा ख़िलाफ़ी

(प्रतिज्ञा पालन तथा प्रतिज्ञा भंग)

हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि आपने फ़रमाया- "जब किसी आदमी ने अपने किसी भाई से आने का वादा किया और उसकी निय्यत भी थी कि वह वादा पूरा करेगा, लेकिन (किसी वजह से) वह मुक़र्ररा वक़्त पर नहीं आया, तो उसपर कोई गुनाह नहीं।"

(सुनने अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

तवाज़ो (नम्रता)

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझको वह़ी भेजी है कि तुम तवाज़ो यानी फ़रोतनी[1] इख़्तियार करो कि कोई एक दूसरे पर फ़ख़्र न करे और कोई किसी पर ज़्यादती न करे। (मिश्कात)

हज़रत उ़म्र फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने एक दिन बरसरे मिम्बर[2] इर्शाद फ़रमाया- लोगो! फ़िरोतनी और ख़ाकसारी इख़्तियार करो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, आप फ़रमाते थे, जिसने अल्लाह के लिये (यानी अल्लाह का हुक्म समझ कर और उसकी रिज़ा हासिल करने के लिये) ख़ाकसारी का रवैया इख़्तियार किया (और बन्दगाने ख़ुदा के मुक़ाबले में अपने आप को ऊँचा करने के बजाये नीचा रखने की कोशिश की।) तो अल्लाह तआ़ला उसको बुलन्द करेगा, जिसका नतीजा यह होगा कि वह अपने ख़्याल और अपनी निगाह में तो छोटा होगा लेकिन आ़म बन्दगाने ख़ुदा की निगाहों में ऊँचा होगा और जो कोई तकब्बुर[3] और बड़ाई का रवैया इख़्तियार करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसको नीचे गिरा

1-विनम्रता प्रकट करना, 2-मिम्बर पर, 3-अभिमान, घमंड।

देगा जिसका नतीजा यह होगा कि वह ख़ुद आम लोगों की निगाहों में ज़लील व हक़ीर[1] हो जायेगा, अगर्चे ख़ुद अपने ख़्याल में बड़ा होगा। लेकिन दूसरों की नज़र में वह कुत्तों और ख़िनज़ीरों[2] से भी ज़्यादा ज़लील और बेवक़अ़त[3] हो जायेगा। (शोबुलईमान लिल् बैहक़ी)

अफ़्वे इलाही से महरूमी
(अल्लाह की क्षमा से वन्चित)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तीन आदमी हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला क़ियामत में कोई कलाम[4] नहीं करेगा और उनका तज़्किया[5] नहीं करेगा, और एक रिवायत में यह भी है कि उनकी तरफ़ निगाह भी नहीं करेगा, और उनके लिये आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब है- एक बूढ़ा ज़ानी[6], दूसरा झूठा फ़रमांरवा[7] और तीसरा नादार[8] और ग़रीब मुतकब्बिर[9]।

(सहीह मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

अदाए शुक्र (आभार व्यक्त करना)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जिस नेअ़्मत के अव्वल में बिस्मिल्लाह (और आख़िर में अल्हम्दुलिल्लाह) हो उस नेअ़्मत से क़ियामत में सवाल नहीं होगा। (इब्ने हिब्बान)

सब्र

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "क्या मैं तुमको ऐसी चीज़ न बतलाऊँ जिनसे अल्लाह तआ़ला गुनाहों को मिटाता है और दरजों

1-तिरस्कृत व तुच्छ, 2-सुअर, 3-अमान्य, तिरस्कृत, 4-बात, 5-पवित्र करना, 6-व्यभिचारी, परस्त्रीगामी, 7-शासक, 8-दरिद्र, 9-अहंकारी।

को बढ़ाता है।" लोगों ने अ़र्ज़ किया ज़रूर बतलाइए या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! आपने फ़रमाया–"वुज़ू का कामिल करना, नागवारी की हालत में (कि किसी वजह से वुज़ू करना मुश्किल मालूम होता है मगर फिर हिम्मत करता है) और बहुत से क़दम डालना मस्जिदों की तरफ़ (यानी दूर से आना या बार-बार आना) और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना, इलाआख़िर (यानी आगे हदीस और भी है।)"

(मुस्लिम व तिर्मिज़ी)

फ़:- ऐसे वक़्त वुज़ू करना सब्र की एक मिसाल है।

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जब किसी बन्दे का बच्चा मर जाता है, तो अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाता है- तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की जान ले ली। वे कहते हैं- हाँ! फिर फ़रमाता है- मेरे बन्दे ने क्या कहा? वे कहते हैं- आपकी हम्द (व सना) की और इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न कहा! إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मेरे बन्दे के लिये जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम बैतुल्हम्द रखो। (अहमद व तिर्मिज़ी, हयातुल् मुस्लिमीन)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि इर्शाद फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने, चार चीज़ें ऐसी हैं कि वे जिस शख़्स को मिल गयीं, उसको दुनिया व आख़िरत की भलाइयाँ मिल गयीं- शुक्र करने वाला दिल और ज़िक्र करने वाली ज़बान और बदन जो बला पर साबिर हो और बीवी जो अपनी जान और शौहर के माल में उससे ख़यानत नहीं करना चाहती। (बैहक़ी, हयातुल्-मुस्लिमीन)

ख़ुलासा (सारांश)

कोई वक़्त ख़ाली नहीं कि इन्सान पर कोई न कोई हालत न होती हो, ख़्वाह (चाहे) तबीअ़त के मुवाफ़िक़[1], ख़्वाह तबीअ़त के मुख़ालिफ़[2]। अव्वल

1-इच्छानुकूल, 2-प्रतिकूल।

हालत पर शुक्र का हुक्म है और दूसरी हालत में सब्र का हुक्म है, तो सब्र व शुक्र हर वक़्त करने के काम हुए। मुसलमानो! इसको न भूलना, फिर देखना, हर वक़्त कैसी लज़्ज़त और राहत में रहोगे! ये सब हदीसें मिश्कात से ली गई हैं। (हयातुल्-मुस्लिमीन)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "जो शख़्स सब्र करने की कोशिश करेगा, अल्लाह तआ़ला उसको सब्र बख़्शेगा और सब्र से ज़्यादा बेहतर और बहुत सी भलाइयों को समेटनेवाली बख़्शिश[1] और कोई नहीं है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सब्रो-शुक्र

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जब तुममें से कोई ऐसे शख़्स को देखे जो माल व दौलत और जिस्मानी बनावट यानी शक्लो-सूरत में उससे बढ़ा हुआ है (और उसकी वजह से उसके दिल में हिर्स व तमअ़[2] और शिकायत पैदा हो तो उसको चाहिये कि किसी ऐसे बन्दे को देखे जो उन चीज़ों में उससे भी कमतर हो" (ताकि बजाये हिर्स व तमअ़ और शिकायत के सब्रो-शुक्र पैदा हो। (बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- बन्दए मोमिन का मुआ़मला भी अ़जीब है। उसके हर मुआ़मले और हर हाल में उसके लिये ख़ैर ही ख़ैर है। अगर उसको ख़ुशी, राहत और आराम पहुँचे तो वह अपने रब का शुक्र अदा करता है और यह उसके लिये ख़ैर ही ख़ैर है, और अगर इसे कोई दुख और रंज पहुँचता है तो वह (उसको भी अपने हकीम व करीम रब का फ़ैसला समझते और उसकी मशिय्यत[3] पर यक़ीन करते हुए) उसपर सब्र करता है और यह सब्र भी उसके लिये सरासर ख़ैर और मूजिबे[4] बरकत होता है।

(माआ़रिफ़ुल् हदीस, मुस्लिम)

1-पुरस्कार, दान, 2-लोभ, 3-अल्लाह की मर्ज़ी, 4-कारण।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आपने इर्शाद फ़रमाया कि जो बन्दा किसी जानी या माली मुसीबत में मुब्तला हो और वह किसी से इसका इज़्हार न करे और न लोगों से शिक्वा-शिकायत करे, तो अल्लाह तआला का ज़िम्मा है कि वह उसको बख़्श दे।

(मोजमे औसत, तबरानी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहिबज़ादी (हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कहला भेजा कि मेरे बच्चे का आख़िरी दम है और चल-चलाव का वक़्त है, लिहाज़ा आप इस वक़्त तशरीफ़ ले आयें, आपने इसके जवाब में कहला भेजा और प्याम[1] दिया कि बेटी! अल्लाह तआला किसी से जो कुछ ले वह भी उसी का है और किसी को जो कुछ दे वह भी उसी का है, अलग़र्ज़ हर चीज़ हर हाल में उसी की है, (अगर किसी को देता है तो अपनी चीज़ देता है और अगर किसी से लेता है तो अपनी चीज़ लेता है) और हर चीज़ के लिये उसकी तरफ़ से एक मुद्दत और वक़्त मुक़र्रर है (और उस वक़्त के आ जाने पर वह इस दुनिया से उठा ली जाती है) पस चाहिए कि तुम सब्र करो और अल्लाह तआला शानुहू से इस सद्मा के अज्रो-सवाब की तालिब[2] बनो। साहिबज़ादी साहिबा ने फिर आपके पास प्याम भेजा और क़सम दी कि इस वक़्त हुज़ूर ज़रूर तशरीफ़ ले आवें, पस आप उठ कर चल दिये और आप सल्ल० के अस्हाब रज़ि० में से सअद बिन उबादा, मआज़ बिन जबल, उबई बिन कअब और ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और बाज़ और लोग भी आपके साथ हुए। पस वह बच्चा उठाकर आप सल्ल० की गोद में दिया गया और उसका सांस उखड़ रहा था। उसके उस हाल को देख कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखों से आँसू बहने लगे। इसपर सअद बिन उबादा रज़ि० ने अर्ज़ किया- हज़रत सल्ल० यह क्या है? आप

1-संदेश, 2-इच्छुक।

सल्ल० ने फ़रमाया कि यह रहमत के उस जज़्बे का असर है जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के दिलों में रख दिया है और अल्लाह की रहमत उन्हीं बन्दों पर होगी जिनके दिलों में रहमत का यह जज़्बा हो (और जिनके दिल सख़्त और रहमत के जज़्बे से ख़ाली होंगे वे अल्लाह तआ़ला की रहमत के मुस्तहिक़[1] न होंगे। (बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

सख़ावत व बुख़्ल (दानशीलता व कृपणता)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ल अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दों को इर्शाद है कि तुम दूसरों पर ख़र्च करते रहो, मैं तुम पर ख़र्च करता रहूँगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

क़नाअ़त और इस्तिग़ना (संतोष और निस्पृहता)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि अन्सार में से कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कुछ तलब किया। आप सल्ल० ने उनको अ़ता फ़रमाया (लेकिन उनकी मांग ख़त्म नहीं हुई) और उन्होंने फिर तलब किया, आपने फिर उनको अ़ता फ़रमा दिया, यहाँ तक कि जो कुछ आपके पास था वह सब ख़त्म हो गया और कुछ न रहा, तो आप सल्ल० ने उन अन्सारियों से फ़रमाया- सुनो! जो मालो-दौलत भी मेरे पास होगा और कहीं से आयेगा, मैं उसको तुमसे बचाकर नहीं रखूँगा और अपने पास ज़ख़ीरा जमा नहीं करूँगा, बल्कि तुमको देता रहूँगा। लेकिन यह बात समझ लो कि इस तरह माँग-माँग कर हासिल करने से आसूदगी[2] और ख़ुद-ऐशी हासिल नहीं होगी, बल्कि अल्लाह तआ़ला का क़ानून यह है कि जो कोई ख़ुद अफ़ीफ़[3] बनना चाहता है यानी दूसरों के सामने हाथ फैलाने से अपने को बचाना चाहता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी

1-योग्य, 2-तृप्ति, 3-सच्चरित्र।

मदद फ़रमाता है और सवाल की ज़िल्लत से उसको बचाता है और जो कोई बन्दों के सामने अपनी मोहताजी ज़ाहिर करने से बचना चाहता है (यानी अपने को बन्दों का मोहताज और नियाज़मन्द[1] नहीं बनाना चाहता) तो अल्लाह तआ़ला उसको बन्दों से बेनियाज़ कर देता है और जो कोई किसी कठिन मौक़े पर अपनी तबीअ़त को मज़्बूत करके सब्र करना चाहता है तो अल्लाह तआ़ला उसको सब्र की तौफ़ीक़ दे देता है (और सब्र की हक़ीक़त उसको नसीब हो जाती है) और किसी बन्दे को भी सब्र से ज़्यादा वसीअ़[2] कोई नेअ़मत अ़ता नहीं हुई। (सुनने अबी दाऊद, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

किफ़ायत शिआ़री (अल्प व्यय)

हज़रत अनस व अबू उमामा व इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन से (मज्मूअ़न् व मर्फ़ूअ़न्) रिवायत है कि मियाना-रवी[3] की चाल चलना (यानी न कंजूसी करे और न फ़ुज़ूल उड़ावे बल्कि सोच-समझ कर और संभालकर, हाथ रोककर किफ़ायत शिआ़री व इंतिज़ाम व एतिदाल[4] के साथ ज़रूरत के मौक़ों पर माल सर्फ़[5]) करे तो इस तरह ख़र्च करना भी आधी कमाई है जो शख़्स (ख़र्च करने में इस तरह) बीच की चाल चले तो वह मोहताज नहीं होता और फ़ुज़ूल उड़ाने में ज़्यादा माल भी नहीं रहता।

(अ़स्करी व दैलमी वग़ैरहुमा)

मुआ़फ़ी चाहना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के ज़िम्मे अपने किसी मुसलमान भाई का कोई हक़ हो (मसलन ग़ीबत की हो या माल तलफ़[6] किया हो) पस उसको चाहिए कि आज (दुनिया में) उन हक़-तल्फ़ियों को उससे मुआ़फ़ करा ले क़ब्ल इसके कि (क़ियामत में) उसके पास न दीनार होगा न दिर्हम। अगर उसके पास नेक अ़मल होगा तो बक़द्र उस ज़ुल्म के उसका नेक अ़मल उससे ले लिया जायेगा और अगर उसके पास

1-ज़रूरतमन्द, अधीनस्थ, 2-व्यापक, 3-मध्य, 4-औसत, 5-ख़र्च, 6-नष्ट।

नेकियाँ न होंगी तो उसके मज़्लूम भाई की बुराइयाँ लेकर उसके ऊपर लादी दी जायेंगी। (मिश्कात)

ख़ता[1] मुआफ़ करना

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन एक पुकारने वाला पुकार कर कहेगा- वे लोग कहाँ हैं, जो लोगों की ख़तायें मुआफ़ कर दिया करते थे, वे अपने परवरदिगार के हुज़ूर में आयें और अपना इन्आ़म ले जायें, क्योंकि हर मुसलमान जिसकी यह आ़दत थी बिहिश्त में दाख़िल होने का हक़दार है।

(अबुश्शैख़ फ़िस्सवाब, इब्ने अ़ब्बास से)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- जो आदमी चाहता है कि क़ियामत के दिन उसके दर्जे बुलन्द हों, उसको चाहिए कि वह उस आदमी से दर्गुज़र[2] करे जिसने उस पर ज़ुल्म किया हो, उसको दे जिसने उसको न दिया हो और उसके साथ रिश्ता जोड़े जिसने उससे रिश्ता तोड़ा हो और उसके साथ तहम्मुल[3] करे जिसने उसको बुरा कहा हो।

(इब्ने अ़साकिर, अन अबी हुरैरा रज़ि०)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं अपने ख़ादिम (ग़ुलाम या नौकर) का क़ुसूर कितनी बार मुआफ़ करूँ? आपने उसको कोई जवाब नहीं दिया और ख़ामोश रहे। उसने फिर वही अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं अपने ख़ादिम को कितनी बार मुआफ़ करूँ? आपने इर्शाद फ़रमाया- हर रोज़ 70 बार।

(जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-गुनाह, दोष, 2-क्षमा करना, 3-सहन, नम्रता।

ख़ामोशी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फ़रमाया- ऐ अबू बक्र! तीन बातें हैं जो सब की सब हक़ हैं:

1- जिस बन्दे पर कोई ज़ुल्म किया जाये और फिर वह महज़ अल्लाह के वास्ते उससे चश्मपोशी[1] कर लेवे, तो बवजह उस ज़ुल्म के अल्लाह तआ़ला उसकी मदद करता है।

2- जो बन्दा ब-क़स्द[2] सिला-ए-रहमी[3] के बख़्शिश का कोई दरवाज़ा खोलता है तो अल्लाह तआ़ला बवजह उस ख़स्लत (सिला-ए-रहमी) के उसके माल में ज़्यादती कर देता है, और

3- जो बन्दा सवाल का दरवाज़ा खोलता है और उससे उसका इरादा यह होता है कि माल में कस्रत हो तो अल्लाह तआ़ला इस ख़स्लत (सवाल) की वजह से उसकी तंगदस्ती में इज़ाफ़ा ही फ़रमाता रहेगा। (मिश्कात)

तर्के लायानी[4]

(अनर्थक बातों या कार्यों का परित्याग)

हज़रत अ़ली बिन हुसैन ज़ैनुल-आ़बिदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "आदमी के इस्लाम के हुस्नो-कमाल में यह भी है कि जो बात उसके लिये ज़रूरी और मुफ़ीद[5] न हो, उसको छोड़ दे।" (मिश्कात)

रहमदिली और बेरह्मी

हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है

1-किसी के ऐब दोष आदि को देखकर भी उसको छिपा लेना, 2-इच्छानुसार, 3-परिवार वालों से प्रेम रखने और उन पर यथाशक्ति ख़र्च की इच्छा, 4-व्यर्थ बातों और कामों का परित्याग, 5-लाभदायक।

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया– 'वे लोग अल्लाह तआ़ला की ख़ास रहमत से महरूम रहेंगे जिनके दिलों में दूसरे आदमियों के लिये रहम नहीं है और जो दूसरों पर तर्स नहीं खाते।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

नेकी

हज़रत वाबिसा बिन माबद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– ऐ वाबिसा! तू यह पूछने आया है कि नेकी क्या चीज़ है? मैंने अ़र्ज़ किया– जी हाँ! (यह सुनकर) आपने अपनी उंगलियों को इकट्ठा किया और मेरे सीने पर मारकर फ़रमाया– अपने नफ़्स से पूछ, अपने दिल से पूछ, तीन मर्तबा यह अल्फ़ाज़ फ़रमाए और फिर फ़रमाया नेकी यह है कि जिससे नफ़्स को सुकून[1] हो और जिससे दिल को सुकून हो। और गुनाह वह है जो नफ़्स में ख़लिश[2] पैदा करे अगर्चे लोग उसके जवाज़[3] का फ़त्वा[4] दें। (मुस्नदे अहमद, दारमी, मिश्कात)

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है, "तुम किसी छोटी-सी-छोटी नेकी को हक़ीर[5] समझकर तर्क न किया करो और कुछ न हो सके तो अपने मुसलमान भाई से ख़न्दा-पेशानी[6] के साथ मुलाक़ात ही कर लिया करो।" (मुस्लिम)

सद्क़ाते जारिया[7]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– "इ़ल्म की इशाअ़त[8] करना, नेक औलाद छोड़ जाना, मस्जिद या मुसाफ़िर ख़ाना बनाना, क़ुरआन मजीद मरसा में छोड़ जाना, नहर जारी करना और जीते जी तन्दुरुस्ती की

1-शान्ति, 2-चुभन, 3-औचित्य, 4-धर्मादेश, 5-तुच्छ, 6-सद्व्यवहार, 7-प्रवाहित, 8-प्रचार, फैलाना।

हालत में अपने माल में से ख़ैरात करना, यह सब बातें ऐसी हैं जिनका सवाब मरने के बाद मुसलमान को मिलता रहता है।" (इब्ने माजा)

तदब्बुर[1] व तफ़क्कुर[2] (दूरदर्शिता व चिन्तन)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "! अपने दिलों को सोचने की आ़दत डालो और अल्लाह सुब्हानहु व तआ़ला की नेअ़मतों पर ग़ौर किया करो मगर अल्लाह की हस्ती पर ग़ौर न करना।

अख़्लाक़े रज़ीला (अशिष्ट आचरण)

ख़ुद-बीनी (अहंकार)

ज़वाजिर में दैलमी के हवाले से बयान किया गया है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "ख़ुदबीनी ऐसी बुरी बला है कि इससे 70 साल के बेहतरीन अ़मल बरबाद हो जाते हैं।"
(दैलमी)

बेहयाई की इशाअ़त[3] (निर्लज्जता का प्रचार)

हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं, बेहयाई की बातें करने वाला और उनकी इशाअ़त करने वाला और फैलाने वाला दोनों गुनाह में बराबर हैं। (अल्अदबुल्-मुफ़रद)

दूसरों को हक़ीर समझना (अन्य को हीन समझना)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, उस पर कोई ज़ुल्म व ज़्यादती न करे (और जब वह

1-काम करने से पहले उसका परिणाम सोचना, दूरदर्शिता, 2-चिन्तन करना, 3-प्रचार।

उसकी मदद व इआनत[1] का मोहताज हो, तो उसकी मदद करे) और उसको बेमदद न छोड़े, और उसको हक़ीर न जाने और उसके साथ हक़ारत[2] का बर्ताव न करे (क्या ख़बर है कि उसके दिल में तक़्वा हो, जिसकी वजह से वह अल्लाह के नज़्दीक मुकर्रम व मुक़र्रब हो) फिर आपने तीन बार अपने सीने की तरफ़ इशारा फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि तक़्वा यहाँ होता है। (हो सकता है कि तुम किसी को ज़ाहिरी हाल से मामूली आदमी समझते हो और अपने दिल के तक़्वे की वजह से वह अल्लाह के नज़्दीक मोहतरम हो, इसलिए कभी मुसलमान को हक़ीर न समझो) आदमी के बुरा होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि अपने मुसलमान भाई को हक़ीर समझे और उसके साथ हक़ारत से पेश आये। मुसलमान की हर चीज़ दूसरे मुसलमान के लिये क़ाबिले एहतिराम है। उसका ख़ून, उसका माल और उसकी आबरु (इसलिए नाहक़ उसका ख़ून गिराना, उसका माल लेना और उसकी आबरुरेज़ी[3] करना) यह सब हराम हैं। (सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- कि अलामाते क़ियामत में यह बात भी है कि मामूली तबक़े के लोग बड़े-बड़े मकान और ऊँची-ऊँची हवेलियाँ बनाकर उन पर फ़ख़्र[4] करेंगे।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

रिया (आडम्बर)

हज़रत महमूद बिन लबीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "मुझे तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा ख़तरा 'शिर्के असग़र' का है। बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! शिर्के असग़र का क्या मतलब है? आपने इर्शाद फ़रमाया- "रिया" (यानी कोई नेक काम लोगों को दिखाने के लिये करना।) (मआरिफ़ुल् हदीस, मुस्नदे अहमद)

1-सहायता, 2-तिरस्कार, 3-बेइज़्ज़ती, 4-गर्व।

'इख़्लास व लिल्लाहियत' (यानी हर नेक अमल का अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व रहमत की तलब में करना) जिस तरह ईमान व तौहीद का तक़ाज़ा और अमल की जान है इसी तरह रिया व सुम्आ यानी मख़्लूक़ के दिखावे और दुनिया में शोहरत और नामवरी के लिए नेक अमल करना ईमान व तौहीद के मनाफ़ी[1] और एक क़िस्म का शिर्क है। (मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, आप फ़रमाते थे, जिसने दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ी उसने शिर्क किया और जिसने दिखावे के लिये रोज़ा रखा उसने शिर्क किया और जिसने दिखावे के लिये सदक़ा व ख़ैरात किया, उसने शिर्क किया। (मुस्नदे अहमद, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- आख़िरी ज़मानें में कुछ ऐसे मक्कार लोग पैदा होंगे जो दीन की आड़ में दुनिया का शिकार करेंगे। वे लोगों पर अपनी दुर्वेशी[2] व मिस्कीनी ज़ाहिर करने और उनको मुतअस्सिर करने के लिये भेड़ों की खाल का लिबास पहनेंगे, उनकी ज़बानें शकर से ज़्यादा मीठी होंगी, मगर उनके सीने में भेड़ियों के से दिल होंगे (उनके बारे में) अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है- "क्या ये लोग मेरी ढील देने से धोखा खा रहे हैं या मुझसे निडर होकर मेरे मुक़ाबले में जुर्अत[3] कर रहे हैं पस मुझे क़सम है कि मैं इन मक्कारों पर इन्हीं में से ऐसा फ़ित्ना पैदा करूँगा जो इनमें के अक़्ल्-मन्दों और दानाओं[4] को भी हैरान बनाकर छोड़ेगा।" (जामे तिर्मिज़ी)

ज़िना (बलात्कार)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि दोनों आँखों का ज़िना (शहवत[5] से) निगाह करना है और दोनों कानों का ज़िना (शहवत

1-विरुद्ध, 2-फ़क़ीरी, संन्यास, 3-साहस, 4-बुद्धिमानों, 5-कामातुरता।

से) बातें सुनना है और ज़बान का ज़िना (शहवत से) बातें करना और हाथ का ज़िना (शहवत से) किसी का हाथ वग़ैरा पकड़ना है और पावों का ज़िना (शहवत से) क़दम उठाकर जाना है और क़ल्ब[1] का ज़िना यह है कि (शहवत से) वह ख़्वाहिश और तमन्ना करता है। इला-आख़िर (यानी आगे हदीस और भी है)। (मुस्लिम, हयातुल्-मुस्लिमीन)

ग़ुस्सा

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुममें से किसी को गुस्सा आये और वह खड़ा हो तो चाहिए कि बैठ जाये, पस अगर बैठने से गुस्सा फ़रो[2] हो जाये तो फ़-बिहा[3], अगर फिर भी गुस्सा बाक़ी रहे तो चाहिए कि लेट जाये। (मुस्नदे अहमद, जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत सहल बिन मआज़ अपने वालिद हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स पी जाये गुस्से को दरॉं-हालेकि (इस हाल में कि) उसमें इतनी ताक़त और क़ुव्वत है कि अपने ग़ुस्से के तक़ाज़े को नाफ़िज़[4] और पूरा कर सकता है (लेकिन इसके बावजूद वह महज़ अल्लाह के लिए अपने गुस्से को पी जाता है और जिस पर उसको गुस्सा है उसको कोई सज़ा नहीं देता) तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने उसको बुलायेंगे और उसको इख़्तियार देंगे कि हूराने जन्नत[5] में से जिस हूर को चाहे अपने लिए इन्तिख़ाब[6] कर ले।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुसलमानो! अगर तुममें से किसी को गुस्सा आए तो उसको लाज़िम है कि वह ख़ामोश हो जाये। (इब्ने अब्बास से)

1-हृदय, 2-कम, 3-ठीक, अच्छा, 4-लागू, 5-जन्नत में रहने वाली सुन्दर स्त्रियाँ, स्वर्गवधू, 6-चयन।

वह आदमी ताक़तवर नहीं है जो लोगों को दबाता और मग़्लूब[1] करता हो, बल्कि वह आदमी ताक़तवर है जो अपने नफ़्स को दबा सकता और मग़्लूब कर सकता है। (अबू हुरैरा रज़ि० से, मआरिफ़ुल् हदीस)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि रिज़ा-ए-इलाही के लिए गुस्से के घूँट को पी जाने से बढ़ कर कोई दूसरा घूँट नहीं है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब गुस्सा आए तो वुज़ू कर लेना चाहिए। अगर खड़े होने की हालत में गुस्सा आए तो बैठ जाये, अगर बैठने की हालत में गुस्सा आए तो लेट जाए।

गुस्से के वक़्त أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

"अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैता निर्रजीम" पढ़ने से गुस्सा जाता रहता है।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

ग़ीबत (पिशुनता)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- ग़ीबत ज़िना से ज़्यादा सख़्त और संगीन है

बाज़ सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हज़रत! ग़ीबत ज़िना से ज़्यादा संगीन क्योंकर है? आपने फ़रमाया, (बात यह है कि) आदमी अगर बदबख़्ती से ज़िना कर लेता है तो सिर्फ़ तौबा करने से उसकी मुआफ़ी और मग़्फ़िरत अल्लाह तआला की तरफ़ से हो सकती है, मगर ग़ीबत करने वाले को जब तक ख़ुद वह शख़्स मुआफ़ न कर दे जिसकी उसने ग़ीबत की है, उसकी मुआफ़ी और बख़्शिश अल्लाह तआला की तरफ़ से नहीं होगी।

(मआरिफ़ुल् हदीस, शोबुल् ईमान लिल्-बैहक़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन फ़रमाया क्या तुम जानते

1-अधीन, पराजित।

हो कि ग़ीबत किसको कहते हैं? सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा मालूम है। आपने फ़रमाया, तुम्हारा अपने भाई की किसी ऐसी बुराई का ज़िक्र करना जो वाक़िअतन् उसमें मौजूद हो और अगर उसमें वह बुराई और ऐब मौजूद ही नहीं है (जो तुमने उसकी तरफ़ मन्सूब[1] करके ज़िक्र किया) तो फिर यह तो बोहतान[2] हुआ और यह ग़ीबत से भी ज़्यादा सख़्त और संगीन है।

(मआरिफ़ुल् हदीस, हयातुल् मुस्लिमीन, सहीह मुस्लिम)

ख़ियानत[3]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने तुम्हें क़ाबिले एतिमाद[4] समझ कर अपनी अमानत तुम्हारे पास रखी है उसकी अमानत वापस कर दो और जो तुम से ख़ियानत करे तो तुम उसके साथ ख़ियानत का मुआमला न करो, बल्कि अपना हक़ वसूल करने के लिए दूसरे जाइज़ तरीक़े इख़्तियार करो। (तिर्मिज़ी)

बद-गुमानी (कुधारणा)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- अपने आपको बद-गुमानियों से बचाओ, इसलिए कि बद-गुमानी के साथ जो बात की जायेगी वह सबसे ज़्यादा झूठी बात होगी।

और दूसरे के मुआमलात में मालूमात हासिल करते मत फिरो और न टोह में लगो और न आपस में तनाज़ुअ[5] करो और न एक दूसरे से बुग़्ज़[6] रखो और न एक दूसरे की काट में लगो और अल्लाह के बन्दे बनो, आपस में भाई-भाई बनकर ज़िन्दगी गुज़ारो। (बुख़ारी व मुस्लिम)

1-सम्बन्धित, 2-मिथ्यारोप, झूठा इल्ज़ाम, 3-ग़बन, 4-विश्वास योग्य, 5-खोज, 6-द्वेष।

हज़रत अबुल् आलिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमको इस बात का हुक्म और हिदायत की गई है कि हम अपने ख़ादिमों से अपने मालो-मताअ[1] को मुक़फ़्फ़ल[2] रखें और उनको अगर इस्तेमाल के लिए कुछ दिया जाये तो नाप कर या गिन कर दें (इस ख़्याल से) कि कहीं उनकी आदत न बिगड़ जाये या हममें से किसी को कोई बद-गुमानी न हो।

(बुख़ारी, अदबुल्-मुफ़्रद)

दो-रुख़ी (दोहरा व्यवहार)

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया दुनिया में जो शख़्स दो-रुख़ा होगा और मुनाफ़िक़ों की तरह मुख़्तलिफ़ लोगों से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बातें करेगा, क़ियामत के दिन उसके मुँह में आग की दो ज़बानें होंगी।

(मआरिफ़ुल् हदीस, सुनने अबी दाऊद)

चुग़ुलख़ोरी

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन गुन्म और अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- अल्लाह के बेहतरीन बन्दे वे हैं जिनको देखकर अल्लाह याद आये और बदतरीन बन्दे वे हैं जो चुग़लियाँ खाने वाले, दोस्तों में जुदाई डालने वाले हैं और जो इसके तालिब और साई[3] रहते हैं कि अल्लाह के पाक दामन बन्दों को किसी गुनाह से मुलव्वस[4] या किसी मुसीबत और परेशानी में मुब्तला करें। (मुस्नदे अहमद, शोबुल् ईमान लिल्-बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-माल, सामान, 2-बन्द, 3-प्रयत्नशील, 4-संलग्न, किसी गुनाह या अपराध में भागीदार।

झूठ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब बन्दा झूठ बोलता है तो फ़िरिश्ता उसके झूठ की बदबू की वजह से एक मील दूर चला जाता है। (जामे तिर्मिज़ी)

और जामे तिर्मिज़ी की दूसरी हदीस में है कि आपने एक दिन सहाबा किराम से इर्शाद फ़रमाया और तीन बार इर्शाद फ़रमाया- "क्या मैं तुम लोगों को बताऊँ कि सबसे बड़े गुनाह कौन-कौन हैं? फिर आपने फ़रमाया- "अल्लाह के साथ शिर्क करना, माँ-बाप की नाफ़रमानी करना और मुआमलात में झूठी गवाही देना और झूठ बोलना।" रावी का बयान है कि पहले आप सल्ल० सहारा लगाये बैठे थे, लेकिन फिर सीधे होकर बैठ गये और बार-बार आपने इस इर्शाद को दोहराया, यहाँ तक हमने चाहा, काश! अब आप ख़ामोश हो जाते यानी उस वक़्त आप पर एक ऐसी कैफ़ियत तारी थी और आप ऐसे जोश से फ़रमा रहे थे कि हम महसूस कर रहे थे कि आपके क़ल्बे[1] मुबारक पर इस वक़्त बड़ा बोझ है, इसलिए जी चाहता था कि इस वक़्त आप सल्ल० ख़ामोश हो जायें और अपने दिल पर इतना बोझ न डालें। (मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जिस शख़्स ने क़सम खाकर किसी मुसलमान का हक़ नाजाइज़ तौर से मार लिया तो अल्लाह तआला ने ऐसे आदमी के लिए दोज़ख़ वाजिब कर दी है और जन्नत को उस पर हराम कर दिया है।" हाज़िरीन में से किसी शख़्स ने अर्ज़ किया- "या रसूलल्लाह! अगर्चे वह कोई मामूली ही चीज़ हो (अगर किसी ने किसी की बहुत मामूली सी चीज़ क़सम खाकर नाजाइज़ तौर से हासिल कर ली तो

1-हृदय।

क्या इस सूरत में भी दोज़ख़ उसके लिए वाजिब और जन्नत उसपर हराम होगी।) आपने इर्शाद फ़रमाया- "हाँ अगर्चे जंगली दरख़्त, पीलू की टहनी ही हो।" (रवाहु मुस्लिम, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "तीन आदमी ऐसे हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला न उनसे हम-कलाम[1] होगा न उन पर इनायत की नज़र करेगा और न गुनाहों और गंदगियों से उनको पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।" अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० ने अ़र्ज़ किया, ये लोग तो नामुराद हुए और टोटे में पड़े। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ये तीन कौन-कौन हैं? आपने फ़रमाया- "अपना तहबन्द हद से नीचे लटकाने वाला (जैसा मुतकब्बिरों[2] और मग़रूरों का तरीक़ा है) और एहसान जताने वाला और झूठी क़समें खाके अपना सौदा चलाने वाला।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "कि आदमी के लिए यही झूठ काफ़ी है कि वह जो कुछ सुने उसे बयान करता फिरे।

(सहीह मुस्लिम, मआरिफुल् हदीस)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "जिस शख़्स ने हाकिम के सामने झूठी क़सम खाई ताकि उसके ज़रिये किसी मुसलमान आदमी का माल मार ले तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला के सामने इस हाल में उसकी पेशी होगी कि अल्लाह तआ़ला उस पर सख़्त ग़ज़बनाक और नाराज़ होंगे। (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)

1-बातचीत, 2-अभिमानी।

मस्लहत आमेज़ी (जिसमें कोई हित हो)

हज़रत उम्मे कुलसूम (बिन्ते उक़्बा) रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "वह आदमी झूठा और गुनहगार नहीं है जो बाहम लड़ने वाले आदमियों के दरमियान सुलह कराने की कोशिश करे और इस सिल्सिले में (एक फ़रीक़[1] की तरफ़ से दूसरे फ़रीक़ को ख़ैर और भलाई की बातें पहुँचाये और अच्छा असर डालने वाली) अच्छी बातें करे।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

ईमान वालों को रुस्वा करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर पर चढ़े और आपने बुलन्द आवाज़ से पुकारा और फ़रमाया- ऐ वे लोगो! जो ज़बान से इस्लाम लाये हो और उनके दिलों में अभी ईमान पूरी तरह उतरा नहीं है, मुसलमान बन्दों को सताने और उनको आर[2] दिलाने से और शर्मिन्दा करने से और उनके छिपे हुए ऐबों के पीछे पड़ने से बाज़ रहो, क्योंकि अल्लाह का क़ानून है कि जो कोई अपने मुसलमान भाई के छिपे ऐबों के पीछे पड़ेगा और उसको रुस्वा करना चाहेगा तो अल्लाह उसके ऐबों के पीछे पड़ेगा और जिसके ऐबों के पीछे अल्लाह तआला पड़ेगा, वह उसको ज़रूर रुस्वा करेगा (और वह रुस्वा होकर रहेगा), अगर्चे अपने घर के अन्दर ही हो।" (जामे तिर्मिज़ी, मआरिफुल्हदीस)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "सबसे बुरा सौदा और सबसे बद्तरीन सौदों में ख़बीस सौदा यह है कि किसी मुसलमान की आबरू-रेज़ी[3] की जाये और एक मुसलमान की हुर्मत[4] को ज़ाए[5] किया जाये।

(इब्ने अबिद्दुन्या, बैहक़ी)

1-पक्ष, 2-लज्जा, 3-अपमानित, 4-पवित्रता, 5-नष्ट।

बुख़्ल (कृपणता)

हज़रत अबू बक सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने इर्शाद फ़रमाया कि धोके बाज़ बख़ील[1] और एहसान जताने वाला आदमी जन्नत में न जा सकेगा।(जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

इन्तिक़ाम (बदला)

उसके बाद फ़रमाया- "ऐ अबू बक! तीन बातें जो सबकी सब बिल्कुल हक़ हैं, पहली बात यह है कि जिस बन्दे पर कोई ज़ुल्म व ज़्यादती की जाये और वह महज़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के लिए उससे दर्गुज़र करे (और इन्तिक़ाम न ले) तो अल्लाह तआला उसके बदले में उसकी भरपूर मदद फ़रमायेंगे (दुनिया व आख़िरत में उसको इज़्ज़त देंगे) और दूसरी बात यह है कि जो शख़्स सिला-ए-रहमी के लिए दूसरों को देने का दरवाज़ा खोलेगा, तो अल्लाह तआला उसके इवज़ उसको और बहुत ज़्यादा देंगे। और तीसरी बात यह है कि जो आदमी (ज़रूरत से मज्बूर होकर नहीं बल्कि) अपनी दौलत बढ़ाने के लिए सवाल और गदागरी[2] का दरवाज़ा खोलेगा तो अल्लाह तआला उसकी दौलत को और ज़्यादा कम कर देंगे।"

(मुस्नदे अहमद, मआरिफ़ुल् हदीस)

बुग़्ज़[3] व कीना[4] (द्वेष व अमर्ष)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हर हफ़्ते में दो दिन दोशंबह[5] और पंजशंबह[6] को लोगों के आमाल पेश होते हैं तो हर बन्दए मोमिन की मुआफ़ी का फ़ैसला कर दिया जाता है, सिवाय उन दो

1-कृपण, 2-भिक्षावृत्ति, 3-द्वेष यह बैर जो मन ही मन में बढ़ाया जाये प्रकट न किया जाये, 4-द्वेष, 5-सोमवार, 6-वृहस्पतिवार।

आदमियों के जो एक दूसरे से कीना रखते हों पस उनके बारे में हुक्म दे दिया जाता है कि इन दोनों को छोड़े रखो (यानी इनकी मुआफ़ी न लिखो) जब तक कि ये आपस के उस कीने और बाहमी[1] दुश्मनी से बाज़ न आवें और दिलों को साफ़ न कर लें। (सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम दूसरों के मुतअल्लिक़ बद-गुमानी[2] की टोह में न रहा करो और जासूसों की तरह राज़दाराना तरीक़े से किसी के ऐब मालूम करने की कोशिश भी न किया करो और न एक दूसरे पर बढ़ने की बेजा[3] हवस[4] करो, न आपस में हसद करो, न बुग़्ज़ व कीना रखो और न एक दूसरे से मुँह फेरो, बल्कि ऐ अल्लाह के बन्दो! अल्लाह के हिल्म[5] के मुताबिक़ भाई-भाई बनकर रहो।

(बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हसद (ईर्ष्या)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने इर्शाद फ़रमाया तुम हसद के मरज़ से बहुत बचो। हसद आदमी की नेकियाँ इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है। (सुनने अबी दाऊद)

हज़रत रसूल मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मुसलमानो! तुम्हारे दरमियान भी वह बीमारी आहिस्ता-आहिस्ता फैल गई है जो तुमसे पहले लोगों में थी और इससे मेरी मुराद बुग़्ज़ व हसद है। यह बीमारी मूँड देने वाली है, सर के बालों को नहीं, बल्कि दीन व ईमान को।

(मुस्नदे अहमद, जामे तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-पारस्परिक, 2-दुर्विचार, 3-अनुचित, 4-लोभ, 5-सहिष्णुता।

क़सावते क़ल्बी का इलाज
(हृदय की कठोरता का उपचार)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी क़सावते क़ल्बी की शिकायत की। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया- "यतीम के सर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीन[1] को खाना खिलाया करो।"

(मुस्नदे अहमद, मआरिफ़ुल् हदीस)

मुनाफ़क़त[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि चार आदतें ऐसी हैं जिसमें वे चारों जमा हो जायें तो वह ख़ालिस मुनाफ़िक़ है और जिसमें इन चारों में से कोई एक ख़स्लत[3] हो तो उसका हाल यह है कि उसमें निफ़ाक़[4] की एक ख़स्लत है और वह उसी हाल में रहेगा जब तक कि उस आदत को न छोड़ दे। वे चारों आदतें यह हैं कि जब उसको किसी अमानत का अमीन[5] बनाया जाये तो उसमें ख़ियानत करे और जब बातें करे तो झूठ बोले और जब अहद-मुआहदा[6] करे तो उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी करे और जब किसी से झगड़ा और इख़्तिलाफ़ हो तो बदज़बानी करे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

ज़ुल्म

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरवरे काइनात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "मज़्लूम की बद्दुआ जो ज़ालिम के हक़ में हो बादलों के ऊपर उठा ली जाती है,

---

1-दरिद्र, 2-दिल में कुछ होना और ज़बान पर कुछ, मिथ्याचारी, 3-आदत, 4-फूट-शत्रुता, 5-न्यायधारी, 6-परस्पर किसी बात की प्रतिज्ञा।

आसमानों के दरवाज़े उस दुआ के लिए खोल दिये जाते हैं और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं- मैं तेरी इम्दाद[1] ज़रूर करूँगा, अगर्चे कुछ ताख़ीर[2] हो।"

(मुस्नदे अहमद, तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "मज़्लूम की बद्दुआ से बचो। यह बद्दुआ शोले की तरह आसमान पर चढ़ जाती है।" (हाकिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं- "क़सम है मुझको अपनी इज़्ज़त व जलाल की, मैं जल्द या बदेर ज़ालिम से बदला ज़रूर लूँगा और उससे भी बदला लूँगा जो बावजूद क़ुद्रत के मज़्लूम की इम्दाद नहीं करता।" (अबुश्शैख़)

ज़ालिम की इआनत (अत्याचारी की सहायता)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "जो लोग उमरा[3] की हाशिया-नशीनी[4] इख़्तियार करते हैं और ज़ालिमों की इआनत करते हैं उनका अन्जाम सख़्त ख़राब होगा। न तो मुसलमानों में उनका शुमार होगा और न वे मेरे हौज़े कौसर[5] पर आयेंगे, ख़्वाह वे कितना ही इस्लाम का दावा करें।"

हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अस्हाब (सहाबा रज़ि०) से पूछा कि क्या तुम जानते हो मुफ़्लिस[6] कैसा होता है? उन्होंने अर्ज़ किया, हममें मुफ़्लिस वह कहलाता है जिसके पास माल व मताअ[7] न हो। आप सल्ल० ने फ़रमाया- मेरी उम्मत में बड़ा मुफ़्लिस वह है कि क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात सब लेकर आए, लेकिन उसके

1-सहायता, 2-विलम्ब, 3-धनवानों, 4-दरबारदारी, किसी बड़े आदमी की सेवा में उपस्थिति, 5-जन्नत का एक बड़ा हौज़ या कुण्ड, 6-दरिद्र, 7-धन-सम्पत्ति।

साथ यह भी है कि किसी को बुरा-भला कहा था और किसी को तोहमत लगाई थी और किसी का माल खा लिया था और किसी का ख़ून किया था और किसी को मारा था, पस उसकी कुछ नेकियाँ एक को मिल गयीं और कुछ दूसरे को मिल गयीं और अगर उन हुक़ूक़ के बदले अदा होने से पहले उसकी नेकियाँ ख़त्म हो गयीं तो उन हक़दारों के गुनाह लेकर उस पर डाल दिये जायेंगे और उसको दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा।" (बिहिश्ती ज़ेवर)

बद-गोई (अपशब्द)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के सामने मर्तबे में कम वह शख़्स होगा जिसकी फ़ुहश-गोई[1] और बद-ज़बानी[2] के डर से लोगों ने उसको छोड़ दिया हो।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "तमाम अअ्ज़ा[3] से ज़्यादा ज़बान को सख़्त अज़ाब होगा, ज़बान कहेगी ऐ रब (पालनहार)! तूने जिस्म के किसी अ़ज़्व[4] को उतना अज़ाब नहीं किया जितना मुझे किया। अल्लाह तआला फ़रमाएगा- तुझसे ऐसी बात निकलती थी जो मश्रिक़[5] व मग़्रिब[6] तक पहुँच जाती थी। मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! तुझको तमाम अअ्ज़ा से ज़्यादा अज़ाब करूँगा।" (अबुन्नईम)

ऐबचीनी (दोष ढूँढना)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से (एक मौक़े पर) कहा कि सफ़िया (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) का यह ऐब कि वह ऐसी और ऐसी हैं, काफ़ी है

1-अश्लील बातें करना, 2-बुरी बातें करना, गाली-गलौच करना, 3-अंगों, 4-अंग, 5-पूर्व, 6-पश्चिम।

(यानी यह कि वह पस्ता क़द[1] हैं और यह बहुत बड़ा ऐब है।) आप सल्ल० ने फ़रमाया आइशा तुमने इतना गंदा लफ़्ज़ मुँह से निकाला है कि अगर उसे समन्दर में घोल दिया जाए तो पूरे समुद्र को गंदा कर दे।

(मिश्कात, हयातुल मुस्लिमीन)

बदनिगाही (पाप की दृष्टि से देखना)

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया- "ऐ अली! किसी औरत पर अचानक निगाह पड़ जाये तो नज़र फेर लो, दूसरी निगाह उस पर मत डालो, पहली निगाह तो तुम्हारी है, मगर दूसरी निगाह तुम्हारी नज़र नहीं है, बल्कि शैतान की है।" (अबू दाऊद, हयातुलमुस्लिमीन)

लानत करना (धिक्कारना)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कोई शख़्स किसी पर लानत करता है तो अव्वल लानत आसमान की तरफ़ चढ़ती है, आसमान के दरवाज़े बन्द कर लिये जाते हैं फिर वह ज़मीन की तरफ़ उतरती है, वह भी बन्द कर लिये जाते हैं फिर वह दायें-बायें फिरती है, जब कहीं ठिकाना नहीं पाती तब उसके पास जाती है जिस पर लानत की गई थी अगर वह इस लायक़ हुआ तो ख़ैर, वर्ना फिर उसी कहने वाले पर पड़ती है।

(फ़ायदा: बाज़ औरतों को बहुत आदत है कि सब पर अल्लाह की मार, फटकार किया करती हैं और किसी को बेईमान कह देती हैं। यह बड़ा गुनाह है, चाहे आदमी को कहे या जानवर को या और किसी चीज़ को।

(बिहिश्ती ज़ेवर)

ख़ुद-कुशी (आत्म हत्या)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर

1-छोटी क़द।

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "जिसने अपनी जान को हलाक किया तो क़ियामत में उसको यही अ़ज़ाब दिया जाएगा कि वह अपनी जान को हलाक करता रहेगा और जिस तरह से दुनिया में अपनी जान को हलाक किया है उसी तरह दोज़ख़ में हलाक करता रहेगा। जिसने अपने आपको पहाड़ पर से गिराया होगा, वह पहाड़ पर से गिराया जाता रहेगा और जिसने ज़हर पिया होगा, वह ज़हर पिलाया जाता रहेगा और जिसने अपने आपको छुरी से क़त्ल किया होगा वह छुरी से ज़ब्ह होता रहेगा।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

गुनाह

मअ़सियत[1] से इज्तिनाब (पाप से घृणा)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हलाल भी वाज़ेह और हराम भी, लेकिन इन दोनों के दरमियान कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो मुश्तबह[2] हैं, तो जो शख़्स मुश्तबह गुनाह से बचेगा, वह बदर्जे-ए-औला[3] खुले हुए गुनाहों से बचेगा और जो शख़्स मुश्तबह गुनाहों के कर डालने में जुर्अत[4] दिखाएगा तो खुले गुनाहों में उसका पड़ जाना बहुत ज़्यादा मुतवक़्क़े[5] है और मअ़सियत अल्लाह तआ़ला का मम्नूआ़ इलाक़ा[6] है (जिसकें अन्दर किसी को जाने की इजाज़त नहीं और उसके अन्दर बिला इजाज़त घुस जाना हराम है) जो जानवर मम्नूआ़ इलाक़े के आस-पास चरता है, उसका मम्नूआ़ इलाक़े में घुस जाना बहुत ज़्यादा मुतवक़्क़े है। (मिश्कात, हयातुल्-मुस्लिमीन)

गुनाह का इलाज

हज़रत मआ़ज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से (एक लम्बी हदीस में) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "अपने को गुनाह करने

1-उद्दण्डता, पाप, 2-संदेहयुक्त, 3-बहुत अच्छी तरह, 4-साहस, 5-आशा रखने वाला, आशान्वित, 6-वर्जित क्षेत्र।

से बचाओ क्योंकि गुनाह करने से अल्लाह तआला का ग़ज़ब[1] नाज़िल हो जाता है।" (मुस्नदे अहमद)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- क्या तुमको तुम्हारी बीमारी और दवा बतला दूँ? सुन लो! बीमारी गुनाह है और तुम्हारी दवा इस्तिग़्फ़ार[2] है। (तर्ग़ीब, बैहक़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उसका कोई गुनाह ही न था।

(बैहक़ी मर्फ़ूअन व शर्हुस्सुन्ना, मौक़ूफ़न)

अलबत्ता हुक़ूक़ुल्-इबाद[3] में तौबा की यह भी शर्त है कि अहले-हुक़ूक़ से भी मुआफ़ कराए।

गुनाहों की पादाश[4]

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हम दस आदमी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़िदमत में हाज़िर थे। आप सल्ल० हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाने लगे, पाँच चीज़ें ऐसी हैं जिनसे मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ कि तुम लोग उनको पाओ, जब किसी क़ौम में- (1) बेहयाई के अफ़आल[5] अलल्-एलान[6] होने लगें, वे ताऊन[7] में मुब्तला होगी, और ऐसी-ऐसी बीमारियों में मुब्तला और गिरिफ़्तार होगी जो उनके बड़ों के वक़्त में कभी न हुई होंगी। (2) और जब कोई क़ौम नापने-तौलने में कमी करेगी, क़हत[8] और तंगी और ज़ुल्मे-हुक्काम[9] में मुब्तला होगी। (3) और नहीं बन्द किया किसी क़ौम ने ज़कात को, मगर बन्द किया जावेगा उससे बाराने रहमत[10], और बहाइम[11] न होते तो कभी

1-प्रकोप, 2-अल्लाह से क्षमा याचना करना, 3-बन्दों के अधिकार, 4-प्रतिकार, बदला, 5-कार्य, 6-स्पष्टता, खुल्लम खुल्ला, 7-प्लेग, 8-अकाल, 9-शासकों के अत्याचार, 10-ऐसी वर्षा जो लाभप्रद हो, 11-पशु।

उसपर बारिश न होती। और (4) नहीं अ़हद-शिकनी[1] की किसी क़ौम ने मगर मुसल्लत फ़रमा देगा अल्लाह तआ़ला उस पर उसके दुश्मन को ग़ैर क़ौम से, पस बजब्र[2] ले लेंगे वह उनके अम्वाल (मालों) को।

(इब्ने माजा)

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि बादशाहों का मालिक मैं हूँ, बादशाहों के दिल मेरे हाथ में हैं और जब बन्दे मेरी इताअ़त करते हैं, मैं उनके बादशाहों के दिलों को उन पर रहमत और शफ़्क़त के साथ फेर देता हूँ और जब बन्दे मेरी नाफ़रमानी करते हैं, तो मैं उन (बादशाहों) के दिलों को ग़ज़ब और उक़ूबत[3] के साथ फेर देता हूँ फिर वे उनको सख़्त अज़ाब की तक्लीफ़ देते हैं। (अबू नईम)

गुनाहों का वबाल[4]

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया– ''क़रीब ज़माना आ रहा है कि कुफ़्फ़ार[5] की तमाम जमाअ़तें तुम्हारे मुक़ाबले में एक दूसरे को बुलायेंगी जैसे खाने वाले अपने ख़्वान (दस्तरख़्वान) की तरफ़ एक दूसरे को बुलाते हैं।'' एक कहने वाले ने अ़र्ज़ किया और हम उस वक़्त (क्या) शुमार[6] में कम होंगे? आपने फ़रमाया– ''नहीं– बल्कि तुम उस रोज़ बहुत होगे, लेकिन तुम कूड़ा (नाकारा) होगे, जैसे हवा की रौ में कूड़ा उड़ जाता है, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारी हैबत[7] निकाल देगा और तुम्हारे दिलों में कमज़ोरी डाल देगा।'' एक कहने वाले ने अ़र्ज़ किया कि यह कमज़ोरी क्या चीज़ है? यानी इसका सबब क्या है? (आप सल्ल०) ने फ़रमाया– ''दुनिया से महब्बत और मौत से नफ़रत।''

(अबू दाऊद, बैहक़ी, हयातुल्-मुस्लिमीन)

1-प्रतिज्ञया या वचन तोड़ना, 2-ज़बरदस्ती, 3-यातना, 4-विपदा, कष्ट, 5-काफ़िरों, 6-संख्या, 7-आतंक, रोब।

गुनाहे कबीरा (बड़े गुनाह)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बड़े-बड़े गुनाह ये हैं- अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना और माँ-बाप (की नाफ़रमानी करके उन) को तक्लीफ़ देना और बेख़ता[1] जान को क़त्ल करना और झूठी क़सम खाना। (बुख़ारी)

हज़रत सफ़्वान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (इब्ने अस्साल) से (एक लम्बी हदीस में) रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई हुक्म सादिर फ़रमाए, उनमें से यह भी है कि किसी बेख़ता को किसी हाकिम के पास मत ले जाओ कि वह उसको क़त्ल करे (या उसपर कोई ज़ुल्म करे) और जादू मत करो। इलाआख़िर (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसाई)

और इन गुनाहों पर अज़ाब की वईद[2] आई है:-

1- हक़ारत से किसी पर हँसना।

2- किसी पर तान करना।

3- बुरे लक़ब से पुकारना।

4- बद-गुमानी करना।

5- किसी का ऐब तलाश करना।

6- बिला वजह बुरा-भला कहना।

7- चुग़ली खाना।

8- दोरूया होना यानी उसके मुँह पर वैसा, इसके मुँह पर ऐसा।

9- तोहमत लगाना।

1-निरपराध, 2-सज़ा का वादा।

10- धोका देना।

11- आर[1] दिलाना।

12- किसी के नुक़्सान पर ख़ुश होना।

13- तकब्बुर व फ़ख़ करना।

14- ज़ुल्म करना।

15- ज़रूरत के वक़्त बावजूद क़ुद्रत के मदद न करना।

16- किसी के माल का नुक़्सान करना।

17- किसी की आबरू को सदमा पहुँचाना।

18- छोटों पर रहम न करना।

19- बड़ों की इज़्ज़त न करना।

20- भूखों और नंगों की हैसियत के मुवाफ़िक़ ख़िदमत न करना।

21- किसी दुनियवी रंज से बोलना छोड़ देना।

22- जानदार की तस्वीर बनाना।

23- ज़मीन पर मौरूसी[2] का दावा करना।

24- हट्टे-कट्टे को भीख मांगना।

25- दाढ़ी मुँडवाना या कटाना।

26- काफ़िरों या फ़ासिक़ों का सा लिबास पहनना।

27- औरतों का मर्दाना वज़्अ[3] बनाना, जैसे- मर्दाना जूता पहनना। और बहुत से गुनाह हैं, यह नमूने के तौर पर लिख दिये हैं, सबसे बचना चाहिए, और जो गुनाह हो चुके हैं उनसे तौबा करता रहे कि तौबा से सब गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। (हयातुल्-मुस्लिमीन)

1-लज्जा, घृणा 2-पैतृक सम्पत्ति, 3-वेश-भूषा।

बाज़ कबाइर[1]

1- माँ-बाप को ईज़ा[2] देना।

2- शराब पीना।

3- किसी को पीछे बदी[3] से याद करना।

4- किसी के हक़ में गुमाने बद[4] करना।

5- किसी से वादा करके वफ़ा[5] न करना।

6- अमानत में ख़ियानत करना।

7- जुमे की नमाज़ तर्क करना।

8- किसी ग़ैर औरत के पास तन्हा बैठना।

9- काफ़िरों की रस्में पसन्द करना।

10- लोगों के दिखावे के लिए इबादत करना।

11- कुद्रत होने पर नसीहत तर्क करना।

12- किसी के ऐब ढूँढना।

13- जिस शैख़ से एतिक़ाद[6] हो उसकी पैरवी करके दूसरों को बुरा समझना दुरुस्त नहीं और पैरवी मुज्तहिद[7] और शैख़ की उसी वक़्त तक है जब तक उनकी बात अल्लाह और रसूल के ख़िलाफ़ न हो, अगर उनसे कोई ग़लती हो गई हो, उसमें पैरवी नहीं।

14- ईमान जब दुरुस्त होता है कि जब अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सब बातों में सच्चा समझे और उनको

1-कुछ बड़े पाप, 2-कष्ट, 3-बुराई, 4-कुविचार, 5-पूर्ण, 6-विश्वास, आस्था, 7-धार्मिक विषयों में विवेकपूर्ण निर्णय करने वाला।

मान ले। अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की किसी बात में भी शक करना, उसको झुठलाना या उसमें ऐब निकालना या उसका मज़ाक़ उड़ाना, इन सब बातों से ईमान जाता रहता है।

15- क़ुरआन और हदीस के खुले और वाज़ेह मतलब को न मानना, ऐंच-पेच करके अपने मतलब के मअ़ना गढ़ना बद्दीनी की बात है।

16- गुनाह को हलाल समझने से ईमान जाता रहता है।

17- अल्लाह तआ़ला शानुहू से निडर हो जाना या ना उम्मीद हो जाना कुफ़्र का शेवा[1] है।

18- अल्लाह तआ़ला को इख़्तियार है कि छोटे गुनाह पर सज़ा दे दे और बड़े गुनाह को महज़ अपनी मेहरबानी से मुआफ़ कर दे और बिल्कुल उस पर सज़ा न दे।

19- उम्र भर कोई कैसा ही भला-बुरा हो मगर जिस हालत पर ख़ातिमा होता है उसी के मुवाफ़िक़ जज़ा[2] व सज़ा होती है।

20- इसलिए गुनाहों से बचने का पूरा एहतिमाम ज़रूरी है, बसा-औक़ात[3] एक गुनाह सूए ख़ातिमा[4] का सबब[5] बन जाता है।

इश्राक फ़िल्-इबादत (इबादत में शिर्क करना)

तस्वीर रखना ख़ुसूसन् किसी बुज़ुर्ग की तस्वीर बरकत के लिए रखना और उसकी ताज़ीम[6] करना।

बिद्आ़तुल्[7]-क़ुबूर[8]

उ़र्स करना या उ़र्सों में शरीक होना।

1-ढंग, 2-अच्छे काम का बदला, 3-प्रायः, 4-निकृष्ट अन्त, 5-कारण, 6-आदर, 7-दीने इस्लाम में वह नयी बात शुरू करना जिसका आदेश अल्लाह और रसूल की तरफ़ से न हो, बल्कि स्वयं का मनगढ़न्त हो, 8-क़ब्रों।

बिद्आतुर्रुसूम[1]

1- किसी बुज़ुर्ग से मन्सूब[2] होने को काफ़ी समझना।

2- किसी की तारीफ़ में मुबालग़ा[3] करना।

3- ज़्यादा ज़ेबो-ज़ीनत[4] में मशग़ूल होना।

4- सादी वज़अ्[5] को मायूब[6] जानना।

5- मकान में तस्वीरें लगाना। (हयातुल्-मुस्लिमीन)

अ़लामाते क़हरे इलाही
(अल्लाह के क्रोध के लक्षण)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब माले ग़नीमत[7] और बैतुल्-माल[8] के माल को अपनी दौलत क़रार दिया जाए यानी बैतुल्-माल और क़ौमी ख़ज़ाना जो मुल्क, रइय्यत और मुस्तहिक़ लोगों के लिए होता है, उसको उमरा[9] और साहिबाने मन्सब[10] अपनी जागीर समझकर अपनी ज़ात व अपनी ऐशो-इश्रत[11] के लिए इस्तेमाल करने लगें और जब अमानत को माले ग़नीमत समझकर हज़्म किया जाने लगे और जब ज़कात को तावान[12] शुमार किया जाये और जब इल्म की तह्सील[13] दीन के लिए नहीं बल्कि महज़ दुनिया तलबी के लिए होने लगे और जब मर्द औ़रत की इताअ़त शुरू कर दे (यानी बजाए इसके कि ख़ुद क़व्वाम[14] रहे अपने आपको औ़रत की क़व्वामीयत[15] में दे दे और जब बेटी माँ की नाफ़रमानी और उससे

1-रस्मो-रिवाजों में नवीनता, 2-सम्बन्धित, 3-अतिशयोक्ति, 4-श्रृंगार व अलंकरण, 5-साधारण वेश-भूषा, 6-बुरा, 7-धार्मिक युद्ध में प्राप्त सम्पत्ति, 8-सार्वजनिक सम्पत्ति या माल, 9-धनवानों, 10-पदवाले, 11-भोग-विलास, 12-अर्थदण्ड, 13-प्राप्ति, 14-सरदार, 15-अधीनता।

सरकशी करने लगे और आदमी जब अपने दोस्त के ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो जाये, मगर अपने बाप से उतना ही दूर हो जाए और जब मस्जिदों में आवाज़ें ज़ोर से बुलन्द होने लगें और जब क़ौम की सरदारी और सरबराही[1] क़ौम का फ़ासिक़[2] इन्सान करने लगे और जब क़ौम का रहनुमा[3] क़ौम का बद्तरीन शख़्स होने लगे और जब किसी इन्सान की इज़्ज़त महज़ उसके शर[4] से बचने के लिए की जाये और जब गाने वालियाँ और बाजे आम हो जाएँ और जब एलानिया शराबों का दौर चलने लगे, और जब इस उम्मत के पिछले लोग अगले लोगों पर तानो-तश्नीअ़[5] और लानत करने लगें तो फिर तुम इंतिज़ार करो तुंद[6] व तेज़ सुर्ख़ आँधी का और ज़लज़लों की तबाह-कारियों का, ज़मीन के धंसने का, सूरतों के मस्ख़[7] होने का और पत्थरों के बरसने का और अल्लाह की तरफ़ से पै-दर-पै[8] नुज़ूले अज़ाब[9] का, जैसे मोतियों वग़ैरा की एक लड़ी है जो टूट गई हो और पैहम[10] व मुसल्सल[11] दाने गिर रहे हों।

(जामे तिर्मिज़ी)

1-प्रबन्ध, 2-पापी, 3-पथ प्रदर्शक, 4-बुराई, 5-व्यंग्य व कटाक्ष, 6-प्रचण्ड, 7-विकृत, 8-निरन्तर, 9-अल्लाह की तरफ़ से दुख, विपत्ति आदि का उतरना, 10-निरन्तर, 11-लगातार।

बाब- 6 (छठा परिच्छेद) हयाते तय्यिबा[1] के

सुब्हो-शाम

नबिय्युर्रह्मत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मामूलाते यौमिया[2]

बादे फ़ज्र

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल[3] था कि नमाज़े फ़ज्र पढ़ कर तस्बीहाते ज़िक्र के बाद मस्जिद में जाए-नमाज़[4] पर आलती-पालती मारकर चार ज़ानू बैठ जाते और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम परवाना-वार[5] पास आकर बैठ जाते यानी यही दरबारे नुबुव्वत था, यही आप का हल्क़-ए-तवज्जोह था, यही दरसगाह होती थी, यही महफ़िले अहबाब बनती थी, यहीं आप नुज़ूल शुदा वही[6] से सहाबा को मुत्तला फ़रमाते[7] थे, यहीं आप सल्ल० फ़ुयूज़े बातिनी[8] और बरकाते रूहानी की बारिश उन पर फ़रमाते, यहीं आप दीन के मसाइल, मुआ़शरत के तरीक़े, मुआ़मलात के ज़ाबिते, अख़्लाक़ की बारीकियाँ उनको तालीम फ़रमाते, लोगों के आपस के मुआ़मलात और मुक़द्दमात के फ़ैसले फ़रमाते।

अक्सर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा से दर्याफ़्त फ़रमाते कि तुममें से किसी ने कोई ख़्वाब देखा हो तो बयान करे। आप सल्ल० ख़्वाब सुनते और उसकी ताबीर[9] फ़रमाते। कभी आप ख़ुद ही फ़रमाते कि आज मैंने यह ख़्वाब देखा है, फिर ख़ुद ही उसकी ताबीर बयान फ़रमा देते फिर बाद में आपने यह मामूल तर्क कर दिया था। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-पवित्र जीवन, 2-दिनचर्या, 3-नियम, 4-नमाज़ पढ़ने की जगह, 5-पतिंगों की तरह, 6-उतरी हुई वही या ख़बरें, 7-सूचित करते, 8-आन्तरिक दानशीलता, 9-स्वप्न फल बताना।

कभी सहाबा किराम रज़ि० अस्नाए गुफ़्तगू[1] अदब के साथ जाहिलिय्यत के क़िस्से बयान करते, क़सीदे और अशआर सुनाते या मज़ाह[2] की बातें करते। आप सुनते रहते कभी उन पर मुस्कुरा भी देते, उसके बाद आप इशराक़ की नवाफ़िल पढ़ते।

अक्सर उसी वक़्त माले ग़नीमत या लोगों के वज़ीफ़े तक़्सीम फ़रमाते।

जब आफ़्ताब[3] निकलकर दिन ख़ूब चढ़ जाता तो आप सलातुज़्ज़ुहा (चाश्त) की नफ़्लें कभी चार, कभी आठ रकअत पढ़कर मज्लिस बर्ख़ास्त फ़रमाते और जिन बीवी की बारी उस दिन होती उनके घर तशरीफ़ ले जाते। वहाँ घर के धंधों में लगे रहते, अक्सर घर के मुख़्तलिफ़ काम ख़ुद ही अंजाम देते दिन में सिर्फ़ एक बार खाना तनावुल फ़रमाते[4]। (सीरतुन्नबी)

बादे ज़ुहर

नमाज़े ज़ुहर बा-जमाअत पढ़कर मदीना के बाज़ारों में गश्त लगाते, दुकानदारों का मुआयना व इह्तिसाब फ़रमाते[5], उनका माल मुलाहज़ा फ़रमाते, उनके माल की अच्छाई-बुराई जांचते, उनके नाप-तौल की निगरानी फ़रमाते कि कहीं कम तो नहीं तौलते, बस्ती और बाज़ार में कोई हाजतमन्द[6] होता तो उसकी हाजत[7] पूरी फ़रमाते।

बादे अस्र

नमाज़े अस्र बा-जमाअत पढ़कर अज़्वाजे मुतह्हरात[8] में से एक-एक के घर तशरीफ़ ले जाते, हाल पूछते और ज़रा-ज़रा देर हर एक के यहाँ मुक़र्ररा वक़्त पर पहुँचते और सबको मालूम था कि आप वक़्त के बहुत क़द्र-शनास[9] और पाबन्द हैं।

1-बातचीत के दर्मियान, 2-हँसी, 3-सूर्य, 4-खाते, 5-हिसाब करते, 6-ज़रूरतमन्द, 7-ज़रूरत, 8-पवित्र पत्नियों, 9-पहचानने वाले, गुणज्ञ।

बादे मग़्रिब

नमाज़े मग़्रिब बाजमाअ़त पढ़कर और नवाफ़िले अव्वाबीन से फ़ारिग़ होकर जिन बीवी की बारी होती, आप शब[1] गुज़ारने के लिए वहीं ठहर जाते। अक्सर अज़्वाजे मुतह्हरात उसी घर में आकर जमा हो जातीं। मदीना की औ़रतें भी अक्सर जमा होतीं, इसलिए कि आप उस वक़्त औ़रतों को दीनी मसाइल की तालीम फ़रमाते, गोया यह मदरस-ए-शबीना[2] और मदरसए निस्वाँ[3] क़ाइम होता जिसमें इंतिहाई अदब और पर्दे के साथ औ़रतें इल्मे दीन, हुस्ने मुआ़शरत[4], हुस्ने अख़्लाक़[5] की बातें इस मुअ़ल्लिमे आ़लम[6] सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सीखतीं। अल्लाह के रसूल औ़रतों को (जिनकी गोदें बच्चों की पहली दरसगाह होती हैं।) इल्मे दीन से महरूम और तहज़ीबे इस्लामी से नाआशना[7] नहीं रखना चाहते थे। यही औ़रतें अपने मुक़द्दमात पेश करतीं, आप उनका फ़ैसला फ़रमाते। वे अपनी परेशानियाँ, शिकायतें मज्बूरियाँ बयान करतीं आप उनका हल फ़रमाते। अगर कोई बैअ़त[8] होना चाहती तो आप यहीं उनको बैअ़त फ़रमाते, इन उमूर[9] पर कि "अल्लाह का शरीक[10] न बनायेंगी, चोरी न करेंगी, बदकारी न करेंगी, अपने बच्चों को क़त्ल न करेंगी और किसी पर बोहतान न लगायेंगी और नेक कामों में रसूल के तरीक़े की ख़िलाफ़वर्ज़ी न करेंगी।"

आप सल्ल० उनको बैअ़त फ़रमाते और उनके लिए इस्तिग़्फ़ार करते। यह मदरसा नमाज़े इशा तक क़ाइम रहता, फिर आप नमाज़े इशा के लिये मस्जिद जाते, औ़रतें अपने-अपने घर वापस हो जातीं।

बादे इशा

नमाज़े इशा बा-जमाअ़त पढ़कर आप उस शब की क़ियामगाह[11] पर

1-रात्रि, 2-रात्रि की पाठशाला, 3-स्त्रियों की पाठशाला, 4-शिष्टाचार, 5-सद्व्यवहार, 6-जगतगुरु, 7-अनभिज्ञ, अपरिचित, 8-किसी पीर के हाथ पर मुरीद होना, गुरु से दीक्षा लेना, 9-कार्यों, 10-साझीदार, 11-निवास स्थान।

जाकर सो रहते, इशा के बाद बातचीत करना आप पसन्द न फ़रमाते। आप हमेशा दाहिनी करवट सोते, अक्सर दाहिना हाथ रुख़सारे[1] मुबारक के नीचे रख लेते, चेहरा-ए-अनवर[2] क़िब्ला की तरफ़ करके, मिस्वाक[3] अपने सिरहाने ज़रूर रख लेते। सोते वक़्त सूरए जुमा, सूरए तग़ाबुन, सूरए सफ़ की तिलावत फ़रमाते, फिर जब बेदार होते[4] मिस्वाक से दाँत मांझते, फिर आराम फ़रमाते। जब फ़ज्र की अज़ान होती तो उठते, हुजरा-ए-शरीफ़[5] ही में दो रकअ़त सुन्नत पढ़कर वहीं दाहिनी करवट ज़रा लेट रहते। फिर मस्जिद में तशरीफ़ लाते और बाजमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाते।

ये थे आपके मामूलाते रोज़ाना।

(अव्वल तो पाँचों नमाज़ें ख़ुद ही क़ुद्रती तौर पर वक़्त की पाबन्दी सिखाती हैं थोड़ी देर बाद अगली नमाज़ का वक़्त आकर मुसलमान को मुतनब्बह[6] करता है कि इतना वक़्त गुज़र गया, इतना बाक़ी है जो कुछ काम करना हो, कर लो। इस पाबन्दिए वक़्त के अलावा आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुसूसियत[7] यह थी कि अपने हर काम के लिए वक़्त मुक़र्रर फ़रमा लेते और उसको पूरी पाबन्दी से निबाहते। इसी वजह से आप बहुत काम कर लेते थे। आपने कभी वक़्त की कमी और तंगी की शिकायत नहीं की। (माख़ूज़[8] अज़ सीरतुन्नबी सल्ल०, मुअल्लिफ़ा[9] मौलाना सय्यिद सुलैमान नदवी रहमतुल्लाहि अ़लैह।)

1-कपोल, गाल 2-प्रकाशमान मुख, 3-दातुन, 4-जागते, 5-कमरा, 6-सावधान, 7-विशेषता, 8-उद्धृत (अज़-से), 9-संपादक, रचनाकार।

दिन की सुन्नतें

सुबह-सवेरे उठते ही इन सुन्नतों पर अ़मल करना शुरू कर दें:-

1- नींद से उठते ही दोनों हाथों से चेहरे और आँखों को मलें ताकि नींद का ख़ुमार[1] दूर हो जाये। (शमाइले तिर्मिज़ी)

2- जागने के बाद जब आँख खुले तो तीन बार अल्हम्दु लिल्लाह कहें और तीन बार कलिमा-ए-तय्यिबा:-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

"ला इलाह इल्लल्लाहु, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" पढ़ें।

3- اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ۔

"अल्हम्दु लिल्ला हिल्लज़ी अह्याना बअ़्द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर"।

पढ़ना सुन्नत है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

अनुवाद: तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमें मार कर ज़िन्दगी बख़्शी और हमको उसी की तरफ़ उठकर जाना है।

जब भी सोकर उठें तो मिस्वाक करना चाहिए। (अबू दाऊद)

इस्तिन्जे[2] वग़ैरा के लिए पानी के बर्तन में हाथ न डुबोएँ बल्कि पहले दोनों हाथों को तीन मर्तबा धो लें तब पानी के अन्दर हाथ डालें। (तिर्मिज़ी)

उसके बाद फिर रफ़्ए-हाजत[3] और इस्तिन्जे के लिए जायें, उसके बाद अगर गुस्ल की हाजत[4] हो तो गुस्ल वर्ना वुज़ू या बसूरते बीमारी तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ें फिर मस्जिद में अव्वल वक़्त जाकर नमाज़ बा-जमाअ़त अदा करें।

घर से बाहर जाने की दुआ़

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

1-नशा, प्रभाव, 2-मूत्र या शौच के पश्चात् पानी लेना, 3-शौच निवृत्ति, 4-आवश्यकता।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जब कोई आदमी अपने घर से निकले तो कहे:-

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

"बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अलल्लाहि ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह।"

अनुवाद: मैं अल्लाह का नाम लेकर निकल रहा हूँ। अल्लाह ही पर मेरा भरोसा है किसी ख़ैर के हासिल करने या किसी शर से बचने में कामयाबी अल्लाह ही के हुक्म से हो सक्ती है। तो आलमे ग़ैब[1] में उस आदमी से कहा जाता है (यानी फ़िरिश्ते कहते हैं) अल्लाह के बन्दे तेरा यह अर्ज़ करना तेरे लिए काफ़ी है। तुझे पूरी रहनुमाई मिल गयी और तेरी हिफ़ाज़त का फ़ैसला हो गया और शैतान मायूस व नामुराद होकर उससे दूर हो जाता है।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाऊद, मआरिफ़ुल हदीस, हिस्ने हसीन)

और जब सुन्नते फ़ज्र पढ़कर अपने घर से नमाज़े फ़ज्र के लिए निकले तो अस्नाए राह[2] यह दुआ पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِىْ قَلْبِىْ نُوْرًا से

اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِىْ نُوْرًا तक

अल्लाहुम्मज्अल फ़ी क़ल्बी नूरन्--से--अल्लाहुम्म अअ्तिनी नूरन्[4] तक

(सुनने अबी दाऊद, बुख़ारी व मुस्लिम, अन इब्ने अब्बास, हिस्ने हसीन)

1-आवश्यकता, 2-परोक्ष लोक, 3-रास्ते में चलते समय, 4-यह पूरी दुआ पिछले पृष्ठ में आ चुकी है, वहां देख ले।

इश्राक़ की नमाज़

अगर कोई उज़्रे शरई न हो तो फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर इश्राक़ तक ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहें। इसमें अअ्ला दर्जा तो यह है कि उस मस्जिद में जिस जगह फ़र्ज़ पढ़े हैं, वहीं बैठे रहें, औसत दर्जा यह है कि उस मस्जिद में किसी जगह भी बैठ जायें, अदना दर्जा यह है कि मस्जिद से बाहर चले जायें, लेकिन ज़िक्रे इलाही बराबर ज़बान से अदा करते रहें, जब आफ़्ताब[1] निकलने के बाद उसमें चमक आ जाये तक़रीबन आफ़्ताब निकलने के पन्द्रह मिनट के बाद दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े तो पूरे एक हज और पूरे उमरे का सवाब मिलता है, इसको नमाज़े इश्राक़ कहते हैं। जो शख़्स इश्राक़ के वक़्त दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े तो उसके सब गुनाहे सग़ीरा[2] मुआफ़ कर दिये जाते हैं। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

सुबह की दुआ

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जो शख़्स सुबह इस आयत को पढ़ता है, उसकी दिन भर की छूटी हुई नेकियों का उसको सवाब मिल जाता है और जो शाम के वक़्त पढ़ता है, उसको रात भर की छूटी हुई नेकियों का सवाब मिलता है :

﴿ فَسُبْحَانَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝ يُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ط وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝﴾ سورة الروم آية: ١٧-١٩

फ़सुब्हानल्लाहि हीन तुम्सून व हीन तुस्बिहून। व लहुल् हम्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अशिय्यँव् व हीन तुज़्हिरून। युख़्रिजुल् हय्य मिनल् मय्यित व

1-सूर्य, 2-छोटा पाप।

इश्राक़ की नमाज़

अगर कोई उज़्रे शरई न हो तो फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर इश्राक़ तक ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहें। इसमें अअ़्ला दर्जा तो यह है कि उस मस्जिद में जिस जगह फ़र्ज़ पढ़े हैं, वहीं बैठे रहें, औसत दर्जा यह है कि उस मस्जिद में किसी जगह भी बैठ जायें, अदना दर्जा यह है कि मस्जिद से बाहर चले जायें, लेकिन ज़िक्रे इलाही बराबर ज़बान से अदा करते रहें, जब आफ़्ताब[1] निकलने के बाद उसमें चमक आ जाये तक़रीबन आफ़्ताब निकलने के पन्द्रह मिनट के बाद दो रकअ़त नफ़्ल पढ़े तो पूरे एक हज और पूरे उमरे का सवाब मिलता है, इसको नमाज़े इश्राक़ कहते हैं। जो शख़्स इश्राक़ के वक़्त दो रकअ़त नफ़्ल पढ़े तो उसके सब गुनाहे सग़ीरा[2] मुआफ़ कर दिये जाते हैं। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

सुबह की दुआ

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जो शख़्स सुबह इस आयत को पढ़ता है, उसकी दिन भर की छूटी हुई नेकियों का उसको सवाब मिल जाता है और जो शाम के वक़्त पढ़ता है, उसको रात भर की छूटी हुई नेकियों का सवाब मिलता है :

﴿ فَسُبْحَانَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ٥ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ٥ يُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ٥ ﴾ سورة الروم آية: ١٧-١٩

फ़सुब्हानल्लाहि हीन तुम्सून व हीन तुस्बिहून। व लहुल् हम्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अशिय्यँव् व हीन तुज़्हिरून। युख़्रिजुल् हय्य मिनल् मय्यित व

1-सूर्य, 2-छोटा पाप।

युख़्रिजुल् मय्यित मिनल् हय्यि व युहयिल् अर्ज़ बअ़्द मौतिहा व कज़ालिक तुख़्रजून। (हिस्ने हसीन)

अनुवाद: जिस वक़्त तुम लोगों की शाम हो और जिस वक़्त तुम्हारी सुबह हो तो अल्लाह तआ़ला की तस्बीह[1] करो और आसमान और ज़मीन में वही अल्लाह तारीफ़ के क़ाबिल है और फिर तीसरे पहर और जब तुम लोगों की दोपहर हो (अल्लाह तआ़ला की तस्बीह करो) वही ज़िन्दे को मुर्दे से निकालता है और वही मुर्दे को ज़िन्दे से निकालता है और वही ज़मीन को मरे पीछे ज़िन्दा व शादाब[2] करता है और इसी तरह तुम (लोग मरे पीछे ज़मीन से) निकाले जाओगे।

नमाज़े इश्राक़ से फ़ारिग़ होने के बाद अपने ज़रिआ़-ए-मआ़श[3] में मश्ग़ूल हो जायें। कस्बे हलाल[4] व तय्यिब[5] हासिल करें। इसके अ़लावा दीगर फ़राइज़ व वाजिबात की अदाइगी और तमाम उमूरे ज़िन्दगी[6] में इत्तिबा-ए-सुन्नत[7] का एहतिमाम रखें।

फिर जब आफ़ताब काफ़ी ऊँचा हो जाये और उसमें रौशनी तेज़ हो जाये तो नमाज़े चाश्त अदा करें, चार रकअ़त से लेकर बारह रकअ़त तक इस नमाज़ की रकअ़तों की तादाद है। (मुस्लिम)

हदीस शरीफ़ में वारिद[8] है कि चाश्त की सिर्फ़ चार रकअ़त पढ़ने से बदन में जो तीन सौ साठ जोड़ हैं उन सबका सद्क़ा अदा हो जाता है और तमाम सग़ीरा[9] गुनाहों की मुआ़फ़ी हो जाती है। (मुस्लिम)

क़ैलूला (दोपहर के भोजनोपरान्त का विश्राम)

अगर फ़ुर्सत मुयस्सर हो तो इत्तिबा-ए-सुन्नत की निय्यत से दोपहर के खाने के बाद कुछ देर लेट जाये, इसको क़ैलूला कहते हैं। इस मस्नून अ़मल के लिए सोना ज़रूरी नहीं, सिर्फ़ लेट जाना ही काफ़ी है। (ज़ादुल्-मआ़द)

1-अल्लाह की पाकी बयान करना, 2-हरा भरा, 3-जीविका के साधन, 4-हलाल कमाई, वैध धंधा, 5-पवित्र, 6-जीवनचर्या, 7-सुन्नत का अनुसरण, 8-आया, 9-लघु, छोटे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि- "सलफ़े सहाबा"[1] पहले जुमा अदा करते थे, फिर कै़लूला करते थे। (बुख़ारी)

हज़रत खुवात बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि दिन निकलते वक़्त सोना बेअ़क़्ली और दोपहर को सोना आ़दत और दिन छिपते वक़्त सोना हिमाक़त है। (बुख़ारी) मतलब यह है कि रात के अ़लावा अगर किसी वक़्त नींद का ग़लबा हो ता दोपहर का क़ैलूला तो ठीक है मगर सुबह व शाम सोना हिमाक़त, बेअ़क़्ली और नादानी की दलील है या इन औक़ात में सोना तबीअ़त में ये ख़साइल[2] व सिफ़ात पैदा कर देता है। (अदबुल्-मुरफ़्द)

जुहर की नमाज़ बा-जमाअ़त अदा करने के बाद फिर अपनी मसरूफ़ियाते ज़िन्दगी में मश्ग़ूल हो जाए और अ़स्र की नमाज़ का ख़ास तौर पर ख़्याल रखे। क़ुरआन शरीफ़ में इसका ख़ुसूसी हुक्म आया है:-

﴿ حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ﴾ سورة البقرة آية: ٢٣٨

"हाफ़िज़ू अ़लस्सलवाति वस्सलातिल् वुस्ता"[3]

'सलातुलवुस्ता' से मुराद नमाज़े अ़स्र है, इसकी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बहुत ताकीद फ़रमाई है। (बिहिश्ती ज़ेवर)

अ़स्र की फ़र्ज़ नमाज़ से पहले चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ना सुन्नत है। और इसकी बड़ी फ़ज़ीलत वारिद[4] है। (तिर्मिज़ी)

फ़ज्र की नमाज़ की तरह अ़स्र की नमाज़ पढ़ने के बाद थोड़ी देर बैठे और ज़िक्रे इलाही करता रहे फिर दुआ माँगे। (बिहिश्ती ज़ेवर)

1-सहाबा के पूर्वज, 2-बुरी आदतें तथा मूर्खता इत्यादि, 3-मूर्खता इत्यादि के समतुल्य प्रभाव, 4-आयी।

रात की सुन्नतें

नमाज़े अव्वाबीन

मग़रिब की नमाज़ के बाद कम से कम छह रक्अत नमाज़ दो-दो रक्अत करके पढ़ी जाती हैं और ज़्यादा से ज़्यादा बीस रक्अत भी पढ़ सकते हैं। इन नमाज़ों का सवाब बारह साल की नफ़्लों के बराबर मिलता है।

(अद्दुर्रुल् मुख़्तार, सुनने अबी दाऊद, मिश्कात, बैहक़ी)

नमाज़े इशा

फिर वक्त पर नमाज़े इशा बा-जमाअ़त अदा करें।

इशा के फ़र्ज़ से पहले चार रक्अ़त सुन्नत हैं। (बदाए)

इशा की फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दो रक्अ़त सुन्नते मुअक्कदा हैं।

(मिश्कात)

इशा की इन दो सुन्नतों के बाद बजाए दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने के चार रक्अ़त नफ़्ल पढ़े तो शबेक़द्र के बराबर सवाब मिलता है। (अत्तर्ग़ीब)

और जिसकी तहज्जुद के वक्त आँख न खुलती हो तो यह चार रक्अ़त बादे इशा तहज्जुद की निय्यत से पढ़ लिया करे तो यह तहज्जुद में शुमार हो जाती हैं, अगर पिछली रात को आँख खुल जाये तो उस वक्त तहज्जुद पढ़ लें, वर्ना ये चार रक्अ़त ही काफ़ी हो जायेंगी। (बिहिश्ती ज़ेवर, अत्तर्ग़ीब)

वित्र के बाद दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ी जाती हैं।

फ़ायदा- बेहतर यह है कि दोनों जगह यानी वित्र से पहले चार रक्अ़त और वित्रों के बाद दो रक्अ़त नफ़्ल में तहज्जुद की निय्यत कर लिया करें तो इन्शा अल्लाह तआ़ला तहज्जुद की फ़ज़ीलत व सवाब से महरूमी न होगी।

नमाज़े तहज्जुद

हदीस शरीफ़ में आया है कि फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सबसे अफ़ज़ल[1] नमाज़ आख़िर शब[2] में तहज्जुद की नमाज़ है।

तहज्जुद का अफ़ज़ल वक़्त

रात का आख़िरी हिस्सा है, कम-से कम दो रक्अ़त, ज़्यादा से ज़्यादा बारह रक्अ़त हैं। (बुख़ारी, मुअत्ता इमाम मालिक)

तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने की हिम्मत न हो तो इशा की नमाज़ के बाद ही चन्द रक्अ़तें पढ़ लें, लेकिन सवाब में कमी हो जायेगी।

फ़र्ज़ नमाज़ के अ़लावा बाक़ी नमाज़ों को अपने घर में पढ़ना अफ़ज़ल है, लिहाज़ा तहज्जुद की नमाज़ घर ही में पढ़ना अफ़ज़ल है।

रात की नमाज़ में अफ़ज़ल यह है कि दो-दो रक्अ़त करके पढ़ी जाये, इसलिए तहज्जुद की भी दो-दो रक्अ़त पढ़नी चाहिए।

(हिस्ने हसीन, बिहिश्ती गौहर)

घर में आमदो-रफ़्त[3] की दुआएँ और सुन्नतें

जो कोई शख़्स अपने घर आए तो यह दुआ़ पढ़कर घरवालों को सलाम करे:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلِجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا۔

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरल् मौलजि व ख़ैरल् मख़्रजि बिस्मिल्लाहि वलज्ना व बिस्मिल्लाहि ख़रज्ना व अ़लल्लाहि रब्बिना तवक्कल्ना"।

(हिस्ने हसीन)

1-उत्तम, 2-रात का अन्तिम प्रहर, 3-आवागमन।

कहानियाँ या दिलचस्पी की बातें करना मस्नून है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

अंधेरी रात हो और रौशनी का इंतिज़ाम न हो तब भी मस्जिद में जाकर नमाज़े इशा अदा करना मूजिबे बशारत[1] व सवाबे अ़ज़ीम है।

(इब्ने माजा)

हर फ़र्ज़ नमाज़ को जमाअ़त के साथ तक्बीरे ऊला (पहली तक्बीर) के साथ अदा करना सुन्नत है। (अत्तर्ग़ीब)

जो शख़्स चालीस रात इशा की नमाज़ जमाअ़त व तक्बीरे ऊला से अदा करे तो उसके लिए दोज़ख़ से नजात लिख दी जाती है। (इब्ने माजा)

रात की हिफ़ाज़त

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रात गए क़िस्से, कहानियों की महफ़िल में न जाया करो, क्योंकि तुममें से किसी को ख़बर नहीं कि उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ में से किस-किस को कहाँ-कहाँ फैलाया है, इसलिए दरवाज़े बन्द कर लिया करो, मश्कीज़ों[2] का मुँह बाँध दिया करो, बर्तनों को औंधा कर दिया करो और चिराग़ गुल कर दिया करो। (बुख़ारी, अलअदबुल्-मुफ़रद).

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना कि जब तुम रात को कुत्ते का भौंकना और गधे का चिल्लाना सुनो तो शैताने मर्दूद से अल्लाह की पनाह मांगो (यानी أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ "अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम" पढ़ो) क्योंकि कुत्ते और गधे वह चीज़ देखते हैं जो तुम नहीं देखते, और रात को जब लोग बाज़ारों में फिरना मौक़ूफ़[3] करें और रास्ते बन्द हो जायें तो तुम घर से बहुत कम निकला करो, इसलिए कि रात को अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ात में से जिसको चाहता है परागन्दा[4] करता है। (मिश्कात)

1-ख़ुशख़बरी का कारण, 2-छोटी मशक, 3-छोड़ दें, 4-अस्त-व्यस्त, उद्विग्न।

शाम और रात की एहतियात

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब शाम का वक़्त हो, तो अपने छोटे बच्चों को (गली-कूचों में फिरने से) रोको, क्योंकि शयातीन का लश्कर शाम के वक़्त (हर चहार यानी चारों तरफ़) फैल जाता है। हाँ जब रात का कुछ हिस्सा गुज़र जाए तो फिर बच्चों को छोड़ देने में कोई मुज़ाइक़ा[1] नहीं, और रात को दरवाज़े बन्द कर दिया करो और बन्द करते वक़्त अल्लाह तआला का नाम ले लिया करो (बिस्मिल्लाह या और कोई दुआ) क्योंकि शैतान उस दरवाज़े के खोलने की क़ुद्रत नहीं रखता जो अल्लाह के नाम के साथ बन्द किया गया हो और अपने मश्कों के दहाने[2] जिनमें पानी हो, उनको बांध दिया करो और बांधते वक़्त अल्लाह तआला का नाम ले लिया करो। और अपने पानी के बर्तनों को ढाँक दिया करो और ढाँकते वक़्त अल्लाह तआला का नाम ले लिया करो, अगर्चे बर्तन पर कोई चीज़ अरज़न ही रख दिया करो (यानी अगर बर्तन पूरा ढाँक सको तो दफ़ए कराहत[3] और दफ़ए मज़र्रत[4] के लिए इतना ही काफ़ी है कि बर्तन की चौड़ाई में कोई लकड़ी वग़ैरा ही रख दो) और अपने चिराग़ बुझा दिया करो।

(सहीहैन)

बिस्तर साफ़ करना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– "जब कोई अपने बिस्तर पर लेटने का इरादा करे तो उसे चाहिए कि अपनी लुंगी के अन्दरूनी पल्लू को खोलकर उससे बिस्तर झाड़ ले, मालूम नहीं क्या चीज़ उसके बिस्तर पर पड़ी हो, फिर दायीं करवट पर लेटे और यह दुआ पढ़े:–

1-हानि, 2-मुख, 3-कराहियत या घृणा को ख़त्म करने, 4-नुक़्सान, तक्लीफ़ से बचने के लिये।

بِاسْمِكَ رَبِّيْ وَضَعْتُ جَنْبِيْ فَاِنْ احْتَسَبْتَ نَفْسِيْ فَارْحَمْهَا وَاِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ الصَّالِحِيْنَ اَوْ قَالَ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ۔

"बिस्मिक रब्बी व ज़अ़तु जम्बी फ़इनिह्तसब्त नफ़्सी फ़र्हम्हा व इन् अर्सल्तहा फ़हफ़ज़्हा बिमा तह्फ़ज़ु बिहिस्सालिहीन अव् काल इबादकस्सालिहीन"

अनुवाद: आप ही के नाम के साथ मैंने अपना पहलू रखा पस अगर आप हिसाब लें मेरी जान का तो उस पर रहम फ़रमाना और अगर फिर आप उसे भेजें तो उसकी हिफ़ाज़त करना जिस तरह हिफ़ाज़त करते हैं आप अपने नेक बन्दों की। (मिश्कात, अल्अदबुल्-मुफ़्रद)

मुतफ़र्रिक़ सुन्नतें (विविध सुन्नतें)

सोने के लिए फिर मिस्वाक कर ले। (मिश्कात)

सोने से पहले दोनों हाथों की हथेलियाँ मिला कर उन पर एक मर्तबा بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ *बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम* पढ़कर सूरए इख़्लास (यानी कुल हुवल्लाहु अहद पूरी) पढ़ें, फिर पूरी बिस्मिल्लाह पढ़कर قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ *"क़ुल् अऊ़ज़ु बिरब्बिल् फ़लक़"* और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ *"क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास"* पढ़ें और दोनों हाथों पर फूँक कर सर से पैर तक जहाँ तक हाथ पहुँचे फेर लें। पहले सामने के हिस्से पर पैरों तक उसके बाद कमर तक हाथ फेरें, इसी तरह तीन बार करें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह मामूल था। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी, हिस्ने हसीन)

रात की दुआएँ

वे दुआएँ जो रात में पढ़ी जाती हैं :-

1- सूरए बक़रा की दो आख़िरी आयतें पढ़ें। (सिहाहे सित्ता)

सोते वक़्त तीन बार इस्तिग़फ़ार पढ़े :-

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ

"अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूमु व अतूबु इलैह"
(तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

यह सुन्नत है, हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की।

तहारत[1] के साथ सोयें। (अत्तर्ग़ीब)

पहले से वुज़ू है तो काफ़ी है वर्ना वुज़ू कर लें, वुज़ू न करें तो सोने की निय्यत से तयम्मुम ही कर लें। (ज़ादुल्-मआ़द)

ख़्वाब (स्वप्न)

जब कोई अपने ख़्वाब में पसन्दीदा चीज़ देखे तो उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे और उसको बयान करे। (मुस्लिम, नसाई, बुख़ारी)

और दोस्त के अ़लावा किसी से बयान न करे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और जब ख़्वाब में नापसन्दीदा बात देखे तो बायीं तरफ़ तीन बार थुत्कार दे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

(*अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम*) पढ़े तीन-तीन बार और किसी से उसका ज़िक्र न करे। (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद)

फ़िर वह ख़्वाब हर्गिज़ उसको नुक़्सान न पहुँचाएगा। (सिहाहे सित्ता)

और जिस करवट पर है उसको बदल दे। (मुस्लिम)

या उठकर नमाज़ पढ़े। (बुख़ारी, हिस्ने हसीन)

1-पवित्रता।

ततिम्मा[1]

मुतज़क्करए बाला[2] इबादात व ताआ़त[3] के अ़लावा एक मुसलमान की ज़िन्दगी सुबह से रात तक दीनी व दुनियवी तमाम मुआ़मलात में निहायत सीधी-सादी और पाको-साफ़ होना चाहिए, मसलन अपने अहलो-इयाल[4] और दीगर मुतअ़ल्लिक़ीन[5] के हुक़ूक़ की अदाइगी में, अपने ज़रिअ़-ए-मआ़श[6] के मुआ़मलात में, ग़मी व ख़ुशी की तक़रीबात[7] में, दोस्त अहबाब के तअ़ल्लुक़ात में, अपने ज़ाती हालात में, रहने-सहने, नशिस्त व बरख़ास्त[8], खाने-पीने, लिबास व पोशाक, वज़्अ़ व क़त्अ़[9], औसाफ़[10] व अख़्लाक़ में निहायत पाकीज़गी और शराफ़ते नफ़्स के साथ होना चाहिए। हालाँकि मुआ़शरा व माहौल के ग़लबे से इन बातों का हासिल होना और इन पर कारबन्द[11] होना बज़ाहिर बहुत मुश्किल मालूम होता है, लेकिन अपने आक़ाए नामदार और मुहसिने इन्सानियत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताहिर व मुतह्हिर[12] ज़िन्दगी का मुतालआ़[13] किया जाये और उनकी तक़लीद[14] और तालीमात की पैरवी की जाये तो फिर हर बात निहायत आसान मालूम होती है और इसी इत्तिबाए सुन्नते मुक़द्दस (पाक सुन्नत की पैरवी) का दूसरा नाम हयाते तय्यिबा[15] है और इसकी तफ़्सील[16] निहायत वज़ाहत[17] के साथ इस किताब में मुख़्तलिफ़ उन्वानात[18] के तहत मज़्कूर[19] है।

हिदायत (शिक्षा, आदेश)

क़ाबिले तवज्जोह बात यह है कि मुतज़क्किरए बाला[20] इबादात व ताआ़त[21] के लिए सुबह से रात तक अपनी तमाम ताआ़त व मुआ़मलात व मुआ़शरत व अख़्लाक़ में ख़ास तौर पर इत्तिबा-ए-सुन्नते नबी करीम

1-परिशिष्ट, 2-उपर्युक्त, 3-आज्ञा पालन, इबादत, 4-परिवार, 5-अन्य संबंधियों, 6-आजीविका के साधन, 7-उत्सव, 8-बैठने-उठने, 9-वेश-भूषा, 10-गुण, 11-पाबन्द, 12-पवित्र, 13-अध्ययन, 14-अनुसरण, 15-पवित्र व पुनीत जीवन, 16-विस्तार, 17-स्पष्टता, 18-शीर्षकों, 19-चर्चित, 20-उपर्युक्त, 21-इबादतों।

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ख़्याल व एहतिमाम रखें, जिनकी तफ़्सील[1] अपने-अपने मक़ाम पर इस किताब में वज़ाहत[2] के साथ मज़्कूर[3] है।

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِيْنُ وَمَا تَوْفِيْقِىْ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

व मा अ़लैना इल्लल् बलाग़ुल मुबीन व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्ला हिल् अ़लिय्यिल अ़ज़ीम।

1-विस्तार, 2-स्पष्टता, 3-वर्णित।

बाब-7 (सातवाँ परिच्छेद) मुनाकहत[1] व नवमौलूद[2]

(विवाह व नवजात शिशु)

मुनाकहत व मुतअ़ल्लिक़-ए-मुआ़मलात[3]

(विवाह तथा उससे सम्बन्धित आदेश)

निकाह की तर्ग़ीब[4]

हज़रत मुहम्मद बिन समला रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "मुसलमानो! निकाह किया करो, क्योंकि मैं तुम्हारे सबब से इस बात में दुनिया की और क़ौमों से सबक़त[5] ले जाना चाहता हूँ कि मेरी उम्मत शुमार[6] में उन सबसे ज़्यादा रहे।"

"मुसलमानो! राहिबों[7] की तरह मुजर्रद[8] न रहा करो।" (बैहक़ी)

हज़रत इब्ने मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "नौजवानो! तुम में से जो निकाह की ज़िम्मेदारियाँ उठाने की ताक़त रखता हो, उसे निकाह कर लेना चाहिए क्योंकि इससे निगाहें नीची रहती हैं और शर्मगाहों[9] की हिफ़ाज़त होती है और जो निकाह की ज़िम्मेदारियाँ न उठा सकता हो, उसको चाहिए कि शहवत[10] का ज़ोर तोड़ने के लिए रोज़े रखे।"

(बुख़ारी व मुस्लिम)

औ़रत का इंतिख़ाब[11]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "औ़रतों से उनके हुस्नो-जमाल[12] की बुनियाद पर निकाह न करो, हो सकता है कि

1-निकाह, विवाह, 2-नवजात शिशु, 3-विषय से संबन्धित, 4-प्रेरणा, 5-आगे निकल जाना, 6-संख्या, 7-संन्यासियों, ब्रहमचारियों, 8-अविवाहित, 9-गुप्तांगों, 10-काम-वासना 11-चयन, 12-सुन्दरता।

उनका हुस्नो-जमाल उन्हें तबाही की राह पर डाल दे और न उनके माल व दौलत की वजह से शादी करो, हो सकता है कि उनका माल उनको सरकशी[1] और तुग़यानी[2] में मुब्तला कर दे, बल्कि दीन की बुनियाद पर उनसे शादी करो और काली-कलूटी बांदी जो दीन और अख़्लाक़ से आरास्ता[3] हो वह बहुत बेहतर है उस ख़ानदानी हसीना से जो बद-अख़्लाक़[4] हो।" (इब्ने माजा)

निकाह का पैग़ाम

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "जब तुम्हारे यहाँ कोई ऐसा शख़्स निकाह का पैग़ाम भेजे जिसके दीन और अख़्लाक़ से तुम मुत्मइन[5] और ख़ुश हो तो उससे शादी कर दो। अगर तुम ऐसा न करोगे तो ज़मीन में ज़बरदस्त फ़ित्ना व फ़साद फैल जायेगा।" (तिर्मिज़ी)

निकाह के लिए इजाज़त

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "निकाह शुदा औरत का निकाह उसकी राय लिए बग़ैर न किया जाये और दोशीज़ा[6] का निकाह उससे इज़्न[7] लिए बग़ैर न किया जाए।" लोगों ने पूछा- या रसूलल्लाह! दोशीज़ा का इज़्न क्या होगा? फ़रमाया "उसका ख़ामोश रहना ही उसका इज़्न है।" (ज़ादुल-मआद)

निकाह में बरकत

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "सबसे ज़्यादा बाबरकत निकाह वह है जिसमें कम से कम मसारिफ़[8] हों।" (मिश्कात)

1-अवज्ञाकारी, 2-उद्दण्डता, पाप, 3-युक्त, 4-दुराचारी, 5-संतुष्ट, 6-कुँवारी लड़की, 7-अनुमति, 8-ख़र्च।

मह्‌र[1]

हज़रत उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़माने में लोग, अजमी लोगों[2] के रस्मो-रिवाज से मुतअस्सिर होकर भारी-भारी मह्‌र मुक़र्रर करने लगे तो आपने ख़ुत्बे में लोगों को तवज्जोह[3] दिलाई और बताया कि मुसलमानों को सोचने का अंदाज़ क्या होना चाहिए।

लोगो! औ़रतों के भारी-भारी मह्‌र न मुक़र्रर करो, इसलिए कि अगर यह दुनिया ज़रा भी इ़ज़्ज़त और शरफ़[4] की चीज़ होती और अल्लाह की नज़र में यह कोई बड़ाई की बात होती तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सबसे ज़्यादा इसके मुस्तहिक़[5] थे कि वह ज़्यादा से ज़्यादा मह्‌र मुक़र्रर फ़रमाते। लेकिन जहाँ तक मुझे इल्म है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़ुद अपने निकाह में भी बारह ओक़िया[6] से ज़्यादा मह्‌र मुक़र्रर नहीं फ़रमाया और न साहिबज़ादियों की शादी में बारह ओक़िया से ज़्यादा मह्‌र बाँधा।

एक बूढ़ी ख़ातून खड़ी हुयीं, उन्होंने क़ुरआन की आयत

وَاٰتَيْتُمْ اِحْدٰهُنَّ قِنْطَارًا

"व आतैतुम इह्‌दाहुन्न क़िन्तारन" (और तुमने इनमें से किसी एक को बहुत-सा माल दे दिया हो) पढ़ते हुए इस पाबन्दी पर एतिराज़ किया हज़रत उ़म्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मिम्बर पर से यह फ़रमाते हुए उतर गये कि:-

كُلُّ النَّاسِ اَعْلَمُ مِنْ عُمَرَ حَتّٰى الْعَجَائِزُ

"कुल्लुन्नासि अअ़्लमु मिन् उ़म्र हत्तल् अ़जाइज़" (यानी हर शख़्स उ़म्र से ज़्यादा इल्म वाला है, हत्ताकि बुढ़िया भी।) और आप इस मस्अले में शिद्दत[7] फ़रमाने से रुक गए। (तिर्मिज़ी)

1-वह रक़म जो निकाह के समय दुल्हन को दिये जाने के लिए निर्धारित होती है, 2-जो अरबी न हो, 3-ध्यान, 4-सम्मान, 5-योग्य, 6-आधी छटांक से अधिक की एक तौल, 7-सख़्ती।

महर अदा करने की निय्यत

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– जिस किसी मर्द ने भी किसी औरत से थोड़े या ज़्यादा महर पर निकाह किया और उसके दिल में महर अदा करने का इरादा नहीं है तो उसने औरत को धोका दिया, फिर वह महर अदा किये बग़ैर मर गया तो वह अल्लाह तआला के हुज़ूर इस हाल में हाज़िर होगा कि ज़िना[1] का मुज्रिम होगा।"

निकाह का इनइक़ाद[2]

निकाह होने के लिए यह भी शर्त है कि कम-से कम दो मर्दों के या एक मर्द और दो औरतों के सामने किया जाये और वे अपने कानों से निकाह होते और वे दोनों से इजाब व क़बूल[3] के लफ़्ज़ कहते सुनें तब निकाह होगा। (बिहिश्ती ज़ेवर)

शर्अ[4] में इसका बड़ा ख़्याल किया गया है कि बेमेल और बेजोड़ निकाह न किया जाये यानी लड़की का निकाह ऐसे मर्द से न करो जो उसके बराबर के दर्जे का न हो। (शर्हुल्‌बिदाया, बिहिश्ती ज़ेवर)

बराबरी की कई क़िस्में होती हैं:–

1–नसब[5] में बराबर होना, 2–मुसलमान होना, 3–दीनदारी, 4–मालदारी, 5–पेशा या फ़न में हमपल्ला[6] होना।

(आलमगीरी, बिहिश्ती ज़ेवर)

निकाह के लिए इस्तिख़ारा[7] की दुआ

अगर किसी लड़की या औरत से निकाह करने का इरादा हो तो अव्वल तो पैग़ाम या मंगनी का किसी से इज़्हार न करे, फिर ख़ूब अच्छी तरह वुज़ू

1–बलात्कार, 2–सभा, समारोह, 3–निकाह के समय दुल्हा-दुल्हन का एक दूसरे को स्वीकार करना, 4–इस्लामी क़ानून, 5–जाति, 6–बराबर, 7–किसी काम के बारे में जानना कि अच्छा है या बुरा।

करके जितनी नफ़्लें हो सके पढ़े, फिर ख़ूब अल्लाह तआ़ला की हम्दोसना, अ़ज़्मत और बुज़ुर्गी बयान करे और उसके बाद यह कहे:-

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَآ اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَآ اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ فَاِنْ رَاَيْتَ اَنَّ فِیْ فُلَانَةٍ इस जगह उसका नाम लिया जाये خَيْرًا فِیْ دِيْنِیْ وَدُنْيَایَ وَاٰخِرَتِیْ فَاقْدِرْهَا لِیْ وَاِنْ كَانَ غَيْرُهَا خَيْرًا مِّنْهَا فِیْ دِيْنِیْ وَاٰخِرَتِیْ فَاقْدِرْهَا لِیْ۔

"अल्लाहुम्म इन्नक तक़्दिरु व ला अक़्दिरु व तअ़्लमु व ला अअ़्लमु व अन्त अ़ल्लामुल ग़ुयूबि। फ़इन् रऐत अन्न फ़ी फ़ुलानतिन् (इस जगह उसका नाम लिया जाये) *ख़ैरन् फ़ी दीनी व दुन्याय व आख़िरती फ़क़्दिर्हा ली व इन् कान ग़ैरुहा ख़ैरम् मिन्हा फ़ी दीनी व आख़िरती फ़क़्दिर्हा ली।*

अनुवाद: ऐ अल्लाह ! तुझे क़ुद्रत है और मुझे क़ुद्रत नहीं है और तू जानता है और मैं नहीं जानता हूँ और तू ग़ैबों[1] का हाल जानता है, पस तू अगर जानता है कि फ़ुलानी[2] औरत (यहाँ उस औरत का नाम लेवे) मेरे लिए दीन व दुनिया और आख़िरत के एतिबार से बेहतर है तो उसे मेरे क़ाबू में कर दे और अगर उसके अ़लावा (कोई दूसरी औरत) मेरे दीन व आख़िरत के लिए बेहतर है तो उसी को मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा।

(मुस्लिम शरीफ़, शमाइले तिर्मिज़ी)

निकाह के लिए ख़ुत्बा-ए-मस्नूना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهٗ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ط

1-परोक्ष, 2-अमुक।

أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ وَشَرُّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَكُلُّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ۔ مَنْ يُطِعِ اللهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ رَشَدَ وَمَنْ يَعْصِ اللهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّهُ لَا يَضُرُّ إِلَّا نَفْسَهُ۔

أَمَّا بَعْدُ: أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ اللهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُطِعِ اللهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

اَلنِّكَاحُ مِنْ سُنَّتِي فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِي فَلَيْسَ مِنِّي۔

अल्हम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नुअ्मिनु बिही व नतवक्कलु अ़लैहि व नऊ़ज़ु बिल्लाहि मिन् शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन् सय्यिआति अअ्मालिना मंय्यह्दिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ल लहू व मंय्युज़्लिल्हु फ़ला हादिय लहू व अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू अर्सलहू बिल्हक़्क़ि बशीरंव् व नज़ीरा।

अम्मा बादु: *फ़इन्न ख़ैरल् हदीसि किताबुल्लाहि व ख़ैरल्हद्यि हद्यु मुहम्मदिन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम व शर्रल् उमूरि मुह्दसातुहा व कुल्लु बिद्अ़तिन् ज़लालतुंव् व कुल्लु ज़लालतिन् फ़िन्नार मंय्युतिइल्लाह व रसूलहू फ़क़द् रशद व मंय्यअ़्सिल्लाह व रसूलहू फ़इन्नहू ला यज़ुर्रु इल्ला नफ़्सहू।*

अम्मा बादु: *अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम।*

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख़लक़कुम् मिन् नफ़्सिंव् वाहिदतिंव् व ख़लक़ मिन्हा ज़ौजहा व बस्स मिन्हुमा रिजालन् कसीरंव व निसाआ। वत्तक़ुल्लाहल्-

लज़ी तसाअलून बिही वलअर्हाम इन्नल्लाह कान अ़लैकुम् रक़ीबा।
या अय्युहल्लज़ीन आमनुत्तकुल्लाह हक़्क़ तुक़ातिही वला तमूतुन्न इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून। या अय्युहल्लज़ीन आमनुत्तक़ुल्लाह व क़ूलू क़ौलन् सदीदंय्युस्लिह् लकुम् अअ़्मालकुम् व यग़्फ़िर लकुम् ज़ुनूबकुम्। व मंय्युतिइल्लाह व रसूलहू फ़क़द् फ़ाज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा।

अन्निकाहु मिन् सुन्नती फ़मन् रग़िब अन् सुन्नती फ़लैस मिन्नी।

अनुवादः अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि हम उसकी तारीफ़ करते हैं, और उससे मदद मांगते हैं, और उससे गुनाहों की बख़्शिश चाहते हैं, और हम उसपर ईमान लाते हैं, और उसी पर भरोसा करते हैं, और हम अल्लाह से अपने नफ़्सों की शरारत और अपने आमाल की बुराई से पनाह मांगते हैं। जिसको अल्लाह तआ़ला हिदायत करे उसको कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसको वह गुमराह करे उसको कोई हिदायत नहीं कर सकता और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह एक है। उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) उसके बन्दे और पैग़म्बर हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनको हक़ की बातें देकर भेजा (और) जो बशारत[1] देने वाले और डराने वाले हैं।

लेकिन हम्दो-सलात के बाद पस सब कलामों में से बेहतर अल्लाह तआ़ला का कलाम है और सब तरीक़ों से अच्छा तरीक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का है और सब चीज़ों से बुरी नयी बातें (बिद्अ़तें) हैं। और हर नयी बात गुमराही है और हर गुमराही दोज़ख़ में (ले जानेवाली) है। जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की ताबेदारी[2] करेगा, वह हिदायत पायेगा और जो नाफ़रमानी करेगा वह अपना ही नुक़्सान करेगा। लेकिन बाद हम्दो-सलात के, पनाह चाहता हूँ मैं अल्लाह की शैताने मर्दूद से, ऐ लोगो! अपने परवरदिगार से डरो, जिसने तुमको एक शख़्स (यानी आदम अ़लैहिस्सलाम) से पैदा किया और उससे उसकी बीवी को निकाला और इन

1-ख़ुशख़बरी, 2-अनुसरण।

दोनों से बहुत मर्द और औरतें दुनिया में फैला दीं और उस अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम बाहम सवाल करते हो और क़राबत[1] की (हक़-तलफ़ी) से (बचो)। बेशक! अल्लाह तुम पर निगहबान है। ऐ मुसलमानो! अल्लाह से डरो, जैसा उससे डरना चाहिए और न मरो मगर इस्लाम की हालत में, ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और मज़्बूत बात कहो ताकि अल्लाह तुम्हारे आमाल की इस्लाह कर दे और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श दे और (याद रखो) कि जिसने अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी की वह बड़ी कामयाबी को पहुँचा।

निकाह करना मेरी सुन्नत है, जिस शख़्स ने मेरी सुन्नत पर (अमल करने से) एराज़ किया[2] वह मुझसे नहीं है। (हिस्ने हसीन, शमाइले तिर्मिज़ी)

इस ख़ुत्बा-ए-मस्नूना के बाद ईजाबो-क़बूल[3] करना चाहिए।

ईजाब व क़बूल के बाद ज़ौजैन[4] के हक़ में दुआ करना चाहिए। निकाह के बाद छुहारे, ख़ुर्मा या खजूर लुटाना या तक़्सीम करना मस्नून है। (ज़ादुलमआद)

निकाह के बाद मुबारकबाद की दुआ

निकाह करने वाले जोड़े से आप सल्ल० फ़रमाया करते थे:-

بَارَكَ اللّٰهُ لَكُمَا وَبَارَكَ عَلَيْكُمَا وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِىْ خَيْرٍ-

"बारकल्लाहु लकुमा व बारक अलैकुमा व जमअ बैनकुमा फ़ी ख़ैर।"

अनुवाद: अल्लाह तआला तुम्हें बरकत दे और तुम दोनों पर बरकत नाज़िल करे और तुम दोनों का ख़ूब निबाह करे। और फ़रमाया करते थे कि अगर तुम में से कोई अपनी ज़ौजह[5] के पास जाना चाहे तो यह दुआ पढ़े:-

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا

"बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निबनश्शैतान व जन्निबिश्शैतान मा रज़क़्तना।"

1-नातेदारी, 2-विमुख होना, 3-निकाह के समय दुल्हा-दुल्हन का एक दूसरे को स्वीकार करना, 4-पति-पत्नी, 5-पत्नी।

लाह तआ़ला का नाम लेकर यह काम करता हूँ। ऐ
बचा और जो औलाद तू हमको दे उससे (भी) शैतान

ज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे के घर में, माल में या औलाद में अगर बरकत अ़ता फ़रमा दें और वह कहे :-

مَاشَآءَ اللّٰهُ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔

"मा शाअल्लाहु ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह"

अनुवाद: क्या (बेहतर) अल्लाह तआ़ला ने चाहा गुनाहों से बचाना और नेकियों की क़ुव्वत देना, अल्लाह ही की तरफ़ से है।" तो वह शख़्स मौत के अ़लावा कोई और तक्लीफ़ न देखेगा। (ज़ादुल्मआ़द)

पहली रात दुल्हन को कुछ हदिया भी देना मस्नून है।

वलीमा[1]

शबे-अ़रूसी[2] गुज़ारने के बाद अपने अ़ज़ीज़ों, दोस्तों और रिश्तेदारों और मसाकीन[3] को दावते वलीमा का खाना खिलाना सुन्नत है।

(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

वलीमा के लिए बहुत बड़े पैमाने पर इंतिज़ाम करने की ज़रूरत नहीं है, थोड़ा खाना चन्द लोगों को खिला देना भी काफ़ी है। (बिहिश्ती ज़ेवर)

वलीमे में इत्तिबाए सुन्नत (सुन्नत की पैरवी) की निय्यत रखना चाहिए जिस वलीमे में ग़रीब शरीक न किये जायें और जो महज़ नामो-नुमूद[4] के लिए किया जाये उसमें कुछ ख़ैरो-बरकत नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी और गुस्सा का अन्देशा[5] है। (ज़ादुल्-मआ़द, बिहिश्ती ज़ेवर)

1-निकाह के बाद दुल्हा की ओर से दिया जाने वाला खाना या भोजन, 2-सुहाग रात, 3-निर्धनों, 4-ख्याति, दिखावा, 5-ख़तरा।

निकाह के बाज़ आमाले मस्नूना

1- साहिबे इस्तिताअ़त[1] के लिए निकाह करना मस्नून है।

2- बुलूग़[2] के बाद फ़ौरन निकाह करना मस्नून है।

3- निकाह से पहले मंगनी यानी पैग़ाम भेजना मस्नून है।

4- मंगनी भेजना लड़के या लड़की वाले की तरफ़ से हो, दोनों तरीक़े मस्नून हैं।

5- नेक और सालिहा[3] की तलाश मस्नून है।

6- बयक वक़्त चार निकाह करना जाइज़ है, क़ुरआन व हदीस से साबित है बशर्ते कि सबके हुक़ूक़ अदा कर सके।

7- बेवा[4] से निकाह करना भी मस्नून है।

8- शव्वाल[5] के महीने में निकाह किया जाना मस्नून, पसन्दीदा और बाइसे[6] बरकत है।

9- जुमा के दिन बरकत व भलाई के लिए निकाह करना मस्नून है।

10- निकाह के लिए एलान करना मस्नून है।

11- निकाह मस्जिद में करना मस्नून है।

12- मस्नून निकाह वह है जो सादगी के साथ हो और जिसमें हंगामा और नामो-नुमूद के लिए इसराफ़[7] न हो।

13- महर इस क़द्र मुक़र्रर करना मस्नून है जो इस्तिताअ़त से ज़्यादा न हो, जिसकी मिक़्दार कम-से कम दस दिर्हम हो।

14- महर मुवज्जल[8] व मुअ़ज्जल[9] दोनो जाइज़ है।

1-सामर्थ्यवान, 2-जवानी, 3-नेक, सदाचारी, 4-विधवा, 5-इस्लामी दसवाँ महीना, 6-कारण, 7-अपव्यय, 8-विलम्ब से, 9-शीघ्रता से।

निकाह का तरीक़ा

ईजाबो-कबूल अरकानि निकाह हैं, इन्हीं से निकाह मुन्अक़िद[1] होता है।

निकाह से क़ब्ल[2] वली[3] को लड़की से इजाज़त लेना मस्नून है। लड़की को बताया जाये कि तेरा निकाह फ़ुलाँ शख़्स से बइवज़[4] इस क़द्र रक़्मे महर के किया जाता है, क्या तुझे मन्ज़ूर है?

फिर वली (या उसका वकील) इजाज़त दे और क़ाज़ी लड़के से निकाह कबूल कराए। क़ाज़ी को लड़के के रू-बरू या सामने बैठना और ख़ुत्बा पढ़ना मस्नून है। (बिहिश्ती ज़ेवर)

तलाक़ और ख़ुला[5]

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो कोई औरत बिला किसी माकूल[6] वजह से अपने शौहर से तलाक़ चाहे, उस पर जन्नत की बू हराम है। (अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, दारमी, मिश्कात)

हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि हलाल चीज़ों में अल्लाह तआला के नज़्दीक सबसे बुरी चीज़ तलाक़ है। (अबू दाऊद, मिश्कात)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया- "मआज़! अल्लाह तआला ने जितनी चीज़ें रूए ज़मीन[7] पर पैदा की हैं उनमें मुझे सबसे ज़्यादा महबूब लौंडी, गुलाम का आज़ाद कराना है और सबसे ज़्यादा मबग़ूज़[8] और नापसन्दीदा तलाक़ है। (दारे क़ुतनी, मिश्कात)

1-वैध, आयोजित, 2-पूर्व, 3-सहायक, बुज़ुर्ग, 4-बदले में, 5-पत्नी का पति से तलाक़ चाहना, 6-उचित, 7-पृथ्वी पर, 8-वैरी, शत्रु, नापसन्द।

बिन्ते रसूल[1] हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ि० का बाबरकत निकाह

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की उम्र अभी पन्द्रह साल की थी कि कई बड़े-बड़े घरानों से पैग़ाम आए, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ामोश रहे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्र उस वक़्त तक़रीबन इक्कीस साल की थी। फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में ख़्याल आया कि मैं जाकर पैग़ाम दूँ, लेकिन यह सोचता था कि आख़िर यह काम कैसे होगा? मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। आख़िरकार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़क़त और महब्बत ने हिम्मत बंधाई और मैं हाज़िर हो गया और अपना मुद्दआ[2] ज़ाहिर किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इंतिहाई ख़ुश हुए और फ़ौरन क़बूल फ़रमाकर दर्याफ़्त फ़रमाया- "अली! तुम्हारे पास कुछ माल भी है? मैंने कहा- एक घोड़ा और ज़िरह[3] के सिवा कुछ भी नहीं है। आप सल्ल० ने फ़रमाया घोड़ा तो सिपाही के पास रहना ही चाहिए। जाओ अपनी ज़िरह बेच डालो। हज़रत अली रज़ि० गये और कमो-बेश चार सौ दिर्हम में अपनी ज़िरह बेच आये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुलाकर कुछ ख़ुशबू वग़ैरा मंगवाई और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म दिया कि जाओ, अबू बक्र, उसमान, तलहा, ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन) और चन्द अन्सार को बुला लाओ। जब ये लोग आकर बैठ गये तो आप सल्ल० ने निकाह का ख़ुत्बा पढ़ा और तमाम औरतों की सरदार हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह निहायत सादगी के साथ हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से कर दिया। आप सल्ल० ने एलान फ़रमाया, गवाह रहो, मैंने चार सौ मिस्क़ाल[4] चाँदी पर अपनी बेटी (हज़रत) फ़ातिमा का निकाह (हज़रत) अली के साथ कर दिया और अली ने

1-रसूल की बेटी, 2-प्रयोजन, 3-कवच, 4-साढ़े चार माशे की एक तौल।

उसे क़बूल कर लिया है और दुआ के लिए हाथ उठा दिए। आपने दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! दोनों में महब्बत और मुवाफ़क़त[1] पैदा फ़रमाइये, बरकत बख़्शिये, और सालेह[2] औलाद अ़ता फ़रमाइये। निकाह के बाद छुहारे बाँटे गए और शब में उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के हमराह[3] इंतिहाई सादगी के साथ हज़रत फ़ातिमा को हज़रत अ़ली के घर भेज दिया। इशा की नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ुद पहुँचे और दोनों के हक़ में दुआ फ़रमाई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी प्यारी बेटी को जो सामान दिया वह चाँदी के बाज़ूबन्द, दो यमनी चादरें, चार गद्दे, एक कम्बल, एक तकिया, एक पियाला, एक चक्की, एक पलंग, एक मश्कीज़ा[4] और घड़ा था। (हिस्ने हसीन)

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की रुख़्सती के बाद

जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का निकाह हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से कर दिया तो आप सल्ल० उनके घर तशरीफ़ ले गये और हज़रत फ़ातिमा से फ़रमाया, थोड़ा पानी लाओ, चुनांचे वह एक लकड़ी के पियाले में पानी लेकर हाज़िर हुयीं। आप सल्ल० ने पियाला उनसे ले लिया और एक घूँट पानी दहने[5] मुबारक में लेकर पियाले में डाल दिया और फ़रमाया, आगे आओ। वह सामने आकर खड़ी हो गयीं तो आपने उनके सीने और सर पर पानी छिड़का और फ़रमाया:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُعِیْذُهَا بِكَ وَذُرِّیَّتَهَا مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ

"अल्लाहुम्म इन्नी उईज़ुहा बिक व ज़ुर्रिय्यतहा मिनश्शैता निर्रजीम"

और इसके बाद फ़रमाया मेरी तरफ़ पुश्त[6] करो, चुनांचे वह पुश्त

1-अनुकूलता, मैत्री, 2-नेक, 3-साथ, 4-पानी भरने की मशक, 5-मुख, 6-पीठ,

करके खड़ी हो गयीं तो आपने बाक़ी पानी भी यही दुआ पढ़कर पुश्त पर छिड़क दिया। इसके बाद आपने (हज़रत अ़ली की जानिब रुख़ करके) फ़रमाया, पानी लाओ। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं मैं समझ गया जो आप चाहते हैं, चुनांचे मैंने भी पियाला पानी का भर कर पेश किया, आपने फ़रमाया, आगे आओ। मैं आगे आ गया। आपने वही कलिमात पढ़कर और पियाले में कुल्ली करके मेरे सर और सीने पर पानी के छींटे दिये। फिर फ़रमाया, पुश्त फेरो। मैं पुश्त फेर कर खड़ा हो गया। आपने फिर वही कलिमात पढ़कर और पियाले में कुल्ली करके मेरे मोढों के दर्मियान पानी के छींटे दिये। इसके बाद फ़रमाया, अब अपनी दुल्हन के पास आओ।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

नव्-मौलूद (नवजात शिशु)

नव्-मौलूद के कान में अज़ान दी जाए

रिवायत में है कि बच्चे की विलादत[1] के बाद उसको नहला-धुलाकर उसके दाहिने कान में अज़ान और बायें कान में इक़ामत कहना चाहिए। जब हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की विलादत हुई तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके कान में अज़ान दी और इक़ामत पढ़ी।

(तबरानी, ज़ादुल्-मआ़द)

तह्नीक[2]

हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पैदा हुए तो मैंने उनको नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की गोद में दिया। आप सल्ल० ने ख़ुर्मा[3] मंगवाया और चबाकर लुआ़बे मुबारक अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के मुँह में लगाया,

1-जन्म, 2-खजूर चबाकर उसका लुआ़ब (लार) नवजात शिशु के मुँह में डालना, 3-छुहारा, सूखा खजूर, एक तरह की मिठाई।

और ख़ुर्मा उनके तालू में मला और ख़ैरो-बरकत की दुआ फ़रमाई।

(ज़ादुल्मआद)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का बयान है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहाँ बच्चे लाए जाते थे, आप सल्ल० तह्नीक फ़रमाते थे, और उनके हक़ में ख़ैरोबरकत की दुआ करते।

(मुस्लिम, बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

अच्छे नाम की तज्वीज़

बच्चे के लिए अच्छा सा नाम तज्वीज़ करना चाहिए जो या तो अल्लाह के नाम से पहले लफ़्ज़ अब्द लगाकर तर्तीब दिया गया हो जैसे- अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान वग़ैरा, या फिर पैग़म्बरों के नाम पर होना चाहिए या कोई और नाम जो मअ़नवी एतिबार[1] से बेहतर हो। नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़ियामत के रोज़ तुम्हें अपने-अपने नामों से पुकारा जायेगा। इसलिए बेहतर नाम रखा करो। (अबू दाऊद)

बच्चे की पहली तालीम

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, जब तुम्हारी औलाद बोलने लगे तो उसको- लाइलाह इल्लल्लाहु सिखा दो, फिर मत पर्वा करो कि कब मरे और जब दूध के दाँत गिर जायें तो नमाज़ का हुक्म दो।

(इब्ने सिन्नी, तिर्मिज़ी, ज़ादुल्-मआद)

तावीज़े हिफ़ाज़त

बच्चे की हिफ़ाज़त के लिए नज़रेबद (जादू) और बीमारी से महफ़ूज़ रखने के लिए यह तावीज़ लिखकर गले में डाल दिया जाये।

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ شَرِّ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ۔

1-अर्थ की दृष्टि।

"अऊ़ज़ु बिकलिमातिल्ला हित्ताम्माति मिन् शर्रि कुल्लि शैतानिंव् व हाम्मतिंव् व मिन् शर्रि कुल्लि ऐनिल्लाम्मतिन्"

अनुवाद: मैं अल्लाह तआला के पूरे कलिमों के वास्ते से हर शैतान और ज़हरीले जानवर के शर से और ज़रर[1] पहुँचाने वाली हर आँख के शर से पनाह चाहता हूँ। इन कलिमात को पढ़कर बच्चे पर दम करे या लिखकर गले में डाल दे। (हिस्ने हसीन, तिर्मिज़ी)

अक़ीक़ा[2]

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि अगर तुममें से कोई अपने बच्चे की तरफ़ से अ़क़ीक़ा करना चाहे तो उसे चाहिए कि लड़के की तरफ़ से दो बकरियाँ और लड़की की तरफ़ से एक बकरी करे और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की सहीह रिवायत से लड़के की जानिब से दो बकरियाँ और लड़की की जानिब से एक बकरी साबित है।

(ज़ादुल्-मआ़द)

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हर लड़का अपने अक़ीक़े के रहन[3] में होता है, उसकी जानिब से सातवें दिन (बकरी) क़ुर्बानी की जाये, उसका सर मुँडवाया जाये और उसका नाम रख दिया जाये।

(ज़ादुल्-मआ़द)

मस्अला

अगर सातवें दिन अ़क़ीक़ा न करें तो जब करें, सातवें दिन का ख़्याल करना बेहतर है। (बिहिश्ती ज़ेवर)

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मन्क़ूल है, उन्होंने फ़रमाया कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का एक बकरी से अ़क़ीक़ा किया और फ़रमाया

1-हानि, 2-सातवें दिन बच्चे का मुंडन और नामकरण संस्कार जिसमें बकरी की क़ुर्बानी होती है, 3-गिरवी, बन्धक।

फ़ातिमा इसका सर मुँडवा दो और इसके बालों के हम-वज़न[1] चाँदी ख़ैरात कर दो, चुनांचे हमने उनका वज़न किया जो एक दिर्हम या उससे कुछ कम था। (ज़ादुल्मआद)

मस्अला

अक़ीक़े का गोश्त चाहे कच्चा तक़्सीम करे चाहे पका कर बाँटे, चाहे दावत करके खिलाये सब दुरुस्त है।

मस्अला

अक़ीक़े का गोश्त बाप, दादा, दादी, नाना, नानी, वग़ैरा सबको खाना दुरुस्त है।

मस्अला

किसी को तौफ़ीक़ नहीं, इसलिए उसने लड़के की तरफ़ से एक ही बकरी का अक़ीक़ा किया तो इसमें भी कुछ हरज नहीं और अगर बिल्कुल अक़ीक़ा ही न करे तो भी कुछ हरज नहीं। (बिहिश्ती ज़ेवर)

ख़त्ना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि लोग आम तौर से लड़के का ख़त्ना उस वक़्त तक न करते थे जब तक वह समझदार न हो जाता।

और इमाम हंबल रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि अबू अब्दुल्लाह रह० ने फ़रमाया कि अगर सातवें दिन ख़त्ना कर दिया जाए तो इसमें कोई हरज नहीं। (ज़ादुल्-मआद)

1-वज़न के बराबर।

बाब- 8 (आठवाँ परिच्छेद) मरज़ व इयादत मौत व मा बादल् मौत (मृत्यु व मृत्यूपरान्त)

मरज़ व इलाज

हर मरज़ की दवा है

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हर बीमारी की दवा है। जब दवा बीमारी के मुवाफ़िक़ हो जाती है, अल्लाह तआला के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है। (मुस्लिम, मिश्कात)

सुनन अबी दाऊद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि में हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है, उन्होंने बताया कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- बेशक! अल्लाह तआला शानुहू ने मरज़ भी नाज़िल किया और दवा भी उतारी और हर मरज़ के लिए दवा पैदा की, इसलिए दवा करो, अलबत्ता हराम चीज़ से इलाज न करो।

(ज़ादुल्मआद)

इलाज का एहतिमाम और उसमें एहतियात

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हालते मरज़ में ख़ुद भी दवा का इस्तेमाल फ़रमाया करते और लोगों को इलाज करवाने की तल्क़ीन[1] भी फ़रमाते। इर्शाद फ़रमाते- ऐ बन्दगाने ख़ुदा! दवा किया करो, क्यों कि अल्लाह तआला ने हर मरज़ की शिफ़ा[2] मुक़र्रर की है, बजुज़[3] एक मरज़ के, लोगों ने पूछा वह क्या है? आपने फ़रमाया- "बहुत ज़्यादा बुढ़ापा"।

(तिर्मिज़ी, ज़ादुल्-मआद)

आप सल्ल० बीमार को तबीबे हाज़िक़[4] से इलाज कराने का हुक्म फ़रमाते और परहेज़ करने का हुक्म देते। (ज़ादुल्-मआद)

1-निर्देश, 2-रोगमुक्ति, 3-अतिरिक्त, 4-कुशल चिकित्सक।

नादान तबीब को तबाबत[1] से मना फ़रमाते और उसे मरीज़ के नुक़सान का ज़िम्मेदार ठहराते। (ज़ादुल्मआद)

हराम अश्या[2] को बतौर दवा इस्तेमाल करने से मना फ़रमाते। इर्शाद फ़रमाते ''अल्लाह तआला ने हराम चीज़ों में तुम्हारे लिए शिफ़ा नहीं रखी।''

(ज़ादुल्-मआद)

मरीज़ों की इयादत[3]

सहाबा किराम में से जो बीमार हो जाता, हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसकी इयादत के लिये तशरीफ़ ले जाते। (ज़ादुल्-मआद)

मरीज़ की इयादत के लिए दिन मुक़र्रर करना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नते तय्यिबा में से नहीं था बल्कि आप दिन-रात तमाम औक़ात में (हस्बे ज़रूरत) मरीज़ों की इयादत फ़रमाते।(ज़ादुल्-मआद)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मरीज़ के पास इयादत करने के सिल्सिले में शोरो-शग़ब[4] न करना और कम बैठना भी सुन्नत है। (मिश्कात)

आप सल्ल० मरीज़ के क़रीब तशरीफ़ ले जाते और उसके सिरहाने बैठते, उसका हाल दरयाफ़्त फ़रमाते और पूछते- ''तबीअत कैसी है''।

(ज़ादुल्-मआद)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इयादत के लिए तशरीफ़ ले जाते तो बीमार की पेशानी और नब्ज़ पर हाथ रखते, अगर वह कुछ मांगता तो उसके लिए वह चीज़ मंगवाते और फ़रमाते- ''मरीज़ जो कुछ माँगे उसको दो अगर मुज़िर[5] न हो''। (हिस्ने हसीन)

1-चिकित्सा कर्म, 2-निषिद्ध वस्तुओं, 3-रोगी का हाल पूछने और उसे ढाढ़स देने के लिए उसके पास जाना, 4-कोलाहल, 5-हानिकारक।

तसल्ली व हमदर्दी

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम किसी मरीज़ के पास जाओ तो उसकी उम्र के बारे में उसके दिल को ख़ुश करो (यानी उसकी उम्र और उसकी ज़िन्दगी के बारे में उसको ख़ुश करो) इस तरह की बातें किसी होने वाली चीज़ को तो रद न कर सकेंगी, लेकिन इससे उसका दिल ख़ुश होगा और यही इयादत का मक़सद है।

(जामे तिर्मिज़ी, सुनन इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

और कभी आप सल्ल० मरीज़ की पेशानी पर दस्ते मुबारक रखते फिर उसके सीने और पेट पर हाथ फेरते और दुआ करते- ऐ अल्लाह! इसे शिफ़ा दे और जब आप सल्ल० मरीज़ के पास तशरीफ़ ले जाते तो फ़रमाते, कोई फ़िक्र की बात नहीं, इन्शाअल्लाह तआला सब ठीक हो जायेगा। बसाऔक़ात[1] आप फ़रमाते यह बीमारी गुनाहों का कफ़्फ़ारा और तहूर[2] बन जायेगी।

(ज़ादुल्-मआद)

इयादत के फ़ज़ाइल[3]

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बन्दए मोमिन जब अपने साहिबे ईमान भाई की इयादत करता है तो वापस आने तक वह गोया जन्नत के बाग़ में होता है। (सहीह मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा कहती हैं जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम किसी मरीज़ के पास जाओ या किसी क़रीबुल्मर्ग[4] शख़्स के पास जाओ तो उसके सामने भलाई का कलिमा ज़बान से निकालो क्योंकि तुम जो कुछ कहते हो फ़रिश्ते उस पर आमीन कहते हैं। (मिश्कात, मुस्लिम)

1-प्राय:, 2-पवित्र, 3-विशेषताएँ, 4-मरणासन्न, जो मरने के क़रीब हो।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम किसी मरीज़ की इयादत को जाओ तो उससे कहो कि वह तुम्हारे लिए दुआ करे, इसलिए कि उसकी दुआ फ़रिश्तों की दुआ के मानिन्द होती है। (इब्ने माजा, मिश्कात)

मरीज़ पर दम और उसके लिए दुआए सेहत

आप सल्ल० मरीज़ के लिए तीन बार दुआ फ़रमाते, जैसा कि आपने सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिए दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! सअद को शिफ़ा दे। ऐ अल्लाह! सअद को शिफ़ा दे। ऐ अल्लाह! सअद को शिफ़ा दे।

(ज़ादुल्मआद)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि जब हम में से कोई बीमार होता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपना दाहिना हाथ उसके जिस्म पर फेरते और यह दुआ पढ़ते:-

اَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ

''अज़्हिबिल्बअ्स रब्बन्नासि'' आख़िर तक (ऐ आदमियों के परवरदिगार इस बन्दे की तक्लीफ़ दूर फ़रमा दे और शिफ़ा अता फ़रमा दे। तू ही शिफ़ा देने वाला है, बस तेरी ही शिफ़ा, शिफ़ा है। ऐसी कामिल शिफ़ा अता फ़रमा जो बीमारी को बिल्कुल न छोड़े)।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब ख़ुद बीमार होते तो मुअव्वज़ात[1] पढ़कर अपने ऊपर दम फ़रमाया करते और ख़ुद अपना दस्ते[2] मुबारक अपने जिस्म पर फेरते। फिर जब आपको वह बीमारी लाहिक़[3] हुई जिसमें आप सल्ल० ने वफ़ात[4] पाई तो मैं वही मुअव्वज़ात पढ़कर आप पर दम करती जिनको पढ़

1-सूरए फ़लक़, सूरए नास (पारा:30), 2-हाथ, 3-मिलने वाली, 4-मौत।

कर आप दम किया करते थे और आपका दस्ते मुबारक आपके जिस्म पर फेरती। (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल हदीस)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरीज़ की पेशानी या दुखी हुई जगह पर दाहिना हाथ रख कर फ़रमाते:-

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِىْ لَا شِفَآءَ اِلَّا شِفَآئُكَ شِفَآءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا

अल्लाहुम्म अज़्हिबिल् बअ्स रब्बन्नासि वश्फ़ि अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ाअ इल्ला शिफ़ाउक शिफ़ाअल् ला युग़ादिरु सक़्मन्।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! लोगों के रब! तकलीफ़ को दूर फ़रमा और शिफ़ा दे। तू ही शिफ़ा देने वाला है। तेरी शिफ़ा के अलावा कोई शिफ़ा नहीं है, ऐसी शिफ़ा दे जो ज़रा भी मरज़ न छोड़े। यह दुआ भी वारिद[1] है:-

اَللّٰهُمَّ اشْفِهٖ اَللّٰهُمَّ عَافِهٖ

"अल्लाहुम्मश्फ़िही अल्लाहुम्म आफ़िही"

अनुवाद: ऐ अल्लाह! इसको शिफ़ा दे, ऐ अल्लाह! इसको आफ़ियत दे।" या सात मर्तबा यह दुआ पढ़ते:-

اَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ

"अस्अलुल्लाहल् अज़ीम रब्बल् अर्शिल् अज़ीमि अंय्यश्फ़ियक"

अनुवाद: मैं सवाल करता हूँ अल्लाह तआला से जो बड़ा है और अर्श अज़ीम का रब है कि तुझे शिफ़ा बख़्शे।" जिस शख़्स ने किसी ऐसे मरीज़ की इयादत की जिसकी मौत न आई हो और यह दुआ पढ़े तो अल्लाह तआला उस मरीज़ को उस मरज़ से ज़रूर शिफ़ा देगा।

हज़रत उसमान इब्ने अबिल्आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत

1–आयी।

है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दर्द की शिकायत की जो उनके जिस्म के किसी हिस्से में था, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम उस जगह पर अपना हाथ रखो जहाँ तक्लीफ़ है और तीन बार कहो- *"बिस्मिल्लाह"* और सात मर्तबा कहो:-

أَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ

"अऊ़ज़ु बिइ़ज़्ज़तिल्लाहि व क़ुद्रतिही मिन् शर्रि मा अजिदु व उहाज़िरु"

अनुवाद: (मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत और उसकी क़ुद्रत की, उस तक्लीफ़ के शर से जो मैं पा रहा हूँ और जिसका मुझे ख़तरा है।) कहते हैं कि मैंने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआ़ला ने मेरी वह तक्लीफ़ दूर फ़रमा दी। (सह़ीह़ मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् ह़दीस)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ़ पढ़ कर ह़ज़रत ह़सन और ह़ुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को अल्लाह की पनाह में देते थे:-

أُعِيْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ۔

उई़ज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन् शर्रि कुल्लि शैतानिंव् व हाम्मतिंव् व मिन् कुल्लि ऐनिल्लाम्मतिन्।

अनुवाद: मैं तुम्हें पनाह में देता हूँ, अल्लाह के कलिमाते ताम्मा की हर शैतान के शर से और हर ज़हरीले जानवर से और असर डालने वाली आँख से, और फ़रमाते थे कि तुम्हारे जद्दे अम्जद[1] ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने दोनों साहिबज़ादों, इसमाईल व इसहाक़ अ़लैहिमस्सलाम पर इन कलिमात से दम करते थे। (मआ़रिफ़ुल ह़दीस, रवाहुल् बुख़ारी)

और जिसके ज़ख़्म या फोड़ा या कोई तक्लीफ़ होती, तो आप सल्ल०

1-पितामह।

है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दर्द की शिकायत की जो उनके जिस्म के किसी हिस्से में था, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम उस जगह पर अपना हाथ रखो जहाँ तक्लीफ़ है और तीन बार कहो- " *बिस्मिल्लाह*" और सात मर्तबा कहो:-

أَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ

"अऊ़ज़ु बिइ़ज़्ज़तिल्लाहि व क़ुद्रतिही मिन् शर्रि मा अजिदु व उहाज़िरु"

अनुवाद: (मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत और उसकी क़ुद्रत की, उस तक्लीफ़ के शर से जो मैं पा रहा हूँ और जिसका मुझे ख़तरा है।) कहते हैं कि मैंने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआ़ला ने मेरी वह तक्लीफ़ दूर फ़रमा दी। (सहीह़ मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ़ पढ़ कर हज़रत हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को अल्लाह की पनाह में देते थे:-

أُعِيْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ-

उई़ज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन् शर्रि कुल्लि शैतानिंव् व हाम्मतिंव् व मिन् कुल्लि ऐनिल्लाम्मतिन्।

अनुवाद: मैं तुम्हें पनाह में देता हूँ, अल्लाह के कलिमाते ताम्मा की हर शैतान के शर से और हर ज़हरीले जानवर से और असर डालने वाली आँख से, और फ़रमाते थे कि तुम्हारे जद्दे अम्जद[1] हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने दोनों साहिबज़ादों, इसमाईल व इसहाक़ अ़लैहिमस्सलाम पर इन कलिमात से दम करते थे। (मआ़रिफ़ुल हदीस, रवाहुल् बुख़ारी)

और जिसके ज़ख़्म या फोड़ा या कोई तक्लीफ़ होती, तो आप सल्ल०

1-पितामह।

उस पर दम करते चुनांचे शहादत की उंगली ज़मीन पर रख देते फिर दुआ पढ़ते:

بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ أَرْضِنَا بِرِيقَةِ بَعْضِنَا يَشْفِي سَقِيْمَنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا

"बिस्मिल्लाहि तुरबतु अर्ज़िना बिरीक़ति बअ्ज़िना यश्फ़ी सक़ीमना बिइज़्नि रब्बिना"।

अनुवाद: मैं अल्लाह के नाम से बरकत हासिल करता हूँ। यह हमारी ज़मीन की मिट्टी है जो हम में से किसी के थूक में मिली हुई है ताकि हमारी बीमारी को हमारे रब के हुक्म से शिफ़ा दे" और उस जगह उंगली फेरते।

(ज़ादुल्-मआ़द)

हालते मरज़ की दुआ

जो शख़्स हालते मरज़ में यह दुआ चालीस बार पढ़े अगर मरा तो शहीद के बराबर सवाब मिलेगा और अगर अच्छा हो गया तो तमाम गुनाह बख़्शे जायेंगे।

لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْنَ ٥

"ला इलाह इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन" और अगर मरज़ में यह दुआ पढ़े और मर गया तो उसको दोज़ख़ की आग न लगेगी:-

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ اللّٰهُ أَكْبَرُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ۔

"ला इलाह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर ला इलाह इल्लल्लाहु वहूदहू ला शरीक लहू ला इलाह इल्लल्लाहु लहुल् मुल्कु वलहुल् हम्दु ला इलाह इल्लल्लाहु वला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहि। (तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा)

1-सच्चे।

बीमारी के ज़माने में सिदक[1] दिल और सच्चे शौक़ से यह दुआ किया करे। (मआरिफुल हदीस)

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِیْ شَھَادَۃً فِیْ سَبِیْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ بِبَلَدِ رَسُوْلِكَ (حصن حصین)

अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्नी शहादतन् फ़ी सबीलिक वज्अ़ल मौती बिबलदि रसूलिक।
(हिस्ने हसीन)

अनुवाद: ऐ अल्लाह मुझे अपने रास्ते में शहादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और कीजिए मेरी मौत अपने रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के शहर में।

बीमारी में ज़मानए तन्दुरुस्ती के आमाल का सवाब

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जब कोई बन्दा बीमार हो या सफ़र में जाये और उस बीमारी या सफ़र की वजह से अपनी इबादत वग़ैरा के मामूलात पूरा करने से मज्बूर हो जाये तो अल्लाह तआ़ला के यहाँ उसके आमाल इस तरह लिखे जाते हैं जिस तरह वह सेहत व तुन्दुरुस्ती की हालत में और ज़मानए इक़ामत[1] में किया करता था।

(सहीह बुख़ारी, मआ़रिफुल हदीस)

तक्लीफ़ वज्हे रफ़-ए-दर्जात

मुहम्मद इब्ने ख़ालिद सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं और वह उनके दादा से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- ''किसी बन्दए मोमिन के लिए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ऐसा बुलन्द मक़ाम तय हो जाता है, जिसको वह अपने अ़मल से नहीं पा सकता तो अल्लाह तआ़ला उसको किसी जिस्मानी या माली तक्लीफ़ में या

1-यात्रा के विपरीत अर्थात निवास के समय।

औलाद की तरफ़ से किसी सदमे या परेशानी में मुब्तला कर देता है। फिर उसको सब्र की तौफ़ीक़ दे देता है यहाँ तक कि उन मसाइब[1] व तकालीफ़ (और उन पर सब्र) की वजह से उस बुलन्द मक़ाम पर पहुँचा दिया जाता है जो उसके लिए पहले से तय हो चुका था।"

(मआरिफ़ुल् हदीस ,मुस्नदे अहमद, सुनन अबी दाऊद)

वज्ह कफ़्फ़ारा-ए[2]-सय्यिआत[3]

(बुराइयों का प्रायश्चित्त)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि मोमिन को जो भी बीमारी, जो भी परेशानी, जो भी रंज व ग़म और जो भी अज़िय्यत[4] पहुँचती है यहाँ तक कि कांटा भी उसके लगता है तो अल्लाह तआला उन चीज़ों के ज़रिये उसके गुनाहों की सफ़ाई फ़रमा देता है।

(सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

मौत की याद और उसका शौक़

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "लोगो! मौत को याद करो और उसको याद रखो जो दुनिया की लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली है।" (जामे तिर्मिज़ी, सुनने नसाई, सुनन इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "मौत मोमिन का तोहफ़ा है"। (शोबुल् ईमान लिल् बैहक़ी, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-मुसीबतें, 2-किसी गुनाह या पाप से छुटकारा पाने के लिए किया जाने वाला कृत्य, 3-गुनाह, पाप, 4-कष्ट।

मौत की तमन्ना और दुआ करने की मुमानअ़त

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुममें से कोई किसी तक्लीफ़ और दुख की वजह से मौत की तमन्ना न करे और न दुआ़ करे और अगर अन्दर के दाइया[1] से बिल्कुल ही मज्बूर हो तो यूँ दुआ़ करे:-

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِىْ مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِّىْ وَتَوَفَّنِىْ اِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّىْ۔

حصن حصين

अल्लाहुम्म अह्यिनी मा कानतिल् हयातु ख़ैरल्ली व तवफ़्फ़नी इज़ा कानतिल् वफ़ातु ख़ैरल्ली। (हिस्ने हसीन)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! जब तक मेरे लिये ज़िन्दगी बेहतर हो उस वक़्त तक मुझे ज़िन्दा रख और जब मेरे लिए मौत बेहतर हो उस वक़्त मुझे दुनिया से उठा ले।" (सहीह़ बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

मौत के आसार[2] ज़ाहिर होने लगें तो क्या करें

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मरने वालों को कलिमए لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ "ला इलाह इल्लल्लाहु" की तल्क़ीन[3] करो।

(सहीह़ मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मरने वालों पर सूरए "यासीन" पढ़ा करो।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस, मुस्नदे अहमद, सुनने अबी दाऊद, सुनने इब्ने माजा)

1-ख्वाहिश, इरादा, 2-लक्षण, 3-दीक्षा देना, नसीहत।

सकरातुल्[1] मौत (मृत्यु की निश्चेष्टता)

मरने वालों का मुँह मरते वक़्त क़िब्ला की तरफ़ कर दें और ख़ुद वह यह दुआ मांगे :–

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَالْحِقْنِیْ بِالرَّفِیْقِ الْاَعْلٰی और لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ और اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ الْمَوْتِ۔

''अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली वर्हम्नी व अल्हिक़्नी बिर्रफ़ीक़िल् अअ्ला'' और *ला इलाह इल्लल्लाह''* पढ़े और *''अल्लाहुम्म अइन्नी अला ग़मरातिल् मौति व सकरातिल् मौति''*। (तिर्मिज़ी)

अनुवाद: ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे ऊपर वाले साथियों में पहुँचा दे। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। ऐ अल्लाह! मौत की सख़्तियों (के इस मौक़े पर) मेरी मदद फ़रमा। (तिर्मिज़ी)

जाँकनी[2] (मृत्यु वेदना)

जब किसी पर मौत का असर ज़ाहिर हो यानी उसके दोनों क़दम ढीले हो जायें और नाक टेढ़ी हो जाये और कनपटियाँ दब जायें तो चाहिए कि उसको दाहिनी तरफ़ क़िब्ले रुख़ लेटा दे और मुस्तहब यह है कि कलिमए शहादत की तल्क़ीन इस तरह करें कि कोई आदमी उसके पास बुलन्द आवाज़ से कहे:–

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

''अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह'' और मरीज़ से इसके पढ़ने का इसरार न करे,

1-प्राण निकलते समय का कष्ट, 2-शरीर से रूह या प्राण निकलने की अवस्था।

इसलिए कि वह अपनी तकलीफ़ में मुब्तला है। अगर वह एक बार पढ़ ले तो काफ़ी है और इसके बाद वह और कोई बात करे तो फिर एक बार इसी तरह तल्क़ीन करे और मुस्तहब है कि उसके पास सूरए यासीन पढ़े और नेक और मुत्तक़ी[1] उसके पास मौजूद रहें। (तिर्मिज़ी)

जब मौत वाक़े[2] हो जाये तो अहले तअल्लुक़[3] यह दुआ पढ़ें:-

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ۝ اَللّٰهُمَّ أْجُرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَاخْلُفْ لِيْ خَيْرًا مِّنْهَا۔

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाहुम्म अजिर्नी फ़ी मुसीबती वख़्लुफ़्ली ख़ैरम् मिन्हा। (तिर्मिज़ी)

अनुवाद: बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं और हम अल्लाह ही की तरफ़ लौटने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मेरी मुसीबत में अज्र[4] दे और इसके एवज़ मुझे इससे अच्छा बदला इनायत फ़रमा[5]।

जब मौत वाक़े हो जाये तो कपड़े की पट्टी से उसकी दाढ़ी सर के साथ बाँध दें और नर्मी से आँख बन्द कर दें और बाँधते वक़्त पढ़ें:-

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ يَسِّرْ عَلَيْهِ أَمْرَهٗ وَسَهِّلْ عَلَيْهِ مَا بَعْدَهٗ وَاسْعِدْهُ بِلِقَائِكَ وَاجْعَلْ مَا خَرَجَ إِلَيْهِ خَيْرًا مِّمَّا خَرَجَ عَنْهُ۔

बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्म यस्सिर् अ़लैहि अम्रहू व सहहिल् अ़लैहि मा बअ़्दहू व अस्इदहू बिलिक़ाइक वजअ़ल् मा ख़रज इलैहि ख़ैरम् मिम्मा ख़रज अ़न्हु।

अनुवाद: शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के दीन पर। ऐ अल्लाह इस मय्यित पर इसका काम आसान फ़रमा और इस पर वह ज़माना आसान फ़रमा जो अब इसके बाद आयेगा और इसको अपने दीदारे मुबारक से मुशर्रफ़[6] फ़रमा और

1-संयमी, 2-घटित, 3-सम्बन्धी, 4-बदला, 5-प्रदान कर, 6-सम्मानित।

जहाँ गया है (यानी आख़िरत) उसको बेहतर कर दे उस जगह से जहाँ से गया है (यानी दुनिया से)।

फिर इसके बाद उसके हाथ-पैर सीधे कर दें और मुस्तहब है कि उसके कपड़े उतार कर एक चादर ओढ़ा दें और चारपाई या चौकी पर रखें, ज़मीन पर न छोड़ें फिर उसके दोस्त अहबाब को ख़बर कर दें ताकि उसकी नमाज़ में ज़्यादा से ज़्यादा लोग शरीक हों और उसके लिए दुआ करें और मुस्तहब है कि उसके ज़िम्मे जो क़र्ज़ हो उसको अदा करें और तज्हीज़ व तक्फ़ीन[1] में जल्दी करें। ग़ुस्ल से पहले मय्यित के क़रीब क़ुरआन पढ़ना मना है।

(शर्हुत्तनवीर, बिहिश्ती ज़ेवर)

मय्यित पर नौहा[2] व मातम[3] नहीं करना चाहिए
(मृत्यु पर विलाप नहीं करना चाहिए)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक बार सअद बिन उबादा रज़ि० मरीज़ हुए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअद बिन अबी वक़्क़ास और अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन को साथ लिए हुए उनकी इयादत के लिए आए। आप सल्ल० जब अन्दर तशरीफ़ लाए तो उनको ग़ाशिया में यानी बड़ी सख़्त हालत में पाया, आप सल्ल० ने उनको इस हालत में देखा कि उनके गिर्द आदमियों की भीड़ लगी हुई थी तो आपने फ़रमाया- "ख़त्म हो चुके? (बतौर मायूसी या हाज़िरीन से इस्तिफ़्सार[4] के तौर पर आपने यह बात फ़रमाई) लोगों ने अर्ज़ किया, हज़रत सल्ल० अभी ख़त्म नहीं हुए, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकी यह हालत देखकर रोना आ गया। जब और लोगों ने आप पर गिर्या[5] के आसार देखे तो वे भी रोने लगे। आपने इर्शाद फ़रमाया- लोगो अच्छी तरह सुन लो

1-मुर्दे को नियमानुसार नहला-धुलाकर और कफ़न पहना कर जनाज़ा तैयार करना, 2-विलाप, 3-शोक, 4-पूछताछ, 5-आँसू बहाना।

और समझ लो कि अल्लाह तआला आँख के आँसू और दिल के ग़म पर तो सज़ा नहीं देता, क्योंकि इस पर बन्दे का इख़्तियार और क़ाबू नहीं है। फिर ज़बान की तरफ़ इशारा फ़रमाया, लेकिन इसकी ग़लती पर यानी ज़बान से नौहा व मातम करने पर सज़ा भी देता है और "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ने पर और दुआ व इस्तिग़फ़ार करने पर रहमत भी फ़रमाता है।

(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि उनके शौहर अबू सलमा की वफ़ात[1] के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए उनकी आँखें खुली रह गई थीं। आप सल्ल० ने उनको बन्द किया और फ़रमाया, जब रूह जिस्म से निकाल ली जाती है तो बीनाई[2] भी चली जाती है, इसलिए मौत के बाद आँखों को बन्द ही कर देना चाहिए आपकी यह बात सुनकर उनके घर के आदमी चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगे और इस रंज व सदमे की हालत में उनकी ज़बान से ऐसी बातें निकलने लगीं जो ख़ुद उन लोगों के हक़ में बद्दुआ थीं, तो आपने फ़रमाया- "लोगो! अपने हक़ में ख़ैर व भलाई की दुआ करो, इसलिए कि तुम जो कुछ कह रहे हो, मलाइका[3] उसपर आमीन कहते हैं"। फिर आपने ख़ुद इस तरह दुआ फ़रमाई- 'ऐ अल्लाह! अबू सलमा की मग़्फ़िरत फ़रमा और अपने हिदायत याफ़्ता[4] बन्दों में इनका दर्जा बुलन्द फ़रमा और इसके बजाय तू ही निगरानी फ़रमा इसके पसमांदगान[5] की और रब्बुल् आलमीन बख़्श दे हमको और इसको और इसकी क़ब्र को वसीअ़[6] और मुनव्वर[7] फ़रमा।

(सहीह मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-मृत्यु, 2-दृष्टि, 3-फ़िरिश्ते, 4-हिदायत पाने वाला, सन्मार्ग को प्राप्त कर लेने वाला, 5-मृतक के सम्बन्धिजन, बाल बच्चे, 6-विस्तृत, 7-प्रकाशित।

मय्यित के लिए आँसू बहाना जाइज़ है

आप सल्ल० ने अपनी उम्मत के लिए जुम्ला-ए-इस्तिर्जाअ़[1] (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहना) और अल्लाह की क़ज़ा (फ़ैसले) पर राज़ी रहना मस्नून क़रार दिया और ये बातें गिर्या-ए-चश्म[2] और दिल के ग़म के मनाफ़ी[3] नहीं। यही वजह है कि आप सल्ल० तमाम मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा राज़ी बक़ज़ा-ए-इलाही[4] और सबसे ज़्यादा हम्द[5] करने वाले थे और इसके बावजूद अपने साहिबज़ादे इब्राहीम पर वुफ़ूरे महब्बत[6] व शफ़क़त से रिक़्क़त[7] के बाइस[8] रो दिये और आप सल्ल० का क़ल्ब (दिल) अल्लाह तबारक व तआ़ला की रिज़ा व शुक्र से भरपूर और ज़बान उसके ज़िक्र व हम्द में मश़्गूल[9] थी। (ज़ादुल्-मआ़द)

आँख के आँसू और दिल का सदमा

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मईय्यत[10] में अबू यूसुफ़ आहंगर के घर गये। अबू यूसुफ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फ़र्ज़न्द[11] इब्राहीम की दाया ख़ौला बिन्तुल् मुन्ज़िर के शौहर थे और इब्राहीम उस वक़्त के रिवाज के मुताबिक़ अपनी दाया के घर ही रहते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने साहिबज़ादे को उठा लिया, चूमा और उनके रुख़्सारों पर नाक रखी, जैसा कि बच्चों को प्यार करते वक़्त किया जाता है।

उसके बाद फिर एक बार उन साहिबज़ादे इब्राहीम की आख़िरी बीमारी में हम वहाँ गये उस वक़्त इब्राहीम जान दे रहे थे, नज़अ़[12] के

1-दी हुई चीज़ वापस मांगना, इन्ना लिल्लाह.....पढ़ना, 2-आँख से आँसू बहाना, 3-विपरीत, 4-अल्लाह के फ़ैसले पर प्रसन्न, 5-प्रशंसा, 6-प्रेम के आधिक्य, 7-ममता, 8-कारण, 9-व्यस्त, 10-साथ, 11-पुत्र, 12-प्राणों के अंत की स्थिति।

आलम में थे। उनकी इस हालत को देखकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आँखों से आँसू बहने लगे। अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने (जो नावाक़िफ़ियत की वजह से समझते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस क़िस्म की चीज़ से मुतअस्सिर[1] नहीं हो सकते), तअ़ज्जुब से कहा- या रसूलल्लाह! आपकी भी यह हालत? आप सल्ल० ने फ़रमाया- 'ऐ इब्ने औफ़! यह कोई बुरी बात या बुरी हालत नहीं, बल्कि यह शफ़्क़त[2] और दर्दमन्दी है''। फिर दोबारा आपकी आँखों से आँसू बहे तो आपने फ़रमाया- ''आँख आँसू बहाती है और दिल मग़्मूम[3] है और ज़बान से हम वही कहेंगे जो अल्लाह को पसन्द है यानी ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न'' और ऐ इब्राहीम तुम्हारी जुदाई पर हमें सदमा है। (सहीह़ बुख़ारी, सहीह़ मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

मय्यित का बोसा[4] लेना

मय्यित को बुफ़ूरे महब्बत[5] या अ़क़ीदत से बोसा देना जाइज़ है, बसा-औक़ात[6] आप सल्ल० मय्यित का बोसा ले लेते जैसा कि आपने उसमान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बोसा लिया और रोए। इसी तरह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद आप सल्ल० की पेशानी को बोसा दिया।

(ज़ादुल्मआ़द)

तज्हीज़ो-तक्फ़ीन[7] में जल्दी
(मुर्दे के कफ़न-दफ़न में शीघ्रता)

हज़रत हसीन बिन वह्वह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि तलहा इब्ने बरा बीमार हुए तो रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

1-प्रभावित, 2-सहानुभूति, 3-दुखित, 4-चुम्बन, 5-प्रेम के आधिक्य, 6-प्रायः, 7-मुर्दे को विधिके अनुसार नहला-धुला कर और कफ़न में लपेट कर जनाज़ा तैयार करना।

उनकी इयादत के लिए तशरीफ़ लाये। उनकी हालत नाज़ुक देखकर आपने दूसरे आदमियों से फ़रमाया, मैं महसूस करता हूँ कि इनकी मौत का वक़्त आ ही गया है, अगर ऐसा हो जाये तो मुझे ख़बर की जाये और इनकी तज्हीज़ तक्फ़ीन में जल्दी की जाये, क्योंकि किसी मुसलमान की मय्यित के लिए मुनासिब नहीं कि वह देर तक अपने घरवालों के बीच में रहे।

(सुनने अबी दाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप सल्ल० फ़रमाते थे कि जब तुम्हारा कोई आदमी इंतिक़ाल कर जाये तो उसको देर तक घर में मत रखो और क़ब्र तक पहुँचाने और दफ़न करने में सुर्अत[1] से काम लो और दफ़न के बाद सर की जानिब सूरए बक़रा की इब्तिदाई[2] आयात मुफ़्लिहून तक और पाँव की जानिब उसकी आख़िरी आयात "आमनर्रसूलु" से ख़त्म सूरए बक़रा तक पढ़े। (बैहक़ी,शोबुलईमान, मआरिफ़ुल् हदीस)

अहले मय्यित के लिए खाना भेजना

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि अहले मय्यित[3] के लिए खाना भेजें क्योंकि वे मुसीबत में मुब्तला होने की वजह से माज़ूर होते हैं और उन्हें खाना पकाने और उसका इंतिज़ाम करने की फ़ुर्सत नहीं होती।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि जब उनके वालिद माजिद हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की ख़बर आयी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने घर वालों से कहा "जाफ़र के घर वालों के लिए खाना तैयार किया जाये। वह इस इत्तिलाअ्[4] की वजह से ऐसे हाल में हैं कि खाने की तरफ़ तवज्जोह[5] न कर सकेंगे।

(जामे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

1-शीघ्रता, 2-आरम्भिक, 3-मृतक के परिवार वाले, 4-सूचना, 5-ध्यान।

आप सल्ल० की सुन्नते तय्यिबा यह भी थी कि मय्यित के अहले ख़ाना[1] ताज़ियत[2] के लिए आने वाले लोगों को खाना न खिलायें, बल्कि आपने हुक्म दिया कि दूसरे लोग (दोस्त और अज़ीज़) उनके लिए खाना तैयार करके उन्हें भेजें। यह चीज़ अख़्लाक़े हसना[3] का अअ्ला नमूना[4] और पसमांदगान[5] को सुबुक-दोश[6] करने वाला अमल है। (ज़ादुल्-मआद)

मौत पर सब्र और उसका अज्र[7]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का इर्शाद है कि जब मैं किसी ईमानवाले बन्दे (या बन्दी) के किसी प्यारे को उठा लूँ, फिर वह सवाब की उम्मीद में सब्र करे तो मेरे पास उसके लिए जन्नत के सिवा कोई मुआवज़ा[8] नहीं। (सहीह बुख़ारी, मआरिफ़ुल् हदीस)

मय्यित का सोग[9] मनाना

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "किसी मोमिन के लिए यह जाइज़ नहीं कि तीन दिन से ज़्यादा किसी का सोग मनाये, अल्बत्ता बेवा[10] के सोग की मुद्दत चार महीने दस दिन है। इस मुद्दत में वह कोई रंगीन कपड़ा न पहने, न ख़ुशबू लगाये और न बनाव-सिंगार करे।"

(तिर्मिज़ी, बुख़ारी)

1-घरवाले, 2-किसी के मर जाने पर उसके घर शोक मनाने व सान्त्वना देने के लिए जाना, 3-उत्कृष्ट, शिष्टाचार, 4-महान आदर्श, 5-मय्यित के सम्बन्धी, बाल बच्चे, 6-ज़िम्मेदारी से अलग, उत्तरदायित्व रहित, 7-बदला, सत्कर्म का फल, 8-किसी वस्तु का मूल्य जो उस वस्तु के बदले में दिया जाये, 9-शोक, 10-विधवा।

पसमांदगान[1] से ताज़ियत[2]

(मृतक के परिवार वालों को सान्त्वना)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया-- "जिस शख़्स ने किसी मुसीबत-ज़दा की ताज़ियत की तो उसको उतना अज्र मिलेगा जितना उस मुसीबत-ज़दा को मिलता है"।

(जामे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

मय्यित के अहले ख़ाना[3] से ताज़ियत भी नबी अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नते तय्यिबा में दाख़िल थी।

सुन्नत यह है कि अल्लाह तआ़ला के फ़ैसले पर सुकून व रिज़ा का सबूत पेश किया जाये, अल्लाह तआ़ला शानुहू की हम्द बयान की जाये और إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ *"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"* पढ़ा जाये और मुसीबत के बाइस कपड़े फाड़ने, वावैला[4] और बैन[5] करते हुए आवाज़ बुलन्द करने या बाल मुंडवाने से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बेज़ारी[6] का एलान फ़रमाया। (ज़ादुल्मआ़द)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मय्यित पर ऐसे उमूर[7] से एहसान फ़रमाते जो उसके लिए क़ब्र और क़ियामत में सूदमंद[8] और नाफ़े हो जायें और उसके अक़ारिब[9] और घर वालों के साथ ताज़ियत और पुर्सिशे अहवाल[10] और तज्हीज़ व तक्फ़ीन[11] में मदद के साथ एहसान फ़रमाते और सहाबा किराम की जमाअ़त के साथ नमाज़े जनाज़ा पढ़ते, उसके लिए इस्तिग़्फ़ार फ़रमाते और उसके बाद सहाबा के साथ मदफ़न[12] तक जनाज़े के साथ जाते और क़ब्र के सिरहाने खड़े होकर उसके लिए दुआ फ़रमाते और

1-मृत व्यक्ति के सम्बन्धी जन, 2-किसी के मर जाने पर उसके घर शोक मनाने व सान्त्वना देने के लिए जाना, 3-घरवाले, 4-हाय, कोलाहल, 5-मुर्दे पर रोना, 6-नाखुशी, विमुखता 7-कामों, 8-लाभकारी, 9-सम्बन्धी, 10-हाल पूछने, 11-मुर्दे को स्नानादि से जनाज़ा तैयार करना, 12-क़ब्र, क़ब्रिस्तान।

मुन्कर नकीर के सवाल व जवाब सिखाते और उसकी क़ब्र पर मिट्टी वग़ैरा डालकर तैयार करते और रहमत व मग़्फ़िरत के नुज़ूल[1] की ख़ातिर सलाम व दुआ से मख़्सूस तवज्जोह फ़रमाते। सहाबा किराम से मर्वी है कि यह अम्र[2] साबित शुदा[3] है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो आख़िरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ायी, उसमें चार तक्बीरें थीं और यही मुक़र्रर व मुतअ़य्यन[4] हो गया और दो सलाम के साथ नमाज़े जनाज़ा ख़त्म फ़रमाई। यही मज़्हब[5] इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैह का है।

(मदारिजुन्नुबुव्वा, ज़ादुलमआ़द)

मय्यित का ग़ुस्ल और कफ़न

हज़रत उम्मे अ़तिय्या अन्सारिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक फ़ौत शुदा[6] साहिबज़ादी को हम गुस्ल दे रहे थे। उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घर में तशरीफ़ लाये और हम से फ़रमाया कि तुम उसको बेरी के पत्तों के साथ जोश दिये हुए पानी से तीन बार या पांच बार और अगर इससे भी ज़्यादा मुनासिब समझो तो गुस्ल दो और आख़िरी बार में काफ़ूर भी शामिल कर लो। फिर जब तुम गुस्ल दे चुको तो मुझे ख़बर कर दो (उम्मे अ़तिय्या कहती हैं कि जब हम गुस्ल दे चुके तो आपको इत्तिला दे दी) इसके बाद आपने अपना तहबन्द हमारी तरफ़ फेंक दिया और फ़रमाया सबसे पहले इसे पहना दो और इस हदीस की दूसरी रिवायत में इस तरह है कि तुम उसको ताक़[7] बार गुस्ल दो यानी 3 या 5 या 7 बार और दाहिने अअ़्ज़ा[8] से और वुज़ू के मक़ामात से शुरू करो।

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-उतरने, 2-कार्य, 3-प्रमाणित, 4-निश्चित, 5-मत, 6-मृत, 7-विषम, 8-अंग।

मय्यित को नहलाने का मस्नून तरीक़ा

जिस तख़्ते पर मय्यित को ग़ुस्ल दिया जाये उसको तीन बार लोबान की धूनी दे लो और मुर्दे को उस पर लेटाओ और बदन के कपड़े चाक करके निकालो और तहबन्द सत्र[1] पर डाल करके बदन के कपड़े अन्दर ही अन्दर उतार लो और फिर पेट पर आहिस्ता-आहिस्ता हाथ फेरो। (जिस जगह ज़िन्दगी में हाथ लगाना जाइज़ नहीं, वहाँ मरने के बाद भी बिला दस्तानों के हाथ लगाना जाइज़ नहीं) फिर नजासत[2] ख़ारिज[3] हो या न हो दोनों सूरतों में दस्ताने पहन कर मिट्टी के तीन या पांच ढेलों से इस्तिन्जा कराओ फिर पानी से पाक करो, फिर वुज़ू कराओ, न कुल्ली कराओ व नाक में पानी डालो न गट्टे तक हाथ धुलाओ बल्कि पहले मुँह धुलाओ, फिर हाथ कुहनी समेत धुलाओ, फिर सर का मस्ह[4], फिर दोनों पैर, फिर तीन बार रूई तर करके दाँतों और मसूढ़ों पर फेरो और नाक के दोनों सूराख़ों में फेरो तो भी जाइज़ है (और अगर मुर्दा नहाने की हाजत में या हैज़[5] व निफ़ास[6] में मर जाये तो इस तरह से मुँह और नाक में पानी पहुँचाना ज़रूरी है और नाक और मुँह और कानों में रूई भर दो ताकि वुज़ू कराते और नहलाते वक़्त पानी न जाने पाए) जब वुज़ू करा चुको तो सर को गुले ख़ैरु या साबुन से या किसी और चीज़ से जिससे वह साफ़ हो जाये जैसे बेसन या खली है, मलकर धोए और साफ़ करके फिर मुर्दे को बायीं करवट लिटा कर बेरी के पत्ते डालकर पकाया हुआ नीम गर्म पानी तीन दफ़आ सर से पैर तक डाले यहाँ तक कि बायीं करवट तक पानी पहुँच जाये, फिर दाहिनी करवट लिटाए और इसी तरह से पैर तक तीन बार इतना पानी डाले कि दाहिनी करवट तक पहुँच जाए। इसके बाद मुर्दे को अपने बदन की टेक लगा कर ज़रा बिठाए और उसके पेट को आहिस्ता-आहिस्ता मले और दबाए अगर कुछ फ़ुज़्ला ख़ारिज हो तो

1-छिपाव, 2-गन्दगी, मल-मूत्र, 3-बाहर निकलना, 4-वुज़ू के समय सर पर गीला हाथ फेरना, 5-स्त्री के मासिक धर्म का ख़ून, 6-बच्चा पैदा होने के बाद जो ख़ून औरत को जारी रहता है।

उसको पोंछ डाले और वुज़ू और गुस्ल में उसके निकलने से कुछ नुक़सान नहीं, दोहराने की ज़रूरत नहीं। उसके बाद फिर उसको बायें करवट लेटाए और काफ़ूर पड़ा हुआ पानी सर से पैर तक तीन बार डाले फिर सारा बदन किसी कपड़े से साफ़ करके कफ़ना दे।

(फ़तावा हिन्दिया, बिहिश्ती ज़ेवर, अद्दुर्रुल्-मुख़्तार)

अगर बेरी के पत्ते डालकर पकाया हुआ पानी न हो तो यही सादा नीम गर्म पानी काफ़ी है, इसी से नहला दे और बहुत तेज़ गर्म पानी से ग़ुस्ल न करायें। नहलाने का जो तरीक़ा बयान हुआ सुन्नत है और अगर कोई इस तरह तीन बार न नहलाए बल्कि एक बार सारे बदन को धो डाले तब भी फ़र्ज़ अदा हो गया। (शर्ह इम्दादिया, बिहिश्ती ज़ेवर)

जब मुर्दे को कफ़न पर रखो तो सर पर इत्र लगा दो और फिर माथे और नाक और दोनों हथेलियों और दोनों घुटनों और दोनों पावों पर काफ़ूर मल दो। बाज़ लोग कफ़न पर इत्र लगाते हैं और इत्र की फुरेरी कान में रख देते हैं। यह सब जिहालत है जितना शर्अ़ (इस्लामी शरीअ़त) में आया है उससे ज़्यादा मत करो। (शर्ह हिदाया)

बालों में कंघी न करो न नाख़ुन काटो न कहीं के बाल काटो सब उसी तरह रहने दो। (शर्ह हिदाया)

बेहतर यह है कि मय्यित का रिश्तेदार ग़ुस्ल दे वर्ना कोई दीनदार ग़ुस्ल दे। (दुर्रुल् मुख़्तार)

ग़ुस्ल देने वाले को भी बाद में ग़ुस्ल कर लेना मस्नून है।

(बिहिश्ती ज़ेवर)

कफ़न में क्या-क्या और कैसे कपड़े होना चाहिए

मय्यित का कफ़न देना फ़र्ज़े किफ़ाया है[1] (मर्द के लिए मस्नून कफ़न तीन कपड़े हैं) :-

1- इज़ार[2] 2-कुर्ता 3-लिफ़ाफ़ा[3]

इज़ार और लिफ़ाफ़ा सर से क़दम तक और कुर्ता बग़ैर आस्तीन और कली का गरदन से पैर तक।

औरत के लिए मस्नून पाँच कपड़े हैं:-

1-कुर्ता, 2-इज़ार, 3-सरबन्द,

4-चादर या लिफ़ाफ़ा और, 5-सीना बन्द।

1- कुर्ता मोढ़े से टख़्नों तक,

2- सीना बन्द सीने से घुटनों तक या नाफ़ तक,

3- ओढ़नी या सरबन्द तीन हाथ लम्बी,

4- इज़ार सर से पाँव तक,

5- लिफ़ाफ़ा या चादर सर से पैर तक होना चाहिए।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन यमनी कपड़ों में कफ़्नाए गए।

उन तीन कपड़ों में न तो कुर्ता था न अमामा[4]।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया- "तुम लोग सफ़ेद कपड़े पहना करो। वह तुम्हारे लिए अच्छे कपड़े हैं। और उन्हीं में अपने मुर्दों

1-वह फ़र्ज़ जो एक आदमी के अदा करने से सब की ओर से अदा हो जाये, 2-पायजामा, 3-मुर्दे के सबसे ऊपर वाला कपड़ा, 4-पगड़ी।

को कफ़नाया करो''।

(सुनने अबी दाऊद, जामे तिर्मिज़ी, सुनने इब्ने माजा, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– ''ज़्यादा बेशक़ीमत कफ़न न इस्तेमाल करो, क्यों कि वह जल्दी ही ख़त्म हो जाता है''।

(सुनने अबी दाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

सबसे अच्छा कफ़न सफ़ेद कपड़े का है और नया और पुराना यकसां[1] है। मर्दों के लिए ख़ालिस रेशमी या रंगीन कपड़े का कफ़न मक्रूह है, औरत के लिए जाइज़ है। (बिहिश्ती ज़ेवर)

कफ़न पहनाने का मस्नून तरीक़ा

कफ़न को एक बार या तीन बार या पाँच बार ख़ुशबू में धूनी दे। मर्द के लिए पहले लिफ़ाफ़ा बिछाये और उसके ऊपर इज़ार फिर मय्यित को उस पर लेटा कर कुर्ता पहनायें और फिर सर और दाढ़ी और बदन पर ख़ुश्बू लगायें मगर ज़ाफ़रान की ख़ुश्बू न लगायें।

मय्यित की पेशानी और नाक और दोनों हाथ और दोनों ज़ानू और दोनों क़दमों पर काफ़ूर लगायें। उसके बाद इज़ार को पहले बायीं तरफ़ से फिर दाहिनी तरफ़ से लपेटें और फिर उसी तरह लिफ़ाफ़ा को पहले बायीं तरफ़ से फिर दाहिनी तरफ़ से लपेटें और कफ़न के सिरे और पाँव की तरफ़ किसी कपड़े की पट्टी से बांध दें।

औरत के लिए पहले चादर बिछायें फिर इज़ार उसके ऊपर कुर्ता बिछायें फिर मय्यित को उसके ऊपर लेटायें फिर कुर्ता पहनायें और बालों के दो हिस्से करके दोनों तरफ़ से कुर्ते के ऊपर कर दें और सरबन्द उसके सर पर ओढ़ा कर दोनों किनारों के बाल छिपाएं फिर उसके ऊपर इज़ार, फिर

1–समान।

लिफ़ाफ़ा फिर सीना बन्द, सीने के ऊपर बग़लों से निकाल कर घुटनों के नीचे तक लपेटें, पहले बायीं तरफ़ फिर दाहिनी तरफ़। उसके बाद सीना बन्द बांध दें फिर चादर लपेटें, पहले बायीं तरफ़ फिर दाहिनी तरफ़, फिर किसी धज्जी से सर और पैर की तरफ़ कफ़न को बांध दें। एक बन्द कमर के पास भी बांध दें। (फ़तावा हिन्दिया)

कफ़न देने के बाद फिर मय्यित के लिए नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए।

मस्अला[1]

कफ़न में या क़ब्र के अन्दर अहदनामा या अपने पीर का शजरा या कोई और दुआ रखना दुरुस्त नहीं। इसी तरह कफ़न पर या मय्यित के सीने पर काफ़ूर से या रौशनाई से कलिमा या कोई दुआ लिखना भी दुरुस्त नहीं।

(दुर्रुल्मुख़्तार)

मस्अला

जिस शहर में कोई मरे वहीं उसका गोरो[2]-कफ़न किया जाये, दूसरी जगह ले जाना बेहतर नहीं, हाँ अगर मजबूरी हो तो कोई हरज नहीं।

(तह्तावी)

मय्यित को नहलाने के बाद ग़ुस्ल

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स मय्यित को ग़ुस्ल दे तो उसको चाहिए कि ग़ुस्ल करे। (इब्ने माजा)

और दूसरी हदीसों में इज़ाफ़ा है कि जो शख़्स मय्यित का जनाज़ा उठाए उसको चाहिए कि वुज़ू करे। (मआरिफ़ुल् हदीस)

1-धर्मशास्त्र सम्बन्धी आदेश, विषय, 2-क़ब्र।

जनाज़ा ले जाने का मस्नून तरीक़ा

जनाज़ा ले जाने के वास्ते मस्नून तरीक़ा यह है कि जनाज़ा उठाते वक़्त बिस्मिल्लाह بِسْمِ اللّٰہ पढ़े और चार आदमी चारों तरफ़ पकड़ कर चलें, दस-दस क़दम पर मोंढा बदलें और चारों पायों पर ऐसा करें।

इससे भी अफ़ज़ल तरीक़ा यह है कि सिरहाने का पाया पहले दाहिने मोंढे पर रखें, दस क़दम के बाद उसके पीछे वाला पाया, फिर दस क़दम पर बायीं तरफ़ सिरहाने का दूसरा पाया, फिर दस क़दम के बाद उसके पीछे वाला पाया मोंढे पर रखें। इस तरह हर शख़्स रद्दो-बदल करता चला जाये ताकि हर शख़्स चालीस क़दम चले। जनाज़ा लेकर तेज़ी से चलना चाहिए लेकिन इस क़द्र तेज़ न हो कि जनाज़ा हिलने लगे। जनाज़े का सिरहाना आगे रहना चाहिए। (बिहिश्ती ज़ेवर)

जनाज़े के साथ पैदल चलना अफ़ज़ल है। (बिहिश्ती गौहर)

और सवारी पर जाना भी जाइज़ है मगर जनाज़े के आगे जाना मक्रूह है। (बिहिश्ती गौहर)

जनाज़े के साथ जाने वाले ख़ामोश रहें, बातचीत करना या बुलन्द आवाज़ से दुआ या तिलावत करना मक्रूह है। (बिहिश्ती गौहर)

क़ब्रिस्तान में जनाज़ा रखने से पहले बैठना मक्रूह है।

(बिहिश्ती गौहर)

अफ़ज़ल यह है कि जब तक दफ़न करके क़ब्र हमवार[1] न हो, बैठना न चाहिए।

1-समतल (बराबर)।

जनाज़े के साथ चलने और नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का सवाब

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जो आदमी ईमान की सिफ़त के साथ और सवाब की निय्यत से किसी मुसलमान के जनाज़े के साथ जाये और उस वक़्त तक जनाज़े के साथ रहे जब तक कि उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाये और उसके दफ़न से फ़रागत हो तो वह सवाब के दो क़ीरात[1] लेकर वापस होगा, जिनमें से हर क़ीरात गोया उहद पहाड़ के बराबर होगा और जो आदमी सिर्फ़ नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर वापस आ जाये, दफ़न होने तक साथ न दे तो वह सवाब का ऐसा ही एक क़ीरात लेकर वापस होगा।" (मआरिफ़ुल् हदीस, सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

जनाज़े के साथ तेज़ रफ़्तारी और जल्दी का हुक्म

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मर्वी है[2] कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "जनाज़े को तेज़ ले जाया करो, अगर वह नेक है तो क़ब्र उसके लिए ख़ैर है यानी अच्छी मंज़िल है जहाँ तुम तेज़ चलके उसे जल्द पहुँचा दोगे और अगर इसके सिवा दूसरी सूरत है यानी जनाज़ा नेक का नहीं है तो एक बुरा बोझ तुम्हारे कंधों पर है। तुम तेज़ चलके जल्दी उसको अपने कंधों से उतार दोगे।"

(सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, मआरिफ़ुल् हदीस)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जनाज़े के साथ पापियादा[3] तशरीफ़ ले जाते। (तिर्मिज़ी)

1-एक तौल जो चार जौ के बराबर होती है, या तीन रत्ती के बराबर, 2-उद्धृत, 3-पैदल।

और जब तक जनाज़ा कंधों से उतारा न जाता न बैठते। फ़रमाते-

إِذَا أَتَيْتُمُ الْجَنَازَةَ فَلَا تَجْلِسُوْا حَتّٰى تُوْضَعَ

"इज़ा आतैतुमुल् जनाज़त फ़ला तज्लिसू हत्ता तूज़अ"

और एक रिवायत में है जब तक कि लहद[1] में न रखा जाये न बैठो।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैह के नज़्दीक जनाज़े के पीछे चलना मुस्तहब है।

अहले सुनन ने रिवायत किया और जब आप जनाज़े के साथ जाते तो पैदल चलते और फ़रमाते "मैं सवार नहीं होता जब कि फ़िरिश्ते पैदल जा रहे हों" जब आप फ़ारिग़ हो जाते तो कभी पैदल तशरीफ़ लाते कभी सवार होकर तशरीफ़ लाते। (ज़ादुल्मआद)

जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जनाज़े के साथ चलते तो ख़ामोश रहते और अपने दिल में मौत के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू फ़रमाते[2] थे। (इब्ने माजा)

नमाज़े जनाज़ा के मसाइल

नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया[3] है कि मय्यित के वह अइज़्ज़ा[4] जिनको हक़्क़े विलायत[5] हासिल है, इमामत के मुस्तहिक़ हैं, या फिर वह शख़्स जिसको वह इजाज़त दे। (बिहिश्ती गौहर)

नमाज़े जनाज़ा के लिए शर्त यह है कि मय्यित सामने रखी हो और इमाम उसके सीने के सामने खड़ा हो, सफ़ों को ताक़ अ़दद[6] में होना चाहिए।

(बिहिश्ती गौहर)

1-क़ब्र, 2-बातचीत करते, 3-वह फ़र्ज़ जो एक आदमी के अदा करने से सब की ओर से अदा हो जाये, 4-संबंधी, 5-संरक्षक के अधिकार, 6-विषम संख्या।

अगर नमाज़े जनाज़ा हो रही हो और वुज़ू का वक़्त न मिले तो तयम्मुम करके नमाज़ में शरीक हो जाये। (बिहिश्ती गौहर)

मस्अला

अगर एक शख़्स भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ ले तो फ़र्ज़ अदा हो जाता है ख़्वाह वह मय्यित मर्द हो या औरत, बालिग़ हो या ना बालिग़।

(बिहिश्ती गौहर)

नमाज़े जनाज़ा में इस ग़रज़ से ज़्यादा ताख़ीर करना कि जमाअ़त ज़्यादा हो जाये, मकरूह है। (बिहिश्ती गौहर)

नमाज़े जनाज़ा में दो चीज़ें फ़र्ज़ हैं:-

1- चार मर्तबा अल्लाहु अक्बर कहना, हर तक्बीर, यहाँ क़ाइम मक़ाम एक रकअ़त के समझी जाती है।

2- क़ियाम यानी खड़े होकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना जिस तरह फ़र्ज़ और वाजिब नमाज़ में क़ियाम फ़र्ज़ है। (बिहिश्ती गौहर)

नमाज़े जनाज़ा में तीन चीज़ें मस्नून हैं :-

1- अल्लाह तआ़ला की हम्द,

2- नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजना,

3- मय्यित के लिए दुआ़ करना। (बिहिश्ती गौहर)

नमाज़े जनाज़ा का मस्नून और मुस्तहब तरीक़ा यह है कि मय्यित को आगे रख कर इमाम उसके सीने के महाज़ में (यानी सामने) खड़ा हो जाये। मय्यित अगर औरत की हो तो नाफ़ के सामने खड़ा हो और सब लोग यह निय्यत करें:-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى صَلَاةَ الْجَنَازَةِ وَدُعَاءً لِّلْمَيِّتِ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआ़ला सलातल् जनाज़ति व दुआ़अल्

तिल्मय्यिति (यानी मैंने इरादा किया कि जनाज़े की नमाज़ बमआ[1] चार तक्बीरों के पढ़ूँ जो अल्लाह तआला की नमाज़ है और मय्यित के लिए दुआ है) (बिहिश्ती गौहर)

तरकीब नमाज़े जनाज़ा

पहले कानों तक हाथ उठा कर अल्लाहु अक्बर कहे और हाथ बांध ले और

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ पढ़े

"सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तआला जद्दुक व जल्ल सनाउक वला इलाह ग़ैरुक" पढ़े।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! हम तेरी पाकी बयान करते हैं और तेरी तारीफ़ करते हैं और तेरा नाम बहुत बरकत वाला है और तेरी बुज़ुर्गी बहुत बर्तर[2] है और तेरी तारीफ़ बड़ी है और तेरे सिवा कोई मुस्तहिक़्क़े इबादत[3] नहीं।

फिर "अल्लाहु अक्बर" कहकर दुरूद शरीफ़ पढ़े और बेहतर यह है कि जो दुरूद शरीफ़ नमाज़ में पढ़ा जाता है वह पढ़े फिर बग़ैर हाथ उठाए "अल्लाहु अक्बर" कहे, बादहू[4] यह दुआ पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ۔

अल्लाहुम्मग़्फ़िर लिहय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़करिना व उन्साना अल्लाहुम्म मन् अहयैतहू मिन्ना फ़अहयिही अ़लल् इस्लामि व मन् तवफ़्फ़ैतहू मिन्ना फ़तवफ़्फ़हू अ़लल् ईमान।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! तू हमारे ज़िन्दों को बख़्श दे और हमारे मुर्दों

1-के साथ, 2-श्रेष्ठ, 3-इबादत के योग्य 4-उसके बाद।

और हाज़िरों को और हमारे ग़ाइबों और हमारे छोटों को और हमारे बड़ों को और हमारे मर्दों को और हमारी औरतों को। ऐ अल्लाह! हम में से जिसे तू ज़िन्दा रखे तो इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हममें से जिसे तू मौत दे तो उसे ईमान पर मौत दे।

जिसको यह दुआ याद न हो वह कोई और दुआ पढ़े फिर "अल्लाहु अक्बर" कहकर पहले दाहिनी फिर बायीं तरफ़ सलाम फेरे। तक्बीर और सलाम सिर्फ़ इमाम बुलन्द आवाज़ से कहे। (बिहिश्ती गौहर)

अगर मय्यित बच्चा है तो यह दुआ पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا۔

अल्लाहुम्मज्अ़ल्हु लना फ़रतँव् वज्अ़ल्हु लना अजरँव् व ज़ुख़्रँव् वज्अ़ल्हु लना शाफ़िअँव् व मुशफ़्फ़आ।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! इस बच्चे को तू हमारे लिए पहले से जाकर इंतिज़ाम करने वाला बना और इसको हमारे लिए अज्र व ज़ख़ीरा और सिफ़ारिश करने वाला और सिफ़ारिश मंज़ूर किया हुआ बना।

और अगर मय्यित लड़की की हो तो इस तरह पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

अल्लाहुम्मज्अ़ल्हा लना फ़रतँव् वज्अ़ल्हा लना अज्रँव् व ज़ुख़्रँव् वज्अ़ल्हा लना शाफ़िअ़तँव् व मुशफ़्फ़आ।

अनुवाद: ऐ अल्लाह! इस बच्ची को तू हमारे लिए पहले से जाकर इंतिज़ाम करने वाली बना और इसको हमारे लिए अज्र व ज़ख़ीरा और सिफ़ारिश वाली और सिफ़ारिश क़बूल की हुई बना।

जनाज़े में कस्रते तादाद की बरकत और अहमियत

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया-- "जिस मय्यित पर मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत नमाज़ पढ़े जिनकी तादाद सौ तक पहुँच जाये और वे सब अल्लाह के हुज़ूर में उस मय्यित के लिए सिफ़ारिश करें यानी मग़्फ़िरत व रहमत की दुआ करें तो उनकी सिफ़ारिश और दुआ ज़रूर क़बूल होगी। (सहीह मुस्लिम शरीफ़, मआरिफ़ुल् हदीस)

हज़रत मालिक बिन मैसरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपका यह इर्शाद सुना कि जिस मुसलमान बन्दे या बन्दी का इंतिक़ाल हो और मुसलमानों की तीन सफ़ें उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ें और उसके लिए मग़्फ़िरत और जन्नत की दुआ करें तो ज़रूर अल्लाह तआला उसके वास्ते मग़्फ़िरत और जन्नत वाजिब कर देता है मालिक बिन मैसरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह दस्तूर था कि जब वह नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों की तादाद कम महसूस करते तो इसी हदीस की वजह से उन लोगों को तीन सफ़ों में तक़सीम कर देते थे।

(सुनने अबीदाऊद, मआरिफ़ुल् हदीस)

क़ब्र की नौइयत[1]

क़ब्र कम से कम मय्यित के निस्फ़ क़द[2] के बराबर गहरी खोदी जाये, क़द से ज़्यादा न होनी चाहिए और उसके क़द के मुवाफ़िक़ लम्बी हो। बग़ली क़ब्र[3] बनिस्बत संदूक़ी के बेहतर है, हाँ अगर ज़मीन बहुत नर्म हो और बग़ली खोदने से क़ब्र के बैठ जाने का अन्देशा हो तो फिर बग़ली क़ब्र न खोदी जाये। (दुर्रुलमुख़्तार, मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-प्रकार, विशेषता, 2-आधा शरीर, 3-क़ब्र का वह गढ़ा जो ज़मीन काट कर एक पहलू में बनाते हैं।

यह भी जाइज़ है कि अगर ज़मीन नर्म हो और बग़ली क़ब्र न खोद सके तो मय्यित को किसी सन्दूक़ में रखकर दफ़्न कर दें, सन्दूक़ ख़्वाह लकड़ी का हो, पत्थर या लोहे का, बेहतर यह है कि सन्दूक़ में मिट्टी बिछा दी जाये। (दुर्रुल्-मुख़्तार)

क़ब्र को पुख़्ता ईंटों या लकड़ी के तख़्तों से बन्द करना मकरूह है, अलबत्ता जहाँ ज़मीन नर्म होने की वजह से क़ब्र के बैठ जाने का अन्देशा हो तो पुख़्ता ईंट या लकड़ी के तख़्तों से बन्द किया जा सकता है और सन्दूक़ में रखना भी जाइज़ है। (बिहिश्ती गौहर)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़ब्र को ऊँचा न बनाते और उसे ईंट, पत्थर वग़ैरा से पुख़्ता तामीर न करते और उसे क़लई और सख़्त मिट्टी से न लीपते, क़ब्र के ऊपर कोई इमारत और क़ुब्बा[1] न बनाते और यह सब बिद्अ़त और मकरूह है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की क़ब्रे अन्वर और आप सल्ल० के दोनों सहाबा रज़ि० की क़ब्रें भी ज़मीन के बराबर हैं, संगरेज़े सुर्ख़ (लाल पत्थर के टुकड़े) उस पर चस्पां[2] हैं। (मदारिजुन्नुबुव्वा, सफ़रुस्सआ़दत)

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साहिबज़ादे आ़मिर रज़ि० बयान करते हैं कि वालिद सअ़द बिन अबी वक़्क़ास ने अपने मरज़े वफ़ात[3] में वसिय्यत फ़रमाई थी कि मेरे वास्ते बग़ली क़ब्र बनाई जाये और उसको बन्द करने के लिए कच्ची ईंटें खड़ी कर दी जायें जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए किया गया था।

(मआ़रिफ़ुल् हदीस)

दफ़्न के बयान में

मय्यित को दफ़्न करना फ़र्ज़े किफ़ाया है। मय्यित की क़ब्र की गहराई कम से कम उसके क़द के निस्फ़[4] के बराबर खोदी जाये लेकिन क़द से ज़्यादा

1-गुम्बद, 2-चिपके हुए, 3-वह रोग जो मृत्यु का कारण बने, 4-आधा।

न होना चाहिए। मय्यित को पहले क़ब्र के किनारे क़िब्ले की तरफ़ रखकर उतारें, लहद[1] में रखते वक़्त कहें:-

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ

"बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम"।

फिर मय्यित को दाहिनी करवट क़िब्ला रुख़ लेटायें और कफ़न की गिरहें खोल दें, फिर क़ब्र तख़्तों वग़ैरा से बन्द कर दें, फिर सिरहाने की तरफ़ से मिट्टी गिरायें। हर शख़्स को तीन बार मुट्ठी भरकर मिट्टी क़ब्र में डालना चाहिए। पहली बार मिट्टी डालते वक़्त कहें:-

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ *"मिन्हा ख़लक़्नाकुम"* (यानी हमने इससे (मिट्टी से) तुमको पैदा किया) दूसरी बार कहें وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ *"व फ़ीहा नुईदुकुम"* (और हम इसमें तुमको लौटाएंगे) और तीसरी बार कहें: وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى *"व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन् उख़्रा"* (और फिर दोबारा इसीसे तुमको निकालेंगे) फिर क़ब्र को ऊँट के कोहान[2] के बराबर ऊँची बनायें और उस पर पानी छिड़कें। क़ब्र के सिरहाने सूरए बक़रा की शुरू की आयतें "मुफ़्लिहून" तक फिर पाँयती की तरफ़ सूरए बक़रा की आख़िरी आयत "आमनर्रसूलु" से आख़िर तक पढ़ें। क़ब्र के सामने हाथ उठा कर दुआ मांगना जाइज़ नहीं।

(बिहिश्ती गौहर)

औरत को क़ब्र में रखते वक़्त पर्दा करना मुस्तहब है। (बिहिश्ती गौहर)

मिट्टी डालने के बाद क़ब्र पर पानी छिड़कना मुस्तहब है।

(दुर्रेमुख़्तार व शामी)

दफ़्न के बाद थोड़ी देर क़ब्र पर ठहरना और मय्यित के लिए दुआए मग़्फ़िरत करना, क़ुरआन मजीद पढ़ कर सवाब पहुँचाना मुस्तहब है।

(दुर्रेमुख़्तार, शामी, आलमगीरी)

1-क़ब्र, 2-कूबड़,

क़ब्र का एक बालिश्त से बहुत ज़्यादा बुलन्द करना मक्रूह तह्रीमी[1] है। (दुर्रेमुख़्तार, शामी व बह्‌र)

क़ब्र पर कोई चीज़ बतौर याद्दाश्त के रखना जाइज़ है, बशर्ते कि कोई ज़रूरत हो वर्ना जाइज़ नहीं। (दुर्रे मुख़्तार, शामी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नते तय्यिबा यह थी कि लहद बनवाते और क़ब्र गहरी करवाते और मय्यित के सर और पाँव की जगह को फ़राख़[2] करवाते। (ज़ादुल्मआ़द)

और सहीह हदीस में आया है कि हज़रत उसमान बिन मज़्ऊन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को दफ़्न किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक भारी पत्थर उठाया और उनकी क़ब्र पर रख दिया।

(मदारिजुन्नुबुव्वा)

तद्फ़ीन[3] के बाद (दफ़्न के पश्चात्)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब मय्यित के दफ़्न से फ़ारिग़ होते तो ख़ुद भी इस्तिग़्फ़ार फ़रमाते और दूसरों को भी फ़रमाते कि अपने भाई के लिए इस्तिग़्फ़ार करो और साबित क़दम रहने की दुआ़ करो कि अल्लाह तआ़ला उसको मुन्कर-नकीर के जवाब में साबित क़दम रखे।

(अबू दाऊद)

और सहीह हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने फ़र्ज़न्द[4] हज़रत इब्राहीम की क़ब्र पर पानी छिड़का और उस पर चन्द संगरेज़े[5] रखे। (ज़ादुल्-मआ़द)

क़ब्रों पर चलने और बैठने की मुमानअ़त[6]

हदीस शरीफ़ में मर्वी है कि क़ब्रों पर चलने और बैठने की मुमानअ़त फ़रमाई गई है।

1-इस्लाम धर्म के अनुसार ऐसा काम जो हराम के क़रीब हो, उसका करने वाला गुनहगार होता है, 2-चौड़ा, 3-मुर्दों का ज़मीन में गाड़ना, 4-पुत्र, 5-पत्थर के टुकड़े, 6-मनाही।

वे काम जो ख़िलाफ़े सुन्नत हैं

यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत नहीं कि क़ब्रों को (बहुत ज़्यादा) ऊँचा किया जाये, न यह कि ईंटों और पत्थरों से या कच्ची ईंटों से पुख़्ता करना और लीपना सुन्नत में दाख़िल है और न उन पर क़ुब्बे बनाना मस्नून है। (ज़ादुल्-मआ़द)

क़ब्रों पर चिराग़ जलाना भी मम्नूअ़[1] है और क़ब्रों के मुवाजहा में (आमने-सामने) नमाज़ पढ़ना मक्रूह है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

नमाज़े ग़ाइबाना[2]

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ते थे, लेकिन यह सहीह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने शाहे हब्शा नजाशी की नमाज़े जनाज़ा ग़ाइबाना पढ़ी और हज़रत मुआविया लैसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर भी ग़ायबाना नमाज़ पढ़ी (लेकिन उनकी मय्यित हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर मुन्कशिफ़[3] कर दी गयी थी) और यह बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुसूसी थी।

ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा को इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिमा मुत्लक़न[4] मना करते हैं। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

और अइम्मा हनफ़िया का इसके अ़दमे जवाज़[5] पर इज्माअ़[6] व इत्तिफ़ाक़ है। किसी मय्यित पर दो बार नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं, अलबत्ता अगर वली आए तो यह उसका हक़ है, कोई और शख़्स उसका हक़ साक़ित[7] नहीं कर सकता।

जनाज़े का नमाज़ी के सामने मौजूद होना सिहते[8] नमाज़े जनाज़ा की शर्त है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

1-मना, 2-परोक्षता, अनुपस्थिति में, 3-प्रकट अभिव्यक्त, 4-बिल्कुल, 5-नाजायज़ होना, अनुचित, 6-किसी दीनी बात में उलमा की सहमति, 7-त्यागा हुआ, गिरा हुआ, 8-उचित।

ज़ियारते क़ुबूर (क़ब्रों के दर्शन)

क़ब्रों की ज़ियारत करना यानी उनको जाकर देखना (बराए इबरत व तज़्किर-ए-मौत[1]) मर्दों के लिए मुस्तहब है। बेहतर यह है कि हर हफ़्ते में कम से कम एक मर्तबा ज़ियारते क़ुबूर की जाये और ज़्यादा बेहतर यह है कि वह दिन जुमा का हो। बुज़ुर्गों की क़ब्रों की ज़ियारत के लिए सफ़र करके जाना भी जाइज़ है, जब कि कोई अक़ीदा और अमल ख़िलाफ़े शर्अ[2] न हो, जैसा कि आजकल उर्सों में मफ़ासिद[3] होते हैं। (बिहिश्ती गौहर)

कभी-कभी क़ब्र की ज़ियारत करना मुस्तहब है।

कभी-कभी शबे-बरात को भी क़ब्रिस्तान में जाना साबित है।

क़ब्रिस्तान में जाकर इस तरह कहें:-

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ-

अस्सलामु अलैकुम या अहलल् क़ुबूरि यग़्फ़िरुल्लाहु लना व लकुम् अन्तुम् लना सलफ़ुंव् व नह्नु बिल् असरि।

फिर जो कुछ हो सके पढ़ कर सवाब पहुँचा दें, मसलन सूरए फ़ातिहा आयतलकुर्सी, सूरए यासीन, सूरए तबारकल्लज़ी, सूरए अल्हाकु-मुत्तकासुर और क़ुल् हुवल्लाहु ग्यारह बार या सात बार या जिस क़द्र आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ कर कहे- या अल्लाह! इसका सवाब साहिबे क़ब्र को पहुँचा दे।

(बिहिश्ती गौहर)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते करीमा यह थी कि मरने वालों की ज़ियारत इसलिए फ़रमाते कि आप सल्ल० दुआए तरह्हुम[4] व इस्तिग़्फ़ार फ़रमायें। ऐसी ज़ियारत जो इस मअ्ना और ग़रज़ के लिए हो और उसमें कोई बिदअ़त व कराहत[5] की राह न हो तो यह ज़ियारत

1-मृत्यु की चर्चा, 2-इस्लामी क़ानून के विरुद्ध, 3-दोष, बुराइयाँ, 4-दया की दुआ, 5-नापसंदीदा, अरुचि।

मस्नून व मुस्तहब है। (मदारिजुन्नुबुव्वा)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- "मैंने तुमको ज़ियारते कुबूर से मना किया था, अब इजाज़त देता हूँ कि तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो, क्योंकि इसका फ़ायदा यह है कि इससे दुनिया से बेरग़बती[1] और आख़िरत की याद और फ़िक्र पैदा होती है"।

(सुनन इब्ने माजा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का गुज़र मदीना ही में चन्द क़ब्रों पर हुआ। आप सल्ल० ने उनकी तरफ़ रुख़ किया और फ़रमाया:-

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ۔

अस्सलामु अ़लैकुम् या अहलल् कुबूरि यग़्फ़िरुल्लाहु लना व लकुम् अन्तुम् लना सलफ़ुंव् व नह्नु बिल् असरि।

अनुवाद: सलाम तुम पर ऐ अहले क़ब्र[2]! अल्लाह तआ़ला हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए। तुम हम से आगे जाने वाले हो और हम तुमसे पीछे आने वाले हैं। (जामे तिर्मिज़ी, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

ताज़ियत

जिस घर में ग़मी हो उसके यहाँ तीन दिन में किसी एक दिन एक बार ताज़ियत के लिए जाना मुस्तहब है। मुतअ़ल्लिक़ीन[3] को सब्र व तसल्ली की तल्क़ीन[4] करना सुन्नत है।

इस तरह कि अल्लाह तआ़ला मर्हूम की मग़्फ़िरत फ़रमाएँ, उसके गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाएँ और उस पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा दें और

1-अनासक्ति, 2-क़ब्र वाले, 3-सम्बन्धियों, 4-नसीहत।

पसमांदगान[1] व मुतअ़ल्लिकीन[2] को सब्रे जमील[3] की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें- "आमीन"। हमसाया[4] और क़राबतदारों[5] को मय्यित के घरवालों के लिए दो-एक वक़्त का खाना पहुँचाना भी सुन्नत है। (बिहिश्ती गौहर)

ईसाले सवाब[6]

सलफ़े सालिहीन[7] के मुवाफ़िक़[8] ईसाले सवाब करें। वह इस तरह कि किसी क़िस्म की क़ैद और किसी दिन की तख़्सीस[9] न हो, अपनी हिम्मत के मुवाफ़िक़ मसाकीन[10] की ख़ुफ़िया मदद करें और जिस क़द्र तौफ़ीक़ हो, बतौर ख़ुद क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर उसको सवाब पहुँचा दें।

क़ब्ले दफ़्न क़ब्रिस्तान में फ़ुज़ूल बातों और ख़ुराफ़ात में वक़्त गुज़ारने के बजाये कलिमा पढ़ें और सवाब बख़्शते रहें। (बिहिश्ती गौहर)

अम्वात[11] के लिए ईसाले सवाब

किसी की मौत के बाद रहमत व मग़्फ़िरत की दुआ़ करना, नमाज़े जनाज़ा अदा करना आमाले मस्नूना हैं। इनके साथ दूसरा तरीक़ा नफ़ा-रसानी[12] का यह है कि मय्यित की तरफ़ से सदक़ा किया जाये या कोई अ़मले ख़ैर करके उनको हदिय्या किया जाये। इसी को ईसाले सवाब का दर्जा दिया जाता है। इसके बारे में ज़ैल[13] की हदीसें मुलाहज़ा[14] हों:-

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सअ़द बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वालिदा[15] का इन्तिक़ाल ऐसे वक़्त हुआ कि ख़ुद सअ़द रज़ि० मौजूद नहीं थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ एक ग़ज़्वे[16] में तशरीफ़ ले गये थे। जब वापस आये तो

1-मुर्दे के सम्बन्धी जन, बाल-बच्चे आदि, 2-घरवाले, 3-पूर्ण धीरज, 4-पड़ोसी, 5-रिश्तेदारों, 6-सवाब पहुँचाना, 7-नेक पुर्वजों, 8-अनुकूल, 9-विशेषता, 10-निर्धन, 11-मौतों, 12-लाभप्रद, 13-नीचे, 14-ग़ौर करना, द्रष्टव्य, 15-माँ, 16-धर्मयुद्ध, जिन लड़ाईयों मे अल्लाह के रसूल सल्ल० शरीक हुए उनको ग़ज़्वा कहा जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! मेरी अ़दमे मौजूदगी[1] में मेरी वालिदा का इंतिक़ाल हो गया, अगर मैं उनकी तरफ़ से सदक़ा करूँ तो क्या वह उनके लिए फ़ायदेमन्द होगा? और उसका सवाब पहुँचेगा? आप सल्ल० ने फ़रमाया- ''हाँ, पहुँचेगा''। उन्होंने अ़र्ज़ किया, मैं आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को गवाह बनाता हूँ, अपना बाग़ (मिख़्राफ़) मैंने अपनी मर्हूम वालिदा के लिए सदक़ा कर दिया। (सहीह़ बुख़ारी, मआ़रिफ़ुल ह़दीस)

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मक्तूबे ताज़ियत[2] मआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बेटे की वफ़ात[3] पर

अनुवाद: (शुरू) अल्लाह के नाम के साथ जो बड़ा रहम करने वाला और मेहरबान है। अल्लाह के रसूलु मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की जानिब से मआ़ज़ बिन जबल के नाम। तुम पर सलामती हो। मैं तुम्हारे सामने अल्लाह तआ़ला शानुहू की तारीफ़ करता हूँ, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। हम्दो-सना के बाद अल्लाह तआ़ला तुम्हें अज्रे अ़ज़ीम[4] अ़ता फ़रमाए और सब्र की तौफ़ीक़ दे और हमें और तुम्हें शुक्र अदा करना नसीब फ़रमाए, इसलिए कि बेशक हमारी जानें, हमारा माल, हमारे अहलो-इयाल[5] और हमारी औलाद (सब) अल्लाह बुज़ुर्ग व बर्तर[6] के ख़ुशगवार अ़तिय्ये[7] और आ़रियत[8] के तौर पर सिपुर्द की हुई चीज़ें हैं, जिनसे हमें एक मुअ़य्यन मुद्दत[9] तक फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया जाता है और मुक़र्ररा वक़्त पर उनको अल्लाह तआ़ला (वापस) ले लेता है। फिर हम पर फ़र्ज़ आइद[10] किया गया है कि जब वह दे तो हम शुक्र अदा करें और जब वह आज़माइश करे (और उनको वापस ले ले) तो सब्र करें।

1-अनुपस्थिति, 2-शोक पत्र, 3-मृत्यु, 4-बहुत अधिक सवाब, 5-परिवार, 6-महान, 7-उपहार, 8-थोड़ी देर के लिए मांगी हुई चीज़, 9-निश्चित अवधि, 10-लागू।

तुम्हारा बेटा भी अल्लाह तआला की उन्हीं ख़ुशगवार नेअ्मतों और सिपुर्द की हुई आरियतों में से (एक आरियती अतिय्या) था। अल्लाह तआला ने तुम्हें उससे क़ाबिले रश्क[1] और लाइके मसर्रत[2] सूरत में नफ़ा पहुंचाया और (अब) अज्रे अज़ीम, रहमत व मग़फ़िरत और हिदायत का इवज़ देकर ले लिया। बशर्ते कि तुम सब्र (व शुक्र) करो, लिहाज़ा तुम सब्र (व शुक्र) के साथ रहो। (देखो!) तुम्हारा रोना-धोना तुम्हारे अज्र को ज़ाए[3] न कर दे कि फिर तुम्हें पशेमानी[4] उठानी पड़े और याद रखो कि रोना-धोना कुछ नहीं लौटा कर लाता और न ही ग़म व अन्दोह[5] को दूर करता है और जो होने वाला है वह तो होकर रहेगा। और जो होना था वह हो चुका। सलामती हो तुम पर, फ़क़त। (तिर्मिज़ी, हिस्ने हसीन, मआरिफ़ुल हदीस)

दुरूद शरीफ़

عَنْ عَلِيٍّ كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ فِى الصَّلَاةِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ إِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝ لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ رَبِّيْ وَسَعْدَيْكَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ الْبَرِّ الرَّحِيْمِ وَالْمَلَائِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَالنَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ وَمَا سَبَّحَ لَكَ مِنْ شَيْءٍ يَّا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ عَلَى مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَسَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَإِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَرَسُوْلِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ الشَّاهِدِ الْبَشِيْرِ الدَّاعِىْ إِلَيْكَ بِإِذْنِكَ السِّرَاجِ الْمُنِيْرِ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ۔

अन् अलिय्यिन् कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़िस्सलाति अलन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन्नल्लाह व मलाइकतहू युसल्लून अलन्नबिय्यि या अय्युहल्लज़ीन आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा। लब्बैक अल्लाहुम्म रब्बी व सअ्दैक

1-गर्व योग्य, 2-प्रसन्नता योग्य, 3-नष्ट, 4-लज्जा, 5-क्लेश,

सलवातुल्लाहिल् बिर्रिर्रहीमि वल्मलाइकतिल् मुक़र्रबीन वन्नबिय्यीन वसिद्दीक़ीन वश्शुहदाइ वस्सालिहीन व मा सब्बह लक मिन् शैइन् या रब्बल् आलमीन अ़ला मुहम्मदिब्नि अ़ब्दिल्लाहि ख़ातमिन्नबिय्यीन व सय्यिदिल् मुर्सलीन व इमामिल् मुत्तक़ीन व रसूलि रब्बिल् आलमीनश् शाहिदिल् बशीरि अद्दाई इलैक बिइज़्नि-कस्सिराजिल् मुनीरि व अ़लैहिस्सलाम।

अनुवादः हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू से रिवायत की गई है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर इस तरह दुरूद भेजते थे (पहले सूरए ''अहज़ाब'' की यह आयत तिलावत फ़रमाते जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजने का हुक्म दिया गया है) इसके बाद कहते:- ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरे फ़रमान[1] बसरो-चश्म[2] तामील[3] करता हूँ और अ़र्ज़ करता हूँ कि उस अल्लाह तआ़ला शानुहू की तरफ़ से जो बड़ा एहसान फ़रमाने वाला और निहायत मेहरबान है। ख़ास नवाज़िशें[4] व इनायतें[5] हों और उसके मलाइका (फ़िरिश्ते) मुक़र्रबीन[6] और अम्बिया व सिद्दीक़ीन[7] और शुहदा व सालिहीन[8] की और उन सारी मख़्लूक़ात[9] की जो अल्लाह की तस्बीह (पाकी) व हम्द करती हैं। बेहतरीन दुआएँ और नेक तमन्नाएँ हों हज़रत मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह के लिए जो ख़ातिमुन्नबिय्यीन[10], सय्यिदुल् मुर्सलीन[11] इमामुल मुत्तक़ीन[12] और रसूले रब्बुल् आ़लमीन हैं, जो अल्लाह की तरफ़ से शहादत[13] अदा करने वाले हैं। अल्लाह के फ़रमांबरदार बन्दों को रहमत व जन्नत की बशारत[14] सुनाने वाले जो तेरे बन्दों को तेरे हुक्म से तेरी तरफ़ दावत देते हैं और तेरे ही रौशन किए हुए चिराग़ हैं और उन पर सलाम हो। (किताबुश्शिफ़ा, मआ़रिफ़ुल् हदीस)

1-आदेश, 2-सर आँखों पर सहर्ष, 3-पालन, 4-कृपा, 5-दया, 6-निकटवर्ती, 7-सच्चे लोगों, 8-नेक लोगों, 9-जीवधारियों, 10-नबियों के सिलसिले को समाप्त करने वाले, अन्तिम नबी, 11-नबियों के सरदार, 12-परहेज़गारों के इमाम, 13-गवाही, 14-ख़ुशख़बरी।

مُحَمَّدٌ سَيِّدُ الكَوْنَيْنِ وَالثَّقَلَيْنِ وَالفَرِيْقَيْنِ مِنْ عَرَبٍ وَّمِنْ عَجَمِ

فَانْسُبْ إِلَى ذَاتِهِ مَا شِئْتَ مِنْ شَرَفٍ وَانْسُبْ إِلَى قَدْرِهِ مَا شِئْتَ مِنْ عَظَمِ

فَإِنَّ فَضْلَ رَسُوْلِ اللهِ لَيْسَ لَهُ حَدٌّ فَيُعْرِبُ عَنْهُ نَاطِقٌ بِفَمِ

فَمَبْلَغُ العِلْمِ فِيْهِ أَنَّهُ بَشَرٌ وَأَنَّهُ خَيْرُ خَلْقِ اللهِ كُلِّهِمِ

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا عَلَى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الخَلْقِ كُلِّهِمِ

وَمَنْ تَكُنْ بِرَسُوْلِ اللهِ نُصْرَتُهُ إِنْ تَلْقَهُ الأُسْدُ فِيْ آجَامِهَا تَجِمِ

नअ़त शरीफ़

मुहम्मदुन् सय्यिदुल् कौनैनि वस्सक़लैनि

वल् फ़रीक़ैनि मिन् अ़रबिन् व मिन अ़जमी

फ़न्सुब इला ज़ातिही मा शिअ्त मिन् शरफ़िन्

वन्सुब् इला क़द्रिही मा शिअ्त मिन् अ़ज़मी

फ़ इन्न फ़ज़्ल रसूलिल्लाहि लैस लहू

हद्दुन फ़युअ्रिबु अ़न्हु नातिक़ुन् बिफ़मी

फ़ मब्लग़ुल् इल्मि फ़ीहि अन्नहू बशरुन्

व अन्नहू ख़ैरु ख़ल्क़िल्लाहि कुल्लिहिमी

या रब्बि सल्लि व सल्लिम् दाइमन् अबदा

अ़ला हबीबिक ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी

व मन् तकुन् बिरसूलिल्लाहि नुस्रतुहू

इन् तल्क़हुल् असदु फ़ी आजामिहा तजिमी

(क़सीदा-ए-बुर्दा)

तर्जुमा (अनुवाद)

आप इस्म बा-मुसम्मा[1] हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं जो सरदार दुनिया व आख़िरत के, जिन्न व इन्स के और हर दो फ़रीक़[2] अ़रब व अ़जम के हैं और आप की ज़ाते बाबरकत की तरफ़ जो ख़ूबियाँ (बइस्तिस्ना-ए-मर्तबा-ए-उलूहिय्यत[3]) तू चाहे मन्सूब[4] कर दे वह सब क़ाबिले तस्लीम[5] होंगी और आपकी क़द्रे अ़ज़ीम की तरफ़ जो बड़ाइयाँ तू चाहे निस्बत कर दे, वह सब सहीह होंगी, क्योंकि हज़रत रिसालत पनाह[6] के फ़ज़्ल की कुछ हद व निहायत नहीं है कि कोई गोया उनको बज़रीये अपनी ज़बान के ज़ाहिर व बयान कर सके। पस निहायत हमारे फ़हम[7] व अ़क्ल की यह है कि आप बशर अ़ज़ीमुल् क़द्र हैं और यह कि आप तमाम ख़ल्क़ुल्लाह[8] इन्सान व मलाइका वग़ैरा से बेहतर हैं, ऐ रब दुरूद व सलाम भेजिये अपने हबीब, मख़्लूक़ में सबसे बेहतर पर हमेशा, और जिस शख़्स की नुस्रत[9] रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तवस्सुल[10] से हो तो अगर शेरों का गिरोह भी उसे अपनी झाड़ियों में मिले तो उसका मुतीअ़[11] हो जाएगा।

मुनाजात[12]

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अल्लाह! या रहमान! या रहीम! या हय्यु! या क़य्यूम! बिरह्मतिक नस्तईन! या अल्लाह! यह महज़ आपका फ़ज़्ले अ़ज़ीम[13] व करमे अ़मीम[14] है कि आपने इस आ़जिज़[15] व बेनवा[16] व बेमायए इल्म व अ़मल[17] को एक वालिहाना ज़ौक़ व शौक़[18] अ़ता फ़रमा कर अपने महबूब नबिय्युर्रहमत

1-नाम के अनुसार काम वाले, 2-पक्ष, 3-अल्लाह के मर्तबे को छोड़कर, 4-सम्बन्धित, 5-स्वीकार करने योग्य, 6-हज़रत मुहम्मद सल्ल० की उपाधि, 7-समझ, 8-अल्लाह के पैदा किये हुए, 9-सहायता, 10-वसीला, माध्यम, 11-आज्ञाकारी, 12-अल्लाह की स्तुति करना, अल्लाह से बात करना, 13-अति कृपा, 14-व्यापक कृपा, 15-असहाय, 16-दरिद्र, 17-जो इल्म (ज्ञान) व अ़मल की सम्पत्ति से रहित हो, 18-प्रेम रूपी रसानुभव, रसिकता।